# भारत-भ्रमण

पांच खण्डों में से

## दूसरा खण्ड

बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित

जिसमें
भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तान के तीर्थ, शहर और अन्य प्रसिद्ध स्थानों के भूतकालिक और वर्तमान काल के वृत्तांत पूर्ण रीति से लिखे गए हैं।

काशी
यज्ञेश्वरयंत्रालय में मुद्रित।

१९०२ ई०

पहिली बार १००० पुस्तकें छपीं

मूल्य प्रति पुस्तक १॥) केवल प्रेषका खर्च।

# भारत-भ्रमण

पांच खण्डों में से

## दूसरा खण्ड

बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित

जिसमें

भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तान के तीर्थ, शहर और अन्य प्रसिद्ध स्थानों के भूतकालिक और वर्तमान काल के वृत्तांत पूर्ण रीति से लिखे गए हैं।

काशी

यज्ञेश्वरयंत्रालय में मुद्रित।

१९०२ ई०

पहिली बार १००० पुस्तकें छपीं

मूल्य प्रति पुस्तक १॥) केवल प्रेस का खर्च।

# भारत-भ्रमण के द्वितीयखण्ड का सूचीपत्र।

# द्वितीयखण्ड का शुद्धि पत्र।

| पृष्ट | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५ | ६ | रंग | लाही |
| १७ | १५ | भर लोमों | भर लोगों |
| २३ | २ | ५६२३४५ | ५२६३४५ |
| २६ | १४ | शिवलिगों में | शिवलिगों में प्रधान |
| ३२ | ६ | कारण किया | धारण किया |
| ३७ | १४ | सेना से | सेना के |
| ४२ | ९ | राजचंद्र | रामचंद्र |
| ५० | ९ | फंक किया | फेंकदिया |
| ५८ | २३ | चरणों | चारणों |
| १२२ | १ | २७९ | २८९ |
| १२३ | १४ | इब्राहिक | इब्राहिम |
| १२७ | ९ | हलने | हेलने |
| १२७ | १५ | लोधा | लोधी |
| १२६ | १९ | अमेक | अनेक |
| १४४ | २६ | ओर पर | छोर पर |
| १४७ | ७ | आमियों नें | आदमियों ने |
| १५१ | ४ | ससर स्थान | सदर स्थान |
| १८३ | २१ | विपडा | वियडा |
| १९० | २० | रेशम कैथलिक | रोमन कैथ-लिक |
| २०२ | १० | पथा | पृथा |
| २०७ | २७ | महाभज | महाभुज |
| २७१ | २५ | होती हैं | होते हैं। |
| २८२ | २० | स्वर के | स्वर से |
| २९३ | १४ | परस्त | परास्त |
| २९३ | १९ | विचारते हुये | विचरते हुये |
| ३०४ | १३ | संताय | संताप |
| ३०५ | २२ | जनता हुआ | जनाता हुआ |
| ३११ | १ | पुरतहा | पुस्तहा |
| ३२७ | १५ | लकड़ियां | लड़कियों |
| ३३७ | ३ | डिगीन | द्वितीजन |
| ४७६ | १७ | बीका | बीकानेर |
| ४७८ | ११ | ५ मील | ५० मील |
| ४८४ | १७ | झंझट | झंझर |
| ४८८ | १६ | बच्चे का सिर | बच्चे का १ सिर |
| ४८८ | २० | बुर्ज | बुर्ज हैं |
| ४८८ | २३ | ओर | छोर |
| ४९० | १३ | पड़ता है | पड़ा है |
| ४९१ | २६ | ३३ फीट | ३$\frac{3}{8}$ फीट |
| ४९२ | १३ | मूजरद | जमूरद |
| ४९४ | ३ | मैरोजी | भैरवजी |
| ४९४ | २० | यहां | जहां |
| ४९५ | २५ | घेरे | घेरे में |
| ५१२ | २५ | सळमशाह | सलीमशाह |
| ५१६ | १६ | अकसर | अकबर |
| ५१६ | १७ | औरजजेव | औरंगजेब |
| ५२८ | १८ | हाथरस | हाथरस से |
| ५३० | १४ | किनारे | किनारे से |

# भारत-भ्रमण।

## दूसरा खण्ड।

श्रीगणेशाय नमः।

साधुचरनपरसाद, निज हृदय संभु पदलाय।
द्वितियखण्ड 'भारतभ्रमन' आरम्भत हरषाय॥

# पहिला अध्याय।

## (विहार में) रिविलगंज, छपरा, हरिहरक्षेत्र और हाजीपुर।

## रिविलगंज।

मेरी द्वितीय यात्रा सन् १८९२ ई० ( संवत् १९४९ ) के मार्च (चैत्र) में मेरी जन्मभूमि 'चरजपुरा' से प्रारम्भ हुई।

चरजपुरा से १२ मील पूर्वोत्तर सरयू नदी के दूसरे पार, अर्थात् उसके बाएं किनारे पर सारन जिले में गोदना के अन्तर्गत 'रिविलगंज' नामक एक तिजारती कसबा है। 'बङ्गाल नर्थवेष्ट रेलवे' की ६ मील की शाखा छपरे से रिविलगंज आई है।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय रिविलगंज में १३४७३ मनुष्य थे, अर्थात् ११५१६ हिन्दू, १९५१ मुसलमान और ६ कृस्तान।

हेनरी रिविल साहब ने, जो कष्टम के कलक्टर थे, सन् १७८८ ई० में 'ईष्ट इंडियन कम्पनी' की ओर से यहां आकर कष्टम (महसूल) की चौकी नियत की। इनके नाम से रिविलगंज कसबा बस गया। बहुत दिनों तक रह कर यहां हीं वह मर गये। रिविलगंज में इनकी कबर है, जिसकी पूजा अनेक जन अपनी मनोकामना सिद्धि होजाने पर करते हैं। रिविलगञ्ज में रिविल साहब की कोठी बेतिया के महाराज के दखल में है।

रिविलगञ्ज सारन जिले में सबसे बड़ा सौदागरी का बाजार और शायद कुल हिन्दुस्तान में तेल के बीजों का, खास कर तीसी के लिये सबसे बड़ा बाजार है। सन् १८७६-७७ में सारन जिले में २६५८००० रुपये के तेल के बीज की आमदनी और ३७०००० रुपये की रफ्तनी हुई थी। पर अब दिन पर दिन रिविलगञ्ज बाजार की घटती हुई जाती है। मकई, मटर, जव, तेल के बीज, सोरा और गेहूँ रिविलगञ्ज से दूसरे देशों में जाते हैं। चावल, लवण, और खुर्दा चीजें दूसरे देशोंमे आती हैं। बंगाल और पश्चिमोत्तर के बीच में इससे होकर सौदागरी होती है। अस्पताल से पश्चिम एक एडेड स्कूल है, जिसमें माइनर तक की शिक्षा दीजाती है। प्रधान सड़क पर रात को रोशनी होती है।

महर्षि गौतम का मन्दिर गोदना बस्ती से दक्षिण और रिविलगञ्ज से पूर्व सरयू के किनारे पर है, जो हाल में बढ़ाया गया है। मन्दिर से उत्तर गौतम पाठशाला बनी है, जिसको नेव बंगाल के लेफ्टिनेंटगवर्नर टामसन साहब ने सन् १८८४ ई० में दी थी। पाठशाले में संस्कृत शिक्षा दी जाती है।

पहले रिविलगंज से पश्चिम गंगा और सरयू के संगम पर कार्तिकी पूर्णिमा का बड़ा मेला हुआ करता था। सन् १८०१ ई० में लार्ड मार्निंगटन की आज्ञा से यह बड़ा मेला हरिहरक्षेत्र के छोटे मेले में मिला दिया गया। (अब गङ्गा और सरयू का संगम रिविलगंज से लगभग १४ मील पूर्व है) अब भी

कार्तिकी पूर्णिमा को रिविलगंज में मेला लगता है। पश्चिम भदपा से पूर्व गोदना तक ३ मील लम्बाई में सरयू स्नान का मेला रहता है। बैल का मेला भदपा में और अन्यान्य वस्तुओं का रिविलगंज में होता है और एक सप्ताह रहता है। भदपा से गोदना तक सरयू के किनारे स्थान स्थान पर देवमन्दिर, साधु लोगों के मठ और राजा और जिमीदारों की छावनियां हैं, जिनमें बेतिया के महाराज की छावनी सबसे उत्तम बनी है। हथुआ के महाराज की छावनी के निकट एक मठ में 'सूरदास' नाम से प्रसिद्ध एक अंधे वृद्ध साधु हैं, जो वस्त्र नहीं छूते. वलकल की लंगोटी पहनते हैं, जाड़े के दिनों में अग्नि के आधार से रहते हैं और विदेशी साधुओं को एक रात्रि भोजन देते हैं।

## छपरा।

रिविलगंज से ६ मील पूर्व छपरे का रेलवे स्टेशन है। सूबे बिहार के पटना विभाग में सारन जिले का सदर स्थान और प्रधान कसबा (२५ अंश ४६ कला ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश ४६ कला ४९ विकला पूर्व देशान्तर में) सरयू नदी के बाएं किनारे पर ४ मील लम्बा और लगभग ½ मील चौड़ा 'छपरा' एक सुंदर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय छपरे में ५७३५२ मनुष्य थे (२८७४३ पुरुष और २८६०९ स्त्रियां) अर्थात् ४४३५८ हिन्दू, १२८२८ मुसलमान, ९३ कृस्तान, ६७ जैन, ४ बौद्ध और १ दूसरे। मनुष्य-गणना के अनुसार छपरा भारतवर्ष में ६५ वां और बंगाल में ९ वां शहर है।

१८ वीं शताब्दी के अन्त में छपरे में फरासीसी, डच और पोर्चुगीजों की कोठियां थीं। उस समय सारन जिला सोरा के लिये प्रसिद्ध था।

कसबे से पश्चिम मैदान में राय बाबू बनवारीलाल की बनवाई हुई एक उत्तम सराय है। बड़े आंगन के चारो बगलों पर छतदार कोठरियां और उनके आगे ओसारे बने हैं। फाटक पर घड़ी का ऊंचा बुर्ज है, जिसके पूर्व एक पक्का सरोवर है। सराय के निकट नित्य मध्याह्न में तोप की एक आवाज

की जाती है। बाबू बनवारीलाल ने गवर्नमेंट में रुपया जमा कर दिया है, जिसके सूद से सराय की मरम्मत होती है। परदेशी मुसाफिरों को एक रात्रि सीधा मिलता है और खैराती अस्पताल का खर्च चलता है। कसबे के उत्तर रेलवे स्टेशन की ओर मुन्शी रामसहाय का बनवाया हुआ बहुत सुन्दर पञ्च मन्दिर है, जिसके आगे लम्बा चौड़ा सुन्दर मण्डप और पांचो शिखरों के ऊपर चारो ओर मुलम्मेदार कलशियों की पंक्तियां हैं। कसबे के पश्चिम-दक्षिण छपरे के प्रधान देवता धर्मनाथ जी का मन्दिर है। कसबे के मकानों में गुलटेन-गंज वाले राय बहादुर बाबू महावीरप्रसाद की कोठी उत्तम है, जिसके पश्चिम धनी कोठीवालों और बजाज लोगों की दुकानें हैं। कसबे के पासही पूर्व जेलखाने के निकट गवर्नमेंट स्कूल है और लगभग १ मील पूर्व दीवानी और फौजदारी कचहरियों की उत्तम इमारतें हैं; जिससे दक्षिण हथुआ के महाराज की सुंदर कोठी बनी है। कचहरीं से उत्तर एकेडमी स्कूल और दहियावां में इन्स्टीट्यूशन स्कूल है। छपरे की प्रधान सड़कों पर रात्रि में रोशनी होती है। छपरे से सोनपुर, मुजफ्फरपुर मोतिहारी, सिवान और गुटनी को सड़कें गई हैं।

**सारन जिला**–जिले के पूर्वोत्तर गण्डकी नदी, जो चंपारन और मुजफ्फरपुर जिलों से इसको अलग करती है; दक्षिण सरयू नदी. जिसके बाद बिहार के शाहाबाद जिले और पश्चिमोत्तर देश के बलिया जिले; और पश्चिम पश्चिमोत्तर प्रदेश का गोरखपुर जिला है। सारन जिले का क्षेत्रफल २६२२ वर्गमील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सारन जिले में २४७१८१६ मनुष्य थे। बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन के जिलों में हवड़े जिले को छोड़ कर सारन जिले के मनुष्यों के औसत घनापन सबसे अधिक हैं। निवासी हिन्दू हैं। हिन्दुओं के आठवें भाग से कुछ अधिक मुसलमान हैं। हिन्दुओं में राजपूत, ब्राह्मण, कोइरी, कांदू, कुर्मी और चमार अधिक हैं। इनके बाद भूमिहार, दुसाध, नोनियां और तेली की संख्या है।

सारन पहिले चंपारन के साथ एक जिला था, परंतु सन् १८६७ ई० में

दो मजिस्ट्रेट के अधिकार में अलग अलग दो जिले हो गए। अब तक सारन के जज मोतिहारी में जाकर के चंपारन जिले के सेशन का काम करते हैं। सन् १८४८ ई० में सिवान और सन् १८७५ में गोपालगंज सबडिवीजन हुए।

सारन जिले में नोनियां और गरीब लोग सोरा बनाते हैं। लाह के कीड़े पीपल के वृक्षों में होते हैं। सैकड़ों मन रंग दूसरे देशों में भेजे जाते हैं। सड़क पर बिछाने योग्य कंकड़ बहुत निकलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सारन जिले के कसवे सिवान में १७७०९, रिविलगंज में १३४७३ और पानापुर चगवन, रानीपुर टेंगरही, माझी और परसा में दश हजार से कम मनुष्य थे।

रेलवे—छपरे से 'बंगाल नर्थ वेष्ट रेलवे' की लाइन तीन ओर गई है।

(१) छपरे से पूर्व को ओर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

२३ बनवारचक, जिससे ६ मील दक्षिण-पूर्व पलेजाघाट का स्टेशन है।

२१ सोनपुर।

३३ हाजीपुर।

६४ मुजफ्फरपुर जंक्शन।

९६ समस्तीपुर जंक्शन।

११९ दरभंगा जंक्शन।

१६२ निर्मली।

१७२ भभटियाही।

१८६ प्रताप गंज।

१९४ कनवाघाट (कोशी के दहिने किनारे पर)॥

मुजफ्फरपुर जंक्शन से पश्चिमोत्तर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४९ मोतीहारी।

६२ सिगौली।

७६ बेतिया॥

मुजफ्फरपुर से दक्षिण-पूर्व—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३२ समस्तीपुर जंक्शन।

९२ मुकामा जंक्शन॥

समस्तीपुर जंक्शन से दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३८ सेमरिया घाट।

५८ मुकामा घाट।

दरभंगा जंक्शन से पश्चिमोत्तर—

मील - प्रसिद्ध स्टेशन।

१४ कमलौल।

२६ जनकपुर रोड (पुपुरी)।

४२ सीतामढ़ी।

६१ बैरगिनियां॥

दरभंगा जंक्शन से दक्षिण—

मील - प्रसिद्ध स्टेशन।

२३ समस्तीपुर जंक्शन।

८३ मुकामा जंक्शन।

(२) छपरे से पश्चिम कुछ उत्तर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१७ एकमा।

३८ सिवान (अलीगंज)।

५१ मैरवा।

११२ गोरखपुर जंक्शन, जहांसे उत्तर २९ मील की शाखा उस्का बाजार को गई है।

१२८ मगहर।

१५२ बस्ती।

११० मनिकापुर जंक्शन।

२०७ गोंडा जंक्शन।

२४५ बहराइच।

२६६ नानपाड़ा।

२७८ नैपालगंज॥

मनिकापुर जंक्शन से दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१४ नवाबगंज।

२० लकड़मंडी घाट॥

गोंडा जंक्शन से पश्चिम—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१८ कर्नैइल गंज।

३२ घाघरा घाट॥

(३) छपरे से पश्चिम—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

६ रिविलगंज।

७ रिविलगंज घाट।

## हरिहरक्षेत्र।

छपरे से २९ मील पूर्व 'सोनपुर' का रेलवे स्टेशन है। सारन जिले मे गंडकी नदी के दहिने, गंगा और गंडकी के संगम के निकट सोनपुर एक छोटी

बस्ती है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय केवल २९९ मनुष्य थे। सोनपुर में मही नामक एक छोटी नदी के निकट हरिहरनाथ महादेव का मंदिर है। यहां कार्तिकी पूर्णिमा को हरिहरक्षेत्र का प्रख्यात मेला होता है। उस दिन मंदिर में जल चढ़ाने वाले मनुष्यों की बड़ी भीड़ होती है। बहुतेरे लोग कलसियों का जल शिवलिंग पर वा शिव के हौज में चढ़ाते हैं और बहुतेरे पवित्र जल से भरी मट्टी की कलसियां हौज में गिरा देते हैं। कलसियों के टुकड़ों का ढेर लग जाता है। लोग मंदिर के एक द्वार से प्रवेश करके दूसरे द्वार से निकलते हैं।

हरिहरक्षेत्र का मेला दो सप्ताह तक होता है, परंतु इसकी बढ़ती पूर्णिमा के दो दिन पहिले से दो दिन पीछे तक रहती है। यह मेला भारतवर्ष के पुराने और सबसे बड़े मेलों में से एक है। मेले का पड़ाव बड़े बाग में पड़ता है। सौदागरी की प्रधान वस्तु हाथी, घोड़े और खुदरी चीजें हैं। आसाम और बंगाल से बहुत से हाथी आते हैं और पश्चिम पंजाब तक खरीद होकर जाते हैं। घोड़े दूर दूर के प्रदेशों से यहां बिक्री के लिये आते हैं।

यहां ऐसा प्रसिद्ध है कि श्री रामचन्द्र और लक्ष्मण जी विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से जनकपुर जाने के समय विश्वामित्र आदि ऋषियों के साथ सोन नदी पार होने के उपरांत इस स्थान में होते हुए जनकपुर गए थे।

वाराहपुराण की कथा देखने से जान पड़ता है कि हिमालय पर्वत पर, जहां गंडकी नदी से शालग्राम निकलते हैं और विष्णु भगवान ने ग्राह से गजका उद्धार किया था, उस स्थान का नाम हरिहरक्षेत्र है। गंडकी नदी के संबंध से पीछे यही स्थान हरिहरक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध हो गया। गंडकी नदी लग भग ४०० मील बहने के उपरांत यहां गंगा में मिल गई है।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा।**—देवीभागवत ( ९ वां स्कंध- १७ वें अध्याय से २४ वें अध्याय तक ) और ब्रह्मवैवर्त ( प्रकृतिखण्ड के १९ वें अध्याय से २१ वें अध्याय तक ) लक्ष्मीजी शाप के कारण से धर्मध्वज की पुत्री

हुई और उनका नाम तुलसी पड़ा। तुलसी का विवाह शंखचूड से हुआ। जब विष्णु ने ब्राह्मण रूप धर कर शंखचूड का कवच मांग लिया और छल से तुलसी सहित रमण किया, तब शंखचूड शिव के हाथ से मारा गया। तुलसी ने विष्णु को शाप दिया कि तुम संसार में पाषाण रूप होगे। विष्णु बोले कि तुलसी का शरीर भरतखण्ड में गंडकी नाम नदी होगा। तुलसी विष्णुलोक में चली गई। उसका शरीर गंडकी नदी और उसके केशों का समूह तुलसी वृक्ष हुआ। विष्णु शालग्राम शिला हुए।

वाराहपुराण—(१३८ वां अध्याय) जहां विष्णु भगवान तप कर रहे थे, वहां शिवजी प्रगट होकर उनसे बोले हे भगवन तप करते समय आप के गंडस्थान अर्थात कपोल से स्वेद उत्पन्न हुआ है। इस स्वेद रूपी जल से गंडकी नाम नदी लोक में प्रसिद्ध होगी और आप इस गंडकी के गर्भ में सदा निवास करेंगे। जो मनुष्य संपूर्ण कार्तिक मास नदी में स्नान करेंगे, वे मुक्ति फल पावेंगे।

गण्डकी नदी में एक ग्राह रहता था। एक हाथी बहुत हाथियों के साथ वहां जाकर जलक्रीड़ा करने लगा। ग्राह ने पूर्व वैर से उस हाथी के पैर को पकड़ लिया और दोनों युद्ध करने लगे। वरुण के निवेदन से विष्णु भगवान ने वहां आकर सुदर्शन चक्र से ग्राह का मुख फाड़ गज को जल से बाहर किया। उस समय चक्र के वेग से गण्डकी की शिला बहुत ही चिन्हित होगई। उन्ही चिन्हों से भावी वश वज्रकीट नामक क्रिमि उत्पन्न हुए और गण्डकी में चक्र उत्पन्न होते हैं। विष्णु बोले भक्तों की रक्षा के निमित्त हमारी आज्ञा से सुदर्शन ने गण्डकी नदी में जहां जहां भ्रमण किया, तहां तहां सब पाषाणों में सुदर्शन चक्र का चिन्ह होगया, इसलिये पाषाणों का गण्डकीचक्र नाम हुआ और वह स्थान चक्रतीर्थ कहलाया, जहां स्नान मात्र करने से मनुष्य अति तेजस्वी हो, सूर्य लोक में निवास करते हैं। जिस दिन से शालंकायन के शिष्य नन्दी आमुष्यायन को गोधन सहित मथुरा से लाए, उस दिन से उस स्थान का नाम हरिहरक्षेत्र हुआ।

शिवजी ने जिस शालग्राम क्षेत्र में निवास किया और विष्णु भगवान को वर दिया, उस क्षेत्र में स्नान कर पितरों के तर्पण करने से पितर तृप्त हो स्वर्ग में वास करते हैं। शालग्राम क्षेत्र चारों दिशाओं में वारह वारह योजन है, जहां विष्णु शालग्राम रूप हो नित्य निवास करते हैं। (१३९ वां अध्याय) शालग्राम क्षेत्र हरिहरात्मक अर्थात् दोनों का रूप है।

गण्डकी नदी जहां गङ्गाजी में जाकर मिली है, वहांका पुण्य कौन वर्णन कर सकता है।

(वामनपुराण के ८५ वें अध्याय में लिखा है कि पर्वत के ऊपर एक सरोवर में ग्राह ने गज को पकड़ा था। और श्रीमद्भागवत के ८ वें स्कन्ध के दूसरे अध्याय में है कि क्षीरसागर से घिरे हुए त्रिकूट पर्वत के वन के सरोवर में ग्राह ने गज को पकड़ा। विष्णु ने ग्राह को मार गज का उद्धार किया)

पद्मपुराण—(पातालखण्ड-७९ वां अध्याय) गण्डकी नदी, के एक देश में शालग्राम का महास्थल है। उसमें से जो पाषाण उत्पन्न होते हैं, वे शालग्राम कहाते हैं।

## हाजीपुर।

सोनपुर के रेलवे स्टेशन से ४ मील पूर्व हाजीपुर का रेलवे स्टेशन है। सोनपुर के सन्मुख गण्डकी नदी के बाएं मुजफ्फरपुर जिले में सवडिवीजन हाजीपुर एक कसवा है। दोनों के बीच में गण्डकी नदी पर लोहे का रेलवे पुल बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हाजीपुर में २१४८७ मनुष्य थे, अर्थात् १७८६४ हिन्दू, ३६१२ मुसलमान, ६ क्रस्तान और ५ दूसरे।

लगभग ५०० वर्ष हुए, हाजी इलियास ने हाजीपुर को नियत किया। पुराने किले में इलियास की पत्थर की छोटी मसजिद है। हाजीपुर में सवडिवीजन की कचहरियां और पेवन्दी आम के, जो बम्बई आम के भांति होते हैं, बहुतेरे बाग हैं।

# दूसरा अध्याय।

## (बिहार में) सिवान, (पश्चिमोत्तर में) गोरखपुर, मगहर, वस्ती, (अवध में) गोंडा, वलरामपुर, देवी-पाटन, वहराइच, भींगा और नवावगंज।

## सिवान।

छपरे से १७ मील पश्चिम एकमा में रेलवे का स्टेशन है, जिससे चार पांच मील दक्षिण-पश्चिम मेहन्दार में एक वड़े सरोवर के निकट महेन्द्रनाथ शिव का मंदिर है। तालाव में पुरइन वहुत होती है। लोग कहते हैं कि वहुत काल हुए, नैपाल के राजा महेन्द्रसिंह ने इस सरोवर और मंदिर को वनवाया। वैशाख और फाल्गुन की शिवरात्रि को यहां मेला होता है। चारो ओर से वहुतेरे लोग जल की कांवर लेजाकर शिव के ऊपर जल चढ़ाते हैं।

एकमा से २१ मील (छपरे से ३८ मील) पश्चिम सिवान का रेलवे स्टेशन है। सारन जिले का सवडिवीज़न दाहा नदी के किनारे पर सिवान एक छोटा कसवा है, जिसको अलीगंज भी कहते हैं। सन् १८४८ ई० में सवडिवीज़न सिवान में नियत हुआ। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिवान में १७७०९ मनुष्य थे; अर्थात् ११५१८ हिन्दू, ६१८५ मुसलमान और ६ क्रुस्तान। पीतल, फूल और मट्टी के वर्तन और छींट की दस्तकारी के लिये सिवान प्रसिद्ध है।

**हथुआ**—सिवान से ८ मील उत्तर हथुआ ग्राम में एक राजा हैं। राजवंश भूमिहार ब्राह्मण है। वावू महेशदत्तशाही के पुत्र वावू छत्रधारीशाही को अंगरेजी सरकार ने महाराज की पदवी दी। महाराज छत्रधारीशाही के पुत्र महा-

राज रामसहायशाही, इन के पुत्र महाराज उग्रप्रतापशाही और उग्रप्रतापशाही के पुत्र महाराज राजेन्द्रप्रतापशाही थे; जिनके पुत्र हथुआ के वर्तमान राजा महाराज कृष्णप्रतापशाही बहादुर सी. ए. आई. हैं । हथुआ में महाराज का शीशमहल, पुष्पवाटिका और वर्त्तमान महाराज की माता का बनवाया हुआ गोपाल-मन्दिर देखने योग्य है । एक पाठशाले में संस्कृत विद्या पढ़ाई जाती हैं। महाराज की जिमीदारी जिले में फैली हुई है ।

## गोरखपुर ।

सिवान से ७४ मील ( छपरे से ११२ मील ) पश्चिमोत्तर गोरखपुर का रेलवे स्टेशन है । गोरखपुर पश्चिमोत्तर प्रदेश के बनारस विभाग में जिले का सदर स्थान, जिले के मध्य में ( २६ अंश ४४ कला ८ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश २३ कला ४४ विकला पूर्व देशान्तर में ) रापती नदी के किनारे पर एक छोटा शहर हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गोरखपुर में ६३६२० मनुष्य थे, (३२६७८ पुरुष और ३०९४२ स्त्रियां) अर्थात् ४१४०२ हिन्दू, २१७४८ मुसलमान, ३९९ क्रस्तान, ४३ जैन, २० यहूदी और ८ पारसी । मनुष्य संख्या के अनुसार गोरखपुर भारत-वर्ष में ५५ वां और पश्चिमोत्तर देश में ११ वां शहर है।

यहां जिले की मामूली कचहरियों के अतिरिक्त जिला जेल, खैराती अस्पताल, उर्दू बाजार का चौक और रेलवे स्टेशन से $\frac{1}{2}$ मील पश्चिम कीर्तिचंद की बनाई हुई एक उत्तम धर्मशाला है, जिसमें मैं टिका था। गोरखपुर में लकड़ी और गल्ले की बड़ी तिजारत होती है, रापती के नीचे सरयू और गङ्गा में नौकाओं द्वारा भेजे जाते हैं । शहर के आस पास सखुए का घना जंगल हैं। शहर में नैपाली मनुष्य और बन्दर बहुत देख पड़ते हैं ।

**गोरखनाथ का मन्दिर**—रेलवे स्टेशन से २ मील पश्चिमोत्तर एक शिखरदार मन्दिर में गोरखनाथ का योगासन (गद्दी) है । मन्दिर के आगे अर्थात् पूर्व २ स्थानों में बहुतेरे त्रिशूल खड़े हैं, जो कालभैरव के त्रिशूल कहे

जाते हैं। और छोटे बड़े ९ मन्दिर हैं, जिनमें से दो तीन में शिवलिंग और महावीर की मूर्तियां हैं, शेष मन्दिरों में गोरखनाथ के संप्रदाय के साधु और महन्तों की समाधियां हैं। गोरखनाथ के मन्दिर के पश्चिमोत्तर इस सम्प्रदाय के लोगों की सैकड़ों समाधियां हैं, जिनमें कई एक पक्के और शेष सब मट्टी के चबूतरे हैं। मन्दिरों के चारों ओर दूर से दीवार है। एक मकान में व्याघ्र, हरिन, नीलगाय और मोर पाले गए हैं। घेरे से पश्चिम और दक्षिण वाटिका लगी है और पूर्व एक पक्का सरोवर बना है। (भारत-भ्रमण के पहले खण्ड में उज्जैन के वृत्तान्त में गोरखनाथ के शिष्य भर्तृहरी की कथा और धाड़ के वृत्तान्त में गोपीचन्द का जीवन-चरित्र देखो)

**गोरखपुर जिला**—जिले के पूर्व सूबे विहार में सारन और चंपारन जिले, दक्षिण सरयू नदी, पश्चिम वस्ती और फैजावाद जिले और उत्तर नैपाल राज्य है। जिले का क्षेत्रफल ४५९८ वर्गमील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गोरखपुर जिले में २९९३७३२ मनुष्य थे, जिनमें १४९६२१८ पुरुष और १४९७५१४ स्त्रियां थीं। मनुष्य-गणना के अनुसार पश्चिमोत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण जिलों से यह जिला बड़ा है। निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य-संख्या में सैकड़े पीछे लगभग १० मुसलमान हैं। चमार सब जातियों से अधिक हैं। इनके बाद क्रम से अहीर, ब्राह्मण, मल्लाह, कछिया कुर्मी, कहार, तब राजपूत का नम्बर है।

इस जिले के देउरिया तहसीली में गोरखपुर शहर से ५३ मील पूर्वोत्तर, छोटी गण्डकी नदी के उत्तर किनारे पर मझौली और दक्षिण सलेमपुर बसे हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय दोनों वस्तियों में ५५९९ मनुष्य थे, अर्थात् ४४३७ हिन्दू और ११६२ मुसलमान। मझौली में हिन्दू और सलेमपुर में मुसलमान बसते हैं। मझौली में पुराने खांदान के राजपूत राजा रहते हैं और ४ शिव मन्दिर और १ परगना-स्कूल है।

गोरखपुर जिले में ६ तहसील और १२ परगने हैं। जिले का प्रधान बाजार वरहज है। गोरखपुर शहर से एक सुंदर सड़क वरहज होकर बनारस तक

और दूसरी वस्ती होकर फैजावाद तक गई है। जिले में उत्तर और मध्य में साल के घने जङ्गल फैले हैं, परन्तु वृक्ष वहुत वड़े नहीं हैं। उत्तर के जङ्गल में वाघ होते हैं। जङ्गल की खास पैदावार जङ्गली मधु है, जिसको वटोरने का ठीका भर लोग लेते हैं और पड़ोस के कसवो में बेंचते हैं। सीमा से पर्वत की वरफदार चोटियां देख पड़ती हैं। जिले में रापती, सरयू, वड़ा गण्डक, छोटा गण्डक, कुअना, रोहिना, आमी और गुन्थी नदियां वहती हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के कसवे वरहज में ११४२१ मनुष्य और, रुद्रपुर, गोरा, लार, गोला, पनियां वंसगांव, वादलगंज, मझौली और मदनपुर में दश हजार से कम और पांच हजार से अधिक मनुष्य थे।

इतिहास—पूर्व काल में सरयू नदी के उत्तर का देश, जो इस समय गोरखपुर और वस्ती जिलों में हैं, कोशल देश में था, जिसकी राजधानी अयोध्या थी। वुद्धदेव ने जिले की सीमा के वाहर (नैपाल की तराई में) कपिला में जन्म लिया और जिले के भीतर कुसिया में शरीर त्याग किया, जहां अव तक वुद्धदेव की एक प्रतिमा है।

प्रथम इस देश पर भर लोगों का अधिकार था, पीछे वे लोग मगध के बौद्धों की प्रजा के तौर पर थे। उस खांदान की घटती के समय भर लोगों ने फिर अपनी स्वाधीनता को पाया। लगभग ५५० ई० से एरियन लोग इस देश को लेने का उद्योग करने लगे। सन् ६०० ई० में कन्नौज के राठौरों ने गोरखपुर के नए कसवे तक इस जिले को जीता। लगभग ६३० ई० में चीन के हुएंत्सङ्ग ने इस देश में वहुतेरे मठ और वुर्जों को देखा था। लगभग ९०० ई० में लड़ाके ब्राह्मणों ने दूसरे हिन्दुओं के साथ दक्षिण से राठौर प्रधानों को निकालना और वेदखल करना आरम्भ किया और उनको गोरखपुर कसवे से निकाल वाहर किया। सन् ई० की ११ वीं शताब्दी में त्रिसेन नगर का सेन इस देश का अगुआ हुआ, परन्तु भर लोगों ने पश्चिमी देशों पर उस समय तक अधिकार रक्खा, जव अकवर के राज्य के समय जयपुर के राजा ने उनको निकाल दिया। १४ वीं शताब्दी के आरम्भ में राजपूतों ने इस देश में प्रवेश

करना आरम्भ किया। धुरचंद ने धुरिया पार में और चन्द्रसेन ने सतासी में अपना अधिकार नियत किया। चन्द्रसेन ने डोमनगढ़ (गोरखपुर का किला) के डोम राजा को मार कर और किले को छीन कर शहर को दखल कर लिया। संपूर्ण शताब्दी में वुटवल और वांसी के राजाओं में लड़ाई होती रही, जिससे सम्पूर्ण देश उजाड़ होगया। सन् १३५० से १४५० ई० तक सतासी और मझौली के राजा लड़ते रहे। लगभग १४०० ई० में गोरखपुर का वर्त्तमान शहर नियत हुआ। एक शताब्दी पीछे मझौली खांदान के लोग देश के दक्षिण-पूर्व में और धुरचन्द के उत्तराधिकारी दक्षिण-पश्चिम में राज्य करते थे।

सन् १५७६ ई० में अकबर के जनरल फिदाई खां ने कुल राजाओं को परास्त करके गोरखपुर पर अधिकार किया, लेकिन देशी राजाओं द्वारा इस पर हुकूमत होती रही। सेयादतअली के अवध के नवाव होने के पश्चात् सन् १७५० ई० में अलीकासिम खां के आधीन एक बड़ी फौज ने इस जिले को अपने वश में किया। सन् १८०१ ई० की सन्धि में अवध के नवाव ने यह देश अंगरेजों को दिया, जो गोरखपुर, आजमगढ़ और बस्ती जिलों में विभक्त है।

सन् १८५७ के अगस्त में महम्मद हसन के आधीन वागियों ने जिले पर अधिकार कर लिया, पीछे नैपाल राज्य के जंगवहादुर के आधीन गोरखों ने महम्मदहसन को निकाल वाहर किया। सन् १८५८ की ६ वीं जनवरी को जिला अंगरेजी अधिकार में फिर होगया।

## मगहर।

गोरख पुर से १६ मील ( छपरे से १२८ मील ) पश्चिम मगहर का रेलवे स्टेशन है। मगहर गोरखपुर जिले के खलीलावाद तहसीली में आमी नदी के निकट एक वस्ती है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २६२३ मनुष्य थे। वस्ती से पूर्व गोरख पुर से फैजावाद जाने वाली सड़क पुल को लांघती है। कवीर जी के समाधि-मंदिर होने के कारण मगहर प्रसिद्ध है।

स्टेशन से आध मील उत्तर और मगहर बस्ती से पूर्व एक घेरे के भीतर कबीर जी का शिखरदार समाधि-मंदिर है, जिसके पूर्वोत्तर कोन के पास कबीर जी के कृत्रिम पुत्र कमाल की छोटी समाधि है। यहांके अधिकारी पुस्तहां पुस्त से मुसलमान चले आते हैं और समाधि पर जो कुछ पूजा चढ़ती है, वह लेते हैं। वे लोग मुसलमानों के मजहब पर चलते हैं, पर मद्य मांस नहीं ग्रहण करते और कबीर जी को अपना इष्ट मानते हैं। इस खांदान के बहुतेरे मुसलमानों की कबरें समाधि-मंदिर के आस पास दी गई हैं। स्थान के खर्च के लिये जागीर में एक गांव है और सरकार से चन्दा मिलता है। जिस स्थान पर बिजुली खां पठान ने कबीर जी के मृत शरीर को भूमि समर्पण किया था, उसी स्थान पर यह समाधि-मंदिर है।

इस घेरे से लगा हुआ पूर्व दूसरा घेरा है, जिसके भीतर कबीर जी और कमाल के अलग अलग समाधि-स्थान हैं। कबीर जी की समाधि पर हिन्दू रीति के अनुसार टोपी और माला रक्खे हुए हैं, और काशी वाले कबीर पंथी महंत की ओर से कई एक कबीरपंथी साधु रहते हैं। काशी के कबीरचौरा के महंत ने कबीर जी के समाधि-मंदिर और उसकी जागीर पर अपना अधिकार पाने के लिये अदालत में नालिश की थी, परंतु वह हार गए।

पहिले इस स्थान पर अगहन से मकर की संक्रांति तक बड़ा मेला होता था, पर अब धीरे धीरे मेला बहुत घट गया है। मेले के दिनों में कबीर जी को खिचड़ी अर्थात् चावल दाल चढ़ाई जाती है।

कबीर जी के मगहर में शरीर त्यागने का सन् संवत ठीक नहीं मालूम होता है। भारतवर्ष के प्रसिद्ध इतिहास लिखने वाले डाक्टर हंटर साहिब ने लिखा है कि सन् १४२० ई० के लगभग कबीर जी का देहांत हुआ और एकशाखी में यों लिखा है—

दोहा।

संवत पन्द्रह सौ औ पांचमों, मगहर कियो गवन।
अगहन सुदी एकादशी, मिले पवन सों पवन॥

इसके अनुसार कबीर जी का देहांत सन् १४४८ ई० में हुआ था। दूसरी शाखी यह है—

दोहा।

संवत पन्द्रह सौ पछत्तरा, किया मगहर को गवन।
माघ सुदी एकादशी, रलो पवन में पवन॥

कबीरपंथियों के ग्रन्थ निर्भयज्ञानसागर में लिखा है कि लोगों ने अंत समय में कबीर जो को उपदेश दिया कि आप काशो में शरीर छोड़ कर मुक्ति प्राप्त कीजिए। श्री कबीर जी ने कहा कि मैं मगहर में शरीर त्याग कर मुक्ति लूँगा। इसके उपरांत कबीर जी ने मगहर में जाकर राजा वीरसिंहदेव बघेल और बिजुली खां पठान को ज्ञान उपदेश दिया। अंत में कबीर जी का देहांत होगया। बिजुली खां ने उनके शरीर को लेजा कर मुसलमानी धर्म के अनुसार दफन कर दिया। यह सुन कर वीरसिंह देव ने चाहा कि कबीरजी की देह की क्रिया हिंदूरीति के अनुसार की जाय, इसलिये उसने लड़ाई का सामान किया। लड़ाई आरंभ होने पर आकाशवाणी हुई कि लड़ो मत कबर में देखो मुर्दा नहीं है। कबर खोदे जाने पर उसमें कबीर जी का शरीर नहीं था, क्योंकि वह मथुरा में चले गये थे। कबर में फूल मिला। (कबीर जी का जीवनचरित्र भारत-भ्रमण के प्रथम खण्ड के तृतीय अध्याय में देखो)

## बस्ती।

मगहर से २४ मील (छपरे से १५२ मील) पश्चिम बस्ती का स्टेशन है। बस्ती पश्चिमोत्तर देश के बनारस विभाग में जिले का सदर स्थान (२६ अंश ४८ कला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ४८ कला पूर्व देशांतर में) कुवना नदी के निकट एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बस्ती में १३६३० मनुष्य थे, अर्थात् ९८३२ हिंदू, ३७४४ मुसलमान, ५३ कृस्तान और १ दूसरे।

बस्ती में जेल, अस्पताल, तहसीली और स्कूल, हैं। कुवना नदी पर पुल बना है। जिले की कचहरियां ३ मील दूर हैं।

बस्ती जिला—बस्ती जिला नैपाल की पहाड़ियों और सरयू नदी के

बीच में २७५२ वर्गमील में है। इसके पूर्व गोरखपुर जिला, दक्षिण और पश्चिम अवध के फैंजाबाद और गोंडा जिले और उत्तर नैपाल का राज्य है। जिले में रापती और सरयू प्रधान नदी हैं। दक्षिण सीमा पर सरयू नदी इस को फैंजाबाद जिले से अलग करती है। जिले में ५ मील लंबी और २ मील चौड़ी बखीरा झील और ३ मील लम्बी और २ मील चौड़ी पत्था झील है। सड़क के काम योग्य कंकड़ बहुत होता है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के कसबे महदावल में १०९९१ मनुष्य और उसका में लगभग ५००० मनुष्य थे। उसका इस जिले का प्रधान बाजार है, जिसमें नैपाल राज्य से सौदागरी होती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बस्ती जिले में १७८९९६४ मनुष्य थे; अर्थात् ९०९१२५ पुरुष और ८८०८३९ स्त्रियां। निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य-संख्या के छठें भाग मुसलमान हैं। जिले में चमार दूसरी संपूर्ण जातियों से अधिक हैं, बाद क्रम से ब्राह्मण, अहीर और कुर्मी के नम्बर हैं।

इतिहास—सन् १८०१ तक यह अवध में जङ्गल उपजा हुआ गोरखपुर के सरकार के बाहर का देश था, और सन् १८६५ तक गोरखपुर के अंगरेजी जिले का हिस्सा रहा।

## गोंडा।

बस्ती से ५५ मील और मनिकापुर जंक्शन से १७ मील (छपरा से २०७ मील) पश्चिमोत्तर गोंडा जंक्शन का रेलवे स्टेशन है। गोंडा अवध प्रदेश के फैंजाबाद विभाग में (२७ अंश ७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश पूर्व देशान्तर में) फैंजाबाद से सड़क द्वारा २८ मील उत्तर जिले का सदर स्थान एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गोंडा में १७४२३ मनुष्य थे; अर्थात् ११६१३ हिन्दू, ५६७३ मुसलमान ११२ कृस्तान और २५ सिक्ख।

गोंडा अब किसी दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध नहीं है। गोंडा के देशी

क़सवे में २ सुंदर ठाकुरद्वारे, १ छोटा क़िला; गोंडा के राजाओं का पुराना महल, एक सुंदर सराय और राधाकुण्ड नामक एक पक्का सरोवर है। देशी क़सवे के पश्चिमोत्तर और इसके और सिविल स्टेशन के बीच में सिविल अस्पताल और जिला स्कूल हैं। इसके बाद बड़े बड़े आम के वृक्षों से घेरी हुई एक बड़ी झील है, जिसको राजा शिवप्रसाद ने बनवाया था। झील के बाद सिविल लाइन है। इसके पास एक बहुत सुंदर गवर्नमेन्ट बाग़ है। परेड की भूमि पर ख़ूबसूरत कचहरी के मकान खड़े हैं, जिसके दक्षिण जेल है।

**गोंडा ज़िला**—इसके पूर्व बस्ती जिला, दक्षिण घाघरा नदी जो फैजाबाद और बारावंकी जिले से इसको अलग करती है, पश्चिम बहराइच जिला और उत्तर हिमालय का निचला सिलसिला है, जो नैपाल राज्य से इसको अलग करता है। जिले का क्षेत्रफल २८७५ वर्गमील है।

गोंडा जिला बड़ा मैदान है। रापती, सरयू घाघरा इत्यादि नदियां जिले में पश्चिमोत्तर से आकर पूर्व-दक्षिण में बहती हैं। घाघरा नदी में सर्वदा और रापती में केवल बरसात में नाव चलती हैं। वनों में साल, धाम, एबोनी इत्यादि बहुमूल्य वृक्ष हैं। चीता, भालू, भेड़िया, सूअर और बहुत भांति के हरिन, और चिड़िया बहुत होती हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गोंडा जिले में १४६०६७३ मनुष्य थे; अर्थात् ७४७००३ पुरुष और ७१३६७० स्त्रियां)। निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य-संख्या के लगभग आठवें भाग मुसलमान हैं। ब्राह्मण दूसरी जातियों से बहुत अधिक हैं, जिनमें बहुत सरवरिया हैं। इनके बाद क्रम से अहीर, कोरी और कुर्मी जाति के नम्बर हैं। जिले में बलरामपुर (मनुष्य-संख्या १४८४९) नवाबगंज, कर्नैलगंज और अतरवला क़सबे हैं।

जिले में ३ प्रधान सड़क हैं; गोंडा क़सवे से फैजाबाद तक २८ मील, नवाबगंज से अतरवला तक ३६ मील और नवाबगंज से कर्नैलगंज तक ३५ मील। और छोटी सड़क गोंडा से बेगमगंज तक १६ मील, बहराइच तक ३६ मील, अतरवला तक ३६ मील कर्नैलगंज तक १५ मील और बलरामपुर तक २८ मील; कर्नैलगंज से महाराजगंज तक २८ मील, और बहराइच तक

२८ मील; अतरवला से तुलसीपुर तक १६ मील; खरगपुर से चौधारीडीह तक २८ मील और बलरामपुर से एकवना तक १४ मील।

जिले के देवीपाटन में पटेश्वरी देवी का मन्दिर, छपियां में वैष्णव का ठाकुरद्वारा, महादेवा में बालेश्वरनाथ महादेव, मछली गांव में कर्णनाथ महादेव बलरामपुर में विजलेश्वरी देवी, खरगपुर में पचरनाथ और पृथ्वीनाथ के मन्दिर यात्रा के स्थान हैं।

**इतिहास**—सेहत महत पूर्व समय में श्रावस्ती के नाम से प्रसिद्ध एक नगर था। गोंडा जिले में बलरामपुर से १० मील और एकवना से ६ मील दूर रापती नदी के दक्षिण किनारे पर सेहत महत में श्रावस्ती की तबाहियों का बड़ा बिटोर है। श्रावस्ती श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव की राजधानी थी। लव के वंश के राजा लोग श्रावस्ती में अथवा कपिलवस्तु में हुकूमत करते रहे। वाल्मीकि रामायण-उत्तर-काण्ड के १२० वें सर्ग में है कि श्रीरामचन्द्र ने अपने पुत्र कुश को कोशल देशों का राज्य और लव को उत्तर भाग के देशों का राज्य देदिया। और १२१ वें सर्ग में है कि कुश के लिये कुशावती और लव के लिये श्रावस्ती नगरी बसाई गई। सन् ई० से ६ वीं सदी के पहले बुद्धदेव के शिष्यों में से एक प्रसेनादित्य ने श्रावस्ती में बुद्ध को बुलाया। वह १९ वर्ष श्रावस्ती में रहे थे। श्रावस्ती ८ पुश्त तक बौद्धमत का केन्द्र रही। सन् ई० की दूसरी शताब्दी में यह राज्य अवध के राजा विक्रमादित्य के आधीन में था। उसके मरने से ३० वर्ष के भीतर राज्य गुप्त खांदान के पास गया। बाद यह जिला जैन राज्य का बैठक था। मुसलमानों के दूसरे विजय के समय एक डोम राजा, जिसकी राजधानी गोरखपुर में रापती के निकट डोमनगढ़ में थी, गोंडे पर हुकूमत करता था। इस जाति में अधिक प्रसिद्ध हुकूमत करने वाला राजा उग्रसेन था, जिसका एक किला महादेव परगने के डुमरियाडीह में था। उसने इस जिले के दक्षिण भाग में थारू, डोम, भर और पासी को बहुतेरे गांव दान दिए थे। १४ वीं शताब्दी के आरम्भ में कलहांसो, जनवार और विसेन क्षत्रियों ने डोमों का राज्य विनाश कर दिया।

अकबर के राज्य के समय अवध प्रदेश के इस विभाग में एकवना और अतरौला के अतिरिक्त किसी की ताकतवर प्रधानता नहीं थी।

सन् १८५७ के बलवे में गोंडा के राजा लखनऊ की बेगम में जा मिला। लखनऊ का छुटकारा होने पर उसने एक बड़ी फौज के साथ चमनाई नदी पर अपना खीमा डाला, परन्तु अंगरेजों ने गोंडा के राजा को खदेड़ दिया और उसकी मिलकियत जब्त करके बलरामपुर के महाराज और शाहगंज के सर मानसिंह को बख्शिश देदी।

## बलरामपुर।

गोंडा कसबे से लगभग २८ मील उत्तर गोंडा जिले में रापती नदी से लगभग २ मील दक्षिण सुवावन नदी के उत्तर किनारे पर बलरामपुर एक छोटा कसबा है। गोंडा से बलरामपुर तक सिकड़म चलता है। अवध के ताल्लुकेदारों में बलरामपुर के राजा सबसे धनी हैं।

सन् १८९१ की मनुष्यगणना के समय बलरामपुर में १४८४९ मनुष्य थे। अर्थात् ९८६९ हिन्दू, ४९४९ मुसलमान और ३१ कृस्तान।

महाराज का महल बड़े कोट से घेरा हुआ है, जिसके एक बगल पर रहने के मकान और आफिस, और दूसरे बगल पर अस्तबल और बाहरी के मकान हैं। बलरामपुर में छोटे बड़े ४० देवमन्दिर, एक नया विजलेश्वरी देवी का पत्थर का मन्दिर, १९ मसजिदें, १ बड़ा स्कूल और २ अस्पताल हैं। बाजार में चारों ओर के देश से चावल का व्यापार होता है और कपड़ा, कंबल, छुरी, इत्यादि वस्तु बनती हैं।

इतिहास—१४ वीं शताब्दी के मध्य में जनवार राजपूतों ने उस देश को जीत लिया। जनवार प्रधानों में से एक से बलरामदास थे, जिन्होंने बलरामपुर को नियत किया। सन् १७७७ ई० में राजा नवलसिंह उस मिलकियत का मालिक हुआ। यद्यपि राजा की सेना से वह कई बार परास्त हुए, पर उन्होंने कभी उसकी हुकूमत स्वीकार नहीं की। राजा नवलसिंह

के पोते सर दिग्विजयसिंह ने सन् १८३६ ई० में मिलकियत का कब्जा हासिल किया। सन् १८५७ ई० के बलवे में रुहेलखण्ड के सब प्रधानों में से वह अकेलेही अंगरेजी सरकार की ओर रहे, जिससे उनको बहराइच जिले में वही मिलकियत और तुलसीपुर परगना और महाराज और के. सी. एस. आई. की पदवी मिली।

# देवीपाटन।

बलरामपुर से १४ मील उत्तर गोंडा जिले के देवीपाटन बस्ती में पटेश्वरी देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है, जहां चैत्र की नवरात्रि में देवी के दर्शन पूजन का बड़ा मेला होता है और लगभग १० दिन रहता है। मेले में लगभग १००००० मनुष्य और विशेष पहाड़ी लोग और पहाड़ी असबाब आते हैं। सौदागरी की प्रधान वस्तु पहाड़ी टांगन, कपड़ा, लकड़ी, चटाई, घी, लोहा, दारचीनी इत्यादि हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि जब द्रोणाचार्य ने कुंती के पुत्र कर्ण को ब्रह्मास्त्र चलाने की विद्या सिखलानी अस्वीकार की, तब कर्ण ने महेन्द्र पर्वत पर जाकर परशुराम जी की सेवा कर उनसे ब्रह्मास्त्र चलाने की विद्या सीखी और राजा दुर्योधन से मिलकर कुछ राज्य पाया। उसके उपरान्त जरासंध ने कर्ण को मालिनी नगरी दी, जिस पर उसने दुर्योधन के आधीन राज्य किया। इसी स्थान पर मालिनी नगरी थी। एक समय पटेश्वरी के वर्तमान मन्दिर के स्थान पर पुराने किले की तबाहियां थीं। सन् ई० की दूसरी शताब्दी के मध्य भाग में बौद्ध लोगों की घटती के समय विक्रमादित्य नामक राजा अयोध्या में आया और पुराने किले के स्थान पर उसने एक मन्दिर बनवाया। १४ वीं शताब्दी के अंत में वा १५ वीं के आरम्भ में रतननाथ ने उस जीर्ण मन्दिर को फिर से बनवाया। कई सौ वर्ष तक बहुत यात्री, खास कर गोरखपुर और नैपाल से आवागमन करते रहे। १७ वीं शताब्दी में औरङ्गजेब के अफसर ने मन्दिर का विनाश कर दिया, लेकिन पीछे शीघ्र ही यह वर्तमान छोटा मन्दिर बनगया।

# बहराइच।

गोंडे से ३८ मील (छपरे से २४५ मील) पश्चिमोत्तर बहराइच का रेलवे स्टेशन है। अवध प्रदेश के फैजाबाद विभाग में जिले का सदर स्थान और प्रधान कसबा जिले के मध्य भाग में बहराइच एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इसमें २४०४६ मनुष्य थे; अर्थात् १२३१० मुसलमान, ११५८२, हिन्दू, ७७ कृस्तान, ४६ जैन, २८ सिक्ख और ३ यहूदी।

कसबा बढ़ती पर है। प्रधान सड़क पर रात में रोशनी होती है। घाघरा के पुराने बेड के ऊंचे किनारे पर युरोपियन अफसरों के बंगले और सरकारी इमारते हैं। सन् १८८१ ई० से मवेसियों का एक सालाना मेला होता है। बहराइच में सइयद सालार मसूद की सुन्दर दरगाह है। वह एक प्रसिद्ध लड़ाका था। लगभग सन् १०३३ ई० के उसने बहराइच पर आक्रमण किया और कई एक विजय पाने के उपरान्त परास्त होकर हिन्दू राजाओं द्वारा मारा गया। दरगाह के पास ज्येष्ठ में मेला होता है, जिसमें लगभग १५०००० हिन्दू और मुसलमान यात्री आते हैं। आसिफुद्दौला का बनवाया हुआ दौलत-खाना अब उजड़ रहा है।

**बहराइच जिला**—इसके पूर्व गोंडा, दक्षिण गोंडा और बाराबंकी जिले, पश्चिम कौरियाला और घाघरा नदियां, जो खीरी और सीतापुर जिलों से इस जिले को अलग करती है और उत्तर नैपाल राज्य है। जिले का क्षेत्रफल २७४० वर्गमील हैं।

वर्त्तमान शताब्दी के पहले भाग में एक युरोपियन लकड़ी के सौदागर ने लकड़ियों को बहा लेजाने की सुगमता के लिये सरयू की धार को गोंडा जिले में से फेर कर बहराइच जिले में कौरियाला नदी में मिला दिया। संगम से नीचे नदी को कोई सरयू कोई घाघरा कहते हैं। जिले के उत्तर भाग में बहुमूल्य लकड़ी का वन है, जो सन् १८८०-८१ ई० में २५७ वर्गमील था।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय वहराइच जिले में १००६०११ मनुष्य थे; अर्थात् ५६२३४५ पुरुष और ४७९६६६ स्त्रियां। निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य-संख्या में छठवें भाग से कुछ अधिक मुसलमान हैं। संपूर्ण जातियों में अहीर अधिक हैं। इसके वाद क्रम से कुर्मी, चमार, ब्राह्मण जातियों के नम्बर हैं. इस जिले में नानपाड़ा एक कसवा और जरावल भोंगा और वहरामपुर वड़ी वस्ती हैं।

इतिहास—पूर्व समय में यह जिला अयोध्या राज्य के कोशल देश के उत्तरी भाग में था और रामचन्द्र के पुत्र लव ने, जिसकी राजधानी श्रावस्ती में थी, जो अव गोंडा जिले में सेहत महत करके प्रसिद्ध है, इस पर हुकूमत किया।

यह जिला भर लोगों के अधिकार में था, जिनके सन्तानों को राजपूतों ने जीत लिया। सन् १०३३ ई० में सैयद सालार मसूद के आधीन मुसलमानों ने वहराइच में आकर देश को लूटा, परन्तु राजपूतों ने परास्त करके सवको मारडाला। १४ वीं शताब्दी के अन्त तक कई परगनों में भर प्रधान हुकूमत करते थे। अकवर के राज्य के समय नैपाल तराई के हिस्से के साथ वह-राइच जिला एक डिवीज़न वना, जो सरकार वहराइच कहलाता था। उसमें ११ परगने थे।

## भींगा।

वहराइच कसवे से २४ मील पूर्वोत्तर वहराइच जिले के भींगा परगने का प्रधान स्थान रापती नदी के वाएं किनारे पर भींगा एक वस्ती है, जिसमें वहां के राजा रहते हैं। सन् १८८१ में ४८९५ मनुष्य थे। भींगा में राजा का महल और राजा का एक स्कूल और एक अस्पताल है।

लगभग ३०० वर्ष हुए, एकवना के राजाओं में से एक ने भींगा को वसाया। उससे लगभग १५० वर्ष पीछे वड़ी जिमीदारी के साथ परगना गोंडा के राजा के छोटे पुत्र को दिया गया, जिसके वंशधर भींगा के

राजा हैं। वर्तमान राजा उदयप्रतापसिंह इंगलेण्ड हो आए हैं, जो इस समय भारत-वर्ष के लेजिसलेटिव कौंसिल के एक मेम्बर हैं।

## नवावगंज।

मनिकापुर जंक्शन से १४ मील दक्षिण ( छपरा से २०४ मील पश्चिम ) नवावगंज का रेलवे स्टेशन है। नवावगंज गोंडा जिले में सरयू नदी से कई एक मील उत्तर गल्ले का प्रसिद्ध वाजार है, जिसको १८ वीं सदी में अवध के नवाव सिराजुद्दौला ने वसाया। इसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ८३७३ मनुष्य थे। नवावगंज में वीस पचीस देव मन्दिर, ३ मसजिद और एक छोटी सराय है। चावल, तेल के वीज, गेहूँ, मकई, चमड़ा, इत्यादि वस्तुएं नवावगंज से दूसरी जगह जाती हैं और लवण, कपड़ा और मट्टी के वर्तन आते हैं।

# तीसरा अध्याय।

### (अवध में) अयोध्या।

## अयोध्या।

नवावगंज से ६ मील और मनिकापुर जंक्शन से २० मील दक्षिण (छपरे से २१० मील पश्चिम, कुछ उत्तर ) अयोध्या के सामने उत्तर सरयू के वाएं किनारे पर लकड़मण्डी का रेलवे स्टेशन है। जिसके निकट वह स्थान है, जहां त्रेतायुग में राजा दशरथ ने अश्वमेध और पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। लकड़-मण्डी और अयोध्या के वीच में सरयू दो धारों से वहती है। दोनों पर नाव के पुल वने हैं। पुलों के वीच वालू पर तख्ते विछाए गये हैं। पुलों का महसूल एक आदमी का एक पैसा लगता है। वरसात में वोट चलता है।

अवध प्रदेश के फैजावाद जिले में फैजावाद कसवे से ६ मील पूर्वोत्तर

सरयू नदी के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर अयोध्या एक प्रसिद्ध तीर्थ और सप्त पुरियों में से एक पुरी है।

अयोध्या में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २५४५ मकान (जिनमें ८६४ पक्के) और ११६४३ मनुष्य थे; अर्थात् ९४९९ हिन्दू, २१४१ मुसलमान और ३ दूसरे। ९६ देवमन्दिर, जिनमें से ६३ वैष्णव-मन्दिर और ३३ शैव-मन्दिर, और ३६ मसजिदें थी। लक्ष्मणघाट से थोड़ी दूर ९० फीट ऊंचे टीले पर जैनों के आदिनाथ का मन्दिर है। कनकभवन, राजा दर्शनसिंह का शिवमन्दिर और हनुमानगढ़ी यहांके मन्दिरों में उत्तम हैं। अयोध्या में वैरागी वैष्णवों के बहुत मठ हैं, जिनमें रघुनाथदास जी, मनीराम बाबा और माधोदास के मठ प्रधान हैं। रघुनाथदास अब नहीं हैं, उनकी गद्दी पर पूजा चढ़ती है। मनीराम बाबा के यहां सदावर्त जारी है, और साधुओं की भीड़ रहती है। माधोदास जी नानकशाही थे, इनके मठ पर नानकशाहियों का सदावर्त है। इनके अतिरिक्त दिगम्बरी अखाड़ा, रामप्रसाद जी का अखाड़ा इत्यादि बहुतेरे मठ हैं। अयोध्या के मठों में कई एक धनवान मठ हैं।

अयोध्या में थोड़ी देशी सौदागरी होती है। दुकानों पर यात्रियों के काम की सब वस्तु मिलती हैं। सवारी के लिये एक्के और ठेलागाड़ी हैं। ठेलागाड़ी को कूली बैल के समान खींचते हैं। यहां इमिली के वृक्ष और बन्दर बहुत हैं। अधिक यात्री अपने अपने पण्डों के मकानों में टिकते हैं।

अयोध्या जाने के लिये ३ रेलवे स्टेशन हैं। एक सरयू के बाएं लकड़मंडी घाट, दूसरा अयोध्या में नाव के पुल के पास रामघाट पर और तीसरा अयोध्या से ३ मील दक्षिण राणोपाली में।

अयोध्या का प्रधान मेला चैत्र रामनौमी को होता है, जिसमें लगभग ५००००० यात्री आते हैं। यात्रीगण सरयू के स्वर्गद्वार घाट पर रामनौमी के दिन स्नान दान करते हैं। सरयू नदी की प्रधानता और इनका माहात्म्य सब स्थानों से अयोध्या में अधिक है। यह नदी हिमालय पर्वत से निकल कर लगभग ६०० मील बहने के उपरांत छपरे से १४ मील पूर्व गङ्गा में मिली

है। सरयू और कौरियाला नदियों का संगम अयोध्या से पश्चिम बहराइच जिले में है। संगम से पूर्व उस नदी को कोई कोई घाघरा और कोई कोई सरयू कहते हैं। वहरामघाट के निकट चौका नदी सरयू में दहिने से आ मिली है। रामनौमी के दिन अयोध्या में हैजा फैल गया इसलिये यात्रियों के स्नान की अधिक भीड़ सरयू के वाएं किनारे पर रही। अयोध्या में श्रावण शुक्ल ११ से १५ तक मन्दिरों में झूलनोत्सव होता है। उस समय के हिण्डोले देवमूर्तियों के शृङ्गार फव्वारे आदि मनोहर सामग्री देखने और देवदर्शन करने के लिये हजारों यात्री आते हैं।

-अयोध्या के भीतर के देवमन्दिर और स्थान-(१) स्वर्गद्वार घाट-यह घाट रामघाट से पश्चिम अयोध्या में स्नान का मुख्य स्थान है। सीढ़ियां पत्थर की वनी हैं। स्वर्गद्वारघाट और इसके पूर्व और पश्चिम के घाटों को राजा दर्शनसिंह ने पत्थर से वनवाया था। घाट से ऊपर कई एक देवमन्दिर हैं। (२) नागेश्वरनाथ का मन्दिर—स्वर्गद्वारघाट से ऊपर सुंदर शिखरदार मन्दिर में अयोध्या के शिवलिंगों में नागेश्वरनाथ शिवलिंग हैं। नागेश्वरनाथ के मन्दिर को मुसलमानों ने कई वार तोड़ दिया और हिंदुओं ने वनवाया। वर्त्तमान मन्दिर को नवाब सफदरजंग के दीवान नवलराय ने वनवाया। रामघाट से अयोध्या के राजा के महल तक सड़क के दोनों ओर वहुतेरे मन्दिर हैं, जिनमें वाएं (३) मुरसरि की रानी का मन्दिर (४) भींगा के राजा का मन्दिर और (५) वेतिया के राजा का मन्दिर और दहिने (६) टेकारी के राजा का मन्दिर (७) छूसी के वाबू का मन्दिर, और (८) नरहन की रानी का मन्दिर सुन्दर है। (९) अयोध्या के महाराज के महल के पास एक सुन्दर वाटिका में अयोध्या के उत्तम मन्दिरों में से एक सुन्दर शिखरदार पंच मन्दिर है, जिसको अयोध्या के राजा दर्शनसिंह ने वनवाया था। मध्य के मन्दिर में दर्शनेश्वर शिवलिंग हैं, जिसके निकट मार्बुल की नन्दी की वड़ी मूर्ति है। दक्षिण-पश्चिम के मन्दिर में गणेशजी, पश्चिमोत्तर के मन्दिर में पार्वतीजी, पूर्वोत्तर के मंदिर में एक शिवलिंग और दक्षिण-पूर्व के मंदिर में पूजाकी सामग्री हैं। मंदिर में श्वेत और नीले मार्बुल का फर्श

है, दीवारों में बड़े बड़े दीवारगीर और आइने लगे हैं और ऊपर से बड़े बड़े झाड़ लटके हैं। वाटिका के दक्षिण पुराना राजमहल और उत्तर नया राजभवन है। नए राज-भवन के भीतर एक आंगन के चारो बगलों के मंदिरों में राधा, कृष्ण, राम; जानकी, शिव, अन्नपूर्णा और योगमाया की मनोहर मूर्तियां हैं। अयोध्या के राजा दर्शनसिंह शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। इनके पुत्रों में राजा मानसिंह बड़े नामवर हुए, बड़े भाई के रहने पर भी मानसिंह ही राजसिंहासन पर बैठे। उनको कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उनके मरने पर उनके नाती अर्थात् पुत्री के पुत्र वर्त्तमान अयोध्या नरेश महाराज प्रतापनारायणसिंह उनके उत्तराधिकारी बने। (१०) हनुमानगढ़ी के संमुख राजा मानसिंह की रानी का बनवाया हुआ राजद्वार नाम से प्रसिद्ध अठपहला शिखरदार एक बड़ा मंदिर है, बहुत सीढ़ियों को लांघ कर मंदिर के द्वार पर जाना होता है। मंदिर का जगमोहन गोलाकार है। मंदिर में रामचंद्र आदि की मूर्तियां हैं। (११) हनुमानगढ़ी अयोध्या के प्रधान स्थानों और उत्तम इमारतों में से एक है। इसके बाहरी की दीवार एक ओर से २०० फीट और एक ओर से १५० फीट लम्बी है। इसकी ऊंचाई बाहर से ४५ फीट है। इस गढ़ी में ६० सीढ़ियों के ऊपर हनुमानजी का शिखरदार मंदिर है, जिसमें हनुमानजी के निकट रामचन्द्र और इनके सम्बन्धी लोगों की पचीस तीस मूर्तियां हैं। हनुमानजी की मूर्ति सर्वत्र खड़ी रहती है, केवल इसी मन्दिर में बैठी हुई देख पड़ती है। लोग कहते हैं कि इनकी पुरानी मूर्ति, जो $\frac{1}{2}$ फीट ऊंची है, फूलों में दबी रहती है। बड़ी मूर्ति, जो ३ फीट लंबी होगी, जिनका दर्शन होता है, पीछे की स्थापित है। मन्दिर के आगे जगमोहन और आंगन के बगलों पर मकान हैं, जिनमें साधु लोग रहते हैं। हनुमानगढ़ी के महन्त धनी हैं। गढ़ी के निकट इमली के बाग में बन्दर बहुत रहते हैं। (१२) अयोध्या के सब मन्दिरों से बड़ा और सुन्दर कनकभवन है। मन्दिर लगभग २ बिगहे में है। बड़े आंगन के चारो बगलों पर दो-मञ्जिले, तीन मंजिले मकान और मेहराबदार दालान बने हैं; ऊपर सैकड़ों सुनहरी कलशियां हैं। पश्चिम बगल के मकानों में सुनहरे सिंहासनों पर मनो-

हर मूर्तियां हैं, जो संवत् १९४७ में स्थापित हुईं। इनमें उत्तर ओर राम जानकी की नई मूर्तियां, और इससे दक्षिण दूसरे मकान में लक्ष्मण जी की एक नई मूर्ति है। मन्दिर के चौखटों और किवाड़ों में सोने चांदी का उत्तम काम है, आगे के जगमोहन में सफेद मार्बुल के दोहरे खम्भे लगे हैं, मन्दिर और जगमोहन में मार्बुल का फर्श है। जगमोहन के आगे बड़ा कमरा और आंगन में पुराने स्थान पर एक चबूतरे पर चरण-पादुका है। इस मन्दिर को बुंदेलखण्ड के अन्तर्गत टीकमगढ़ के महाराज महेन्द्र सवाई प्रतापसिंह बहादुर ने कई एक लाख रुपए खर्च करके बनवाया है। पहले चरण पादुका के पास एक छोटे मन्दिर में राम जानकी की मूर्तियां थीं, जो अब नए मन्दिर में स्थापित हुई हैं। रामनवमी के समय महाराज मन्दिर में आए थे। (१३) राजमहल स्थान पर एक मन्दिर में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, जानकी की मूर्तियां गुरु वशिष्ठ की चरण-पादुका और विश्वामित्र का आसन है। (१४) रत्न सिंहासन स्थान पर एक मन्दिर में राम, लक्ष्मण, जानकी और वशिष्ठ मुनि की मूर्तियां हैं। (१५) आनन्द-भवन स्थान पर एक मन्दिर में कौशल्या के गोद में रामचन्द्र, कैकेई, के गोद में भरत, सुमित्रा के गोद में शत्रुघ्न और राजा दशरथ के आगे लक्ष्मण हैं और ऋषि वशिष्ठ और काकभसुंडी की मूर्ति भी हैं। (१६) राम कचहरी स्थान पर एक मन्दिर में राम, लक्ष्मण, जानकी, राधा, कृष्ण, बदरीनाथ, बालाजी जगन्नाथजी और ३६० सालग्राम हैं। (१७) कोप-भवन स्थान पर एक मन्दिर में दशरथ, कैकेई, राम, लक्ष्मण, वशिष्ठ ऋषि और मंथरा है। दूसरे मन्दिर में २४ अवतारों की २४ मूर्तियां हैं। यहां का पुजारी पैसा लेकर यात्री को भीतर जाने देता है। (१८) सीता की रसोई स्थान पर एक मन्दिर में राम, जानकी, लक्ष्मण, भरत, भरत की पत्नी, दूसरी कोठरी में दशरथ, शत्रुघ्न, कौशल्या, कैकेई, सुमित्रा, राम, लक्ष्मण, जानकी, जगन्नाथ, बलभद्र, और सुभद्रा हैं। १० सीढ़ियों के नीचे एक तहखाने में चूल्हा चकला और बेलना है, जिनके पास जानकी, लक्ष्मी, और वशिष्ठ मुनि की मूर्ति है। बिना पैसा दिये कोई तहखाने में नहीं जाने पाता। (१९) कोप-भवन से आगे हनुमानगढ़ी से $\frac{१}{२}$ मील पश्चिम जन्मस्थान है, जहां रामचन्द्र

का जन्म हुआ था। यहां उज्जैन के महाराज विक्रमादित्य का बनवाया हुआ, उत्तम मन्दिर था. जिसको बाबर ने तोड़ कर उस स्थान पर सन् १५२८ ई० में मजजिद बनाली। मन्दिर के दरवाजे पर पत्थर में लिखा है, कि सन् ९३३ हिजरी में मसजिद बनी। सन् १८५५ ई० में उस स्थान के अधिकार के लिए हिन्दू और मुसलमान परस्पर लड़ पड़े। उस समय ७५ मुसलमान मारे गए, जिनकी कबरगाह बाहर के दरवाजे के बाहर है। उसी समय बैरागी लोगों ने मसजिद के आगे एक पक्का चबूतरा बनाकर उस पर मूर्तियां स्थापित कीं। अङ्गरेजी हुकूमत होने पर मसजिद के आंगन के बीच में एक दीवार बनादी गई, जिसके भीतर मुसलमान लोग एबादत करते हैं और बाहर के भाग में मसजिद के पूर्व हिन्दू लोग दर्शन और पूजन करते हैं। चबूतरे पर टीन और खस से छाए हुए. छोटे मन्दिर में राम और लक्ष्मण की बालमूर्त्तियां हैं, जिनके निकट लड़कों के खिलौने रक्खे हुए हैं। मन्दिर के नीचे कोठरी में भरत की बड़ी और रामचन्द्र आदि सब भाइयों की छोटी मूर्तियां हैं। मसजिद से उत्तर छट्ठी का चूल्हा है।

**अयोध्या की परिक्रमा।**—यह ६ मील की छोटी परिक्रमा है, जो रामघाट से प्रारंभ होकर यहांही समाप्त होती है। परिक्रमा में इस क्रम से स्थान और मंदिर मिलते हैं (१) रघुनाथदास की गद्दी (२) सीताकुंड (३) अग्निकुंड, (४) विद्याकुंड (यह तीनों पोखरी हैं), (५) मनीपर्वत—यह ६५ फीट ऊंचा एक टीला है, जिसके ऊपर छोटा मंदिर है। कच्ची सीढ़ियों से मंदिर के निकट जाना होता है। मंदिर में एक पुजारी रहता है। टीले के नीचे चारो ओर मुसलमानों की कबर हैं। श्रावण में अयोध्या के मंदिरों का झुलन इसी स्थान से आरंभ होता है। (६) कुबेरपर्वत—यह मनीपर्वत से लगभग २०० गज दक्षिण २८ फीट ऊंचा एक टीला है। (७) सुग्रीवपर्वत-कुबेरपर्वत से थोड़ी दूर पर ५६० फीट लंबा और ३०० फीट चौड़ा सुग्रीव-पर्वत नामक टीला है। (८) लक्ष्मणघाट - स्वर्गद्वार से थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम सरयू के किनारे लक्ष्मणघाट पर लक्ष्मण-कीला नामक टीला है, जिसके ऊपर एक मंदिर और कई देवस्थान बने हैं। किले के नीचे सरयू किनारे

पत्थर की दीवार है। (९) स्वर्गद्वारघाट—(१०) नाव के पुल के पास रामघाट।

इस परिक्रमा के अतिरिक्त ५ कोस, १४ कोस और ८४ कोस की परिक्रमा हैं। १४ कोस की सरयू की परिक्रमा कार्तिक शुक्ल नवमी के दिन से होती है।

**सूर्यकुंड।**—रामघाट से ५ मील सूर्यकुंड तक एक्के की सड़क है। यह सूर्यकुण्ड पांच छ विगहे में राजा दर्शनसिंह का बनवाया हुआ एक पक्का तालाब है। चारो ओर १२ घाट बने हैं, जिनमें एक गौघाट और एक जनानाघाट है। जनानाघाट पर स्त्रियों के लिये आड़ बना है। तालाब के पश्चिम किनारे पर एक मंदिर में सूर्यनारायण की मूर्ति है।

**गुप्तार घाट।**—इसका नाम पुराणों में गोप्रतारघाट लिखा है। यह अयोध्या से ९ मील पश्चिम है। अयोध्या से फैजाबाद और फौजी छावनी होकर पक्की सड़क गई है। जब से छावनी बनी, तबसे छावनी होकर यात्रियों की भीड़ गुप्तारघाट पर नहीं जाने पाती है। गुप्तारघाट पर सरयू की छोड़ी हुई धारा में स्नान होता है। घाट के निकट एक छोटी गढ़ी में राजा टिकैत राय का बनवाया हुआ गुप्तहरि जी का मंदिर है, जिससे उत्तर एक घेरे में राजा दर्शनसिंह के पुत्र रघुवरदयाल का बनवाया हुआ उत्तम मंदिर है। मंदिर के पास कई एक छोटे मंदिर और आगे सुंदर घाट है। गुप्तार घाट से १ मील दक्षिण निर्मलीकुंड के पास निर्मलनाथ महादेव का मंदिर है।

**नंदीग्राम।**—फैजाबाद से १० मील और अयोध्या से १६ मील दक्षिण नंदीग्राम में भरतकुंड नामक सरोवर और भरत जी का मंदिर है। भरत जी रामचंद्र के वनवास के समय इसी स्थान पर रहते थे।

अयोध्या के रामघाट से ८ मील पूर्व सरयू के किनारे पर वह स्थान है, जहां राजा दशरथ दग्ध हुए थे।

**इतिहास।**—अयोध्या प्राचीन समय में सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी थी। राजा दशरथ के समय, जिनके पुत्र रामचंद्र हुए थे, कोशल-राज की राजधानी अयोध्या नगरी का विस्तार १२ योजन अर्थात् ४८ कोस

लिखा है। रामचंद्र के पीछे कोशलराज्य के दो भाग हो गए। उनके बड़े पुत्र कुश ने कुशावती और छोटे पुत्र लव ने श्रावस्ती को (जो गोंडा जिले में अब सेहत महत नाम से प्रसिद्ध है) अपनी राजधानी बनाई। उसके पीछे कुश कुशावती को ब्राह्मणों को देकर फिर अयोध्या में आए। सूर्यवंश के पिछले राजा सुमित्र की गिरती के समय अयोध्या वीरान हुआ और राजवंश छितरा गए। सुमित्र के मरने पर बौद्ध राजा हुए, जिनसे उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने अयोध्या को छीन लिया। उन्होंने पुराने शहर के पवित्र स्थानों का पता लगाया। विक्रमादित्य के पश्चात अयोध्या और कोशलराज्य क्रम से समुद्रपाल, श्रीवास्तव और कन्नौज राजवंश के आधीन रहा। चीन के रहने वाले हुएन्संग ने ७वीं शताब्दी में अयोध्या में ब्राह्मणों की बड़ी आबादी, २० बौद्धमंदिर और ३००० फकीरों को देखा था।

बाबर ने जन्मस्थान के राममंदिर को तोड़ कर सन् १५२८ में उस स्थान पर मसजिद बनवा ली।

अकबर के समय हिंदू लोगों ने नागेश्वरनाथ, चंदहरि, आदि देवताओं के दश पांच मंदिर बना लिये थे, जिनको औरंगजेब ने तोड़ डाला। अवध के नवाब सफदरजंग के समय दीवान नवलराय ने नागेश्वरनाथ का मंदिर बनवाया। दिल्ली की बादशाही की घटती के समय अयोध्या में मंदिर बनने लगे। साधुओं के अनेक अखाड़े आ जमे। नवाब वाजिदअली शाह के राज्य के समय अयोध्या में ३० मंदिर बन गए थे। अब छोटे बड़े सैकड़ों मंदिर बन गये हैं। फैजाबाद शहर भी प्राचीन अयोध्या नगरी के अंतर्गत है॥

**संक्षिप्त वाल्मीकि-रामायण**— (बालकाण्ड, ५वां सर्ग) सरयू नदी के तीर पर लोक विख्यात महाराज मनु की बनाई हुई १२ योजन लंबी और ३ योजन चौड़ी अयोध्या नगरी है। (छठवां सर्ग) उसमें महाराज दशरथ प्रजा का पालन करते थे। (८वां सर्ग) महाराज पुत्र के लिये यज्ञ का विचार कर (११) ऋषि शृंग को आयोध्या में ले आए। (१५) ऋषि शृंग ने पुत्रेष्टि यज्ञ प्रारंभ किया। उस समय भगवान विष्णु वहां आकर

उपस्थित हुए। उन्होंने देवताओं की प्रार्थना सुनकर अपने ४ भाग होकर दशरथ के पुत्र होने को अंगीकार किया। (१६) यज्ञकुंड से एक पुरुष ने निकल कर राजा को खीर दी। राजा ने उस खीर में से आधी कौशल्या को, चतुर्थांश कैकेयी को, और अष्टमांश सुमित्रा को दी; फिर उन्होंने कुछ विचार कर शेष जो अष्टमांश खीर थी; उसे फिर सुमित्रा को देदी। राजा की स्त्रियों ने उस खीर को खाया और शीघ्रही गर्भों को धारण किया।

(१८) चैत्र मास और नवमी तिथि और पुनर्वसु नक्षत्र में कौशल्या से श्रीरामचंद्र, जो विष्णु के अर्धभाग हैं, जन्मे। उनके पीछे कैकेयी से भरत ने, जो विष्णु के चतुर्थ भाग हैं, जन्म लिया। उनके अनन्तर सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न, जो प्रत्येक विष्णु के अष्टमांश हैं, उत्पन्न हुए। पुष्य नक्षत्र मीन लग्नोदय में भरत का और श्लेषा नक्षत्र कर्क लग्न में सूर्योदय के समय लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म हुआ।

(१९) विश्वामित्र ने अयोध्या में आकर अपनी यज्ञरक्षा के लिये राजा दशरथ से रामचन्द्र को मांगा। (२२) राजा ने पहले तो अस्वीकार किया, परंतु वशिष्ठ के समझाने पर लक्ष्मण के सहित रामचन्द्र को बुला कर विश्वामित्र के साथ कर दिया। विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण के साथ अयोध्या से ६ कोस चलकर सरयू के दक्षिण तट पर रात्रि को निवास किया। (२३) दूसरे दिन वे यात्रा कर गङ्गा की ओर चले और सरयू नदी के संगम पर पहुंचे। वे बोले कि किसी समय में, जब मूर्तिमान कामदेव ने यहां तपस्या करते हुए भगवान रुद्रको धर्षित किया था, तब शिव ने क्रुद्ध हो तृतीय नेत्र की अग्नि से उसको भस्म कर दिया; तब वह शरीर-रहित होकर अनंग नाम से विख्यात हुआ। जहां उसने भस्म हो अपना शरीर त्याग किया था, वह अंगदेश कहलाता है। यह आश्रम महाराज रुद्र का है और ये मुनि लोग उन्हीके शिष्य हैं। ऐसा कह कर उन्होंने राम लक्ष्मण के सहित गङ्गा और सरयू दोनों नदियों के मध्य स्थान में उस रात्रि में निवास किया (२४) फिर वे प्रातः काल गङ्गा के किनारे आकर नाव पर चढ़ पार उतरे और भयंकर वन में होकर चले (२६) आगे जाकर रामचंद्र ने ताड़का राक्षसी को मारा

और वे लोग रात्रि में ताड़का-वन में टिक गए। (२९) विश्वामित्र राम लक्ष्मण के साथ प्रातःकाल उठकर चले और सिद्धाश्रम में पहुंचे। (३०) उनके यज्ञ के विध्वंस करने के लिये सुवाहु और मारीच आए, जिनमें से रामचंद्र ने सुवाहु को मारा और मारीच को उड़ा कर यज्ञ की रक्षा की।

(३१) विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण से कहा कि मिथिला के राजा जनक के यहां धनुर्यज्ञ और धनुष देखने के लिये चलो। ऐसा कह उन्हों ने राम और लक्ष्मण को साथ ले जनकपुर को प्रस्थान किया। उनके चलते ही मुनियों के सैकड़ों छकड़े उनके पीछे चले। तदनन्तर उन्होंने कुछ दूर जाकर सूर्य्य डूबते डूबते शोण नदी के तीर पहुंच कर निवास किया। (३५) वे लोग प्रातःकाल यात्रा कर मध्याह्न के समय गंगा नदी के किनारे पहुंचे (४५) और नाव पर चढ़ पार उतरे (४८) फिर वहां से चल विशालापुरी में राजा सुमति के अतिथि-सत्कार में उस रात्रि को वहीं रह गए। फिर वे लोग प्रातःकाल उठ मिथिला को चले और कुछ काल के उपरांत मिथिला में पहुंच गए। मुनिगण उस पुरी को देख बहुत प्रशंसा करने लगे।

तदनन्तर रामचंद्र ने मिथिला के उपवन में प्राचीन और निर्जन आश्रम को देख विश्वामित्र मुनि से पूछा कि यह आश्रम किसका है? मुनि बोले कि यह आश्रम पहले गौतम ऋषि का था। इस आश्रम में अहिल्या के साथ वे तप करने लगे। किसी समय में मुनि-रहित आश्रम को देख मुनिही का वेष धारण कर इन्द्र ने अहिल्या से कहा कि मैं तेरे साथ संग करना चाहता हूं। अहिल्या ने इन्द्र को जान करके भी उसका मनोरथ पूर्ण किया। फिर गौतम मुनि के डर से शीघ्रता से ज्योंही इन्द्र उस कूटी से निकला, त्योंही पर्णशाला में पैठते हुए ऋषि देख पड़े। उन्होंने इन्द्र को मुनिवेषधारी और दुष्टकर्मकारी देख क्रोध कर कहा कि तू अंडकोष-रहित हो जायगा। उनके मुख से ऐसा वचन निकलतेही इन्द्र के दोनों अंडकोष गिर पड़े। फिर उन्होंने अपनी स्त्री को यह शाप दिया कि तू इसी स्थान में अनेक सहस्र वर्ष पर्य्यंत वास करेगी। तेरा भोजन केवल वायु होगा और तू किसी प्राणी को न

देख पड़ेगी। जब दशरथ के पुत्र रामचंद्र इस वन में आवेंगे, तब तू उनका सत्कार करेगी और इस शाप से मुक्त हो, अपने पूर्व शरीर को धारण कर मेरे पास आवेगी। ऐसा कह गौतम ऋषि हिमाचल के शिखर पर जाकर तप करने लगे। (४९) पितृदेव गणों ने मेष का अंडकोष काट कर इन्द्र को लगा दिया। विश्वामित्र के वचन सुन रामचंद्र ने उनके संग उस आश्रम में प्रवेश किया और उस तपस्विनी को, जो तपस्या के तेज से प्रकाशित हो रही थी और जिसको सुर असुर कोई नहीं देख सकते थे, देखा। उसी क्षण में अहिल्या के पाप का अन्त हुआ और इन लोगों को वह देख पड़ी। तब राम और लक्ष्मण ने हर्ष से उसके चरणों को ग्रहण किया। अहिल्या ने भी गौतम के वचन को स्मरण कर राम के चरणों को ग्रहण किया और अतिथि-सत्कार से इनकी पूजा की। वह शुद्ध होकर गौतम ऋषि को जा मिली और रामचंद्र मिथिला को चले।

(५०) विश्वामित्र राम और लक्ष्मण के साथ ईशान कोन की ओर चल कर राजा जनक की यज्ञशाला में पहुंचे। राजा जनक ने विश्वामित्र का आगमन सुन आदर सत्कार से मुनि को टिकाया। (६६) दूसरे दिन प्रातः काल राजा जनक से विश्वामित्र बोले कि ये दोनों राजा दशरथ के पुत्र आप के श्रेष्ठ धनुष को देखना चाहते हैं। उस समय राजा जनक धनुष का वृत्तान्त कहने लगे कि राजा निमि के ज्येष्ठ पुत्र राजा देवरात थे, उनको यह धनुष धरोहर की रीति से मिला था। पूर्व काल में भगवान शिव ने दक्ष के यज्ञ का विध्वंस कर यह धनुष देवताओं को दे दिया और देवताओं ने देवरात के हाथ में धनुष को समर्पण किया। यह वही धनुष है। मैंने अपनी पुत्री अयोनिजा सीता के लिये ऐसी प्रतिज्ञा की कि जिसका वल इस धनुष के चढ़ाने योग्य होगा, उसके संग सीता का विवाह करूंगा। सब राजा इकट्ठे होकर अपने अपने वीर्य की परीक्षा देने के लिये मिथिला में आए। मैंने शिवधनुष को उनके सामने रख दिया, परंतु उनमें से आज तक कोई राजा धनुष को नहीं उठा सका। जब मैंने उनका अल्प वल देख उनको कन्या नहीं दी, तब उन लोगों ने मिथिला नगरी को घेर लिया। वे लोग एक वर्ष तक हमारी

नगरी को घेरे रहे। जब देवताओं ने मुझको चतुरंगिनो सेना दी, तब मैंने उन्हें मार भगाया। हे मुनिश्रेष्ठ! कदाचित् रामचंद्र इस धनुष को तोड़ेंगे तो मैं इन्हीको सीता दूंगा। (६७) विश्वामित्र ने कहा कि हे राजन्! धनुष रामचंद्र को दिखाओ। तब राजा जनक की आज्ञा से ५ सहस्र मनुष्य उस धनुष की संदूक को, जो लोहे से बनो थी और जिसमें ८ पहिए लगे थे, खींच लाए। विश्वामित्र की आज्ञा पाकर रामचंद्र ने संदूक का ढपना खोल कर उसके भीतर से धनुष निकाल उसे बीच में थांभा और लीला से उठाकर प्रतंचा से पूर्ण कर उसको दो टुकड़े कर डाला। उसके पश्चात राजा जनक ने अपने मंत्रियों को राजा दशरथ के बुलाने के लिये अयोध्या में भेजा। (६८) जनक के दूत ३ दिन मार्ग में टिक कर चौथे दिन अयोध्या में पहुंचे। उन्होंने जनकपुर का सब वृत्तांत राजा दशरथ से कह सुनाया। (६९) यह सुन राजा दशरथ चतुरंगिनो सेना और ऋषियों के संग अयोध्या से प्रस्थान कर ४ दिन में विदेह नगर पहुंचे। (७०) रामचंद्र के विवाह का समय निश्चय हुआ। महर्षि वसिष्ठ ने रामचंद्र के विवाह के समय राजा दशरथ का गोत्रोच्चारण किया (क्रमिक वंशावलो यह है)

| नंबर | नाम |
|---|---|
| १ | ब्रह्मा। |
| २ | मरीचि। |
| ३ | कश्यप। |
| ४ | सूर्य्य। |
| ५ | वैवस्वत मनु। |
| ६ | इक्ष्वाकु। |
| ७ | कुक्षि। |
| ८ | विकुक्षि। |
| ९ | वाण। |
| १० | अनरण्य। |
| ११ | पृथु। |
| १२ | त्रिशंकु। |
| १३ | धुन्धुमार। |
| १४ | युवनाश्व। |
| १५ | मान्धाता। |
| १६ | सुसन्धि। |
| १७ | ध्रुवसन्धि। प्रसेनजित |
| १८ | भरत। |

१९ असित।
२० सगर।
२१ असमंजस।
२२ अंशुमान।
२३ दिलीप।
२४ भगीरथ।
२५ ककुत्स्थ।
२६ रघु।
२७ कल्मापपाद।
२८ शंखण।
२९ सुदर्शन।
३० अग्निवर्ण।
३१ शीघ्रग।
३२ मरु।
३३ प्रशश्रुक।
३४ अम्बरीष।
३५ नहुष।
३६ ययाति।
३७ नाभाग।
३८ अज।
३९ दशरथ।

रामचंद्र, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न

(७३) रामचंद्र का विवाह सीता से, लक्ष्मण का उर्मिला से, भरत का मांडवी से और शत्रुघ्न का श्रुतिकीर्ति से हुआ। उस समय रामचंद्र का वय १५ वर्ष का और सीता का ६ वर्ष का था। (७४) विवाह होने के अनन्तर महाराज दशरथ अपने पुत्रों को और सेनागणों को साथ लेकर अयोध्या को चले। मार्ग में जटामण्डल को धारण किए हुए, कन्धे पर परशु और धनुष को, और हाथ में वाण को लिये हुए परशुराम देख पड़े (७५) वे बोले हे रामचंद्र तुम्हारा तो बड़ा अद्भुत पराक्रम सुनाई पड़ता है! क्योंकि तुमने उस धनुष को तोड़ा, जिसका तोड़ना अतिशय कठिन था। इसलिये यह वैसाही उत्तम दूसरा धनुष मैं लाया हूं। तुम इस धनुष को लो और चढ़ाकर वाण से पूर्ण कर अपना वल मुझे दिखाओ, तव मैं द्वन्द्वयुद्ध करूंगा। (७६) रामचंद्र क्रुद्ध हो परशुराम के हाथ से धनुष और वाण लेकर उस पर बाण सन्धान करके बोले कि हे परशुराम! एक तो तुम ब्राह्मण मेरे पूज्य हो, और दूसरे विश्वामित्र की भगिनी के पौत्र हो, इसलिये प्राण हरण करने वाले बाण मैं तुम पर नहीं छोड़ सकता; इसलिये मैं यातो तुम्हारी

गति का अथवा तुम्हारे लोकों का, जिन्हें तुमने तपस्या से पाया है, इस बाण से नाश कर दूंगा । परशुराम, जो रामचंद्र के तेज से पराक्रमहीन हो गए थे, धीरे से बोले कि हे रामचंद्र ! जब मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी कश्यप मुनि को दे डाली, तब उन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम पृथ्वी पर निवास मत करो । ऐसा गुरु का वचन सुन और उसे मान मैं रात्रि में पृथ्वी पर नहीं बसता । सो हे राघव ! तुम मेरी गति का नाश मत करो, मैं मन के सदृश वेग से महेन्द्र पर्वत पर जाऊंगा; परन्तु मेरे जो लोक हैं, उनका नाश करो । इस धनुष के चढ़ाने से मैं आप को देवताओं के स्वामी विष्णु जानता हूं । आप बाण छोड़िए, इसके साथही मैं महेन्द्राचल पर चला जाऊंगा । ऐसा वचन सुन रामचन्द्र ने बाण को चलाया, जिससे परशुराम के सब लोक नष्ट हो गए । वे रामचन्द्र की प्रदक्षिणा कर महेन्द्राचल को पधारे । ( ७७ ) उनके जाने पर श्रीरामचन्द्र ने वह धनुष वरुण के हाथ में देकर वसिष्ठ आदि ऋषियों को प्रणाम किया । राजा दशरथ ने परशुराम के जाने का समाचार पाकर अपना पुनर्जन्म माना । फिर वे संपूर्ण लोग और सेना से साथ प्रस्थान कर अयोध्या में पहुंचे ।

( अयोध्या कांड, पहला सर्ग ) भरत शत्रुघ्न के साथ अपने मामा के घर आनन्द पूर्वक रहने लगे । महाराज दशरथ ने मंत्रियों के साथ विचार कर रामचन्द्र को यौवराज्य देना ठहराया और शीघ्रता कर नाना नगर और राष्ट्र के रहने वाले प्रधान राजाओं को बुलवाकर इकट्ठा किया, परन्तु शीघ्रता के कारण केकयराज और राजा जनक को यह संदेश नहीं दिया गया । (३) राजा दशरथ वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों से कहने लगे कि यह पवित्र चैत्र मास है. इसमें रामचन्द्र के यौवराज्य के लिये सब तय्यारी करो । (४) फिर वे रामचन्द्र से बोले कि जब तक मेरा चित्त मोह को न प्राप्त हो, तब तक तुमको अपना अभिषेक करवा लेना चाहिए । कल पुष्य नक्षत्र में तुम अभिषिक्त होगे । जब तक भरत वहांसे नहीं आते, तब तक तुम्हारा अभिषेक होजाना चाहिए । यद्यपि भरत सज्जनों की रीति पर चलने वाले हैं, तथापि सज्जन और धर्मात्मा मनुष्यों का भी चित्त चलायमान है । (७)

कैकेयी की मातृकुल की मंथरा नाम दासी, जो कैकेयी ही के साथ जन्म से रही थी, अटारी पर अकस्मात् चढ़ी और वहांसे पुरी की शोभा देख रामचन्द्र की धाय से पूछने लगी कि कौन उत्सव है। धात्री बोली कि कल राजा दशरथ रामचन्द्र का यौवराज्याभिषेक करेंगे। ऐसा सुन कुब्जा अत्यन्त डाह से प्रासाद से उतर कैकेयी के पास जाकर बोली कि देख यह दुष्टात्मा राजा दशरथ भरत को तुम्हारे भाई वन्धुओं में भेज, कल रामचन्द्र को अकंटक राज्य पर स्थापन करेगा। यह राजा तेरा पति नहीं, किन्तु शत्रु है। मन्थरा का वचन सुन कैकेयी ने हर्ष से पूर्ण हो कुब्जा को दिव्य भूषण निकाल दिए और उससे कहा कि राम में वा भरत में मैं किसी वात का भेद नहीं देखती। इस राज्याभिषेक से मैं प्रसन्न हूं। (८) जब मंथरा ने कैकेयी को फिर वहुत समझाया, (९) तब तो वह क्रोध से ज्वलित होकर बोली कि आज ही मैं राम को वन में भेजवाती हूँ। ऐसा कह कर वह सब भूषणों को उतार भूमि पर सो रही। (१०) राजा दशरथ अपनी प्रिया को प्रिय संदेश देने के लिये अंतःपुर में प्रवेश कर कैकेयी के गृह में गए। (११) पर वे कैकेयी को कोपभवन में देख उससे बोले कि मैं रामचन्द्र की शपथ खाता हूँ, जो तेरे मन का अभीष्ट हो, सो तू कह। मैं अपने सुकृत की शपथ करता हूँ कि तेरी प्रीति की बात अवश्य करूंगा। यह सुन कैकेयी बोली कि देवासुर-संग्राम में जो तुमने मुझको २ वर दिए थे, उनको मैं तुमसे मांगती हूँ। उनमें पहला यह कि भरत का राज्याभिषेक किया जाय और दूसरा वर यह कि रामचन्द्र १४ वर्ष पर्य्यन्त दण्डक-वन में तपस्वी होकर रहें। (१२) ऐसा सुन राजा दशरथ व्याकुल हो पश्चाताप करने और कैकेयी को धिक्कारने लगे। (१४) उनके विलाप करते२ जब सूर्य्योदय का समय प्राप्त हुआ, तब भगवान वसिष्ठ ने महाराजके अन्तःपुर में प्रवेश किया और भीतर से निकलते हुए सुमन्त्र मन्त्री को देख उससे कहा कि तुम शीघ्र जाकर मेरे आने का संदेश महाराज को दो। सुमन्त्र ने मुनि का संदेशा राजा से कह सुनाया, जिसे सुन वे बोले कि हे सुमन्त्र! राम को यहां शीघ्र लाओ। (१७) सुमन्त्र रामचन्द्र को बुला लाया। (१८) रामचन्द्र के आने पर कैकेयी ने वर का सब वृत्तान्त उनसे कह सुनाया।

(१०. से ३३) जिसे सुन वे कैकेयी के वचन को अंगीकार करके कौशल्या के गृह में गए। लक्ष्मण और सीता रामचन्द्र के संग वन में जाने के लिये, तय्यार हुए। फिर रामचन्द्र ब्राह्मणों को बहुत धन दे सीता और लक्ष्मण के साथ पिता को देखने चले। (३४) सुमन्त्र ने राजा के पास जाकर कहा कि तुम्हारे पुत्र द्वार पर खड़े हैं। ये लोग महावन में जायंगे, आप इनको देखिए। राजा दशरथ बोले हे सुमन्त्र ! इस घर में जितनी मेरी स्त्रियां हैं, उन सबको तुम बुलाओ; मैं उनके साथ राम को देखूंगा। पति की आज्ञा पाकर राजा की ३५० स्त्रियां कौशल्या को घेर राजा के पास आईं, तब राजा की आज्ञा से सुमंत्र राम, लक्ष्मण और सीता को लिवा लाया। राजा ने बहुत विलाप करने के पश्चात रामचन्द्र को वन जाने की आज्ञा दी।

(४०) राम और लक्ष्मण सीता के साथ रथ पर चढ़े। सुमंत्र ने वायु-तुल्य वेग वाले घोड़ों को चलाया। उस काल में रामचन्द्र का वय २७ और सीता का १८ वर्ष का था। (४२) जब तक राम के रथ की धूलि देख पड़ी, तब तक महाराज देखते रहे; पीछे पृथ्वी पर गिर पड़े। राजाज्ञा पाकर द्वारपालों ने महाराज को कौशल्या के गृह में पहुंचाया। (४५) सुमन्त्र ने तमसा नदी के तीर पहुंच घोड़ों को रथ से खोला। (४६) पहली रात्रि में रामचन्द्र आदि तमसा के किनारे जलही पीकर रह गए और प्रातः काल उठ कर नदी पार हो रथ पर चढ़ तपोवन के मार्ग में चले। (४७) पुरवासी-गण अयोध्या को लौट आए। (४९) रामचन्द्र आदिक कौशल देशों को लांघ कर श्रुति नामक महानदी के पार हो दक्षिण दिशा में चले और इसके पीछे गोमती नदी और स्यन्दिका नदी क्रम से उतरे। उन्होंने उससे आगे जाकर गङ्गा नदी को देखा, (५०) जहां उनका परम मित्र उस देश का गुह नामक निषादराज रहता था। वह इनका आगमन सुन इनसे आ मिला। वे लोग केवल जलपान कर रात्रि में वहीं भूमि पर सो रहे। (५२) प्रातः काल राम की आज्ञा से गुह ने वट क्षीर ला दिया, तब राम ने अपनी और लक्ष्मण की जटा उस दूध से बनाई। वे लक्ष्मण के सहित वानप्रस्थ मार्ग पर स्थित हुए। फिर वे सीता और लक्ष्मण के सहित गङ्गा पार हो वत्स्य नाम देशों

में जा पहुंचे और सायंकाल में वृक्ष के नीचे जा टिके। (५४) प्रातःकाल सूर्योदय होतेही वे वहांसे चले और सूर्य्य के लटकते२ गङ्गा-यमुना के संगम पर भरद्वाज मुनि के आश्रम में प्राप्त हुए। रामचन्द्र के पूछने पर भरद्वाज मुनि ने कहा कि यहांसे १० कोस पर तुम्हारे निवास के योग्य चित्रकूट पर्वत है। उस रात्रि में उन्होंने मुनि के आश्रम में निवास किया। (५५) प्रातः काल उठकर वे चित्रकूट को चले। राम और लक्ष्मण ने काष्टों को इकट्ठा कर एक घरनई बनाई और उस पर सूखी २ लकड़ियां बिछा कर ऊपर से खश बिछा दिया। लक्ष्मण ने बेत की और जामुन की, शाखा लाकर उस पर सीता के बैठने के लिये सुन्दर आसन बनाया। रामचन्द्र ने सीता को उठा कर उस उडुप पर बैठा दिया, और उन्हीं के पास उनके वस्त्र और आभूषण रख, खोदने का शस्त्र और बांस की पेटारी भी वहांही धर दी। फिर दोनों भाइयों ने उस घरनई को चलाया। इस भांति वे लोग यमुना नदी पार हो यमुना के तीर के वन से चले। राम, लक्ष्मण और सीता ने कोस भर चल कर यमुना के वन में भोजन किया। इसके उपरान्त वे लोग उस वन में विहार कर नदी किनारे निर्भय हो टिक रहे। (५६) रामचन्द्र ने सीता और लक्ष्मण सहित प्रातःकाल प्रस्थान कर चित्रकूट में पहुंच महर्षि वाल्मीकि को प्रणाम किया। ऋषि ने उनको निवास करने की आज्ञा दी। इसके अनन्तर रामचन्द्र को आज्ञा से लक्ष्मण ने नाना प्रकार के वृक्षों को काट कर पर्णशाला बनाई, जिसमें वे सब रहने लगे। रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण अयोध्या पुरी से चलकर तीन दिन तक केवल जल पीकर और चौथे दिन फलाहार करके रहे। उन्होंने पांचवें दिन गङ्गा (मन्दाकिनी) पार हो, चित्रकूट पर्वत पर पर्णशाला बना उसमें निवास किया।

(५७) शृङ्गवेरपुर से सुमन्त्र रथ लेकर लौटा और दूसरे दिन सन्ध्या समय अयोध्या में पहुंचा। (६४) महाराज दशरथ विलाप और शोक करते करते प्राणों को त्याग कर स्वर्गलोक को गए। (६६) मंत्रियों ने तैल की डोंगी में राजा के शरीर को रक्खा। (६८) वशिष्ठ मुनि ने भरत और शत्रुघ्न को बुलाने के लिये उनके मामा के घर दूतों को भेजा। दूतगण अच्छे वेगवान

घोड़ों पर सवार हो. कैकय राजधानी की ओर चले और अपर-ताल देश के पश्चिम मार्ग से प्रलम्ब देश के उत्तर भाग की ओर मालिनो नदी के मध्य से यात्रा कर हस्तिनापुर में गङ्गा के पार हो पश्चिम ओर चल निकले। वे पांचाल देश को पार कर कुरु-जांगल देश के मध्य मार्ग से चलते चलते आगे जाकर इक्षुमती नदी के पार हुए। फिर उन लोगों ने वाल्हीक देशों के बीचों बीच से यात्रा कर सुदामा पर्वत पर विष्णु के चरण-चिन्ह का दर्शन किया। इसके पश्चात् वे लोग विपाशा और शाल्मली नदियों को देखते हुए, कैकयराज्य के गिरिव्रज नामक पुर में जा पहुंचे। (७०) दूतों ने भरत से यह बात कही कि पुरोहित और मंत्रियों ने आप को शीघ्र बुलाया है, क्योंकि कोई कार्य्य बड़ा आवश्यक है। (७१) भरत अपने भाई के सहित कैकयराज से विदा हो पूर्वाभिमुख चले और मार्ग में क्रम से सुदामा नदी. बड़े पाटवाली और पश्चिम-वाहिनी ह्लादिनी नदी और शतद्रू (सतलज) नदी के पार उतरे। इसके अनन्तर वे लोग ऐलधानी नदी के पार होने के उपरान्त अपर पर्वत नामक राष्ट्रों में पहुंच, शिलवहा नदी को पार करके आगे बढ़े और चैत्ररथ नामक वन के पास महाशैला नदी पर पहुंचे। भरत ने क्रम से सरस्वती और गङ्गा के संगम वेगवती और कुलिङ्ग नामक नदी के पार उतर यमुना के तीर पर पहुंच कर सेना को विश्राम दिया। इसके अनन्तर वे भद्रजाति के हस्ति पर चढ़ कर निर्जन महावन के पार हो गए। तदनन्तर वे प्राग्वट नामक विख्यात पुर में बड़े उपाय से अंशुधान ग्राम के पास भागीरथी के पार उतरे और कुटिकोष्ठिका नदी पर पहुंचे। वे विनत नगर में गोमती नदी को लांघ कलिंग नगर के सखुए के जंगल में आए और वहां पर रात्रि में टिक रहे। रात्रि बीतने पर उन्होंने यात्रा कर दूर से अयोध्यापुरी को देखा। जिस दिन अयोध्या नगरी भरत को देख पड़ी, वह यात्रा का आठवां दिन था। (७२) भरत अपनी माता के मुख से राजा की मृत्यु और रामचन्द्र के वनवास का वृत्तान्त सुन कर महाशोक को प्राप्त हुए। (७६) उन्होंने वशिष्ठ के आज्ञानुसार राजा के प्रेतकर्म्मों को आरम्भ किया। परिचारक लोग राजा दशरथ को पालकी पर सुता कर ले चले। ऋत्विजों ने नगर के बाहर

चिता बनाकर उस पर राजा को सुता दिया। वे लोग चिता पर अग्नि का हवन कर जप करने लगे। राजा की स्त्रियां पालकियों पर और यथोचित सवारियों पर चढ़२ चिता के पास जाकर राजा की प्रदक्षिणा करने लगीं। इसके अनन्तर भरत के साथ स्त्रियों ने और मन्त्री और पुरोहितों ने भी राजा को जलांजली देकर रोते हुए, पुर में प्रवेश किया और दश दिवस तक भूमि पर सोकर दुःख से अपना समय विताया।

(७९) भरत ने राज्य को अंगीकार न कर के राम के पास जाने के लिये मन्त्रियों को आज्ञा दी। (८३) सेना भरत के संग चलकर शृङ्गवेरपुर के पास गङ्गा के तट पर पहुंची, जहां रामचन्द्र का मित्र गुह नामक निषाद सावधानी से उस देश का पालन करता हुआ निवास करता था। भरत ने सेना को टिका कर रात्रि में वहां निवास किया। (८९) उनकी सेना प्रातःकाल गुह की ५०० नौकाओं द्वारा गङ्गापार हो सूर्योदय से तृतीय मुहूर्त में प्रयाग के वन में प्राप्त हुई। भरत ने सेना को टिका कर भरद्वाज मुनि के आश्रम में प्रवेश किया। (९०) उन्होंने पूछा कि हे महर्षि! रामचन्द्र कहां निवास करते हैं? मुनि ने कहा कि मैं जानता हूं कि वे चित्रकूट पर्वत पर हैं (९१) फिर भरद्वाज मुनि ने दिव्य सामग्रियों से भरत की सेना की पहुनाई की। (९२) प्रातःकाल होतेही भरत मुनि से विदा होने गए। मुनि ने बताया कि यहांसे १० कोस पर निर्जन वन में चित्रकूट पर्वत है, उस गिरि के उत्तर ओर मन्दाकिनी नदी बहती है, उस नदी के पार चित्रकूट पर्वत है, उसी पर पर्णकुटी में दोनों भाई निवास करते हैं। तब भरत की आज्ञा पाकर सब सेना दक्षिण दिशा को आच्छादित करती हुई आगे बढ़ी भरत पालकी पर चढ़ कर चले। (९३) उन्होंने चित्रकूट के समीप पहुंच, दूर से धूंआ देख कर जाना कि वहां रामचन्द्र होंगे। (९७) भरत ने पर्वत के चारों ओर सेना को ठहरा दिया। ६ कोस का घेरा डाल कर सेना टिक रही। (९८) भरत ने जब एक साखू वृक्ष के ऊपर चढ़ कर ऊंची ध्वजा देखी, तब वे उसी स्थान पर गुह के साथ शीघ्रता से चले। (९९) और मुहूर्त्त मात्र अगाड़ी चल कर मन्दाकिनी नदी पर पहुंचे। आगे पर्णशाला के निकट

जाकर भरत आदि रामचन्द्र से मिले। (१०६) रामचन्द्र से भरत बोले कि यहांही वशिष्ठ आदि ऋषिगण और मंत्रीलोग आपको अभिषेक देंगे और आप हमारे संग अयोध्या में चल कर राज्य पर विराजिए; परन्तु रामचन्द्र पिता के वचन पर ऐसे दृढ़ थे कि कुछ भी चलायमान चित्त न हुए। (१०७) वे भरत से बोले कि जब मेरे पिता ने तुम्हारी माता से विवाह किया, तब तुम्हारे मातामह से यह प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारी पुत्री से जो पुत्र उत्पन्न होगा, वही मेरे राज्यासन पर बैठेगा; और देवासुर संग्राम में भी किसी उपकार से हर्षित हो पिता ने तुम्हारी माता को दो वर दिए थे। इसलिये तुम्हारी माता ने पिता से २ वरों को मांगा। राजा ने उन वरों को देकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की, इसलिये हम और तुम दोनों को पिता के वचन का पालन करना उचित है। (१११) भरत कुशों को बिछाकर राम को अयोध्या लौटा ले जाने के लिये राम के सन्मुख धरना दे बैठे। (११२) जब रामचन्द्र के साथ ऋषियों ने भरत को बहुत समझाया, तब वे बोले कि हे आर्य! इन पादुकाओं पर आप अपने चरणों को रखिए यही दोनों पादुका सर्व लोक के योग क्षेम करेंगी। रामचंद्र ने पादुकाओं को अपने पैरों में पहन फिर भरत को देदिया। (११३) इसके अनन्तर वे उन पादुकाओं को गज-मस्तक पर रख कर शत्रुघ्न के सहित रथ पर चढ़े और मन्दाकिनी नदी तथा चित्रकूट की प्रदक्षिणा करते हुए (११४) अपने पिता के निवास स्थान में पहुंचे।

(११५) भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई शीघ्र रथ पर चढ़ मंत्रियों और पुरोहितों को साथ ले नन्दिग्राम में पहुंचे। वहीं भरत वल्कल और जटा को धारण कर मुनिवेष बनाए हुए सेना के सहित निवास करने और रामपादुकाओं का राज्याभिषेक कर उसीके आधीन हो राज्य करने लगे।

(११७) रामचंद्र ने अनेक हेतुओं को विचार चित्रकूट का रहना उचित नहीं समझा। तब वे सीता और लक्ष्मण को साथ ले वहां से चल कर अत्रि मुनि के आश्रम में आए (११९) और रात्रि में वहांही रहे। प्रातःकाल उन्हों ने लक्ष्मण और सीता को साथ ले वहांसे दुर्गम बन में प्रवेश किया।

अरण्यकाण्ड—(पहला सर्ग) श्रीरामचंद्र ने घोर दण्डकारण्य में प्रवेश कर

तपस्वियों के आश्रम-मण्डल को देख रात्रि में निवास किया ( २ ) और सूर्योदयकाल में मुनियों से विदा हो फिर आगे के वन में प्रवेश किया। तीनों आदमी वन के मध्य में पहुंचे। वहां विराध राक्षस देख पड़ा, वह सीता को गोदी में उठाकर कुछ दूर जाकर ललकारने लगा। (३) जब रामचंद्र ने चोखे चोखे ७ बाणों को सन्धान कर राक्षस को मारा, तब वह वैदेही को उतार दोनों भाइयों के ऊपर दौड़ा। कुछ युद्ध के अनन्तर वह राक्षस राम और लक्ष्मण को दोनों भुजाओं से पकड़ कांधे पर चढ़ाकर ले चला। ( ४ ) तब दोनों भाइयों ने उस राक्षस की एक एक भुजा तोड़ डाली। जब रामचंद्र ने उसके गाड़ने के लिये गड़हा खनने के लिये लक्ष्मण को आज्ञा दी, तब विराध ने अपने शाप की कथा कहकर उनसे कहा कि यहांसे डेढ़ कोस पर शरभंग ऋषि रहते हैं, उनके पास आप शीघ्र गमन करिए। ऐसा कह वह अपना शरीर छोड़कर स्वर्ग में जा पहुंचा। लक्ष्मण ने १ गड़हा खना और दोनों भाइयों ने गड़हे में उसको गाड़ दिया।

(५) रामचन्द्र ने शरभंग के आश्रम में जाकर सीता और लक्ष्मण के साथ मुनि के चरणों को ग्रहण किया। मुनि ने उनको यथोचित भोजन और वासस्थान दिया। रामचन्द्र बोले हे मुनि! मैं इस वन में निवास करना चाहता हूं, आप मुझे स्थान बतला दीजिए। शरभंग ने कहा कि इस अरण्य में महातेजस्वी सुतीक्ष्ण ऋषि रहते हैं, वे तुम्हारा कल्याण करेंगे। मन्दाकिनी नदी, जो इधर को ओर वह रही है, उसको देखते हुए, बराबर चले जाओ तो वहां पहुंच जाओगे। ऐसा कह शरभंग मुनि अग्नि में प्रवेश कर गए और ब्रह्मलोक में जा पहुंचे। ( ७ ) रामचन्द्र सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम पर जाकर ऋषि से मिले। ( ८ ) उन्होंने रात्रि में उस आश्रम में निवास कर सूर्य्योदय के समय मुनि से विदा मांगी। मुनि ने कहा कि आप जाइए और फिर इस आश्रम में आगमन कीजिए। ( ११ ) यह सुन रामचंद्र ने सीता और लक्ष्मण के साथ ऋषियों के आश्रमों में यथाक्रम से जा २ कर कहीं १० महीने, कहीं १२, कहीं ४, कहीं ५, कहीं ६, कहीं १२ महीने से अधिक और कहीं इससे भी अधिक महीने, कहीं डेढ़, कहीं ३, और कहीं

८ महीने पर्य्यन्त सुख से निवास किया। इसी प्रकार वास करते करते उन को १० वर्ष बीत गए। इसके अनन्तर उन्होंने फिर सीता और लक्ष्मण के सहित सुतीक्ष्ण के आश्रम में आकर कुछ काल निवास किया। किसी समय रामचन्द्र ने सुतीक्ष्ण मुनि से अगस्त मुनि का आश्रम पूछा। मुनि ने कहा कि यहांसे ४ योजन पर दक्षिण दिशा में अगस्त के भ्राता का आश्रम और वहां से १ योजन दक्षिण अगस्त मुनि का आश्रम है। ऐसा ऋषि का वचन सुन तीनों जन ऋषि को प्रणाम कर वहांसे चले और अगस्त ऋषि के भ्राता के आश्रम में पहुंचे। उन्होंने मुनि से सत्कार-पूर्वक फल मूल को पाकर उस रात्रि में वहां निवास किया। (१२) प्रातःकाल वे लोग चलकर अगस्त जी के आश्रम में पहुंचे। ऋषि ने प्रसन्न हो रामचन्द्र को दिव्य धनुष, बाण और दूसरे कई शस्त्र दिये। (१३) रामचन्द्र ने अपने रहने के लिये मुनि से स्थान पूछा। मुनि बोले यहांसे योजन भर पर पंचवटी नाम से विख्यात स्थल है। आप आश्रम बना कर वहां रहिए। वह स्थान गोदावरी नदी के समीप है। ऐसा सुन वे पंचवटी की ओर चले। (१४) और मार्ग में राजा दशरथ के मित्र जटायू से मित्रता कर पंचवटी में पहुंचे। (१५) रामचन्द्र की आज्ञा से लक्ष्मण ने वहां काष्ठ और पत्तों से पर्णकुटी बनाई और तीनों जन उसमें निवास करने लगे। (१७) रावण की बहिन शूर्पणखा राक्षसी ने रामचन्द्र से अपना विवाह करने को कहा। (१८) इस पर लक्ष्मण ने रामचन्द्र की आज्ञा से शूर्पणखा की नाक और कान काट लिए।

वनवास के साढ़े बारह वर्ष बीतने पर शूर्पणखा की नाक काटी गई। (१९) खर ने रामचन्द्र के मारने के लिये शूर्पणखा के साथ १४ राक्षसों को भेजा, (२०) जिनको रामचन्द्र ने मार डाला। (२२, २३) जब खर राक्षस शूर्पणखा से यह समाचार पाकर १४ सहस्र सेना ले रामचन्द्र के समीप पहुंचा, (२४) तब उन्होंने वैदेही को लक्ष्मण के साथ पर्वत की गुहा में भेज दिया। (२६) और अकेले क्षणमात्र में १४ सहस्र राक्षसों के साथ दूषण राक्षस को मार डाला। (२७) इसके अनन्तर त्रिशिरा सेना-पति रामचन्द्र से युद्ध कर मारा गया। (३०) अन्त में खर राक्षस भी युद्ध

करके रामचन्द्र के बाण से मरा (३१) रावण अकम्पन राक्षस से यह वृत्तांत सुनकर सीताहरण में सहायता के लिये मारीच के आश्रम में पहुंचा, परन्तु मारीच के समझाने पर वह लंका को लौट गया · (३२) पीछे शूर्पणखा खर के वध से व्याकुल हो लंका में गई। (३५) उसके धिक्कारने पर रावण रथ पर चढ़ मारीच के पास फिर गया। (३६) और उससे बोला कि राम ने मेरी बहिन को विरूप कर दिया, इसलिये मैं भी उसकी भार्य्या सीता को हर लाऊंगा; इस बात में तू मेरा सहायक हो। (४०) पहिले तो मारीच ने रावण को बहुत समझाया, परन्तु जब उसने कहा कि यदि तुम मेरा कार्य्य नहीं करोगे तो मैं तुम्हें अभी मार डालूंगा। (४२) तब ताड़का का पुत्र मारीच रावण के साथ रथ पर चढ़ कर राम के आश्रम मे पहुंचा। वहां पहुंच वह मनोहर मृग का रूप बन राम के आश्रम में चरने लगा। (४३) सीता ने उस मृग को पकड़ लाने के लिये रामचन्द्र से कहा, (४४) तब वे मृग के पीछे दौड़े और दूर जाकर उन्होंने मृग को मारा, मारीच ने मरते समय ठीक रामचन्द्र के समान स्वर से 'हा सीते! हा लक्ष्मण!' ऐसा पुकारा (४५) जिसे सुन सीता ने लक्ष्मण को कटुवचन कह कर बरजोरी रामचन्द्र के पास भेजा। (४६) वे रामचन्द्र के पास गए, उसी समय सन्यासी का वेष धारण कर के रावण सीता के पास पहुंचा। (४७) सीता ने रावण को सन्यासी जानकर उसका सत्कार किया। (४९) फिर रावण अपना रूप धारण कर सीता को रथ पर बैठा वहांसे चल दिया। वनवास के तेरहवें वर्ष में माघ शुक्ल १४ के दिन वृन्द नाम मुहूर्त्त में सीताहरण हुआ। (५१) मार्ग में रावण और जटायु से बड़ा युद्ध हुआ। जटायु ने रावण के रथ को चूर चूर कर दिया। तदनन्तर रावण ने खड्ग से जटायु के दोनों पक्षों, दोनों पैरों और अगल बगल के देहभागों को काट डाला, तब उसका थोड़ा सांस रह गया। (५२) और रावण सीता को ले आकाश मार्ग से चला। (५४) सीता ने मार्ग में पर्वत के शृङ्ग पर ५ वानरों को देख अपनी पिछौरी और कुछ भूषणों को गिरा दिया। रावण ने सीता को लेजाकर लंका में स्थापन कर पिशाचिनियों को आज्ञा दी कि मेरी अनुमति के बिना इसको

कोई न देखने पावे । (५६) और सीता से कहा कि यदि तू १२ महीने में मुझको अंगीकार न करेगी तो मारी जायगी । फिर उसने राक्षसियों को आज्ञा-दी कि तुम लोग सीता को अशोक वाटिका में लेजा कर इसका अवेक्षण करो और इसको धमका और समझा कर मेरे वशंगत करो ।

(६०) रामचन्द्र लक्ष्मण के साथ आश्रम में आए और वहां सीता को न पाकर सर्वत्र खोजने और विलाप करने लगे । (६७) उन्होंने वन में फिरते फिरते पक्षिराज जटायु को भूमि पर गिरा हुआ देखा । (६८) जटायु बोला कि हे राघव ! राक्षसराज रावण माया करके सीता को हर ले गया है । उसने मेरे दोनों पक्ष काट सीता को ले दक्षिणाभिमुख यात्रा की । वह विश्रवा मुनि का पुत्र और कुबेर का भ्राता है । ऐसा कह पक्षिराज ने अपने प्राणों को त्याग दिया । तब रामचन्द्र ने चिता को प्रज्वलित कर जटायु को जला दिया और उसके लिये पिंडदान और तर्पण किया । इसके अनन्तर दोनों भाई सीता के अन्वेषण के लिये वन में प्रविष्ट हुए । (६९) और सीता को खोजते हुए, पश्चिम दिशा में चले । फिर वे लोग दक्षिण दिशा में प्रवेश कर पगडंडी-रहित मार्ग में पहुंचे और उस वन को शीघ्र लांघ दक्षिण के मार्ग में एक भयंकर वन को लांघ गए । इस प्रकार राम और लक्ष्मण जनस्थान से ३ कोस पर जाकर क्रौञ्च नाम दुर्गम अरण्य में पहुंचे और इसके अनन्तर ३ कोस पूर्व की ओर चल क्रौंचारण्य समाप्त कर मतंगाश्रम वन में गए । फिर वे लोग बड़े दुर्गम वन में पैठ अपने पराक्रम से वन को फाड़ते हुए चले । इतने में विना मस्तक का पर्वताकार कवन्ध नाम राक्षस, जिसका मुख पेट में था, देख पड़ा । पास पहुंचते पहुंचते उसने भुजा पसार दोनों भाइयों को पकड़ लिया । (७०) जब वह राक्षस मुख बाय कर इन दोनों को भक्षण करने का विचार करने लगा, तब रामचन्द्र ने उसकी दहिनी भुजा को और लक्ष्मण ने बाईं भुजा को काट डाला । (७२) फिर कवन्ध ने जब अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त कहा, तब दोनों भाइयों ने उसका शरीर पर्वत के बड़े गड़हे में डाल अग्नि लगा दी । थोड़े काल में वह शीघ्र चिता को फाड़ दिव्य रूप हो विमान पर चढ़ा और आकाश में जाकर रामचन्द्र से बोला

कि जिस प्रकार से तुम सीता को पाओगे, वह सुनो ! सुग्रीव नाम वानर, जो अपने भाई वालि द्वारा घर से निकाला गया है, ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करता है। वह सीता के खोजने में तुम्हारी सहायता करेगा। तुम जाकर शीघ्र उसे अपना मित्र बनाओ। वह इस समय सहायता चाहता है और तुम दोनों उसकी सहायता करने में समर्थ हो।

(७४) दोनों भाई कबन्ध के वचन के अनुसार पंपा के पश्चिम तीर पर जा पहुंचे और वहां शबरी के आश्रम में गए। उस तपस्विनी ने इन दोनों को देख इनके चरणों को ग्रहण किया। रामचन्द्र ने उसके दिए हुए पदार्थों को अंगीकार किया। रामचन्द्र से वार्तालाप करने के पीछे जटाधारिणी और चीर तथा कृष्णमृगचर्म को धारण करने वाली शबरी अग्नि में कूद पड़ी और फिर उसमें से अग्नि तुल्य रूप होकर निकली। जहां ब्रह्मलोक में मतंग ऋषि आदि महात्मा लोग विहार करते थे, शबरी भी अपने समाधि-बल से वहां जा पहुंची। (७५) राम और लक्ष्मण पंपा के तीर पर आए।

किष्किन्धाकाण्ड—(पहला सर्ग) रामचन्द्र लक्ष्मण के सहित वहांसे चले। सुग्रीव ने, जो ऋष्यमूक पर निवास करता था, इन दोनों को देख अत्यन्त त्रास को पाया। सब वानर आश्रम को छोड़ भाग गए (२) सुग्रीव वानरों से बोले कि हे भाइयो ! ये दोनों अवश्य वाली के भेजे हुए हैं। हनूमान बोले हे राजन् ! इस भय को तुम छोड़ दो क्योंकि यह मलयाचल पर्वत है. यहां वाली का कुछ भय नहीं है। सुग्रीव बोले हे हनुमन् ! तुम अपना प्राकृत वेष बनाकर उनके पास जाओ और चेष्टाओं से, रूप से और बात चीत से उनके मन का भेद जान आओ (३) यह सुन हनूमान ऋष्यमूक पर्वत से कूद राम लक्ष्मण के पास आए और भिक्षुक का रूप धारण कर प्रणाम करके उनसे बोले कि आप दोनों कौन हैं। सुनिए, सुग्रीव नामक धर्मात्मा और वीर वानरों का राजा है, वह भाई के द्वारा पीड़ित हो पृथ्वी तल में घूमता फिरता है; उसीका भेजा हुआ मैं आपके पास आया हूं। मेरा नाम हनूमान है। आपके साथ सुग्रीव मैत्री करना चाहता है। मैं उसीका मन्त्री और वायु का पुत्र हूं और ऋष्यमूक पर्वत से आता हूं।

श्रीरामचन्द्र बोले हे लक्ष्मण ! यह कपिराज महात्मा सुग्रीव के सचिव हैं, जिनको मैं चाहता हूं। (४) हनूमान ने रामचन्द्र से पंपा के घोर वन में आने का कारण पूछा, तब लक्ष्मण ने सब वृत्तान्त कह सुनाया। हनूमान बोले हे लक्ष्मण ! सुग्रीव भी राज्य से च्युत हो वालि से निकाला हुआ और स्त्रीहरण से पीड़ित वन में वास करता है। वह हम लोगों के साथ सीता के खोजने में आपको सहायता करेगा।

इसके अनन्तर हनूमान भिक्षुक का रूप छोड़ वानर रूप होगए और दोनों भाइयों को पीठ पर चढ़ा कर ऋष्यमूक पर्वत पर ले आए। (५ सर्ग) पवनपुत्र ने ऋष्यमूक से मलय पर्वत पर जाकर सुग्रीव से दोनों भाइयों का सब वृत्तान्त कह सुनाया। रामचन्द्र ने सुग्रीव का हाथ पकड़ा। हनूमान ने दोनों मित्रों के मध्य में अग्नि स्थापन किया। रामचन्द्र और सुग्रीव अग्नि की प्रदक्षिणा करके पूरे मित्र बने।

(६ सर्ग) सुग्रीव बोले हे रामचन्द्र ! मैंने एक स्त्री देखी, जिसको एक भयंकर राक्षस हरे लिए जाता था। वह राम राम और लक्ष्मण ऐसा पुकार रही थी। उस स्त्री ने हम पांच वानरों को इस पर्वत पर देख वस्त्र और सुन्दर सुन्दर आभूषणों को ऊपर से गिरा दिया। मैं अनुमान से जानता हूं कि वही सीता होगी। रामचन्द्र के मांगने पर सुग्रीव ने पर्वत की कन्दरा में पैठ उन वस्तुओं को लाकर राम के समीप रख दिया, जिनको दोनों भाइयों ने पहचाना।

(९ सर्ग) सुग्रीव ने दुन्दुभी के पुत्र मायावी और वाली के युद्ध की कथा और अपने भाई वाली के साथ वैर का कारण रामचन्द्र से वर्णन किया (१०) और कहा कि वाली के भय से मैं सम्पूर्ण पृथ्वी पर घूमता फीरा, परन्तु इस ऋष्यमूक पर्वत पर सुख से रहता हूं। (११ सर्ग) एक समय भैंसा रूप दुन्दुभी असुर किष्किन्धा के द्वार पर आकर दुन्दुभी के सदृश शब्द करता हुआ, गर्जने लगा। वाली ने दुन्दुभी को मार उसको अपनी दोनों भुजाओं से उठा कर एक योजन पर मतंग के आश्रम के निकट फेंक दिया। वेग से फेंकने के कारण उसके मुख का रुधिर वायुवेग से उड़ विन्दु विन्दु होकर मतंग ऋषि के आश्रम में जा गिरा। मुनीश्वर ने बाहर निकल कर देखा कि एक

पर्वताकार भैंसा मरा पड़ा है। मुनि ने अपने तपोबल से वानर का कर्म जान कर ऐसा शाप दिया कि जिसने इस मृतक को मेरे आश्रम में फेंका है, वह यदि इस आश्रम में प्रवेश करेगा तो मर जायगा। हे रामचन्द्र! उस शाप से वाली ऋष्यमूक पर्वत की ओर आंख उठा कर देख भी नहीं सकता। देखिए यही दुन्दुभी की हड्डियों का समूह देख पड़ता है। ये सात साखू के वृक्ष, जो समीप में देख पड़ते हैं, इनमें से एक को भी वाली अपने पराक्रम से हिला कर विना पत्ते का कर सकता है सो आप उसको कैसे मार सकेंगे। जब रामचन्द्र ने खेलवाड़ की नाईं पैर के अंगूठे से दुन्दुभी के सूखे शरीर को उठाकर दश योजन पर फेंक दिया (१२) और एक घोर वाण चलाया जो वाण साखू के सातों वृक्षों को और पर्वत को फोड़ कर रामचन्द्र के तरकस में आ घुसा, तब सुग्रीव विस्मय को प्राप्त हो बोले कि हे प्रभो! तुम अपने वाणों से सम्पूर्ण देवों को मार सकते हो। वाली क्या पदार्थ है।

रामचन्द्र सुग्रीव आदि वानरों के साथ किष्किन्धा में पहुंच वृक्ष की आड़ में खड़े हुए। सुग्रीव बड़े वेग से गर्जा, जिसको सुन वाली अत्यन्त क्रोध युक्त हो लपक कर आया। दोनों भाइयों का घोर युद्ध होने लगा। रामचन्द्र हाथ में धनुष लिये दोनों की ओर देखने लगे, परन्तु कौन सुग्रीव और कौन वाली है, यह भेद राघव को न समझ पड़ा; इसलिये उन्होंने अपने वाण को न छोड़ा। सुग्रीव जब वाली से परास्त हो ऋष्यमूक पर भाग गया, तब रामचन्द्र लक्ष्मण और हनूमान को साथ ले सुग्रीव के पास गए। रामचन्द्र की आज्ञा से लक्ष्मण ने पुष्पित गजपुष्पा को उखाड़ कर सुग्रीव के गले में माला की नाईं पहना दिया। (१४) रामचन्द्र सुग्रीव आदि के साथ किष्किन्धा में जाकर वृक्षों की आड़ में ठहरे। सुग्रीव ने ऊंचे स्वर से नाद कर युद्ध के लिये वाली को ललकारा। (१५) वाली क्रुद्ध हो शीघ्र दौड़ा। उस समय वाली की स्त्री तारा बोली कि हे वीर मैंने कुमार अंगद के मुख से सुना है कि अयोध्या के राजा के दो पुत्र राम और लक्ष्मण करके विख्यात सुग्रीव की प्रिय कामना से प्राप्त हुए हैं। ऐसे महात्मा के साथ तुमको विरोध करना अनुचित है। (१६) वाली तारा के वचन का निरादर कर नगर से बाहर

निकल सुग्रीव से लड़ने लगा। जब रामचन्द्र ने देखा कि सुग्रीव क्षीण-पराक्रम होगया, तब वाली की छाती में बाण मारा, जिससे वह भूमि पर गिर-पड़ा। (रामचन्द्र और सुग्रीव से बहुत वार्तालाप करने के पीछे) (२२ सर्ग) वाली ने अपने प्राणों को छोड़ दिया। (२५) श्रीरामचन्द्र ने विलाप करते हुए सुग्रीव, तारा और अंगद को समाश्वासन दिया। सुग्रीव और अंगद ने नाना प्रकार के भूषण, पुष्प और वस्त्रों से वाली के मृत शरीर को भूषित कर पालकी पर चढ़ाया। वानरों ने नदी के तीर पर चिता बनाई। अंगद ने सुग्रीव के साथ वाली को उठाकर चिता पर स्थापन किया और विधिपूर्वक चिता में अग्नि देकर उलटी प्रदक्षिणा दी। इसके अनन्तर रामचन्द्र ने जो सुग्रीवही के तुल्य दीन और शोकयुक्त होगए थे, सम्पूर्ण प्रेतक्रिया करवाई।

(२६ सर्ग) रामचन्द्र सुग्रीव से बोले कि अंगद को यौवराज्य पर स्थापन करो। यह वर्षाऋतु का पहिला महीना श्रावण है। यह उद्योग का समय नहीं है, इसलिये तुम पुरी में प्रवेश करो। मैं लक्ष्मण के सहित इस पर्वत पर निवास करूंगा। जब कार्तिक लगे, तब तुम रावण के बध के लिये उद्योग करना। रामचन्द्र की आज्ञा से सुग्रीव ने किष्किन्धा में प्रवेश किया। वहां सुग्रीव का अभिषेक हुआ। सुग्रीव ने अंगद को यौवराज्य के आसन पर अभिषेक कराया।

(२७ सर्ग) रामचन्द्र लक्ष्मण के सहित प्रस्रवणगिरि पर आए। उस पर्वत के शृङ्ग पर एक बड़ी लम्बी चौड़ी कन्दरा देखकर दोनों भाइयों ने वहां नि-वास किया। (२८) रामचन्द्र ने माल्यवान पर्वत पर निवास करते हुए लक्ष्मण से वर्षाऋतु की शोभा वर्णन की।

(२९ सर्ग) सुग्रीव ने नील नामक वानर को सब दिशाओं से सेनाओं को इकट्ठी करने की आज्ञा दी, और यह भी कहा कि पन्द्रह दिन के भीतर सब वानरों को आकर इकट्ठा होजाना चाहिए।

(३० सर्ग) शरत् काल के लगते ही रामचन्द्र लक्ष्मण से बोले कि देखो सुग्रीव सीता के खोजने के लिये समय का नियम करके भी चेत नहीं करता। वर्षाकाल के चारों महीने वीत गए। तुम किष्किन्धा में जाकर मेरे क्रोध का रूप उससे कह सुनाओ।

(३१ सर्ग) लक्ष्मण पर्वत की संधि में बसी हुई, दुर्गम किष्किन्धा पुरी के निकट पहुंचे। श्रेष्ठ वानरों ने सुग्रीव के घर जाकर क्रोधयुक्त लक्ष्मण का आगमन कह सुनाया, परन्तु वह तारा के साथ कामासक्त हो रहा था, सो उसने इनके वचनों की ओर ध्यान नहीं दिया। सचिवों की आज्ञा पाकर बड़े बड़े वानर हाथों में वृक्षों को लिए खड़े होगए। सम्पूर्ण किष्किन्धा वानरों से भरगई। उस काल में अङ्गद प्रज्वलित कालाग्नि के सदृश लक्ष्मण को देख अत्यन्त त्रास को प्राप्त हुए। लक्ष्मण ने अङ्गद को सुग्रीव के पास भेजा, परन्तु वह निद्रा से ऐसा प्रमत्त था, कि कुछ भी न समझ सका। तब वानर लोग लक्ष्मण को क्रुद्ध देख बड़े ऊंचे स्वर से किलकिला शब्द करने लगे, जिससे सुग्रीव जागा। (३३) लक्ष्मण अंगद से सन्देश पाकर किष्किन्धा में चले। सुग्रीव चाप के शब्द से लक्ष्मण का आगमन जान त्रास पाकर अपने आसन से विचलित हुआ। उसने तारा को लक्ष्मण के पास भेजा। तारा लक्ष्मण को प्रबोध करके उनको सुग्रीव के पास लाई। (३६) सुग्रीव की प्रार्थना से लक्ष्मण प्रसन्न हुए। (३७) सुग्रीव की आज्ञा से हनूमान ने सब वानरों को सब दिशाओं में भेजा। उन्होंने शीघ्र जाकर नाना समुद्र, पर्वत, वन और सरोवरों के रहने वाले वानरों को राजा की आज्ञा कह सुनाई। प्रधान वानर पृथ्वी के सब वानरों को सन्देश दे, सुग्रीव के पास उपस्थित होकर बोले कि सब वानर आ पहुंचते हैं।

(३८ सर्ग) सुग्रीव लक्ष्मण के सहित सुवर्ण की पालकी पर चढ़ रामचन्द्र के निवास स्थान पर पहुंचे। (३९) श्रीरामचन्द्र सुग्रीव से बात कर रहे थे, उसी समय महाबली असंख्य वानरों से सम्पूर्ण भूमि आच्छादित होगई।

(४० सर्ग) सुग्रीव ने विनत नामक यूथपति को लक्ष वानरों के साथ पूर्व दिशा में; (४१) नील, हनूमान, जाम्बवान, सुहोत्र, गज, गवाक्ष, गवय, सुषेण, वृषभ, मैन्द, दूसरे सुषेण, द्विविद, गन्धमादन, इत्यादि वीरों को अंगद का अनुगामी कर दक्षिण दिशा में; (४२) तारा के पिता सुषेण को २ लाख वानरों के साथ पश्चिम दिशा में (४२) और शतबली वानर को लक्ष वानरों के साथ उत्तर दिशा में रावण और सीता के पता लगाने के लिये भेजा।

(४४) रामचन्द्र ने देखा कि हनूमान पर सुग्रीव का बड़ा निश्चय है और हमको भी निश्चय होता है कि हनूमान कार्य्य साधन करेंगे, इसलिये अपने नामाक्षर से चिन्हित अंगूठी जानकी की प्रतीति के लिये हनूमान को दी।

(४५ सर्ग) राजा सुग्रीव की आज्ञा पाकर वानर गण सम्पूर्ण पृथ्वी में छाकर टिड्डियों की भांति चले। (४७) पूर्व, उत्तर और पश्चिम इन तीन दिशाओं से वानरों ने आकर सीता के पता न लगने का समाचार सुग्रीव से कह सुनाया।

(५० सर्ग) अंगद आदि वानरों ने सीता को खोजते खोजते एक बड़े भारी ऋक्ष नामक बिल को देखा। प्यासे हुए वानर सब उस अन्धियारे बिल में घुस गए। उसके भीतर निर्मल जल से पूर्ण अनेक सरोवर थे। वहां वानरों ने सातखन वाले मुख्य गृहों को, जो कांचन और चांदी से बने थे, देखा। वहां एक स्त्री चीर और काले मृगचर्म को धारण किए हुई, तपस्या करती देख पड़ी। (५१) हनूमान के पूछने पर तपस्विनी बोली कि मय दानव ने इस सुवर्ण के सम्पूर्ण जंगल को और इन गृहों को अपनी माया से रचा है। इसी बिल में उसने अपनी विद्या प्रकाश की थी। मैं मेरु सावर्णि की पुत्री हूं, स्वयंप्रभा मेरा नाम है, मैं इस भवन की रक्षा करती हूं। वानर लोग खा पीकर स्वस्थ चित हुए। हनूमान उस तापसी से बोले कि सुग्रीव ने जो हमारे लिये समय नियत किया था, वह इस बिल में बीत गया। अब तू हम लोगों को इस बिल से बाहर निकाल दे। जब स्वयंप्रभा के कहने से सबों ने अपने अपने हाथों से अपने अपने नेत्रों को ढांक लिया, तब उसने अपने प्रभाव से एक निमेष में सबको बाहर कर दिया।

(५३ सर्ग) वानरों ने समुद्र को देखा। वे एक पहाड़ी पर बैठ कर चिन्ता करने लगे। अंगद बोले कि देखो हम लोग कार्तिक के महीने में भेजे गए, एक मास की अवधि बीत गई परन्तु कार्य्य सिद्ध न हुआ। (५५) इसके उपरांत सब वानर परस्पर प्रायोपवेश के विचार से दक्षिणाग्र कुश को बिछाकर समुद्र के तीर पर बैठ गए। इतने में एक महा भय ऐसा आया कि वे सब इधर उधर भागने और कन्दराओं में घुसने लगे।

( ५६ सर्ग ) जटायु का भाई संपाती नामक गृध्र वानरों को देख कन्दरा से निकल कर बोला कि आज बहुत काल पर यह भोजन मुझे मिला है। पक्षी की बात सुन अंगद हनूमान से जानकीहरण, जटायुमरण आदि की कथा कहने लगे। यह सुन गृध्रराज चकित होकर बोले कि तुम लोग जटायु के विनाश की कथा मुझसे कहो। (५७) अंगद ने जानकीहरण और रावण के हाथ से जटायु के मरण की कथा कह सुनाई। (५८) सम्पाति (अपना सब वृत्तान्त कहकर) बोला कि एक रूपवती और तरुणी स्त्री को रावण हरे लिये जाता था, यह मैंने देखा। वह स्त्री राम राम और लक्ष्मण ऐसा पुकारती थी, सो राम नाम लेने से मैं जानता हूं कि वह सीता ही होगी। रावण विश्रवा मुनि का पुत्र और कुवेर का भाई है। वह लंकापुरी में निवास करता है। यहां से ४०० कोस पर एक द्वीप है, उसमें विश्वकर्मा की बनाई हुई लंका नाम नगरी है। उसीमें सीता राक्षसियों से रक्षित होकर रहती है। मैं यहांसे रावण और जानकी को देख रहा हूं, क्योंकि मेरे भी चक्षु गरुड़ के चक्षु के सदृश दिव्य हैं। तुम लोग समुद्र लांघने का उपाय करो। (६३) सम्पाति के जले हुए दोनों पक्ष फिर से नए निकल आए। वह अपनी आकाश गति की परीक्षा लेने के लिये वहांसे उड़ा।

( ६५ सर्ग ) सब यूथपतियों ने अपनी अपनी शक्ति वर्णन की, परन्तु किसी ने १०० योजन जाकर लंका से लौट आने का निश्चय नहीं किया। (६६) जाम्बवान हनूमान से बोले कि हे वानरश्रेष्ठ तुम एकान्त में चुप मार क्यों बैठे हो। इस कार्य्य में क्यों नहीं उद्यत होते।

देखो पुंजिकस्थला नामक अप्सरा (अंजना) किसी शाप के कारण से कुंजर नामक बानरेन्द्र की कन्या और केशरी नामक वानर की स्त्री हुई। वह एक समय वानरी रूप छोड़ करके रूप यौवन से सुशोभित मनुष्यरूप धारण कर पर्वत के अग्र भाग में घूम रही थी। वायु ने उसके रूपसे मोहित हो, दोनों भुजाओं को बढ़ाकर बलात्कार से उसका आलिङ्गन किया। अंजना बोली कि कौन मेरे एकपत्नीव्रत को नाश करना चाहता है। वायु बोला कि तू मत डर, मैं तुझसे संभोग न करूंगा। मैंने आलिंगन मात्र करके मन के द्वारा जो

तेरे साथ संभोग किया, इसलिये महा पराक्रमी पुत्र को तू जनेगी। ऐसा वायु का वचन सुन तुम्हारी माता प्रसन्न हुई और गुहा में उसने तुम को जना। उस समय तुम सूर्य्य को आकाश में उदय होते देख फल जान कर लेने की इच्छा से आकाश में उड़े। उस घड़ी इन्द्र ने तुमको वज्र से मारा, जिससे तुम पर्वत के शिखर पर गिर पड़े। तुम्हारा बायां हनु अर्थात् ठुड्ढो के बाएं ओर का भाग टेढ़ा होगया, इसीलिये तुम्हारा नाम हनूमान पड़ा। तुम्हारी यह दशा देखकर वायु ने क्रुद्ध हो तीनों लोक से अपनी गति रोक ली, जिससे तीनों लोक खड़बड़ा उठे। देवता लोग घबड़ाए और वायु को प्रसन्न करने लगे। वायु के प्रसन्न होने पर ब्रह्मा ने तुमको वर दिया कि संग्राम में किसी शत्रु से तुम्हारा घात न होगा और इन्द्र ने कहा कि तुम्हारा इच्छामरण होगा।

इतना कह जाम्बवान बोले कि हे महावीर तुम वायु के पुत्र हो और गति वेग में भी उन्हीं के समान हो। तुम उठो और इस समुद्र को लांघो। (६७ सर्ग) हनूमान उस महेन्द्र पर्वत पर चढ़कर घूमने लगे।

**सुन्दर-काण्ड**—(पहला सर्ग) हनूमान आकाश में उड़ लङ्का को चले। समुद्र के कहने से हिरण्य (मैनाक) नामक पर्वत ने जल के ऊपर प्रगट हो हनूमान से अपने ऊपर श्रम दूर करने को कहा, परन्तु वह उस पर्वत को केवल हाथ से स्पर्श करके फिर आकाश में उड़े। इसके अनन्तर वह नागमाता सुरसा को जीत और सिंहिका नामक राक्षसी को मार, अपने शरीर को पूर्व-वत छोटा करके लङ्का के पर्वत पर उतर पड़े।

(२ सर्ग) हनूमान बिड़ाल के सदृश छोटा रूप धारण कर प्रदोष काल में लङ्का में पैठे। (३) लङ्का नगरी ने राक्षसी रूप धारण कर हनूमान को रोका, जिसको कपि ने जीत लिया। (४) हनूमान प्राकार को लांघ कर लङ्का में पहुंचे। (६) उन्होंने प्रहस्त, महापार्श्व, कुम्भकर्ण, विभीषण, महोदर, विरू-पाक्ष, मेघनाद, जम्बुमाली, आदि राक्षसों के भवनों को देखा। (९ सर्ग) फिर अर्ध योजन चौड़े और एक योजन लम्बे रावण के विशाल गृह का निरीक्षण किया। इसके पश्चात् कपि ने पुष्पक विमान को (१०) और बहुत पत्नियों के

साथ सोते हुए, रावण को देखा, (११) परन्तु श्री जानकी को न पाया। (१४) हनूमान अशोकवाटिका के प्राकार (बाहर की दीवार) पर कूद गए और वाटिका की शोभा देख कर शिंशुपा (सीसों) के वृक्ष पर चढ़ गए।

(१५ सर्ग) उद्यान की अशोकवाटिका में पासही एक गोल गृह था, जिसके मध्य में सहस्र खम्भे लगे हुए थे और वह सुवर्ण को वेदियों से संयुक्त था। हनूमान ने वहां राक्षसियों से घिरी हुई सीता को देखा। रामचन्द्र ने सीता के शरीर के जिन भूषणों को बतलाया था, हनूमान ने उनको पहचान कर निश्चय किया कि यही वैदेही हैं। (१८) जब थोड़ी सी रात रह गई, तब रावण जाग कर सैकड़ों स्त्रियों के साथ अशोकवाटिका में गया। हनूमान ने सोचा कि यही रावण है। तब वह कूद कर गझिन वृक्ष की शाखा में जा छिपे। (१९) रावण को देख सीता कांपने और रोदन करने लगी। (२२) रावण बोला हे सीते यदि दो महीन बीतने पर भी तुम मुझे अपना पति करना न चाहोगी, तो मारी जाओगी। रावण सीता को बहुत धमका कर अपने मन्दिर में चला गया। (२४) रावण की आज्ञानुसार राक्षसियां नाना कठोर बचनों से सीता को दपटने लगीं। हनूमान सीसों की शाखा में छिपे हुए सब सुन रहे थे। सीता उस सीसों वृक्ष के पास चली गई, और अशोक की एक पुष्पित शाखा को थाम रामचन्द्र का ध्यान करने लगी। (३१) जब हनूमान सीता को सुनाकर रामचन्द्र की कथा कहने लगे, तब सीता आश्चर्य्य युक्त हो, नीचे ऊपर देखने लगी। (३२) सीता सीसों की शाखा के बीच भयंकर वानर का रूप देख अत्यन्त डर कर मूर्छा खागई, फिर सचेत हो, सोचने लगी। (३३) हनूमान वृक्ष से उतर सीता के समीप गए। जानकी ने हनूमान के पूछने पर अपना वृत्तान्त कहा। (३४) हनूमान ने सीता को समाश्वासन दे, रामचन्द्र का वृत्तान्त कह सुनाया। जब हनूमान समीप चले गए, तब सीता उनको रावण जान कर डर गई, क्योंकि उसे निश्चय था, कि राक्षस लोग कामरूपी होते हैं। जब हनूमान मधुर बानी से राम की कथा वर्णन करने लगे, तब जानकी ने राम और लक्ष्मण का चिन्ह पूछा। (३५) हनूमान ने रामचन्द्र के सर्वाङ्ग का विस्तार से वर्णन किया। और सुग्रीव से मित्रता की

कथा कही, तब सीता ने ठीक जाना कि हनूमान मायावी नहीं है। (३६) हनूमान ने राम नाम से अंकित अंगूठो सीता को दी, जिससे उनको दृढ़ विश्वास हुआ कि यह राम का दूत है। (३७) जानकी बोलीं हे कपे! तुम जाकर रामचन्द्र से कहो कि जबतक वर्ष पूरा न हो तबतक हमे ले चलें, क्योंकि तभी तक मेरा जीवन है। रावण ने मेरे लिये यही ठहरा रक्खा है। यह दशवां महीना है शेष दोही रह गए हैं। हनूमान बोले हे जानकी अब तुम मेरे पीठ पर चढ़ो। मैं तुम्हे रामचन्द्र के पास पहुंचाता हूं। सीता ने अनेक कारणों को विचार भय खाकर कपि के पीठ पर जाना स्वीकार नहीं किया (३८) हनूमान बोले यदि मेरे साथ चलने में तुमको उत्साह नहीं है, तो मुझे कुछ चिन्हानी दो। सीता ने जयन्त की कथा विस्तार से चिन्हानी रूप कह सुनाई। (देखो पहले खण्ड के चित्रकूट के वृत्तान्त में) और दिव्य चूड़ामणि रामचन्द्र को देने के लिये हनूमान को दिया, जिसको कपि ने अंगुली में पहन लिया।

(४१ सर्ग) हनूमान सीता से विदा हो प्रमदावन में जाकर बड़े वेग से वृक्षों को उखाड़ने लगे। उन्होंने गृह आदि सब तोड़ फोड़ नष्ट कर दिया। (४२) प्रमदावन के पक्षियों के नाद और वृक्षों के टूटने के शब्द से सब लंकावासी त्रास से व्याकुल होगए। जो राक्षसियां पिछली रात को सो गई थीं, जाग उठीं और वन का विनाश और कपि का पर्वताकार रूप देख जानकी से पूछने लगीं कि हे सीते यह कौन, कहांसे और किस लिये यहां आया है और किस प्रकार से इसने तुमसे बात चीत की। सीता ने उत्तर दिया कि कामरूपी राक्षसों के कुतूहल जानने की मुझमें क्या शक्ति है। तुम्ही लोग जान सक्ते हो कि यह कौन है। कई राक्षसियां रावण के समीप जाकर बोलीं कि अशोकवाटिका में एक पराक्रमी वानर आया है। उसने सीता के साथ कुछ बात चीत भी की थी। हमने सीता से उस विषय में बहुत पूछा परन्तु वह उसको बतलाना नहीं चाहती। वानर ने प्रमदावन को ध्वस्त कर डाला, परन्तु शिंशुपा वृक्ष को, जिसके नीचे सीता बैठी है, बचाया है। रावण ने क्रोध कर ८० सहस्र राक्षसों को भेजा, जिनको हनूमान ने मार गिराया। (४४) जम्बुमाली राक्षस गया और हनूमान द्वारा मारा गया।

(४५) रावण के मंत्रियों के ७ पुत्र जाकर हनूमान के हाथ से मारे गए। (४६) सेना के ५ मुख्य नायक मारे गए। (४७) रावण का पुत्र अक्ष गया और बड़े युद्ध के अन्त में हनूमान ने उसको मार डाला। (४८) रावण के पुत्र इन्द्रजीत ने जाकर कपि को ब्रह्मास्त्र से बांधा। राक्षसों ने कपि को चेष्टारहित देख सुन के रस्सों और वृक्ष की छालों से कस कर बान्धा। मेघनाद ने हनूमान को लेजाकर रावण के पास उपस्थित कर दिया।

(५१ सर्ग) हनूमान ने रावण से बहुत बात चीत की और सीता के दे देनेके लिये कहा। रावण ने कपि का अप्रिय वचन सुन, क्रोध कर उसके घात करनेकी आज्ञा दी, (५२) परन्तु इस बात में विभीषण की सम्मति न हुई, क्योंकि हनूमान ने कई बार कहा था कि मैं दूत हूं। विभीषण ने रावण को बहुत समझाया और कहा कि दूत के लिये बहुत प्रकार के दण्ड कहे गए हैं, परन्तु दूत का वध मैंने नहीं सुना है। (५३) विभीषण के वचन को मानकर रावण बोला कि कपियों की पोंछ इनका बड़ा प्यारा भूषण है, यही जलाई जाय। तब राक्षसों ने हनूमान की पोंछ में कपड़ा लपेट और तैल से उसको भिगोय उसको जला दिया। राक्षस लोग शंख नगाड़ा बजाते और बानर का अपराध लोगों को सुनाते हुए हनूमान को पुरी में घुमा रहे थे। हनूमान बन्धनों को काट नगर के फाटक पर कूद कर चढ़ गए। उसी जगह एक लोहे का परिघ मिला, कपि ने उसीसे सब राक्षसों को मार गिराया।

(५४ सर्ग) हनूमान ने क्रम से सब गृहों को जलाया, पर एक विभीषण का घर छोड़ दिया। उसने सम्पूर्ण लंका को जला कर समुद्र में अपनी पोंछ को बुझाया। (५५) हनूमान ने सोचा कि लंका जलने के साथ जानकी भस्म हो गई होगी। इतने में बड़े बड़े चरणों का शब्द सुन पड़ा, कि बड़ा आश्चर्य्य है कि सम्पूर्ण लंका भस्म हो गई, पर जानकी न जली। (५६) हनूमान ने फिर उस शिंशुपा वृक्ष के पास आकर जानकी को देखा। वह उनको समाश्वासन देकर अरिष्ट नाम पर्वत पर कूद चढ़े और वहांसे वायु की नाईं उत्तर की ओर उड़े।

(६७ सर्ग) हनूमान ने समुद्र के इस पार महेन्द्राचल पर पहुंच कर बानरों से सीता का समाचार कह सुनाया। (६१) वानर लोग महेन्द्राचल से कूद कर आकाश में उड़ चले और सुग्रीव के मधुवन में आकर अंगद की आज्ञा ले मूल फल खाने लगे। दधिमुख आदि रखवालों के रोकने पर उन्होंने उनको मारा और वन को उजाड़ डाला। (६३) दधिमुख ने वन उजाड़ने का समाचार सुग्रीव से जा कहा। सुग्रीव बोले कि बिना कार्य्य किए ये लोग कभी ऐसी ढिठाई नहीं कर सकते। अवश्य इन्होंने कार्य्य सिद्ध किया है। (६५) बानरों ने प्रस्रवण पर्वत पर जाकर राम और लक्ष्मण को प्रणाम किया। हनूमान ने सीता का समाचार रामचन्द्र से कहा और सीता का दिया हुआ मणि उनको दिया।

युद्धकाण्ड।—(चौथा सर्ग) श्री रामचन्द्र ने प्रस्रवण पर्वत से दक्षिण दिशा में प्रस्थान किया। उनके पीछे सुग्रीव से अभिरक्षित हो कर बड़ी भारी वानरी सेना चली। सब वीर जाते जाते सह्य नामक पर्वत के पास पहुंचे। हनूमान के पीठ पर रामचन्द्र और अंगद के पीठ पर लक्ष्मण बड़ी शोभा पाते थे। वानरी सेना रात्रि दिन चली जाती थी। रामचन्द्र अपनी सेना के साथ सह्याचल और मलयाचल पर्वतों के पार हो महेन्द्राचल पर्वत पर चढ़े। वहांसे भयंकर शब्द से गर्जता हुआ समुद्र देख पड़ता था। इस के अनन्तर वे लोग समुद्र के तीर आए। रामचन्द्र ने सेना को टिकने की आज्ञा दी।

(१३ सर्ग) रावण ने अपनी सभा में कहा कि बहुत काल बीते, मैंने पुंजिकस्थली अप्सरा से, जो ब्रह्मलोक में जाती थी, बलात्कार से भोग किया। यद्यपि उसने मेरे दोष को ब्रह्मा से नहीं कहा, तथापि ब्रह्मा ने उसकी आकृति से इस बात को जान लिया और क्रुद्ध होकर कहा कि हे रावण आज से यदि तू अन्य स्त्री को बलात्कार से उपभोग करेगा तो तेरे मस्तक सौ टुकड़े हो जायंगे। इस शाप के भय से मैं सीता को अपने पर्य्यङ्क पर बलात्कार से नहीं ले जाता।

(१४ सर्ग) विभीषण ने रावण को बहुत समझाया कि सीता को रामचन्द्र के अर्पण कर दो। (१६) रावण ने कहा कि ऐसी बातें जो दूसरा कोई कहता तो इसी घड़ी मारा जाता। विभीषण रावण के अनेक कठोर वचनों से उदास हो ४ राक्षसों के साथ लंका से आकाश में उड़े।

(१७ सर्ग) विभीषण क्षण मात्र में सागर के उत्तर तीर पर रामचन्द्र के समीप पहुंचे, और आकाशही में स्थित हो बोले कि मैं दुराचारी रावण का छोटा भ्राता हूं, विभीषण मेरा नाम है; मैंने उसको समझाया कि सीता रामचन्द्र को दे डालो। इसपर उसने मुझे बहुत कठोर वचन कहे, इसलिये मैंने रामचन्द्र के शरण होना अंगीकार किया है। (१९) रामचन्द्र से अभय पाकर विभीषण रामचन्द्र के चरणों पर गिर पड़े। रामचन्द्र ने विभीषण से लङ्का के बलाबल का हाल पूछा। उसने सब कह सुनाया। रामचन्द्र की आज्ञा से लक्ष्मण ने वानरों के मध्य में विभीषण का राज्याभिषेक कर दिया। इसके अनन्तर हनूमान और सुग्रीव विभीषण से बोले कि हम लोग समुद्र के पार किस प्रकार से जायं। विभीषण बोले कि रामचन्द्र समुद्र के शरण जायं, यही उपाय है। यह बात रामचन्द्र को रुची।

(२० सर्ग) रावण के दूत शार्दूल राक्षस ने समुद्र के पार जाकर वानरी सेना को देखा और रावण के पास जाकर सब समाचार कह सुनाया। रावण ने शुक नाम राक्षस से कहा, कि तुम राजा सुग्रीव से मेरी ओर से कहो, कि इस सेना-समारम्भ से तुम्हारा कुछ अर्थ साधन नहीं देख पड़ता, फिर तुम हमारे भाई के तुल्य हो। तुम अपनी राजधानी किष्किन्धा में चले जाओ। तुम किसी प्रकार से वानरों के द्वारा लंका प्राप्त नहीं कर सकोगे। शुक ने पक्षी रूप धारण कर समुद्र के पार आकर, सुग्रीव से रावण का सन्देश कह सुनाया। इतनेमें वानर लोग कूद कर मुष्टिकाओं से मारते हुए उसको भूमि पर उतार लाए। उसकी पुकार सुन जब रामचन्द्र ने उसको छोड़ा दिया, तब वह आकाश में जाकर बोला कि हे सुग्रीव मैं जाकर रावण से क्या कहूं। सुग्रीव बोले कि रावण से कह देना कि न तुम मेरे मित्र हो, न दयापात्र हो, किन्तु रामचन्द्र के शत्रु हो, इसलिये सपरिवार बाली के तुल्य वध के योग्य

दो। सुग्रीव की आज्ञा से वानर लोग फिर शुक को पकड़ कर मारने लगे। शुक का विलाप सुन रामचन्द्र बोले कि दूत को मारना ठीक नहीं है, उसको छोड़ दो।

(२१ सर्ग) श्रीरामचन्द्र समुद्र के तीर कुशों को बिछा कर अपने बाहु को तकिया बना मौन हो लेट गए, इस प्रकार से नियम पालते हुए उनको तीन रात बीत गई, परन्तु सागर ने अपना रूप न दिखाया। तब रामचन्द्र अति क्रुद्ध हो इन्द्र वज्र की नाईं बाणों को छोड़ने लगे। उस काल में जब वायु के शब्द से युक्त समुद्र के जल का महा वेग उत्पन्न हुआ, (२२) तब मूर्तिमान सागर जल से स्वयं निकल कर खड़ा हुआ और हाथ जोड़ कर राघव से बोला कि हे महाराज मैं वानरों के उतरने के लिये स्थल के तुल्य मार्ग बना दूँगा। रामचन्द्र बोले कि यह अमोघ बाण कहां फेंका जाय। समुद्र बोला यहांसे उत्तर की ओर एक अति पवित्र मेरा स्थल है। उसका नाम द्रुमकुल्य लोक में प्रसिद्ध है। वहां पर भयंकर काम करने वाले पापशील आभीर इत्यादि चोर मेरे जल को पीते हैं। आप इस बाण को वहांही सफल कीजिए। रामचन्द्र ने उस प्रदीप्त बाण को उसी देश में फेंक दिया। उस बाण ने वहां की पृथ्वी का जल सोख लिया। तब से वह मरु कान्तार अर्थात् मारवाड़ नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके अनन्तर फिर समुद्र बोला कि यह नल वानर विश्वकर्मा का पुत्र है। इसने अपने पिता से वर पाया है। यह मेरे जल के ऊपर सेतु बनावे।

रामचन्द्र की आज्ञा से सैंकड़ों और सहस्रों वानर महावन में घुस गए, और वृक्षों को उखाड़ उखाड़ समुद्र के तीर पर डालने लगे। उन्होंने साखू, तांड़, बेल, आम, अशोक, आदि वृक्षों से समुद्र को भर दिया। फिर वे बड़े बड़े पत्थर के ढोकों और पर्वतों को उखाड़ उखाड़ यन्त्रो द्वारा ढोकर लाने लगे। नल सेतु बनाते थे। बहुत वानर वृक्षों को बिछाते थे।

पहले दिन में १४ योजन, दूसरे दिन २०, तीसरे दिन २१, चौथे दिन २२ और पांचवें दिन २३ योजन सेतु वानरों ने बनाया। इस प्रकार से यह

सेतु १० योजन चौड़ा और १०० योजन लम्बा बना। सेतु द्वारा सेना समुद्र के पार गई। सुग्रीव ने उसको टिकाया।

(२४ सर्ग) समुद्र पार होने पर सुग्रीव ने रामचन्द्र की आज्ञा से रावण के दूत को छोड़ दिया। शुक ने रावण से सब समाचार जा सुनाया। (२५) रावण ने शुक और सारण दोनों मन्त्रियों को रामचन्द्र की सेना का परिमाण और बल समझ आने को भेजा। वे वानर का रूप धर कर वानर की सेना में घुस गए। विभीषण ने उनको पहचान लिया और रामचन्द्र के समीप लेजा-कर खड़ा किया। रामचन्द्र ने उन दोनों को छोड़वा दिया। (२६) शुक और सारण ने रावण के पास जाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया। रावण उन दोनों को साथ ले एक ऊंची अटारी पर चढ़ गया और वानरों की सेना को देख देख सारण से पूछने लगा। सारण वानरों का वर्णन करने लगा।

(३१ सर्ग) रावण विद्युज्जिह्व नाम मायावी राक्षस को साथ ले सीता के पास पहुंचा। विद्युज्जिह्व ने रामचन्द्र का सिर, धनुष और वाण माया से बना कर रावण को दिखलाया। रावण सीता से बोला कि हे भद्रे तेरा पति संग्राम में मारा गया, अब तुम मेरी भार्य्याओं की स्वामिनी हो। प्रहस्त ने सोते हुए, राम का सिर काट लिया और लक्ष्मण बहुत वानरों के साथ भाग गया। (३२) सीता उस मस्तक और धनुष को देख भूमि पर गिर पड़ी और उस सिर को लेकर विलाप करने लगी। इतने में रावण की सेना के एक पुरुष ने आकर एक कार्य्य की आवश्यकता कही। रावण अशोकवाटिका से सभा में चला गया। उसी समय में वह मस्तक और धनुष न जाने क्या होगए। (३३) विभीषण की पत्नी शर्मा नाम राक्षसी ने, जिसको रावण ने सीता की रक्षा के लिये बैठाया था, सीता को समझाया कि श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण के साथ कुशल से हैं। रावण ने तुम्हारे ऊपर यह माया की है।

(३५ सर्ग) रावण के मातामह माल्यवान राक्षस ने रावण से कहा कि तुम राम से सन्धि करलो। (३६) माल्यवान का वचन जब रावण के मन में न भाया तब वह क्रुद्ध युक्त वचन बोलता हुआ, अपने घर को चला गया।

रावण ने पूर्व द्वार पर प्रहस्त राक्षस को; उत्तर द्वार पर शुक और सारण को; मध्य गुल्म पर विरूपाक्ष को; दक्षिण द्वार पर महापार्श्व और महोदर को और पश्चिम द्वार पर मेघनाद को रहने की आज्ञा दी। और कहा कि उत्तर द्वार पर मैं भी आऊंगा।

(३७) सर्ग) विभीषण रामचन्द्र से बोले कि अनल, पनस, सम्पाति, और प्रमति मेरे चारों साथी लङ्का में जाकर शत्रु को सेना का प्रबन्ध देख आए हैं। यह सुन रामचन्द्र ने भी अपनी सेना का प्रबन्ध और विधान कर लिया। वह बोले कि हम दोनों भाई और ४ सचिवों के साथ विभीषण यही सात इस सेना में मनुष्य रूप से रहेंगे नहीं तो युद्ध में गड़बड़ होगी।

(३८ सर्ग) वानरों के साथ रामचन्द्र, लक्ष्मण और विभीषण सुवेल पर्वत पर चढ़ कर समतल भूमि पर बैठ गए और वहांसे लङ्कापुरी को देखने लगे। पूर्ण चन्द्र से सुशोभित रात्रि का प्रादुर्भाव हुआ। (३९) त्रिकूटाचल पर्वत के एक ऊंचे शिखर पर, जो सौ योजन विस्तीर्ण था,१० योजन विस्तीर्ण और २० योजन लम्बी लङ्कापुरी बसाई गई थी। सहस्र खम्भों से बना हुआ अति ऊंचा रावण का राजभवन था। (४०) लङ्का के फाटक के शिखर पर श्वेत चामर और विजय छत्र से सुशोभित रावण देख पड़ा। उसको देख सुग्रीव से न सहा गया। उसने कूद कर रावण के पास पहुंच, उसका मुकुट भूमि पर गिरा दिया। दोनों का युद्ध होने लगा। सुग्रीव युद्ध द्वारा रावण को छकाकर राम के पास आ पहुंचे।

(४१ सर्ग) सुग्रीव के सहित श्रीरामचन्द्र ने वानरी सेना को कवच इत्यादि से सन्नद्ध कर युद्ध के लिये आज्ञा दी। श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण के सहित लङ्का के उत्तर द्वार का आक्रमण करके, जहां रावण युद्ध के लिये उद्यत था, अपनी सेना की रक्षा करने लगे। नील नामक सेनापति महेन्द्र और द्विविद को साथ ले पूर्व द्वार पर खड़े हुए। अंगद ने दक्षिण द्वार को ग्रहण किया। इनके सहायक ऋषभ, गवाक्ष, गज और गवय वानर थे। हनूमान ने प्रजंघ तरस और दूसरे वीरों को साथ ले पश्चिम द्वार को लिया। और मध्य भाग में सुग्रीव खड़े हुए।

रामचन्द्र ने विभीषण की अनुमति से और राजधर्म का स्मरण कर अङ्गद को दूत बना कर रावण के पास भेजा। अङ्गद आकाश मार्ग से उड़कर रावण के मन्दिर में जा पहुंचे। उन्होंने रावण से रामचन्द्र के वचन को ठीक ठीक कह सुनाया और कहा कि यदि तू सत्कारपूर्वक वैदेही को मुझे न दे देगा, तो आज मैं तुझे उखाड़ फेंकूंगा, और तेरे मारे जाने पर लङ्का का ऐश्वर्य विभीषण को दे दिया जायगा। ऐसा सुन रावण अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। उसकी आज्ञा से ४ राक्षसों ने अङ्गद को पकड़ लिया। इतने में अङ्गद झटक कर एक ऊंची अटारी के शृङ्ग पर चढ़ गए, और आकाश में उड़कर रामचन्द्र के पास आ पहुंचे।

(४२ सर्ग) देवासुर संग्राम के समान वानरों और राक्षसों का महाघोर संग्राम प्रारम्भ हुआ।

(४४ सर्ग) इन्द्रजीत अङ्गद से अपनी हार देख अन्तर्द्धान होकर चोखे चोखे वाणों को चलाने और घोर सर्पमय वाणों से रामचन्द्र और लक्ष्मण को छेदने लगा। वह दोनों भाइयों को नागपाश से वान्ध, इनको मरा हुआ जान कर अपनी सेना को साथ ले लङ्का में चला गया।

(४७ सर्ग) रावण की आज्ञा से त्रिजटा आदि राक्षसियां सीता को अशोकवाटिका से पुष्पक बिमान पर चढ़ाकर रण-भूमि में ले आईं। सीता ने देखा कि सम्पूर्ण सेना छिन्न भिन्न हुई है और दोनों भाई शर-शय्या पर शयन किए हैं। (४८) सीता राम और लक्ष्मण की मृत्यु देख विलाप करने लगी। त्रिजटा बोली कि हे देवी तुम विषाद मत करो तुम्हारे पति जीते हैं। उसका वचन सुन सीता बोली कि ऐसाही होय। इसके अनन्तर त्रिजटा बिमान को लौटा कर सीता को लङ्का में फेर लाई। सीता फिर अशोकवाटिका में पहुंचाई गई।

(५० सर्ग) सुषेण वानर औषधि लाने का प्रयत्न सुग्रीव से बता रहा था उसी समय विनता का पुत्र गरुड़ देख पड़ा। गरुड़ को आते देख, वे सर्प, जिन्होंने वाण रूप से दोनों बीरों को वान्ध लिया था, भाग गए। गरुड़ ने

दोनों भाइयों को हाथ से स्पर्श किया, जिससे उनके बाणों के घाव भर आए, और शरीरों के रंग पूर्ववत होगए।

(५२ सर्ग) हनूमान ने धूम्राक्ष राक्षस को (५४ सर्ग) अंगद ने वज्रदंष्ट्र को (५६) हनूमान ने अकम्पन राक्षस को (५८) और नील वानर ने प्रहस्त सेनापति को, असंख्य राक्षसों के साथ मारा।

(५९ सर्ग) प्रहस्त का मारा जाना सुन कर स्वयं रावण रथारूढ़ हो रणक्षेत्र में आया। लक्ष्मण ने जब रावण का धनुष काट डाला, तब रावण ने स्वयंभू की दी हुई शक्ति लक्ष्मण पर चलाई, जो उनकी छाती में घुस गई। लक्ष्मण को विह्वल और अचेत होते देख रावण ने चाहा कि इनको उठा ले जाऊं। परन्तु जब वे न उठे तब उसने दोनों हाथों से बल पूर्वक दाब कर इनको छोड़ दिया। हनूमान लक्ष्मण को रामचन्द्र के पास ले आए। लक्ष्मण घाव की पीड़ा से रहित हुए। जब रामचन्द्र ने हनूमान की पीठ पर चढ़कर रावण को अपने बाणों के प्रहार से पीड़ित किया, तब वह घोड़े और सारथी से रहित हो लङ्का में घुस गया।

(६० सर्ग) रावण ने अपना पराजय और प्रहस्त का घात देख कर राक्षसी सेना को आज्ञा दी कि कुंभकर्ण के जगाने का प्रयत्न करो; क्योंकि वह नव सात, दश और आठ महीने तक भी सोता है। उसको सोये हुए, आज ९ दिन हुए हैं। ऐसी राजाज्ञा पाकर राक्षस गण शीघ्र जाकर १०० योजन लम्बी और बड़े भारी मुख वाली कुम्भकर्ण की गुहा में पैठ गए और कुम्भकर्ण के पास जाकर ऊंचे शब्द से गर्जने और शंखों को बजाकर घोर नाद से चिल्लाने लगे। जब वह नहीं जागा, तब वे भुशुण्डी, मूषल, और गदाओं से उसकी छाती में प्रहार करने लगे। अनेक यत्नों से भी वह नहीं जागा। जब राक्षसों ने सहस्रों हाथियों को उसकी देह पर दौड़ाया, तब वह उठ बैठा और राजाज्ञा सुन राजभवन की ओर चला।

(६१ सर्ग) रामचन्द्र पर्वताकार कुम्भकर्ण को देख अति विस्मित हो, विभीषण से पूछने लगे, कि यह कौन है? आज तक मैंने ऐसा प्राणी नहीं देखा। विभीषण बोले कि हे राघव जिसने युद्ध में यमराज और इन्द्र को जीत लिया,

वही यह विश्रवा मुनि का पुत्र कुम्भकर्ण है। इन्द्र ने कुम्भकर्ण से पीड़ित हो प्रजाओं को साथ ले ब्रह्मलोक में जाकर कुम्भकर्ण की दुष्टता ब्रह्मा से कह सुनाई और यह भी कहा कि इसी प्रकार से जो यह नित्य भोजन करेगा, तो थोड़े ही दिनों में लोक शून्य हो जायगा। ब्रह्मा ने कुम्भकर्ण को बुलाकर कहा कि आज से तू मृतकों की भांति सोवेगा। जब रावण ने ब्रह्मा से (विनय करके) कहा कि आप इसके सोने और जागने का काल नियत कर दीजिए, तब ब्रह्मा बोले कि यह ६ महीना सूतेगा और एक दिन जागता रहेगा।

(६५ सर्ग) कुम्भकर्ण राक्षसों के साथ मिलकर युद्ध स्थल में चला। उसके शरीर की चौड़ाई १०० धनुष (४०० हाथ) और उंचाई ६०० धनुष (२४०० हाथ) थी। (६७ सर्ग) कुम्भकर्ण अपनी गदा उठा कर चारों ओर से वानरों को मारने लगा। इसके प्रहार से ७००-८०० और-१००० वानर चूर हो भूमि पर सो गए। तदनन्तर वह १६-८-१०-२०-और ३० वानरों को उठा उठा कर खाने लगा और दोनों भुजाओं से वानरों को पकड़ पकड़ फंका मारने लगा। वानर लोग उसकी नासिकाओं और कर्णों के द्वारा निकल आए। कुम्भकर्ण सुग्रीव को लेकर लंका में पैठ गया। सुग्रीव ने सचेत होने पर जब अपने को कुम्भकर्ण के बगल में देखा, तब अपने चोखे चोखे नखों से उसके कानों को और दांतों से उसकी नाक को काट कर गिरा दिया। जब कुम्भकर्ण ने सुग्रीव को हाथ से पकड़ा, तब वह छटक कर राम के पास आगए। कुम्भकर्ण क्रोध करके संग्राम में आकर वानरों को भक्षण करने लगा। वह केवल वानरोंही को नहीं खाता था, किन्तु राक्षसों को और पिशाचों को भी पकड़ पकड़ मुख में डाल लेता था। लक्ष्मण युद्ध करने लगे। पीछे कुम्भकर्ण लक्ष्मण का सामना छोड़कर रामचन्द्र के ऊपर दौड़ा। बड़े संग्राम के पीछे रामचन्द्र ने अपने बाण से कुम्भकर्ण का मस्तक काट गिराया।

(७० सर्ग) त्रिशिरा, देवान्तक, नरान्तक, महोदर, महापार्श्व (७१) और अतिकाय राक्षस मारे गए।

(७३ सर्ग) इन्द्रजीत रथ पर चढ़ युद्धभूमि में जा पहुंचा और वहां अग्नि को प्रदीप्त कर श्रेष्ठ मन्त्रों से आहुति देने लगा। अन्त में वह आहुति से अग्नि

को तृप्त कर रथ आयुध के सहित आकाश में अंतर्द्धान होगया। राक्षसी सेना वानरों से लड़ने लगी। इन्द्रजीत अपने अस्त्र समूहों से रामचन्द्र और लक्ष्मण को मूर्छित कर ऊंचे स्वर से गर्जा। (७४) राम और लक्ष्मण को मूर्छित देख वानरों की सेना अति खेद को प्राप्त हुई।

जाम्बवान हनूमान से बोले कि हे वानरसिंह तुम हिमालय पर्वत पर चले जाओ, वहांसे ऋषभ पर्वत पर जाना; वहां कैलास को भी देखोगे। दोनों पर्वतों के मध्य में सब औषधियों से भरे औषधि पर्वत को पाओगे। उस पर्वत के मस्तक पर मृत्यु-सञ्जीवनी, विशल्य-करणी, सुवर्ण-करणी और सन्धानकरणी ये ४ औषधियां हैं; तुम चारों को लेकर शीघ्र चले आओ। हनूमान सूर्य्य का मार्ग पकड़ कर हिमालय पर पहुंचे। उन्होंने वहां वृष नामक सुवर्ण पर्वत को, जो उन औषधियों से प्रकाशित हो रहा था, देखा। हनूमान कूद कर उस पर चढ़ औषधियों को खोजने लगे। जब औषधियां अदृश्य होगईं, तब हनूमान अति क्रोध कर उस पर्वत के शिखर को उखाड़ लंका में ले आए। औषधी पर्वत के आतेही वायु द्वारा औषधियों का गन्ध फैल चला। उसके सूँघतेही दोनों भाई और सब वानर आरोग्य होगए, जो प्राणहीन होगए थे। फिर हनूमान पर्वत को ले जहां का तहां पहुंचा आए।

(७७ सर्ग) कुम्भकर्ण के पुत्र कुम्भ और निकुम्भ (७९) और मकराक्ष राक्षस युद्ध में मारे गए। (८०) रावण ने क्रोध करके युद्ध के लिये इन्द्रजीत को भेजा। वह यज्ञभूमि में आकर विधिपूर्वक यज्ञ करने लगा। अग्नि ने स्वयं उठकर इसका हवि ग्रहण कर अन्तर्द्धान होने वाला रथ इन्द्रजीत को दिया। तब वह उस रथ पर चढ़ गुप्त होकर वानरी सेना में जा दोनों भाइयों को लक्षित कर वाणों की वृष्टि करने लगा।

(८१ सर्ग) जब इन्द्रजीत ने जाना कि अब रामचन्द्र मेरे मारने के लिये कोई प्रबल अस्त्र छोड़ना चाहते हैं, तब संग्राम से निवृत्त हो लङ्का में घुस गया। इसके अनन्तर वह माया की सीता को रथ पर बैठाकर वानरों के समीप होकर चला। उसने जब देखा कि वानर लोग मेरे ऊपर दौड़े आते हैं, तब मायारूपी सीता को खड्ग से काट डाला। (८२) इसके पश्चात् वह निकुंभिला

के मन्दिर में जाकर यज्ञ करने लगा । (८३) हनूमान ने रामचन्द्र के पास आकर कहा कि महाराज इन्द्रजीत ने संग्राम में हम लोगों के देखतेही सीता को मार डाला । (८४) विभीषण बोले कि इन्द्रजीत वानरों को मोहित कर चला गया है । वह सीता माया की थी । अब वह निकुंभिला देवालय में जाकर होम करेगा । यदि होम करके वह आवेगा, तो संग्राम में दुराधर्ष हो जायगा ।

(८५ सर्ग) लक्ष्मण विभीषण के साथ हो इन्द्रजीत के मारने की इच्छा से चले । वानरों और राक्षसों का महा युद्ध आरम्भ हुआ । इन्द्रजीत होम को बिना पूरा किए ही उठकर युद्ध करने लगा । (९०) विभीषण अपने चारों अनुचरों के साथ राक्षसों से युद्ध करने लगे । मेघनाद् अपने पितृव्य विभीषण के साथ कुछ काल तक तुमुल युद्ध कर फिर लक्ष्मण की ओर दौड़ा । (९१) युद्ध के अन्त में लक्ष्मण ने दुःसह बाण से मेघनाद के मस्तक को काट गिराया । (९२) रामचन्द्र की आज्ञा से वानर सुषेण ने लक्ष्मण विभीषण और वानरों को चिकित्सा कर आरोग्य किया ।

(९६ सर्ग) रावण आठ घोड़ों के रथ पर चढ़ संग्राम में चला । इसके साथ महापार्श्व, महोदर, विरूपाक्ष और दुर्द्धर्ष अपने अपने रथों पर चढ़कर चले । ( ९७ ) विरूपाक्ष ( ९८ ) महोदर और ( ९९ ) महापार्श्व मारे गए । (१००) रावण क्रोध कर रामचन्द्र के सन्मुख गया और वानरी सेना को भगाकर रामचन्द्र से लड़ने लगा । (१०१) विभीषण ने कूद कर अपनी गदा से रावण के आठों घोड़ों को मार गिराया ।

रावण ने मय की रची हुई शक्ति को लक्ष्मण के ऊपर फेंका । वह शक्ति लक्ष्मण के हृदय में धंस गई । लक्ष्मण भूमि पर गिर पड़े । रामचन्द्र ने दोनों हाथों से उस शक्ति को निकाल कर तोड़ डाला । (१०२) जब वह लक्ष्मण को प्रहार से पीड़ित देख विलाप करने लगे । तब सुषेण वानर रामचन्द्र को आश्वासन देकर हनूमान से बोले कि जाम्बवान ने जिस पर्वत के लाने के लिये तुमसे कहा था, उस महोदय पर्वत के दक्षिण शृङ्ग पर विशल्य-करणी, सावर्ण्य-करणी, सञ्जीव-करणी और सन्धानी चार प्रकार की औषधी हैं ।

तुम शीघ्र उनको ले आवो। हनूमान वायु की भांति उड़ कर वहां जा पहुंचे परन्तु औषधी को विना जाने किस प्रकार से लावें, इसलिये उन्होंने पर्वत के शृङ्ग को लाकर रामचन्द्र के पास रख दिया। सुषेण ने उस पर से औषधियों को पहचान कर ले लिया और उसको कूटकर लक्ष्मण को सुंघाया। सूंघतेही लक्ष्मण उठ खड़े होगए।

(१०३ सर्ग) रामचन्द्र फिर हाथ में धनुष लेकर भयंकर वाण चलाने लगे। रावण भी दूसरे रथ पर सवार हो रामचन्द्र के सन्मुख आया। इन्द्र की आज्ञा से मातली सारथी इन्द्र का रथ, धनुष, वाण, शक्ति और कवच लेकर स्वर्ग से रामचन्द्र के पास आया। रामचन्द्र उस रथ पर चढ़े। राम और रावण का भयङ्कर युद्ध प्रारम्भ हुआ। (१०४ सर्ग, जब वानरों की शिलावृष्टि और राम को वाण वृष्टि से रावण मृत्यु-तुल्य होगया, तब उसके सारथी ने उसके रथ को संग्राम से हटा लिया। (१०५) रावण सचेत होने पर सारथी को खोझने लगा। सारथी ने फिर रथ को रामचन्द्र के पास लेजाकर खड़ा किया।

(१०६ सर्ग) अगस्त्य मुनि, जो देवताओं के साथ युद्ध देखने आए थे, राघव से बोले कि हे राम तुम आदित्य-हृदय स्तोत्र का जप करो, तब शत्रुओं पर विजय लाभ करोगे। तुम श्रीसूर्य्य का आराधन और पूजन करो। रामचन्द्र ने सावधानी से उसको धारण किया और भगवान सूर्य्य की ओर देख कर इस स्तोत्र को जपा।

(१०९ सर्ग) बड़े युद्ध के पीछे रामचन्द्र के वाण से रावण के मस्तक कट कर गिर पड़े, परन्तु फिर उसके मस्तक वैसेही उत्पन्न होगए। उनको भी रामचन्द्र ने शीघ्र काट गिराया, परन्तु वे फिर ज्यों के त्यों निकल आए। ऐसा चमत्कार १०० वार हुआ, परन्तु रावण का अन्त न हुआ। फिर दोनों का बड़ा युद्ध प्रारम्भ हुआ। ७ रात्रि बीत गईं, युद्ध समाप्त न हुआ। (११०) इन्द्र के सारथी मातली ने जब कहा कि हे रामचन्द्र ब्रह्मास्त्र इसके ऊपर चलाइए, तब रामचन्द्र ने उस वाण को, जिसको भगवान अगस्त्य ने उनको दिया था और अगस्त्य को ब्रह्मा ने दिया था, रावण पर छोड़ा। वह

बाण रावण के हृदय को विदीर्ण और उसके प्राणों का हरण कर राघव के तूणीर में घुस गया। शेष निशाचर लङ्का में भाग गए।

(१११ सर्ग) रावण को प्राणरहित देख विभीषण ने शोक से व्याकुल हो, बड़ा विलाप किया। रामचन्द्र ने उसको समझाया। (११३) विभीषण ने रामचन्द्र की आज्ञा से माल्यवान के साथ रावण का अग्नि-संस्कार किया। (११४) लक्ष्मण ने रामचन्द्र की आज्ञा से विभीषण को सिंहासन पर बैठाकर विधिपूर्वक लङ्का राज्य का अभिषेक दिया।

(११५ सर्ग) हनूमान ने जानकी से जाकर रामचन्द्र के विजय का सन्देसा कहा (११६) और रामचन्द्र के पास लौट कर जानकी का संदेस कह सुनाया। रामचन्द्र की आज्ञा से विभीषण दिव्य भूषणों को पहना, दिव्य वस्त्रों से सुशोभित कर और पालकी पर बैठा सीता को प्रभु के पास ले आए। (११८) रामचन्द्र के सन्देह दूर करने के लिये सीता प्रज्वलित अग्नि में निःशंक पैठ गईं। (११९) कुबेर, यम, इन्द्र, वरुण, महादेव, और ब्रह्मा विमानों पर चढ़े हुए, श्रीरामचन्द्र के समीप उपस्थित हुए। देवता लोग अपनी भुजाओं को उठाकर बोले कि हे राघव आपने सीता को क्यों अग्नि में जलने दिया, आप अपने को नहीं जानते। भूतों के आदि और अन्त में आपही देख पड़ते हैं। इसके अनन्तर ब्रह्मा ने रामचन्द्र की स्तुति की। (१२०) अग्नि ने वैदेही को गोद में लेकर अपने रूप से प्रकट हो, रामचन्द्र को समर्पण कर दिया और कहा कि सीता निष्पाप है।

(१२१ सर्ग) रामचन्द्र और लक्ष्मण ने स्वर्ग से आए हुए राजा दशरथ को प्रणाम किया। राजा अपने पुत्रों से मिलकर इनसे बातें कर स्वर्ग को गए। (१२२) इन्द्र को प्रसन्न देख रामचन्द्र बोले कि हे देवराज मेरे लिये पराक्रम कर जो वानर मर गए हैं, तुम उनको जिला दो। इन्द्र के बर देतेही सब वानर और भालू जी कर उठ खड़े होगए। (१२४) रामचन्द्र की आज्ञा से विभीषण ने रत्न और अर्थों से वानर-यूथ-पतियों को यथोचित सन्तुष्ट किया।

रामचन्द्र लक्ष्मण, जानकी, विभीषण और वानरों के सहित पुष्पक विमान पर चढ़े। विमान आकाश में उड़ा। (१२५) रामचन्द्र ने सीता को

युद्धस्थलों को और समुद्र को दिखाया और कहा कि देखो यह सेना टिकने का स्थान है। यहां पर सेतु बान्धने के पहिले शिव ने मेरे ऊपर प्रसाद किया। देखो समुद्र का घाट सेतुबन्ध नाम से प्रसिद्ध और त्रैलोक्य से पूजित हुआ। यह पवित्र और महा पातक के नाश करने वाला है। विमान किष्किन्धा के सामने खड़ा हुआ। जब तारा आदि वानरों की स्त्रियां विमान पर चढ़ीं तब विमान आगे चला। (१२६) चतुर्दश वर्ष पूर्ण होने पर पंचमी के दिन रामचन्द्र प्रयाग में भरद्वाज मुनि के आश्रम पर पहुंचे। मुनि ने अयोध्या का समाचार रामचन्द्र से कह सुनाया।

(१२७) रामचन्द्र की आज्ञा से हनूमान मनुष्य रूप धारण कर वेग से अयोध्या की ओर चले और नन्दिग्राम में भरत के समीप जाकर बोले कि श्रीरामचन्द्र रावण को मार लक्ष्मण और वैदेही के साथ चले आते हैं। (१२९) भरत अयोध्या को सज्ज कर सचिवों के साथ अगवानी को चले। हनूमान भरत के समाचार रामचन्द्र को सुना कर फिर भरत के पास पहुंच गए। इसके अनन्तर हंसभूषित विमान अयोध्या के पास भूमि पर उतर पड़ा। प्रभु ने भरत को उस पर बैठा लिया। सब लोग परस्पर मिलने लगे। तदनन्तर रामचन्द्र सेनासहित विमान पर चढ़ भरत के आश्रम में उतरे। उन्होंने विमान कुबेर के घर भेज दिया। (१३०) शत्रुघ्न की आज्ञा से सुमंत्र मनोहर रथ लाया, जिस पर सवार हो रामचन्द्र अयोध्यापुरी में पहुंच पिता के मंदिर में जा विराजे।

इसके अनन्तर वृद्ध वशिष्ठ मुनि ने ब्राह्मणों को साथ ले रामचन्द्र को सीतासहित रत्ननिर्मित चौकी पर बैठाया। पहले ऋत्विक ब्राह्मणों ने, फिर कन्याओं ने, तब मंत्रियों ने, तदनन्तर बड़े बड़े पुरवासी महाजनों ने, माहाराज का अभिषेक किया। सुग्रीव आदि वानरों ने रामचन्द्र का अभिषेक देख किष्किन्धा का मार्ग लिया। विभीषण राक्षसों के साथ लंका में जाकर राज्य करने लगे। रामचन्द्र ने युवराज होने के लिये लक्ष्मण से बहुत कहा; जब उन्होंने अंगीकार न किया तब भरत युवराज बनाए गए।

उत्तरकाण्ड—(पहला सर्ग) रामचन्द्र के राज्य पाने पर अगस्त्य, धौम्य,

वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, विश्वामित्र, गौतम, यमदग्नि, भरद्वाज, आदि मुनि राक्षसों के वध के विषय में अनुमोदन करने के लिये आए।

(२ सर्ग) अगस्त्य मुनि रामचन्द्र से रावण के जन्म का वृत्तान्त कहने लगे कि सत्य युग में ब्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य नाम महर्षि थे, जिनका पुत्र विश्रवा हुआ। (३) भरद्वाज मुनि ने अपनी कन्या से विश्रवा मुनि का व्याह कर दिया, जिससे धनेश का जन्म हुआ। वह मुनि की आज्ञा से लंका में रहने लगा। (५) ३० योजन चौड़ी और १०० योजन लम्बी विश्वकर्म्मा की बनाई हुई लंका नाम पुरी है। सुमाली राक्षस कैकसी नामक अपनी पुत्री से बोला कि तू विश्रवा मुनि को स्वयं जाकर वर। वह कन्या विश्रवा मुनि के आश्रम में गई। मुनि बोले कि हे भद्रे मैंने तेरे मन की बात जान ली कि तू मुझसे पुत्र की अभिलाषा रखती है, परन्तु इस दारुण वेला में तू मेरे पास आई इसलिये महाक्रूरकर्म वाले राक्षसों को जनेगी। कैकसी प्रणाम कर बोली कि हे भगवन् ऐसे दुराचार पुत्रों को मैं नहीं चाहती। तब मुनि बोले कि अच्छा तेरा पिछला पुत्र धर्मात्मा होगा।

कुछ काल बीतने पर कैकसी को दश मस्तक और बीस भुजा वाला पुत्र जन्मा। विश्रवा मुनि ने इसका नाम दशग्रीव रक्खा। उसके पीछे कुम्भकर्ण पुत्र, शूर्पणखा कन्या और विभीषण पुत्र क्रम से जन्मे।

(१० सर्ग) रावण आदि तीनों भाई गोकर्ण में जाकर तपस्या में तत्पर हुए। रावण ९ सहस्र वर्ष में अपना ९ मस्तक काट कर अग्नि में होम कर दिया और दशवें सहस्र वर्ष में जब वह अपना दशवां मस्तक काटने को उद्यत हुआ, तब ब्रह्मा देवताओं साथ वहां आकर बोले कि शीघ्र वर मांगो। दशग्रीव बोला कि मैं अमरत्व चाहता हूं। ब्रह्मा ने कहा कि तुम्हारे लिये अमरत्व नहीं होसकता, तुम दूसरा वर मांगो। रावण बोला कि गरुड़, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव, राक्षस और देव इनसे मैं अवध्य होऊं; अन्य प्राणियों के विषय में मुझे चिन्ता नहीं है। ब्रह्मा ने कहा कि ऐसाही होगा। ब्रह्मा के वरदान से रावण के मस्तक फिर जहां के तहां उत्पन्न हो आए। ब्रह्मा विभीषण के पास आकर बोले कि वर मांगो। वह बोला कि परम विपत्ति में भी

मेरी बुद्धि धर्महीपर रहे। ब्रह्मा विभीषण को वर और अमरत्व देकर कुम्भकर्ण के पास गए। उस काल में देवता लोग बोले कि यह वर पावेगा तो तीनों भुवन को खा डालेगा। तब ब्रह्मा ने सरस्वती को स्मरण कर उनसे कहा कि तुम इस राक्षस के मुख में प्रवेश करके जो मैं चाहता हूं, सो इससे कहवा दो। सरस्वती जब उसके मुख में घुस गई, तब ब्रह्मा कुम्भकर्ण से बोले कि जो तुम चाहते हो सो वर मांगो। कुम्भकर्ण बोला कि मैं अनेक वर्ष पर्यन्त सोया करूं। ऐसाही होय, यों कह ब्रह्मा अपने लोक में चल गए।

(११ सर्ग) सुमाली राक्षस रसातल से निकल कर मारीच, प्रहस्त, विरूपाक्ष और महोदर अपने सचिवों को साथ ले रावण से आ मिला। सुमाली के समझाने पर रावण ने धनेश के पास दूत भेजा कि तुम लङ्का छोड़ दो। तब धनेश अपने पिता की आज्ञा से कैलाश में जा बसा। दशग्रीव ने अपने भाइयों के साथ लङ्का में प्रवेश किया। वह निशाचरों से राज्याभिषेक पाकर उस पुरी में रहने लगा।

(१२ सर्ग) दशग्रीव ने अपनी बहन शूर्पणखा का विवाह विद्युज्जिह्व से कर दिया, मय दैत्य की मन्दोदरी नाम कन्या से अपना विवाह किया और बलि की पुत्री की पुत्री जिसका नाम वज्रज्वाला था, कुम्भकर्ण के लिये और गन्धर्वराज सैलूष की कन्या, जिसका नाम सर्मा था, विभीषण के लिये ला दी। (१३) शिल्पियों ने एक योजन चौड़ा और दो योजन लम्बा सुन्दर गृह कुंभकर्ण के लिये बनाया। वहां जाकर कुम्भकर्ण सूता और कई सहस्र वर्षों तक सूता हुआ पड़ा रहा। (१५) दशग्रीव ने कुवेर को जीत कर पुष्पक विमान हरण कर लिया।

(१६ सर्ग) दशग्रीव अपने भाई धनद को जीत स्वामि कार्तिक के उत्पत्ति-स्थान सुवर्ण की सरहरी के जंगल में घुसा। वह पर्वत पर चढ़ कर अद्भुत जंगल देखही रहा था कि पुष्पक विमान चलने से रुक गया। शिव के गण नन्दीश्वर जब दशग्रीव के पास आकर बोले कि तू यहांसे चला जा, इस पर्वत पर शङ्कर क्रीडा कर रहे हैं। तब दशग्रीव विमान से उतर क्रोध कर बोला कि शङ्कर कौन है? और फिर वह नन्दीश्वर का मुख वानर के सदृश देख ठठा

मार कर हँसा। तव नन्दीश्वर ने क्रोध करके शाप दिया कि अरे दशानन मेरे तुल्य पराक्रम वाले और मेरे तुल्य रूप और तेज धारण करने वाले वानर लोग तेरे कुल के नाश के लिये उत्पन्न होंगे। इसके अनन्तर दशानन क्रोध कर अपनी भुजाओं को पर्वत के नीचे घुसेड़ उसको उठा कर तौलने लगा। जब पर्वत हिलने पर पार्वती चकित हो शिव के शरीर में लपट गईं, तब भगवान शङ्कर ने खेलवाड़ के सदृश उस पर्वत को अंगूठे से दवाया, जिससे पर्वत के नीचे खंभों के सदृश जो दशानन की भुजाएं लगी थीं वे मड़मड़ा उठीं। भुजाओं के दबने से उसने ऐसा भयङ्कर नाद किया, जिससे तीनों लोक कांपने लगे। दशानन सामवेद के स्तोत्रों से शिव की स्तुति करने लगा, और रोते रोते उसको जब सहस्र वर्ष वीत गए, तब भगवान शिव ने संतुष्ट हो, उसकी भुजाओं को छोड़ दिया और उससे कहा कि हे दशानन तेरे सामर्थ्य से मैं प्रसन्न हुआ, शैल के दाब से जो तैंने महानाद किया, जिससे तीनों लोक भयभीत होगए, इसलिये आज से तेरा नाम रावण हुआ; क्योंकि तूने लोगों को रोवाया। ऐसा कह शिव ने चन्द्रहास नाम से विख्यात खड्ग रावण को दिया। रावण पुष्पक विमान पर चढ़ कर चला।

(१७ सर्ग) रावण ने हिमालय के वन में तप करती हुई बृहस्पती के पुत्र कुशध्वज की पुत्री वेदवती को देखा और विमान से उतर वेदवती के पास जाकर उसके माथे के केशों पर हाथ लगाया। वेदवती ने क्रुद्ध हो, अपने केशों को हाथ से काट डाला और अग्नि को प्रज्वलित कर रावण से कहा कि हे नीच जो तू ने मेरी धर्षना की तो मैं अग्नि में प्रवेश करूंगी और तेरे वध के लिये फिर जन्म लेऊंगी। ऐसा कह उसने अग्नि में प्रवेश किया। वही वेदवती जनक राज के घर में अयोनिजा सीता रूप उत्पन्न हुई।

(१९ सर्ग) रावण अयोध्या पुरी में जाकर वहां के राजा अनरण्य से लड़ने लगा। जब राजा की सेना राक्षसी सेना से नष्ट हो गई, तब राजा आप लड़ने लगा। अन्त में रावण ने राजा के मस्तक पर एक थपेड़ा मारा, जिससे राजा रथ से भूमि पर गिर पड़े; तब रावण हंसा। राजा अनरण्य बोले कि इक्ष्वाकु कुल में दशरथ के पुत्र रामचन्द्र उत्पन्न होंगे, वे तुझको मारेंगे। ऐसा कह राजा स्वर्ग लोक में गए।

(२१ सर्ग) यमपुरी में रावण और यमराज का घोर युद्ध हुआ। (२२) अन्त में ब्रह्मा के वचन से यमराज अन्तर्द्धान हो गए। (२३) रावण ने रसातल में जाकर नाग वरुण आदि को जीता।

(२४ सर्ग) रावण बलि के घरमें गया। बलि रावण को देखतेही ठठाकर हंसे और रावण को पकड़ गोद में बैठा कर बोले कि हे दशग्रीव यहां तुम्हारे आने का क्या काम है। रावण बोला कि मैंने सुना है कि विष्णु ने तुम को बान्ध रक्खा है, सो मैं तुम्हे बन्धन से छुड़ा सकता हूं। बलि ने कहा कि जो यह श्यामवर्ण पुरुष सदा हमारे द्वारही पर खड़े रहते हैं, इन्हीं ने मुझे बान्ध रक्खा है। हे राक्षसाधिप जो यह कुण्डल चमकता हुआ देख पड़ता है उसको मेरे पास उठा लाओ, तब मैं अपने बन्धन से छुटने के विषय में तुमसे कारण कहूंगा। दशानन ने बड़े प्रयत्न और बल से उस कुंडल को उठाया, परन्तु उठातेही मूर्छा खाकर वह गिर पड़ा और उसके मुख से रुधिर की धारा बह चली। तब बलि बोले कि हे रावण देखो मेरे प्रपितामह हिरण्यकशिपु के एक कान का यह कुण्डल है, जिसको भगवान नृसिंह ने दोनों भुजाओं से उठा कर नखों से फाड़ डाला, वही वासुदेव द्वार पर खड़े हैं; तुम किस तरह से इनसे लड़ोगे। ऐसा वचन सुन रावण क्रोध कर अपने शस्त्र को सुधारने लगा। तब भगवान ब्रह्मा के हित को विचार वहीं अन्तर्द्धान हो गए। रावण वहांसे चल निकला।

(२९ सर्ग) रावण दिग्विजय करके जब लंका में पहुंचा, तब रावण की बहन शूर्पणखा रावण के समीप गिर पड़ी और उससे बोली कि तुमने १४ सहस्र कालकेय दैत्यों के मारने के समय मेरे पति को भी मार डाला। मुझ को विधवापन भोगना पड़ा। रावण बोला कि अब तो अनजानते जो कुछ हुआ सो हुआ, अब तू खर के पास जाकर निवास कर, खर तेरी मौसी का लड़का है। अब यह दंडकारण्य की रक्षा के लिये जायगा। दूषण इसका सेनापति होगा। ऐसा कहकर रावण ने १४ सहस्र राक्षसों की सेना खर के अधिकार में दी। वह सेना सहित दंडकारण्य में जाकर राज्य करने लगा।

(३१ सर्ग) एक समय रावण कैलाश पर अपनी सेना के साथ रात्रि में

टिका था। रंभा अप्सरा सेना के बीचही से चली जाती थी। रावण ने उठकर उसका हाथ पकड़ लिया। रंभा बोली कि हे राक्षसश्रेष्ठ तुम हमारे श्वसुर हो, तुम्हारे भ्राता कुबेर के पुत्र नलकूबर से हमारा संकेत है और उसी के लिये मेरे अलंकार हैं। रावण ने उसका कहना न मानकर उससे संभोग किया। रंभा ने नलकूबर के पास जाकर सब वृत्तान्त कहा। तब नलकूबर ने शाप दिया कि रावण फिर यदि अकामा स्त्री पर इस प्रकार व्यवहार करेगा तो उसका मस्तक सात टुकड़े होकर चूर होजायगा। जब रावण ने इस शाप को सुना, तबसे अकामा स्त्रियों पर बलात्कार करना छोड़ दिया।

(३२वां सर्ग) रावण अपनी सेना सहित स्वर्ग लोक में पहुंचा। देवता और राक्षसों का भयंकर संग्राम हुआ। (३४) अन्त में मेघनाद माया से इन्द्र को जीत कर लंका में ले गया। (३५) ब्रह्मा ने देवताओं के साथ लंका में जाकर रावण से कहा कि तेरा पुत्र आज से इन्द्रजित नाम से जगत में पुकारा जायगा और दुर्जय होगा, अब तू इन्द्र को छोड़ दे। मेघनाद ने ब्रह्मा से कई एक वर पाकर इन्द्र को छोड़ दिया।

(३६ सर्ग) एक समय रावण माहिष्मती पुरी में जा पहुंचा, उस दिन अर्जुन नामक वहां का राजा स्त्रियों के सहित नर्मदा नदी में जलक्रीडा करने गया था। रावण नर्मदा के दर्शन से हर्षित हो, बोला कि मैं इस तीर पर पुष्पों से शिव का पूजन करूंगा। राक्षसों ने पुष्पों की ढेर कर दी। रावण नदी में स्नान कर हाथ जोड़ कर चला। जहां जहां रावण जाता, वहां वहां सुवर्ण का शिवलिंग पहुंचाया जाता था। रावण बालुका की वेदी पर उस लिंग को स्थापन कर गंध और पुष्पों से पूजने लगा। (३७) वहांसे थोड़ीही दूर पर राजा अर्जुन जलक्रीड़ा कर रहा था। राजा ने अपनी सहस्रों भुजाओं का बल जानने के लिये नर्मदा के बेग को रोका और जब छोड़ा तो उसमें ऐसी तरंग उठी कि रावण ने जो पुष्पोपहार किया था, वह सब बह चला। तब उसने शुक और सारन को आज्ञा दी कि जल का बेग कहांसे हुआ, तब उन्होंने दो कोस पश्चिम जाकर देखा कि एक पुरुष जलक्रीडा कर रहा है। रावण उनके मुख से यह वृत्तान्त सुनराजा अर्जुन के पास गया। रावण

और राजा का घोर युद्ध प्रारंभ हुआ। अन्त में जब अर्जुन की गदा की चोट से रावण विह्वल होगया, तब उसने रावण को अपने नगर में लेजा कर उसको कारागृह में रक्खा। (३८) पुलस्ति मुनि ने रावण का बन्धन सुनकर स्नेह से व्याकुल हो माहिष्मती पुरी में जाकर रावण को छोड़ा दिया।

(३९ सर्ग) रावण ने दक्षिण समुद्र के तीर पर सन्ध्योपासन में तत्पर बाली को देखा। वह पुष्पक विमान से उतर बाली को पकड़ने के लिये चला। बाली ने रावण को देख लिया। वह झपट कर उसको पकड़ और कांख में दाब आकाश में उड़ा और उसको कक्ष में लिए हुए, क्रम से चारों ओर के समुद्रों में जाकर सन्ध्यावन्दन करके अपनी नगरी किष्किन्धा में पहुंचा। रावण बोला कि हे वानरेन्द्र मैं युद्ध की इच्छा से यहां आया था, सो तुम्हारे हाथ से पकड़ा गया। मैंने तुम्हारा बल देखा, अब मैं तुम्हारे साथ मैत्री करना चाहता हूं। बाली और रावण अग्नि को प्रज्वलित कर भाई पने को प्राप्त हो, गले गले मिले। रावण १ मास वहां रहा, तदनन्तर रावण के मन्त्री उसको लिवा गए।

(४० सर्ग) अगस्त्य मुनि ने रामचन्द्र से हनूमान के जन्म की कथा कही। (४१)इसके पश्चात् मुनि बोले कि जब हनूमान अनेक वरों से बल प्राप्त कर निर्भय हो ऋषियों के आश्रमों में जाकर उपद्रव करने लगे, तब भृगु आदि महर्षियों ने उनको शाप दिया कि हे वानर तुम्हारा बल तुमको बहुत काल पर स्मरण होगा और जब कोई तुम्हें स्मरण करावेगा और तुम्हारी कीर्ति का वर्णन करेगा तब तुम्हारा बल वृद्धि को प्राप्त होगा।

(४३सर्ग) अगस्त्य मुनि बाली और सुग्रीव की उत्पत्ति की कथा कहने लगे कि सुमेरु पर्वत पर ब्रह्मा की सभा है। किसी समय उस सभा में ब्रह्मा योगाभ्यास कर रहे थे कि उनके नेत्रों से जल बहा। उन्होंने हाथ से पोंछ कर उसको भूमि पर फेंक दिया, उससे एक वानर उत्पन्न हुआ। वह ब्रह्मा की आज्ञा से सुमेरु के जङ्गल में रहने लगा। किसी समय वह वानर मेरुके उत्तर शिखर पर एक सरोवर के जल में अपना प्रतिबिम्ब देख उसको अपना शत्रु जान उछल कर पानी में जा रहा और फिर वहांसे कूद कर ऊपर

आया। उसी क्षण वह वानर सुन्दर स्त्री हो गया। इतने में ब्रह्मा के चरणों की उपासना कर इन्द्र उसी मार्ग से लौटे चले आते थे और उसी क्षण में सूर्य्य की भी दृष्टि उस स्त्री पर जा पड़ी। दोनों देवता उस नारी को देख कर काम वस हो गए। इन्द्र तो उस नारी तक पहुंचते२ बीचही में स्खलित हो गए और इनका वीर्य उस स्त्री के बालों पर गिरा, उससे जो बालक उत्पन्न हुआ उसका नाम बाली हुआ। और सूर्य्य का वीर्य उस सुन्दरी के गले पर स्खलित हुआ, जिससे सुग्रीव नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। इन्द्रने बाली को सुवर्ण की माला देकर स्वर्ग का मार्ग लिया और सूर्य्य अपने पुत्र के कार्यों में हनूमान को अग्रगण्य कर आकाश में उड़ गए। रात्रि बीतने पर फिर वह स्त्री ज्यों की त्यों वानर रूप हो गई। ऋक्षरजा वानर अपना रूप पाकर अपने दोनों पुत्रों को लिए हुए ब्रह्मा के पास आया। ब्रह्मा की आज्ञा से देवदूत ने ऋक्षरजा को साथ ले किष्किन्धा में प्रवेश किया और गुहा में प्रवेश कर इसको राजतिलक दिया।

(५२ सर्ग) किसी समय सीता ने रामचन्द्र से कहा कि मैं तपोवनों को देखना चाहती हूं। और गंगातट के निवासी ऋषियों के चरणमूलों में रहने को इच्छा करती हूं। प्रभु बोले कि हे वैदेही मैं अवश्य तपोवन में तुझे भेजूंगा। (५३) एक दिन रामचन्द्र ने अपनी सभा में भद्र नामक दूत से पूछा कि आज कल पुरवासी लोग हम लोगों के विषय में क्या कहते हैं। भद्र बोला कि सर्वत्र यही बात फैल रही है कि श्री राघव रावण को मार जो सीता को फिर अपने घर लाए यह बात अच्छी नहीं है।

(५५ सर्ग) रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि कल तुम प्रातःकाल सीता को रथ पर चढ़ाकर गङ्गा के उस पार महर्षि वाल्मीकि के आश्रम पर छोड़ आओ। (५६) रात बीतने पर लक्ष्मण सीता को रथ पर चढ़ाकर चले। सुमन्त्र ने रथ चलाया। दूसरे दिन मध्याह्न में भागीरथी के तीर पर रथ पहुंचा। लक्ष्मण रथ और सुमन्त्र को इसी पार रख सीता सहित नाव पर चढ़ गङ्गा के उस पार पहुंचे। उन्होंने अत्यन्त दीन होकर कहा कि हे वैदेही पुरवासियों के अपवाद के डर से रामचन्द्र ने आप का त्याग कर

दिया। यहां वाल्मीकि मुनि का तपोवन है। आप इन्हीकी चरण-छाया में रह कर निवास करिए। (५८) लक्ष्मण सीता को छोड़ गङ्गा पार हो रथ पर चढ़ अयोध्या को चले।

(५९ सर्ग) मुनियों के वालकों से यह समाचार सुनकर वाल्मीकि मुनि सीता के पास गए। मुनि ने सीता को अपने आश्रम पर लाकर मुनियों की पत्नियों के हाथ में सौंप दिया। (६२) लक्ष्मण दूसरे दिन मध्याह्न काल में अयोध्या पहुंच गए।

(७३ सर्ग से ८३ सर्ग तक) एक दिन यमुना तीर के निवासी ऋषिगण आकर रामचन्द्र से बोले कि मधु का पुत्र लवण भगवान रुद्र के शूल के प्रभाव से और अपने दुराचार से तीनों लोकों को विशेष करके तपस्वियों को सन्ताप दे रहा है। उसका निवास मधुवन में है। रामचन्द्र ने शत्रुघ्न को युद्ध में तत्पर देख उनको मधुपुर का अभिषेक कर दिया। शत्रुघ्न सेना को यात्रा करवा कर एक महीना अयोध्या में रहे, तदनन्तर अकेले चले, और तीसरे दिन वाल्मीकि के आश्रम में पहुंच गए। उसी श्रावण मास की रात्रि में सीता को लव और कुश दो पुत्र उत्पन्न हुए। उस समाचार को पाकर शत्रुघ्न सीता की पर्णशाला में गए और बोले कि हे मातः यह बड़े ही आनन्द की बात हुई। प्रातःकाल शत्रुघ्न पश्चिमाभिमुख चल निकले और सप्त रात्रि मार्ग में निवास कर यमुना के तीर पर पहुंचे। दूसरे दिन शत्रुघ्न ने लवणासुर को मारा और उसी श्रावण मास में उस पुरी के वसाने का काम आरम्भ किया। जब बारहवें वर्ष में पुरी अच्छी भांति से वस गई, तब शत्रुघ्न की बुद्धि में ऐसा आया कि अब चलकर रामचन्द्र के चरणों को देखूं। (यह कथा पहले खण्ड में मथुरा के प्रकरण में विस्तार से लिखी गई है)

(८४ सर्ग) शत्रुघ्न थोड़े से मनुष्यों और १०० रथों को साथ ले अयोध्या को चले और मार्ग में सात आठ टिकान टिक कर वाल्मीकि मुनि के आश्रम में पहुंचे। (८५) वह प्रातःकाल प्रस्थान कर अयोध्या में आए और सात दिन अयोध्या में रहकर रामचन्द्र से विदा हो, अपनी पुरी को गए।

(९६ सर्ग) रामचन्द्र ने लक्ष्मण और भरत से कहा कि मैं राजसूय यज्ञ करना चाहता हूं। भरत बोले कि यह यज्ञ करने से पृथ्वी के राजाओं का विनाश होगा, ऐसा करना आपको उचित नहीं है। यह सुन रामचन्द्र ने अति प्रसन्न हो, इस अभिप्राय से अपने मन को हटा लिया। (९७)लक्ष्मण बोले कि हे रघुनन्दन अश्वमेध यज्ञ सब पापों का नाश करने वाला है, यदि आप करना चाहें तो करिए। (१०४) रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि हे भद्र गोमती के तीर नैमिष वन में यह यज्ञ होगा। वहां स्थान के प्रबन्ध के लिये भृत्यों को कहो। सब को निमन्त्रन दिया जाय। भरत आगे चले और दीक्षा के लिये सुवर्ण की सीता बनवाकर लेते चले। इसके उपरांत जब शत्रुघ्न भी आगए, तब भरत और शत्रुघ्न दोनों सब सामग्रियों को लेकर चले। सुग्रीव और विभीषण भी आ पहुंचे। (१०५) लक्ष्मण की रक्षा में काला घोड़ा छोड़ा गया। रामचन्द्र सेनासहित नैमिषक्षेत्र में पहुंच, अद्भुत मण्डप को देख अति प्रसन्न हुए। बड़े धूमधाम के साथ यज्ञ प्रारम्भ हुआ।

(१०६ सर्ग) यज्ञ में महर्षि वाल्मीकि शिष्यों के सहित प्राप्त हुए, और कुश और लव अपने शिष्यों से बोले कि तुम यज्ञ में जाकर सम्पूर्ण रामायण सुनाओ, यदि रामचन्द्र तुमको बुलावें और सुनना चाहें, तो तुम जाना और एक दिन में मधुर बानी से २० सर्ग गान करना। (१०७) मैथिली के दोनों पुत्र ऋषि के वचनानुसार गान करने लगे। इस बात को सुन रामचन्द्र को बड़ा कौतूहल उत्पन्न हुआ। उन्होंने यज्ञ के कर्मों से अवकाश पाकर दोनों लड़कों को बुलाया। वे दोनों गाने लगे। उन्होंने मध्याह्न पर्यन्त बीस सर्ग गाकर समाप्त किया। रामचन्द्र की आज्ञा से भरत १८ सहस्र सुवर्ण मुद्रा लाकर पृथक् पृथक् दोनों को देने लगे। वे बोले कि हम वनवासी हैं, हमको इससे क्या प्रयोजन। रामचन्द्र के पूछने पर लव और कुश बोले कि इस काव्य के कर्ता भगवान वाल्मीकि आप के यज्ञ के पासही हैं। इस ग्रन्थ में २४ सहस्र श्लोक हैं और इसमें सब आपही का चरित्र है। यदि आप सुना चाहें तो कर्मों से जब जब अवकाश हो, तब तब सुनिए। रामचन्द्र बोले बहुत अच्छा। (१०८) संगीत सुनते सुनते जब रामचन्द्र ने जाना कि

ये दोनों सीताही के पुत्र हैं। तब दूतों को बुलाकर आज्ञा दी, कि तुम महा-मुनि वाल्मीक के पास जाकर कहो कि यदि सीता शुद्ध चरित्र हो तो कल प्रातःकाल सभा के मध्य में अपनी शुद्धि के निमित्त शपथ करे। दूतों के वचन सुन मुनि बोले कि बहुत अच्छा, सीता वैसाही करेगी।

(१०९ सर्ग) रात बीतने पर भगवान वाल्मीक सीता को साथ ले सभा में आ पहुंचे और रघुनन्दन से बोले कि सीता अपनी शुद्धता का परिचय देना चाहती है, और ये दोनों बालक सीताही के हैं। हे रामचन्द्र मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि सीता पाप-रहित हैं। वैदेही उस मण्डली के बीच में कापाय वस्त्र पहने हुई, हाथ जोड़ नीचा मुख करके बोली कि यदि मैं राघव से अन्य पुरुप को मन से भी न चिन्तन करती होऊं, तो पृथ्वी मुझे अपने भीतर पैठने के लिये विवर दे। इतने में पृथ्वी फट गई, उसमें से एक अद्भुत सिंहासन प्रकट हुआ, उस पर मूर्त्तिमान पृथ्वी देवी बैठी थीं, उन्होंने दोनों भुजाओं से सीता को थाम्ह सिंहासन पर बैठा लिया, और सिंहासन पाताल में घुस चला।

(११२ सर्ग) जब सीता भूतल में प्रवेश कर गई, तब यज्ञ की समाप्ति में महाराज अत्यन्त उदास होगए और सब को विदा देकर अयोध्या चले गए। महाराज ने दूसरी भार्य्या न की। उनके किए हुए, सम्पूर्ण यज्ञो में सुवर्ण की जानकी बनाई गई थीं। बहुत काल के अनन्तर रामचन्द्र की माता काल धर्म को प्राप्त हुईं। उसके पीछे सुमित्रा और कैकेई भी स्वर्ग-वासिनी हुईं और सब के सब महाराज दशरथ से जा मिलीं।

(११३ सर्ग) भरत के मातुल युधाजित ने अपने गुरु द्वारा रामचन्द्र के पास सन्देसा भेजा कि सिन्धु नदी के दोनों तट पर गन्धर्व लोगों का देश है, मैं चाहता हूं कि आप इनको जीत कर वह देश अपने अधिकार में लाइए; क्योंकि यह देश मेरे देश के पासही है। ऐसा सुन रामचन्द्र ने भरत को सैना सहित जाने की आज्ञा दी, और भरत के दोनों पुत्र तक्ष और पुष्कल को वहां के लिये राज्याभिषेक कर दिया। भरत यात्रा करके पन्द्रह टिकान के पीछे कैकय नरेश की राजधानी में पहुंचे।

(११४ सर्ग) केकय नरेश और भरत दोनों की सेना गन्धर्वों पर चढ़ दौड़ी। भयङ्कर युद्ध के पीछे भरत ने गन्धर्वों को जीत कर उस गान्धार देश में तक्षशिला और पुष्कलावती नामक दो पुरी को वसाया और तक्षशिला में अपने पुत्र तक्ष को और पुष्कलावती में पुष्कल को स्थापन किया। भरत ५ वर्ष तक वहां निवास कर अयोध्या में चले आए।

(११५ सर्ग) रामचन्द्र ने लक्ष्मण के पुत्र अंगद के लिये कारुपथ देश में अंगदपुरी और चन्द्रकेतु के लिये मल्ल भूमि में चन्द्रकान्तापुरी वसाकर दोनों का अभिषेक कर दिया, और अङ्गद को पश्चिम भूमि में और चन्द्रकेतु को उत्तर भूमि में प्रस्थान करवा दिया। राज्य शासन करते महाराज को दश सहस्र वर्ष वीत गए।

(११६ सर्ग) कुछ काल वीतने पर काल तपस्वी रूप धारण करके रामचन्द्र के पास आया और बोला कि मैं एक सन्देश को एकान्त में कहने चाहता हूं पर हम दोनों के वात में यदि तीसरा सुने वा देखेगा, तो वह आप का वध्य होगा। महाराज ने इस वात को अंगिकार कर लक्ष्मण से कहा कि तुम द्वार पर खड़े रहो हम दोनों को वतियाते कोई देखने वा सुनने न पावे। लक्ष्मण द्वार पर खड़े हुए।

(११७ सर्ग) काल बोला कि मैं ब्रह्मा का भेजा हुआ हूं। काल मेरा नाम है। ब्रह्मा ने कहा है कि ग्यारह सहस्र वर्ष पर्यन्त भूतल पर रहने का आप का संकल्प पूर्ण होचुका। इस वात की सूचना के लिये मैं यह दूत भेजता हूं। रामचन्द्र बोले वहुत अच्छा।

(११८ सर्ग) तापस और रामचन्द्र की वातचीत हो ही रही थी कि दुर्वाशा ऋषि आकर द्वार पर उपस्थित हुए, और लक्ष्मण से बोले कि इसी क्षण में रामचन्द्र को मुझे देखलाओ, नहीं तो मैं तुम्हारे देश, पुर और राम आदि को भी शाप देऊंगा। लक्ष्मण ने झटपट जाकर महाराज से मुनि का आगमन जनाया। महाराज ने काल को विदा कर शीघ्र वाहर आकर मुनि का सत्कार किया। मुनि ने भोजन कर अपने आश्रम को प्रस्थान किया।

(११९ सर्ग) रामचन्द्र ने मन्त्री और पुरोहितों को इकठा कर लक्ष्मण के

विषय की सब बातें सुनाईं। वशिष्ठ मुनि बोले अब लक्ष्मण से आप का वियोग होगा, आप इनका त्याग कर दीजिए। रामचन्द्र लक्ष्मण से बोले कि हे सौमित्रे मैं तुम्हे इसलिये विदा करता हूं कि जिसमें धर्म की बाधा न हो। साधु लोगों ने त्याग और वध दोनों को तुल्यही कहा है। लक्ष्मण ने सरयू तट पर जाकर सब इन्द्रियों को रोक श्वांस बन्ध कर दिया। इन्द्र वहांआकर मनुष्य शरीर के सहित लक्ष्मण को उठा कर अमरावती में ले गए।

(१२० सर्ग) भरत के अनुमती के अनुसार रामचन्द्र ने अपने पुत्र कुश को कोशल देशों का राज्य और लव को उत्तर भाग के देशों का राज्य दे दिया और शत्रुघ्न के पास दूतों को भेजा।

(१२१ सर्ग) दूत मधुरा नगरी को चले, और मार्ग में कहीं न टिक कर तीन रात्रि दिन में वहां जा पहुंचे। दूतों ने रामचन्द्र की प्रतिज्ञा, पुत्रों का अभिषेक, पुर वासियों का महाराज के साथ जाने का विचार, कुश के लिये विन्ध पर्वत के तट पर कुशावती और लव के लिये श्रावस्ती नगरियों का बसाना, रामचन्द्र और भरत का अयोध्या नगरी को निर्जन कर स्वर्ग जाने के लिये उद्योग करना, यह सब समाचार शत्रुघ्न से कह सुनाया और कहा कि अब शीघ्रता कीजिए। शत्रुघ्न ने सुबाहु और शत्रुघाती अपने दोनों पुत्रों को सेना और धन का दो विभाग करके बांट दिया और एक रथ पर चढ़ अयोध्या में आकर महाराज का दर्शन किया।

इतने में सुग्रीव को आगे किए हुए वानर, भालु और राक्षसों के झूंड के झूंड आ पहुंचे। सुग्रीव बोले कि हे वीर मैं अङ्गद को राज्य दे आप के अनुगामी होने को आया हूं। तदनन्तर रामचन्द्र ने विभीषण से कहा कि हे राक्षसेन्द्र जब तक यह प्रजा गण है, तब तक तुम लङ्का में राज्य करो, और यह इक्ष्वाकुवंश के इष्टदेव श्रीजगन्नाथ जो सर्वदा आराधनीय और इन्द्रादि देवों के पूज्य हैं, इनका आराधना करते रहो। विभीषण ने इस बचन का अंगिकार किया। तदनन्तर महाराज हनूमान से बोले कि जब तक लोक में मेरी कथा का प्रचार है, तब तक तुम आनन्द करो, और जाम्ब-वान, मयन्द और द्विविद से बोले कि कलि तक तुम जीते रहो।

(१२२ सर्ग) श्रीरामचन्द्र भरत, शत्रुघ्न और पुरवासी आदि सब लोगों के साथ सरयू की ओर चले। (१२३) और २ कोस चलकर सरयू तीर पहुंचे। रामचन्द्र अपने पैरोंही से सरयू के जल में चले। उस समय ब्रह्मा आकाश से बोले कि हे विष्णु आप अपने भाइयों के साथ आइए और अपने शरीर में प्रवेश कीजिए। ऐसी पितामह की स्तुती सुन महाराज ने सशरीर अपने दोनों भाइयों को लिए हुए, वैष्णव तेज में प्रवेश किया। वानर और भालू जिन जिन देवतों से निकले थे, उन उनमें लीन हो गए। सुग्रीव सूर्य्य मण्डल में प्रवेश कर गए। रामचन्द्र के अनुगामी लोग गोप्रतार तीर्थ में पहुंच सरयू नदी में पैठ गए, और मनुष्य देह त्याग दिव्य शरीर धारण कर विमानों पर जा चढ़े। स्थावर जंगम जितने जीव थे, वे सब सरयू-जल के स्पर्श से स्वर्ग गामी हुए। ऋक्ष, वानर और राक्षस ये लोग स्वर्ग में घुस गए, इनके शरीर सरयू में रह गए।

## संक्षिप्त अध्यात्म रामायण-( ब्रह्माण्डपुराण—आदि काण्ड )

( दूसरा अध्याय ) पूर्व समय ब्रह्मा ने पृथ्वी और देवताओं के सहित क्षीर समुद्र के निकट जाकर विष्णु भगवान् से निवेदन किया कि हे प्रभो! रावण के अत्याचार से जगत पीड़ित हो रहा है, तुम मनुष्य शरीर धारण करके उस-का विनाश करो। भगवान ने कहा कि कश्यप अयोध्या में राजा दशरथ हुआ है, मैं चार अंश से उसका पुत्र होऊंगा। देवता लोग अपने अपने अंश से भूतल में जाकर वानर का शरीर धारण करें।

( तीसरा अध्याय ) सूर्य्यवंशी राजा दिलीप का पौत्र और राजा अज का पुत्र दशरथ अयोध्या में राज्य करता था। राजा ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया। अग्नि ने प्रकट होकर उसको पायस दिया। दशरथ ने पायस का आधा भाग अपनी स्त्री कौसल्या को और आधा भाग कैकेयी को दे दिया। सुमित्रा के मांगने पर दोनों रानियों ने अपने अपने भागों में से आधा आधा भाग उस-को दिया। तीनों रानियों ने पायस भोजन करके गर्भ धारण किया। दश मास पूर्ण होने पर चैत्र मास शुक्ल पक्ष-नौमी तिथि-पुनर्वसु नक्षत्र मध्याह्न काल

में कौसल्या के गर्भ से रामचन्द्र का जन्म हुआ। इधर कैकेयी के गर्भ से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म हुआ।

(चौथा अध्याय) महर्षि विश्वामित्र ने अयोध्या में आकर अपनी यज्ञ-रक्षा के लिये राजा दशरथ से राम और लक्ष्मण को मांगा। राजा ने वशिष्ठ मुनि के समझाने पर अपने दोनों पुत्र विश्वामित्र को दे दिए। विश्वामित्र राम और लक्ष्मण सहित गङ्गा पार होकर ताड़का-वन में उपस्थित हुए। रामचन्द्र ने ताड़का राक्षसी को मारा। (५ वां अध्याय) विश्वामित्र कामाश्रम वन में एक रात्रि निवास करके प्रातःकाल प्रस्थान कर अपने सिद्धाश्रम में पहुंचे। विश्वामित्र के यज्ञ विध्वंश करने के लिये मारीच और सुवाहु राक्षस आए। रामचन्द्र ने एक वाण से मारीच को शत योजन दूर समुद्र तीर फेंक दिया और दूसरे वाण से सुवाहु को मारडाला। महर्षि विश्वामित्र ने तीन रात्रि अपने आश्रम में निवास कर चौथे दिन विदेह नगर में जनक के यज्ञ देखने के लिये प्रस्थान किया। वे राम, लक्ष्मण और मुनिगणो के सहित अपने आश्रम को छोड़ गङ्गा के समीपवर्त्ती गौतम के आश्रम में पहुंचे, जहां गौतम की पत्नी अहिल्या सहस्रों वर्ष से अपने पति के शाप से अदृश्य शिलारूप होकर वायु भक्षण करके रहती थी। रामचन्द्र के चरण स्पर्श से उसका शाप मोचन होगया। (६ वां अध्याय) इसके पश्चात् विश्वामित्र राम और लक्ष्मण के सहित नौका द्वारा गङ्गा पार हुए। प्रातःकाल वे लोग विदेह नगर में पहुंचे। राजा जनक विश्वामित्र से आमिले। विश्वामित्र बोले हे राजन्! तुम रामचन्द्र को माहेश्वर धनुष दिखाओ। राजाज्ञा पाकर पंचसहस्र वलवान वाहकों ने शिव धनुष को लाकर सभा में उपस्थित कर दिया। रामचन्द्र ने धनुष को वाम हाथ से उठाकर तोड़-डाला। सीता ने राम के गले में स्वर्णमाला पहिनाया। राजा जनक के दूत अयोध्या में गए। राजा दशरथ सुभ समाचार पाकर चतुरंगिनी सेना सहित जनकपुर में आए। जहां रामचन्द्र का विवाह सीता से, लक्ष्मण का विवाह जनक की पुत्री उर्मिला से भरत का विवाह जनक के भ्राता की पुत्री माण्डवी से और शत्रुघ्न का विवाह माण्डवी की बहिन श्रुतिकीर्ति से हुआ। राजा

दशरथ बारात के सहित जनकपुर से विदा हुए। (७ वां अध्याय) जब वह जनकपुर से तीन योजन पर आए, तब परशुराम आकर रामचन्द्र से मिले और परास्त होकर अपने आश्रम को चले गए। बारात अयोध्या पहुंची।

कुछ काल बीतने पर भरत के मामा युधाजित् अयोध्या में आकर भरत और शत्रुघ्न को अपने घर ले गए।

(अयोध्या काण्ड दूसरा अध्याय) राजादशरथ रामचन्द्र के अभिषेक का विधान करने लगे। देवताओं ने रामाभिषेक में विघ्न डालने के लिये सरस्वती को भेजा। सरस्वती ने अयोध्या में जाकर मंथरा और कैकेयी की मति को फेर दिया। मंथरा की प्रेरणा से कैकेयी कोपभवन में जा पड़ी। (३) जब रात्रि के समय राजादशरथ कैकेयी के गृह में गए, तब उसने उनसे दो वरदान मांगे एक तो यह कि भरत का राज्याभिषेक हो, और दूसरा यह कि रामचन्द्र मुनिवेष धारण करके १४ वर्ष पर्यन्त दण्डकारण्य में निवास करें। ऐसा सुन राजा शोकाकुल होगए। रामचन्द्र के आने पर कैकेयी ने उनसे वरदान का वृत्तांत कह सुनाया। (४) लक्ष्मण और सीता रामचंद्र के सहित वन में जाने के लिये तय्यार हुईं। (५) राजा की आज्ञा से मंत्री सुमन्त्र रथ ले आया।

रामचन्द्र ने लक्ष्मण और सीता के सहित कैकेयी के दिए हुए, मुनि वस्त्रों को पहन कर रथारूढ़ हो अयोध्या से प्रस्थान किया। वे लोग पहली रात तमसानदी के तीर और दूसरी रात शृङ्गवेरपुर में गङ्गा तीर निवास किया। (६) वहां रामचन्द्र का मित्र गुह नामक निषाद-राज आ मिला। प्रातःकाल होने पर गुह ने तीनों को पार उतारा। वे लोग भरद्वाज के आश्रम में गए और रात्रि में वहां निवास कर प्रातःकाल मुनि-कुमार कृत भेलक द्वारा यमुना पार हुए। रामचन्द्र लक्ष्मण और सीता के सहित चित्रकूट के निकट महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पहुंचे। महर्षि ने पर्वत और मन्दाकिनी नदी के मध्य में इनके रहने का स्थान बतलाया। जानकी और लक्ष्मण के सहित श्रीरामचन्द्र वहां२ शाला बनाकर निवास करने लगे।

(७ वां अध्याय) इधर सुमन्त्र शृङ्गवेरपुर से अयोध्या लौट आया।

राजा दशरथ ने रामचन्द्र के वियोग से प्राण त्याग कर स्वर्ग को प्रस्थान किया। दूतगण भरत और शत्रुघ्न को उनके मामा के गृह से अयोध्या में लिवा लाए। भरत ने यथा विधि पितृ-कार्य का निर्वाह किया। (८) इसके पश्चात् वह अपनी सेना, मन्त्री और मातृगणों के सहित रामचन्द्र के पास वन को चले और गङ्गा के निकट शृङ्गवेरपुर में पहुंचे। गुह ने प्रातःकाल होने पर ५०० नौकाओं द्वारा भरत की सेना को पार उतारा। भरत वहां से प्रस्थान कर भरद्वाज के आश्रम में पहुंचे। महर्षि ने कामधेनु के प्रभाव से भरत की सेना का अलौकिक अतिथि-सत्कार किया। प्रातःकाल होने पर भरत वहां से प्रस्थान कर चित्रकूट पहुंचे, वहां के मुनियों ने दिखाया कि पर्वत के पश्चाद् भाग में मन्दाकिनी के उत्तर तीर पर रामचन्द्र का आश्रम देखपड़ता है। (९) भरत रामचन्द्र से जा मिले। श्रीरामचन्द्र राजा दशरथ की मृत्यु सुनकर शोकाकुल हुए। जब रामचन्द्र राज्याभिषेक कराने में सन्मत नहीं हुए. तब भरत उनकी पादुकाओं को लेकर अयोध्या लौट आए, और नन्दीग्राम में दोनों पादुकाओं को सिंहासन पर स्थापित कर शत्रुघ्न सहित फल मूल भोजन करके मुनिवेष से निवास करने लगे।

रामचन्द्र कुछ काल चित्रकूट पर्वत पर निवास करके सीता और लक्ष्मण के सहित अत्रि मुनि के आश्रम में आए। मुनि की पत्नी अनसूया ने सीता को अपने दो कुण्डल और दो वस्त्र दिए।

(अरण्यकाण्ड—प्रथम अध्याय) प्रातःकाल होने पर श्रीरामचन्द्र सीता और लक्ष्मण के सहित महर्षि अत्रि के आश्रम से चल कर एक कोस दूर महती नदी के तीर पहुंचे। अत्रि मुनि के शिष्यों ने इनको नौका द्वारा पार उतारा। वे लोग राक्षसों की लीला-भूमि लोमहर्षण अरण्य में उपस्थित हुए। इसके उपरांत रामचन्द्र ने विराध राक्षस को मारा। (२ रा अध्याय) महर्षि शरभंग रामचन्द्र को अपने आश्रम में लेगए, और इनके दर्शन से कृतार्थ होकर अपने शरीर को चिता में भस्म कर परधाम को प्राप्त हुए। रामचन्द्र ने सीता और लक्ष्मण सहित कई एक वर्ष वहां निवास किया। इसी प्रकार से वह क्रम क्रम से ऋषियों के आश्रम में भ्रमण करते हुए, अगस्त्य के

शिष्य सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में गए। (३) और प्रभात होने पर सुतीक्ष्ण, सीता और लक्ष्मण के सहित प्रस्थान करके अगस्त्य के भ्राता के आश्रम में पहुंचे। वे लोग दूसरे दिन वहां से चल कर महर्षि अगस्त्य के आश्रम में गए। महर्षि ने रामचन्द्र को अक्षय धनुष, तूणीर, वाण और खड्ग दिए। मुनि बोले कि हे राम! यहां से दो योजन दूर गोदावरी के तट पर पंचवटी स्थान है, तुम वहां जाकर निवास करो।

(४) रामचन्द्र पंचवटी में गए। मार्ग में गृध्र जटायु से मित्रता हुई। लक्ष्मण ने गोदावरी नदी के उत्तर तट में निवास गृह बनाया, उसमें वे लोग रहने लगे। (५) लक्ष्मण ने कामातुर सूर्पणखा राक्षसी के दोनों नाक और कानों को खड्ग से काटडाला। सूर्पणखा की प्रेरणा से खर नामक राक्षस १४ सहस्र सेना सहित रामचन्द्र के पास आया। लक्ष्मण सीता के सहित पर्वत की गुहा में चले गए, और रामचन्द्र ने आधे प्रहर में संपूर्ण राक्षसों को मारडाला। सूर्पणखा ने रावण के पास लङ्का में जाकर सब वृत्तांत कह सुनाया। (६) रावण मारीच को जन स्थान में ले आया। मारीच सुवर्णमय विचित्र मृग बनकर सीता के सन्मुख दौड़ने लगा। (७) रामचन्द्र की आज्ञा से सीता ने अपनी छाया कुटी में छोड़ कर अग्नि में प्रवेश किया। माया की सीता रामचन्द्र से बोली कि हे प्रभो! तुम इस मृग को मुझे ला दो। रामचन्द्र मृग के पीछे दौड़े, मृग उनको बहुत दूर ले गया। राम ने मृग को वाण से मारा। मारीच मरने के समय राम के सदृश शब्द से बोला कि हे लक्ष्मण! शीघ्र हमारी रक्षा करो। जब सीता ने लक्ष्मण को अनेक दुर्वचन कहे, तब वह आश्रम में सीता को छोड़ कर राम के समीप गए। रावण भिक्षुक वेष से सीता के समीप गया, और उनको रथ में बैठाकर ले चला। सीता का रोदन सुन पक्षीराज जटायु आया, उसने रावण का रथ चूर्ण कर डाला। रावण खड्ग से जटायु के दोनों चरण काट सीता को लेकर चल दिया। सीता ने मार्ग में पर्वत के उपर ५ वानरों को देख कर अपना आभरण गिरा दिया। रावण ने लंका में जाकर अपने अन्तःपुर-वर्त्ती अशोक-वाटिका में सीता को रक्खा राक्षसियां उनकी रक्षा करने लगीं।

( ८ वां अध्याय ) रामचन्द्र ने जब लक्ष्मण के सहित निज आश्रम में आकर सीता को नहीं पाया, तब वह विलाप करते हुए, सीता को ढूँढनें लगे। उन्होंने कुछ दूर जाकर जटायु को देखा, उसने कहा कि हे रामचन्द्र ! रावण मुझको परास्त कर सीता को दक्षिण दिशा में ले गया है । पक्षीराज ऐसा कह शरीर छोड़ वैकुंठ को गया । (९) रामचन्द्र सीता को खोजते हुए, वनां-तर में लक्ष्मण सहित गमन करने लगे। उनको भयंकर वन में कबन्ध राक्षस मिला। दोनों भाइयों ने उसकी एक एक भुजा को काट डाला। (१०) क-बन्ध ने कहा कि हे रघुनन्दन ! सन्मुखवर्त्ती आश्रम में शबरी तपस्विनी निवास करती है, तुम उसके समीप जाओ, वह तुम से सीता के मिलने का उपाय बतलावेगी। कबन्ध, जो पूर्व जन्म में गन्धर्व था, वैकुंठ को गया। लक्ष्मण के सहित रामचन्द्र शबरी के आश्रम में गए । शबरी ने उनका अतिथि-सत्कार किया । राम के पूछने पर शबरी ने कहा कि हे भगवन् ! रावण सीता को लंका में लेगया है। यहां से थोड़ी दूर पंपासरोवर है, जिसके निकट ऋष्यमूक पर्वत पर ४ मन्त्रियों के सहित सुग्रीव निवास करता है, तुम वहां जाकर सुग्रीव से मित्रता करो, वह आप का कार्य पूर्ण करेगा । ऐसा कह शबरी ने अग्नि में प्रवेश करके मुक्ति लाभ की।

किष्किन्धाकाण्ड—(प्रथम अध्याय) रामचन्द्र धीरे धीरे पंपासरोवर के समीप गए, वह एक कोस विस्तीर्ण था। राम और लक्ष्मण वन की शोभा देखते हुए, ऋष्यमूक के निकट गए। सुग्रीव ने उनको देख भयभीत होकर हनूमान को उनके समीप भेजा । हनूमान बटुरूप धारण कर उनसे अनेक वार्त्ता करने के पश्चात् दोनों को अपने कन्धो पर चढ़ा कर सुग्रीव के निकट ले आए। सुग्रीव ने जानकी के आभरणों को, जो उनको मिले थे, गुहा से लाकर रामचन्द्र को दिया और प्रतिज्ञा की कि मैं रावण को मार कर सीता का उद्धार करूंगा। रामचन्द्र और सुग्रीव ने अग्नि की शाक्षी देकर परस्पर मित्रता की। सुग्रीव ने कहा कि हे रामचन्द्र ! दुन्दुभी दैत्य का यह पर्वता-कार मस्तक पड़ा है, जिसको वाली ने मारा था। यदि इसको तुम तोड़ दो तो मुझको विश्वास होगा कि तुम वाली को मारोगे। रामचन्द्र ने शीघ्र अपने

अंगूठे से मार उसको दश योजन दूर फेंक दिया। फिर सुग्रीव बोला कि हे रघुवर ! यह ताल के ७ वृक्ष हैं, वाली एक एक करके इनको हिला कर विना पत्ते का कर देता था, तुम यदि एक वाण से इनको विद्ध करो, तब मुझको निश्चय होगा कि तुम वाली को मारोगे। रामचन्द्र ने एक वाण से सातों वृक्षों को विद्ध किया, तब सुग्रीव को निश्चय विश्वास हुआ कि यह वाली का वध करेंगे।

(दूसरा अध्याय) राम की आज्ञा से सुग्रीव किष्किंधा के उपवन में जाकर गर्जा। वाली आकर उससे युद्ध करने लगा। रामचन्द्र ने दोनों वानरों का एकही समान रूप देख कर सुग्रीव के वध की शंका से वाली पर वाण नहीं छोड़ा। सुग्रीव रक्त वमन करता हुआ, भयाकुल हो भाग गया। लक्ष्मण ने चिन्हानी के लिये सुग्रीव के गले में पुष्पमाला पहना दी। सुग्रीव ने फिर जाकर वाली को ललकारा। वाली आकर फिर लड़ने लगा। रामचन्द्र ने वृक्ष की ओट में बैठ कर वाली के हृदय में वाण मारा। वाली ने रामचन्द्र से अनेक बातें करके अपना शरीर छोड़ परमपद को पाया। (३) सुग्रीव ने विधिवत वाली का प्रेतकर्म समाप्त किया। लक्ष्मण ने राम की आज्ञा से किष्किन्धा में जाकर सुग्रीव को राज्य दिया। वाली का पुत्र अङ्गद युवराज बनाया गया। लक्ष्मण के सहित श्रीरामचन्द्र प्रवर्षण पर्वत के अति विस्तृत शिखर पर जाकर एक सरोवर के निकट गुहा में निवास करने लगे।

(चौथा अध्याय) हनूमान ने सुग्रीव की आज्ञा से सातों द्वीपों के वानरों को लाने के लिये १० सहस्र वानरों को भेजा। (५) कुछ समय बीतने पर राम लक्ष्मण से बोले कि देखो शरत काल उपस्थित हुआ, सुग्रीव सीता के खोजने का उद्योग नहीं करता है सो तुम जाकर भय दिखला के उसको ले आओ। लक्ष्मण किष्किन्धा में जाकर सुग्रीव को ले आए। (६) सुग्रीव ने सब दिशाओं में विविध वानर गणों को भेज कर दक्षिण दिशा में अंगद, जाम्बवान, हनूमान, नल, सुषेण, शरभ, मयंद और द्विविद को भेजा। रामचन्द्र ने सीता की चिन्हानी के लिये हनूमान को अपने नामाक्षर से युक्त अंगूठी दी। वानरों ने वहांसे प्रस्थान कर महावन में भ्रमण करते हुए, एक अंधेरी गुहा देखी।

उन्होंने जल पीने के लिये उसमें प्रवेश किया। गुहा के भीतर बहुतेरे गृह, सुंदर वाटिका, सरोवर और गन्धर्व-पुत्री स्वयंप्रभा नामक तपस्विनी थी। वे लोग पानी पीकर स्वयंप्रभा के प्रभाव से गुहा के बाहर निकले। उसी समय सीता के खोजने के लिये जो एक मास की अवधि थी, वह बीत गई। वानरगण सीता को ढूँढते हुए, दक्षिण-समुद्र के तीर महेन्द्र पर्वत के पादमूल में उपस्थित हुए। वहां वे लोग मरने के लिये संकल्प करके कुशों के आसन पर बैठे। उसी समय सम्पाति नामक गृध्र वानरों को देख गुहा से निकल कर बोला कि आज हमको पूरा आहार मिला। वानरगण बोले कि हम लोगों का निरर्थक प्राण गया। जटायु धन्य था, जिसने राम के कार्य के लिये अपना प्राण दिया। सम्पाति ने हर्षित हो वानरों से अपने भ्राता जटायु का वृत्तांत पूछा, तब अंगद ने सब कथा कह सुनाई। सम्पाति ने कहा कि त्रिकूटगिरि के शिखर पर लङ्का नामक नगरी है। वहीं अशोक-वाटिका में राक्षसी गण सीता की रक्षा करती हैं। यहां से १०० योजन दूर समुद्र में लंका है। (८) सम्पाति का नया पक्ष जम गया। (९) वह आकाश मार्ग में चला गया। जाम्बवान ने लंका जाने के लिये हनूमान को सचेत किया।

सुन्दरकाण्ड—(प्रथम अध्याय) हनूमान उड़ चले और मार्ग में देव-प्रेरित सुरसा को परास्त कर, मैनाक पर्वत को स्पर्श कर, और सिंघिका राक्षसी को मार समुद्र पार हो, त्रिकूटगिरि-शिखर पर स्थित हुए। जब कपिराज सूक्ष्म रूप धारण कर लंका में प्रवेश करने लगे, तब लंका की अधिष्ठात्री देवी ने राक्षसी वेष धारण कर उनको रोका। जब हनूमान ने उसको परास्त किया, तब उसने प्रसन्न होकर हनूमान से कहा कि अंतःपुर के प्रमोद वन में अशोकवाटिका है, उसके मध्य में शिंशपा (सीसो) वृक्ष के नीचे सीता रहती है। तुम लंका में प्रवेश कर रामचन्द्र का कार्य करो।

(२ रा अध्याय) हनूमान निशा भाग में क्षुद्र वानर-रूप धारण कर लंका की अशोक-वाटिका में गए। वह वहां जानकी को देख कर शिंशपा वृक्ष के सघन पल्लव में लीन होकर बैठ रहे। उसी समय रावण ने वहां आकर राक्षसियों से कहा कि दो मास के भीतर यदि सीता मुझे स्वीकार नहीं

करेगी, तो तुम लोग इसको मार कर हमारे भोजन के लिये पाक बना देना। जब रावण चला गया, (३) तब हनूमान धीरे धीरे रामचन्द्र की कथा वर्णन करने लगे। सीता बोली कि प्रिय भाषी व्यक्ति हमारे सन्मुख क्यों नहीं प्रगट होता है, तब हनूमान ने आकर सीता को प्रणाम किया और रामचंद्र से वानरों की संगति की कथा कह सुनाई। इसके पश्चात् उसने रामनामांकित मुद्रिका सीता को दी और उनसे अनेक वार्त्ता कर अपने जाने के लिये आज्ञा मांगी। सीता ने चिन्हानी के लिये हनूमान को अपनी चूड़ामणि दी और जयन्त की कथा कह सुनाई। हनूमान ने सीता से विदा हो, सीता के निकट के शिंशपा वृक्ष को छोड़ कर अशोक-वाटिका का विनाश कर डाला। राक्षसी गण रावण के निकट जाकर बोली कि एक प्राणी ने वानर रूप से सीता से वार्त्ता करके अशोक-वाटिका को उजाड़ डाला और रक्षकों को मारडाला। रावण ने प्रथम वार दश कोटी राक्षस, दूसरी वार ५ सेनापति, तीसरी वार ७ मन्त्रि-पुत्र, चौथी वार अपने पुत्र अक्ष को भेजा; हनूमान ने सभों को क्रम क्रम से मारडाला, तब उसने बहुत राक्षसों के सहित इन्द्रजीत को पठाया। वह हनूमान को ब्रह्मास्त्र से मूर्छित करके बांधकर रावण के समीप लाया। रावण ने एक राक्षस से कहा कि खण्ड खण्ड करके वानर को मारडालो। विभीषण बोला कि हे राजन्! दूत को मारना उचित नहीं है, इसको दूसरा दण्ड दो। तब रावण ने राक्षसों से कहा कि तुम लोग इसकी पूँछ में वस्त्र लपेट कर आग लगा दो और संपूर्ण नगर में फिरा कर छोड़ दो। राक्षस गण इसी के अनुसार हनूमान को नगर में घुमाने लगे। कपिराज जब पश्चिम द्वार पर गए, तब छोटा रूप धारण कर बन्धन से मुक्त हुए। इसके उपरांत उन्होंने क्रम क्रम से समस्त लंका नगरी को भस्म कर दिया।

(५ वां अध्याय) हनूमान सीता से आज्ञा लेकर समुद्र पार हो, अङ्गदादि वानरों से आ मिले। सब वानर प्रस्रवण पर्वत की ओर चले। वे सुग्रीव के मधुवन में आकर रक्षको को मुष्टिका से प्रहार कर फल खाने लगे। सुग्रीव के मामा दधिमुख ने कपिराज के पास आकर वानरों के उपद्रव की वार्त्ता कह सुनाई। सुग्रीव बोले कि विना सीता की सुधि पाए हुए, वानर लोग

मधुवन के फल नहीं खाते उसी समय वानर गण आ गए। हनूमान ने रामचन्द्र से सीता का समाचार कह सुनाया।

लंकाकाण्ड—( प्रथम अध्याय ) रामचन्द्र की सेना विजय-मुहूर्त में यात्रा करके दिन रात्रि चलने लगी और सह्याचल तथा मलयगिरि को अतिक्रम करके समुद्र के किनारे पहुंची। रामचन्द्र हनूमान की पीठ से उतरे। सेना विश्राम करने लगी।

( दूसरा अध्याय ) लंका में रावण ने मन्त्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिये ? कुंभकर्ण ने कहा कि हे राजन् ! रामचन्द्र साक्षात् नारायण हैं, तुम ने अपने विनाश के लिये सीता हरण किया है। इन्द्रजीत बोला कि हे देव ! तुम आज्ञा दो तो मैं राम लक्ष्मण और सुग्रीव आदि वानरों को मार कर चला आऊं। विभीषण ने कहा कि हे राजन् ! इन्द्रजीत आदि कोई राक्षस रण-भूमि में राम के सन्मुख नहीं ठहर सकेंगे, सो तुम सीता को शीघ्र राम के सन्मुख उपस्थित कर दो। रावण बोला कि यदि दूसरा कोई ऐसा कहता तो हम इसीक्षण उसका वध करते; तुम राक्षस कुल में अधम हो, तुमको धिक्कार है।

( ३ रा अध्याय ) विभीषण रावण को त्याग कर अपने ४ मन्त्रियों के सहित समुद्र पार हो, रामचन्द्र के समीप आया। रामचन्द्र ने विभीषण को लङ्का के राज्य पर अभिषिक्त किया। रामचन्द्र के क्रुद्ध होने पर समुद्र प्रकट हुआ, और बोला कि हे रघुवर ! विश्वकर्मा के पुत्र नल वानर को वरदान मिला है, सो उसके बांधने से सेतु बनेगा। राम की आज्ञा से नल वानर सेना पतियों सहित पर्वत और वृक्षों को लाकर सेतु बांधने लगा। (४) रामचन्द्र ने सेतु आरम्भ के समय लोक-हित के लिये रामेश्वर शिव को स्थापित किया। प्रथम दिन १४ योजन दूसरे दिन २० योजन तीसरे दिन २१ योजन चौथे दिन २२ योजन और पांचवें दिन २३ योजन; इस प्रकार से १०० योजन सेतु बांधा गया। वानरी सेना सेतु द्वारा समुद्र पार हो, सुवेल पर्वत के पास पहुंची।

( ५ वां अध्याय ) रामचन्द्र की सेना ने लङ्का पर आक्रमण किया।

वानर और राक्षसों का अद्भुत युद्ध होने लगा। जब राक्षसी सेना युद्ध में निहत होकर चतुर्थांश भाग शेष रह गई, तब मेघनाद ने आकाश में अदृश्य हो ब्रह्मास्त्र से असंख्य वानरों का विनाश कर दिया। राम की आज्ञा से हनूमान औषधि सहित द्रोण पर्वत को उठा लाए। औषधि से वानर जीवित हुए। फिर हनूमान उस पर्वत को जहां से लाए थे, वहां रख आए। (६) रावण ने स्वयं संग्राम में आकर बहुतेरे वानरों को निहत कर सुग्रीव आदि सेना पतियों को मूर्छित कर दिया। इसके पश्चात् उसने विभीषण पर शक्ति छोड़ी। लक्ष्मण विभीषण के सन्मुख खड़े हो गए, जब वह शक्ति की चोट से पृथ्वी में गिर पड़े, तब रावण उनको उठाने लगा; परन्तु वह नहीं उठ सके। हनूमान अपनी मुष्टिका घात से रावण को मूर्छित करके लक्ष्मण को राम के निकट उठा लाए। रामचन्द्र ने कहा कि हे हनूमान! तुम पूर्वही के समान फिर औषधि लाकर लक्ष्मण और वानरों को जिला दो। यह समाचार पाकर रावण ने कालनेमि राक्षस को भेजा। (७) राक्षस ने हिमालय के निकट माया का तपोवन बनाकर निवास किया। हनूमान अपने मार्ग में पिपासा युक्त हो, उसके आश्रम में गए। कालनेमि बोला कि हे हनूमान! मैं त्रिकालज्ञ हूं, तुम सरोवर से जल पीकर आवो तो मैं तुमको मन्त्र दूँगा, जिसके प्रभाव से तुम औषधि को शीघ्र पहचान सकोगे। जब हनूमान माया के सरोवर में जाकर जल पीने लगे, तब महा मायाविनी मकरी उनको ग्रास करने लगी। कपि ने उसका मुख पकड़ उसके दो खण्डकर डाले धान्यमालिनी नामक अप्सरा शाप के कारण मकरी हुई थी, वह अप्सरा होकर बोली कि हे कपि! तुमने जिस मुनि को देखा है, वह रावण का भेजा हुआ कालनेमि राक्षस है; तुम इसको शीघ्र मारो। हनूमान ने जाकर मुष्टिका के प्रहारों से कालनेमि को मारडाला। इसके उपरांत वह क्षीर समुद्र में जाकर औषधि न पहचानने के कारण द्रोण पर्वत को उखाड़ राम के समीप लेआए। सुषेण ने पर्वत से औषधि लेकर लक्ष्मण को दिया, जिससे वह उठ बैठे।

रावण की आज्ञा से राक्षसगण कुंभकर्ण को जगा लाए। (८) कुंभकर्ण को देख वानर भागने लगे। अंत में रामचन्द्र ने उसका सिर काटडाला।

उसका मस्तक लङ्का-द्वार पर और सिर समुद्र में जा गिरा। इन्द्रजीत अग्नि से अजेय रथादि पाने के लिये निकुंभिला यज्ञशाला में जाकर होम करने लगा। विभीषण ने राम से कहा कि मेघनाद यह होम समाप्त करने पर सब से अजेय होजायगा। ब्रह्मा ने ऐसा स्थिर किया है, कि जो व्यक्ति १२ वर्ष पर्यंत आहार और निद्रा से वर्जित रहेगा, उसके हाथ से मेघनाद मरेगा। लक्ष्मण ने ऐसा किया है, इसलिये आप उनको आज्ञा दीजिए कि वह उसको मारें। (९) लक्ष्मण राम की आज्ञा पाकर विभीषण और हनूमान आदि बानरों के सहित निकुंभिला में पहुंचे। मेघनाद ने होम परित्याग कर रथारूढ़ हो, लक्ष्मण को ललकारा। भयङ्कर संग्राम के पश्चात् लक्ष्मण ने मेघनाद का सिर काटडाला। रावण शोक वस होकर खड्ग से सीता को मारने दौड़ा जब सुपार्श्व नामक मन्त्री ने कहा कि हे राजन्! आप स्त्री का वध करके अपने यश में कलङ्क मत लगाइए, आप हमारे सहित चलकर राम और लक्ष्मण का विनाश कर सीता को प्राप्त कीजिए, तब रावण ने सीता को छोड़ दिया।

(१० वां अध्याय) रावण शुक्राचार्य के उपदेश से निर्जन गुहा में जाकर होम करने लगा। विभीषण ने रामचन्द्र से कहा कि यदि रावण होम समाप्त करेगा, तो अजेय होजायगा। तब राम की आज्ञा से १० कोटि बानरों ने जाकर होम कार्य विध्वंश किया। रावण १६ चक्र वाले रथ पर चढ़ रण भूमि में आया। इन्द्र ने मातली के साथ रामचन्द्र के पास अपना रथ भेजा। रामचन्द्र रथारूढ़ हो, रणस्थल में आए। राम और रावण का रोमहर्षण भीषण युद्ध हुआ। राम ने इन्द्र के अस्त्र से रावण के मस्तकों को काटडाला, किन्तु जितने बार वह मस्तकों को काटते थे, उतने ही बार वह फिर उत्पन्न होजाते थे। रामचन्द्र ने रावण के मस्तकों को १०१ बार काटा, किन्तु वह नहीं मरा। तब विभीषण के आदेशानुसार उन्होंने प्रथम अग्नि-अस्त्र से रावण की नाभी के अमृत कुण्ड को सुखा दिया और पीछे उसके सम्पूर्ण मस्तक और बाहु को काटडाला; किन्तु तब भी वह जीता रहा; इस के पश्चात् रामचन्द्र ने मातली के कथनानुसार ब्रह्मास्त्र से रावण के

हृदय में मारा, जिससे वह मर गया। उसके शरीर से ज्योति निकल कर राम की देह में प्रविष्ट हो गई। (१२) विभीषण ने रावण की मृत्यु से शोक युक्त हो उसको विधिवत् प्रेत संस्कार किया। लक्ष्मण ने रामचन्द्र की आज्ञा से लङ्का में जाकर विभीषण का अभिषेक किया।

विभीषण सीता को राम के समीप ले आया। (१३) अग्नि परीक्षा देने के समय माया की सीता अग्नि में प्रवेश कर गई। अग्नि ने सीता को लाकर राम को समर्पण किया। रामचन्द्र की आज्ञा से इन्द्र ने अमृत वृष्टि करके रण में मरे हुए, सम्पूर्ण वानरों को जिला दिया। राक्षसगण अमृत-स्पर्श होने पर भी जीवित नहीं हुए।

रामचन्द्र के साथ मन्त्रियों सहित विभीषण और सेनाओं सहित सुग्रीव पुष्पक विमान पर चढ़े। विमान महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पहुंचा, (१४) उसी दिन पंचमी तिथि को रामचन्द्र के वनवास के १४ वर्ष पूर्ण हो गए। हनूमान ने अयोध्या से एक कोस दूर नन्दीग्राम में जाकर भरत से राम का संदेशा कह सुनाया। पश्चात् पुष्पक विमान रामचन्द्र को सेना सहित नन्दीग्राम में उतार कर कुबेर के गृह चला गया। (१५) श्रीरामचन्द्र का अभिषेक अयोध्या में हुआ। (१६) विभीषण अपने मन्त्रियों सहित लङ्का में और सुग्रीव वानरों सहित किष्किन्धा में गए। रामचन्द्र ने लक्ष्मण को युवराज बनाया और १० सहस्र वर्ष राज्य शासन किया।

उत्तरकाण्ड—(तीसरा अध्याय तक) अगस्त्य ऋषि ने अयोध्या में आकर रामचन्द्र से रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण की उत्पत्ति की और वाली तथा सुग्रीव के जन्म की कथा कह सुनाई।

(चौथा अध्याय) रामचन्द्र ने एकांत में सीता से कहा कि हम लोकापवाद के छल से तुम को वन में भेजेंगे। वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में तुम को दो पुत्र उत्पन्न होंगे। इसके पश्चात् रामचन्द्र ने एक दिन अपनी सभा में विजय नामक दूत से पूछा कि पुरवासी गण हम लोगों के विषय में क्या कहते हैं। उसने कहा कि हे देव सब कहते हैं, कि रामचन्द्र ने दुरात्मा

रावण के गृह से सीता को लाकर अपने घर रक्खा, यह कार्य उन्होंने अच्छा नहीं किया। रामचन्द्र ने दूसरे लोगों से पूछा, उन लोगों ने भी कहा कि हां ऐसाही है। तब रामचन्द्र की आज्ञानुसार लक्ष्मण ने सीता को लेजा कर महर्षि वाल्मीकि के आश्रम के निकट छोड़ दिया, और उनसे कहा कि तुम महर्षि के आश्रम में चली जाओ। लक्ष्मण लौट आए और महर्षि सीता को अपने आश्रम में ले गए। सीता मुनि पत्नियों के सहित रहने लगी। (६) शत्रुघ्न ने राम की आज्ञा से मधुवन में जाकर लवणासुर को मार, वहां मथुरापुरी बसाई। वाल्मीकि के आश्रम में सीता को २ पुत्र हुए। मुनि ने ज्येष्ठ पुत्र का नाम कुश और छोटे का नाम लव रक्खा और दोनों को रामायण काव्य की शिक्षा दी। (७) ऋषि की आज्ञा से कुश और लव रामायण गान करते हुए, विचर ने लगे। रामचन्द्र ने इनके गान की प्रशंसा सुनकर इनको अपनी सभा में बुलाया। इनका गाना सुनकर सब लोग विस्मित होगए, और परस्पर कहने लगे कि दोनों बालकों की आकृति राम के तुल्य है। रामचन्द्र ने भरत से कहा कि इनको अयुत धन प्रदान करो। भरत सुवर्ण देने लगे, तो दोनों बालक ऐसा कह कि 'मुझ तपस्वी को धन से क्या प्रयोजन है' चले गए। रामचन्द्र ने इनको अपना पुत्र जाना और सीता सहित वाल्मीकि ऋषि को बुलाया। दूसरे दिन महर्षि वाल्मीकि सीता के सहित यज्ञशाला में आए। महर्षि बोले कि हे रामचन्द्र! यह तुम्हारी धर्मचारिणी सीता और ये दोनों आप के औरस पुत्र हैं। सीता कौषेय वस्त्र पहन कर बोली कि जो मैं रामचन्द्र के अतिरिक्त किसी दूसरे पुरुष की चिंतना न करती होऊं तो पृथ्वी देवी मुझको विवर देवें। उसी समय रसातल से सिंहासन प्रकट हुआ, पृथ्वी देवी ने सीता को उठाकर सिंहासन पर बैठाया और सिंहासन रसातल में प्रवेश कर गया। रामचन्द्र कुश और लव को लेकर यज्ञस्थान से अयोध्या में आए। कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा शरीर छोड़ कर स्वर्ग में राजा दशरथ से जा मिलीं।

(८ वां अध्याय) कुछ समय बीतने पर भरत ने अपने मातुल युधाजित की प्रेरणा से सेनाओं के सहित जाकर ३ कोटि गन्धर्वों को मारा और गंधर्व-

राज्य में दो नगरी को बसाया। उन्होंने उनमें से पुष्कलावती नगरी में अपने पुत्र पुष्कल का और तक्षशिला में तक्ष का राज्यतिलक कर दिया। लक्ष्मण ने रामचन्द्र की आज्ञानुसार अपनी सेना और दोनों पुत्रों के सहित पश्चिम दिशा में गमन किया और वहां दुष्ट भीलगणों का विनाश करके दो नगर बसाया। वह उनमें से एक नगर में अपने पुत्र अंगद को और दूसरे में चित्रकेतु को राज्यतिलक देकर अयोध्या लौट आए।

काल मुनिवेष धारण करके अयोध्या में आया और रामचन्द्र से बोला कि एकांत में मैं आप से वार्ता करूंगा परंतु वार्ता के समय जो कोई आवेगा, वह वध्य होगा। रामचन्द्र ने यह वचन स्वीकार करके लक्ष्मण को द्वार पर रक्खा। काल ने कहा कि हे रामचन्द्र! तुमको पृथ्वी में आए हुए, ११००० वर्ष पूर्ण हो गए, सो ब्रह्मा ने हमको भेजा है, अब जैसी तुम्हारी इच्छा हो सो करो। उसी समय दुर्वासा ऋषि द्वार पर आकर लक्ष्मण से बोले कि तुम शीघ्र मुझ को राम से भेंट कराओ, यदि ऐसा नहीं करोगे तो राज्य के सहित राम को और इस कुल को मैं भस्म कर दूँगा। लक्ष्मण ने रामचन्द्र के निकट जाकर ऋषि के आने का संवाद कहा। रामचन्द्र ने ऋषि के समीप आकर उनके कथनानुसार भोजन दिया। रामचन्द्र काल की प्रतिज्ञा स्मरण कर शोकाकुल हुए। वशिष्ठ ने कहा कि लक्ष्मण को परित्याग कर दिया जाय क्योंकि परित्याग और वध दोनों तुल्य है। लक्ष्मण सरयू तीर जाकर नव द्वार का संयम करके प्राण को मस्तक में लेगए। इन्द्र देवताओं के सहित वहां आकर सशरीर लक्ष्मण को लेगया।

(९ वां अध्याय) रामचन्द्र ने कुश को कोशल देश के राज्य पर और लव को उत्तर देश के राज्य पर अभिषिक्त कर दिया और प्रत्येक को बहुत रत्न और धन के सहित ८ सहस्र रथ, १ सहस्र हस्ती और ६० सहस्र घोड़े दिए। राम की आज्ञा से शत्रुघ्न को लाने के लिये दूत मथुरा में गया। शत्रुघ्न ने अपने पुत्र सुबाहु को मथुरा नगर और यूपकेतु को विदिशा नगर का राज्य दिया और दूत के सहित वह अयोध्या में आए। वानर, भालू, राक्षस इत्यादि सब अयोध्या में आए। रामचन्द्र के साथ चारों वर्ण की

प्रजा चली, नगरी प्राणी से रहित हो गई। रामचन्द्र नगरी से दूर सरयू नदी के तीर पर आए। ब्रह्मा देवताओं के सहित वहां उपस्थित हुए। आकाश में कोटि कोटि विमान दिखाई देने लगे। रामचन्द्र महाज्योतिमय होकर चक्रादि आयुधों के सहित चतुर्भुज मूर्त्ति होगए, लक्ष्मण शेष रूप होगए थे, भरत और शत्रुघ्न चक्र और शंख हुए; सीता प्रथमही लक्ष्मी होगई थी। सब वानरों और राक्षसों ने सरयू के जल का स्पर्श करके शरीर त्याग किया। वानर और भालू जिन जिन देवताओं के अंश से हुए थे, उनमें लीन होगए। तिर्जग योनि सब सरयू-जल में प्रवेश कर स्वर्ग में गए।

( हिन्दी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि तुलसीदास ने संवत् १६३१ (सन् १५-७४ ई०) में अध्यात्मरामायणही के आधार पर मानस रामायण को बनाया, जो उत्तरीय भारत में संपूर्ण भाषा-काव्यों से अधिक प्रचलित है )

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**-पद्मपुराण—(पाताल खण्ड—३६ अध्याय) श्रीरामचन्द्र ने १५ वर्ष की अवस्था में ६ वर्ष की अवस्था की जानकी से अपना विवाह किया। २७ वर्ष को अवस्था में उनको युवराज की पदवी मिलने का सामान हुआ। रामचन्द्र के वन जाने के ५ दिन पीछे राजा दशरथ का देहांत हुआ, उसी दिन श्रीरामचन्द्र चित्रकूट में पहुंचे। वनवास के तेरहवें वर्ष लक्ष्मण ने पंचवटी में शूर्पणखा राक्षसी की नाक और कान काट डाले।

माघ शुक्ल ८ को रावण सीता को हर ले गया, और माघ शुक्ल ९ को जानकी को लंका में लेजाकर रक्खा। उसके दसवें मास सम्पाति गृध्र ने वानरों से सीता का पता बताया। एकादशी तिथि में हनूमान जी समुद्र लांघ गए, और उसी रात्रि को लंका में पहुंचे। चौदस को लंका-दहन हुआ। पूर्णिमासी को हनूमान जी महेन्द्राचल पर लौट आए। पौष कृष्ण ७ को हनूमान ने रामचन्द्र से लंका का वृत्तान्त कहा। अष्टमी तिथि, उत्तरी फाल्गुनी नक्षत्र, विजय मुहूर्त और मध्याह्न समय में श्रीरामचन्द्र का प्रस्थान हुआ। ७ दिनों में सेना समुद्र के किनारे पहुंची। पौष शुक्ल १ से ३ तक समुद्र का उपस्थान हुआ। चौथ को विभीषण रामचन्द्र से आ मिले। सेतु बान्धने का काम दशमी से आरम्भ होकर त्रयोदशी को समाप्त हुआ। पौष की पूर्णिमा

से माघ कृष्ण २ तक ३ दिनों में सेना समुद्र पार उतरी। ८ दिन लङ्का में सेना निवास करने के पश्चात् एकादशी के दिन रावण के दूत शुक और सारन राम के पास आए। माघ कृष्ण १२ को सेना की गिनती हुई। तेरस से अमावस्या तक ३ दिनों में लङ्का में रावण की सेना की गणना हुई। माघ शुक्ल १ को अंगद दूत बनकर लंका में गया। दूज से अष्टमी तक ७ दिन राक्षसों और वानरों का घोर युद्ध हुआ। माघ शुक्ल ९ की रात्रि में मेघनाद ने रामचन्द्र और लक्ष्मण को नाग पाश से बान्धा। दशमी को गरुड़ ने नाग पाश काटा। एकादशी और द्वादशी को धूम्राक्ष और तेरस को अकम्पन राक्षस मारे गए। माघ शुक्ल १४ से फाल्गुन कृष्ण १ तक नील ने प्रहस्त को मारा। रामचन्द्र ने चौथ तक ३ दिन पर्यंत घोर युद्ध करके रावण को रण भूमि से भगा दिया। पंचमी से अष्टमी तक रावण ने कुंभकर्ण को जगाया। नौमी से चौदस तक कुंभकर्ण ने रामचन्द्र से युद्ध किया, और वह उनके हाथ से मारा गया। अमावस्या के दिन राक्षसों ने कुंभकर्ण के शोक से युद्धही नहीं किया। फाल्गुन शुक्ल १ से ४ तक इन्द्रजीत के समान ५ बड़े भारी राक्षस मारे गए। पञ्चमी से सप्तमी तक अति काय का वध हुआ। अष्टमी से द्वादशी तक बहुत राक्षसों को रामचन्द्र ने मारा। निकुंभ, कुंभ और मकराक्ष क्रम से ३ दिनों में मारे गए। चैत्र कृष्ण २ को इन्द्रजीत ने फिर जीता। औषधादि ले आने में इधर के लोगों के व्यग्र होने के कारण तीज से सप्तमी तक ५ दिन युद्ध बन्द रहा। अष्टमी से चौदस तक मेघनाद ने युद्ध किया, और वह मारा गया। अमावस्या को रावण युद्ध करने को आया। चैत्र शुक्ल १ से ५ दिनों तक रावण से युद्ध होता रहा। उसमें बहुत से राक्षस मारे गए। षष्ठी से अष्टमी तक महापार्श्वादि राक्षस मारे गए। चैत्र शुक्ल नौमी को लक्ष्मण जी को शक्ति लगी, हनूमान जी द्रोणाचल लाए। दशमी की रात्रि में युद्ध बन्द रहा। एकादशी को इन्द्र का सारथी मातली रथ लाया। द्वादशी से दूसरी चतुर्दशी पर्य्यन्त १८ दिनों में रामचन्द्र जी ने इन्द्र के रथ पर चढ़ युद्ध करके रावण को मारा।

माघ के शुक्ल पक्ष की २ से वैशाख के कृष्ण पक्ष की १४ पर्य्यन्त ८७

दिन युद्ध हुआ। बीच बीच में १८ दिन युद्ध बन्द रहा। ७२ दिन रात्रि संग्राम होता रहा। वैशाख की अमावास्या को रावण कि प्रेत क्रिया हुई। वैशाख शुक्ल १ को रामचन्द्र जी रण भूमही में रह गए। उन्होंने द्वितीया को लंका के राज्य पर विभीषण का अभिषेक किया। उसी दिन सीता जी राम चन्द्र के पास आईं। वैशाख शुक्ल ४ को श्रीरामचन्द्र पुष्पक विमान पर चढ़े और आकाश मार्ग होकर अयोध्या पुरी को लौटे। वह १४ वर्ष पूर्ण होने पर वैशाख शुक्ल ५ को भरद्वाज मुनि के आश्रम पर पहुंचे, षष्ठी को नन्दिग्राम में भरत जी से मिले और सप्तमी को अयोध्या में राजगद्दी पर बैठे। उस समय रामचन्द्र के वय का ४२ वां और जानकी के वय का ३३ वां वर्ष था।

श्रीमद्भागवत—(नवमस्कन्ध के प्रथम अध्याय से दशम अध्याय तक सूर्यवंशी राजाओं के नाम इस क्रम से लिखे गए हैं)

| | | | |
|---|---|---|---|
| ब्रह्मा | बृहदश्व | वरुण | अंशुमान |
| मरीचि | कुवलाश्व | त्रिबन्धन | दिलीप |
| कश्यप | दृढ़ाश्व | सत्यव्रत (त्रिशंकु) | भगीरथ |
| सूर्य्य | हर्यश्व | हरिश्चंद | श्रुत |
| श्राद्धदेवमनु | निकुम्भ | रोहित | नाभ |
| इक्ष्वाकु | बहुलाश्व | हरित | सिंधुद्वीप |
| विकुक्षी | कृशाश्व | चम्पा | अयुतायु |
| पुरञ्जय | प्रसेनजित् | सुदेव | ऋतुपर्ण |
| अनेना | युवनाश्व | विजय | सर्वकाम |
| पृथु | मांधाता | भरुक | सुदास |
| विश्वगंधि | पुरुकुत्स | वृक | सौदास |
| चन्द्र | त्रसदस्यु | बाहु | अश्मक |
| युवनाश्व | अनरण्य | सगर | दशरथ |
| शावस्त | हर्यश्व | असमंजस | एड़विड़ो |

| | | | |
|---|---|---|---|
| विश्वसह | चलस्थल | प्रसेनजित् | पुष्कर |
| खट्वांग | वज्रनाभ | तक्षक | अंतरिक्ष |
| दीर्घबाहु | सगुण | युत | सुतपा |
| रघु | विधृति | वृहद्बल | अमित्रजित् |
| अज | हिरण्यमेरु | वृहद्रण | वृहद्राज |
| दशरथ | पुष्प | वत्सवृद्ध | वरही |
| रामचन्द्र | ध्रुवसन्धि | प्रतिव्योम | कृतञ्जय |
| कुश | सुदर्शन | भानु | रणञ्जय |
| अतिथि | अग्निवर्ण | दिवाकर | सञ्जय |
| निषध | शीघ्र | सहदेव | शाक्य |
| नभ | मरु | वृहदश्व | शुद्धोद |
| पुण्डरीक | प्रसुश्रुत | भानुमान | लांगल |
| क्षेमधन्वा | सन्तानसंधि | प्रतिकाश्व | प्रसेनजित् |
| देवानीक | अमर्षण | सुप्रतीक | क्षुद्रक |
| अनीह | सहस्वान | मरुदेव | कनक |
| पारिजात | विश्वबाहु | सुनक्षत | सुरथ |
| | | | सुमन्त्र |

शिवपुराण—(एकादशस्कन्ध के २० वें अध्याय से २३ वें तक सूर्यवंशी राजाओं के नाम इस क्रम से लिखे गए हैं)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | वैवस्वतमनु | २८ | रोहित | ५५ | रामचन्द्र | ८२ | वृहदारण्य |
| २ | इक्ष्वाकु | २९ | हरित | ५६ | कुश | ८३ | उरुक ऋषि |
| ३ | शशाद | ३० | चम्पक | ५७ | अथिति | ८४ | वत्सवृद्ध |
| ४ | रिपुंजय | ३१ | विजय | ५८ | निपध | ८५ | प्रतिव्योम |
| ५ | कौस्तुभ | ३२ | भरुक | ५९ | पुंडरीक | ८६ | दिवाकर |
| ६ | हरिवाह | ३३ | वृक | ६० | क्षेमधन्वा | ८७ | सहदेव |
| ७ | अर्णाभ | ३४ | वाहु | ६१ | दिवानीक | ८८ | वृहदश्व |
| ८ | वशिष्ठाश्व | ३५ | सगर | ६२ | अह्निक | ८९ | भानुमान् |
| ९ | पृथु | ३६ | असमंजस | ६३ | पारिजात | ९० | प्रतिकाश्व |
| १० | चन्द्र | ३७ | अंशुमान | ६४ | वलि | ९१ | सुप्रतीक |
| ११ | युवनाश्व | ३८ | दिलीप | ६५ | अस्थल | ९२ | मरुदेव |
| १२ | शावत्स | ३९ | भगीरथ | ६६ | वज्रनाभ | ९३ | सुनक्षत |
| १३ | वृहदश्व | ४० | श्रुत | ६७ | सगुण | ९४ | पुष्कर |
| १४ | कपिल | ४१ | नाभि | ६८ | कंकनाभ | ९५ | अन्तरिक्ष |
| १५ | दृढ़ाश्व | ४२ | सिंधुदीप | ६९ | पुष्प | ९६ | सुतपा |
| १६ | हर्यश्व | ४३ | अयुतायु | ७० | ध्रुवसंधि | ९७ | अमित्रजित् |
| १७ | निकुंभ | ४४ | ऋतुपर्ण | ७१ | सुदर्शन | ९८ | वृहद्राज |
| १८ | सहताश्व | ४५ | अनुपर्ण | ७२ | अग्निवर्ण | ९९ | वरही |
| १९ | कृशाश्व | ४६ | कल्मापपाद | ७३ | शीघ्र | १०० | कृतंजय |
| २० | प्रसेनजित् | ४७ | सर्वकर्मा | ७४ | मरु | १०१ | रणञ्जय |
| २१ | युवनाश्व | ४८ | अनरण्य | ७५ | कृतसंधि | १०२ | शाक्य |
| २२ | मान्धाता | ४९ | मणिद्रुम | ७६ | अमर्पण | १०३ | शुद्धोद |
| २३ | मुचकुंद | ५० | निपध | ७७ | सहस्वान | १०४ | लांगल |
| २४ | पुरुकुत्स | ५१ | दिलीप | ७८ | विश्ववाह | १०५ | प्रसेनजित् |
| २५ | त्रय्यारुणि | ५२ | रघु | ७९ | प्रसेनजित् | १०६ | क्षुद्रक |
| २६ | त्रिशंकु | ५३ | अज | ८० | तक्षक | १०७ | रङ्कयाम |
| २७ | हरिश्चन्द्र | ५४ | दसरथ | ८१ | वृहद्बल | १०८ | सुरथ |
| | | | | | | १०९ | सुमन्त्र |

(श्रीमद्भागवत और शिवपुराण दोनों में लिखा है कि इक्ष्वाकु-वंश सुमन्त्र तक रहेगा।)

शंखस्मृति—(१४ वां अध्याय) अयोध्या का दान अनन्त फल देता है।

महाभारत—( वनपर्व्व—८४ अध्याय ) पुलस्ति बोले कि सरयू के उत्तम तीर्थ गोप्रतार (गुप्तार) को जाना चाहिए, जहां से राम अपने नौकर, सेना और वाहनों के सहित स्वर्ग को गए थे। मनुष्य उस तीर्थ में स्नान करने से सब पापों से शुद्ध होकर स्वर्ग में जाते हैं।

(सभा पर्व्व—३० वां अध्याय) भीमसेन ने अयोध्या में राजा दीर्घयज्ञ को स्वल्प युद्ध में परास्त किया। द्रोणपर्व्व (४६ वां अध्याय) कोशलराज वृहद्वल कुरुक्षेत्र के संग्राम में बड़ा पराक्रम दिखलाने के उपरांत अभिमन्यु के हाथ से मारा गया।

(शान्ति पर्व्व—२९ वां अध्याय) रामचन्द्र ने ११००० वर्ष अयोध्या में राज्य किया। (द्रोण पर्व्व—५७ अध्याय) उन्होंने अन्त में अपना राज्य ८ भागों में विभक्त करके अपने २ पुत्रों और अपने तीनों भाइयों के दो दो अर्थात् ६ पुत्रों को राज्य दे दिया, और चारो प्रकार को प्रजाओं सहित वह स्वर्ग को चले गए।

गरुड़पुराण—( पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय ) अयोध्या एक उत्तम स्थान है। (प्रेतकल्प २७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची अवन्तिका और द्वारिका ये सातों पुरियां मोक्ष देने वाली हैं।

अग्निपुराण—( १०८ वां अध्याय ) अयोध्या तीर्थ पाप नाशनेवाला और भुक्ति-मुक्ति देने वाला है।

स्कन्दपुराण—( काशीखंड—७ वां अध्याय ) अयोध्या में जाकर प्रथम सरयू में स्नान करना चाहिए। तदनन्तर वहां के तीर्थों में पितरों की तृप्ति के लिये तर्पण, पिण्डदान और ब्राह्मण-भोजन करा कर वहां पचरात्रि निवास करना उचित है।

# चौथा अध्याय।

## (अवध में) फैजाबाद, सुलतांपुर, प्रतापगढ़, नवावगंज और लखनऊ।

## फैज़ाबाद।

अयोध्या के रामघाट रेलवे स्टेशन से ६ मील पश्चिम-दक्षिण फैजाबाद का रेलवे जंक्शन है और अयोध्या से फैजाबाद को पक्की सड़क गई है। अवध प्रदेश के फैजाबाद विभाग में किस्मत और जिले का सदर स्थान (२६ अंश ४६ कला ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ११ कला ४४ विकला पूर्व देशांतर में) सरयू नदी के दहिने फैजाबाद एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फैजाबाद में फौजी छावनी और अयोध्या के सहित, जो एक म्युनिसिपलिटी में है, ७८९२१ मनुष्य थे; (४३७२० पुरुष और ३५२०१ स्त्रियां) अर्थात् ५८८८१ हिन्दू, १८८३१ मुसलमान, ११८९ कृस्तान, १७१ सिक्ख और १४९ जैन। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ३८ वां और अवध में दूसरा शहर है।

छावनी में शाही अरटिलरी का एक वैटरी, एक युरोपियन और एक देशी पैदल की रेजीमेन्टें हैं।

फैजाबाद में २ बड़े मकबरे, १ इमामबाड़ा और बहुतेरी मसजिदें हैं। शहर के पश्चिमोत्तर छावनी, सुजाउद्दौला के मकवरे से $\frac{1}{2}$ मील पश्चिमोत्तर डिविजन जेल और डाकबंगले से १ मील पश्चिमोत्तर गिर्जा है। यहां सौदागरी बहुत होती है। गेहूं और चावल बहुत बिकते हैं।

**बहू बेगम का मकबरा**-बहू बेगम अवध के नवाब सुजाउद्दौला की स्त्री थी। बहू बेगम का मकबरा अवध में सबसे उत्तम इमारत है। यह लगभग १७५ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा और १४० फीट ऊंचा चौमंजिला और गुंबजदार है। ऊपर की मंजिल में नकली कबर पर मार्बुल में बहुमूल्य पत्थरों

के जड़ाव का काम बना है। मक़बरे के शिरोभाग पर चढ़ने से देश का सुन्दर दृश्य देखने में आता है। मक़बरे के चारों ओर ऊंची दीवार के भीतर बड़ा उद्यान है, जिससे उत्तर बड़े मैदान में जगह जगह उत्तम सड़कें बनी हैं। मैदान के बगलों पर मकान और कई ऊंचे फाटक बने हुए हैं।

**शुजाउद्दौला का मक़बरा**—बहू बेगम के मक़बरे से दूर शुजाउद्दौला का मकबरा है। यह बेगम के मकबरे से छोटा है। मध्य में ३ कबर हैं; बीच में शुजाउद्दौला की, पश्चिम उसकी माता की और पूर्व उसके पुत्र मनसूर अली की। इसके चारों कोने के पास एक एक लंबा और एक एक मोरवा हौज हैं। घेरे के पश्चिम बगल में उत्तर अखीर के पास एक मसजिद और दक्षिण एक इमाम बाड़ा है।

**फ़ैज़ाबाद जिला**—इसके पूर्व गोरखपुर; दक्षिण आजमगढ़ और सुलतांपुर; पश्चिम बाराबंकी जिले और उत्तर घाघरा (सरयू) नदी है, जो गोंडा और बस्ती जिलों से इसको अलग करती है। जिले का क्षेत्रफल १६८९ वर्गमील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फैजाबाद जिले में १२१६३८७ मनुष्य थे; अर्थात् ६११२५६ पुरुष और ६०५१३१ स्त्रियां। निवासी प्रायः सब हिंदू हैं। मनुष्य संख्या के लगभग आठवें भाग मुसलमान हैं। जिले में ब्राह्मण दूसरी सम्पूर्ण जातियों से अधिक बसते हैं। इनके पश्चात चमार और अहीर, तब राजपूत और कूर्मी के नंबर हैं। इस जिले में तांडा (जनसंख्या सन् १८९१ में १९७२४), अयोध्या, जलालपुर और रुलाही कसबे हैं।

जिले में कोई पहाड़ी वा जंगल नहीं है। समुद्र के जल से औसत ३५० फीट ऊपर इसका मैदान बड़ा उपजाऊ है। प्रधान नदी सरयू जिले की उत्तरी सीमा पर ९५ मील बहती है। जिले में टोंस, मझोई इत्यादि अन्य नदियां और बहुतेरे सरोवर हैं।

**इतिहास**—फैजाबाद के पूर्व काल का इतिहास अयोध्या के इतिहास में है। १८वीं शताब्दी में फैजाबाद अवध की राजधानी हुआ। अवध का

पहला नवाब सयादत अलीखां और उसका उत्तराधिकारी सफदर जंग कभी कभी फैजाबाद में रहता था, सुजाउद्दौला फैजाबाद में सर्वदा रहने लगा। उसने सन् १७६० ई० में इसको अवध की राजधानी बनाया। उसके मरने के पश्चात् उसके पुत्र आसिफुद्दौला ने सन् १७८० में लखनऊ को राजधानी बनाया, परंतु सुजाउद्दौला की विधवा बहू बेगम फैजाबाद में रहती थी, जिसके मरने के समय सन् १८१६ ई० से शहर मुरझाने लगा।

सन् १८५७ई० के आरंभ में फैजाबाद की छावनी में २२वीं बंगाल देशी पैदल, ६वीं इर्रेगुलर अवध सवार, ७वीं बङ्गाल आरटिलरी की एक कंपनी और एक बैटरी थीं। ८वीं जून की रात में फौज बागी हुई, परंतु उन्होंने युरोपियन अफसरों को उनके लड़के और स्त्रियों के साथ भाग जाने की आज्ञा देदी। यद्यपि दूसरे रेजीमेंट के बागियों ने उनमें से कई एक पर आक्रमण किया, परंतु वे सब थोड़े बहुत क्लेश उठाने के बाद बचाव की जगह में पहुंच गए।

**रेलवे**—फैजाबाद से 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' की लाइन ३ ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रतिमील अढ़ाई पाई है।

(१) फैजाबाद से पश्चिम ओर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२४ रुदौली।

६२ बाराबंकी जंक्शन, जिसकी पूर्वोत्तर शाखा पर २१ मील बहराम घाट है।

७९ लखनऊ जंक्शन।

११३ उन्नाव।

१२५ कानपुर जंक्शन।

(२) फैजाबाद से अधिक दक्षिण, कम पूर्व-

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४ अयोध्या (रानोपाली)।

८४ जौनपुर।

१०२ फूलपुर।

१२० बनारस-छावनी।

१२३ बनारस-राजघाट।

१३० मुगलसराय जंक्शन।

(३) पूर्वोत्तर-शाखा—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

६ अयोध्या रामघाट।

# सुल्तांपुर।

शाही सड़क फैजाबाद से दक्षिण सुलतांपुर कसबे होकर इलाहाबाद गई है। इसी सड़क पर फैजाबाद से लगभग ३० मील दक्षिण, गोमती नदी के दहिने किनारे पर अवधप्रदेश के रायबरैली विभाग में जिले का सदर स्थान सुलतांपुर एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सुल्तांपुर कसबे में ९३७४ मनुष्य थे, अर्थात ६१५६ हिंदू ३१४८ मुसलमान, ५५ कृस्तान और १५ दूसरे।

वर्तमान कसबा और सिविल स्टेशन पुरानी छावनी के स्थान पर हैं। पबलिक इमारतों में जिले की कचहरियां, जेलखाना, गवर्नमेंट स्कूल, खैराती अस्पताल और गिर्जा प्रधान हैं। हाल में १० एकड़ से अधिक विस्तार में एक उत्तम बाग लगाया गया है। एक सड़क सुलतांपुर कसबे से पश्चिम राय-बरैली को गई है।

**सीताकुण्ड**—सुलतांपुर कसबे में गोमती के दहिने किनारे प्रसिद्ध सीताकुंड है। ऐसा प्रसिद्ध है कि श्रीजानकीजी ने श्रीरामचंद्र के सहित वन में जाने के समय मार्ग में इस स्थान पर स्नान किया था। ज्येष्ठ और कार्तिक महीनों में यहां स्नान का मेला होता है। १५ या २० हजार मनुष्य आते हैं। यात्रीगण गोमती नदी के सीताकुंड में स्नान करते हैं। मेले में मिठाई की बिक्री के अतिरिक्त कोई दूसरी सौदागरी नहीं होती है।

**सुलतांपुर जिला**—इसके उत्तर फैजाबाद, पूर्व जौनपुर, दक्षिण प्रतापगढ़ और पश्चिम रायबरैली जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल १७०७ वर्ग-मील है।

जिले की प्रधान नदी गोमती है, जो बाराबंकी जिले से इस जिले के पश्चिमोत्तर कोन में प्रवेश कर के जिले के मध्य होकर जौनपुर जिले में जाती है। ग्रीष्मऋतुओं में गोमती की चौड़ाई लगभग २०० फीट और गहराई बारह तेरह फीट रहती है।

इस जिले के राजापति गांव में गोमती नदी के धौतपाप घाट पर सीता-कुण्ड के मेले के समान मेले होते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १०७५३७८ मनुष्य थे, अर्थात् ५२९०८४ पुरुष और ५४६२९४ स्त्रियां । निवासी हिन्दू हैं । मनुष्य-संख्या के लगभग दशवें भाग मुसलमान हैं । हिंदुओं में ब्राह्मण दूसरी जातियों से अधिक हैं। इनके बाद चमार, अहीर और राजपूत के क्रम से नंबर है ।

**इतिहास**— ऐसा प्रसिध है कि श्रीरामचंद्र के पुत्र कुश ने गोमती के बाएं किनारे पर कुशपुर वा कुशभवनपुर कसबा बसाया, जो पीछे भरों के हस्तगत हुआ । भरों से बारहवीं शताब्दी में मुसलमानों ने ले लिया । ऐसी कहावत है कि सैयद महम्मद और सैयद अलाउद्दीन दोनों भाई बेंचने के लिये कई एक घोड़ों को लेकर कुशभवनपुर में भर प्रधानों के पास आए । भरों ने दोनों भाइयों को मार कर घोड़े छीन लिए. बादशाह अलाउद्दीन गोरी ने ऐसा समाचार पाकर भारी सेना लेकर कुशभवनपुर पर आक्रमण किया । वह एक वर्ष तक नदी के दूसरे पार घने जंगल में खीमा डाल कर महासरा कर के रहा, पश्चात् उसने छल से भरों को जीत कर कुशभवनपुर का विनाश कर के सुलतांपुर नामक नया कसबा बसाया ।

सन १८५७ के बलवे के समय सुलतांपुर छावनी की फ़ौज बागी हुई । तारीख ७ जून को युरोपियन स्त्री और लड़के इलाहाबाद भेज दिए गए । फ़ौज में देशी सवार की १ और पैदल की २ रेजीमेंट थीं जो ९ जून को बागी हुईं । उन्होंने कई एक अफसरों को मार डाला । बग़ावत दूर होने के पश्चात सुलतांपुर की छावनी अंगरेज़ी सैनाओं से दृढ़ की गई थी, परंतु सन १८६१ में वहां से फौज उठा ली गई ।

## प्रतापगढ़ ।

फैजाबाद से दक्षिण सुलतांपुर होकर शाही सड़क इलाहाबाद गई है । उसी पर सुलतांपुर कसबे से २४ मील दक्षिण, अवध प्रदेश के रायबरैली विभाग में जिले का सदर प्रतापगढ़ है, जिससे ४ मील दूर बेला में जिले की

कचहरियां हैं, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५८५१ मनुष्य थे; अर्थात् ३८७० हिंदू, १९४४ मुसलमान, ३६ क्रस्तान और १ दूसरा। यहां १ गवर्नमेंट हाईस्कूल, ४ देव मंदिर और ६ मसजिद हैं और उत्तम चीनी बनती है।

**प्रतापगढ़ जिला**—इसके उत्तर रायबरैली और सुलतांपुर जिले; पूर्व, दक्षिण और पश्चिम पश्चिमोत्तर देश में जौनपुर और इलाहाबाद जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल १४३६ वर्गमील है। गंगा पश्चिम की सीमा पर दक्षिण-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व को बहती है। गोमती पूर्व सीमा पर कई एक मील दौड़ती है। सई नदी हरदोई जिले में निकलकर रायबरैली जिले के पार होने के पश्चात प्रतापगढ़ जिले में दक्षिण-पूर्व को बहती हुई जौनपुर जिले में जाकर गोमती में मिली है। वर्षाकाल में इसमें नाव चलती है। इस जिले में निमक, सौरा और कंकड़ निकलते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय प्रतापगढ़ जिले में ९१०८६६ मनुष्य थे; अर्थात् ४४५९६६ पुरुष और ४६४९०० स्त्रियां। निवासी प्रायः सब हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या के दशवें भाग मुसलमान हैं। हिंदुओं में ब्राह्मण और अहीर अधिक हैं। इनके पश्चात कुर्मी, चमार तब राजपूत का नंबर है। जिले में बेला के अतिरिक्त ५ हजार से अधिक निवासी का कोई कसबा नहीं है।

**इतिहास**—सन् १६१७-१८ में राजा प्रतापसिंह ने प्रतापगढ़ कसबे को नियत किया, जिसका बनाया हुआ किला वर्त्तमान है। लगभग ९० वर्ष पीछे देशी गवर्नमेंट ने इसको छीन लिया था, परंतु अङ्गरेजी अधिकार होने पर अङ्गरेजी गवर्नमेंट ने पुराने मालिक के रिश्तेदार अजित सिंह के हाथ इस को बेंच दिया। किला पहिले बड़ा था, परंतु बलवे के पीछे इसके बाहर की दीवार और बगल के सब काम नष्ट कर दिए गए।

## नवाबगंज।

फैजाबाद से ६२ मील पश्चिम कुछ उत्तर रेलवे का बाराबंकी जंक्शन है,

जहांसे पूर्वोत्तर २१ मील की शाखा सरयू के दहिने किनारे वहरामघाट को गई है, जिसके सामने सरयू के दूसरे किनारे पर घाघराघाट का रेलवे स्टेशन है।

वारावंकी से लगभग १ मील दक्षिण अवध प्रदेश के लखनऊ विभाग में वारावंकी जिले का प्रधान कसवा नवावगंज है। वारावंकी और नवावगंज दोनों मिल कर जिले का सदर स्थान वनता है। कसवे से १ मील पश्चिम ऊंची भूमि पर सिविल स्टेशन और जिले की कचहरियां हैं। देशी कसवे में गवर्नमेंट अस्पताल और स्कूल हैं। सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नवावगंज में १४४३२ मनुष्य थे; अर्थात् ८८१६ हिंदू, ५२१७ मुसलमान, ३२९ जैन, ५८ क्रस्तान, ९ सिक्ख और ३ दूसरे।

नवावगंज वारावंकी जिले में प्रधान तिजारती स्थान है। इसकी प्रधान सड़क चौड़ी है, जिसके दोनों ओर सुन्दर मकान वने हैं।

**वारावंकी जिला**—इसके उत्तर और पश्चिम सीतापुर और लखनऊ जिले; दक्षिण रायवरैली और सुलतांपुर जिले; पूर्व फैजावाद जिला और पूर्वोत्तर चौका और घाघरा ( सरयू ) नदियां हैं। जिले का क्षेत्रफल १७६८ वर्गमील है। चौका नदी वहरामघाट के पास सरयू के साथ मिल गई है। कल्यानी और गोमती नदियों के वीच में वारावंकी जिले का हिस्सा अधिक उपजाऊ है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वारावंकी जिले में ११२८५९८ मनुष्य थे; अर्थात् ५७४१४२ पुरुष और ५५४४५६ स्त्रियां। निवासी अधिक हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या में पांचवें भाग मुसलमान हैं। जिले में कुर्मी और अहीर दूसरी हिंदू जातियों से अधिक हैं। इनके पश्चात क्रम से पासी, ब्राह्मण और चमार की संख्या है। जिले में नवावगंज (जनसंख्या सन १८९१ में १४४३२), रुदवली (जनसंख्या ११७६७), जेदपुर, फतहपुर, रामनगर और दरियावाद कसवे हैं।

**इतिहास**—सन १८५६ ई० में अवध के अन्य जिलों के साथ यह जिला अङ्गरेजी अधिकार में आया। सन १८५७—५८ के वलवे में इस जिले

के संपूर्ण तालुकेदार वागियों में मिले थे। सन १८५१ में जिले का सदर स्थान दरियावाद से नवावगंज में आया।

## लखनऊ

वारावंकी से १७ मील और फैजावाद से ७९ मील पश्चिम लखनऊ का स्टेशन है लखनऊ अवध प्रदेश में किस्मत और जिले का सदर स्थान और अवध की राजधानी, (२६ अंश ५१ काल ४० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ५८ कला १० विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से ४०३ फीट ऊपर, गोमती नदी के दोनों किनारों पर खास कर के दहिने एक सुंदर शहर है।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय लखनऊ और छावनी में २७३०२८ मनुष्य थे; (१४५८४८ पुरुष और १२७१८० स्त्रियां) अर्थात १६१८१६ हिंदू, १०४१९८ मुसलमान, ५७१५ कृस्तान, ७५२ जैन, ३५२ सिक्ख, ६६ पारसी ४७ बौद्ध और १ दूसरे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष मे ५ वां और अवध में पहला शहर है।

शहर के गनेसगंज के पास राजा मानसिंह की धर्मशाला, चौक से आगे वावा हजारा की एक छोटो धर्मशाला और स्टेशन से एक मील दूर पक्की सराय है (जिस में मैं टिका था) इस के अलावे लखनऊ में अन्य कई सराय हैं। शहर के उत्तर भाग में गोमती के दोनों किनारों पर पक्के घाट वने हैं। गोमती के वाएं आटा पीसने की धुंआ की कल है। गोमती के ऊपर आसिफुद्दौला का वनाया हुआ पत्थर का पुल है। लोहे के पुल से डेढ़ मील पूर्व गोमती के दहिने किनारे पर नासिरुद्दीन हैदर का वनवाया हुआ अवजर वेटरी है। वलवे के समय इसके यंत्र नुक्सान हो गए, अव इसमें वंक है। शहर से दक्षिण-पूर्व ११ या १२ वर्गमील में फौजी छावनी फैलती है। शहर और छावनी के वीच में एक नहर है। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी में २१५३० मनुष्य थे।

लखनऊ में प्रधान शिल्पकारी की इमारत, एक इमामवाड़ा, ४ मकवरे (सैयादतअली खां का, मुर्सिद जादी का, महम्मदअली शाह का और गाजी-

इदीन हैदर का ), और २ बड़े महल ( छत्रमंजिल और कैसरबाग ) हैं। इनके अतिरिक्त शाही बाग के मकान, और कसबे के अनेक मकान, मंदिर और मसजिदें हैं। पहले नवाब घराने के लोगों के अतिरिक्त लखनऊ के दूसरे लोग उमदे मकान बनाने में डरते थे। अङ्गरेजी अधिकार होने पर लखनऊ के लोगों के बहुतेरे उमदे मकान बने और चौड़ी सड़कें बनाई गई।

लखनऊ में मुंडंकार बूटेदार मखमल और कपड़ों पर रंगदार रेशमों के साथ सोने के काम बहुत बनते हैं। शीशे का काम और शाल की दस्तकारी होती है। कैनिंगरोड़ के दक्षिण अलीर के पास फतहगंज और दिग्विजयगंज; दक्षिण-पश्चिम नयादतगंज, जिसमें दूसरे देश से आए हुए कपड़े और निमक रक्खे जाते हैं और नये विक्टोरिया रोड के पास गल्ले का बाजार शाहगंज है।

लखनऊ से प्रायः ४ मील दूर अलीगंज में महावीरजी का प्रसिद्ध मंदिर है। वहां जेठ के प्रथम मंगलवार को महावीरजी के दर्शन का बड़ा मेला होता है। इस प्रांत में ऐसा मेला नहीं लगता है। उस मेले में दूर दूर से आए हुए यात्रियों की बड़ी भीड़ होती है। बहुतेरे लोग घर से साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुए मंदिर तक जाते हैं। लखनऊ में सीतला काली के दर्शन का मेला चैत्र में होता है।

मच्छीभवन—रेजीडेंसी के पश्चिमोत्तर मच्छीभवन किला है, जिसको २ शताब्दी पहले लखनऊ के शाहजादे शेखों ने बनाया था। उनकी इमारत के अब केवल मट्टी के गोलाकार कई एक पाए सड़क के दहिने बचे हैं। सन १८५७ ई० के बलवे के समय तारीख ३० जून की रात को रेजीडेंसी के महासरा के आरंभ में यह उड़ा दिया गया था, परंतु पीछे सुधारा और फैलाया गया।

मच्छीभवन की दीवार के भीतर लक्ष्मणटीला नामक ऊंची भूमि है, जिस के सिरे पर एक मसजिद है। कहा जाता है कि श्रीरामचंद्र के भ्राता लखन अर्थात लक्ष्मण ने यहां गांव बसाया था, उन्हीं के नाम से उस गांव का नाम लखनऊ पड़ा। शहर के लोग पहले इसी जगह बसे थे। १७ वीं शताब्दी में औरंगजेब ने यहांके पवित्र स्थान को तोड़ कर इसी स्थान पर एक मसजिद बनादी।

**इमामबाड़ा**—मच्छीभवन के निकट लखनऊ में शिल्पकारी में सबसे उत्तम इमारत एक सुंदर इमामबाड़ा है। बड़े आंगन के उत्तर बगल पर एक सुंदर मेहरावी फाटक, पूर्व बगल पर बड़ी बावली, पश्चिम बगल पर एक बड़ी मसजिद, जिसमें सन १२५० हिजरी (१८६४ई०) लिखी हुई है, और दक्षिण बगल पर १६३ फीट लंबा और ५३ फीट चौड़ा इमामबाड़ा है। कई सीढ़ियों के ऊपर खंभों की ३ पंक्तियां हैं। इमामबाड़े में उत्तम ताजिया रक्खा हुआ है। अवध के नवाब आसिफुद्दौला ने सन १७८४ ई० के अकाल के समय, दीन दुखियों के पालन के लिये, इमामबाड़े को बनवाया, जो सन १७१७ ई० में मरा और इमामबाड़े के कमरे में, जिसकी छत्त संवारी हुई है, दफ़न किया गया।

**रेजीडेंसी**—यह बेगम की कोठी के पश्चिमोत्तर लखनऊ की सबसे उत्तम इमारतों में से एक है। इसमें नीचे तहखाना है, जिसमें सन १८५७ के बलवे के समय ३२वीं पल्टन की स्त्रियां रहती थीं। रेजीडेंसी में ५५ फ़ीट ऊंचा एक टापर है, जिसके नीचे कबरगाह फैला हुआ है, जिसमें सन १८५७ के बलवे में मरे हुए २००० पुरुष और स्त्रियां गाड़ी गई हैं। रेजीडेंसी के अंदर बेलीगार्ड, बरक, अस्पताल आदि हैं।

**महम्मदअली शाह का मक़बरा**—इमामबाड़े से $\frac{१}{२}$ मील पश्चिम उससे छोटा यह मक़बरा है, जिसको अवध के नवाब महम्मदअली शाह ने, सन १८३७ ई० में बनवाया। वह सन १८४४ में इसमें दफ़न किया गया। इमामबाड़ा झाड़, बैठकी, आईने इत्यादि सामान से सजा हुआ है। इसमें चांदी से जड़ा हुआ बादशाह का तख्त, उसकी स्त्री की बैठक और एक सुन्दर ताजिया रक्खा हुआ है। बड़े आंगन में फूल के पौधे लगे हैं और पत्थर की अनेक सड़कें बनी हैं। आंगन के मध्य में एक लंबा हौज़ और उत्तर बग़ल पर एक बड़ा फाटक है।

**केसरबाग**—केसरबाग की इमारत विस्तार में बहुत बड़ी है। इसको अवध के पिछले नवाब वाजिदअली शाह ने सन १८४८ से १८५५ ई० तक, लगभग ८०००००० रुपए के खर्च से बनवाया। अवजरवेटरी के आगे के मैदान

की ओर इसके पूर्वोत्तर का फाटक है, जिसके निकट दूसरे सयादत अलीखां की कवर है। केसरवाग के बड़े आंगन होकर चीनीवाग के आर पार हजरतवाग को सड़क गई है। दहिनी ओर चांदी वाली वारहदरी (जिसमें पहले चांदी लगी थी) ख़ास मक़ाम और वादशाह-मंजिल हैं, जो पहले नवाव के ख़ास रहने का स्थान था। वाएं चौलक्खीमहल है, जिसको नवाव के हजाम अजिमुल्ला खां ने वनाकर ४००००० रुपए पर नवाव के हाथ वेच दिया। यहां नवाव की वेगम और प्रधान रखेलिनियां रहती थीं। पूर्व लक्खी फाटक है, जिससे खास केसरवाग़ के मैदान में जाना होता है, जिसके चारो ओर इमारतें हैं, जिनमें महल की स्त्रियां रहती थीं।

**मोतीमहल**—इसमें ३ इमारतें हैं। घेरे के उत्तर सयादतअलीखां का वनवाया हुआ ख़ास मोतीमहल है।

**शाह नजफ़**—मोती महल से ३५० गज़ पूर्व और गोमती नदी के दहिने किनारे से १७५ गज़ दक्षिण शाह नजफ़ नामक इमारत है, जिसको अवध के नवाव ग़ाजिउद्दीन हैदर ने सन १८१४ ई० में वनवाया, जिसमें उसकी क़वर है। इमारत के भीतर ताजिए और भिन्न भिन्न नवावों और उनकी स्त्रियों को छोटी छोटी तसवीरें हैं। मोतीमहल के पीछे ख़ुरशिद मंज़िल नामक एक सादा मकान है, जो अव लड़कियों का स्कूल वना है।

**सिकंदरा वाग**—शाह नजफ़ से $\frac{1}{2}$ मील पूर्व कुछ दक्षिण, १२० गज लम्बा और इतनाही चौड़ा ऊंची दीवार से घेरा हुआ सिकन्दरा वाग़ है, जिसको वाजिदअली ने सिकन्दर-महल नामक अपनी स्त्री के लिए वनवाया। वग़ावत के समय सिपाहियों का एक दल इसमें छिपा था। वाग़ की दीवार में तोपों से दरार होगई हैं। अव इसमें वागवानी स्कूल है, जिसमें वाग़वानी विद्या सिखलाई जाती है।

**अजायव घर**—यह दो मंजिला मकान है। नीचे के मकान में पत्थर की पुरानी मूर्तियां और पत्थर पर खोदे हुए वहुतेरे लेख और ऊपर के मकान

में विविध प्रकार के मरे हुए पशु पक्षी इत्यादि जानवर और उनकी हड्डियां, धातु, पत्थर और बिसाती की अनेक प्रकार की चीजें, जंगली मनुष्यों की मूर्तियां, अनेक प्रकार के हथियार और कपड़े हैं। दो लड़कों की लाश एकही में है, इनके सिर दो तरफ और चूतड़ मिले हुए हैं और भैंस के एक बच्चे के एकही धड़ के ऊपर दो सिर अलग अलग हैं, दोनों सिर में कान नाक और आंख दो दो हैं।

**विंगफील्ड पार्क**—विंगफील्ड कमिश्नर के नाम से इस पार्क का यह नाम है। दिलकुशा के पश्चिम ८० एकड़ भूमि और फूलबाग है। बाग में उजले मार्बुल के बहुतेरे सायबान और प्रतिमा और मध्य में एक बंगला है।

**आलमबाग**—'अवध रुहेल खण्ड रेलवे स्टेशन' के १ $\frac{१}{४}$ मील दक्षिण-पश्चिम, ५०० वर्ग गज में, दीवार से घेरा हुआ एक बाग है; जिसको अवध के नवाब वाजिदअली शाह ने अपनी एक स्त्री के रहने के लिये बनवाया था।

**लखनऊ जिला**—इस जिले के उत्तर हरदोई और सीतापुर जिले; पूर्व बाराबंकी; दक्षिण रायबरैली और पश्चिम उन्नाव जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल ९८९ वर्गमील है। जिले में गोमती और सई प्रधान नदियां हैं। गोमती उत्तर से जिले में प्रवेश करके लखनऊ शहर होकर पूर्व बाराबंकी जिले में गई है, और सई नदी गोमती की समानांतर रेखा में जिले की दक्षिण-पश्चिम सीमा पर दौड़ती है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय लखनऊ जिले में ७७३५४० मनुष्य थे; अर्थात् ४०६७७३ पुरुष और ३६६७६७ स्त्रियां।

जिले में हिंदू बहुत हैं। मुसलमान, मनुष्य-संख्या के चौथाई भाग से कम हैं। हिंदुओं में अहीर, पासी और चमार अधिक हैं, इनके पश्चात् लोधी, और ब्राह्मण जातियों के नंबर हैं। जिले में ४ कसबे हैं, लखनऊ, काकोरी, मलीहाबाद और अमेठी।

**अवध प्रदेश**—सन् १८७७ ई० में अवध की चीफ कमिश्नरी तोड़ कर पश्चिमोत्तर देश में मिला दी गई। दोनों के मुख्य हाकिम को पश्चिमोत्तर देश

का लेफ्टिनंट गवर्नर और अवध का चीफ कमिश्नर कहते हैं। वह कुछ दिनों तक इलाहावाद में और कुछ दिन लखनऊ में रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अवध प्रदेश का क्षेत्रफल २४२१७ वर्गमील और मनुष्य-संख्या १२६५०८३१ थी; जिनमें ११०१६२०१ हिन्दू, १६२०१३० मुसलमान, १३१२ कृस्तान, २४६७ जैन, १६१३ सिक्ख, १०६ बौद्ध, ७४ पारसी, २५ यहूदी और १५ दूसरे थे।

अवध प्रदेश में १२ जिले इस प्रकार हैं। लखनऊ विभाग में,—उन्नाव, वारावंकी और लखनऊ; सीतापुर विभाग में,—सीतापुर, हरदोई और खेरी; फैजावाद विभाग में,—फैजावाद, गोंडा और वहराइच; रायवरैली विभाग में,—रायवरैली, सुलतांपुर और प्रतापगढ़।

अवध के २० कसवों में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

| नं० | कसवा | जिला | जन-संख्या | नं० | कसवा | जिला | जन-संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | लखनऊ | लखनऊ | २७३०२८ | ११ | नवावगंज | वारावंकी | १४४३२ |
| २ | फैजावाद | फैजावाद | ७८९२१ | १२ | खैरावाद | सीतापुर | १३७७३ |
| ३ | वहराइच | वहराइच | २५०४६ | १३ | उन्नाव | उन्नाव | १२८३१ |
| ४ | सीतापुर | सीतापुर | २१३८० | १४ | जैस | रायवरैली | ११९२६ |
| ५ | शाहावाद | हरदोई | २०१५३ | १५ | मालावां | हरदोई | ११८९४ |
| ६ | टांडा | फैजावाद | १९७२४ | १६ | रुदवली | वारावंकी | ११७६७ |
| ७ | रायवरैरी | रायवरैली | १८७१८ | १७ | विलग्राम | हरदोई | ११४५७ |
| ८ | गोंडा | गोंडा | १७४२३ | १८ | लाहरपुर | सीतापुर | ११४५२ |
| ९ | सण्डीला | हरदोई | १६८१३ | १९ | हरदोई | हरदोई | १११५२ |
| १० | वलरामपुर | गोंडा | १४८४९ | २० | पुरवा | उन्नाव | १०४५३ |

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि अयोध्या के राजा रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण ने जागीर में एक वड़ा देश पाकर लक्ष्मणपुर नामक एक नगर वसाया था। इस स्थान पर लक्ष्मण टीले के चारो ओर एक छोटा गांव था।

औरंगजेब ने लक्ष्मण टीले पवित्र स्थान पर मसजिद बनवा दी, जो अब मच्छी-भवन किले के भीतर है। लक्ष्मणपुर का अपभ्रंश लखनऊ है। अकबर सयादत अलीखां और असिफुद्दौला इन तीनों के अधिकार के समय लखनउ शहर की बढ़ती हुई।

दिल्ली के राज्य की घटती के समय, सन् १७२१ ई० में सयादत अलीखां नामक एक ईरानी अवध का सूबेदार हुआ, जिसने सन १७३२ में अवध को दिल्ली से अलग कर लिया। वह सन १७३९ ई० में जहर खाकर मर गया। सयादत अलीखां का दामाद और उत्तराधिकारी सफदर जंग ( सन १७४३ ) वजीर होकर दिल्ली में रहता था। उसने शहर से ३ मील दक्षिण जलालाबाद के किले को बनवाया और लक्ष्मणपुर के पुराने किले को भी फिर से सुधारा, जो उस समय से मच्छीभवन कहाने लगा। सन १७५३ में सफदर जंग का पुत्र सुजाउद्दौला उत्तराधिकारी हुआ, जो बक्सर की लड़ाई के बाद से फैजाबाद में रहता था। सन १७७५ ई० में सुजाउद्दौला के मरने पर उस का पुत्र आसिफुद्दौला अवध का नवाब हुआ, जो फैजाबाद से आकर लखनऊ में रहने लगा। उसने मच्छीभवन के निकट रूमी दरवाजा नामक एक उत्तम फाटक और सन १७८४ के बड़े अकाल में भूखे लोगों की रक्षा के लिये लखनऊ में प्रसिद्ध इमामबाड़ा बनवाया। शहर के बाहर नदी के पार बीजापुर का महल भी उसीका बनवाया हुआ है। सन् १७९७ में आसिफुद्दौला के मरने पर वजीरअली लखनऊ का नवाब बना, परंतु जब सन १७९८ में अङ्गरेजी गवर्नमेंट को जान पड़ा कि यह असिफुद्दौला का असली पुत्र नहीं है, तब गवर्नमेंट ने वजीरअली को गद्दी से उतार कर, आसिफुद्दौला के सौतेले भाई सयादतअलीखां को गद्दी पर बैठाया। लखनऊ में १०००० फौज रहने के लिये ७६००००० रुपए वार्षिक कर लेने का उससे संधिपत्र लिखवा लिया और इलाहाबाद के किले को भी उससे ले लिया। गवर्नमेंट ने सन १८०३ ई० में इस रुपये के बदले में मुरादाबाद, बरैली, इटावा, फर्रुखाबाद, इलाहाबाद और कानपुर लेकर अपने राज्य में मिला लिया और लखनऊ में एक रेजीडेंट रख दिया। सन १८१४ में सयादतअलीखां के मरने पर उसके पुत्र गाजीउद्दीन-

हदर ने सरकार की आज्ञा से बादशाह की पदवी प्राप्त की। सन १८२७ में गाजिउद्दीन हैदर के मरने पर उसके पुत्र नासिरुद्दीन हैदर; सन १८३७ में नासिरुद्दीन के मरने पर सयादतअलीखां का छोटा पुत्र महम्मदअली; सन १८४४ में महम्मद अली के मरने पर उसका पुत्र अमजदअली शाह और सन १८४७ में अमजदअली के मरने पर उसका पुत्र वाजिदअलीशाह लखनऊ की गद्दी पर बैठा, जिसकी ३६० रखेलिनियां थीं। इसके राज्य के समय लाखों आदमियों पर बड़ा अन्याय होने लगा, इसलिये अंगरेजी सरकार ने सन १८५६ ई० में सूबे अवध को अंगरेजी राज्य में मिला लिया और वाजिदअलीशाह को १२००००० रुपये वार्षिक पेंशन नियत करदी। वह कलकत्ते के पास मटियाबुर्ज में रहने लगा, जो सन १८८७ में मर गया।

सन १८५७ के बलवे के समय, तारीख़ ७ मई को रेजीडेंसी से ४$\frac{1}{2}$ मील पर, मूसाबाग महल के निकट, ७ वें अवध इर्रेगुलर पैदल ने बलवा किया। ४ था इर्रेगुलर घोड़सवारों का कमांडर खतरे की खबर मिलने पर अपनी सेना के साथ पड़ोस में शीघ्र पहुंच गया। उसके पीछे अवध का चीफ़ कमिश्नर सहेनरी लारेंस युरोपियन और देशी सेनाओं के साथ जब पहुंचा, तब बागी लोग भागे। उनमें से कई एक कैदी बनाए गए और दूसरों ने अपने हथियारों को देदिया। चीफ़ कमिशनर ने कई दिन पश्चात छावनी के रेजीडेंसी में दरबार किया, २ देशी अफ़सर, जिन्होंने बलवे के इरादे की खबर दी थी, तरकी किए गए। कई एक सप्ताह तक शहर स्थिर रहा। १७ वीं मई को ३२ वें पैदल का एक भाग तोपों के साथ छावनी से रेजीडेंसी में लाया गया, उसके साथ युरोपियन स्त्री और लड़के बहुत आए। खजाने में ६०००००० रुपए से अधिक थे। देशी गार्ड के स्थान पर युरोपियन गार्ड नियत किया गया। तारीख़ ३० वीं मई को छावनी में बलवा आरंभ हुआ और तुरतही सर्वत्र फैल गया। २ अंगरेजी अफ़सर मारे गए। बागियों ने आरटिलरी की भूमि के निकट चीफ कमिश्नर पर आक्रमण किया, परंतु वे भगाए गए और उनमें से बहुतेरे मारे गए। ३१वीं मई को शहर में अपने मकान पर एक अंगरेज मारा गया और जंगी आईन का इश्तहार दिया गया ११ जून को फौजी पुलिस के घोड़सवार

बागी हुए और पैदल उन्हीं के समान होगए, परंतु एक सूबेदार, एक जमादार ६ हौलदार और २६ सिपाही जेलखाने की रक्षा करते रहे। उस समय बागियों की बड़ी सेना लखनऊ की ओर आरही थी। तारीख ३० जून को सर हेनरी लारेंस उनको भगाने के लिये मिली हुई छोटी फौज के साथ चला, परंतु चंद तोपें और ११९ अंगरेजी सिपाही खो कर परास्त हुआ। बागियो ने रेजीडेंसी का, जो मोरचाबंदी की गई थी, महासरा किया। तारीख २ जुलाई को चीफ कमिश्नर सर हेनरी लारेंस अपने कमरे में कौच पर आराम करता हुआ घायल हुआ और चीफ कमिश्नरी का आफिस मेजर बेंक्स और प्रधान फौजी कमांडर कर्नल इंगलिस को सौंप कर तारीख ४ थी जुलाई को मरगया। हिफाजत के काम करने वाले कूली भागगए और बहुतेरे नौकर उनके साथ चले गए। रेजीडेंसी में लगभग १००० आदमी पुरुष, स्त्री और लड़के रह सकते थे। सर हेनरी लारेंस के घायल होने के दिन बागियों ने बेली गारद के फाटक पर हमला किया। प्रतिदिन औसत १५ आदमी से २० आदमी तक मरने लगे। तारीख ८वीं को लगभग ४० बागी मारे गए। अंगरेजों की ओर ३ आदमी घायल हुए। तारीख १०वीं को जब बागियों की तोप का सामान चुकगया, तब वे लोग लकड़ी के टुकड़े, तांबे के सींकचे लोहे और बैल के सींग तोपों में भर कर फाएर करने लगे। बागी लोग बराबर हमले करते रहे। दोनों ओर के बहुतेरे लोग मारे गए। तारीख २५वीं सितंबर को सहायता के लिये उटराम और हेवलाक के आधीन अंगरेजी सेना आई। तारीख १७वीं नवंबर को सर कालिन केंमल लड़ भिड़ कर उटराम और हेवलाक से आमिले। उसके आने पर अंगरेजी सेना को घेरे से छुटकारा मिला। ४६७ अंगरेजी आदमी हत और आहत हुए थे, जिनमें १० अफसर मरे और ३३ घायल हुए थे। उस दिन शाम को सर कालिन ने बीमार और घायल स्त्री और लड़कों को रेजीडेंसी से दिलकस को हटाने का हुक्म दिया, जो २५वीं को तामील हुआ। उसी दिन जनरल हेवलाक मरगया। उसके पीछे सरकारी सेना जहां, उनकी अधिक आवश्यकता थी, भेजी गई। सन १८५८ ई० के मार्च तक लखनऊ को अंगरेजों ने पक्की तौर से नहीं लिया।

रेलवे—लखनऊ रेलवे का केंद्र है। यहांसे रेलवे लाइन ५ ओर गई है।

(१) लखनऊ से दक्षिण-पूर्व—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४९ रायबरेली।

(२) लखनऊ से उत्तर, कुछ पश्चिम 'रुहेलखंड कमाऊं रेलवे' जिसके तीसरे दरजे का महसूल प्रति मील २ पाई है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

५१ खैराबाद।

५५ सीतापुर।

८० खेरी, जिससे आगे लाइन पश्चिमोत्तर घूमी है।

८३ लखीमपुर।

१६३ पीली भीत, जिससे आगे लाइन दक्षिण-पश्चिम घूमी है।

१७१ जहानाबाद।

१८७ भोजपुरा जंक्शन।

भोजपुरा से दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१० बरैली शहर।

१२ बरैली जंक्शन।

भोजपुरा से उत्तर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

५० हलद्वानी।

५४ काठगोदाम।

(३) लखनऊ से पश्चिमोत्तर 'अवध रुहेलखंड रेलवे' जिसके तीसरे दरजे का महसूल प्रति मील ढाई पाई है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१५ मलीहाबाद।

३१ संडीला।

४९ बघौली।

६४ हरदोई।

१०२ शाहजहांपुर।

११४ तिलहर।

१२४ फतहगंज।

१३४ फरीदपुर।

१४६ बरैली जंक्शन।

१९० चंदौसी जंक्शन, जिसके दक्षिण-पश्चिम की लाइन पर ३१ मील राजघाट, ४३ मील अंतरौली रोड और ६१ मील अलीगढ़ जंक्शन है।

२०२ मुरादाबाद।

२४० धामपुर।

२५० नगीना।

२६४ नजीबाबाद।

२७९ लक्सर जंक्शन, जिसको पूर्वोत्तर शाखा पर १६ मील हरिद्वार है।
२९६ लंधोरा।
३०१ रुड़की।
३२२ सहारनपुर जंक्शन।

(४) दक्षिण-पश्चिम 'अवध रुहेलखंड रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३४ उन्नाव।
४५ कानपुर गंगा ब्रेंच।
४६ कानपुर 'इष्टइन्डियन रेलवे' से जंक्शन।

(५) लखनऊ से दक्षिण-पूर्व की ओर 'अवध रुहेलखंड रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१७ बाराबंकी जंक्शन, जिसकी पूर्वोत्तर-शाखा पर २१ मील बहरामघाट है।
७९ फैजाबाद जंक्शन, जिस की पूर्वोत्तर-शाखा पर ६ मील अयोध्या का रामघाट स्टेशन है।
८३ अयोध्या (रानोपाली)।
१६३ जौनपुर।
१८१ फूलपुर।
१९९ बनारस छावनी।
२०२ बनारस राजघाट।
२०९ मुगलसराय जंक्शन।

# पांचवां अध्याय।

## ( अवध में ) रायबरैली, उन्नाव, खैराबाद, सीतापुर, लाहरपुर, खीरी, लखीमपुर और गोला गोकर्णनाथ।

## रायबरैली

लखनऊ से ४९ मील दक्षिण-पूर्व रायबरैली का रेलवे स्टेशन है। रायबरैली अवध प्रदेश के एक किस्मत और जिले का सदर स्थान ( २६ अंश १३ कला ५० विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश १६ कला २५ विकला पूर्व देशांतर में ) सई नदी के किनारे पर एक कसबा है।

सन १८९१ को मनुष्य-गणना के समय रायबरैली में १८७९८ मनुष्य थे, अर्थात् ११३२१ हिंदू, ७२७५ मुसलमान, ११५ कृस्तान, ८५ सिक्ख और २ जैन।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस कसबे में ४५७ ईंटे के और १८९९ दूसरे मकान थे।

रायबरैली में इब्राहिम सार्की का बनवाया हुआ बड़े बड़े ईंटों से बना हुआ किला है, जिसके मध्य में १०८ गज के घेरे में हीन दशा में एक बड़ी बावली है, जिसमें पानी के सतह में कमरे बने हैं। किले के फाटक के बगल में 'मखदूम सैयद जाफरी' नामक फकीर की कबर है। दूसरी पुरानी इमारतें ये हैं, खूबसूरतमहल, औरंगजेब के समय के गवर्नर नवाब जहांखां का मकबरा और ४ मसजिद। सई नदी के ऊपर सन १८६४ ई० का बना हुआ एक सुंदर पुल है। मामूली गवर्नमेंट कचहरियां और दूसरी इमारतों के अतिरिक्त रायबरैली में दो तीन स्कूल, एक सराय और एक खैराती अस्पताल है।

**रायबरैली जिला**—इसके पूर्व सुलतांपुर; दक्षिण प्रतापगढ़; पश्चिम उन्नाव और उत्तर लखनऊ जिले, और दक्षिण-पश्चिम गंगा नदी है, जो

पश्चिमोत्तर देश के फतहपुर जिले से इसको अलग करती है। जिले का क्षेत्रफल १७३८ वर्गमील है।

जिले की प्रधान नदियां गंगा और सई हैं। सई जिले के मध्य होकर बहती है, वर्षाकाल में इस में नाव चलती है। जिले में मुँगताल नामक झील १५०० एकड़ में फैली है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रायबरैली जिले में १०३५२०५ मनुष्य थे; अर्थात् ५११९८४ पुरुष और ५२३२२१ स्त्रियां।

निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या के लगभग बारहवें भाग मुसलमान हैं। हिंदुओं में ब्राह्मण और अहीर बहुत हैं। इन के पश्चात क्रम से पासी, चमार और राजपूत के नंबर हैं। इस जिले में ३ कसबे हैं,—रायबरैली (जन-संख्या सन १८९१ में १८७३८), जैस (जन-संख्या ११९२६) और डालमऊ।

इतिहास– भर लोगों ने रायबरैली कसबे को बसाया। इसलिये यह भरौली कहलाता था। पीछे भरौली का अपभ्रंश बरैली होगया। कसबे के निकट के राही नामक गांव के नाम का अपभ्रंश राय नाम उस नाम के पहले जुड़ कर रायबरैली कहलाने लगा। सन ई० की १५ वीं शताब्दी के आरंभ में जौनपुर के इब्राहिम सार्की ने यहांसे भरों को निकाल बाहर किया। कसबा मुसलमानों के आधीन हुआ।

## उन्नाव

लखनऊ से ३४ मील दक्षिण-पश्चिम और कानपुर के रेलवे जंकशन से १२ मील पूर्वोत्तर, उन्नाव का रेलवे स्टेशन है। अवध प्रदेश के लखनऊ विभाग में जिले का सदर स्थान उन्नाव एक कसबा है। एक सड़क लखनऊ से उन्नाव होकर कानपुर गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उन्नाव में १२८३१ मनुष्य थे; अर्थात् ८२२८ हिन्दू ४५०३ मुसलमान, ७९ कृस्तान और २१ सिक्ख।

उन्नाव उन्नति करती हुई मशहूर जगह है। इसमें नित्य बाजार लगता है। १४ देवमंदिर और १० मसजिदें बनी हुई हैं और सिविल कचहरियां आदि सरकारी इमारतें हैं।

**उन्नाव जिला**— इसके उत्तर हरदोई; पूर्व लखनऊ और दक्षिण-पूर्व रायबरैली जिला और पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम गंगा नदी है. जिसके बाद पश्चिमोत्तर देश में फतहपुर और कानपुर जिले हैं। उन्नाव जिले का क्षेत्रफल१७४६ वर्गमोल है। सई नदी हरदोई जिले में निकसकर उन्नाव जिले के बांगरमऊ परगने में प्रवेश करती है और रामपुर के निकट इस जिले को छोड़ कर रायबरैली जिले में जाती है। वर्षाकाल के अतिरिक्त नदी में हेल जाने योग्य पानी रहता है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उन्नाव जिले में ९४९०१३ मनुष्य थे; अर्थात ४८५८५० पुरुष और ४६३१६३ स्त्रियां। निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या के तेरहवें भाग मुसलमान हैं। हिंदुओं में ब्राह्मण सब जातियों से अधिक हैं। इनके पश्चात चमार, अहीर. लोधी, राजपूत और पासी के क्रम से नंबर पड़ते हैं। जिले में ७ कसबे हैं, उन्नाव ( जन-संख्या सन १८९१ में २८३१ ), पुरवा ( जन-संख्या १०४५३ ), मुरांवां, सफीरपुर बांगरमऊ, मोहन और कुरसत।

**इतिहास**— लगभग ११०० वर्ष हुए कि एक फौजी अफसर गोडासिंह नामक चौहान राजपूत ने जंगल को साफ करके एक कसबा बसाया और उसका नाम सरायगोडो रक्खा, परंतु तुरतही पीछे उसने उस जगह को छोड़ दिया। वह जगह कन्नोज के चंद्रवंशी राजा अजयपाल के हाथ में आई। खांडोसिंह गवर्नर बनाया गया। उसका लेफ्टिनेंट उनवंतसिंह नामक बिसेन राजपूत उसको मार कर स्वाधीन बन गया। उसने वहां एक किला बनाया और कसबे का नाम उन्नाव रक्खा। लगभग १४५० ई० में उनवंतसिंह के वंशज राजा जगदेवसिंह का पुत्र राजा उमरावतसिंह एक पक्षपाती हिंदू था। वह मुसलमानों को अजान की आवाज़ नहीं करने देता था। मुसलमानों ने एक तवाजे के समय धोखे से किले में प्रवेश कर के राजा को मार कर उसकी मिलकियत लेली, जिनके मुखिया का वंशधर वर्तमान तालुकेदार है।

## खैराबाद ।

लखनऊ से ५१ मील उत्तर कुछ पश्चिम खैराबाद का रेल्वे स्टेशन है । खैराबाद सीतापुर से ४ मील दक्षिण सीतापुर जिले में एक प्रसिद्ध कसबा है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय खैराबाद में १३७७३ मनुष्य थे; अर्थात् ७६३९ मुसलमान, ६१२१ हिंदू, १२ कृस्तान, और १ जैन ।

खैराबाद में लगभग ३० देवमन्दिर, ४० मसजिद, कई एक मुसलमानी पवित्र स्थान, स्कूल, पुलिस स्टेशन, सराय इत्यादि हैं । नित्य बाजार लगता है ।

माघ मास के मेले में लगभग ६०००० मनुष्य आते हैं । मेला १० दिन रहता है । दशहरे के मेले में लगभग १५,००० मनुष्य आते हैं ।

इतिहास—कहा जाता है कि खैरा पासी ने इसको बसाया । ग्यारहवीं शताब्दी में एक कायस्थ ने इस पर अधिकार किया । पीछे इसका हिस्सा मुसलमानों को दान मिला । बाबर और अकबर के राज्य के समय इसमें मुसलमान बहुत बढ़े । सन १८१० में अवध के नवाब ने उस दान की भूमि को छीन लिया ।

## सीतापुर ।

खैराबाद से ४ मील (लखनऊ से ५५ मील) उत्तर कुछ पश्चिम सीतापुर का रेल्वे स्टेशन है । सीतापुर अवध प्रदेश में किस्मत और जिले का सदर स्थान (२७ अंश ३४ कला ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ४२ कला ५५ विकला पूर्व देशान्तर में) एक छोटी नदी के किनारे पर एक कसबा है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय थामसनगंज और छावनी सहित सीतापुर में २१३८० मनुष्य थे, अर्थात् १३२५० हिंदू, ७३८४ मुसलमान, ६७१ कृस्तान ४१ सिक्ख, २२ जैन, ३ पारसी और १ बौद्ध । मनुष्य-गणना के अनुसार यह अवध में चौथा कसबा है ।

**सीतापुर जिला**—इसके उत्तर खीरी जिला, पूर्व घाघरा नदी, जो बहराइच जिले से इस जिले को अलग करती है; दक्षिण और पश्चिम गोमती नदी, जो बाराबंकी, लखनऊ और हरदोई,जिलों से इसको जुदा करती हैं। जिले का क्षेत्रफल २२५१ वर्गमील है।

घाघरा नदी सीतापुर जिले की पूर्वी सीमापर बहती है और चौका नदी इससे ८ मील पश्चिम इसके करीबन समानांतर रेखा में दौड़ती है और बाराबंकी जिले में बहरामघाट के निकट घाघरा (सरयू) में मिल गई है। जिले के दक्षिण और पश्चिम की सीमा पर गोमती बहती है। चौका और गोमती सूखी ऋतुओं में हलने योग्य हो जाती हैं। सीतापुर जिले के जंगलों से गोंद बहुत निकाले जाते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सीतापुर जिले में १०७३४४५ मनुष्य थे, अर्थात् ५६६१३५ पुरुष और ५०७३१० स्त्रियां। निवासी बहुत हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या के सातवें भाग मुसलमान हैं। जिले में चमार सब जातियों से अधिक हैं। इनके पश्चात्, क्रम से ब्राह्मण, पासी, अहीर, कुर्मी तब लोधा, राजपूत और काछी के नंबर हैं। जिले में ६ कसबे हैं; सीतापुर (आलमनगर, थामसनगंज और छावनी सहित जनसंख्या २१३८०), खैराबाद (मनुष्य-संख्या १३७७३), लाहरपुर (जनसंख्या ११४५२), बिसवन, महम्मदाबाद,और पैंतापुर।

**इतिहास**—सन १८५७ ई० की तीसरी जून को सीतापुर की फौज बागी हुई। छावनी में ३ रेजीमेंट देशी पैदल के और १ रेजीमेंट फौजी पुलिस के थे। बलवाइयों ने अपने बहुतेरे अफसरों को मारडाला। अन्त में भागने वाले बहुतेरे युरोपियन लखनऊ में पहुंच गए। सन १८५८ की तारीख १३ अपरैल को सरकारी सेना ने 'बिसवन' के निकट बागियों को परास्त किया। वर्ष के अन्त से पहिले अङ्गरेजी सिलसिला पूर्णरीति से कायम होगया, और कचहरियां और आफिस खुल गए। सन १८५९ में मितवली का राजा लोनसिंह बागी होने के अपराध में निकाल दिया गया और उसकी मिलकियत जब्त करली गई।

## लाहरपुर।

सीतापुर कसवे से १७ मील उत्तर, सीतापुर जिले के लाहरपुर परगने में लाहरपुर एक कसवा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय लाहरपुर में ११४५२ मनुष्य थे; अर्थात् ६२४५ मुसलमान, ५१९४ हिन्दू, और १३ जैन।

लाहरपुर अकवर के खजानची प्रसिद्ध राजा टोडरमल की जन्मभूमि है। कसवे में सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय १०८ पक्के मकान और १५९० मट्टी की झोंपड़ियां थीं। लाहरपुर में १ सराय, ४ देवमन्दिर, २ सिक्खमन्दिर, लगभग ३० मसजिदें, ४ मकवरे, पुलिस स्टेशन, पोस्टआफिस और स्कूल हैं। इसमें नित्य का वाजार है, कोई प्रसिद्ध दस्तकारी नहीं होती। रविउस्सानी के महीने में मेला होता है और मोहर्रम के मेले की वड़ी तय्यारी होती।

**इतिहास**—सन १३७० ई० में वादशाह फिरोजतुगलक ने इस कसवे को वसाया। उसके ३० वर्ष पीछे लाहोरी नामक एक पासी ने इस पर अधिकार करके इसका नाम लाहरपुर वदल दिया। सन १४१८ में मुसलमानी सेना ने कन्नौज से आकर पासी प्रधान को नष्ट किया। सन १७०७ में गौर राजपूतों ने मुसलमानों को निकाल दिया, जो अव तक इस परगने में अधिक भूमि के मालिक हैं।

## खीरी।

सीतापुर से २५ मील (लखनऊ से ८० मील) उत्तर कुछ पश्चिम खीरी का रेलवे स्टेशन है। अवध प्रदेश के सीतापुर विभाग के खीरी जिले में खीरी एक छोटा कसवा है, जो सन ई० की १६ वीं शताब्दी में वसा। इसमें १४ देवमन्दिर, १२ मसजिदें और ३ इमामवाड़े हैं।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय खीरी में ५९९६ मनुष्य थे; अर्थात् ३५२४ मुसलमान और २४७२ हिन्दू।

**खीरी जिला**– खीरी जिला अवध के संपूर्ण जिलों से बड़ा है। इसके उत्तर मोहन नदी, जो नैपाल राज्य से इस को अलग करती है; पूर्व कौरियाला-नदी, जो बहराइच जिले से इसको जुदा करती है; दक्षिण सीतापुर जिला और पश्चिम पश्चिमोत्तर देश का शाहजहांपुर जिला है। जिले का क्षेत्रफल २११२ मील है।

जिले में कौरियाला, चौका, गोमती, आदि नदियां बहती हैं। जिले की कचहरियां लखीमपुर में हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय खीरी जिले में ९१६१६२ मनुष्य थे; अर्थात् ४८८९१३ पुरुष और ४२७२४९ स्त्रियां। अधिक निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या के सातवें भाग मुसलमान हैं। चमार सब जातियों से अधिक हैं। इनके पश्चात् क्रम से कुर्मी, अहीर, ब्राह्मण, पासी, काछी और लोधी इत्यादि के नंबर हैं। जिले में ५ कसबे हैं; लखीमपुर, मुहम्मदी, ओलधकना, खीरी और धौरहरा।

## लखीमपुर।

खीरी से ३ मील लखीमपुर का रेलवे स्टेशन है। लखीमपुर खीरी जिले का प्रधान कसबा और सदर स्थान युल नदी से १ मील दक्षिण है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय लखीमपुर में ७५२६ मनुष्य थे।

कसबे में मामूली पबलिक आफिस और कचहरी के मकानों के अतिरिक्त हाई स्कूल और अस्पताल हैं। इसमें पक्के मकानों की संख्या बढ़ रही है और सौदागरी उन्नति पर है। एक १८ मील की सड़क सीतापुर से ओएल होकर लखीमपुर को गई है।

## गोलागोकर्णनाथ।

लखीमपुर से २० मील गोलागोकर्णनाथ को सड़क गई है। वर्ष में २ बार गोलागोकर्णनाथ में मेला होता है। इनमें से फाल्गुन की शिवरात्रि

के मेले में लगभग ८०००० मनुष्य आते हैं और चैत्र के मेले में, जो दो सप्ताह रहता है, लगभल १$\frac{१}{२}$ लाख मनुष्य एकट्ठे होते हैं। यह मेला उन्नति पर है। इसमें हिन्दुस्तान के अनेक विभागों से सौदागर आते हैं और लाखों रुपये की वस्तु विकती है।

गोलागोकर्णनाथ एक तीर्थ स्थान है, जिसको उत्तर का गोकर्णक्षेत्र कहते हैं। यहां एक वड़े तालाव के निकट गोकर्णनाथ महादेव का सुन्दर मन्दिर वना है। शिवलिंग के ऊपर गहरा है। मेले के दिनों में दर्शन की वड़ी भीड़ होती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध २०७ वां अध्याय) एक समय महर्षि सनत्कुमार ने ब्रह्मा से पूछा कि शिवजी का नाम उत्तरगोकर्ण, दक्षिणगोकर्ण और शृंगेश्वर किस भांति हुआ? जहां इनका निवास है, वह कौन कौन तीर्थ है? ब्रह्माजी ने कहा कि एक समय शिवजी मंदराचल के उत्तर किनारे के मुंजवान पर्वत से श्लेष्मातक वन में चले गए और नन्दीश्वर से कह गए कि किसी के पूछने पर तुम हमारे जाने का स्थान मत कहना। (२०८) इसके पश्चात् इन्द्र ने ब्रह्मा और विष्णु को साथ ले मुंजवान पर्वत पर आकर नन्दीश्वर से पूछा कि भगवान शङ्कर कहां हैं। (२०९) जब नन्दीश्वर ने शिवजी का पता नहीं वतलाया, तव देवतागण शिवजी को खोजने चले और ढूँढ़ते ढूँढ़ते श्लेष्मातक वन में पहुंचे। शिवजी ने मृग-रूप धारण किया था, देवताओं ने उनको पहचान लिया; सव देवता उनको पकड़ने के लिये चारो ओर से दौड़े। इन्द्र ने मृग के शृङ्ग का अग्रभाग जा पकड़ा, ब्रह्मा ने विचला भाग पकड़ लिया और शृङ्ग का मूल भाग विष्णु के हाथ में आया। जव वह शृङ्ग तीन टुकड़े होकर तीनों के हाथों में रह गया और मृग अन्तर्द्धान हो-गया। तव आकाशवाणी हुई कि हे देवताओं! तुम लोग हमको नहीं पा सकोगे। अव शृङ्गमात्र के लाभ से संतुष्ट हो जाओ।

(२१० वां अध्याय) इन्द्र ने शृङ्ग के निज खण्ड को स्वर्ग में स्थापित किया और ब्रह्मा ने अपने हाथ के शृंग-खण्ड को उसी भूमि में स्थापित

कर दिया। दोनों खण्डों का गोकर्ण नाम प्रसिद्ध हुआ। विष्णु ने भी शृङ्ग के खण्ड को लोक के हित के लिये स्थापित किया, जिसका नाम शृंगेश्वर हुआ। जिन स्थानों पर शृंग के खण्ड स्थापित हुए, उन स्थानों में शिवजी निज अंश कला से स्थित होगए। रावण इन्द्र को जीत कर अमरावती पुरी से गोकर्णेश्वर को उखाड कर लङ्का को ले चला और कुछ दूर जाकर शिवलिंग को भूमि में रख कर संध्योपासन करने लगा। जब चलने के समय वह शिवलिंग रावण के उठाने पर नहीं उठा, तब रावण उसको वहांही छोड़ कर लङ्का चला गया, उसी लिंग का नाम दक्षिण-गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ और ब्रह्मा के स्थापित शृंग के खण्ड का नाम उत्तर-गोकर्ण है।

कूर्मपुराण—( उपरिभाग, ३४ वां अध्याय ) उत्तर के गोकर्णक्षेत्र में शिव के पूजन और दर्शन करने से संपूर्ण कामना सिद्ध होती है और अन्त में शिवलोक प्राप्त होता है। वहां स्थाणु नामक शिव हैं, जिनके दर्शन करने से समस्त किल्विष का नाश होता है।

———o-o———

# छठवां अध्याय।

## ( अवध में ) संडीला, नैमिषारण्य, हरदोई; (रुहेलखंड में) शाहजहांपुर, तिलहर, बरैली और पीलीभीत।

## संडीला।

लखनऊ से ३१ मील पश्चिमोत्तर सण्डीला का रेलवे स्टेशन है। संडीला हरदोई जिले में तहसीली और परगने का सदर स्थान एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय संडीला में १६८१३ मनुष्य थे; अर्थात् ८४८० मुसलमान, ८३१८ हिन्दू और १५ क्रस्तान।

कसवे में मामूली दीवानी और फौजदारी कचहरियां और अस्पताल हैं और सप्ताह में २ दिन वाजार लगता है। पूर्व समय में हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि सूरदास संडीला में रहते थे। वहुत यात्री सण्डीला में रेलगाडी से उतर कर नैमिषारण्य, मिश्रिक और हत्याहरण तीर्थ में जाते हैं। स्टेशन के पास सवारी के लिये वैलगाड़ी मिलती है।

## नैमिषारण्य।

सण्डीला से नैमिषारण्य जाने के लिये एक्के की सड़क नहीं है। इसलिये मैं सण्डीला से १८मील पश्चिमोत्तर वघौली के स्टेशन पर उतरा और वघौली से १३ मील उत्तर गोमती नदी पार हो नदी से १ मील आगे नैमिषारण्य में पहुंचा। वघौली में सवारी के लिये एक्के मिलते हैं।

अवध प्रदेश के सीतापुर जिले में गोमती नदी के वाएं किनारे पर (२७ अंश २० कला ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ३१ कला ४० विकला पूर्व देशांतर में) सीतापुर कसवे से २० मील पश्चिम भारतवर्ष के अति प्राचीन और पवित्र तीर्थों में से एक नैमिषारण्य है। पूर्व समय में नैमिषारण्य भारतवर्ष में तपस्वियों का प्रधान स्थान था, परन्तु इस समय यहां वड़े तीर्थों के समान वहुत यात्री नहीं आते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नैमिषारण्य वस्ती में २३३६ मनुष्य थे; खास करके ब्राह्मण (पण्डा) और उनके आधीन मनुष्य। इसमें नित्य का छोटा वाजार है, प्रायः सवही मकान मट्टी से पाटे हुए हैं। आस पास की पृथ्वी नीची ऊंची है, जिस पर कुछ कुछ जंगल और आम के वहुतेरे वाग हैं। आस पास की भूमि उपजाऊ नहीं है। यहां वहुतेरे भैंसे लादे जाते हैं, अस्सी रुपए के सेर से १६ सेर का मन होता है, मार्ग में लुटेरों का कुछ भय रहता है।

नैमिषारण्यही में पूर्वकाल में महाभारत और पुराणों की कथा हुई थी। यहां प्रति अमावास्या को सामान्य और सोमवती अमावास्या को विशेष स्नान दर्शन का मेला हुआ करता है। नैमिषारण्य की वड़ी परिक्रमा ८४ कोस की

है। प्रतिवर्ष फाल्गुन की अमावास्या को नैमिषारण्य से परिक्रमा आरम्भ हो-कर पूर्णिमा को इसी स्थान पर समाप्त होती है। यात्रियों के साथ बाजार चलता है।

देवमन्दिर और देवस्थान—खास नैमिषारण्य की १$\frac{1}{2}$ कोस की परिक्रमा में इस क्रम से स्थान और देवता मिलते हैं,—

(१) चक्रतीर्थ—यह पहलदार गोलाकार लगभग १२० गज घेरे का पक्का कुंड है। इसमें चारो ओर ऊपर से नीचे तक पत्थर की सीढ़ियां और मध्य में गोलाकार जालीदार दीवार है, जिसके बाहर चारो ओर यात्रीगण स्नान करते हैं और भीतर अथाह जल है। जब एक मेले के समय इस कुंड में बहुतेरे यात्री डूब गए, तब सरकार ने कुण्ड के मध्य में गोलाकार दीवार बनवा दी। कुण्ड का जल उमड़ कर दक्षिण के नाले से पत्थर से बांधी हुई एक पोखरी में सर्वदा गिरा करता है और पोखरी से एक खाल में चला जाता है। खाल को लोग गोदावरी नर्मदा कहते हैं। कुण्ड के किनारों पर कई एक देवमन्दिर हैं, जिनमें भूतनाथ महादेव प्रधान हैं। चक्रतीर्थ नैमिषारण्य में मुख्य स्थान है। (२) पंचप्रयाग—यह पक्का सरोवर है। इसके किनारे पर अक्षयवट नामक वटवृक्ष है। (३) ललितादेवी - यह यहांके देवदेवियों में प्रधान हैं। इनका दर्शन मंदिर के द्वार के बाहर से होता है। (४) गोवर्द्धन महादेव। (५) क्षेमकाया देवी। (६) जानकीकुण्ड। (७) हनूमानजी। (८) काशी—एक पक्के सरोवर के किनारे पर एक मंदिर में विश्वनाथ और अन्नपूर्णा और मंदिर के पास लोलार्क नामक कूप है। (९) एक छोटे मंदिर में धर्मराज की मूर्ति है। (१०) एक मंदिर में शुकदेवजी की गद्दी, बाहर व्यासजी का स्थान और मैदान में मनु और शतरूपा के अलग अलग २ चबूतरे हैं। (११) व्यासगंगा नामक सरोवर, जो बालू से भर गया है। (१२) बालू से भरा हुआ ब्रह्मावर्त नामक पक्का सरोवर। (१३) बालू से भरा हुआ गंगोली नामक पक्का सरोवर। (१४) पुष्कर नामक सरोवर। (१५) गोमती नदी, जो हिमालय पर्वत से निकल कर लखनऊ और जौनपुर

होती हुई लगभग ५०० मील वहने के उपरांत वनारस से नीचे गंगा में मिली है। (१६) दशाश्वमेध नामक टीला—टीले के ऊपर एक मंदिर में राम लक्ष्मण आदि देवताओं की मूर्त्तियां हैं। त्रेतायुग में रामचन्द्र ने अयोध्या से यहां आकर अश्वमेध यज्ञ किया था। (१७) पांडवकिला—एक लंबे टीले के ऊपर एक मंदिर में श्रीकृष्ण भगवान और पांडवों की मूर्तियां हैं। एक स्थान पर वाराह कूप नामक कूंआ और स्थान स्थान पर टीले में वहुतेरी छोटी गुफाएं हैं। कई एक गुफाओं में महावीर की मट्टी की मूर्तियां और कई एक में समय समय पर साधु लोग रहते हैं। (१८) जगन्नाथजी का मन्दिर। (१९) एक मन्दिर में वड़े सिंहासन पर सूतजी की गद्दी, जिसके निकट राधा, कृष्ण और वलदेवजी की मूर्तियां हैं। (२०) एक मन्दिर में त्रेता के रामचन्द्र आदि की मूर्तियां हैं। मन्दिर के पास पुजारियों के रहने के मकान वने हैं।

मिश्रिक—नैमिषारण्य से लगभग ५ मील दूर, सीतापुर से हरदोई जाने वाली सड़क के निकट, सीतापुर कसवे से १३ मील दक्षिण मिश्रिक एक पवित्र तीर्थ है। सीतापुर जिले में तहसीली और परगने का सदर स्थान और अवध के पुराने कसवों में से एक मिश्रिक कसवा है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मिश्रिक कसवे में २०३७ मनुष्य थे; अर्थात् १७६७ हिंदू (खासकर ब्राह्मण), २६३ मुसलमान और ७ दूसरे। मामूली सव डिविजनल कचहरी के आफिसों के अतिरिक्त मिश्रिक में एक पुलिस स्टेशन, पोष्टआफिस और कई स्कूल और कसवे के वाहर पड़ाव की भूमि है।

मिश्रिक में दधीचि-कुण्ड नामक सुन्दर पुरानी वनावट का एक वड़ा सरोवर है। ऐसा प्रसिद्ध है कि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य की वनवाई हुई दीवार से यह पवित्र कुण्ड घेरा हुआ था। लगभग १३० वर्ष हुए कि एक महाराष्ट्र रानी ने इसके घाट और सीढ़ियों की मरम्मत करवाई। सरोवर के किनारे पर दधीचि का पुराना मंदिर खड़ा है। सरोवर के निकट पवित्र तिहवार के समय वड़ा मेला होता है, जिसमें पचास साठ हजार की वस्तु क्रय विक्रय होती है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि एक समय देवगण एक बड़े संग्राम में दैत्यों से परास्त हुए। उन्होंने ब्रह्मा की आज्ञानुसार तपस्वी दधीचि के समीप जाकर अपना अस्त्र बनाने के लिये उनसे उनकी हड्डियां मांगी। दधीचि ने कहा कि मैं अपनी प्रतिज्ञानुसार संपूर्ण तीर्थों में स्नान करके तब अपनी हड्डियां दूंगा। देवताओं ने संपूर्ण तीर्थों का जल लाकर वहांही एक कुण्ड में प्रस्तुत कर दिया। दधीचि ने उस कुण्ड में स्नान कर अपना शरीर छोड़ दिया। देवताओं ने उनकी हड्डियों से अस्त्र बनाकर उससे दैत्यों को जीत लिया। संपूर्ण तीर्थों के जल मिश्रित होने के कारण इस स्थान का नाम मिश्रिक हुआ। जिस कुण्ड में दधीचि ने स्नान किया था, उसका नाम दधीचि-कुण्ड है।

वामनपुराण में लिखा है कि व्यासजी ने मिश्रिक तीर्थ में दधीचि ऋषि के लिये बहुत तीर्थ मिला दिए हैं।

**हत्याहरण**— मिश्रक से आठ दश मील दूर, हरदोई जिले में नैमिषारण्य तीर्थ के अंतर्गत 'हत्याहरण' नामक तीर्थ है। यहां भादों में महीने भर का मेला होता है। हत्याहरण नामक बड़े सरोवर में लोग स्नान करते हैं। लगभग १००००० यात्री आते हैं।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**— शंखस्मृति—(१४ वां अध्याय) नैमिषारण्य में पितरों के निमित्त जो कुछ दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है।

व्यास स्मृति—(४ था अध्याय) मनुष्य नैमिष तीर्थ में जाने से सब पापों से छूट जाता है।

महाभारत—(आदिपर्व, प्रथम अध्याय) सूतवंशीय लोमहर्षण जी के पुत्र उग्रश्रवाजी नैमिषारण्य में शौनकजी के यज्ञ में जा पहुंचे और व्यास कृत महाभारत की कथा कहने लगे। (१९८ वां अध्याय) देवताओं ने नैमिषारण्य में महायज्ञ प्रारंभ किया था।

(वनपर्व, ८४ वां अध्याय) नैमिषारण्य में ऋषिगण और देवताओं के

साथ ब्रह्माजी सदा निवास करते हैं। उसके ढूँढ़ने से आधा पाप और उस में जाने से संपूर्ण पाप नष्ट होजाता है। तीर्थसेवी पुरुष को नैमिषारण्य में १ मास रहना चाहिए, क्योंकि पृथ्वी में जितने तीर्थ हैं, वे सब नैमिषारण्य में रहते हैं। वहां नियम धारण करके स्नान करने से गोमेध यज्ञ का फल मिलता है। जो पुरुष निराहार होकर नैमिषारण्य में मरता है, उसके ७ कुल का उद्धार हो जाता है। (८७वां अध्याय) पूर्व दिशा में नैमिषारण्य-तीर्थ है जहां पवित्र गोमती नदी बहती है। वहीं देवताओं के यज्ञ का स्थान है।

( ९५ वां अध्याय ) पाण्डवों ने नैमिषारण्य में जाकर गोमती में स्नान किया। ( २९१ वां अध्याय ) रामचंद्र ने गोमती के तट पर देव-ऋषियों के सहित १० अश्वमेध यज्ञ किए।

(शल्यपर्व, ३७वां अध्याय) बलरामजी नैमिषारण्य में गए, जहां सरस्वती नदी बहने से बंद हो गई है। वह वहां सरस्वती की निवृत्ति देख कर विस्मित हो गए।

पहले सत्ययुग में नैमिष नामक ऋषियों ने १२ वर्ष की यज्ञारंभ किया था। उस यज्ञ में इतने मुनि आए कि सरस्वती के तट के तीर्थ नगर के समान दिखाने लगे। तट में कुछ भी अवकाश नहीं रहा; तब ऋषियों ने अपने यज्ञोपवीतों से तीर्थ बनाकर अग्निहोत्र करना आरंभ किया। जब सरस्वती ने उन ऋषियों को चिंता से व्याकुल और निराश देखा, तब अपनी माया से अनेक मुनियों को अनेक कुंज दिखलाए। उसी दिन से इस स्थान का नाम नैमिषकुंज है। ( ३८ वां अध्याय ) जब नैमिषारण्य में अनेक मुनि इकट्ठे हुए, तब वेद के विषय में अनेक प्रकार के शास्त्रार्थ होने लगे। वहां थोड़े से मुनि आकर सरस्वती का ध्यान करने लगे। यज्ञ करनेवाले मुनियों के ध्यान करने से विदेशी मुनियों की सहायता के लिये कांचनाक्षी नामक सरस्वती नैमिषारण्य में आई।

( शांति पर्व ३५५वां अध्याय ) पूर्व समय में जिस स्थान में धर्मचक्र प्रवर्तित हुआ था, उस नैमिष तीर्थ में गोमती नदी है।

वाल्मीकिरामायण—( उत्तरकाण्ड, १०४ सर्ग से ११० सर्ग तक ) महाराज रामचन्द्र ने अयोध्या से नैमिषारण्य में आकर अश्वमेध यज्ञ किया। उसी समय उनके पुत्र लव और कुश वाल्मीकि मुनि के साथ आकर उनसे मिले और महारानी सीता को पृथ्वी देवी सिंहासन पर बैठाकर रसातल में ले गई।

कूर्मपुराण—( ब्राह्मीसंहिता—उत्तरार्द्ध—४१वां अध्याय ) ऋषियों ने ब्रह्मा से पूछा, कि पृथ्वी पर तपस्या के लिये सबसे पवित्र स्थान कौन है। ब्रह्माजी बोले कि हम यह चक्र छोड़ते हैं, तुम लोग इसके साथ जाओ, जिस स्थान पर चक्र की नेमि अर्थात् पहिया गिरेगी. वही देश तपस्या के लिये उत्तम है। ऐसा कह ब्रह्मा ने चक्र छोड़ा। ऋषि लोग शीघ्रता से उसके पीछे चले. जिस स्थान पर चक्र की नेमि गिरी. वहांही पवित्र और सर्व-पूजित नैमिष नामक क्षेत्र हुआ। शिवजी पार्वती-सहित नैमिषारण्य में विहार करते हैं। वहां मृत्यु होने से ब्रह्मलोक मिलता है और यज्ञ, दान, श्राद्धादिक कर्म करने से संपूर्ण पाप का नाश हो जाता है।

देवीभागवत—( पहला स्कंद—दूसरा अध्याय ) शौनकजी ने सूतजी से कहा कि कलिकाल से डरे हुए हम लोग ब्रह्माजी की आज्ञा से नैमिषारण्य में आए हैं पूर्व समय में उन्होंने हमें एक चक्र देकर कहा कि जहां इसकी नेमि (पहिया) गिरे, वह देश अति पावन जानना। वहां कलियुग का प्रवेश कभी नहीं होगा। यह सुन कर हम उस चक्र को चलाते हुए चले आए। जब चक्र यहां पहुंचा तो उसकी नेमि टूट गई और वह इस भूमि में प्रवेश कर गया। इसीसे इस क्षेत्र का नाम नैमिष हुआ। यहां कलि प्रवेश नहीं करता, इससे मुनि, सिद्ध और महात्माओं के संग हम यहां बसते हैं।

पद्मपुराण—( सृष्टिखण्ड—प्रथम अध्याय ) व्यासजी के शिष्य लोम-हर्षणजी ने अपने पुत्र उग्रश्रवा से कहा कि जब प्रयाग जी में उत्तम ब्राह्मणों ने वेदव्यासजी से पूछा था कि कोई पुण्यदायक स्थान सदा के लिये हम लोगों को बताइए, जहां हम लोग पुराणोंको सुना करें। यह सुन कर नारायण-

रूपी व्यासजी ने अपना सुदर्शनचक्र चलाया और कहा कि इसके पीछे पीछे तुम लोग जाओ। पहिया टूट जाने से जहां यह गिर पड़े, उस देश को पुण्यभूमि समझना। वह चक्र जाकर गोमती के उत्तर, जिस स्थान पर गिरा, वह स्थान नैमिषारण्य कहलाता है। वहीं सब ऋषि लोग यज्ञ करने और कथा सुनने के लिये जा बैठे।

लोमहर्षणजी बोले कि हे पुत्र तुम नैमिषारण्य में जाकर ऋषियों के धर्म-विषयक संशय को निवारण करो। उग्रश्रवाजी नैमिषारण्य में ऋषियों के पास गए। ऋषियों ने उग्रश्रवाजी से पुराण की कथा पूछी। उग्रश्रवाजी बोले कि आप लोगों ने जो हमसे पुराणही पूछा, इससे हम बहुत प्रसन्न हुए। सूत का यही धर्म है कि देवता, ऋषि और तेजस्वी राजाओं की उत्पत्ति, यश, वंश आदिका वर्णन करे; उन लोगों की प्रशंसा करता रहे और इतिहास पुराण बांचे। वेद पढ़ने पढ़ाने में सूत का अधिकार नहीं होता। राजा पृथु के यज्ञ में मागध और सूत दोनों ने जब उनकी बड़ी स्तुति की, तब राजा ने प्रसन्न होकर सूत को सूत का अधिकार और मागध को मागध का अधिकार दिया।

( मनुस्मृति—१० वां अध्याय, याज्ञवल्क्यस्मृति प्रथम अध्याय, औशनसस्मृति और महाभारत—अनुशासन पर्व के ४९ वें अध्याय में लिखा है कि क्षत्रिय के द्वारा ब्रह्मणी के गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, वह सूतजाति है। औशनसस्मृति में यह भी लिखा है कि सूतजाति प्रतिलोम-विधि का द्विज होता है, जो वेद का अधिकारी नहीं है। वह केवल धर्म का उपदेशक होता है। )

( पातालखण्ड—९१ वां अध्याय ) सिंह के बृहस्पति होने पर गोमती के जल में स्नान करना मोक्षदायक होता है।

वाराहपुराण—( १७० वां अध्याय ) त्रयोदशी के दिन नैमिषारण्य के चक्रतीर्थ में स्नान करने से उत्तम गति प्राप्त होती है।

स्कन्दपुराण—( सेतुबंधखंड—१९ वां अध्याय ) महाभारत के युद्ध के आरंभ के समय बलदेवजी द्वारिका से प्रभास, बिंदुसर, आदि तीर्थों में

भ्रमते हुए नैमिपारण्य में पहुंचे। उनको देख कर नैमिपारण्य के संपूर्ण तपस्वी आसनों से उठे। उन्होंने बड़े आदर से उनको आसन पर बैठाया, परंतु व्यासजी के शिष्य सूतजी ने, जो ऊंचे आसन पर बैठे थे, बलदेवजी को उत्थान नहीं दिया। यह देख बलदेवजी को बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ। उन्होंने कुश के अग्रभाग से सूत का सिर काट लिया। यह देख मुनियों ने हाहाकार किया और बलदेवजी से कहा कि आप को ब्रह्महत्या लगी। आप इसका प्रायश्चित्त कीजिए। अंत में बलदेवजी ने मुनियों के आज्ञानुसार जब दक्षिण-समुद्र के बीच गंधमादन पर्वत पर जाकर लक्ष्मणतीर्थ में स्नान और लक्ष्मणेश्वर शिव का पूजन किया, तब उनकी ब्रह्महत्या नष्ट हुई।

(श्रीमद्भागवत, दशमस्कंध के ७८ वें अध्याय में भी है कि बलरामजी ने नैमिपारण्य में सूत को मार दिया इत्यादि।)

वामनपुराण—(७ वां अध्याय) पृथ्वी में नैमिपतीर्थ, आकाश में पुष्करतीर्थ और पाताल में चक्रतीर्थ उत्तम है।

(३६ वां अध्याय) वेदव्यासजी ने दधीचि ऋषि के लिये मिश्रिक तीर्थ में बहुत तीर्थ मिला दिए हैं। जिसने मिश्रिक तीर्थ में स्नान किया है, वह सब तीर्थों में स्नान कर चुका।

शिवपुराण—(८ वां खंड—५ वां अध्याय) श्रीरामचंद्रजी ब्राह्मण रावण के वध करने से बहुत समय तक पश्चात्ताप करते रहे। निदान उन्होंने नैमिपारण्य के हत्याहरण तीर्थ में अपने भाई सहित जाकर अपना पाप दूर किया और लक्ष्मण सहित स्नान करके शिवलिंग की स्थापना की, जिससे वह पवित्र होगए।

(१४वां अध्याय) नैमिपक्षेत्र में ललितेश्वर शिवलिंग है, जिसको ललिता जगदंबा ने स्थापित किया था। उसी स्थान पर ललिता ने कठिन तप किया था। वहां एक दधीचीश्वर शिवलिंग है, जिसको दधीचि मुनि ने स्थापित किया।

गरुड़पुराण—( पूर्वार्द्ध—६६ वां अध्याय ) नैमिषारण्य तीर्थ संपूर्ण पापों का नाश करने वाला और भुक्ति-मुक्ति देने वाला है।

अग्निपुराण—(१०८वां अध्याय। नैमिषारण्य तीर्थ भुक्ति-मुक्ति का देने वाला है।

## हरदोई।

मंडीला से ३३ मील ( लखनऊ से ६४ मील ) पश्चिमोत्तर हरदोई का रेलवे स्टेशन है। हरदोई अवध प्रदेश के सीतापुर विभाग में जिले का सदर स्थान एक कसबा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हरदोई कसबे में ११,१५२ मनुष्य थे; अर्थात् ८३१९ हिंदू, २७४८ मुसलमान, ७१ कृस्तान, १३ सिक्ख और १ जैन।

यहां गवर्नमेंट की इमारतों में, मामूली जिले की कचहरियां, जेल, स्कूल, अस्पताल, इत्यादि हैं और सप्ताह में २ दिन बाजार लगता है।

हरदोई जिला—इस जिले के पूर्व गोमती नदी, बाद सीतापुर जिला; दक्षिण लखनऊ और उन्नाव जिले; पश्चिम गंगा नदी, बाद फर्रुखाबाद जिला और उत्तर शाहजहांपुर और खीरी जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल २३११ वर्गमील है।

हरदोई जिले में गंगा, रामगंगा, गारा, सुखेता, सई, बैटा और गोमती नदी बहती हैं। गंगा, रामगंगा और गारा में सर्वदा नाव चलती हैं। गोमती यहां छोटी नदी है। सई भी यहां प्रसिद्ध धारा नहीं है। गारा नदी के किनारे सांडी बाजार है, जिसके निकट ३ मील लंबी और एक मील से २ मील तक चौड़ी एक झील है। जिले में नीचे लिखे हुए मजहबी मेले होते हैं। आश्विन की रामलीला के समय बिलग्राम में, जो १० दिन रहता है और उसमें लगभग ४०००० मनुष्य आते हैं; भादों में हत्याहरण में, जो एक मास तक रहता है और उसमें लगभग १००००० मनुष्य आते हैं और वैशाख और का-

र्तिक में वरसूआ में, जो एक एक दिन रहता है और उनमें १५००० से २०००० तक मनुष्य आते हैं। इन मेलों में कोई प्रसिद्ध व्यापार नहीं होता।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हरदोई जिले में १०१४८११ मनुष्य थे; अर्थात् ५८६३११ पुरुष और ५०८५०० स्त्रियां।

निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या के लगभग १० वें भाग मुसलमान हैं। जिले में चमार अधिक हैं। इनके बाद ब्राह्मण, तब क्रम से काछी, राजपूत, पासी, अहीर के नंबर हैं। इस जिले में ९ कसबे हैं,— शाहाबाद (मनुष्य-संख्या सन १८९१ में २०१५३), संडीला (मनुष्य-संख्या १६८१३), मल्लावा (मनुष्य-संख्या ११८९४), बिलग्राम (११४५७), हरदोई (१११५२), सांडी, पिहानी, गोपामऊ और माधोगंज।

इतिहास—७०० वर्ष से अधिक हुए कि इंदौर के निकट के नरकंजारी के रहने वाले चमार गौरों के एक दल ने इस कसवे को बसाया। जिन्होंने यहांके ठठेरों को खदेर कर उनके किलों को नष्ट किया, जिसकी निशानी अब तक बड़े टीलों की शकल में है। वर्तमान कसबे का अधिक भाग ठठेरों की पुरानी गढ़ियों से ईंटे निकाल कर बना हुआ है। सन १८५७ के बलवे के पश्चात् हरदोई जिलेका सदर स्थान बनाई गई।

# शाहजहांपुर।

हरदोई से ३८ मील (लखनऊ से १०२ मील) पश्चिमोत्तर शाहजहांपुर का रेलवे स्टेशन है। शाहजहांपुर पश्चिमोत्तर प्रदेश के रुहेलखंड विभाग में जिले का सदर स्थान (२७ अंश ५३ कला ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ५७ कला ३० विकला पूर्व देशांतर में) देवहा या गारा नदी के बाएं किनारे पर गारा और खनौत के संगम से ऊपर एक छोटा शहर है। संगम पर एक पुराना किला और खनौत नदी पर मेहदी अली का बनवाया हुआ एक बड़ा पुल है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शाहजहांपुर कसबे और फौजी

छावनी में ७८५२२ मनुष्य थे; ( ३९१६९ पुरुष और ३९३५३ स्त्रियां ) अर्थात् ४००२८ मुसलमान, ३७७२५ हिंदू, ६६२ क्रस्तान, ९१ सिक्ख १५ जैन और १ पारसी। मनुष्य-संख्या के अनुसार शाहजहांपुर भारतवर्ष में ३९ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेश में ८ वां शहर है।

शहर की सबसे अधिक लंबाई उत्तर से दक्षिण तक ४ मील से अधिक और चौड़ाई लगभग १ मील है । शहर के मध्य भाग में प्रधान सड़क पर तहसीली-कचहरी, पुलिस स्टेशन और अस्पताल; शहर के किनारे पर जेल, हाईस्कूल और पुलिस की लाइनें और अधिक उत्तर जिले की दीवानी, फौजदारी और माल की कचहरियां और फौजी बारकें हैं। इनके अतिरिक्त शाहजहांपुर में ४ गिर्जे, कई एक स्कूल और ३ बाजार हैं। पहला बाजार सिविल स्टेशन के निकट, दूसरा दक्षिणी अखीर के पास और तीसरा शहर के मध्य में तरकारी का बाजार है, जिसको सन १८७८-७९ में म्युनीसिपलिटी ने बनवाया।

शाहजहांपुर व्यापार के लिये प्रसिद्ध नहीं है। यहां चीनी बहुत तय्यार होती है और दूसरे देशों में जाती है।

शाहजहांपुर से २ मील दूर देवहा नदी पर रेलवे का पुल है। शहर से सुंदर सड़कें लखनऊ, बरैली, फर्रुखाबाद, पीलीभीत, मुहम्मदी और हरदोई गई हैं।

**शाहजहांपुर जिला**—यह रुहेलखंड डिविजन का पूर्वी जिला है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर पीलीभीत और बरैली जिले; पूर्व खीरी जिला; दक्षिण हरदोई जिला और पश्चिम बदाऊं और बरैली जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल १७४५ वर्गमील है।

जिले में रामगंगा और देवहा ( गारा ) नदी बहती हैं। रामगंगा में जलालाबाद के निकट कोलघाट तक सर्वदा नाव चलती हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शाहजहांपुर जिले में ९१८४१९ मनुष्य थे, अर्थात् ४९४९४४ पुरुष और ४२३४७५ स्त्रियां। जिले में हिंदू अधिक हैं। मनुष्य-संख्या में सातवें भाग मुसलमान बसते हैं।

हिंदुओं में कुर्मी सब जातियों से अधिक हैं । इनके पश्चात् क्रम से चमार, अहीर, राजपूत, ब्राह्मण और काछी के नंबर हैं । जिले में ६ कसबे हैं,— शाहजहांपुर ( मनुष्य-संख्या ७८५२२ ), तिलहर ( मनुष्य-संख्या १७२६५ ), जलालाबाद, खोदागंज, मीरनपुर कटरा, और पुवांया ।

इतिहास—सन १६४७ ई० में बादशाह शाहजहां के राज्य के समय नवाब बहादुर खां पठान ने बादशाह के नाम से इस शहर को बसाया ।

सन १७७४ ई० से रुहेलखंड अवध के नवाब के अधिकार में था । सन १८०१ में लखनऊ की संधि के अनुसार अङ्गरेजों ने रुहेलखंड के जिलों के साथ शाहजहांपुर जिले को ले लिया ।

सन १८५७ की तारीख़ १५वीं मई को मेरठ की बगावत की खबर शाहजहांपुर में पहुंची । ता० ३१वीं मई को जब बहुतेरे सिविल और फौजी अफसर गिर्जे में थे, बहुतेरे सिपाहियों ने उसमें घुस कर उन पर आक्रमण किया । ३ युरोपियन मारे गए, शेष लोगों ने फाटक बंद कर दिया और अपने नौकर और १०० इमान्दार सिपाहियों की सहायता से गिर्जे पर अधिकार रक्खा । पश्चात् दूसरे अफ्सरों के वहां पहुंच जाने पर संपूर्ण बागी वहांसे भागे । बलवाइयों ने स्टेशन को जला दिया और खजाने को लूटा, पीछे युरोपियन लोग बरैली चले गए । शाहजहांपुर बगावत का स्थान हुआ ।

सन १८५८ के ३० अप्रेल को जब लार्ड क्लाइड के आधीन अङ्गरेजी सेना शाहजहांपुर में पहुंची, तब बागियों का सरदार मुहम्मदी भाग गया । ता० २ मई को जब अंगरेजी अफसर केवल थोड़ी सेना छोड़कर बरैली चले गए, तब फिर एक बार शाहजहांपुर में बागी इकट्ठे हुए और ९ दिनों तक महासरा किए रहे, परन्तु १२ वीं मई को अंगरेजी सेना के आने पर वे भाग गए ।

## तिलहर ।

शाहजहांपुर से १२ मील ( लखनऊ से ११४ मील ) पश्चिमोत्तर तिलहर

का रेलवे स्टेशन है। शाहजहांपुर जिले में तहसीली का सदर स्थान तिलहर एक कसवा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिलहर म्युनिसिपलिटी के भीतर, जिसमें आस पास की कई बस्ती भी शामिल हैं, १७२६५ मनुष्य थे; अर्थात् ८८२६ हिंदू, ८४१३ मुसलमान २४ कृस्तान और २ सिक्ख।

कसवा टूटी हुई दीवार से घेरा हुआ है। इसके पूर्व और पश्चिम फाटक हैं। सन १८८१ में म्युनिसिपलिटी की ओर से एक बड़ा बाजार बना, परन्तु उसमें कम व्यापर होता है। एक पक्की सड़क शाहजहांपुर से तिलहर होकर बरैली गई है।

सन् १८५७ के बलवे के समय तिलहर के मुसलमान जमीदार बागियों में मिले थे, इसलिये उनकी मिलकियत जप्त कर ली गई।

## बरैली।

तिलहर से ३२ मील और (लखनऊ से १४६ मील) पश्चिमोत्तर बरैली रेलवे का जंक्शन है। पश्चिमोत्तर प्रदेश के रुहेलखण्ड विभाग और बरैली जिले का सदर स्थान ( २८ अंश २२ कला ९ विकला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश २६ कला ३८ विकला पूर्व देशांतर में ) समुद्र के जल से ५५० फीट ऊपर राम-गंगा नदी से कई मील दूर बरैली एक शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बरैली और छावनी में १२१०३९ मनुष्य थे; ( ६४४३५ पुरुष और ५६६०४ स्त्रियां ) अर्थात् ६५८२१ हिन्दू, ५१७८९ मुसलमान, ३२५० कृस्तान, १७१ सिक्ख, ६ पारसी, १ जैन और १ बौद्ध। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में २० वां और पश्चिमोत्तर देश में ५ वां शहर है।

रेलवे स्टेशन के निकट एक सुंदर पक्की सराय है, जिसमें मैं टिका था। थोड़ी दूर आगे बड़ा जेल और एक कल कारखाना और स्टेशन से १ मील शहर है। प्रधान सड़क के दोनों किनारों पर २ मील की लंबाई में सुंदर दुकानों की पंक्तियां हैं। सड़क के पश्चिम ओर पर दो मंजिले फाटक

में मोदियों की कई दुकानें हैं, जिससे पूर्व सड़क के किनारों पर बाजार का चौक, कोतवाली, तहसीली, कुतुबखाना और घड़ी का बुर्ज क्रम से मिलते हैं। चौक से उत्तर एक ठाकुरद्वारे में महावीर की प्राचीन मूर्ति है। वहां हिंदू यात्री सुख से टिक सकते हैं। वरैली के खानगी मकानों में से अधिक मकान मट्टी के हैं। लगभग २३००० मकानों में से केवल ६९०० पक्के हैं। नये बाजारों में से इंगलिशगंज साफ और अच्छा बाजार है। वरैली में कपड़े, गल्ले और चीनी की बड़ी तिजारत होती है और मेज, कुर्सियां, साज आदि घरऊ सामग्री सुन्दर बनती हैं और सस्ते दाम में मिलती हैं। वरैली शहर से पक्की सड़क एक ओर मुरादाबाद को ५५ मील और दूसरी ओर काठगोदाम को ६३ मील गई हैं।

वरैली का सिविल स्टेशन और फौजी छावनी खुले हुए मैदान में हैं। छावनियों में आरटिलरी का एक बैटरी और सिवाय देशी सवारों के युरोपियन और देशी पैदल के रेजीमेंट हैं। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी में ६३३९ हिंदू, २२७२ मुसलमान, १४३० कृस्तान और २१६ दूसरे थे।

वरैली में कैदी लड़कों के पढ़ाने के लिये जेलखाने का एक स्कूल है, जिसमें लगभग १२५ कैदी लड़के हैं; जिनसे ६ घंटे मेहनत का काम और ४ घंटे पढ़ने का काम लिया जाता है और बीच बीच में ४ घंटे आराम, खेल और खाने की छुट्टी मिलती है।

पुराने कसबे में बैरलदेव का उजड़ा पुजड़ा पुराना किला है। छावनी के भीतर मजबूत नया किला है। मसजिदों में प्रधान (लगभग १६०० ई० की बनी हुई) मिरजा मसजिद और मकरंदराय की (सन १६५७ में) बनवाई हुई जुमा मसजिद हैं। शहर के निकट रामपुर के नवाब का एक महल है। वरैली में एक गिर्जा, दो जेल, एक पागलखाना, एक गवर्नमेंट कालिज और जिले की कचहरियां हैं।

रामगंगा नदी शहर से ६ मील दूर है। शहर से नदी तक पक्की सड़क है। नदी की धार के ऊपर की ओर रेलवे पुल बना है। नदी के किनारे पर मढ़ी बांध कर कई एक घाटिया ब्राह्मण रहते हैं। यहां का-

र्तिक पूर्णिमा और जेष्ठ के दसहरे को रामगंगा स्नान के मेले होते हैं और दो दो दिनों तक रहते हैं। रामगंगा नदी हिमालय के लोहवा पहाड़ से निकल कर बरैली और मुरादाबाद होती हुई, लगभग ३०० मील बहने के उपरांत फर्रुखाबाद से नीचे गंगा में मिल गई है।

**बरैली जिला**— जिले के पूर्व पीलीभीत जिला; दक्षिण शाहजहांपुर और बदाऊं जिले; पश्चिम बदाऊं जिला और रामपुर का राज्य और उत्तर तराई जिला है। जिले का क्षेत्रफल १६१४ वर्गमील है।

जिले में पहाड़ियां नहीं हैं। रामगंगा और वेगुल प्रधान नदियां हैं। जिले में दूसरी अनेक छोटी धारा बहती हैं। जिले की बस्तियों के मकानों की छत मट्टी की है, परंतु बड़े कसबों में साधारण तरह से खपड़े के हैं, जिनमें बहुधा दो मंजिले बने हैं। उत्तर तराई के निकट अनेक मकान स्तंभों पर बने हैं, क्योंकि उधर जमीन से थोड़े ही नीचे पानी है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बरैली जिले में १०४१३६८ मनुष्य थे; अर्थात ५५५७७९ पुरुष और ४८५५८९ स्त्रियां। निवासी अधिक हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या में चौथाई भाग से कम मुसलमान और लगभग २५०० क्रस्तान हैं। हिंदुओं में कुर्मी बहुत अधिक हैं। बाद क्रम से चमार, काछी, ब्राह्मण कहार, अहीर तब राजपूत के नंबर हैं। जिले में ४ कसबे हैं, बरैली (जनसंख्या १२१०३९), आंवोला (जनसंख्या १३५५९), सरौली पियास और फरीदपुर।

**इतिहास**—ऐसी कहावत है कि लगभग सन १५३७ ई० में बासुदेव और बैरलदेव ने शहर को बसाया। बैरलदेव के नाम से शहर का नाम बरैली पड़ा।

मोगल बादशाहों ने अपने राज्य की पूर्वी सीमा पर बरैली में फौज को रक्खा। पड़ाव के चारो ओर शीघ्रही एक नगर बसा, जो बहुत दिनों तक केवल फौजी स्टेशन था। सन १६५७ में हिंदू गवर्नर राजा मकरंदराय ने बरैली के नए शहर को कायम किया, पुराने कसबे के पश्चिम के जंगल को काट डाला और कैथेरियों को पड़ोस से निकाल दिया। सन १६६० से शाही गवर्नर बरैली में बराबर रहते थे, परंतु सन १७०७ में औरंगजेब के मरने

पर हिंदुओं ने झगड़ों का सिलसिला आरंभ किया। इसके पश्चात लगभग ५० वर्ष तक बरैली रुहेलों की राजधानी रही। उसके बाद अंगरेजों ने इसको जीतकर अवध के वजीर को दिया और सन १८०१ में वजीर से इसको ले लिया। तबसे बरैली रुहेलखंड डिविजन और बरैली जिले का सदर हुई।

सन १८१६ में एक नया 'कर' जारी होने पर बलवा हुआ। एक मुसलमान महम्मद एवेज के आधीन ५००० हथियारबंद आमियों ने अंगरेजी फौजों पर आक्रमण किया। एक बड़ी लड़ाई के पीछे वे भगाए गए और उनमें से कई एक मारे गए और घायल हुए। इसके पीछे शहर के दक्षिण रेलवे स्टेशन के निकट गवर्नमेंट ने एक छोटा किला बनवाया था।

सन १८५७ ई० की तारीख ३१ मई को बरैली में बगावत हुई। छावनी में केवल देशी सेना थी। वहां बहुत सिविलियन और लड़के और स्त्रियों के अतिरिक्त लगभग १०० अंगरेज थे। ६८वीं पलटन के बागियों के यूथों ने अंगरेजी मकानों में आग लगा दी और वे लोग युरोपियनों को गोली मारने लगे। १८वीं पलटन के ५ अंगरेज भागे, जिनको गांव वालों ने मार डाला। कमिश्नर, कलक्टर और २ जंट मजिष्ट्रर नैनीताल को भाग गए। २ जज और २ डाक्टर मारे गए। बलवाइयों ने अनेक ऊंचे दर्जे के सिविलियनों को उनके मातहतियों के साथ और बहुतेरे तिजारती और सौदागर युरोपियन लोगों को उनके लड़के और स्त्रियों के सहित मार डाला। प्रसिद्ध रोहिला-प्रधान हाफिज रहमत खां के वंश का एक आदमी गवर्नर बनाया गया। उसने सब कृस्तानों को मार देने का हुक्म दिया। सन १८५८ की तारीख ५वीं मई को अंगरेजी सेना बरैली शहर के निकट पहुंची। दो दिनों के पश्चात बागी अवध में भाग गए। अंगरेजों ने बरैली पर अधिकार कर लिया।

## पीलीभीत।

बरैली से १२ मील उत्तर भोजपुरा जंक्शन और भोजपुरा से २४ मील पूर्वोत्तर 'पीलीभीत' का रेलवे स्टेशन है। पीलीभीत पश्चिमोत्तर प्रदेश के

रुहेलखंड विभाग में जिले का सदर स्थान देवहा नदी के बाएं किनारे पर एक कसबा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पीलीभीत में ३३७९९ मनुष्य थे; (१७२३५ पुरुष और १६५६४ स्त्रियां) अर्थात् १९८८१ हिन्दू, १३८४७ मुसलमान और ७१ कृस्तान।

कसबे के पश्चिम रोहिला-प्रधानों के महल और रोहिला-प्रधान हाफिज़ रहमत खां की बनवाई हुई दिल्ली की जामा मसजिद के नकल की एक जामा मसजिद और एक हमाम, जिसको लोगों ने सुधारा है, हीन दशा में खड़े हैं। पबलिक इमारतों में गवर्नमेंट की कचहरियां, आफिसें और सराय हैं। पीलीभीत के देवमंदिरों में सेठ ललिताप्रसाद का, सेठ जगन्नाथजी का, लाला श्यामसुन्दरलाल का और लाला खूबचंद का मंदिर मुख्य है।

पीलीभीत में २ बड़े बाजार हैं; तराई से चावल, नैपाल और कुमाऊं से मिरच और सोहागा और दूसरे स्थानों से मधु, मोम, ऊन इत्यादि वस्तु लाई जाती हैं और गल्ला, निमक और कपड़े दूसरे देशों से आते हैं। चीनी पीलीभीत से दूसरे देशों में जाती है और धातु के बर्तन और गाड़ी इत्यादि लकड़ी की वस्तु यहां बहुत बनती है।

**पीलीभीत जिला**—इसके पूर्व नैपाल का स्वाधीन राज्य और शाहजहांपुर जिला; दक्षिण शाहजहांपुर; पश्चिम बरैली और उत्तर तराई जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल १३७१ वर्गमील है। सारदा और देवहा जिले की प्रधान नदियां हैं। सारदा नदी कुमाऊं पहाड़ियों में १५० मील बहने के उपरांत अंगरेजी और नैपाल राज्यों की सीमा बनती है और खीरी जिले में जाकर कौरियाला नदी से मिल जाती है। कौरियाला नदी सरयू के संगम के पश्चात घाघरा वा सरयू कही जाती है। 'देवहा', जिसको नंदा भी कहते हैं, कुमाऊं के भावर से निकलकर उत्तर से इस जिले में प्रवेश करती है और दक्षिण बरैली जिले में जाकर शाहजहांपुर और हरदोई जिलों में जाती है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पीलीभीत जिले में ४८६२४० मनुष्य थे; अर्थात् २५८७२५ पुरुष और २२७५१५ स्त्रियां। निवासी हिंदू बहुत हैं। मनुष्य-संख्या के छठवें भाग मुसलमान हैं। हिंदुओं में राजपूत बहुत

अधिक हैं । बाद क्रम से कुर्मी, लोधी, चमार, ब्राह्मण और काछी के नंबर हैं । जिले में २ कसबे हैं,—पीलीभीत (जन-संख्या ३३७९९) और विसलपुर ।

इतिहास—सन १७४० ई० में रोहिला-प्रधान हाफिज़ रहमत खां ने पीलीभीत कसबे और परगने पर अपना अधिकार करलिया और पीलीभीत को अपनी राजधानी बनाया । सन १७५४ में पीलीभीत रुहेलखंड की राजधानी हुई । हाफिज रहमत खां ने पीलीभीत कसबे को ईंटे की दीवार से घेरा, जो उसके मरने के पश्चात गिरा दी गई । सन १७७४ की लड़ाई में अवध के नवाब ने हाफिज रहमत खां को मार कर पीलीभीत पर अधिकार कर लिया । सन १८०१ में बकीए रुहेलखंड के साथ अंगरेजों ने इसको ले लिया ।

सन १८५७ के बलवे के समय पीलीभीत बरैली जिले में एक सब डिविजन थी । तारीख पहिली जून को बरैली की फौज के बागी होने की खबर पीलीभीत में पहुंची । नगर में एक बारगी बलवा टूट पड़ा, लूट पाट और मार काट होने लगी । ज्वाएंट मजिस्ट्रेट नैनीताल में भाग गया । सन १८५८ में फिर अंगरेजी अधिकार हो गया । सन १८७९ में बरैली जिले की पीली-भीत, पूरनपुर और बहेरी ये तीन तहसीलें बरैली से निकाल कर पीलीभीत जिला बनाया गया । सन १८८० में बहेरी फिर बरैली में गई और विसलपुर तहसील पीलीभीत जिले में जोड़ी गई ।

---

# सातवां अध्याय ।

## (रुहेलखंड में) चंदौसी, मुरादाबाद, संभल, रामपुर, धामपुर, बिजनौर, नगीना और नजीबाबाद ।

### चंदौसी ।

बरैली से ४४ मील पश्चिम कुछ उत्तर और लखनऊ से १९० मील पश्चिमोत्तर चंदौसी का रेलवे जंक्शन है । चंदौसी पश्चिमोत्तर प्रदेश के मुरादा-बाद जिले में सोत नदी से ४ मील पश्चिम एक कसबा है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय चंदौसी में २८१११ मनुष्य थे; (१५०४८ पुरुष और १३०६३ स्त्रियां) अर्थात् २०१४३ हिंदू, ७७४९ मुसलमान, १८१ कृस्तान, ३२ जैन, ४ सिक्ख और १ पारसी।

चंदौसी में एक अस्पताल और एक मिल (कल कारखाना) है। रुहेलखंड के चारो ओर के देश के लिये यह प्रधान बाजार है। यहांसे दूसरे देशों में चीनी बहुत जाती है।

रेलवे—चंदौसी से 'अवध रुहेलखंड रेलवे' लाइन ३ ओर गई है, जिस के तीसरे दर्जे का महसूल प्रतिमील २$\frac{१}{२}$ पाई है।

(१) चंदौसी से पश्चिमोत्तर—

मील प्रसिद्ध स्टेशन—

१२ मुरादाबाद।

५० धामपुर।

६० नगीना।

७४ नजीबाबाद।

९९ लक्सर जंक्शन।

१०६ लंधौरा।

१११ रुड़की।

१३२ सहारनपुर जंक्शन।

लक्सर जंक्शन से पूर्वोत्तर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१४ ज्वालापुर।

१६ हरिद्वार।

(२) चंदौसी से दक्षिण-पश्चिम—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३१ राजघाट।

४३ अंतरौली रोड।

६१ अलीगढ़ जंक्शन।

अलीगढ़ से 'इष्टइंडियन रेलवे' पर एक ओर ६६ मील गाजियाबाद जंक्शन और ७९ मील दिल्ली जंक्शन और दूसरी ओर १८ मील हाथरस जंक्शन और ४७ मील मथुरा छावनी का स्टेशन है।

(३) चंदौसी से दक्षिण-पूर्व—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४४ बरैली।

५६ फरीदपुर।

६६ फतहगंज।

७६ तिलहर।

८८ शाहजहांपुर।

१२६ हरदोई।

१४१ बघौली।

१५९ संडीला।

१९० लखनऊ जंक्शन।

# मुरादाबाद।

चंदौसी से १२ मील पश्चिमोत्तर मुरादाबाद का रेलवे स्टेशन है। मुरादाबाद पश्चिमोत्तर प्रदेश के रुहेलखंड विभाग में (२८ अंश ४९ कला ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ४९ कला ३० विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान रामगंगा के दहिने किनारे पर एक छोटा शहर है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मुरादाबाद शहर और छावनी में ७२९२१ मनुष्य थे; (३७२४९ पुरुष और ३५६७२ स्त्रियां) अर्थात् ३९४८३ मुसलमान, ३२२७२ हिंदू, ८९० कृस्तान, २५८, जैन १६ सिक्ख और २ पारसी। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ४६ वां और पश्चिमोत्तर देश में १० वां शहर है।

मुरादाबाद में जामा मसजिद (सन १६३४ ई० की बनी हुई), मुरादाबाद के गवर्नर नवाब आजमतुल्ला खां का मकबरा, म्युनीसिपल हाल, तहसीली, मिशन चर्च, हाई स्कूल, अस्पताल, पोष्ट आफिस और जेल प्रधान इमारतें हैं। जेल के पश्चिमोत्तर फौजी छावनी और सिविल स्टेशन हैं। देशी महल्ले और छावनी के बीच में कलक्टर के आफिस और सिविल कचहरियां हैं। छावनी के दक्षिण रेलवे स्टेशन है। छावनी में एक पूरी देशी पैदल रेजीमेंट और युरोपियन रेजिमेंट का एक भाग है। रेलवे स्टेशन से २ मील दूर स्कूल के उत्तर रामगंगा के किनारे पर मुरादाबाद के बसाने वाले रुस्तम खां के किले की निशानी ४ फीट से ६ फीट तक ऊंची ईंटे की एक दीवार है। यहां एक बड़ा कूँआ है, जिससे रुस्तम खां के टकशाल में पानी जाता था। रामगंगा के किनारे पांच सात पक्के घाट बने हैं। थोड़ी दूर पर रामगंगा के ऊपर ११ पायों का पुल है। किनारे की ओर छोटे छोटे मन्दिरों के सहित अनेक वाटिकाएं लगी हैं।

मुरादाबाद कसबा देश के पैदावार की सौदागरी का बड़ा केन्द्र है। गल्ला, चीनी, घी, तेल और तेल के अनेक प्रकार के बीज, कपड़े, धातु, इत्यादि वस्तु बहुत आती हैं। यहां पारे की कलई का काम अच्छा होता है और भरत के बरतन अच्छे बनते हैं, इस काम में हजारों आदमी लगे हैं।

**मुरादाबाद जिला**—इसके पूर्व रामपुर का राज्य; दक्षिण बदाऊं जिला; पश्चिम गंगा नदी, जो बुलन्दशहर और मेरठ जिलों से इसको अलग करती है और उत्तर विजनौर और तराई जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल २२८१ वर्गमील है। जिले में गंगा, रामगंगा और सोत ये ३ प्रधान नदियां हैं। गंगा और सोत इन दो नदियों में सर्वदा नाव चलती है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मुरादाबाद जिले में ११७८३०० मनुष्य थे; अर्थात् ६२४२९० पुरुष और ५५४०१० स्त्रियां। इस जिले में दो तिहाई हिन्दू और एक तिहाई मुसलमान और लगभग २००० कृस्तान हैं। चमार सब जातियों से अधिक अर्थात् लगभग दो लाख हैं। इनके बाद क्रम से माली, जाट, ब्राह्मण, अहर ( अहीर नहीं ) राजपूत, कहार, वनियां इत्यादि जातियों के नंबर हैं। इस जिले में १३ कसबे हैं,—मुरादाबाद ( जन संख्या ७२१२१ ), संभल ( जन-संख्या ३७२२६ ), अमरोहा ( मुरादाबाद शहर से २३ मील पश्चिमोत्तर, जन-संख्या ३५२३० ), चंदौसी (२८१११), सोलासराय ( १०३०४ ), हसनपुर, वछरांव, मऊनगर, सिरसा, ठाकुरद्वारा, धनौरा, मोगलपुर और नरवली।

**इतिहास**—सन १६२५ ई० में रुस्तम खां ने मुरादाबाद शहर को वसाया और बादशाह शाहजहां के पुत्र शाहजादे मुराद के नाम से इसका नाम मुरादाबाद रक्खा। रुस्तम खां के गढ़ की निशानी अब तक रामगंगा के किनारे पर देखी जाती है।

सन १७७४ में मुरादाबाद जिला रुहेलखंड के दूसरे जिलों के सहित अवध के नवाब के हाथ में आया। सन १८०१ में अंगरेजों ने उसको लेलिया।

सन १८५७ई० की तारीख १८ मई को मेरठ से एक रेजीमेंट बागी होकर मुरादाबाद में आई और गंगन पुल के पास पहुंची। बागी लोग मुजफ्फरनगर से बहुत खजाने लाए थे। मिष्टर विलसन २९ वें पलटन के एक दल के साथ उनके पास पहुंचा। बागियों में से ८ वा १० पकड़े गए और एक गोली से मारा गया और उनसे खजाना छीन लिया गया। दूसरे दिन बागियों

ने मुरादाबाद में प्रवेश किया । उनमें से एक गोली से मारागया और ४ कैदी बनाए गए, परंतु जब बरैली से बगावत की खबर पहुंची, तब सेना को अख्तियार में रखना असंभव हुआ । विलसनसाहब खजाना छोड़कर सिविलियनों और उन की स्त्रियों के सहित मेरठ को भाग गया। कुछ दिनों के पश्चात् मुरादाबाद पर फिर अंगरेजी अधिकार होगया।

# संभल।

मुरादाबाद शहर से २३ मील दक्षिण-पश्चिम सोत नदी से ४ मील पश्चिम मुरादाबाद जिले में संभल-तहसीली का सदर स्थान एक टीले पर संभल कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय संभल में ३७२२६ मनुष्य थे; (१८७१९ पुरुष और १८५०७ स्त्रियां) अर्थात् २३४७६ मुसलमान, १३५९४ हिंदू, ८८ जैन और ६८ कृस्तान।

संभल का वर्तमान कसबा पीछे का है। पुराने कसबे के स्थान में भालेश्वर और विकटेश्वर की तबाहियों के २ ढेर हैं। संभल सुंदर कसबा है। इस में अधिक मकान ईंटे के बने हैं और मुनसफी, तहसीली, पुलिस-स्टेशन, अस्पताल, गिर्जा, सराय और कई एक स्कूल हैं। यहां चीनी और कपड़े तय्यार होते हैं। गेहूँ इत्यादि गल्ले और घी यहां से दूसरे स्थानों में जाते हैं।

संभल में रेल नहीं गई है। कसबे और उसके आस पास पक्की सड़कें हैं। कच्ची सड़कें यहां से मुरादाबाद, बिलारी, अमरोहा, चंदौसी, बहजोई और हसनपुर गई हैं।

**इतिहास**—रुहेलखंड पूर्वकाल में पंचाला के अहर राज्य का हिस्सा था। अब तक अहर लोग मुरादाबाद जिले के दक्षिण पूर्व के परगनों पर कबजा रखते हैं। जान पड़ता है कि उन की राजधानी बरैली जिले में अहिच्छत्रा थी। यद्यपि प्रथमही से संभल प्रसिद्ध हुआ था, परंतु चीन के रहने

वाले हुए त्संग. ने ७ वीं शताब्दी में काशीपुर और अहिच्छता को देखा था, परंतु उसने संभल का हाल नहीं लिखा है।

मुसलमानी अधिकार के आरंभ ही से संभल कसबा स्थानीय गवर्नमेंट का सदर स्थान था। अकबर के राज्य के समय यह एक सरकार की राजधानी थी। बादशाह शाहजहाँ ने रुस्तमखाँ को कठार का गवर्नर नियत किया, जिस ने लगभग १६२५ ई० में मुरादाबाद को बसाया।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—महाभारत-( वनपर्व-१९० वां अध्याय ) संभल गांव के विष्णुयश नामक ब्राह्मण के गृह में विष्णु का कल्कि अवतार होगा। ( यह कथा देवी भागवत, मत्स्यपुराण, विष्णुपुराण और श्रीमद्भागवत में भी है )

गरुड़पुराण—( पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय ) संभलग्राम एक उत्तम स्थान है

अग्निपुराण ( १६ वां अध्याय ) विष्णुयश के पुत्र कल्कि भगवान होंगे। वह अस्त्र-शस्त्र धारण कर के म्लेच्छों का विनाश और ब्राह्मण आदि चारो वर्णों की यथोचित मर्य्यादा और ब्रह्मचर्य आदि चारों आश्रमों के सतमार्ग को स्थापन करेंगे। इस के उपरांत वह स्वर्ग में चलेजायगे, सत्ययुग प्राप्त होगा, और संपूर्ण जीव अपने अपने धर्म में तत्पर होजायंगे।

कल्किपुराण—( पहला अंश, दूसरा अध्याय ) जब कलियुग के दोषों से धर्म्म की बड़ी हानी होने लगी, तब इन्द्रादि देवता ब्रह्माजी के साथ गोलोक निवासी विष्णु के पास गए। ब्रह्मा ने देवताओं के हृदय की अभिलाषा विष्णु से कह सुनाई। बिष्णु भगवान ने संभलग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण की सुमती नामक स्त्री के गर्भ से वैशाख शुक्ल द्वादशी के दिन औतार लिया। कल्कि भगवान से पहिले कवि, प्राज्ञ और सुमंत नामक उनके तीन भ्राता उत्पन्न हुए थे।

( ३ अध्याय ) कल्कि भगवान ने विल्वोदकेश्वर शिव की बड़ी स्तुति की, जिससे शिव प्रकट हुए। भगवान शंकर ने कल्कि भगवान को कई वरदानों के अतिरिक्त एक घोड़ा जो गरुड़ के अंश से था, एक सर्वज्ञ शुक (तोता) और एक विकराल तलवार दी।

( ४ अध्याय ) एक समय शुक ने आकर कल्कि भगवान से कहा कि महाराज ! सिंहलद्वीप में राजा बृहद्रथकी पद्मावती नामक कन्या है, उसको शिवजी ने वर दिया है कि नारायण तुम्हारे पति होंगे; दूसरे जो पुरुष काम वासना से युक्त होकर तुमको देखेंगे; वे तत्कालही स्त्री होजायंगे। ( ५ वां अध्याय) बृहद्रथ ने कन्या के स्वयम्वर में बहुत बली राजाओं को बुलवाया। जब कन्या स्वयम्वर की सभा में प्राप्त हुई, तब राजागण उस के अपूर्व रूप को देख कामातुर हो उसकी ओर देखने लगे, वे लोग कन्या को देखतेही स्त्री रूप होगए, और अपने को स्त्री रूप देख कर पद्मावती की सखी बन गए।

(६ वां अध्याय) भगवान ने पद्मावती के लिये शुक को सिंहलद्वीप में भेजा।

(दूसरा अंश, पहला अध्याय) शुक ने पद्मावती के पास जाकर कल्किजी का वृत्तांत कहा। पद्मावती ने उन को लाने के लिये यत्नपूर्वक शुक को भेजा। शुक से पद्मावती का वृत्तांत सुन कल्किजी सिंहलद्वीप में गए।

( तीसरा अध्याय ) राजा बृहद्रथ ने भगवान को अपने महल में लेजाकर कन्यादान कर दिया। जो राजागण स्त्री रूप हो जाने पर पद्मावती की सखी हो गए थे, वे कल्कि भगवान की आज्ञानुसार रेवानदी में स्नान करने के उपरान्त फिर पुरुष हो गए।

( ५ पांचवां अध्याय ) विश्वकर्म्मा ने इन्द्र की आज्ञा से संभलग्राम में आकर महल आदि सब उत्तम राजसी सामान तय्यार कर दिए। संभलग्राम ७ योजन चौड़ा था। कल्कि भगवान पद्मावती सहित संभल में आए। कुछ दिनों के उपरान्त पद्मावती से जय और विजय नामक कल्किजी के २ पुत्र उत्पन्न हुए।

जब भगवान के पिता विष्णुयश अश्वमेधयज्ञ करने को उद्यत हुए, तब कल्कि भगवान दिग्विजय को निकले। पहले वह कीकटपुर को चले, जो अत्यंत विस्तार युक्त बौद्धों का प्रधान स्थान था। वहां वैदिक धर्म्म का अनुष्ठान नहीं होता। कीकटपुर के राजा का नाम जिन था। वह कल्किजी के आगमन को सुन दो अक्षौहिणी सेना ले युद्ध के लिए नगर से बाहर आया।

( सातवां अध्याय ) बड़े युद्ध के अनन्तर कल्कि जी की सेनाओं ने करोड़ों बौद्धों का नाश कर दिया। जब कल्किजी ने बौद्धों के राजा जिनको

मार डाला, तब राजा जिनका भाई शुद्धोदन लड़ने को आया। बड़े भयंकर युद्ध के उपरान्त शुद्धोदन रथ पर बैठा कर मायादेवी को ले आया। जब त्रिगुणरूपा मायादेवी को सन्मुख देख एक एक कर के प्रायः सब लोग गिर गए, कितने तेज हीन होकर काठ के पुतली के समान खड़े रह गए, तब सर्व व्यापी कल्कि भगवान मायादेवी के आगे स्थित हुए; उसी समय वह माया-देवी उनके शरीर में प्रवेश कर के लीन हो गई। बौद्ध सेना परास्त हुई।

( तीसरा अंश ५ वां अध्याय ) जब सत्ययुग सन्यासी वेष से कल्कि-भगवान के समीप आया, तब कल्कि जी ने कलियुग के नगर पर आक्रमण करने की इच्छा की।

(६ वां अध्याय) मरु ( सूर्य्यवंशी ) और देवापि ( चंद्रवंशी ) दोनों राजा कल्कि जी के पास आए। भगवान ने उनको विवाह करने की आज्ञा दी। दोनों राजा अपना २ विवाह कर असंख्य सेना लेकर भगवान के सन्मुख उपस्थित हुए। विशाखयूप राजा भी भारी सेना लेकर आए। कल्कि भगवान को १० अक्षौहिणी सेना हो गई। भगवान ने कलि पर चढ़ाई की। कलि अपनी सेना लेकर युद्ध के निमित्त अपनी राजधानी विशसन नगर से बाहर निकला।

(७वां अध्याय) अनंतर धर्म्म और सत्ययुग के भयंकर बाणों से तिरस्कार को प्राप्त हो कलियुग अपनी नगरी में भाग गया। भगवान की सेना कलि की सेना का विनाश करने लगी। धर्म्म ने सत्ययुग को साथ ले कलि की राजधानी विशसन नगर में प्रवेश किया। और बाणो की अग्नि से उस नगरी को भस्म कर दिया। जब कलि के सम्पूर्ण अंग जल गए, तब वह अकेला ही रोता हुआ गुप्त रीति से भारतवर्ष से अन्यत्र चला गया। इधर मरु ने शक और काम्बोजों का नाश कर दिया और देवापि राजा ने शबर चोल तथा बर्बरो को छिन्न भिन्न कर दिया। कल्कि भगवान ने कोक और विकोक दोनों असुरों को मार डाला। इस प्रकार भगवान धर्मद्वेषी शत्रुओं को जीत कर भल्लाट नगर को चले।

(८ वां अध्याय ) यद्यपि भल्लाट देश का राजा शशिध्वज भगवान का भक्त था, परन्तु वह अपना धर्म्म समुझकर युद्ध में प्रवृत्त हुआ। (९ वां अध्याय)

युद्ध के उपरांत शशिध्वज ने कल्कि भगवान को परास्त कर धर्म्म और सत्ययुग को अपने बगलों में दाबकर अपने गृह चला गया।

( १० वां अध्याय ) इस के पश्चात शशिध्वज ने रमा नामक अपनी पुत्री कल्कि भगवान को ब्याह दी।

( १४ वां अध्याय ) कल्कि भगवान ने मरु को अयोध्यापुरी का राज्य; सूर्यकेतु को मथुरापुरी का राज्य और देवापि को वारणावत में अरिस्थल, वृकस्थल. माकन्द, हस्तिनापुर और वारणावत इन पांच देशों का राज्य दिया, और आप संभल को चले आए। त्रिलोकी में सत्ययुग छा गया।

( १७ वां अध्याय ) कल्कि भगवान अखण्ड भूमण्डल भोगने लगे। भगवान की रमा नामक स्त्री के गर्भ से मेघमाल और बलाहक दो पुत्र उत्पन्न हुए। ( १८ वां अध्याय ) कल्किजी ने १००० वर्ष सम्भल में निवास किया। संभल में ६८ तीर्थों का निवास हुआ। ( १९ वां अध्याय ) कल्कि भगवान अपने चारो पुत्रों को राज्य देकर दोनों स्त्रियों समेत हिमालय में जाकर अपने विष्णु रूप में प्रवेश कर गए। दोनों स्त्रियां सती हो गईं। देवापि और मरु दोनों राजा प्रजा पालन और भूमण्डल की रक्षा करने लगे।

## रामपुर।

मुरादाबाद शहर से १८ मील पूर्व कोशिला नदी के बाएं किनारे पर पश्चिमोत्तर देश में एक देशी राज्य की राजधानी रामपुर एक छोटा शहर है। मुरादाबाद से रामपुर को पक्की सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रामपुर और छावनी में ७६७३३ मनुष्य थे, अर्थात् ४०६६० पुरुष और ३६०७३ स्त्रियां। इनमें ५३५५२ मुसलमान, २३०४४ हिन्दू, ९२ जैन और ४५ क्रूस्तान थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ४१ वां शहर है।

शहर के चारो ओर शहरपनाह की जगह पर ८ मील से १० मील तक के घेरे में करीबन गोलाकार चौड़ी और घनी बांस की झाड़ियां लगी हैं। आने जाने के लिये फाटक के स्थानों पर ८ जगह रास्ते हैं। जहां फौजी

सिपाही तैनात रहते हैं। शहर सुन्दर है, बहुतेरी अच्छी सड़कें हैं। बाजार में सुन्दर दूकानों की पंक्तियां हैं। घेरे के मध्य में जामा मसजिद और सफ्दर जंग स्क्वेयर; पश्चिमोत्तर दीवाने आम, खुरसिद मंजिल, ( जहां मेहमान युरोपियन टिकाए जाते हैं ) मच्छीभवन ( नवाब का खानगी महल ) और जनाना है। और शहर से उत्तर फैजुल्ला खां का मकबरा है। रामपुर में सुन्दर मट्टी के बरतन, तलवार और जेवर बहुत बनते हैं।

**रामपुर राज्य**—यह पश्चिमोत्तर देश के गवर्नमेन्ट के पोलिटिकल सुपरिंटेंडंट के आधीन रुहेल खण्ड में देशी राज्य है। इसके उत्तर और पश्चिम अंगरेजी राज्य में मुरादाबाद जिला; पूर्वोत्तर और पूर्व-दक्षिण बरैली जिला है। राज्य का क्षेत्र फल १०९९ वर्गमील है।

राज्य के दक्षिणी भाग में रामगंगा, उत्तरी भाग में कोशिला और नहाल नदियां बहती हैं। और उत्तरी सीमा पर जंगल में बहुधा बाघ मारे जाते हैं। देश समतल और उपजाऊ है। खेती करने वालों में पठान अधिक हैं। चीनी, धान, चमड़ा और कपड़े दूसरे देशों में भेजे जाते हैं। राज्य में ५ अस्पताल और १० स्कूल हैं। मजहबी शिक्षा के लिए रामपुर प्रसिद्ध है, बहुतेरे विद्यार्थी बङ्गाल, अफगानिस्तान और बोखारे से यहां आते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रामपुर राज्य में ५५८२७६ मनुष्य थे। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय रामपुर राज्य में ३ कसबे, १०७० गांव, १०३१७१ मकान, ५४१३१४ मनुष्य थे, अर्थात् २८५३५१ पुरुष और २५५९५५ स्त्रियां। इनमें ३०२१८१ हिन्दू और २३८१२५ मुसलमान थे। हिन्दुओं में ४७४६२ चमार, ४०१२५ लोधी, ३५३११ कुर्मी, २०८११ माली, १७१५१ काछी, १६०६५ कहार, १६०२१ ब्राह्मण, १५११३ अहर थे। मुसलमानों में केवल ५२८ सीया थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय राज्य के ३ कसबों में ५००० से अधिक मनुष्य थे। रामपुर में ७६७३३, तांडा में ८०७२ और शाहाबाद में ७८९६। सन् १८८०-८१ ई० में १५८६५७० रुपए राज्य से आमदनी हुई थी।

मामूली तरह से राज्य का सैनिक बल २८ तोपें, ३०० गोलन्दाज, ५७० सवार, ३०० फौजी पैदलपुलिस और ७३० अनेक प्रकार की पैदल हैं।

**इतिहास**- शाह आलम और हुसेनखां दो भाई पहिला रोहिला अफगान और १७ वीं शताब्दी के पिछले भाग में मोगल बादशाह के पास नौकरी के लिए आए और हिन्दुस्तान के इस भाग में बसे। शाह आलम के पुत्र दाउद खां ने महाराष्ट्रों की लड़ाई में वीरता दिखा कर बदाऊं के निकट इनाम में जमीन पाई। उसके गोद लिए हुए पुत्र अलीमहम्मद ने सन् १७११ ई० में नवाब की पदवी और रुहेलखंड का एक बड़ा भाग पाया। उस की मृत्यु होने के पश्चात वह मिलकियत बट गई। रामपुर की जागीर उस के छोटे पुत्र फैजुल्ला खां को मिली। सन् १७९३ में फैजुल्लाखां के मरने पर खानदान में झगड़ा उठा। छोटे पुत्र ने जागीर छीन ली। बड़ा पुत्र मारागया। अंगरेजों ने छोटे पुत्र को निकाल देने और बड़े पुत्र के लड़के अहमद अलीखां को पदस्थ करने के लिये अवध के नवाब को सहायता की। सन् १८०१ ई० में अंगरेजी सरकार ने रुहेलखंड अंगरेजी राज्य में मिला लेने के समय रामपुर के खानदान का कबजा मजबूत किया। सन् १८५७ के बलवे की खैर खाही में रामपुर के नवाब महम्मदयूसुफ अली खां को १२८५२० रुपए खिराज की भूमि मिली। सन् १८६४ में उसके पुत्र महम्मद कलबली खां जी. सी. एस. आई. सी. आई. ई. उत्तराधिकारी हुए, जिनको दिल्ली दरबार में पहिले से २ तोप बढ़ाकर १५ तोपों की सलामी मिलने का हुकुम हुआ। रामपुर के वर्तमान नवाब हमीदअली खां बहादुर १६ वर्ष की अवस्था के पठान हैं।

## धामपुर।

मुरादाबाद से ३८ मील (चंदौसी जंक्शन से ५० मील) पश्चिमोत्तर धामपुर का रेलवे स्टेशन है। धामपुर पश्चिमोत्तर देश के बिजनोर जिले में तहसीली का सदर स्थान एक छोटा कसबा है। चौड़ी सड़क के किनारों पर सुंदर दुकानें बनी हैं। उत्तर ओर तहसीली की इमारतें और दक्षिण एक

सराय है। धामपुर में लोहे और पीतल की वस्तु अच्छी बनती हैं; महीने में एक वार मेला होता है, और सप्ताह में दोबार बाजार लगता है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय धामपुर में ५७०८ मनुष्य थे; अर्थात् ३४५७ हिंदू, २१२१ मुसलमान और १३० जैन।

## विजनोर।

धामपुर से २४ मील पश्चिम (२९ अंश २२ कला ३६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश १० कला ३२ विकला पूर्व देशांतर में) पश्चिमोत्तर देश के रुहेलखंड विभाग में जिले का सदर स्थान गंगा के ३ मील वाएं विजनोर एक छोटा कसवा है।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय विजनोर में १६२३६ मनुष्य थे; अर्थात् ८००७ हिंदू, ७१४८ मुसलमान, २१० कृस्तान, ६१ जैन और १० सिक्ख।

चौड़ी सड़क कसबे के मध्य होकर गई है। कसबे में मामूली से अधिक ईंटे के मकान हैं। यहां कारोवार बहुत होता है। कसबे से चारों तरफ के देश में १ सड़क गई हैं। चीनी की तिजारत के लिये विजनोर प्रसिद्ध है। जनेऊ, छुड़ी और कपड़े वहां बहुत बनते हैं।

कसबे से ६ मील दक्षिण दारा नगर में कार्तिकी पूर्णिमा को गंगा स्नान का मेला होता है, जो ५ दिन रहता है। मेले में लगभग ४०००० यात्री आते हैं।

**विजनोर जिला**—इसके पूर्वोत्तर कमाऊं और गढ़वाल की पहाड़ियां, पश्चिम गंगा नदी, जो देहरादून सहारनपुर मुजफ़्फ़रनगर और मेरठ जिलों से इसको, अलग करती हैं; दक्षिण और दक्षिण पूर्व मुरादावाद, तराई और कमाऊं ज़िले हैं। जिले का क्षेत्रफल १८६८ वर्गमील है।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय विजनोर जिले में ७१३६६१ मनुष्य थे, अर्थात् ४१७६२७ पुरुष और ३७६०३४ स्त्रियां। इस जिले में लगभग दो तिहाई हिन्दू और एक तिहाई मुसलमान हैं। हिन्दुओं में एक लाख से अधिक चमार, ३० हजार से कम ब्राह्मण और ब्राह्मणों से कम राजपूत और

बनिया हैं। बिजनोर जिले में १३ कसबे हैं, नगीना (मनुष्य-संख्या सन् १८११ के अनुसार २२१५० ), नजीबाबाद ( ११४१० ), बिजनोर (१६२३६), शेरकोट (१५५८१), कीरतपुर (१४८२३), चांदपुर (१२२५६), निहटोर (१०८११), सेहरा, अफजलगढ़, मण्डावर, सहीसपुर, धामपुर, और जहालू।

इतिहास–सन् १४०० ई० में तैमूर ने बिजनोर में आकर, बहुत से निवासियों को कतल किया। अकबरके राज्य के समय संभल के सरकार का यह एक हिस्सा बना। सन् १८०१ में पड़ोस के दक्षणी देशके साथ बिजनोर जिला अंगरेजों के आधीन हुआ। पहिले यह मुरादाबाद जिले का एक भाग था। सन् १८१७ में बिजनोर एक अलग जिला बनाया गया। नगीने में जिला का सदर हुआ। सन् १८२४ में बिजनोर कसबा जिले का सदर स्थान बना।

सन् १८५७ की तारीख १३ वीं मई को बिजनोर में मेरठ के बलवे का समाचार पहुंचा। तारीख १ जून को नजीबाबाद का नवाब २०० हथियार बंद पठानों के सहित बिजनोर में आया। तारीख ८ को मुरादाबाद और बरैली में बलवा होने के पश्चात युरोपियन अफसरों ने बिजनोर को छोड़ दिया। वे लोग तारीख ११ को रुड़की में पहुंचे। नवाब हुकूमत करने वाला बना। तारीख६ अगस्त को बिजनोर जिले के हिंदुओं ने नवाब को परास्त किया, परन्तु तारीख २४ को मुसलमानों ने हिंदुओं को खदेरा। सन् १८५८ की तारीख २१ अप्रैल को अंगरेजी फौजों ने गङ्गा पार हो नगीना में आकर बागियों को परास्त किया। अंगरेजी अधिकार फिर नियत हुआ।

## नगीना।

धामपुर से १० मील ( चंदौसी से ६० मील ) पश्चिमोत्तर नगीना का रेलवे स्टेशन है। नगीना पश्चिमोत्तर देश के बिजनोर जिले में तहसीली का सदर स्थान एक कसबा है।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय नगीना में २२१५० मनुष्य थे; अर्थात् १४८०८ मुसलमान, ८१७० हिंदू, ७४ जैन, ६० कृस्तान और ३८सिक्ख।

पठानों ने सन् १७४८—१७७४ के बीच में नगीना को बसाया, जिन्होंने यहां एक क़िला बनाया, जिस में अब तहसीली का काम होता है। सन् १८१७ से १८२४ तक नगीना मुरादाबाद के नए जिले का सदर स्थान रहा। अब यह कपड़ा, कलमदान, आबनूस के कंघे, रस्सी; शीशे के बरतन के लिये प्रसिद्ध है। यहां की प्रधान सौदागरी चीनी की रफ़तनी है।

## नजीबाबाद।

नगीना से १४ मील ( चंदौसी जंक्शन से ७४ मील ) पश्चिमोत्तर नजीबाबाद का रेलवे स्टेशन है। नजीबाबाद पश्चिमोत्तर देश के बिजनोर जिले में मालिनी नदी की धारा के किनारे पर एक क़सबा और तहसीली का सदर स्थान है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नजीबाबाद में १९५१० मनुष्य थे; अर्थात् ९६४१ हिंदू, ९५२० मुसलमान, १८० जैन, ३८ सिक्ख और ३१ कृस्तान।

४ सड़कों के मेल के निकट कारोबार की प्रधान जगह है। पबलिक में मामूली सबडिविजनल कचहरियां, अस्पताल और गवर्नमेंट स्कूल हैं। यहां पीतल, तांबे और लोहे का काम; तोड़ेदार बंदूक, कंबल, कपड़े और जूते बनते हैं, फूल के बरतन सुंदर तैयार होते हैं, और सप्ताह में दो दिन बाजार लगता है।

बदरीनाथ के कुछ यात्री नजीबाबाद से कोटद्वार, बांगघाट, पौड़ी और श्रीनगर होकर बदरीक्षेत्र जाते हैं। यहां से पहाड़ी रास्ते से श्रीनगर ६८ मील है।

नजीबुद्दौला ने नजीबाबाद को बसाया, जिसने सन् १७५५ ई० में कसबे से एक मील पूर्व पत्थरगढ़ नामक पत्थर की सुंदर गढ़ी बनाई। कई एक क़मरों से घेरा हुआ उसका सुंदर मक़बरा और एक कोठी ( जो अब सराय के काम में आती है ) कसबे के भीतर उसका स्मारक चिन्ह है, उत्तर उसके भाई जहांगीर खां का मक़बरा है।

# आठवां अध्याय।

## ( पश्चिमोत्तर में ) हरिद्वार।

## हरिद्वार।

नजीबाबाद से २५ मील और (चंदौसी जंक्शन से ९९ मील) पश्चिमोत्तर लक्सर रेलवे का जंक्शन है, जिससे १६ मील पूर्वोत्तर हरिद्वार को रेलवे शाख गई है। नजीबाबाद और लक्सर के बीच में नजीबाबाद से १६ मील पश्चिमोत्तर गंगा पर रेलवे का पुल है।

रेलवे स्टेशन से $\frac{3}{4}$ मील दूर पश्चिमोत्तर देश के सहारनपुर जिले में सिवालिक पर्वत के सिलसिले के दक्षिणी पादमूल में समुद्र के जल से १०२४ फीट ऊपर गंगा नदी के दहिने किनारे पर ( २९ अंश ५७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश १२ कला ५२ विकला पूर्व देशांतर में हरिद्वार एक प्राचीन और प्रसिद्ध तीर्थ है, जो पूर्व काल में गंगाद्वार नाम से प्रख्यात था। अति प्राचीन ग्रंथ महाभारत और स्मृतियों में हरिद्वार का नाम गंगाद्वार लिखा है।

ज्वालापुर, कनखल और हरिद्वार तीनों मिल कर एक म्युनीसिपलिटी बनी है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इन में २९१२५ मनुष्य थे; अर्थात् १७८८६ पुरुष और ११२३९ स्त्रियां। इन में २२४७७ हिंदू, ६५५९ मुसलमान, ४५ जैन, ३८ कृस्तान और ६ सिक्ख थे। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय तीनों कसबों में २४६४८ मनुष्य थे; अर्थात् १५१९६ ज्वालापुर में, ५८३८ कनखल में और ३६१४ हरिद्वार में।

हरिद्वार में झुनझुनू वाले रायबहादुर सूर्यमल की, कश्मीर के महाराज की, बिलासपुर के राजा की और अन्य कई एक धर्मशाला हैं। इन में सूर्यमल की धर्मशाला उत्तम है, जिसमें मैं टिका था। यह धर्मशाला संवत् १९४७ ( सन् १९८० ई० ) में खुली। इसमें ३ किते हैं मध्य किते में बड़े आंगन के चारों

बगलों पर दोहरे मकान और दालान बने हैं; पूर्व के किते में रसोई बनाने की कोठरियां और पश्चिम के किते में कुछ मकान और पायखाने हैं। हरिद्वार में बहुतेरे देव मंदिर और ईंटे और पत्थर से बने हुए मुंड़ेरेदार मकान हैं। यहांके पवन पानी ठंढे हैं। यहां तीसरे दर्जे का पुलिसस्टेशन और एक पोस्टआफिस है, और बंदर बहुत रहते हैं। यहां के पंडे और बहुत से दुकानदारों के घर ज्वालापुर और कनखल में हैं। यहांके बहुतेरे चौपाओं के गले में चरने के समय घंटियां बांधी हुई देख पड़ती हैं। (भविष्यपुराण के ११ वें अध्याय) में लिखा है कि गौ के गले में अवश्य घंटा बांधना चाहिये। इससे उनकी शोभा होती है, कोई जीव उनके पास नहीं आते, और भुलाजाने पर घंटे के शब्द से गौ मिल जाती हैं)। कसबे के उत्तर की पहाड़ी के शिर पर एक छोटा मंदिर और सूर्यकुंड नामक कुंड है।

यात्रीगण हरिद्वार से गढ़वाल जिले में केदारनाथ और बदरीनाथ के दर्शन के लिये जाते हैं।

यहां हरिपैड़ी, कुशावर्त, बिल्वक, नीलपर्वत और कनखल ये ५ तीर्थ मुख्य हैं।

हरिपैड़ी–हरिद्वार के प्रधान घाट का नाम हरिपैड़ी है। घाट पर उत्तर ओर दीवार के नीचे हरि अर्थात् विष्णु का चरण चिन्ह है, जिसके निकट गंगेश्वर और शक्रेश्वर २ शिव लिंग हैं। यहां गंगा उत्तर से आई हैं। हरिपैड़ी घाट के सीढ़ियों से पूर्व गंगा के बीच धार में पानी से थोड़ी ऊंची पत्थर की मनोहर चट्टान है। घाट और चट्टान के बीच की गंगा ब्रह्मकुंड कहलाती है। ब्रह्मकुंड में मछली बहुत रहती हैं, जो आदमी से नहीं डरतीं। अनेक लोग इनको भोजन देते हैं। घाट से ऊपर पत्थर के अनेक सुंदर मकान और देवमंदिर बने हैं।

मेले के समय हरिपैड़ी घाट पर स्नान की बड़ी भीड़ होती है। पहिले घाट छोटा था। सन् १८१९ ई० में कई एक सिपाहियों के साथ ४३० आदमी स्नान के समय घाट पर धक्के से मरगए। उसके पीछे अंगरेजी सरकार ने घाट को बढ़ाकर १०० फीट चौड़ा और ६० सीढ़ियों का कर दिया, जो अब तक है।

घाट से ऊपर इस के आस पास छोटे छोटे मंदिर और कोठरियों में बहुतेरे देवता हैं, जिनमें अधिक गंगा की मूर्तियां और शेष शिव लिंग, महावीर, राम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियां हैं। मंगनलोग स्थान स्थान पर देव मूर्तियां आगे रख कर पैसे मांगते हैं, और राम लक्ष्मण और जानकी तथा केवल राम का स्वरूप बनाकर बैठते हैं। गंगा के किनारों और सड़कों पर मेले के समय भिक्षुक बहुत रहते हैं।

कुशावर्त—हरिपैंड़ी से दक्षिण गंगा का घाट पत्थर से बंधा हुआ है। इस स्थान को कुशावर्त कहते हैं। अनेक वर्ष हुए इंदौर के महाराज ने घाट से ऊपर पत्थर का लंबा मकान बना दिया, जिस में अब यात्री लोग पिंडदान करते हैं। मेष की संक्रांति के समय यहां पिंडदान की बड़ी भीड़ रहती है। हरिपैंड़ी के कुशावर्त तक कई एक पक्के घाट बने हैं। मेले के दिनों में गंगा के दोनों किनारों पर विशेष हरिद्वार की ओर यात्री टिकते हैं। और गंगा पर नाव का पुल बनता है।

श्रवणनाथ का मंदिर—हरिपैंड़ी से लगभग ६०० गज दक्षिण-पश्चिम हरिद्वार के संपूर्ण मंदिरों से सुंदर श्रवणनाथ सन्यासी का बनवाया हुआ शिव-मंदिर है। पत्थर से बने हुए शिखरदार मंदिर के मध्य में शिव की पंचमुखी मूर्ति है। मंदिर के पश्चिम बड़ा और पूर्व छोटा जगमोहन है। बड़े जगमोहन के खंभे में पुतलियां बनी हैं। और मध्य में ५ फीट लंबा और ४$\frac{१}{२}$ फीट ऊंचा मार्बुल का नंदी (बैल) बैठा है, जिस के बैठक के पत्थर पर संवत् १८८६ खोदा हुआ है। मंदिर के चारों ओर कई एक छोटे मंदिर और ऊंचे मकान हैं, एक मंदिर में शिवलिंग और दूसरों में काल भैरव, गंगाजी, महावीरजी, श्रीकृष्णचंद्र आदि देवता, और एक कोठरी में मंदिर के बनाने वाले श्रवण-नाथ की मार्बुल की मूर्ति है। मंदिर के खर्च के लिये कई एक गांव लगे हुए हैं।

श्रवणनाथ के मंदिर से पूर्व बीकानेर के महाराज का बनवाया हुआ गंगाजी का शिखरदार बड़ा मंदिर है, जहां महाराज की ओर से सदावर्त जारी है।

बिल्वक तीर्थ—हरिपैंड़ी से १ मील पश्चिमोत्तर पहाड़ी के नीचे बिल्वक

तीर्थ है। यहां एक चबूतरे पर नीम के वृक्ष के निकट ( जहां पहिले बेल का वृक्ष था ) विल्वकेश्वर शिवलिंग है, जिसके समीप छोटे मंदिर में पीछे के स्थापित विल्वकेश्वर शिवलिंग, एक गुफा में विश्वेश्वर शिवलिंग, दुर्गादेवी, और गणेश की मूर्तियां हैं, और दूसरी ओर पहाड़ी के नीचे गौरीकुंड नामक कूप है, जिसका जल लोटे डोरी से निकाल कर यात्री लोग आचमन करते हैं।

गंगा—गंगानदी हरिद्वार में पर्वत से बाहर निकली है, इस लिये हरिद्वार पहिले गंगाद्वार करके प्रसिद्ध था। गंगा भारतवर्ष की सब नदियों में प्रधान और सब से अधिक पवित्र है। यह हिमालय में गंगोत्तरी पहाड़ से निकल कर दक्षिण और पूर्व को लगभग १५०० मील बहने के उपरांत अनेक प्रवाहों से बंगाले की खाड़ी में गिरती है। राजमहल से आगे इस की दो धारा होगई हैं, उनमें जो चंदरनगर, हुगली और कलकत्ता होकर दक्षिण को बहती है, वह हुगली और भागीरथी कहलाती है, और जो फरीदपुर और ग्वालनदी होकर पूर्व को गई है वह पद्मा या पद्दा कहलाती है। हरिद्वार, फर्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर, चुनार, बनारस, गाजीपुर, बक्सर, दानापुर, पटना, मुंगेर, भागलपुर, राजमहल इत्यादि शहर और कसबे गंगा के तट पर हैं। ८ बड़ी नदियां इस क्रम से गंगा में मिली हैं। (१) रामगंगा ( लंबान में ३०० मील ) फर्रुखाबाद के नीचे, (२) यमुना ( लंबान में ८६० मील ) इलाहाबाद के पूर्व, (३) गोमती ( लंबान में ५०० मील ) बनारस से नीचे, (४) सरयू ( लंबान में ६०० मील ) छपरा से ७ मील पूर्व, (५) सोन ( लंबान में ४६४ मील ) गंगा और सरयू के संगम से पूर्व, (६) गंडकी ( लंबान में ४०० मील ) पटना से उत्तर हरिहरक्षेत्र के निकट, (७) कोशी ( लंबान में २२५ मील ) भागलपुर से नीचे, और (८) ब्रह्मपुत्र ( लंबान में १७०० मील ) फरीदपुर के पास। इन नदियों में से सोन दक्षिण की ओर विंध्य पहाड़ से और ७ नदियां हिमालय से निकल कर उत्तर की ओर से आकर गंगा में मिली हैं। हरिद्वार प्रयाग और गंगासागर में सब जगहों से गंगा स्नान का महात्म्य अधिक है। ( गंगा की उत्पत्ति और माहात्म्य का वृत्तांत आगे की प्राचीन कथा में देखो )

**हरिद्वार का मेला**—मेष की संक्रांति को गंगा प्रथम प्रकट हुई थी, इस लिये उस तिथि में प्रति वर्ष हरिद्वार में गंगा स्नान का बड़ा मेला होता है, जिसमें घोड़ों की खरीद बिक्री बहुत होती है, मेले में देशी सवारों के लिए सरकार बहुत घोड़े खरीदती है, युरोपियन और देशी बहुत प्रकार की वस्तु बिकती है और लग भग १०००० आदमी एकत्र होते हैं। प्रति अमावास्या को विशेष कर के सोमवती अमावास्या और महावारुणी आदि पर्वों में हरिद्वार में गंगा स्नान की भीड़ होती है। १२ वर्ष पर जब कुंभ राशि के बृहस्पति होते हैं, तब हरिद्वार में कुंभ योग का बड़ा मेला होता है। उस समय नागा, सन्यासी, वैष्णव, उदासीन, ब्रह्मचारी, दंडी, परमहंस, राजा, जिमीदार, गृहस्थ इत्यादि लगभग ३००००० यात्री एकत्र होते हैं। कुंभ योग का मेला संवत् १९४८ (सन् १८९१) में मेष की संक्रांति को था।

पहिले कुंभ योग के समय प्रत्येक संप्रदाय के यात्रियों में प्रथम स्नान करने के लिये बड़ा झगड़ा होता था। सन् १७६० ई० से स्नान के अंतिम दिन तारीख १० वी अप्रैल को सन्यासी और बैरागियों में लड़ाई हुई, जिस में लग भग १८०० आदमी मारे गए। सन् १७९५ में सिक्ख यात्रियों ने ५०० सन्यासियों को मारडाला।

**मायापुर**—हरिद्वार से १ मील दक्षिण-पश्चिम गंगा के दहिने, पवित्र सप्तपुरियों में से एक, और हरिद्वार की पुरानी बस्ती मायापुर हीन दशा में है। इसमें बहुत पुराने ३ मंदिर हैं, पहिला पूर्वोत्तर ज्वालापुर जाने वाली सड़क के पास मायादेवी का, दूसरा भैरव का और तीसरा दक्षिण-पश्चिम नारायण शिला का। मायादेवी का मंदिर, जो १० वीं वा ११ वीं शताब्दी का बना हुआ होगा, पत्थर का है। मायादेवी के ३ शिर और ४ बांह हैं, जिसके निकट ८ भुजा वाले शिव की मूर्ती और बाहर नंदी बैल है। नारायण शिला का छोटा मंदिर ईंटे से बना हुआ है, जिसके दक्षिण-पश्चिम राजा वेणु की उजड़ी पुजड़ी गढ़ी है। मायापुर में टूटे हुए ईंटों के सहित कई एक ऊंचे टीले हैं, जिन में सबसे बड़ा नहर के पुल के पास है। यह स्थान पुराना है। अनेक प्रकार के पुराने सिक्के समय समय पर यहां पाए जाते हैं।

**गङ्गा की नहर**—मायापुर और कनखल के बीच में मायापुर के निकट सन् १८५५ ई० में गंगा से नहर निकाली गई, जो यहां से ६३५ मील पर कानपुर में जाकर फिर गंगा में मिली है। यहां गंगा के दहिने नहर के पुल में १० फाटक और गंगा के पुल में ७ फाटक बने हैं। सूखी ऋतुओं में नहर के कुल फाटक और गंगा के दो तीन फाटक खुले रहते हैं। नहर के काम से जो अधिक पानी होता है, वह गंगा पुल के फाटक से कनखल की ओर बहता है।

**नील परबत**—मायापुर से दक्षिण गंगा पर लकड़ी का पुल है, जिसको लांघ कर नीलपर्वत को जाना होता है। मेले के दिनों में हरिपैंड़ी के निकट नावों का पुल बनता है। यात्रीगण गंगा पारहो नीलपर्वत पर जाते हैं। लकड़ी के पुल से नीलपर्वत के पास तक $1\frac{1}{2}$ मील गंगा के विस्तार में पत्थर के टुकड़ों और ढोकों पर चलना होता है। विविध प्रकार और विविध रंग के छोटे छोटे गोलाकार पत्थर देख पड़ते है, कनखल के सामने दक्षिण गंगा के बाएं नीलपर्वत नामक एक पहाड़ी है, जिसके नीचे की गंगा की एक धारा को नीलधारा कहते हैं, जो कभी कभी सूखजाती है। पहाड़ी के नीचे गौरीकुंड के पास एक नए मंदिर में गौरीशंकर शिवलिंग और ऊपर एक छोटे मंदिर में नीलेश्वर शिव लिंग है। गौरीकुंड का जल कभी कभी सूख जाता है।

नीलेश्वर से २ मील दूर चंडी पहाड़ी की चोटी पर चंडी का मंदिर है। मार्ग चढ़ाई का है। रास्ते में पानी नहीं मिलता। मंदिर दूर से देख पड़ता है।

**कनखल**—हरिद्वार की हरिपैड़ी से ३ मील दक्षिण गंगा के दहिने; अर्थात् पश्चिम किनारे पर कनखल एक क़सबा है। कनखल नाम का भावार्थ यह है कि कौन ऐसा खल है कि यहां स्नान करने से उस की मुक्ति न होगी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कनखल में ५८३८ मनुष्य थे; अर्थात् ५५०२ हिंदू, २८४ मुसलमान, ४१ जैन और ११ दूसरे। हिंदुओं में खास कर

ब्राह्मण और हरिद्वार के पंडे हैं, जो केवल ज्वालापुर के ब्राह्मणों से विवाह का संबंध करते हैं। हरिद्वार-म्युनीसिपलिटी का एक हिस्सा कनखल है। यहां के प्रायः सब मकान ईंटे से बने हैं। यहां पुलिस की एक चौकी, बाजार और कई एक सदावर्त हैं। और बंदर बहुत रहते हैं। कनखल सन्यासियों का प्रधान स्थान है। यहां इन लोगों के बहुत मठ हैं।

कनखल के मंदिरों में इस क्रम से दर्शन होता है। (१) गंगा के तीर सती घाट के निकट पूर्व समय की सतियों के छोटे छोटे अनेक स्थान और एक मंदिर में मोटेश्वर शिवलिंग, (२) एक रानी के बनवाए हुए सुन्दर शिखरदार मंदिर में राम, जानकी, राधा, कृष्ण, गंगा आदि की मूर्तियां और दूसरे मंदिर में शिव लिंग, (३) एक मंदिर में राम जानकी की मूर्तियां, (४) एक बड़ा शिव मंदिर, (५) एक शिव मंदिर और, (६) वेदव्यास का मंदिर है।

दक्षेश्वर शिव का मंदिर कसबे के दक्षिण है, जहां सती जल गईं, और महादेवजी ने दक्ष के यज्ञ का नाश किया। यह मंदिर कनखल के मंदिरों में प्रधान है। मंदिर छोटा बिना सिखर का है। इसके पश्चिम प्रधान द्वार और पूर्व भुएवरा ऐसी खिड़की है। मेलों के समय यात्रीगण खिड़की से मंदिर में प्रवेश करते हैं, और पश्चिम के द्वार से निकलते हैं। दक्षेश्वर शिवलिंग के ऊपर कुछ गहिरा है। मंदिर के दहिने अर्थात् उत्तर वीरभद्र और भद्र काली की छोटी मूर्तियां और पीछे सती कुंड है, जिस से यात्री लोग विभूति अपने घर लाते हैं। कुंड के ऊपर ४ पायों पर छोटा गुंबज है। मन्दिर और कुंड के मध्य में नंदी की ५ पुरानी मूर्तियां हैं। मन्दिर के आस पास तीन चार छोटे मन्दिरों में शिवलिंग और एक दालान में ५ हाथ से अधिक बड़े महावीर हैं।

ज्वालापुर—हरिद्वार से ४ मील पश्चिम गंगानहर के उत्तर सहारनपुर जिले में ज्वालापुर एक कसबा है, जो हरिद्वार-म्युनीसिपलिटी का एक भाग बनता है। हरिद्वार के रेलवे स्टेशन से ज्वालापुर का रेलवे स्टेशन २ मील है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ज्वालापुर में १५१९६ मनुष्य थे; अर्थात् ९८७८ हिंदू, ५३१४ मुसलमान और ८ कृस्तान। हिंदुओं में बहुतेरे ब्राह्मण हरिद्वार के पंडे हैं। ज्वालापुर कनखल और हरिद्वार से बड़ा है। इस में प्रायः सब मकान पत्थर और ईंटे से बने हैं, और पुलिसस्टेशन, पोष्टआफिस, स्कूल और अस्पताल हैं।

**रानीपुर का पुल**—ज्वालापुर से २ मील रानीपुर से आगे पुल तक बालू की सड़क है, यहां एक नदी के नीचे गंगा की नहर बहती है। पुलके नीचे १० मेहराबी होकर, जो लग भग ८० गज में बनी है, नहर का पानी पूर्व से पश्चिम जोर शोर से गिरता है। पुल के ऊपर उत्तर से दक्षिण नदी बहती है, जिस का जल गरमी के दिनों में सूख जाता है। नदी के पानी के रुकाव के लिये नहर के ऊपर नदी के बगलों में लग भग ६० गज फासिले पर पूर्व और पश्चिम ऊंची दीवार बनी है, जिन पर आदमी चलते हैं और दोनों छोरों पर चढ़ने उतरने के लिये सीढ़ियां हैं।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—व्यास स्मृति (चौथा अध्याय) मनुष्य गंगाद्वार तीर्थ कर के सब पापों से छूट जाता है।

**महाभारत**—(आदि पर्व्व-१३१ अध्याय) गंगाद्वार में गंगा के किनारे घ्रिताची अप्सरा को देखने पर महर्षि भरद्वाज का वीर्य्य गिर पड़ा, जिस से द्रोण का जन्म हुआ (२१५) अध्याय) अर्जुन एक दिन गंगाद्वार में गंगा स्नान कर रहे थे, उस समय पाताल की रहनेवाली नाग-राजपुत्री उलूपी उन को जल में खैंच लेगई। अर्जुन ने नाग पुत्री के घर में एक राती रह कर उस से विहार किया (जिस से पीछे एक पुत्र जन्मा)।

(वनपर्व ८४ अध्याय) गंगाद्वार के कोटि तीर्थ में स्नान करने से पुण्डरीक यज्ञ का फल मिलता है। आगे सप्तगंगा, त्रिगंगा, और शक्रावर्त तीर्थों में जाकर विधिवत् पितर और देवताओं की पूजा करने से उत्तम लोक मिलते हैं। वहां से चल कर कनखल में स्नान करे, जहां तीन दिन रहने से पुरुष को अश्वमेधयज्ञ का फल और स्वर्ग लोक मिलता है। (८५ अध्याय) गंगा में जहां स्नान करे वहांही कुरुक्षेत्र स्नान के समान फल होता है, परन्तु कनखल

में स्नान करने से विशेष फल मिलता है। (९० अध्याय) उत्तर दिशा में वेग से पहाड़ को तोड़ कर गंगा निकली है। उस स्थान का नाम गंगाद्वार है। उसी देश में ब्रह्मर्षियों से सेवित सनत्कुमार का स्थान पवित्र कनखल तीर्थ है। (१३५ अध्याय) सब ऋषियों के प्यारे कनखल तीर्थ में महानदी गंगा बहरही है। पूर्व समय में भगवान सनत्कुमार वहां सिद्ध हुए थे। (शल्य पर्व्व-३८ अध्याय) दक्षप्रजापति ने जब गंगाद्वार में यज्ञ किया था, तब सुरेणुनामक सरस्वती वहां आई थी, जो शीघ्रता से वह रही है।

(शान्ति पर्व्व २८२ अध्याय) दक्षप्रजापति ने गंगाद्वार में यज्ञ आरंभ किया। इन्द्रादि देवताओं ने गंगाद्वार में गमन किया। शैल-राज-पुत्री देवताओं को जाते हुए देख कर पशुपति से बोली, कि हे भगवन्! ये इन्द्रादि देवता कहां जारहे हैं। महादेव बोले दक्षप्रजापति ने अश्वमेधयज्ञ आरंभ किया है। देवता लोग उसी यज्ञ में गए हैं। पार्वती बोली आप ने किस लिये उस यज्ञ में गमन नहीं किया। महादेव बोले पहले समय में देवताओं ने जो अनुष्ठान किया था, उन में से किसी यज्ञ में हीं मेरा भाग कल्पित नहीं हुआ। पूर्व अनुष्ठानपद्धति के क्रम से देवता लोग धर्म के अनुसार मुझे यज्ञ भाग-प्रदान नहीं करते। भवानी बोली कि हे भगवन्! आप सब भूतों के बीच अत्यन्त प्रभाव से युक्त हैं, और तेज, यश, श्री, सम्पत्ति, सब से ही पूर्ण और अजेय हैं. इस लिये आप के यज्ञभाग के प्रतिषेध से मुझे बहुत ही दुःख उत्पन्न हुआ है, और सब शरीर शिथिल होरहा है। देवी ने पशुपति से ऐसा कह कर मौनावलम्बन किया।

अनन्तर महा तेजस्वी महादेव देवी के हृदय के चिकीर्षित विषय को जान-कर, योगबल अवलम्बन करके भयंकर अनुचरों के सहारे उस यज्ञ को विध्वंश करने के लिये उद्यत हुए। भूतों के बीच किसी किसी ने अत्यन्त दारुण शब्द करना आरंभ किया, कोई विकट रूप से हसने लगे, किसी ने उस यज्ञस्थल में रुधिर प्रवाह से हव्यवाह को पूरित कर दिया, कोई कोई प्रमथगण यज्ञ के यूपों को उखाड़ कर घूमने लगे, और किसी किसी ने अपने मुख से परिचारकों को ग्रास कर लिया, अनन्तर यज्ञ ने हरिण रूप धर कर आकाश की ओर गमन किया।

शूलपाणि ने धनुष वाण ग्रहण करके उस का पीछा किया। उस के अनन्तर क्रोध के कारण महादेव के ललाट से महाघोर पसीने की बूँद प्रकट हुई। बूँद के पृथ्वी पर गिरतेही महाअग्नि प्रकट होगई, उस अग्नि से एक भयंकर पुरुष उत्पन्न हुआ। वह यज्ञ को इस प्रकार जलाने लगा, जैसे अग्नि तृण समूह को भस्म करती है। उस ने सब भांति से देवताओं और ऋषियों की ओर दौड़ कर उपद्रव मचाना आरंभ किया। देवता लोग डर कर दशों दिशाओं में भाग गए। उस समय उस पुरुष के भ्रमण करने से पृथ्वी अत्यन्त ही विचलित हुई, और सारा जगत हाहाकार करने लगा। ऐसा देख कर ब्रह्मा महादेव के निकट उपस्थित हुए ब्रह्मा बोले हे प्रभो! सब देवता तुम्हे यज्ञ का भाग प्रदान करेंगे, तुम क्रोध परित्याग करो। जो पुरुष तुम्हारे स्वेद बिन्दु से उत्पन्न हुआ है, वह लोक में ज्वर नाम से विख्यात होगा। तुम्हारे ज्वर के तेज को धारण करने में सारी पृथ्वी भी समर्थ नहीं है, इस लिये इस ज्वर को कई प्रकार विभक्त करो। शिव ने ब्रह्मा से कहा कि ऐसाही होगा। महादेव प्रजा पति के दिए हुए यथा उचित यज्ञ भाग को पाकर उत्साह युक्त हुए। उन्हों ने सब प्राणियों की शान्ति के निमित्त ज्वर को अनेक प्रकार से विभक्त किया।

(२८३ अध्याय) जनमेजय बोले हे ब्रह्मन्! वैवस्वत मन्वन्तर में प्रचेता के पुत्र दक्षप्रजापति का अश्वमेध यज्ञ किस प्रकार विनष्ट हुआ था, और दक्ष ने शिव की कृपा से पुनर्वार किस प्रकार से यज्ञ को पूर्ण किया था। वैशम्पायन मुनि बोले कि पूर्व समय में दक्षप्रजापति ने गंगाद्वार में यज्ञ किया। आदित्य वसु, रुद्र, साध्य आदि सब देवता इन्द्र के सहित वहां पर आए थे। ऋषिगण भी पितरों तथा ब्रह्मा के सहित वहां इकट्ठे हुए थे। निमंत्रित देवतावृन्द निजनिज स्त्रियों के सहित विमानों में निवास करते हुए विराजते थे। उस समय दधीचि क्रुद्ध होकर बोले कि जिस यज्ञ में भगवान रुद्र पूजित न हों, वह यज्ञ अथवा धर्म नहीं है; सब काही सर्वनाश उपस्थित हुआ है। दधीचि ध्यान युक्त नेत्र से भगवान महादेव तथा देवी का दर्शन किया और योगबल से यह सब देख कर विचारा कि इस यज्ञ में शंकर नहीं निमंत्रित हुए, इस से क्रुद्ध

दूर पर मुझे निवास करना उचित है। वह ऐसा निश्चय कर वहां से पृथक् हो बोले कि देखो यज्ञ भोक्ता पशु पति आ रहे हैं। जब महादेव इस यज्ञ में निमंत्रित नहीं हुए तब मुझे बोध होता है कि सब देवताओं ने आपस में सलाह कर के एकता की है। जो हो दक्ष का यह वृहत यज्ञ किसी प्रकार सिद्ध न होगा। दक्ष बोले मैं ने सुवर्ण पात्र में विधि से हवि-स्थापित करके यज्ञपति विष्णु के उद्देश्य से समर्पण की है विष्णु यज्ञ भाग ग्रहण करने के अधिकारी हैं, इस लिये उन के उद्देश्य से आहुति देनी विहित है।

देवी बोली मैं किस प्रकार दान, नियम, वा तपस्या करूं, जिस से कि मेरे पति भगवान शंकर इस समय आधा वा तीसरा भाग पावें। भगवान शिव ने निजपत्नी के ऐसे वचन सुन कर देवी को समझाया और क्रोध युक्त हो निज मुख से ज्वालमाला संयुक्त शरीरवाले अनेक प्रकार के शस्त्रधारी एक अद्भुत भूत को उत्पन्न किया। और उस को दक्ष के यज्ञ विध्वंस करने की आज्ञा दी। महा काली महा देव की आज्ञा लेकर उस की अनुगामिनी हुई। भगवान महेश्वर ने क्रोध स्वरूप धारण कर के वीरभद्र नाम से विख्यात हुए। उन्हों ने निज रोम कूपों से रौम्य नामक गणेश्वरों को उत्पन्न किया। वे सब रौद्रगण दक्ष-यज्ञ को विध्वंस करने के लिये यज्ञस्थल में पहुंचे। उन के भयंकर शब्द से देवता लोग भयभीत हुए और पृथ्वी कांपने लगी। रुद्रगण सब को जलाने तथा उन के ऊपर प्रहार करने में प्रवृत्त हुए। किसी किसी ने यज्ञ यूपों को उखाड़ा, कोई कोई यज्ञ स्थल के सब लोगों को मर्दन करने लगे, गणों ने दौड़ कर यज्ञपात्रों और सब सामानों को छितर बितर कर दिया, और वीर-भद्र यज्ञ का सिर काट कर प्रसन्न हो भयंकर नाद करने लगे। अनन्तर ब्रह्मा आदि देवगण और दक्ष ने हाथ जोड़ कर कहा कि आप कौन है. वीरभद्र बोले मैं रुद्र के कोप से उत्पन्न होकर वीरभद्र नाम से विख्यात हूं। और ये देवी के क्रोध से प्रकट हो कर भद्रकाली नाम से विख्यात हुई हैं। हे विप्रेंद्र! अब तुम उमा पति की शरण में जाओ। महादेव का क्रोध भी उत्तम है।

( २८४ अध्याय ) दक्ष ने शिव की एक बहुत बड़ी स्तुति की, जिस से महादेव अत्यन्त प्रसन्न हुये और बोले कि हे दक्ष! तुम हमारे निकटवर्ती

होगे। तुम इस यज्ञ में विघ्न होने से दीनता अवलम्बन मत करो। मैं ने पूर्व कल्प में तुम्हारा यज्ञ विध्वंस किया था, इस से सब कल्पों के ही समान-रूपता के कारण इस बार भी तुम्हारे यज्ञ का नाशक हुआ। तुम अपना मानसिक शोक परित्याग करो। महादेव ऐसा कह कर पत्नी और अनुचरों के सहित अंतर्द्धान हो गये।

( अनुशासन पर्व्व—२५ अध्याय ) गंगाद्वार, कुशावर्त्त, विल्वक, नील पर्वत और कनखल इन पांच तीर्थों में स्नान करने से मनुष्य पाप रहित होकर सुरलोक में गमन करता है।

( आदि ब्रह्म पुराण के ३८ वें और ३९ वें अध्याय में गंगाद्वार के वैवस्वत मन्वंतर के दक्षयज्ञ विध्वंश की कथा ऊपर लिखी हुई महाभारत की कथा के समान है )।

आदि ब्रह्मपुराण—( ३३ वां अध्याय ) एक समय दक्ष ने अपने यज्ञ में सब कन्याओं को बुलाया, परंतु सब कन्याओं में बड़ी सती को रुद्र के वैर से नहीं निमंत्रण दिया। जमाई और श्वशुर के इस वैर को जान कर भी सती दक्ष के यज्ञ स्थान में गई। दक्षप्रजापति ने सब कन्याओं को अच्छी तरह से सन्मान किया, परंतु सती से बात भी नहीं पूछी। तब सती महादेव जी का ध्यान कर अपने शरीर से अग्नि उत्पन्न कर के भस्म हो गई।

महादेव जी सती की मृत्यु सुन कर क्रोध युक्त हो दक्ष से बोले कि हे दक्ष! तूने निरपराध सती का अपमान किया, इस लिये तू सब महर्षियों के सहित दूसरा जन्म पावेगा। चाक्षुष मन्वन्तर में सब ऋषि जन्म लेंगे और तू प्रचेताओं का पुत्र होगा। मैं वहां भी तेरे कर्मों में विघ्न करूंगा। दक्ष ने महादेव को शाप दिया, कि तुझको देवताओं के संग ब्राह्मण लोग यज्ञों में न पूजेंगे और स्वर्गवासी तेरे लिये होम भी न करेंगे। तब स्वर्ग को त्याग कर बहुत युगों तक इसी लोक में निवास करेगा।

लिंगपुराण—( ९९ अध्याय ) दक्षप्रजापति अपने यज्ञ में शिव की निन्दा करने लगा। सती ने अपने पिता के मुख से शिव की निन्दा सुन कर योग मार्ग से अपना शरीर दग्ध कर दिया। ( १०० अध्याय ) हिमालय पर्वत में

हरिद्वार के समीप कनखल तीर्थ में दक्ष का यज्ञ हो रहा था। वीरभद्र ने वहां जाकर विष्णु आदि देवताओं को परास्त कर दक्ष का सिर काट अग्नि में दग्ध कर दिया, इत्यादि।

शिवपुराण—(दूसरा खण्ड-२२ वां अध्याय) दक्षप्रजापति यज्ञ करने की इच्छा से कनखल तीर्थ में गया। उसने सब मुनि और सब देवताओं को बुलाया। उस समय सती जी गंधमादन पर्वत पर अपनी सखियों समेत लीला कर रही थीं। वह चन्द्रमा को रोहिणी समेत दक्ष के यज्ञ में जाते हुए देख कर शिव के पास गईं (२३ वां अध्याय) और शिव से बोलीं कि आप मुझे अपने साथ लेकर मेरे पिता की यज्ञ में चलिए ब्रह्मा विष्णु आदि सब यज्ञ में पहुंचे हैं। शिव बोले कि दक्ष ने हमको निमंत्रण नहीं भेजा और वैर रख कर हमारा अनादर किया, इस लिये वहां जाना उचित नहीं है। शिव ने बहुत प्रकार से सती को समझाया पर जब सती न मानीं, तब उन्हीं ने सती को नन्दी पर सवार कराकर ६०००० गणों के साथ विदा किया। सती बड़ी धूम धाम से दक्ष के यज्ञ में जा पहुंची। (२४ वां अध्याय) सती यज्ञ शाला में पहुंची, पर किसी ने बात तक न पूछी। जब सती ने देखा कि यज्ञ में सब का भाग है, पर शिव का नहीं; तब मन में महाक्रोध किया। वह विष्णु आदि देवता, भृगु आदि ऋषिगण और दक्ष को धिक्कारने लगी। ऐसी बातें सती की सुन कर दक्ष ने शिव की बहुत निन्दा की। सती दक्ष की बातों का यथा योग्य उत्तर देकर उत्तर दिशा में बैठ गईं। उसने योग धारण कर युक्तिपूर्वक आसन लगा, प्राणायाम किया और अग्नि और वायु को प्रकट करके अपने शरीर को जला दिया। (२५ वां अध्याय) शिव के २०००० गण उसी स्थान पर मर गए। जो गण शेष रह गए थे, उन्हों ने जाकर शिव से यह वृत्तान्त कह सुनाया। शिव ने अपने सिर से एक जटा उखाड़ कर पहाड़ पर मारी। उस जटा से टूट कर दो टुकड़े अलग अलग हो गए। जटा की जड़ से वीरभद्र उपजा। जिसने अपने शरीर के रोमों से बहुत गण उपजाये और दूसरे टुकड़े से महाकाली उपजी, जिस के साथ करोड़ों भूत प्रेतादि प्रकट हुए। वीरभद्र शिव की आज्ञा पाकर करोड़ों सेना और काली

को साथ लेकर चला ( २६ वां अध्याय ) यह बड़ी सेना कनखल के समीप जा पहुंची। ( २८ वां अध्याय ) इन्द्र वीरभद्र की सेना से परास्त हुआ। ( २९ वां अध्याय ) विष्णु सब देवताओं को साथ ले वीरभद्र से लड़ने लगे। अन्त में ब्रह्मा के समझाने पर विष्णु जी अपने लोक को चले गए। ( ३० वां अध्याय ) यज्ञ हरिण रूप धारण कर के भाग चला, परंतु वीरभद्र ने पकड़ कर उसका सिर काट यज्ञ कुण्ड में डाल दिया। इसके पश्चात् उसने दक्ष का सिर तोड़ कर अग्नि में जला डाला और शिव के समीप जाकर यज्ञ विध्वंश का बृतान्त कह सुनाया। ( ३२ वां अध्याय ) ब्रह्मा विष्णु आदि सब देवताओं ने कैलाश पर्वत पर जाकर शिव की स्तुति की वे बोले कि आप यज्ञ में चल कर अपना भाग अंगीकार कीजिये। ( ३५ ) सब देवताओं के साथ शिवजी दक्ष के यज्ञ में गए। जब महादेव ने दक्ष के शरीर में बकरे का सिर लगा दिया, तब वह उठ कर बकरे की जिह्वा से शिव की स्तुति करने लगा। ( ३६ वां अध्याय ) शिव की आज्ञा से एक बड़ी नवीन सभा बनाई गई। मुनीश्वरों ने दक्ष को यज्ञ कराया।

( ८ वां खण्ड—१५ वां अध्याय ) कनखल क्षेत्र में, जहां शिव जी ने दक्ष यज्ञ विध्वंश कराया, उसी स्थान पर वह लिंग रूप से स्थित हुए और दक्षेश्वर नाम से प्रसिद्ध हैं। उसके निकट सती कुण्ड है।

( वामनपुराण के चौथे अध्याय में वाराह पुराण के २१ वें अध्याय में और पद्मपुराण के ५ वें अध्याय में सती के शरीर त्यागने की कथा भिन्न भिन्न कल्प की अनेक प्रकार से है )

बिल्वेश्वर शिव लिंग की पूजा से धर्म की बृद्धि होती है। बिल्व पर्वत के ऊपर जो बेल का बृक्ष है, उसके नीचे बिल्वेश्वर शिवलिंग स्थित हैं, जिन के दर्शन से मनुष्य शिव समान हो जाता है।

दक्षेश्वर के निकट नील शैल के ऊपर नीलेश्वर शिवलिंग है, जिसके देखने से पाप दूर हो जाता है। उसी जगह भीमचण्डिका का स्थान है। उसके निकट उत्तमकुण्ड है, जिस में स्नान करने से बड़ा आनन्द होता है।

( नवां खण्ड चौथा अध्याय ) उज्जैन नगरी का असमचित्त नामक

ब्राह्मण बड़ा पापी था। वह एक समय चोरों के साथ चोरी के लिये मायाक्षेत्र में गया। वहां उसको शिव भक्त ब्राह्मणों के सत्संग से ज्ञान उपजा। वह उनके उपदेश से गंगाजी के समीप महागिरि पर जाकर रात दिन महादेव का नाम रटने लगा। ७ दिनों के पीछे सदाशिव ने उसको दर्शन दिया, और कहा कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे गण हो जाओ। तुम्हारा नाम नील होगा। हम नीलेश्वर होकर इस स्थान पर विराजमान होंगे। इस पर्वत का नाम भी नीलही होगा। हम अंश रूप होकर सर्वदा इस स्थान पर तुम्हारे साथ रहेंगे। गंगा जी के तट पर जो हमारा कुण्ड है, उसमें स्नान करने से मनुष्य हमारा रूप होजायगा।

वामन पुराण—( ८४ वां अध्याय ) प्रह्लाद ने कनखल में जाकर भद्रकाली और वीरभद्र का पूजन किया।

पद्मपुराण—( सृष्टि खण्ड—११ वां अध्याय ) मायापुरी के निकट हरिद्वार है। ( स्वर्ग खण्ड—३२ वां अध्याय ) गंगा सब जगह तो सुलभ है, परन्तु गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर इन तीन जगहों में दुर्लभ है।

( उत्तर खण्ड २१ वां अध्याय ) हरिद्वार तीर्थों में श्रेष्ठ और देवताओं को भी दुर्लभ है। जो मनुष्य इस तीर्थ में स्नान कर के भगवान का दर्शन और प्रदक्षिणा करता है, वह कभी दुखी नहीं होता। यह तीर्थ चारों पदार्थों का देने वाला है।

गरुड़ पुराण—( पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय ) मायापुरी उत्तम स्थान है। गंगाद्वार, कुशावर्त्त, विल्वक, नीलपर्वत और कनखल इन पांचो तीर्थों में स्नान करने से फिर गर्भ में वास नहीं होता है।

( प्रेतकल्प-२७ वां अध्याय ) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारावती ये ७ पुरियां मोक्ष के देने वाली हैं।

मत्स्यपुराण—( १०५ वां अध्याय ) गंगा जी सब स्थानों में सुगम हैं, परंतु गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर संगम इन तीन तीर्थों पर इनका प्राप्त होना दुर्लभ है।

अग्नि पुराण—( १०८ वां अध्याय ) गंगाद्वार और कनखल तीर्थ भुक्ति-मुक्ति को देने वाला है।

स्कंदपुराण—( काशीखण्ड-११२ वां अध्याय ) मायापुरी में पापियों का प्रवेश नहीं हो सकता और वहां वैष्णवी माया मनुष्यों के मायारूपी पाश को काट देती है।

कूर्मपुराण—( उपरिभाग ३६ वां अध्याय ) महापातक का नाश करने वाला कनखल तीर्थ है। उसी स्थान पर भगवान शंकर ने दक्ष का यज्ञ विध्वंश किया था। मनुष्य कनखल में गंगा का जल स्पर्श करने से पाप से विमुक्त होकर ब्रह्मलोक में निवास करता है। ( ३८ वां अध्याय ) कनखल में गंगा और कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी अति पवित्र है।

**गंगा की संक्षिप्त प्राचीन कथा**—वाल्मीकिरामायण—( बाल कांड—३५ वां सर्ग ) हिमाचल पर्वत की पहली कन्या गंगा और दूसरी उमा है। जब देवताओं ने अपने कार्य सिद्धि के लिये हिमवान से गंगा को मांगा, तब उस ने त्रैलोक्य के हित की कामना से गंगा को देदिया। गंगा आकाश को गई। हिमवान ने अपनी दूसरी कन्या उमा को भगवान रुद्र से ब्याह दिया।

(४२ वां सर्ग) अयोध्या के राजा दिलीप के पुत्र भगीरथ ने गोकर्ण क्षेत्र में जाकर सहस्र वर्ष पर्यंत तपस्या की। ब्रह्मा प्रकट हुये। भगीरथ ने यह वर मांगा कि राजा सगर के पुत्रों की भस्म गंगा के जल से बहाई जाय। ब्रह्माजी ने कहा कि ऐसाही होगा, परंतु हिमवान की ज्येष्ठ पुत्री गंगा को धारण करने के लिये तुम शिव की प्रार्थना करो, क्यों कि गंगा का आकाश से गिरना पृथ्वी से नहीं सहा जायगा। ( ४३ वां सर्ग ) जब भगीरथ ने एक वर्ष पर्यंत एक अंगूठे से खड़े हो शिव की आराधना की, तब उमापति प्रकट होकर बोले की हे राजन्! मैं अपने मस्तक से गंगा को धारण करूंगा। उसके उपरांत गंगा विशाल रूप से दुःसह वेग पूर्वक अकाश से शिव के मस्तक पर गिरी। उसने यह विचारा कि मैं अपनी धारा के वेग से शिव को लिये हुए पाताल को चली जाऊंगी। गंगा के गर्व को जान शिवजी ने उसको अपनी जटा में छिपा ने की इच्छा की। गंगा शिव के मस्तकपर गिर कर अनेक उपाय कर के भी भूमि पर न जासकी और अनेक वर्षों तक उसी

जटा मंडल मे घूमती रह गई। जब भगीरथ ने कठोर तप कर के शिवजी को फिर प्रसन्न किया, तब शिवजी ने हिमालय के विन्दुसरोवर के निकट गंगा को छोड़ा। छोड़तेही गंगा के ७ सोते होगये, जिन में से आल्हादिनी, पावनी और नलिनी ये तीन धारा पूर्व की ओर और सुचक्षु, सीता और सिंधु ये तीन धारा पश्चिम दिशा में गई और सातवीं धारा भगीरथ के रथ के पीछे चली। जिस मार्ग से राजा गमन करते थे, उसी मार्ग से गंगा की धारा भी चली जाती थी. इसी प्रकार से गंगा समुद्र में पहुंची। राजा भगीरथ अपने पितामह लोगों की भस्म के निकट गंगा को ले गए जब गंगा ने अपने जल से उस भस्म राशि को वहाया, तब वे सब पाप से छूट पवित्र हो स्वर्ग को गए। (४४ वां सर्ग) गंगा का नाम भगीरथ के नाम से भागीरथी विख्यात हुआ।

महाभारत वन पर्व—(१०८ वां अध्याय) जब राजा भगीरथ ने सुना कि महात्मा कपिल ने हमारे पितरों को भस्म कर दिया था, उनको स्वर्ग नहीं मिला, तब राजा ने अपना राज्य मंत्री को दे हिमाचल पर जाकर एक सहस्र वर्ष पर्यंत घोर तप किया। जब गंगा प्रकट हुई तब भगीरथ ने कहा कि कपिल के क्रोध से ६०००० सगर के पुत्रों को, जो हमारे पुरुषे हैं, जल गए हैं। आप उनको अपने जल से स्नान कराकर स्वर्ग में पहुंचाइए। गंगा ने कहा कि तुम शिव को प्रसन्न करो, वही स्वर्ग से गिरती हुई हमको अपने सिर पर धारण करेंगे। राजा ने कैलाश में जाकर घोर तपस्या कर के शिव को प्रसन्न किया और यही वर मांगा कि आप अपने सिर पर गंगा को धारण कीजिए। (१०९ वां अध्याय) जब भगवान शिव ने राजा के वचन को स्वीकार किया, तब हिमाचल की पुत्री गंगा बड़े वेग से स्वर्ग से गिरी, जिसको शिवजी ने अपने सिर पर भूषण के समान धारण किया। तीन धारा वाली गंगा शिव के सिर पर मोती की माला के समान शोभित होने लगी। पृथ्वी में आने पर गंगा जी ने राजा से कहा कि कहो अब मैं किस मार्ग से चलूं। भगीरथ ने जिधर राजा सगर के ६०००० पुत्र मरे थे, उधर प्रस्थान किया। शिवजी गंगा को धारण कर कैलाश को चले गए। राजा भगीरथ ने गंगा को समुद्र तक पहुंचा दिया। गंगा ने समुद्र को (जिसको अगस्त मुनि ने पी लिया था)

अपने जल से पूर्ण कर दिया। राजा भगीरथ ने अपने पुरुषों को जल दान दिया।

लिंगपुराण—( ६ वां अध्याय ) हिमालय के मैनाक और क्रौंच दो पुत्र और उमा तथा गंगा दो कन्या हुईं।

पद्मपुराण—( पाताल खंड—८२ वां अध्याय ) वैशाख शुक्ला सप्तमी को जह्नुमुनि ने गंगाजी को पी लिया था। और उसी दिन फिर अपने दहिने कान के छिद्र से बाहर निकाल दिया, इसी से इस तिथि का नाम गंगासप्तमी हुआ है।

( उत्तर खंड २२ वां अध्याय ) जो मनुष्य सैकड़ों योजन दूर से गंगा गंगा कहता है वह सब पापों से विमुक्त होकर विष्णुलोक में जाता है। जैसे देवताओं में विष्णु सर्वोपरि हैं, वैसे संपूर्ण नदियों में गंगा श्रेष्ठ हैं।

देवी भागवत—( ९ वां स्कंध—६ वें अध्याय से ८ वें अध्याय तक ) और ब्रह्मवैवर्त पुराण—( प्रकृति खंड—६ वें अध्याय से ७ वें अध्याय तक ) विष्णु भगवान की ३ स्त्रियां थीं,--लक्ष्मी, सरस्वती और गंगा। एक समय गंगा पर विष्णु का अधिक प्रेम देख कर सरस्वती ने क्रोध किया। जब वह गंगा के केश पकड़ने को तय्यार हुई, तब लक्ष्मी ने दोनों के बीच में खड़ी होकर निवारण किया। सरस्वती ने लक्ष्मी को शाप दिया, कि तुम वृक्ष रूप और नदी रूप होगी, और गंगा को शाप दिया, कि तुम भी नदी होकर पृथ्वी तल में जाओगी। गंगा ने सरस्वती को शाप दिया, कि तुम भी मृत्युलोक में नदी रूप होगी। सरस्वती अपनी कला से नदी रूप हुई, जो भरत खंड में आने से भारती कहलाई और आप विष्णु के निकट स्थित रहीं। गंगाजी भगीरथ के ले जाने से भरत खंड में आईं। उसी समय शिव-जी ने गंगा को अपने सिर में धारण कर लिया। और लक्ष्मी जी अपनी कला से पद्मावती नामक नदी होकर भारत में आईं और आप पूर्ण अंश से विष्णु भगवान के समीप रहीं। उसके उपरांत वह धर्मध्वज की कन्या होकर तुलसी नाम से प्रसिद्ध हुईं। वे सब कलियुग के ५ सहस्र वर्ष बीतने तक भरत खंड में रहेंगी। पश्चात् वे नदी रूप छोड़ कर विष्णु भगवान के स्थान में प्राप्त होंगी।

कूर्म पुराण—( ब्राह्मी संहिता -उत्तरार्द्ध-३६ वां अध्याय ) हिमवान पर्वत और गंगा नदी सर्वत्र पवित्र है। सत्ययुग में नैमिपारण्य, त्रेता में पुष्कर, द्वापर में कुरुक्षेत्र और कलियुग में गंगाजी तीर्थों में प्रधान हैं।

गरुड़पुराण—( पूर्वार्द्ध-८१वां अध्याय ) गंगा संपूर्ण तीर्थों में उत्तम हैं। हरिद्वार, प्रयाग और गंगासागर में इन का मिलना दुर्लभ है।

अग्निपुराण—( ११० वां अध्याय ) जिस छोर में गंगाजी रहैं, वह देश पवित्र है। गंगा सर्वदा सब जीवों की गति देनेवाली है। एक मास गंगा-सेवन करने से सर्वयज्ञ का फल मिलता है। गंगाजी संपूर्ण पाप का नाश करने वाली और स्वर्ग लोक देने वाली हैं। जब तक मनुष्य की हड्डी गंगाजी में रहती है, तब तक वह स्वर्ग निवास करता है। गंगाजल के स्पर्श, पान और दर्शन तथा गंगा शब्द उच्चारण करने से सौ हजार पुश्त का उद्धार होजाता है। ( १११ अध्याय ) गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर इन तीन स्थानो में गंगाजी का मिलना दुर्लभ है।

---

# नवां अध्याय।

## ( पश्चिमोत्तर देश में ) रुड़की, सहारनपुर, देहरा, मंसूरी, मुजफ्फरनगर, सरधना, मेरठ, और गढ़मुक्तेश्वर।

## रुड़की।

लक्सर जंक्शन से १२ मील ( चंदौसी से १११ मील ) पश्चिमोत्तर और सहारनपुर से २१ मील पूर्व रुड़की का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में तहसील का सदर स्थान और फौजी छावनी का मुकाम रुड़की एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रुड़की में १७३६७ मनुष्य थे;

अर्थात् १०५३४ पुरुष और ६८३३ स्त्रियां। इन में १०३५० हिंदू, ५५५१ मुसलमान, १०५३ क्रुस्तान, ३०५ सिक्ख और १०८ जैन थे।

रुड़की सन् १८४५ ई० तक एक छोटी बस्ती थी। अब कसबा उन्नति पर है। इस में चौड़ी सड़कें, सुंदर बाजार, एक छोटी सराय, कई छोटे देव मंदिर, अस्पताल, गिर्जा, एक मिशन स्कूल, तहसीली, इल्म संबंधी बाग, इत्यादि बन गए हैं। गंगा की नहर के काम और लोहा के कारखाने का रुड़की सदर स्थान है।

कसबे के पूर्व गंगानहर के निकट आंटा पीसने की कल का कारखाना है, जिसमें पानी की धारा से कलका एंजिन चलता है। इस से पूर्व लोहा गलाने का बहुत भारी कारखाना है, जिसका काम सन् १८४५ में आरंभ हुआ और सन् १८५२ मे अधिक फैलाया गया। इस में हर एक प्रकार की लोहे की चीजें तय्यार होकर बिकती हैं। सन् १८८२ ई० में इस कारखाने में ४२५ आदमी काम करते थे। रुड़की में थमसनसिविल एन्जिनियरींग कालिज सन् १८४७ ई० में नियत हुआ, जिसमें इस देश के जन्मे हुए अंगरेज, यूरेशियन और देशी पढ़ते हैं। सैनिक सिपाहियों के पढ़ने के लिए इस में खास दरजा है। सन् १८६० ई० में रुड़की में फौजी छावनी बनी।

रुड़की का पुल—रुड़की कसबे से उत्तर सोलानी नदी के पुल के ऊपर होकर गंगा की नहर बहती है। १६ पायों के ऊपर लगभग ३०० गज लंबा और ६० गज चौड़ा पुल बना है। पुल के नीचे पूर्व की ओर नदी बहती है और ऊपर ३ चौड़ी सड़कों के बीच में नहर की २ धारें दक्षिण को गिरती हैं, जिनकी गहराई ५ वा ६ हाथ है। इन में होकर नाव चली जाती हैं। बीच वाली सड़क पर जाने का मार्ग नहीं है। सोलानी नदी का जल गर्मी के दिनों में सूख जाता है।

## सहारनपुर।

रुड़की से २१ मील (चंदौसी जंक्शन से १३२ मील) पश्चिमोत्तर सहारनपुर का रेलवे स्टेसन है। पश्चिमोत्तर प्रदेश के मेरठ विभाग में जिला का

सदर स्थान ( २९ अंश ५८ कला १५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ३५ कला १५ विकला पूर्व देशांतर में ) दमौला नदी के दोनों बगलों पर सहारनपुर एक छोटा शहर है। 'अवध-रुहेलखंड रेलवे' मुगलसराय से सहारनपुर तक ५३१ मील गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सहारनपुर में ६३१९४ मनुष्य थे; ( ३४२६६ पुरुष और २८९२८ स्त्रियां ) अर्थात् ३४२४० मुसलमान, २६५४७ हिंदू, १४९४ जैन, ७७२ कृस्तान, १३३ सिक्ख, और ८ पारसी। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत वर्ष मे ५६ वां और पश्चिमोत्तर देश में १२ वां शहर है।

सहारनपुर में लगभग आधे मकान पक्के हैं; गल्ले, चीनी, देशी कपड़े, इत्यादि की बड़ी सौदागरी होती है; पुराना रोहिला किला अब कचहरी के काम म आता है; मुसलमानों ने दिल्ली की जुमा मसजिद के नकशे की एक सुंदर जुमा मसजिद बनवाई है; कृस्तानों के २ गिर्जे और १ मिशन है; सर्कारी इमारतों में जिले की सिविल कचहरियां, जेल और अस्पताल हैं; लालगंगा नामक छोटी नदी पास के जंगल में भूमि के दरारों से निकल कर बहती है।

सहारनपुर में सब से अधिक मनोहर सरकारी नबाती बाग है, जिसको कंपनी बाग कहते हैं। यह सन् १८१७ ई० में नियत हुआ, जो १००० गज लंबा और ६६६ गज चौड़ा है। बाग में गाड़ी की सड़कें बनी हैं और बहुत बेश कीमती वृक्ष लगे हैं। उत्तर फाटक के दरवाजे के निकट खेती का बाग, इसके बाद पूर्व दवा संबंधी बाग और इसके बाद दक्षिण लिनियन बाग है। यहां बागबानी महकमा है और दोआब नहर के वृक्षों का बिपड़ा और फलदार वृक्ष इत्यादि तय्यार होते हैं। इनके अतिरिक्त बाग में एक सरोबर, एक वेवमन्दिर और कई एक कूप हैं। दक्षिण पूर्व के फाटक से जाने पर सतियों के कई स्थान और कई एक छतरी देख पड़ती हैं।

**सहारनपुर जिला**—इसके उत्तर शिवालिक पहाड़ियां, बाद देहरादून जिला; पूर्व गंगानदी, बाद बिजनोर जिला; दक्षिण मुजफ्फरनगर जिला

और पश्चिम यमुना नदी, बाद पंजाब के कर्नाल और अंबाला जिले हैं। जिले का क्षेत्र फल २२२१ वर्ग मील है।

गंगा-नहर और पूर्वी यमुना नहर जिले की संपूर्ण लंबाई में उत्तर से दक्षिण दौड़ती है। सीमा पर बहती हुई गंगा और यमुना के अतिरिक्त इस जिले में हिंडन, पश्चिमी कालीनदी और सोलानी नदी भी हैं। जिले के मध्य और दक्षिणी भाग में कंकड़ बहुत होता है। शिवालिक पहाड़ियों के पादमूल के निकट जंगल में अब तक बाघ बहुत हैं। वर्षा काल में शिवालिक पहाड़ियों से जंगली हाथी चरने के लिये उतरते हैं और पहाड़ियों के १० मील दक्षिण गंगा की तराई में आकर फसिल का विनाश करते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सहारनपुर जिले में १०.१४५३ मनुष्य थे; अर्थात् ५४०३१३ पुरुष और ४६११४० स्त्रियां। हिंदुओं से आधी मुसलमानों की संख्या है। लगभग ७हजार जैन, २ हजार कृस्तान और ३ सौ सिक्ख हैं। हिंदुओं में लगभग २ लाख चमार हैं दूसरी किसी जाति की संख्या ३० हजार से अधिक नहीं है। क्रम से गूजर, ब्राह्मण; कहार, बनियां, राजपूत इत्यादि के नंबर हैं। गूजर और राजपूतों में स्त्रियों की संख्या बहुत कम है। सरकार जानती है कि इन में बहुतेरे लोग अपनी पुत्रियों को मार देते हैं, इस लिए इस का प्रबंध रखती है। इस जिले में ९ कसबे हैं। सहारनपुर ( मनुष्य-संख्या सन् १८९१ में ६३१९४ ), हरिद्वार ( २९१२५ ), देव बंद ( १९२५० ), रुड़की ( १७३६७ ), गंगोह ( १२००७ ), मंगलोर ( १००३७ ), रामपुर, अंबेहटा और लंधौर।

इतिहास—लगभग सन् १३४० ई० में महम्मदतुगलक के राज्य के समय सहारनपुर नगर कायम हुआ और शाहहारनचिश्ती के नाम से इसका नाम सहारनपुर पड़ा, जिसकी दरगाह में अब तक बहुत मुसलमान जाते हैं। शाहजहां के राज्य के समय यहां बादशाह महल नामक एक शाही बैठक था।

रेलवे—सहारनपुर से रेलवे की लाइन ३ ओर गई हैं, जिन के तीसरे दर्जे का महसूल प्रतिमील २$\frac{1}{2}$ पाई है।

(१) सहारनपुर से दक्षिण 'नर्थवेष्टर्न रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३६ मुजफ्फरनगर।

५० खतौली।

६१ सरधना।

६८ मेरठ छावनी।

७१ मेरठ शहर।

९९ गाजियाबाद जंक्शन।

गाजियाबाद से 'इष्टइंडियन रेलवे' पर १३ मील पश्चिमोत्तर दिल्ली जंक्शन और ६६ मील पूर्व-दक्षिण अलीगढ़ जंक्शन है—

(२) सहारनपुर से पश्चिमोत्तर 'नर्थ-वेष्टर्न रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३८ जगाद्री।

५० अंवाला जंक्शन।

५५ अंवाला शहर।

६७ राजपुर जंक्शन।

८३ सरहिंद।

१२१ लुधियाना।

१२९ फिलौर।

१५३ जलंधर छावनी।

१५६ जलंधर शहर।

१६५ कर्त्तारपुर।

१७१ व्यास।

२०५ अमृतसर जंक्शन।

अंवाला जंक्शन से दक्षिण, कुछ पूर्व, 'दिल्ली अंवाला कालका रेलवे' जिस के तीसरे दर्जे का महसूल प्रतिमील ५ पाई है।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२६ थानेसर।

४७ कर्नाल।

६८ पानीपत्त।

१२३ दिल्ली जंक्शन।

अंवाले से पूर्वोत्तर 'दिल्ली अंवाला कालका रेलवे' पर ३९ मील कालका।

राजपुर जंक्शन से पश्चिम, थोड़ा दक्षिण—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

१६ पटियाला।

३२ नाभा।

६८ वर्नाला।

१०८ भटिंडा जंक्शन।

अमृतसर जंक्शन से पूर्वोत्तर पठान कोट शाखा—

२४

| मील प्रसिद्ध स्टेशन— | मील प्रसिद्ध स्टेशन— |
|---|---|
| २४ बटाला । | २१ रुड़की । |
| ४४ गुरदासपुर । | २६ लंधोरा । |
| ५१ दीनानगर । | ३३ लक्सर जंक्शन, जिस से १६ मील पूर्वोत्तर हरिद्वार है । |
| ६६ पठानकोट । अमृतसर से ३२ मील पश्चिम लाहौर जंक्शन— | ५८ नजीबाबाद । |
| (३) सहारनपुर से पूर्व-दक्षिण 'अवध रुहेलखंड रेलवे'- | ७२ नगीना । |
| | ८२ धामपुर । |
| | १२० मुरादाबाद । |
| | १३२ चंदौसी जंक्शन । |

# देहरा ।

सहारनपुर से पूर्वोत्तर देहरा तक गाड़ी की उत्तम सड़क बनी है। १५ मील पर फतहपुर, २८ मील पर मोहन, ३५ मील पर असरोरी और ४२ मील पर देहरा मिलता है। सब स्थानों पर डाक बंगले बने हैं ।

पश्चिमोत्तर देश के मेरठ विभाग के देहरादून जिले में शिवालिक पहाड़ की घाटी में समुद्र के जल से २३०० फीट ऊपर देहरादून जिले का सदर स्थान देहरा एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय देहरा कसबे और छावनी में २५६८४ मनुष्य थे, अर्थात् १६०१९ पुरुष और ९६६५ स्त्रियां। इन में १८४२६ हिंदू, ६०५७ मुसलमान, ७४७ कृस्तान, ३१० सिक्ख, १२५ जैन और १ पासी थे ।

कसबे के पश्चिम फौजी छावनी और उत्तर यूरोपियन बस्ती है। देशी कसबे में तहसीली, जेल, कई एक स्कूल, पुलिसस्टेशन और इस कसबे के बसाने वाले गुरु रामराय का सुन्दर मंदिर है, जिसको राजा फतहशाहने बनाया। यह मंदिर जहांगीर के मकबरे के ढाचे का सा बना है। इनके अतिरिक्त देहरे में एक गिर्जा और एक मिशन है ।

**देहरादून जिला**—यह जिला मेरठ विभाग का उत्तरी भाग है। इस के उत्तर गढ़वाल; पश्चिम सिरमोर राज्य और अंबाला जिला; दक्षिण सहारनपुर जिला और पूर्व अंगरेजी और स्वाधीन गढ़वाल है। जिले का क्षेत्रफल ११९३ वर्ग मील है। जिला पहाड़ी और जंगली है। इस जिले और गढ़वाल के बीच में तेजी के साथ कई एक धाराओं से गंगा दौड़ती है। यमुना नदी जिले के दक्षिण पश्चिम की सीमा पर वहती हुई सहारनपुर जिले में गई है। शिवालिक-शृंखले पर जंगली हाथी घूमते हैं और कभी कभी फसिल की वहुत हानि करते हैं। दूर के जंगलों में वाघ, तेंदुए और भालू वहुत हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १६७९७० मनुष्य थे; अर्थात् १००१४५ पुरुष और ६७८२५ स्त्रियां। निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या में आठवें भाग मुसलमान और लगभग २ हजार कृस्तान हैं। हिंदुओं में राजपूत सव जातियों से अधिक हैं। इन के वाद ब्राह्मण और चमार के नंवर हैं। यहां के ब्राह्मण मांस भक्षी होते हैं। इस जिले में मंसूरी और लंधौर स्वास्थ कर स्थान है, जहां गरमी की ऋतुओं में वहुतेरे शरीफ लोग रहते हैं।

इतिहास—एसी कहावत है कि देहरादून जिला केदारखंड का एक भाग है। प्रथम यह देश निर्जन था। लगभग सन् ११०० ई० में वनजारों का एक दल यहां आकर वसा।

१७वीं शताब्दी के अंत में गुरु रामराय ने, जो दून में वसे थे, देहरा को नियत किया। लगभग सन् १७००ई० में यह गढ़वाल राज्य का एक भाग वना। सन् १७५७ में सहारनपुर के गवर्नर नाजिवुद्दीनदौला ने दून पर अधिकार किया। सन् १७७० में उस के मरने पर कई एक आक्रमण करनेवालों ने इस देश को लूटा। सव से पीछे गोरखे आए, जिन से सन् १८१५ ई० के अंत में अंगरेजों ने देश को लेलिया।

## मंसूरी।

देहरा से ६ मील उत्तर राजपुर के निकट पहाड़ियों के पादमूल तक गाड़ी की सड़क है। राजपुर समुद्र के जल से लगभग ३००० फीट ऊपर एक वड़ी

बस्ती है, जहां से झंपान, डंडी वा टट्टू पर लोग मंसूरी जाते हैं। ४ मील की चढ़ाई पर मंसूरी मिलता है। आधे मार्ग में दुकान और पानी है।

मंसूरी एक पहाड़ी स्टेशन हिमालय के बाहरी सिलसिलों में से एक पर है। बहुतेरे मकान समुद्र के जल से ६००० फीट से ७२०० फीट तक उंचाई पर बने हैं, जो खास कर पहाड़ी के बगल पर हैं। मंसूरी के दक्षिण-पूर्व लंधौर में अंगरेजी फौजी छावनी है। मंसूरी और लंधौर दोनों मिल कर एक स्टेशन बनता है, जो सन् १८२७ ई० में नियत हुआ। सन् १८७६ ई० में मंसूरी में सैनिकों के लड़कों के लिये ग्रीष्मभवन बना। लंधौर में अनेक कोठियां और बारकें बनी हैं। मंसूरी में एक पबलिक लाइब्रेरी, क्लब और खैराती अस्पताल और दोनों जगह कई एक गिर्जे हैं। बहुतेरे शरीफ लोग खासकर के यूरोपियन लोग गरमी की ऋतुओं में मंसूरी में जाकर रहते हैं। यहां का पानी पवन स्वास्थ्य कर है। नवंबर के अंत में यहां बर्फ गिरता है।

जाड़े के दिनों की मनुष्य-गणना के समय मंसूरी और लंधौर में ३१०६ मनुष्य थे; अर्थात् २०१९ हिंदू ६४४ मुसलमान, ४४० कृस्तान, १ जैन और २ दूसरे। सन् १८८० के सितंबर में खास मनुष्य-गणना हुई, उस समय १२०८० मनुष्य थे; अर्थात् ७६५२ मंसूरी में और ४४२८ लंधौर में, इन में ६४०६ हिंदू, ३०८२ मुसलमान, २३५५ यूरोपियन, १८२ यूरेसियन, ४३ देशी कृस्तान और १२ दूसरे थे।

चक्रता—मंसूरी से पश्चिमोत्तर शिमला तक १५७ मील पहाड़ी घुमाव का रास्ता है, जिस पर मंसूरी से ४८ मील दूर चक्रता तक सुंदर मार्ग बना है। सहारनपुर शहर से चक्रता तक बैलगाड़ी की सड़क बनी है। चक्रता समुद्र के जल से ७००० फीट ऊपर देहरादून जिले में एक फौजी छावनी है, जो सन् १८६६ में नियत हुई। यहां एक यूरोपियन रेजीमेंट के लिये लाइन बनी है। छावनी के चारो ओर देशी बस्ती है।

## मुजफ्फर नगर।

सहारनपुर से ३६ मील दक्षिण मुजफ्फर नगर का रेलवे स्टेशन है।

पश्चिमोत्तर देश के मेरठ विभाग में जिले का सदर स्थान मुजफ्फर नगर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मुजफ्फरनगर में १८१६६ मनुष्य थे; अर्थात् १०३७७ हिंदू, ७१९३ मुसलमान, ४७५ जैन, ८० कृस्तान, और ४१ सिक्ख।

यहां छोटी तंग गलियां; जिले की कचहरियां, जेल, अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। मेरठ में मुजफ्फरनगर होकर एक फौजी सड़क लंधौर को गई है।

**मुजफ्फर नगर जिला**—इसके उत्तर सहारनपुर जिला; पूर्व गंगा नदी, बाद बिजनोर जिला; दक्षिण मेरठ जिला और पश्चिम यमुना नदी, बाद पंजाब में कर्नाल जिला है। जिले का क्षेत्रफल १६५६ वर्ग मील है। जिले में हिंडन नदी, काली नदी, गंगा की नहर और पूर्वी यमुना की नहर बहती हैं। जंगलों में अच्छी लकड़ियां और जंगली जानवर बहुत होते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ७७३२०४ मनुष्य थे; अर्थात् ४१८२५५ पुरुष और ३५४१४९ स्त्रियां। निवासी हिंदू अधिक हैं। सैकड़े पीछे लगभग ४० मुसलमान हैं। लगभग १० हजार जैन हैं। हिंदुओं में चमार सब जातियों से अधिक हैं। इनके बाद जाट, कहार, तब बनियां, भंगी, गूजर, काछी, ब्राह्मण और राजपूत के क्रम से नंबर हैं।

जिले में कैराना बड़ा कसबा है, जिस में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १८४२० मनुष्य थे। इसके अतिरिक्त खंडाला, थानाभवन, खतौली, शामली, मीरमपुर, जलालाबाद, जनसत, बुधाना, मुकरेरी, पूरा, झंझना, सिसबली, चरथावल और गंजरू बड़ी बस्तियां हैं।

इतिहास—मुजफ्फर नगर जिला अकबर के राज्य के समय सहारनपुर के सरकार में मिलाया गया। सन् १६३३ ई० में शाहजहां के राज्य के समय खांजहां के पुत्र मुजफ्फरखां ने मुजफ्फर नगर को बसाया। १८ वीं शताब्दी में सिक्ख और गूजरों ने लूट पाट करके जिले का विनाश किया। सन् १७८८ में यह जिला महाराष्ट्रों के हस्त गत हुआ। सन् १८०३ में अलीगढ़

की गिरती होने के पश्चात् उत्तर शिवालिक पहाड़ियों तक संपूण दोआव अंगरेजी अधिकार में आया।

सन् १८५७ ई० के बलवे के समय लोगों ने मुजफ्फर नगर में लूट पाट करना और आग लगाना आरंभ किया। ता० २१ जून को चौथा इरेंगुलर बागी हुआ। उसने अपने अफसरों और दूसरे यूरोपियनों को मार डाला। पीछे जब सहारनपुर और मेरठ से अंगरेजी सेना आई, तब मुजफ्फरनगर में अंगरेजी अमलदारी नियत हुई।

## सरधना।

मुजफ्फरनगर से २५ मील ( सहारनपुर से ६१ मील ) दक्षिण सरधना का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देश के मेरठ जिले में सरधना एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस में १२०५९ मनुष्य थे, अर्थात् ५४३७ हिंदू, ५२८३ मुसलमान, ८९९ जैन, ४३९ कृस्तान और १ सिक्ख।

कसबे के पूर्व ५० एकड़ के बाग में सन् १८३४ ई० की बनी हुई दिलकुस-कोठी नामक एक अंगरेजी इमारत है, जिसके भीतर दो लेखों में यहां के हर हाईनेस शमरू की बेगम की शखावतें लिखी हैं और बेगम और उसके दोस्तों की तसवीरें हैं। सरधना से दक्षिण मार्बुल से बना हुआ बेगम का स्मरणार्थक चिन्ह है, जो रूम में बना था। शमरू एक फिरंगी था, जिस ने नाजिफखां से सरधना का परगना पाया। वह सन् १७७८ में मरगया। उस की बेगम, जो शुरू में कश्मीर की वेश्या थी, उस की वारिस हुई। सन् १७८४ में वह रोमन कैथलिक हुई। सन् १७९२ में उस ने एक फ्रेंच के साथ विवाह करलिया। और सन् १८३६ में वह मरगई।

## मेरठ।

सरधना से १० मील ( सहारनपुर से ७१ मील ) दक्षिण मेरठ शहर का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देश में किस्मत और जिले का सदर स्थान गंगा

से २५ मील पश्चिम और यमुना से २९ मील पूर्व मेरठ जिले के मध्य भाग में मेरठ एक शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शहर और छावनी में ११९३९० मनुष्य थे, अर्थात् ६८०१६ पुरुष और ५१३७४ स्त्रियां। इन में ६३८९२ हिंदू, ४८८४४ मुसलमान, ४४९५ कृस्तान, १२५५ जैन, ९०३ सिक्ख और १ पारसी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार मेरठ भारतवर्ष में २१ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेश में ६ वां शहर है।

शहर से उत्तर फौजी छावनी है। शहर के रेलवे स्टेशन से ३ मील उत्तर छावनी का रेलवे स्टेशन है। छावनी में सन् १८२१ का वना हुआ मशहूर मेरठ चर्च, एक रोमन कैथलिक चर्च और मीशन चैपेल हैं। सन् १८८३ ई० में छावनी में सवार आर्टिलरी, की ३ वैटरी, मैदान आर्टिलरी की २ वैटरी, यूरोपियन सवार का एक रेजीमेंट, यूरोपियन पैदलका एक रेजीमेंट, देशी सवार का एक रेजीमेंट और देशी पैदल का एक रेजीमेंट था। छावनी में ५ वाजार हैं।

मेरठ के सेंट्रल जेल में, जो सन् १८१९ ई० में वना, ४६०० कैदी रह सकते हैं। इस से पूर्व जिले का जेलखाना है। मेरठ में वड़ी सौदागरी होती है, प्रति वर्ष चैत में होली से एक सप्ताह पीछे नौचंदी का प्रसिद्ध मेला होता है। जो कई दिनों तक रहता है। मेले के समय आतसवाजी, नुमायश और घुड़-दौड़ वहुत होते हैं।

जेलखाने से पश्चिम सूर्य्यकुंड नामक तालाव है, जिस को सन् १७१४ ई० में जवाहिरमल नामक एक धनी सौदागर ने वनवाया। इस के किनारों पर अनेक छोटे मंदिर, धर्मशाला, और सतीस्तंभ वने हैं।

विलेश्वरनाथ का मंदिर मेरठ में वहुत पुराना है।

मेरठ में वहुतेरी मसजिदें और दरगाह हैं। शाहपीर की दरगाह लाल पत्थर से वनी हुई सुन्दर वनावट की है, जिस को लगभग सन् १६२० ई० में जहांगीर की स्त्री नूरजहां ने शाहपीर फकीर के स्मरणार्थ वनवाया। जामे-मसजिद को सन् १०१९ में गजनी के महमूद के वजीर हसनमेंहदी ने वनवाया

और हुमायूं ने सुधारा। सन् १६५८ ई० का बनाहुआ अबूमहम्मद कमोह का मकबरा, सन् ११३४ का बना हुआ सालार मसूद गाजी का मकबरा, सन् १५७७ का बनाहुआ आबूयारखां का मकबरा है। एक इमाम बाड़ा कमोली फाटक के निकट, दूसरा जबीदी महल्ले में और एक ईदगाह दिल्ली रोड़ पर है। इन के अतिरिक्त मेरठ में लगभग ६० अमसिद्ध मसजिदें हैं।

**मेरठ जिला**—इस के उत्तर मुजफ्फर नगर जिला, पश्चिम यमुना नदी; दक्षिण बुलंद शहर जिला और पूर्व गंगा नदी, बाद बिजनौर और मुरादाबाद जिले हैं। जिले का क्षेत्र फल २३७९ वर्ग मील है। जिले की सीमाओं पर गंगा और यमुना और इसके भीतर हिंडन नदी है, जिसमें केवल वर्षा-काल में नाव चलती है। जिले की संपूर्ण लंबाई में पूर्वी यमुना नहर बहती है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय इस जिले में १३८७४०१ मनुष्य थे; अर्थात् ७४४३६६ पुरुष और ६४३०४३ स्त्रियां सन् १८८१ की मनुष्य-गणना- के समय इस जिले में ९९७८११ हिन्दू, २९४६५६ मुसलमान, १६४५३ जैन, ४०६४ कृस्तान, १५२ सिक्ख और १ पारसी थे। चमार सब जातियों से अधिक हैं। इन के बाद क्रम से जाट, ब्राह्मण, गूजर, बनिया इत्यादि के नंबर हैं। ब्राह्मणों में गौड़ ब्राह्मण अधिक हैं। मेरठ जिले में हापड़ (जन-संख्या सन् १८९१ में १४१६७) सरधना (जन-संख्या १२०५१) खेकरा (जन-संख्या १०३१५) गाजिया बाद (जन संख्या १०११३), बरौत, गढ़मुक्तेश्वर, भुवाना, भागपत, शाहडेरा, टिकरी, छपरवली, बावोली, पिलकुआं, किरथल, निरपाड़ा, सरूरपुर, लावर, परिक्षितगढ़, और फलंदा कसबे हैं।

**इतिहास**—महाभारत बनने से प्रथमही मेरठ जिले का हस्तिना पुर कौरव और पांडवों की राजधानी था। मेरठ शहर के निकट ईसा के जन्म से पहिले अशोक के राज्य के समय एक स्तंभ बनाया गया, जो अब दिल्ली में रक्खा है। ११ वीं शताब्दी तक यह जिला खासकर के जाट और डोर लोगों के हस्तगत था। सन् ११९१ में महम्मदगोरी के जनरल कुतुबुद्दीन ने मेरठ शहर को ले लिया। लगभग सन् १३१८ में तैमूर के आक्रमण के समय हिंदुओं ने बहुत रोकावट की। अंत में राजपूतों में से बहुतेरों ने लोनी के

किले में अपने लड़के और स्त्रियों के साथ निज गृहों को जला दिया और आप बाहर निकल शत्रुओं से लड़ कर मारे गए। तैमूर ने लगभग १ लाख कैदी हिंदुओं को मरवा डाला। १६ वीं शताब्दी में मेरठ और आस पास के देश में मुगल खांदान का अधिकार हुआ। उसकी घटती के समय यह महाराष्ट्रों के हस्त गत हुआ। सन् १८०३ में सिंधिया ने गंगा और यमुना के मध्य का देश अंगरेजों को दे दिया। सन् १८०६ में मेरठ शहर में फौजी छावनी बनी। तबसे शहर उन्नति पर होने लगा। सन् १८१८ में मेरठ एक अलग जिला हुआ।

सन् १८५७ के आरंभ में देशी फौजों में ऐसी गप्प उड़ी, कि नए टोटों में गाय और सूअर की चर्बी चुपड़ी हुई है। अप्रैल में ब्रजमोहन नामक एक सैनिक ने अपने साथियों को जनाया, कि मुझको नए टोटे मिले हैं और सब लोगों को शीघ्रही टोटे मिलेंगे। तारीख ९ वीं मई को ३ री बंगाल घोड़-सवार फौज के कई एक आदमी, जिन्हों ने टोटे को काम में लाना अस्वीकार किया, दस दस वर्ष कैद के दोषी ठहराए गए। तारीख १० वीं मई को मेरठ के सिपाहियों ने खुला खुली बगावत की। उन्होंने जेलखाना तोड़ डाला और जो यूरोपियन मिले, उनको मार डाला। इसके उपरांत बागी सब दिल्ली को चले गए। छावनी अंगरेजों के हाथ में रही। मेरठ में सब से पहले बलवा हुआ था। बलवे के आदि से अंत तक कईएक अंगरेजी सेना मेरठ में थीं, जिन से चारों ओर जिले में बलवा नहीं बढ़ने पाया।

## गढ़मुक्तेश्वर।

मेरठ शहर से २६ मील दक्षिण-पूर्व इसी जिले में गंगा के दहिने किनारे ऊंचे टीले पर गढ़मुक्तेश्वर एक पुराना कसबा है, जो प्राचीनकाल में हस्तिनापुर का एक महल्ला था। पुराना गढ़ और मुक्तेश्वर शिव इन दोनों के नामों से इसका नाम गढ़मुक्तेश्वर पड़ा है। मेरठ से गढ़मुक्तेश्वर तक घोड़े की डाक गाड़ी जाती है। मेले के समय हजारों गाड़ियां पहुंचती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गढ़मुक्तेश्वर में ७३०५ मनुष्य थे; अर्थात् ४९३४ हिंदू और २३७१ मुसलमान। हिंदुओं में खास कर के ब्राह्मण हैं।

गढ़मुक्तेश्वर मे गढ़मुक्तेश्वर शिव का बड़ा मन्दिर है। २ तीर्थ स्थान टीले के ऊपर और २ इसके नीचे हैं। समपही में ८० सत्ती स्तंभ खड़े हैं। गढ़मुक्तेश्वर में ४ सराय, खैराती अस्पताल, पुलिस स्टेसन और एक बंगला है।

गढ़मुक्तेश्वर में कार्तिक की पूर्णिमा को बड़ा मेला होता है, जो आठ नौ दिनों तक रहता है। मेले में लगभग २ लाख यात्री आते हैं। चैत्र पूर्णिमा का मेला छोटा होता है। गढ़मुक्तेश्वर से ४ मील उत्तर गंगा और बूढ़ीगंगा का संगम है। गढ़मुक्तेश्वर के पास बरसात में घाट चलता है और दूसरे दिनों में नाव का पुल रहता है।

---

# दसवां अध्याय।

## हस्तिनापुर और संक्षिप्त महाभारत।

## हस्तिनापुर।

मेरठ शहर से २२ मील पूर्वोत्तर गंगा के प्रथम बेड़ बूढ़ी गंगा के किनारे पर पश्चिमोत्तर देश के मेरठ जिले में हस्तिनापुर है। मेरठ शहर से २१ मील उत्तर खतौली का रेलवे स्टेशन है, जहांसे सीधा पूर्व हस्तिनापुर का एक मार्ग है। हस्तिनापुर एक समय जगत विख्यात कौरव और पांडवों की राजधानी एक प्रसिद्ध नगर था, परंतु सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय इसमें केवल २८ मनुष्य थे, अर्थात् २७ हिंदू और एक मुसलमान। पुराणों में लिखा है कि जब हस्तिनापुर गंगा की बाढ़ से बह जायगा, तब कौशांबी नगरी पांडुवंशियों की राजधानी होगी। हस्तिनापुर में एक शिव मंदिर है और साधु लोग रहते हैं। पुराने शहर की निशानियां अबतक देखने में आती हैं।

## संक्षिप्त महाभारत-आदि पर्व ( ९५वां अध्याय )

पुरु वंश

| | |
|---|---|
| कश्यप | देवातिथि |
| सूर्य | अरिह |
| वैवस्वतमनु | ऋक्ष |
| इला | मतिनार |
| पुरूरवा | तंसु |
| आयु | ईलिन |
| नहुष | दुष्मंत |
| ययाति | भरत |
| पुरु | भुमन्यु |
| जनमेजय | सुहोत |
| प्राचीन्वान | हस्ती |
| संयाति | विकुंठन |
| अहंयाति | अजमीढ़ |
| सार्व भौम | संवरण |
| जैत्सेन | कुरु |
| अर्वाचीन | विदूरथ |
| अरिह | अनश्वा |
| महाभौम | परीक्षित |
| अयुतनायी | भीमसेन |
| अक्रोधन | प्रतिश्रवा |
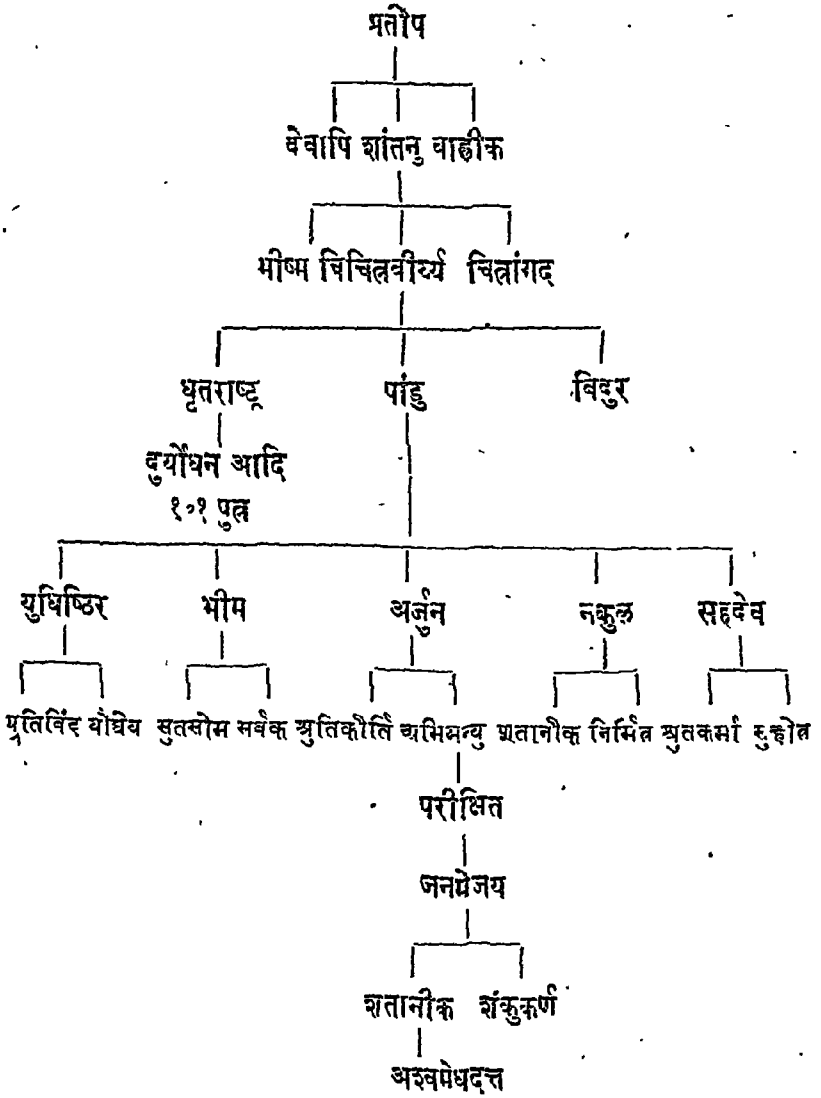
राजा भरत के प्रपौत्र और राजा सुहोत्र के पुत्र हस्ती नामक राजा हुए, जिन्होंने निज नाम से हस्तिनापुर स्थापन किया। राजा हस्ती के ११ वीं पीढ़ी में राजा प्रतीप का जन्म हुआ।

( ९७ वां अध्याय ) हस्तिनापुर के राजा प्रतीप गंगाद्वार में जप करते थे। स्त्री रूपिणी गंगा ने जल से निकल कर राजा के दहिनी ऊरू का स्पर्श किया। राजा बोले कि हे कल्याणि! मैं तुम्हारा कौन प्रिय कार्य करूं। नारी बोली की

हे राजन्! तुम मुझे भजो। राजा बोले कि तुमने दक्षिण ऊरूका आश्रय कर मुझे आलिंगन किया है। पुरुष की दाहिनी ऊरू पुत्र कन्या और पुत्रवधू का आसन है और बाईं ऊरू प्रणयिनी के भोगने के योग्य है। इसलिये तू मेरी पुत्रवधू हो। गंगा यह वचन स्वीकार करके उसी स्थान में अंतरद्धान हुई। उसी समय से राजा प्रतीप अपनी स्त्री के सहित पुत्र के लिये तप करने लगे। उसके अनंतर दंपति के बुढ़ापे में पुत्र ने जन्म लिया। वृद्धराजा के शांत चित होने पर संतान का जन्म हुआ, इस कारण पुत्र का नाम शांतनु पड़ा। राजा प्रतीप शांतनु को युवा देखकर उनसे बोले कि हे पुत्र! पूर्व काल में एक सुन्दर स्त्री मेरे पास आई थी, यदि वह पुत्र की कामना से एकान्त में तुम्हारे पास आवे, तो तुम उससे ऐसा मत पूछना कि तुम कौन वा किसकी पुत्री हो और वह कामिनी जो कर्म करेगी, वहभी तुम उससे मत पूछना। राजा प्रतीप ऐसी आज्ञा देने के पश्चात् शांतनु को निज राज्य पर अभिषिक्त करके वनको चले गए।

एक समय राजा शांतनु मृगया करते हुए गंगा के सामने अकेले घूमरहे थे। (९८ वां अध्याय) इतने में गंगा देवी परम सुंदरी नारी का वेष धारण कर के राजा से बोली कि हे महीपाल! मैं तुम्हारी रानी हूंगी, पर मैं यदि शुभ वा अशुभ कार्य करूं तो तुम रोकने वा अप्रिय बात कहने नहीं पावोगे, यदि ऐसा करो गे तो मैं निश्चय तुमको त्याग दूंगी। यह वचन राजा के स्वीकार करने पर गंगा मानवी स्वरूप धर कर शांतनु की प्यारी पत्नी हुई। अनंतर गंगा के ८ पुत्र उत्पन्न हुए। जब जो पुत्र जन्म लेता था, तभी वह अपने पुत्र को जल में डाल देती थी। इस प्रकार ७ पुत्रों को उस ने जल में डाल दिया। आठ वें पुत्र के जन्म लेने पर जब गंगा हंस रही थी, तब राजा अतिदुखी हो कर उससे बोले कि पुत्र को मत मारो, तुम कौन वा किसकी पुत्री हो कि पुत्रों को मारडालती हो। स्त्री बोली कि मैं तुह्मारे इस पुत्र को न मारूंगी, पर मैंने जो नियम बांधा था, उसके अनुसार मेरा तुह्मारे पास रहने का काल बीत गया। मैं जह्नु की कन्या जाह्नवी हूं। देवताओं के कार्य साधने के लिये मैंने तुमसे सहवास किया था। तुह्मारे पुत्र अष्ट वसु

वशिष्ठजी के शाप से मनुष्य होकर जन्मे थे। मैंने वसुओं की माता होने के लिये मानवी शरीर का आश्रय किया था। वसुओं से मेरा यह नियम था, कि जन्म लेतेही मैं उनको मानवी जन्म से मुक्त करूंगी। वे ऋषिशाप से मुक्त हुए। मैंने तुम्हारे लिये वसुओं से एक पुत्र मांगा था, इससे प्रत्येक वसु के आठवें भाग से इस पुत्र का जन्म हुआ है। (९९ वां अध्याय) ऐसा कह गंगा उस कुमार को लेकर मनमाने स्थान में पधारो। वसु शांतनु की संतान होकर देवव्रत और गांगेय नाम से प्रसिद्ध हुए। शांतनु ने शोक युक्त होकर निजपुर में प्रवेश किया।

(१०० वां अध्याय) राजा शांतनु कुरुवंशियों की कुल-परंपरागत राजधानी हस्तिनापुर में वस कर राज्य का शासन करने लगे।

एक समय शांतनु ने मृग को विद्धकर उसके पीछे जाते हुए गंगा में देखा, कि एक सुन्दर कुमार वाणजाल से गंगा के सोतों को रोककर दिव्यास्त्र चला रहा है। कुमार पिता को देख कर माया से उनको मुग्ध कर के जब अंतर्हित हुआ, तब शांतनु गंगा से बोले कि उस कुमार को तुम मुझे दिखाओ। गंगा ने उत्तम रूप धर कुमार को लेकर राजा को देखाया और उनसे कहा कि हे नृपते! पहिले तुमने मेरे गर्भ से जो आठवां पुत्र जन्माया था, यह वही है। तुम इसको लेजाओ। शांतनु ने अपने पुत्र देवव्रत (भीष्म) को हस्तिनापुर में लाकर यौवराज्य में अभिषिक्त किया और पुत्र सहित आनंद में ४ वर्ष विताया।

किसी समय शांतनु ने यमुनातट के वन में देवरूपिणी एक दासी को देखा और उस से पूछा कि तुम कौन हो। उसने कहा कि मैं दासी हूं और नाव चलाती हूं। राजा ने उस कन्या के रूप से मोहित होकर उसके पिता के पास जाकर उससे उसको मांगा। दासराज ने कहा कि यदि आप इस कन्या के पुत्र को अपने पीछे राज्य देना अंगीकार करें, तो मैं कन्या को दूंगा। राजा दासराज का वचन अस्वीकार करके कन्या की चिंता करते हुए हस्तिनापुर लौट आए। देवव्रत ने वृद्धमंत्री से राजा के शोकयुक्त होनें का कारण पूछा, तो मंत्री ने सब कारण कह सुनाया। देवव्रत ने स्वयं दासराज के पास जाकर पिता के लिये वह कन्या मांगी और दासराज से कहा कि

इस कन्या के गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न होगा वह हमारे राज्य का अधिकारी बनेगा। तब दासराज बोले कि आपकी जो संतान होगी, उससे मुझे बड़ा संशय होता है। देवव्रत ने कहा कि मैं आजसे ब्रह्मचर्य अवलंबन कर लेता हूं। देवव्रत ने योजनगंधा कन्या को हस्तिनापुर में लाकर शांतनु से सब हाल कह सुनाया। सब लोग उनके उस दुष्कर कार्य की प्रशंसा करने लगे और बोले कि इनके भयंकर कार्य करने से इनका नाम भीष्म हुआ है। शांतनु ने यह दुःसाध्य कार्य्य सुन कर भीष्म को इच्छामृत्यु का वर दिया।

(१०१ वां अध्याय) राजा शांतनु का विवाह उस सत्यवती नामक कन्या से हुआ। उनके वीर्य्य और सत्यवती के गर्भ से चित्रांगद और विचित्रवीर्य्य दो पुत्र उत्पन्न हुए। विचित्रवीर्य्य के वयःप्राप्त होनेपर शांतनु की मृत्यु हुई। भीष्म ने चित्रांगद को राज्य पर अभिषिक्त किया, परंतु गंधर्वराज चित्रांगद ने कुरुक्षेत्र में सरस्वती के तट पर (३ वर्षों तक युद्ध होने के उपरांत) राजा चित्रांगद को मार डाला। उसके पश्चात् भीष्म ने युवा विचित्रवीर्य्य को कुरु राज्य में अभिषिक्त किया।

(१०२ रा अध्याय) भीष्म काशी में जाकर काशिराज की ३ पुत्रियों को स्वयंवर से हर लाए। उन्होंने वहां के भूपगणों को घोर युद्ध में अकेलेही परास्त किया था। सब से बड़ी कन्या अंबा ने जब कहा कि मैं पहिलेही सोम राज्य के अधीश शाल्व को मनही मनमें पति बना चुकी थी, तब भीष्म ने उसको जाने की आज्ञा दे दी और अंबिका और अंबालिका नाम्नी दो कन्यायों से विचित्रवीर्य्य का बिवाह कर दिया। विचित्रवीर्य्य उनके साथ सात वर्ष विहार कर यौवन कालही में क्षयरोग से जकड़ कर कालवश हो गए।

(१०३ रा अध्याय) सत्यवती ने भीष्म से कहा कि हे महाभुज! हमारे वंशपरंपरा की रक्षा के लिये तुम मेरी दोनों पुत्रवधुओं से पुत्रोत्पादन करो। भीष्म बोले कि हे माता! संतान के लिये जो दासराज से मेरा सत्यप्रण हुआ था, उसको मैं किसी प्रकार छोड़ नहीं सकता। (१०४ अध्याय) पूर्वकाल में यमदग्नि के पुत्र राम ने जब २१ वार क्षत्रियकुल का नाश कर दिया, तब क्षत्रियों की स्त्रियों ने वेद पारग ब्राह्मणों से संतान उत्पन्न कराई।

वेद में यह निश्चित है कि जो पुरुष विवाह करता है, उसके क्षेत्र में संतान होने से उसी की होती है। धर्म जान करके क्षत्रियपत्नियों ने ब्राह्मणों से संसर्ग किया था। (१०८ अध्याय) तुम भरत वंश की संतान बढ़ाने के लिये किसी गुणवंत ब्राह्मण को धन देकर बुलाओ। वह विचित्रवीर्य्य के क्षेत्र में पुत्रोत्पादन करेंगे।

सत्यवती ने कहा कि एक समय में अपने पिता की नाव को चलाती थी कि महर्षि पराशर यमुनापार उतरने के लिये मेरी नाव पर चढ़े। उस समय वह कामवश होकर मीठी बातों से मुझको लुभाने लगे। मैं ऋषी के शाप के भय से उनकी बात पलट नहीं सकी। यमुना के द्वीप पर मेरे गर्भ से पराशर के पुत्र जन्म लेकर महर्षि द्वैपायन नाम से प्रसिद्ध हुए, जो तप के प्रभाव से चारों वेदों के व्यास अर्थात् विभाग करके व्यास नाम से प्रख्यात हुए हैं और कृष्णवर्ण होने के कारण उनका नाम कृष्ण हुआ है। वह जन्म लेकर उसी क्षण पिता के सहित चले गए थे। अब वह तुम्हारे भ्राता के क्षेत्र में उत्तम पुत्र उत्पन्न कर सकते हैं। हे भीष्म! यदि तुम्हारी सम्मति हो तो मैं उनको स्मरण करूं। सत्यवती ने भीष्म के सम्मत होनेपर कृष्णद्वैपायन का स्मरण किया। वह माता के सन्मुख प्रकट हुए। सत्यवती बोली कि हे ब्रह्मर्षे! एक माता के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण तुम विचित्रवीर्य्य के भ्राता हुए हो। तुम्हारे कनिष्ठ भ्राता की दो भार्य्या हैं। तुम उनसे पुत्रोत्पादन करो। बिना राजा के राज्य की रक्षा नहीं हो सकती, इसलिये तुम आजही गर्भाधन करो। यह सुन वेदव्यास ने माता का वचन स्वीकार किया।

(१०६ अध्याय) सत्यवती ने वधू के ऋतु स्नान करने पर उससे कहा कि हे अंबिका! तुम्हारे एक देवर हैं, वह आज रात्रि में तुम्हारे पास आवेंगे, तुम एक मन होकर उनकी बाट जोहती रहो। अंबिका अपनी सास के आज्ञानुसार भीष्म और दूसरे कुलश्रेष्ठों की चिंता करने लगी। अनन्तर वेदव्यास ने अंबिका के गृह में प्रवेश किया। अंबिका ने उस कृष्णवर्ण पुरुष की पिंगल जटा, बड़ी भारी दाढ़ी और जलते हुए नेत्रों को देखकर आंखे मूंद लीं। वेदव्यास ने उसके साथ सहवास किया। व्यासजी के घर से निकलने पर

माता ने पूछा कि क्यों? बेटा! इस वधू से गुणवान पुत्र जन्म लेगा। व्यासजी बोले कि माता के दोष से वह पुत्र अन्धा होगा। सत्यवती बोली कि हे तपोधन! अन्धा पुरुष कुरुवंश के योग्य भूप नहीं होसकता, अतएव कुरु वंश के राजा होने योग्य तुमको एक पुत्र उत्पन्न करना होगा। आगे समय आने पर अंबिका ने एक अन्धा पुत्र प्रसव किया। सत्यवती ने फिर ऋषि को बुलाया। वेदव्यास पूर्ववत् विधि के अनुसार अम्बालिका के पास आकर उपस्थित हुए। अम्बालिका ऋषि को देख कर पीली होगई, तब व्यासजी ने उस स्त्री से कहा कि तुम मुझ को कुरूप देख कर पीली हुई हो, इस लिये तुह्मारा पुत्र भी पीला हो कर पांडु नाम से प्रख्यात होगा। व्यास ने गृह से निकलने पर पुत्र के पीले होने का विषय माता से कह सुनाया। सत्यवती ने फिर उनसे और एक पुत्र की प्रार्थना की। महर्षि ने वह भी स्वीकार किया। अनंतर समय आने पर अंबालिका ने सुंदर पांडुवर्ण एक कुमार प्रसव किया। सत्यवती ने बड़ी वधू के ऋतुकाल आने पर उसको व्यासजी के निकट नियुक्त किया, परंतु उसने अपने समान एक दासी को अपने आभूषणों से अलंकृत कर व्यासजी के निकट नियोग करादियां। वह दासी ऋषि के आने पर उठकर नमस्कार पूर्वक ऋषि के आज्ञानुसार उनको उपचरित और सत्कृत कर बिस्तर पर जा बैठी। महर्षि काम भोग कर उसपर अति प्रसन्न हुए और उससे बोले कि तुम्हारा दासीपन मुक्त होगा और तुम्हारी संतान धर्मात्मा, मंगलभाजन और बुद्धिमानजनों में श्रेष्ठ होगी। समय आने पर व्यास के वीर्य और दासी के गर्भ से बिदुर ने जन्म लिया। व्यासजी ने माता के निकट आकर मांडव्य के शाप से धर्म को विदुर के स्वरूप में जन्म लेने का बृतांत कह सुनाया।

(१०९ अध्याय) तीनों कुमारों के जन्म लेनें पर कौरवगण, कुरु, जांगल देश और कुरुक्षेत्र इन तीनों की पूरी उन्नति हुई। धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर भीष्म से पुत्र की भांति प्रतिपालित होकर युवा हुए। धृतराष्ट्र को जन्मांध होने और बिदुर को शूद्राणी के गर्भ से जन्म लेने के कारण राज्य नहीं मिला। पांडु राज्याधिपति हुए।

( ११० वां अध्याय ) भीष्म ने ब्राह्मणों के मुख से जब सुना कि सुबल-पुत्री गांधारी ने महादेव की आराधना कर के १०० पुत्र पाने का वरलाभ किया है, तब धृतराष्ट्र के निमित उस कन्या के लिये गांधारराज के निकट दूत भेजा। गांधारराज ने कन्यादान करने का निश्चय किया। गांधारी ने सुना कि धृतराष्ट्र अंधे हैं, तब उन्होंने वस्त्र से कई फेरा लगाकर अपने नेत्रों को बांध दिया। गांधारराजकुमार शकुनी अपनी बहिन को लेकर कौरवों के निकट आया। गांधारी से धृतराष्ट्र का विवाह हुआ। ( १११ वां अध्याय ) वसुदेव के पिता सूर यदुकुल में श्रेष्ठ थे, उनकी पृथा नामक प्रथम कन्या थी। सूर ने उस कन्या को अपने मित्र कुंतिभोज को देदिया। पृथाने सेवा करके महर्षि दुर्वासा को प्रसन्न किया। दुर्वासा ने पृथा को अभिचारयुक्त एक मंत्र दिया और उससे कहा कि तुम इस मंत्र से जिन जिन देवताओं को बुलाओगी, उन देवताओं के प्रभाव से तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा। पृथा ने अचरज मान कर कन्यावस्थाही में सूर्य देवको बुलाया। सूर्य देव उसके निकट आए। पृथा बोली कि किसी ब्राह्मण के वरकी परीक्षा के लिये मैं ने तुमको बुलाया है। सूर्य ने कहा कि तुम मुझसे संगम करो। तुमने जिस कारण से मुझ को बुलाया है, यदि वह व्यर्थ होगा तो हानि होगी। इसके अनंतर सूर्य पृथा से जामिले। फिर कवच कुंडलों के सहित कर्ण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। आदित्य आकाश को चले गए। पृथा ने उस बुरी लीला को छिपाने के लिये कुमार को जल में बहा दिया। सूतपुत्र राधापति ने जल में डाले हुए बालक को उठा कर पुत्र का प्रतिनिधि बनाया। ( ११२ वां अध्याय ) कुंति-भोज ने राजाओं को बुलाकर स्वयंवर में कन्या को नियुक्त किया। पृथा अर्थात् कुंती ने पांडु के गले में माला देदी। कुंतिभोज ने यथाविधि उनका विवाह कर दिया। पांडु अपनी सेनाओं के सहित हस्तिनापुर में आए। ( ११३ वां अध्याय ) भीष्म चतुरंगिनी सेनाओं के सहित मद्रेश्वर के नगर में गए। उन्हों ने अपरिमित सुवर्ण, विचित्र रथ, गज, रत्न, अश्व, वस्त्र, आभूषण, अच्छी मणि, मोती और लाल मद्रराज शल्य को

दिए। शल्य ने यह सब धन लेकर नाना अलंकारों से सजी हुई कन्या भीष्म को दी। भीष्म माद्री को लेकर हस्तिनापुर आए। पांडु ने शुभ दिन में विधि पूर्वक माद्री से विवाह किया। (११४ वां अध्याय) भीष्म ने सुना कि शूद्राणी के गर्भ से जन्मी हुई राजा देवक की यौवन युक्त कन्या है, तब वे देवक से वह कन्या मांग लाए और उससे विदुर का विवाह करदिया। विदुर ने उस कन्या से अपने समान गुण और नम्रता युक्त अनेक पुत्र उत्पन्न किए।

(११५ वां अध्याय) गांधारी गर्भवती हुई, परंतु दो वर्ष बीतने पर भी उस के संतान न हुई, तब उसने दुःखी होकर बड़े यत्न पूर्वक अपने पेट में आघात किया। जिससे वह गर्भ कटी हुई लोहे की गेंद के समान मांसपेशी स्वरूप में भूमि पर गिरा। यह समाचार पाकर द्वैपायन वहां आए और गांधारी से बोले कि घृत से १०० घड़े भर कर निरालय में यत्न से रक्खो और ठंढे जल से मांसपेशी को नहलाओ। अनंतर ऋषि के कथनानुसार नहलाते नहलाते मांसपेशी बहुत भागों में बंटगई। समय पूर्ण होने पर उनकी संख्या १०० हुई। प्रत्येक भाग अंगूठे के पोर के समान हुआ। सब मांसपेशी घृत के घड़ों में रक्षित होकर गुप्त स्थान में रक्खी गई। व्यास देवने गांधारी से कहा कि दो वर्ष पीछे इन घड़ों को खोलना होगा।

अनंतर योग्य समय में उन टुकड़ों में से पहिले राजा दुर्योधन का जन्म हुआ, पर राजा युधिष्ठिर पहिले जन्म ले चुके थे। जिस दिन दुर्योधन का जन्म हुआ, उसी दिन पांडु पुत्र भीमसेन ने भी जन्म लिया था। एक मास में धृतराष्ट्र के १०० पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई। गांधारी जब बढ़ते हुए गर्भ की पीड़ा से कातर थी, उसी वर्ष वैश्या के गर्भ से धृतराष्ट्र के युयुत्सु नामक पुत्र जन्मा।

(११८ वां अध्याय) एक समय राजा पांडु ने एक बड़े वन में भ्रमते हुए मैथुन धर्म में आशक्त एक मृग को देखा और पांच बाणों से उस मृग और मृगी को विद्ध किया। कोई तेजस्वी ऋषि कुमार मृग का स्वरूप धारण कर के मृगी से मिला था, वह पांडु से बोला कि हे राजन्! तुमने बिना

दोष मैथुन में आशक्त मुझे मारा, इस लिये मैं तुम्हें शाप देता हूं कि जब तुम काम युक्त हो अपनी प्यारी से मिलोगे, तब मृत्यु को प्राप्त होगे। ऐसा कह मृग ने अपना प्राण छोड़ा। ( ११९ वां अध्याय ) राजा पांडु ने अपना और अपनी स्त्रियों के सब मूल्यवान वस्त्र और आभूषण ब्राह्मणों को दे दिये और सारथियों और नौकरों को हस्तिनापुर में भेज दिया। इसके पश्चात् वह फलमूल खाते हुए दोनो स्त्रियों के सहित शतशृंग पर्वत पर जा कर कठोर तप करने लगे।

( १२० वां अध्याय ) कुछ दिनों के उपरांत राजा पांडु ने तपस्वियों से पूछा कि हे तपोधन! जिस प्रकार पिता विचित्रवीर्य्य के क्षेत्र में महर्षि व्यास से मैंने जन्म लिया है, क्या? वैसेही मेरे क्षेत्र में संतान उत्पन्न हो सकेगी। ऋषिगण बोले कि हे धार्मिक नरेश! तुम सन्तान उत्पन्न होने का प्रयत्न करो। तब पांडु ने कुंती से निराले में कहा कि इस विपत्तिकाल में तुम पुत्र उत्पन्न करने का प्रयत्न करो। स्वायंभुव मनु ने कहा है कि मनुष्यगण अन्य जन से भी श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त कर सकते हैं। तुम श्रेष्ठ जन से पुत्र प्रसव करो। ( १२३ वां अध्याय ) जिस समय गांधारी ने वर्षभर गर्भ धारण किया था, उसी समय कुंती गर्भ के निमित्त धर्म को आने के लिये दुर्वासा का दिया हुआ मंत्र यथाविधि जपने लगी। मंत्र के प्रभाव से विमान में आरूढ हो कर धर्म आपहुंचे। कुंती ने धर्म से मिल कर युधिष्ठिर नामक पुत्र प्राप्त किया। उसके उपरांत पति की आज्ञा से उसने पवनदेव को बुलाया। पवनदेव मृग पर चढ़ कर कुंती के निकट आए, जिससे भीमसेन का जन्म हुआ। जिस दिन भीमसेन ने जन्म लिया, उसी दिन गांधारी के गर्भ से दुर्योधन का जन्म हुआ। उसके पश्चात् राजा पांडुने कुंती के सहित इंद्र का तप किया। बहुत कालबीतने पर देवराज आकर पांडु से बोले कि मैं तुमको तीनों लोकों में प्रसिद्ध एक श्रेष्ठ पुत्र दूँगा। पति की आज्ञा से कुंती ने इंद्र को बुलाया. उससे अर्जुन का जन्म हुआ। ( १२४ वां अध्याय ) पांडु की दूसरी पत्नी माद्री पांडु से कहा कि मुझे बड़ा दुःख है कि मुझको संतान नहीं हुई. यदि कुंती मेरी संतान होने का उपाय कर दें तो मुझ पर बड़ी

दिया होगी। पति की आज्ञा से कुंती ने माद्री से कहा कि तुम एक बार किसी देव का स्मरण करो, उन से उनके सदृश तुम्हारा पुत्र होगा। माद्री ने दोनों अश्वनीकुमारों को स्मरण किया। दोनों ने वहां आकर नकुल और सहदेव नामक दो यमज पुत्रों का जन्म दिया। शतशृंग पर रहने वाले ब्राह्मणों ने इस प्रकार कुमारों का नाम रक्खा, कुंती के पुत्रों में बड़े का नाम युधिष्ठिर मझले का भीम, छोटे का अर्जुन और माद्री के पुत्रों में पहिले जन्म लिए हुए पुत्र का नाम नकुल और दूसरे का सहदेव।

(१२५ वां अध्याय) पांडु अपने भुज बल के आश्रय से उस पर्वत पर भारी वन में सुख से काल काटने लगे। एक समय वसंत ऋतु में माद्री को देख कर पांडु के हृदय में मदन की आग सुलग उठी। वह माद्री के रोकने पर भी शाप की बात भूल कर बल से माद्री को पकड़ कर मैथुन धर्म में प्रवृत्त हुए। उसी समय पांडु का देहांत हो गया। माद्री उनके संग गई।

(१२६ वां अध्याय) तपस्वी महर्षिगण पांडु की स्त्री, पुत्र और दोनों मुर्दों को लेकर हस्तिनापुर आए। उन्हों ने पांडु के पुत्रों के जन्म और पांडु की मृत्यु का संपूर्ण वृत्तांत कौरवों से कह सुनाया और यह भी कहा कि सात दिन हुए कि पांडु पितृलोक को गए, पतिव्रता माद्री उनके संग पति लोक में गई। (१२७ वां अध्याय) कौरवगण माद्री सहित पांडु के मृत शरीर को पालकी में चढ़ा कर गंगा तट में ले गए। वहां सुगंधि पदार्थों से मिली हुई चंदन की लकड़ी से पांडु और माद्री की देह जलाई गई। पांडवों के साथ भीष्म, विदुर, धृतराष्ट्र और संपूर्ण स्त्रियों ने पांडु की जल क्रिया की।

(१२८ वां अध्याय) महर्षि व्यास के उपदेश से सत्यवती ने अपनी दोनों पुत्रवधुओं के सहित वन में प्रवेश किया और वहां कठोर तपस्या करने के उपरांत शरीर छोड़ कर मनमानी सुगति प्राप्त की।

पांडवगण धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ प्रसन्न चित्त से खेलते कूदते थे। जब धृतराष्ट्र के लड़के आनन्द से खेलते थे, तब पांडवगण उनको पकड़ कर एक से दूसरे को अलग कर देते थे और उनके सिरों को थांभ थांभ कर एक

को दूसरे से लड़ाते थे। धृतराष्ट्र के १०१ कुमारों को भीमसेन अकेले ही दिक्क किया करते थे। वह वल से उनके केश पकड़ कर मारते पीटते थे और जल में खेलते हुए अपनी दोनों भुजाओं से १० लड़कों को पकड़ कर कुछ काल तक जलमें डुवाए रहते थे। जव धृतराष्ट्र के पुत्र फल तोड़ने के लिये वृक्षों पर चढ़ते थे, तव भीम उन पेड़ों में लात मार कर हिलाते थे, जिससे लड़के पेड़ों से नीचे गिर जाते थे। धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने भीमसेन का अतिप्रख्यात वल देख कर विचार किया कि इसको कौशल से मार डालना चाहिये। जव यह नगर की फुलवाड़ी में सो रहेगा, तव मैं इसको गंगा में डाल दूंगा, पश्चात् इसके भाइयों को वांध कर एकही राजा हूँगा।

दुर्योधन ने गंगा के तट पर प्रमाणकोटि नामक स्थान में जल क्रीड़ा के लिये जल और स्थल पर वस्त्र और कंवल का वड़ा भवन वनवाया। जव रसोई वालों ने उसमें चारो प्रकार के भोजन वनाकर रक्खे, तव दुर्योधन पांडवों के सहित वगीचे में जा पहुंचा। जव पांडव और कौरव नाना स्थानों से मगाए हुए पदार्थों का स्वाद लेने लगे और एक दूसरे के मुख में खाने की वस्तु देने लगा, तव दुर्योधन ने स्वयं उठकर विषैली वस्तु का एक वड़ा भाग भीम के मुख में डाल दिया। जव भीम विष के वर्ताव से अचेत होगए तव दुर्योधन ने उनको लताजाल से वांध कर जल में गिरा दिया। भीम डूव कर नागों के घर में सर्पों के वच्चों पर जागिरे। सर्पों के काटने से उनके शरीर का स्थाई विष चलते हुए सर्पविष से दूर होगया। उस समय कुंती के पिता के मातामह आर्यक नामक नागराज ने भीम को देख कर गले से लगा लिया। (१२९ वां अध्याय) युधिष्ठिर आदि पांडवगण ऐसा विचार कर कि भीमसेन हस्तिनापुर चले गए, कौरवों के सहित हस्तिनापुर लौट आए। राजायुधिष्ठिर हस्तिनापुर में भीम को न देखकर व्याकुल होगए। इधर भीमसेन नागों के गृह में आठवें दिन जागे। नागों ने उनको जल से उठाकर उसी वनखंड में छोड़ दिया। भीमसेन ने हस्तिनापुर में आकर दुर्योधन के कार्यों को अपने भाइयों से कह सुनाया। राजायुधिष्ठिर ने अपने भाइयों से कहा कि यह वृतांत कभी प्रकाश मत करो। इसके उपरांत दुर्योधन

ने भीम के भोजन के पदार्थ में फिर विप मिलाया, पर भीमसेन ने उसको खाकर पचा लिया।

( १३३ वां अध्याय ) द्रोणाचार्य हस्तिनापुर में अपने साले कृपाचार्य के गृह में कुछ काल से रहते थे। एक समय युधिष्ठिरआदि लड़के हस्तिनापुर से निकल कर गेंद का खेल खेलते हुए घूमने लगे। उनकी गेंद कूप में गिरगई। लड़कों के बहुत प्रयत्न करने पर भी गेंद नहीं निकली। उस समय द्रोणाचार्य हंस कर बोले, कि तुम्हारे क्षत्रियबल पर धिक्कार है। तुम भरतकुल में जन्म लेकर भी इस गेंद को उठा नहीं सके। ऐसा कह द्रोण ने जल से खाली उस कूप में अपनी मुद्री डालदी और अपने शरासन के प्रभाव से गेंद और मुद्री दोनों को कूप से निकाल दिया। लड़कों ने भीष्म के समीप जाकर ब्राह्मण के आश्चर्य कार्य की बात कह सुनाई। भीष्म स्वयं जाकर आदर पूर्वक द्रोणाचार्य को लिवालाए और कुमारों को अस्त्रविद्या सिखलाने के लिए उनको नियुक्त किया। ( १३४ वां अध्याय ) भीष्म ने बहुतसा धन देकर उनके रहने के लिये धन धान्य से भरा एक गृह ठहरा दिया। द्रोण ने प्रसन्न चित्त से पांडव और धृतराष्ट्र के पुत्र तथाअन्य कुरु वंशियों को शिष्य बनाया। वृष्णिवंशी, अन्धकवंशी और अनेकदेशों के भूपाल तथा सूतपुत्र कर्ण द्रोणाचार्य के निकट आकर उनके शिष्य बने।

( १३५ वां अध्याय ) जब पांडव और धृतराष्ट्र के पुत्रगण अस्त्र शिक्षा निपुण हुए, तब कुमारों की शिक्षा की परीक्षा के लिए एक सुन्दर अखाड़ा बनाया गया। निश्चय किए हुए दिन में हस्तिनापुर के संपूर्ण राजपुरुप और साधारण लोग अखाड़े के निकट एकत्रित हुए। युधिष्ठिर आदि कुरुवंशी कुमार धनुषबाण धारण करके वहां आए और अति आश्चर्य्यमय अस्त्र विद्या प्रकट करने लगे। ( १३६ वां अध्याय ) जब अर्जुन अखाड़े में आकर अस्त्र शस्त्र चलाने की आश्चर्य दक्षता दिखाने लगे, ( १३७ वां अध्याय ) तब कर्ण ने अखाड़े में प्रवेश कर के, अर्जुन ने जो जो काम किये थे, वह सब कर दिखाया। दुर्योधन ने अपने भाइयों के सहित कर्णको गले से लगाया और उनसे कहा कि हे महाभुज ! मैं आप

के आधीन हूं। आप इस कुरु राज्य को मनमाना भोगिए। कर्ण बोले कि मैं केवल आपसे मिलता और अर्जुन से एक वार द्वंद्वयुद्ध किया चाहता हूं। इसके उपरांत अर्जुन और कर्ण दोनों युद्ध के लिए खड़े हो गए। कर्ण की ओर धृतराष्ट्र के पुत्रगण और अर्जुन की ओर द्रोण, कृप और भीष्म खड़े रहे। अखाड़ा दो भागों में बंट गया। उस समय कृपाचार्य बोले कि हे कर्ण! तुम अपने कुल और माता पिता का नाम कहो। अर्जुन राजा पांडु के पुत्र हैं। राजकुमारगण छोटे कुल में जन्मे हुए जनों से युद्ध नहीं करते। जब यह सुन कर कर्ण का मुख लज्जा से नीचा होकर मलीन हो गया, तब दुर्योधन ने कर्ण को उसी क्षण मंत्रजब्राह्मणों द्वारा अंग देश का राजा बना दिया। (१३८ वां अध्याय) भीमसेन बोले कि हे कर्ण! तुम रणभूमि में अर्जुन से मारे जाने योग्य नहीं हो। तुम सूतपुत्र हो। तुम घोड़ा चलाने के अर्थ शीघ्र पैने को थांभो। तुम अंगराज्य के भोगने योग्य नहीं हो। यह सुन कर्ण के होठ कांपने लगे। दुर्योधन भीम से कर्ण के पक्ष की अनेक बातें कहने लगे। उसी समय सूर्य अस्ताचल को गए। कौरव और पांडव दोनों दल के लोग अपने अपने गृह चले गए। कर्ण को पाकर दुर्योधन के मन से अर्जुन का भय जाता रहा।

(१४० वां अध्याय) कुछ काल के पश्चात् धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज के पद पर नियुक्त किया। पांडवों ने राजाओं को परास्त कर के निज राज्य को बढ़ाया। पांडवों के बल वीर्य के बहुत प्रसिद्ध हो जाने पर धृतराष्ट्र का भाव उन पर एकाएक बिगड़ गया। वह शोच के समुद्र में डूबने लगे।

(१४२ वां अध्याय) दुर्योधन भीम को अति बलवंत और युधिष्ठिर को पंडित देख कर अपार संताप से जलने लगा। उस समय संपूर्ण मनुष्य युधिष्ठिर को राज्य पाने की योग्यता के विषय में कोलाहल मचाने लगे। प्रजाओं की ऐसी बात सुन कर दुर्योधन बड़ा संतापित हुआ। वह निराले में धृतराष्ट्र के पास जाकर कहने लगा कि हे पिता! यदि पांडु के पुत्र उत्तराधिकारी होकर राज्य को पावेंगे, तो भविष्यत में क्रम से उनके वंशवाले

राजा हुआ करेंगे और हम सबों को पीढ़ी के क्रम से अनादर के सहित जीना पड़े गा। आप ऐसी कोई अच्छी नीति ठहराइए, जिससे हम लोगों को पराई कृपा पर पेट पालना न पड़े। (१४३ वां अध्याय) राजा धृतराष्ट्र ऐसी बातें सुन कर चित्त में दुविधा कर के शोकयुक्त हुए।

(१४४ वां अध्याय) राजा दुर्योधन ने सन्मान और धन देकर प्रजा वर्ग को क्रमशः वस में किया। कई एक मंत्री कहने लगे कि वारणावतनगर बहुत सुन्दर है और वहां पशुपति का महोत्सव होगा। ऐसा सुन वहां जाने के लिए पांडवों का मन दौड़ा। राजा धृतराष्ट्र ने पांडवों की रुचि जान कर उनको वारणावत में जाने की आज्ञा दी। (१४५ वां अध्याय) दुर्योधन ने पुरोचन नामक मंत्री से कहा कि तुम आजही जाकर वारणावत नगर के छोर में सन, धूप, आदि जितनी आग बालने वाली वस्तु हैं, उनसे भले प्रकार से घेरा हुआ एक चौपाल गृह बनवाओ; घृत, तेल चरबी और अधिक लाह के साथ कुछ मट्टी मिलाकर उसकी भीतों को पोतवा रक्खो; सन, तेल, घृत, लाह और लकड़ी गृह के प्रत्येक स्थान में रख दो और ठीक समय आने पर उस गृह के द्वार में आग लगा दो। उसमें पांडव जल मरेंगे। पुरोचन दुर्योधन के आज्ञानुसार वारणावत में जाकर सब काम पूरा करने लगा। (१४६ वां अध्याय) जब पांडव लोग वारणावत नगर को चले और पुरवासी वृंद उनको पहुंचाकर मार्ग से लौटे, तब विदुर ने युधिष्ठिर को सावधान किया कि गृह में आग जल उठेगी, तुम पहिले से सावधान रहना।

(१४७ वां अध्याय) पांडव लोग वारणावत में पहुंच कर पुरोचन की सेवा और पुरवासियों की उपासना प्राप्त कर वहां बसने लगे। १० दिन बीतने पर पुरोचन ने उनको शिवनामक गृह की बात सुनाई। पांडव लोग उस गृह में प्रविष्ट हुए। युधिष्ठिर ने गृह को देखकर भीमसेन से कहा कि घृत और लाह से मिली हुई चरबी की गंध को सूंघने से प्रकाश होता है कि यह गृह आग लगने वाली वस्तुओं से बना है। हम यत्न से यहां ही रह कर बाहर निकलने का पथ ढूंढ़ेंगे। हम जलने के भय से भाग जायं तो राज्यलोभी दुर्योधन दूतों के द्वारा हम सबों को मरवा सकता है। हम दुर्यो-

थन और पुरोचन को ठग कर अनेक स्थानों में छिप कर वास करेंगे। (१४८ वां अध्याय) विदुर का भेजा हुआ एक मनुष्य जो मट्टी खोदने में दक्ष था, आकर पांडवों से बोला कि पुरोचन इस गृह के द्वारपर कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में आग लगा देगा। युधिष्ठिर ने कहा कि अब तुम यत्नपूर्वक हमको इस अग्नि गृह से बचाओ। खनित ने उस गृह के भीतर एक बड़ा बिल खोद कर उसमें ऐसा द्वार लगाया कि वह भूमि के समान हो गया और बिल का मुंह ढांप दिया। (१४९ वां अध्याय) वर्ष दिन वहां रहने के पश्चात् कुंती ने ब्राह्मणों को भोजन कराया। दैववश एक बहेलिन पांचपुत्रों के सहित खाने की इच्छा से उस भोज में आई थी। वह अपने पुत्रों सहित मदिरा पीकर नशे से विह्वल हो उस घरही में सो गई। रात्रि को बड़ी हवा बह रही थी। ऐसे समय में भीमसेन ने उस गृह में, जहां पुरोचन सोता था, आग लगादी। फिर पांडवलोग माता के सहित बिल में जा घुसे और बिल से निकल लोगों से छिप कर शीघ्र चलने लगे। जब वे सब निद्रा के झोकों से और भय के कारण शीघ्र नहीं चल सके, तब भीमसेन माता को कंधे पर, नकुल और सहदेव को गोद में और युधिष्ठिर तथा अर्जुन के हाथ पकड़ कर छाती से पेड़ों को तोड़ते हुए चलने लगे।

(१५१ वां अध्याय) इधर रात्रि बीतने पर वारणावत नगर के बासियों ने आग बुझाकर मंत्री पुरोचन को जतुगृह के साथ जला हुआ पाया और पांचो पुत्रों के सहित जली हुई बहेलिन को देखा। तब उन्होंने धृतराष्ट्र को निकट जाकर कहा कि पांडवगण मंत्रि पुरोचन के सहित जल मरे हैं। यह सुनकर धृतराष्ट्र आदि कौरव और पुरवासीगण विलाप करने लगे। धृतराष्ट्र ने ज्ञातियों के सहित पांडवों की जल क्रिया की।

इधर पांडवगण माता के सहित वारणावत से निकल बड़े शीघ्र नावद्वारा गंगा के दूसरे पार जा पहुंचे और रात्रि में तारों के सहारे से पथ जान कर दक्षिण ओर चलने लगे। (१५२ वां अध्याय) भीमसेन ने निर्जन घोर बन में प्रवेश कर एक बड़े वटवृक्ष के नीचे सभों को उतारा। इस के पश्चात्

वह अपने भाइयों के लिये दो कोस से डुपट्टे में जल ले आए और सब को धरती पर सोए हुए देख कर आप जागने लगे।

(१५३ वां अध्याय) वटवृक्ष से थोड़ी दूर एक शालवृक्ष के ऊपर हिडंब नामक राक्षस था। वह इनको सोते हुए देखकर अपनी वहिन हिडिंबा से बोला, कि तुम उन मनुष्यों को मार कर मेरे पास लाओ। हिडंबा पांडवों के समीप जाने पर सुंदर पुरुषभीम को देखतेही काम वश होगई। वह सुंदर मानवी रूप धर कर भीम से बोली कि मैं आप को इस राक्षस से बचाऊंगी आप मेरे पति होइए। (१५४ वां अध्याय) हिडिंब यहां आकर भीम से लड़ने लगा। पांडवगण माता के साथ जाग उठे। (१५५ वां अध्याय) भीम ने हिडिंब को मारडाला। पांडवगण वहां से चलने लगे। (१५६ वां अध्याय) हिडिंबा ने पाडवों के साथ यह प्रतिज्ञा की कि मैं तुम लोगों को मनमाने स्थान में लेजाऊंगी और विपद से बचाऊंगी। मैं काम पीड़ा से सताई जाती हूं। भीमसेन मेरे पति हों। मैं दिन को भीमसेन को लेकर जहां मनमानेगा चलीजाऊंगी और नित्य रात्रि को इन्हें लाऊंगी। पांडवों की संमति होने पर हिडंबा भीम को लेकर आकाश मार्ग को चली गई और नाना स्थानों में उनके साथ विहार करने लगी। पश्चात् उस राक्षसी ने अति वीर्यवंत बड़ी माया रचनेवाला एक पुत्र प्रसव किया। वह बालक बाल अवस्थाही में यौवन को प्राप्त हुआ। बालक के घट के समान उत्कच अर्थात् खड़े केश थे। इस लिये भीम ने उसका नाम घटोत्कच रक्खा। हिडंबा ने अपना राक्षसी रूप धारण कर लिया। घटोत्कच पांडवों से ऐसा कह कर कि काम पड़ने पर आपहुंचूंगा उत्तर ओर चला गया।

(१५७ वां अध्याय) पांडवगण जटाधारी होकर और मृगचर्म तथा-वल्कल पहिन कर माता कुंती के सहित बनांतर में गमन करने लगे। पथ में मत्स्य, त्रिगर्त, पांचाल और कीचक देशो के सुंदर बनखंड, और नाना प्रकार के ताल उनको मिले। जब व्यासजी की पांडवों से भेंट हुई, तब उन्होंने उनको एकचक्रानगरी में एक ब्राह्मण के गृह में बसा दिया। (१५८ वां अध्याय) पांडवगण एक चक्रानगरी में कुछ काल बसे। वे दिन को, जो

भिक्षा पाते वह अपनी माता को दे देते थे। कुंती भिक्षा की वस्तु को अलग अलग बांट देती थी। भिक्षा का आधा भाग युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव तथा कुंती यह सब मिल कर भोजन करते थे और आधा भीमसेन खा लेते थे। (१६९ वां अध्याय) कुछ दिनों के पीछे कुंती ने पुत्रों को अनमन देख कर युधिष्ठिर से कहा कि हमको यहां रहे बहुत दिन बीत गए, एक स्थान में रहने से भिक्षा मिलने की संभावना बनी नहीं रहती, सो यदि तुम्हारा मत हो तो हम लोग पांचाल देश को चलें; वह देश अन्न से भरा है। युधिष्ठिर बोले कि ऐसाही हम करेंगे।

(१७० वां अध्याय) एक दिन महर्षि व्यास पांडवों के निकट आकर कहने लगे कि कृष्णा नाम्नी द्रौपदी तुम्हारी पत्नी बनने की बाट जोह रही है, तुमलोग पांचाल नगर में जाकर टिके रहो; निःसंदेह कृष्णा को पाकर सुख पाओगे। व्यासदेव यह कह कर चले गए। तब पांडवगण सीधे उत्तर चल कर सोमाश्रयण नामक तीर्थ में पहुंचे। संध्या होने पर अर्जुन पथ दिखाने और रक्षा के लिये एक जलती हुई लकड़ी ले कर आगे आगे चलने लगे। पांडवगण गंगा तट पर जा पहुंचे। (१८४ वां अध्याय) वन के भीतर 'उत्कोचक' तीर्थ में देवल के छोटे भाई धौम्य ऋषि तप करते थे। पांडवों ने वहां जाकर धौम्य को अपना पुरोहित बनाया। (१८६ वां अध्याय) इसके उपरांत वे लोग दक्षिणीय पांचाल के पांचाल नगर में पहुंच कर एक कुंभार के गृह में टिके और वहां ब्राह्मण की चाल लेकर भीख मांग मांग पेट पालते हुए बसे रहे।

द्रुपदपुरी के राजा यज्ञसेन की यह कामना थी कि अर्जुन ही को कन्यादान करें। उन्होंने ऐसा एक दृढ़ चाप बनवाया था कि जिसको अर्जुन के बिना कोई दूसरा नहीं नवा सके और आकाश में स्थित एक कृत्रिमयंत्र बनवाकर उस में एक लक्ष जोड़वाया था। राजा बोले कि जो राजा शरासन में गुण चढ़ा कर उस सजे हुए सायक से यंत्र को पार कर लक्ष को विद्ध कर सकेंगे, वही मेरी कन्या को पावेंगे। राजा द्रुपद के ऐसे स्वयंवर की सूचना देने पर राजालोग वहां आने लगे। नाना देशों से महर्षिगण

और कर्ण तथा दुर्योधन आदि कौरवगण स्वयंवर देखने के लिये आ पहुंचे। भूपगण अच्छे प्रकार से अलंकृत होकर भांति भांति के सात तल्ले भवनों में जा बैठे। पांडवलोग ब्राह्मण समाज के सहित बैठ कर महत् ऐश्वर्य देखने लगे। इस प्रकार से सभा बढ़ने लगी। १६ वें दिन द्रौपदी बन ठन कर रंग भूमि में जा पहुंची। (१८८ वां अध्याय) बलराम, कृष्ण और प्रधान प्रधान वृष्णिगण, अंधकगण और यादवगण भी आए थे। कृष्ण ने पांडवों को देख कर बलदेवजी से कहा कि मुझको जान पड़ता है कि येही पांचो पांडव हैं। संपूर्ण राजा ज्योंही धन्वा नवाने और उस पर गुण चढ़ाने लगे त्योंही धन्वा की कोटि से फेंके जाकर धरती पर लोट गए, तब उन्होंने उस चेष्टा से मन को हटा लिया। (१८९ वां अध्याय) अर्जुन ने ब्राह्मणसमाज से उठकर देखतेही देखते धन्वा पर गुण चढ़ाया और ५ बाण लेकर लक्ष को भेद दिया। लक्ष बहुत विद्ध होकर यंत्र के छेद से धरती पर गिर गया। जब भारी कोलाहल आरंभ हुआ, तब युधिष्ठिर नकुल और सहदेव को लेकर डेरे पर चले गए। द्रौपदी अर्जुन के पास जा पहुंची। (१९० वां अध्याय) राजागण अस्त्र लेकर राजा द्रुपद को मारने दौड़े। (१९१ वां अध्याय) भीम और अर्जुन कर्णादि राजाओं को रणोन्मत्त देखकर उनकी ओर दौड़े। कर्ण अर्जुन से जा भिड़े। शल्य भीमसेन की ओर दौड़े। दुर्योधन आदि सबों ने वहां के ब्राह्मणों पर चढ़ाई की। वे लोग द्विजों के साथ बिना यत्न धीमी लड़ाई लड़ने लगे। अर्जुन और कर्ण एक दूसरे पर क्रुद्ध होकर फुर्ती से लड़ने लगे। अंत में कर्ण अर्जुन का भुजवीर्य देख कर प्रसन्न हुए और ब्रह्मतेज को जीतने के अयोग्य समझ कर युद्ध से निवृत्त हुए। उधर भीम ने शल्य को ऊपर उठा कर भूमि पर पटक दिया। श्री कृष्ण ने भीम का यह अलौकिक कार्य देख कर भीम और अर्जुन को कुंती के पुत्र जाना और संपूर्ण राजाओं को विनय कर के युद्ध से निवृत्त किया। राजा लोग अपने अपने गृह को चले गए।

(१९२ वां अध्याय) भीम और अर्जुन द्रौपदी को साथ लेकर कुँमार के गृह में गए। उन्होंने कुंती से कहा कि हे माता! आज यह भिक्षा मिली

है। कुंती कुटी के भीतर ही से विना देखे हुए बोली कि तुम सब मिल कर भोगो; परंतु पीछे द्रौपदी को देख कर पछताने लगी कि हाय मैंने कैसी अनुचित बात कही। राजा युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा कि तुम द्रौपदी से विवाह करो। अर्जुन बोले कि बड़े भाइयों के रहते छोटे भाई का पहिले विवाह होना उचित नहीं है। तब युधिष्ठिर ने व्यास देव की बातें स्मरण करके ऐसा कहा कि यह द्रौपदी हम सबों की स्त्री होगी। श्रीकृष्णजी बलदेवजी के सहित पांडवों के समीप आए और उनसे अनेक बातें कर के शीघ्र वहां से चले गए। (१९३ वां अध्याय) द्रुपद कुमार धृष्टद्युम्न भीम और अर्जुन के पीछे पीछे जाकर किसी स्थान में छिपा था। रात्रि में पांडवों ने जैसी बात चीत की थी और वहां जो कुछ हुआ था, उसे देख कर वह चला गया। (१९४ वां अध्याय) धृष्टद्युम्न ने राजा द्रुपद से कहा कि मैं सुन चुका हूं कि पांडव अग्नि से जलने से बचे हैं। मुझको जान पड़ता है कि येही पांचोपांडव हैं। (१९५ वां अध्याय) राजा द्रुपद का दूत कुंभार के घर जाकर पांडवों से बोला कि महाराज! द्रुपद ने बाराती लोगों के लिये अच्छा अन्न बनवाया है। आप शीघ्र वहां आवें। वहीं कृष्ण का विवाह होगा। पांडवगण द्रौपदी और कुंती के सहित विविध यानों पर चढ़कर द्रुपदराज के घर गए और मनमाने भोजन कर के तृप्त हुए।

(१९६ वां अध्याय) राजा द्रुपद के पूछने पर युधिष्ठिर ने कहा कि महाराज! आप का मनोरथ सफल हुआ है, हम लोग राजा पांडु के पुत्र हैं। राजा द्रुपद पांडवों का परिचय पाकर अति हर्षित हुए। उन्होंने युधिष्ठिर को राज्य में बैठाने की प्रतिज्ञा की। राजा द्रुपद ने युधिष्ठिर से कहा कि आज शुभ दिन है। अर्जुन कृष्णा से विवाह करें। युधिष्ठिर बोले कि द्रौपदी हमसबों की रानी होगी। द्रुपद ने कहा कि एक नारी का बहुत पति होना मैंने कभी नहीं सुना, तुम धर्म के जानकार होकर क्यों लोक और बेद के विरोधी कर्म में हाथ डाला चाहते हो। युधिष्ठिर बोले कि प्रचेता आदि पहिले के महात्मा जिस पथ से चले हैं। हम उसी पथ से चलेंगे। मेरी माता ने यह आज्ञा दी है, यह अवश्यही सनातन धर्म है और इस पर अधिक

विचार करने का प्रयोजन नहीं है। उसी समय व्यासजी आ पहुंचे। (१९८ वां अध्याय) उन्होंने राजा द्रुपद से कहा कि पहिले ही यह निश्चय हुआ है कि कृष्णा इन सबों की पत्नी बनेगी। एक तपोवन में किसी ऋषि की एक कन्या थी। उसने कठिन तप करके शंकर को प्रसन्न किया। भगवान शंकर ने कन्या से वर मांगने को कहा। कन्या हड़बड़ी से पांच वार बोली कि मैं सर्वगुणयुक्त पति को मांगती हूं। शंकर ने कहा कि हे भद्रे! तुमने मुझ से ५ बार कहा कि पति दो, इसलिये तुम्हारे दूसरे जन्म में ५ पति होंगे, मेरी वात दूसरी न होगी। (१९९ वां अध्याय) व्यासदेव के ऐसा कहने पर द्रुपदराज यज्ञसेन कन्या के ब्याह का प्रयत्न करने लगे। युधिष्ठिर आदि पांचों पांडवो ने एक एक दिन उस सुंदरी का पाणिग्रहण किया। राजा द्रुपद ने पांडवों को नाना धन यौतुक में दिये। पांडवगण द्रुपदपुरी में इन्द्र के समान विहार करने लगे। (२०० अध्याय) राजाद्रुपद से मित्रता हो जाने पर पांडवगण एक वारही निर्भय हो गए।

(२०१ अध्याय) राजा दुर्योधन उदास होकर अश्वत्थामा, शकुनि, कर्ण, कृप और भाइयों के सहित द्रुपदपुरी से अपने पुर को लौटा। विदुर ने यह संवाद सुनकर राजा धृतराष्ट्र से कह सुनाया। धृतराष्ट्र बहुत प्रसन्न हुए। दुर्योधन और कर्ण धृतराष्ट्र से बोले कि क्या आप विदुर से विपक्षियों की प्रशंसा कररहे थे। अव सदा यह चेष्टा करनी चाहिए जिस से पांडवों का वल घटे। (२०३ अध्याय) कर्ण ने कहा कि हे पिता! इस समय हमारा यही कर्तव्य है कि जब तक पांडवों का पक्षलघु है, तब तक युद्ध प्रारंभ कर उनको मारना आरंभ करें। धृतराष्ट्र बोले कि हे कर्ण! भीष्म, द्रोण, विदुर, तुम और दुर्योधन मिल कर युक्ति से यह निश्चय करो कि जिस से हमारा मंगल हो। ऐसा कह धृतराष्ट्र भीष्म आदि संपूर्ण मंत्रियों को बुलवाकर विचारने लगे। (२०४ अध्याय) भीष्म ने कहा कि हे धृतराष्ट्र! पांडवों के साथ युद्ध करना किसी प्रकार मेरा अभीष्ट नहीं है। उन वीरों से संधि करके उनको आधा राज्य दे दो। (२०५ अध्याय) द्रोण बोले कि हे धृतराष्ट्र! महात्मा भीष्म की वात मुझको पसंद है। (२०६ अध्याय) विदुर बोले कि हे महा-

राज। भीष्म और द्रोण का वचन ध्यान में लाकर करो। ( १०७ वां अध्याय ) धृतराष्ट्र ने कहा कि हे विदुर। पंडित भीष्म और ऋषि द्रोण ने जो कहा और तुम जो कहते हो, वह परमहितकारी और सत्य है। तुम जाओ और माता सहित पांडव और कृष्णा को लिवालाओ। अनंतर धृतराष्ट्र की आज्ञा से विदुर द्रुपदपुरी में गए। ( २०८ वां अध्याय ) पांडव, कृष्ण और विदुर द्रुपद की आज्ञा पाकर कुंती और द्रौपदी के सहित हस्तिनापुर को चले। धृतराष्ट्र ने उनको आगे से लिवा लाने के लिये विकर्ण, चित्रसेन, द्रोण और कृप को भेजा। पांडवगण हस्तिनापुर में आए और यथायोग्य सब से मिल कर धृतराष्ट्र की आज्ञा से राजमंदिर में बसने लगे। धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा कि तुम भाइयों के साथ खांडवप्रस्थ में जा बसो, जिसमें तुम से हमारा फिर बिगाड़ न हो।

पांडवगण राज्य के आधेभाग को पाकर कृष्ण के सहित खांडवप्रस्थ में गए। उन्हों ने वहां शुभ पुण्यस्थान में भले प्रकार से नगर बसाया, जो भांति भांति के सुंदर भवनों की पक्तियों से देदीप्यमान होकर इंद्रपुरी के समान शोभायमान होने के कारण इंद्रप्रस्थ कहलाया।

( २१४ वां अध्याय ) अर्जुन ने ब्राह्मण की रक्षा के लिये अस्त्र लाने को युधिष्ठिर के भवन में प्रवेश किया। उस समय युधिष्ठिर द्रौपदी के साथ विराज रहे थे। उस भवन में जाने के कारण नियमित नियम के अनुसार अर्जुन के १२ वर्ष वनवास के लिये जाना पड़ा। ( २१५ वां अध्याय ) जिस समय अर्जुन गंगाद्वार में जाकर भागीरथी में स्नान कर रहे थे, उस समय पाताल के रहनेवाली नाग-राज-पुत्री उलूपी उन को जल में घसीट लेआई। अर्जुन सर्पराज के भवन में उलूपी के साथ उस रात को गवांकर सूर्योदय के समय गंगाद्वार में आए ( २१६ वां अध्याय ) और वहां से चलकर देशाटन करते हुए मणिपुर में पहुंचे। वहां उसने चित्रवाहन राजा की पुत्री चित्रांगदा से विवाह किया और उस नगर में ३ वर्ष गंवाया। वहां अर्जुन को चित्रांगदा के गर्भ से बभ्रुवाहन नामक एक पुत्र जन्मा। ( २१९ वां अध्याय ) अर्जुन अनेक पुण्य स्थान और तीर्थों में भ्रमण करते हुए द्वारिका में गए। (२२१ वां

अध्याय ) वसुदेव की पुत्री सुभद्रा रैवतपर्वत को पूजकर द्वारिका की ओर जारही थी, ऐसे समय में कृष्णचंद्र की अनुमति से अर्जुन ने उसको रथपर चढ़ालिया। जब वह अपने नगर की ओर जाने लगे, तब द्वारिकावासी क्षत्रियों ने युद्ध का सामान किया ( २२२ वां अध्याय ) पर कृष्ण के समझाने पर वे लोग युद्ध से निवृत्त हुए। अर्जुन द्वारिका में लौट कर सुभद्रा से विवाह करने के उपरांत वर्षभर वहां रहे, पीछे पुष्कर तीर्थ में जाकर शेषकाल काटने लगे और १२ वर्ष पूर्ण होनेपर खांडवप्रस्थ में लौट आए। अनंतर कृष्ण की वहिन सुभद्रा ने अभिमन्यु को प्रसव किया। द्रौपदी ने पांच पतियों से ५ पुत्र प्राप्त किए। युधिष्ठिर से प्रतिविंध, भीम से सुतसोम, अर्जुन से श्रुतकर्मा, नकुल से शतानीक और सहदेव से श्रुतसेन।

( २३५ वां अध्याय ) जब अग्नि ने खांडववन को जलाया तब इंद्र ने प्रसन्न होकर कृष्ण और अर्जुन को वर प्रदान किया।

## (२) सभापर्व—(३रा अध्याय )

मयदानव ने राजा युधिष्ठिर के लिये १४ महीने में चारो ओर ५ सहस्र हाथ फैली हुई एक सभा बनाई। उसने मणि रत्नों से सुशोभित एक बड़ा सरोवर खोदवाया। सभा के चारो ओर ठंढी छांह वाले अनेक भांति के वृक्ष और सरोवर वने।

(१२ वां अध्याय) नारद ऋषि ने राजा युधिष्ठिर को राजसूययज्ञ करने का उपदेश दिया। (१३ वां अध्याय ) राजा ने श्रीकृष्णचंद्र को द्वारिका से बलाकर उनसे अपना प्रयोजन कह सुनाया। ( १४ वां अध्याय ) श्रीकृष्ण बोले कि हे महाराज ! आप राजसूययज्ञ करने के अधिकारी हैं, परंतु जरासंध ने सब राजाओं का सौभाग्य पाय पृथवीनाथ बनकर अपने तेज से सबों पर बड़ाई लाभ की है; आप अतिपराक्रमी जरासंध के जीते रहते कदापि राजसूययज्ञ पूरा नहीं करसकेंगे। ( १५ वां अध्याय ) जरासंध ने सैकड़े पीछे ८६ भूपों को कैद कर रक्खा है। सौ में केवल १४ शेषबचे हैं। ( २० वां अध्याय) जरासंध के मित्र डिंभक ने जल में डूबकर प्राण छोड़ा है। और कंस भी मारा गया, सो जरासन्ध के वध का यही औसर है।

संपूर्ण सुरासुर भी खुलाखुली लड़ाई में उसको परास्त नहीं करसकते इसलिये उसको भुजयुद्ध से ही जय करना उचित है। राजा युधिष्ठिर के साथ एक मत होने पर श्रीकृष्णचंद्र, भीम और अर्जुन ब्राह्मणों के वस्त्र पहिनकर मगधनाथ की राजधानी की ओर चले और कुरु जांगल, पद्मसरोवर, गंडकी, सदानीरा, सरयू, पूर्वकोशल, मिथिला, गंगा और सोननदी को क्रम से पार हो, मगध-राज के छोर में पहुंचे।

(२१ वां अध्याय) श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन स्नातकव्रत धारण किए हुए नगर में पहुंचे और ३ कच्छाओं को लांघ राजा जरासंध के निकट उपस्थित हुये। राजा ने विधिपूर्वक उनका सत्कार किया। उस समय अर्जुन और भीम मौन साधे थे। श्रीकृष्ण बोले कि हे नरनाथ! ये लोग नियम युक्त हैं, आधी रात्रि बीतने पर तुम से वार्तालाप करेंगे। अर्द्ध-रात्रि होने पर जरासंध उनके पास आए। जरासंध बोले कि स्नातक व्रतधारी ब्राह्मण मालादि नहीं धारण करते, पर तुम फूल लगाए हो और तुम्हारे हथेलियों ने धनुष में गुण चढ़ाने के चिन्ह बने हैं। कहो तुम कौन हो और मेरे पास आने का प्रयोजन क्या है। (२२ वां अध्याय) अनेक बातचीत होने के उपरांत श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं कृष्ण हूं और यह दोनों पांडु के पुत्र हैं; तुम स्थिर होकर लड़ो, या सब भूपों को छोड़ दो। जरासंध ने कहा कि जो तुम युद्ध की बात कहते हो तो व्यूहयुक्त सेनाओं से अथवा अकेले एक से, दो से वा तीनों से एक वारहीं वा अलग अलग चाहे जैसे हो, लड़ने को मैं तय्यार हूं। (२३ वां अध्याय) अंत में जरासंध ने भीम से लड़ने को कहा, तब जरासंध और भीम एक दूसरे से भिड़ गए। दोनों की लड़ाई कार्तिक मास की प्रथमतिथिसे आरंभ होकर त्रयोदशी तक रात्रि दिन बिना भोजन किये होती रही। चतुर्दशी की रात को जरासंध ने थककर कुश्ती त्यागदी। (२४ वां अध्याय) भीमसेन ने ऊंचे उठाकर १०० फेरा घुमाने के उपरांत अपनी जंघा से उसकी पीठ नवा कर तोड़ डाली। कृष्ण आदि तीनों भाई रात्रि के समय मरे हुए जरासंध को राज द्वार पर छोड़ कर वहां से निकले। उन्होंने संपूर्ण राजाओं को कारागार

में छुड़ाया। श्रीकृष्णजी ने भूपगणों से कहा कि राजा युधिष्ठिर राजसूययज्ञ करेंगे, सो तुम लोग उनकी सहायता करो। इसके उपरांत श्रीकृष्ण जरासंध के पुत्र सहदेव को राजतिलक देकर बहुत रत्नों के सहित इन्द्रप्रस्थ में आए।

(२५ वां अध्याय) अर्जुन ने उत्तर दिशा, भीम ने पूर्व, सहदेव ने दक्षिण और नकुल ने पश्चिम दिशा में दिग्विजय किया। (३३ वां अध्याय) शीघ्रगामी दूतों ने सबको निमंत्रन दिया। (३४ वां अध्याय) नकुल ने हस्तिनापुर में जाकर भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य इत्यादि को निमंत्रित किया। चारो दिशाओं से सब प्रदेशों के राजे यज्ञसभा में आए। (३६ वां अध्याय) सहदेव ने भीष्म के आज्ञानुसार श्रीकृष्ण को प्रधान अर्घ दिया। चेदिनाथ शिशुपाल से कृष्ण की यह पूजा सही नहीं गई, तब वह उनकी निंदा करने लगा। (४५ वां अध्याय) शिशुपाल ने जब कृष्ण को १०० अनुचित बातें कहीं, तब श्रीकृष्ण ने सुदर्शनचक्र से उसका सिर काट डाला और उसके शरीर की तेजोराशि कृष्ण के शरीर में मिल गई। युधिष्ठिर ने शिशुपाल के पुत्र को चेदिराज के अधिकार में अभिषिक्त कर दिया। अनंतर राजा युधिष्ठिर का राजसूययज्ञ निर्विघ्न समाप्त हुआ। संपूर्ण निमंत्रित राजागण अपने अपने गृह को और श्रीकृष्ण द्वारिकापुरी को गए। केवल राजा दुर्योधन और शकुनि कुछ काल उस दिव्यसभा में टिके रहे।

(४६ वां अध्याय) दुर्योधन ने उस सभा में टिक कर धीरे धीरे उसके सब भागों को देखा। एक दिन उसने स्फटिक के बने हुए स्थलभाग के निकट जा उसे जल जान कर अपना चीर उतारा। पीछे वह उसको स्थल जान कर उदास हो सभा में फिरने लगा और स्फटिक के समान जल से पूर्ण (स्फटिक से बने हुए) एक तालाब को स्थल जान कर वस्त्र सहित उसके जल में जा गिरा। यह देख भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव सब हंसने लगे। दुर्योधन चीर बदल कर स्थल पर आया, तिस पर भी सब कोई फिर हंस उठे। दुर्योधन एक बंद स्फटिक के द्वार को निहार कर उसको खुला जान ज्यों प्रवेश करने लगा, त्योंहीं सिर में चोट खाकर अचेत हो गया और एक खुले द्वार के निकट जाकर उसको बंद जान

उसके पास में लौट आया। तब पीछे वह लज्जित हो युधिष्ठिर की आज्ञा लेकर अप्रसन्नचित्त से हस्तिनापुर में आया।

(४७ वां अध्याय) दुर्योधन ने शकुनी से कहा कि हे मामा! बिना लड़ाई के जय करने का कोई उपाय हो तो मुझको बताओ। शकुनी बोला कि युधिष्ठिर खेल नहीं जानता है, पर वह चौसर का बड़ा प्रेमी है, सो चौसर खेलने के लिये तुम उसको बुलाओ। मैं बिना संदेह उसका राज्य और लक्ष्मी जीत लूंगा। (५५ वां अध्याय) राजाज्ञा पाकर सहस्रों शिल्पियों ने हस्तिनापुर में सहस्र स्तंभ वाली, जिसमें वैदूर्य आदि रत्नों से १०० द्वार बने थे, लंबाई चौड़ाई में सौ सौ कोस फैली हुई, एक सभा बनाई और उसमें संपूर्ण वस्तु रख दी। (५६ वां अध्याय) धृतराष्ट्र की आज्ञा से विदुर इंद्रप्रस्थ में जाकर भाइयों सहित राजा युधिष्ठिर को हस्तिनापुर में लिवा लाए। (५७ वां अध्याय) जब राजा युधिष्ठिर सभामंडप में जाकर आसन पर विराजे, तब शकुनी ने पुकार कर कहा कि हे महाराज! चौसर खेलने और तुमको देखने के लिये आए हुए भूपों से सभा भर गई है, सो आप चौसर खेलिए। जूआ आरंभ होने की बात ठहर जाने पर सब उपस्थित राजागण धृतराष्ट्र को सामने बैठा कर सभा मंडप में बैठे। (५८ वां अध्याय) युधिष्ठिर ने कहा कि मेरे सहस्रों सुवर्ण मुद्रा से भरे अनेक संदूक, कोश, अक्षयधन और अनेक सुवर्ण चांदी की धातु हैं; मैं उन सभों की बाजी रखता हूं। शकुनी ने कहा कि इसे मैंने जीता। (६१ वां अध्याय) युधिष्ठिर ने क्रम से संपूर्ण राज्य, कोश, धन और राजसामान की बाजी रक्खी, शकुनी ने छल पूर्वक उन सब को भी जीत लिया। जब उन्होंने अपने भाई नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीम की भी क्रम से बाजी रक्खी और शकुनी ने छल पूर्वक पासा फेंक कर सब को जीत लिया, तब राजा ने अपने को बाजी में रक्खा। शकुनी छल पूर्वक पासा फेंक कर बोला कि यह भी मैं जीता। इसके पश्चात् उसने युधिष्ठिर से कहा कि महाराज! अब तुम अपनी प्यारी स्त्री कृष्णा की बाजी रक्खो। युधिष्ठिर ने द्रौपदी की बाजी रक्खी। उस समय सभा में बैठे हुए वृद्धों के मुख से "धिक्कार है" ऐसे शब्द निक-

लने लगे। भीष्म, द्रोण, कृप, आदि के रोम कूपों से पसीने निकलने लगे। शकुनी ने यह कर कि 'मैंने जीता' पासों को उठा लिया। (६३ वां अध्याय) दुर्योधन ने अहंकार से उन्मत्त होकर दुःशासन को द्रौपदी के लेआने के लिये भेजा। दुःशासन पांडवों के वास गृह में प्रवेश करके द्रौपदी से बोला कि तुम हारी गई हो, अब लज्जा तज कर दुर्योधन को निहारो, कुरुओं की सेवा करो और सभा में चलो। द्रौपदी कातर होकर उठी और जिधर राजा धृतराष्ट्र की नारीगण थीं, उसी ओर चली। तब दुःशासनने उसके लंबे बाल को पकड़ कर उसको सभा के पास लाकर खींचने लगा। द्रौपदी बोली कि सभा में सब शास्त्रज्ञ दयावान इंद्र के समान मेरे बड़े लोग बैठे हैं। इनके आगे मैं ऐसे नहीं खड़ी रह सकती हूं। रे दुष्ट! सभा में मुझे वस्त्र हीन मत कर। दुःशासन ने द्रौपदी को बल से खींच और हंस कर कहा कि तू तो दासी है। कर्ण और शकुनी यह वचन सुन कर हंसते हुए दुःशासन की प्रशंसा करने लगे। (६४ वां अध्याय) कर्ण बोले कि हे दुःशासन! द्रौपदी चाहे एक वस्त्रा, वा नंगी हो, इसको सभा में लाना कोई अयोग्य नहीं है, क्योंकि पांडवों के धन में यह भी तो है और शकुनी ने इसको धर्म से ही जीता है, अतएव तुम पांडवगण और द्रौपदी का वस्त्र उतार लो। पांडव लोग यह बात सुन कर अपना वस्त्र उतार कर सभा में बैठ गए। जब दुःशासन सभा के बीच में द्रौपदी का वस्त्र बल से खींचने लगा तब उसने श्रीकृष्ण का स्मरण किया। श्रीकृष्ण करुणा से आर्द्र हो अपनी सभा छोड़ कर पैरही से दौड़े। उन्होंने उसके वस्त्र में वास किया। इसलिये जब उसका वस्त्र खींचा गया, तो वस्त्र के भीतर से वस्त्रों में से वस्त्र निकलने लगे। सभा के बीच में द्रौपदी के वस्त्रों के ढेर हो गये। तब दुःशासन थक कर और लज्जित हो बैठ रहा। (६७ वां अध्याय) धृतराष्ट्र क्रोध करके बोले कि हे द्रौपदी! जो तुम्हारी इच्छा हो, वह हमसे वर मांगो। द्रौपदी बोली कि युधिष्ठिर दास भाव से छूटें और मेरे पुत्र प्रतिविंध्य को कोई दास पुत्र न कहे। धृतराष्ट्र ने यह वरदान देकर द्रौपदी से दूसरा वर मांगने को कहा। द्रौपदी बोली कि हे राजन्! भीम, अर्जुन, नकुल और

सहदेव को धनुष और रथ के समेत मैं मांगती हूं धृतराष्ट्र ने यह वर भी दान देकर तीसरा वर मांगने को उससे कहा. तब वह बोली कि स्त्री को तीसरा वर मांगने का अधिकार नहीं है, सो अब मैं नहीं लूंगी । ( ६९ वां अध्याय ) युधिष्ठिर ने राजा धृतराष्ट्र की आज्ञा लेकर द्रौपदी और अपने भाइयों सहित रथों में बैठ कर इन्द्रप्रस्थ को प्रस्थान किया।

( ७२ वां अध्याय ) दूत ने मार्ग में जाकर राजा युधिष्ठिर से कहा कि राजा ने कहा है कि सभा में आकर फिर जुआ खेलो। यह सुन युधिष्ठिर भाइयों सहित फिर जुए के स्थान में पहुंचे। शकुनी बोला कि हे पांडवों! गाय, घोड़ा बैल, अनंत बकरी, भैंसे, हाथी, कोष सुवर्ण-दासी, दास यह सब हम एकही दावं पर बनवासार्थ लगाते हैं। तुम या हम जो हारें वह १२ वर्ष बनमें वास करे और १३ वें वर्ष मनुष्यमय स्थान में छिप कर रहे। जब युधिष्ठिर ने यह बात स्वीकार की, तब शकुनी ने पाशा उठाया और कह दिया कि युधिष्ठिर हार गए। ( ७७ वां अध्याय ) सभाविसर्जन होने के उपरांत राजा धृतराष्ट्र ने संजय से कहा कि द्रौपदी के दुःखार्त होने सेही पृथ्वी भस्म हो जा सकती है। मेरे पुत्रों का अब नाश होगया। द्रौपदी को सभा में आते देखकर कुरुकुल की सब स्त्रियां गांधारी सहित और प्रजाओं की स्त्रियों के संग सोचती हैं।

(३) वनपर्व—( १ ला अध्याय ) पांडव लोग धृतराष्ट्र के पुत्रों से जुए में हारकर नगर के द्वार से निकल उत्तर दिशा को चलने लगे और रथों में बैठ गंगा तटपर पहुंचकर वटवृक्ष के पास रात्रि में टिकरहे। ( ३ रा अध्याय ) सूर्य भगवान ने युधिष्ठिर को एक तांबे की बटलोही दी और उन से कहा, कि अन्न, फल, मूल, साग वा मांस जो कुछ इसमें बनेगा; उसको जब तक द्रौपदी इस पात्र से परोसेगी, तबतक खाने और पीने के योग्य सब प्रकार के अन्नादि इस में भरे रहेंगे। जिस अन्न से भोजन बन ता था, वह यदि थोड़ाभी हो, तौभी चारो प्रकार के भोजन अक्षय हो जाते थे। पांडवगण उसी अन्न से ब्राह्मणों को भोजन कराकर आप भोजन करते थे और द्रौपदी के भोजन करने के पश्चात् वह पात्र खाली होजाता था।

(५ वां अध्याय) पांडवों ने गंगातीर से कुरुक्षेत्र को प्रस्थान किया। वे लोग वहां से सरस्वती दृषद्वती और यमुना के तट पर एक वन से दूसरे वन को, ऐसे बराबर पश्चिम दिशा को चले जाते थे। उन्होंने मारवाड़ और जांगल देश की समभूमि में सरस्वती के तटपर काम्यक वन को देख कर वहां निवास किया। (२३ वां अध्याय) पुरवासी लोग पांडवों से विदा हो कर अपने अपने गृह को चले गए। (२४ वां अध्याय) इस के पश्चात् ब्राह्मणों सहित पांडवगण पवित्र जल से भरे हुए उस वन के द्वैतवन तड़ाग के समीप चलेगए (२५ वां अध्याय) और उस वन में निवास करते हुए सरस्वती के तट पर शालवन में विहार करने लगे। उनके आश्रम में मार्कण्डेय मुनि आए। (३५ वां अध्याय) जब पांडवों के १३ मास वन में व्यतीत हुए, (३६) तब वे लोग अपने मंत्री और दल बल सहित वहां से चलकर काम्यक वन में सरस्वती के निकट जाकर निवास करने लगे।

(३७ वां अध्याय) अर्जुन राजा युधिष्ठिर की आज्ञा लेकर उस वन से चले और हिमाचल और गंधमादन पार हो कर इंद्रकील नामक स्थान में पहुंचे। (४३ वां अध्याय) वह वहां से इंद्र लोक में गए (४४) और वहां ५ वर्ष निवासकर शस्त्रविद्या में निपुण हुए। उन्होंने वहां चित्रसेनगंधर्व से नाचने गाने और बजाने की विद्या भी प्राप्तकी (४६ वां अध्याय) जब अर्जुन ने कामार्तउर्वशी का मनोरथ पूर्ण नहीं किया, तब उसने अर्जुन को शाप दिया, कि तुम स्त्रियों के मध्य में नपुंसक के समान नचाने वाले बनोगे। (९३ वां अध्याय) इधर युधिष्ठिर, भीम, नकूल और सहदेव चारों भ्राताओं ने धौम्यमुनि और लोमशऋषि सहित काम्यक वन से तीर्थ यात्रा की। (१४५ वां अध्याय) वे तीर्थ भ्रमण करते हुए नर नारायण के निवास स्थान बदरीकाश्रम में आए (१५५ वां अध्याय) और अर्जुन का मार्ग देखते हुए कुबेर की संमति से थोड़े दिन गंधमादन पर्वत पर रहे। (१६४ वां अध्याय) अर्जुन ५ वर्ष इंद्रलोक में निवासकर गंधमादन पर आए और युधिष्ठिर आदि भाइयों से मिले। (१७६ वां अध्याय) पांडव लोग कुबेर के स्थान पर ४ वर्ष पर्यंत रहे। प्रथम ६ वर्ष व्यतीत हुए थे। इस भांति वनवास के

१० वर्ष वीत कर ११ वां वर्ष आरंभ होगया। (१७७) पांडवगण यहां से लौटे और कैलाश पार होने के अनंतर राजर्षि वृषपर्वा के आश्रम में पहुंचे। वे-लोग वहां एक रात्रि निवासकर वदरिकाश्रम में आए और वहां से सुख सहित चलते चलते १ मास में किरातराज सुबाहु के राज्य में पहुंचे। पांडवों ने वहां से घटोत्कच दैत्य को जो इनको अपने कंधे पर ले चलता था, विदा किया और रथों पर चढ़कर यामुन पर्वत पर गमन करने के पश्चात् विशाख रूप पर्वत पर निवास किया। वे उस वन में एक वर्ष रह कर काम्यक वन में आए। (२३६ वां अध्याय) उन्होंने पवित्र तालाव के निकट पहुंचकर अपने संग के सब लोगों को विदा करदिया। (२३९ वां अध्याय से २४६ वां तक) दुर्योधन ने अपनी सेना और सहस्रों स्त्रियों सहित द्वैतवन में आकर अपनी गोशाला के निकट डेराडाला। चित्रसेन आदिक गंधर्वोंने दुर्योधन की सेना को परास्त किया। जब गंधर्वगण दुर्योधनादिकों को पकड़ सब राज स्त्रियों को बांधकर लेचले, तब दुर्योधन के मंत्रीगण राजा युधिष्ठिर की सरण में प्राप्त हुए। पांडवों ने गंधर्वों को परास्त कर के दुर्योधनादि को छुड़ा लिया। दुर्योधन लज्जा युक्त हो अपने नगर को गया।

(२५४ वां से २५६ वां अध्याय तक) कर्ण सेना सहित दिग्विजय को निकले और थोड़े ही समय में पृथ्वी के संपूर्ण देशों को जीत कर लौट आए। दुर्योधन ने बड़े धूमधाम से विष्णुयज्ञ किया।

(२६२ वां से २६३ वां अध्याय तक) दुर्वासामुनि अपने शिष्यों सहित दुर्योधन के गृह आए। दुर्योधन ने कुछ दिनों तक मुनि का बड़ा सत्कार किया। जब ऋषि प्रसन्न हुए, तब उसने यह वर मांगा कि हे ब्रह्मन्! जब द्रौपदी ब्राह्मण और पांडवों को भोजन करा कर आप भी खा चुकी हो, तब आप अतिथि होकर युधिष्ठिर के पास जाइए। दुर्वासा मुनि दस सहस्र शिष्यों सहित पांडवों के निकट आए। उस समय द्रौपदी भी खा चुकी थी। मुनि शिष्यों सहित स्नान को चले गए। द्रौपदी अन्न का सोच करने लगी। उसने जब कहीं अन्न का ठिकाना नहीं देखा, तब कृष्ण भगवान का ध्यान किया। श्रीकृष्णजी द्वारिका से दौड़ कर शीघ्र द्रौपदी

के निकट आ गए। उन्होंने द्रौपदी से भोजन मांगा। द्रौपदी ने सूर्य की दी हुई बटुई कृष्ण को दिखा दी। उन्होंने उसमें एक चावल लगा हुआ देख कर उसको खा लिया और द्रौपदी से कहा कि इस चावल से जगत के आत्मा परमेश्वर तृप्त हों। श्रीकृष्ण की आज्ञा से सहदेव मुनि को बुलाने गए। दुर्वासा ऋषि अपने शिष्यों सहित अत्यन्त तृप्त हो गए थे। वे बोले कि वृथाही हम लोगों ने युधिष्ठिर के यहां भोजन बनवाया। ऐसा न हो कि वे लोग अपने क्रोध भरे नेत्रों से हम लोगों को भस्म कर दें। दुर्वासा के ऐसे वचन सुन सब मुनि दशों दिशाओं में भाग गए।

(२६४ वें अध्याय से २७२ वें अध्याय तक) एक दिन पांडव लोग चारो ओर शिकार खेलने गए थे और द्रौपदी आश्रम में थी। सिंधुदेश के राजा वृद्धक्षत्र के पुत्र विवाह करने की इच्छा से शाल्वदेश में जाते थे। वे काम्यक वन में ठहर गए। वृद्धक्षत्र के पुत्र जयद्रथ द्रौपदी की सुन्दरता देख विस्मित हो गए, उन्होंने उसको खींच कर अपने रथ में बैठा लिया। इतने में पांडवों ने शिकार से आकर जयद्रथ की सेना को परास्त किया। भीमसेन ने भागते हुए जयद्रथ के बाल पकड़ कर उसको पृथ्वी में पटक दिया और पश्चात् उसके सिर के बाल मुड़वा कर सिर पर पांच चोटी रख दी। पीछे युधिष्ठिर ने जयद्रथ को छुड़वा दिया। इसके पश्चात् वह गंगाद्वार में जाकर शिव का तप करने लगे। शिवजी ने जयद्रथ को ऐसा वरदान दिया कि तुम अर्जुन को छोड़ कर युद्ध में सब पांडवों को वारण कर सकोगे।

(३१५ वां अध्याय) पांडवों के वनवास के १२ वर्ष बीत गए। ब्राह्मण लोग और मुनिगण पांडवों से आज्ञा लेकर अपने अपने गृह को चले गए।

(४) विराट पर्व—(पहला अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने कहा कि मत्स्यदेश के राजा विराट धार्मिक, पंडित और सदा से पांडवों के भक्त हैं, इस लिये हम लोग एक वर्ष उन्ही के गृह में निवास करेंगे।

(५ वां अध्याय) पांडव लोग पर्वत, गुफा और वनों में निवास करते हुए राजा विराट के नगर के निकट पहुंचे। नकुल ने युधिष्ठिर के आज्ञानुसार नगर के समीप शमी के वृक्ष पर धनुषों को रख दिया और उनको

दृढ़ बंधनों से बांधा। पांडवों ने उस वृक्ष पर एक मृतक पुरुष को बांध दिया, जिस से कोई पुरुष उस वृक्ष के निकट न जाय और अपना गुप्त नाम जय, जयंत, विजय, जयत्सेन और जयद्बल रक्खा।

( ७ वां अध्याय ) राजा युधिष्ठिर ने सुवर्ण के पासों को अपनी बगल में दबा कर राजा विराट की सभा में प्रवेश किया और विराट से कहा कि मैं राजा युधिष्ठिर का मित्र था, मेरा नाम कंक है, मैं ब्राह्मण हूं और जूआ खेलने और खेलाने में प्रवीण हूं। ऐसा सुन राजा विराट ने उनको अपना सभासद बनाया। ( ८ वां अध्याय ) इसके पश्चात् भीमसेन रसोइया का बेप बना कर विराट की सभा में पहुंचे और बोले कि मेरा नाम बल्लव है, मैं उत्तम रसोई बनाना जानता हूं। राजा ने भीम को केवल रसोईहो का काम नहीं दिया, किंतु अपना प्यारा मित्र भी समझ लिया। ( ९ वां अध्याय ) द्रौपदी एक मैली धोती पहन कर दासी भेष से गलियों में रोदन करती हुई फिरने लगी। विराट की बड़ी स्त्री कैकेयी ने अपने झरोखे से द्रौपदी को देख अपनी दासियों से उसको बुला लिया। द्रौपदी ने कहा कि मैं दासी हूं। मैंने बहुत दिनों तक कृष्ण की पटरानी सत्यभामा की सेवा की है और मैं पांडवों की स्त्री द्रौपदी के संग रही हूं। उसने मेरा नाम मालिनी रक्खा था। गंधर्वराज के ५ पुत्र मेरे पति हैं, जो गुप्त रूप से सदा मेरी रक्षा करते हैं। रानी की आज्ञा से द्रौपदी उसके गृह में रहने लगी। ( १० वां अध्याय ) सहदेव ग्वाल का बेष बना कर राजा विराट के पास गए और उनसे बोले कि मैं अरिष्टनेमि नामक वैश्य हूं और प्रथम राजा युधिष्ठिर के यहां गौओं का स्वामी था। विराट ने अपने संपूर्ण पशुओं का स्वामी उनको बनाया। ( ११ वां अध्याय ) उसी समय स्त्रियों के समान वस्त्र और आभूषण धारण किए हुए अर्जुन देख पड़े, उन्होंने राजा से कहा कि मैं नाचना, गाना और बजाना जानता हूं। मैं राजपुत्री उत्तरा को नाचना, गाना, सिखलाऊंगा। मेरा नाम बृहन्नला है। राजा ने बृहन्नला की परीक्षा स्त्रियों से करवा कर जब जाना कि यह नपुंसक है, तब राजपुत्री के गृह में जाने की उसको आज्ञा दी। उसी दिन से अर्जुन विराटपुत्री उत्तरा को

नाचना, गाना और बजाना सिखलाने लगे। (१२ वां अध्याय) इसके उपरांत नकुल ने आकर कहा कि मैं घोड़ों की सब विद्या जानता हूं और रथ हांकने में परम निपुण हूं। राजा युधिष्ठिर ने मुझे अपने घोड़ों का स्वामी बनाया था। मुझको सब लोग ग्रंथिक नाम से पुकारते थे। यह सुन कर राजा विराट ने घोड़े आदि वाहनों का स्वामी नकुल को बनाया।

(१४ वां अध्याय) वर्ष समाप्त होने से थोड़े ही दिन पहिले विराट का सेनापति कीचक द्रौपदी को देख कामातुर हो गया (१६ वां अध्याय) उसने जब बल से द्रौपदी को पकड़ लिया, तब द्रौपदी झटके से वस्त्र छुड़ा कर सभा की सरण गई। कीचक ने राजायुधिष्ठिर के सामने ही द्रौपदी के बाल पकड़ कर पृथ्वी में गिरा दिया और उसको लात मारी। उस समय सूर्य के भेजे हुए राक्षस ने कीचक को उठा कर दूर फेंक दिया। और द्रौपदी सुदेष्ण रानी के गृह में चली गई। (२२ वां अध्याय) भीम ने द्रौपदी से कहा कि विराट के बनाए हुए नाचने के स्थान में एक शयन गृह है। वहांही मैं कीचक को मारूंगा, तुम किसी प्रकार से उस स्थान में उसको भेज दो। कीचक प्रातःकाल होतेही राजभवन में पहुंचा और द्रौपदी से बोला कि तुम मेरी सेवा करो। द्रौपदी ने कहा कि राजा विराट ने जो नाचने का स्थान बनाया है, तुम अंधेरे में अर्द्धरात्रि के समय वहां जाना। मैं तुमसे वहीं मिलूंगी। द्रौपदी ने भीमसेन से यह वृत्तांत कह सुनाया। भीम आधीरात को नाच घर में जाकर छिप कर बैठे। उसी समय कीचक भी वहां पहुंचा। उसने द्रौपदी को ढूंढ़ते ढूंढ़ते एकांत में पलंग पर सोते हुए भीम को पाया और उनका हाथ पकड़ लिया। वह कामातुर आनन्द के वश होकर भीम के पास सो गया। भीम ने अनेक वार्तालाप करने के पश्चात् उठ कर कीचक का बाल पकड़ लिया। दोनों का परस्पर बाहु युद्ध होने लगा। अंत में भीम ने कीचक के हाथ पांव और सिर को तोड़ कर उसके पेट में घुसेड़ दिया। इसके उपरांत वह कीचक की लोथ को फेंक कर चौके में आकर सो गए। द्रौपदी ने पहरेवालों से कहा कि मेरे गंधर्वपतियों ने कीचक को मार डाला। पहरेवाले हाथ पांव से रहित कीचक को देख कर बहुत डरे और कहने

लगे कि इसको अवश्य गंधर्वों ने मारा है। ( २३ वां अध्याय ) कीचक के बांधवगण अरथी में कीचक के संग द्रौपदी को बांधकर श्मशान में ले चले। भीम वेष बदल कर दूसरे मार्ग से श्मशान में पहुंच कर एक वृक्ष लेकर दौड़े। उन्होंने भागते हुए १०५ सूतों को मार कर द्रौपदी को खोल दिया। इसके पश्चात् वह एक मार्ग से द्रौपदी को नगर में भेज कर दूसरे मार्ग से राजा के रसोई गृह में चले गए। सब लोगों ने कहा कि गंधर्वों ने कीचक के बांधवों को मार डाला।

( २५ वां अध्याय ) दुर्योधन के भेजे हुए दूतगण सर्वत्र पांडवों को ढूंढ़ कर हस्तिनापुर में लौट आए और राजसभा में बोले कि हम लोगों ने सर्वत्र ढूंढ़ा, परन्तु पांडवों का पता किसी स्थान में नहीं लगा। एक सुन्दर समाचार यह है कि मत्स्यदेशनिवासी कीचक नामक सूत को, जिस ने त्रिगर्तों का विनाश किया था, रात में गंधर्वों न मार डाला। कीचक के साथही उसके सब भाई भी मारे गए। ( ३० वां अध्याय ) दुर्योधन ने कहा कि राजा विराट ने पहले समय में हमारे राज्य में बहुत उपद्रव किया था, सो कीचक की मृत्यु होने से वह निरुत्साह हो गया होगा। उस राज्य में बहुत अन्न उत्पन्न होता है, अतएव वह देश लेने के योग्य है। हम लोग त्रिगर्त और कौरवों के संग जाकर उनकी गौओं को छीन लावेंगे। इसके उपरांत दुर्योधन के आज्ञानुसार राजा की सेना हस्तिनापुर से चली। इसके सेना-पति त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा हुए। दूसरे दिन सेना का दूसरा भाग संपूर्ण कौरवों के सहित हस्तिनापुर से चला।

( ३१ वां अध्याय ) जिस दिन पांडवों के वनवास का तेरहवां वर्ष पूर्ण हो गया, उसी दिन कौरवों की सेना का प्रथम भाग विराट नगर में पहुंचा। राजा सुशर्मा ने विराट के अहीरों से सब गऊ छीन ली। यह खबर नगर में पहुंचने पर विराट की सब सेना तैयार हुई। राजा की आज्ञा से अर्जुन के अतिरिक्त चारों पांडव रथारूढ़ हो राजा के संग चले। ( ३२ वां अध्याय ) त्रिगर्त्तदेश और मत्स्यदेश की सेना उन्मत्त हो कर परस्पर लड़ने लगी। ( ३३ वां अध्याय ) विराट की सेना सुशर्मा की सेना से परास्त हुई। जब

सुशर्मा विराट को बांध कर अपने रथ में डाल चल दिया, तब युधिष्ठिर की आज्ञा से भीम ने सहस्त्रों वीरों को गदा से मार कर गिरा दिया। इसके अनंतर चारो पांडव लड़ने लगे। विराट बंधन से छूट गए। भीम ने सुशर्मा को पकड़ लिया। पांडवों ने अपनी सब गौओं को छीन कर कौरवों के संपूर्ण धन लूट लिए।

(३५ वां अध्याय) जिस दिन राजा सुशर्मा पराजित होकर मत्स्यदेश से चले गए, उसी दिन कौरव-सेना का दूसराभाग अर्थात् भीष्म, द्रोण, कर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शकुनि, दुःशासन आदि महारथियों को संग ले राजा दुर्योधन विराट नगर में पहुंचे। जब उन्होंने नगर के दूसरे द्वार पर जाकर ६०००० गौओं को छीन लिया, तब ग्वालों के स्वामी ने विराटपुत्र उत्तर को यह खबर दी। (३७ वां अध्याय) उत्तर ने अर्जुन से कहा, कि हे बृहन्नला! मैं ने सुना है कि अर्जुन ने तुमही को सारथी बनाकर खांडव वन को जलाया था और तुम्हारीही सहायता से सब पृथ्वी को जीता था, इस लिये तुम हमारे घोड़ों को हांको। हम कौरवों से युद्ध करेंगे। ऐसा सुन बृहन्नला ने उत्तर के रथ को कौरव सेना की ओर चलाया। (३८ वां अध्याय) कौरवसेना को देखतेही भय के मारे उत्तर के रोंये खड़े होगए। वह कहने लगा कि हे सारथी! मैं कौरवों की सेना से युद्ध नहीं करसकूंगा। बृहन्नला ने उत्तर को बहुत समझाया, परंतु वह नहीं माना। जब वह रथ से उतर कर भाग चला, तब बृहन्नला रथ से उतर उस के पीछे दौड़े। उस समय बृहन्नला की वेणी हिलने लगी और लालवस्त्र उड़ने लगे। उसको ऐसी दशा में देख कौरवगण कहने लगे कि इस नपुंसक का रूप अर्जुन ऐसा दिखाता है। यह निश्चय अर्जुनही है। इधर बृहन्नला अर्थात् अर्जुन ने दौड़ कर उत्तर के बाल पकड़ लिए और रोते हुए उत्तर को उठाकर रथ में डाल दिया। (४० वां अध्याय) इसके उपरांत अर्जुन शमीवृक्ष के समीप गए। उनकी आज्ञा से उत्तर ने शमीवृक्ष पर चढ़कर पांडवों के धनुष आदि हथियारों को उतारा। (४४ वां अध्याय) बृहन्नला ने उत्तर से कहा कि मैंही अर्जुन हूं, कंकनामक सभासद राजा युधिष्ठिर, वल्लव नामक रसोया भीमसेन, अश्वपंधक

नकुल, तुम्हारा गोरक्षक सहदेव और सैरन्ध्री द्रौपदी हैं। ऐसा सुन उत्तर का मन उत्साह युक्त हो गया। (४६ वां अध्याय) अर्जुन ने उत्तर को सारथी बनाकर शमीवृक्ष की प्रदक्षिणा करके शस्त्रों को रथ में रख संग्राम में प्रस्थान किया। (५३ वां अध्याय) उनके रण भूमि में पहुंचने पर घोर युद्ध होने लगा। (५४ वां अध्याय) कर्ण अर्जुन के वाणों से व्याकुल हो, रणक्षेत्र से विमुख हुए। (५७ वां अध्याय) कृपाचार्य जब विरथ होगए, तब योद्धाओं ने रथ पर बैठाकर उनको हटा दिया। (५८ वां अध्याय) अर्जुन के वाणों से द्रोणाचार्य के व्यथित होने पर अश्वत्थामा लड़ने लगे। द्रोणाचार्य युद्ध से हट गए। अश्वत्थामा के वाण समाप्त होजाने पर कर्ण युद्ध करने लगे। (६० वां अध्याय) कर्ण के मूर्छित होजानेपर (६१ वां अध्याय) भीष्म और अर्जुन का संग्राम होने लगा। (६४ वां अध्याय) अंत में जब भीष्म मूर्छित होगए, तब सारथी ने रथ को हटा लिया। (६६ वां अध्याय) जब दुर्योधन को अर्जुन ने विकल करदिया, तब भीष्म, कृप, द्रोण, दुःशासन आदि वीर पहुंचकर युद्ध करने लगे। अंत में अर्जुन ने संमोहन नामक वाण चलाया, जिससे कौरव मोहित हो अपने अपने धनुष को रखकर बैठ गए। अर्जुन की आज्ञा से उत्तर ने रथ से उतरकर सब वीरों के वस्त्र उतार लिए। जब कौरव लोग सचेत होने के उपरांत अपने पुर की ओर चले, तब अर्जुन ने नम्र होकर सब वृद्धों को प्रणाम किया। और फिर सब को एक एक वाण मारा। सब कौरव हस्तिनापुर लौटगए।

(६७ वां अध्याय) अर्जुन कौरवों को जीतकर शमीवृक्ष के पास आए। उत्तर ने फिर शमीवृक्ष पर पांडवों के शस्त्रों को रखदिया और अर्जुन को सारथी बनाकर नगर को प्रस्थान किया। अर्जुन ने फिर नपुंसक का वेष बना लिया।

(७० वां अध्याय) तीसरे दिन पांडवगण (अपने समय को वीता हुआ जानकर) सज कर राजा विराट की सभा में आए। महाराज युधिष्ठिर राज्यसिंहासन पर बैठगए, शेष चारों पांडव यथायोग्य आसन पर बैठे। जब राजा विराट सभा में आए। तब अर्जुन ने महाराज युधिष्ठिर का

परिचय दिया। (७१ वां अध्याय) राजकुमार उत्तर ने भी राजा विराट से पांडवों का वृत्तांत कह सुनाया। विराट ने अपना राज्य युधिष्ठिर को समर्पण किया और उनसे कहा कि अर्जुन मेरी पुत्री उतरा से विवाह करें। अर्जुन ने कहा कि मैं आप की पुत्री का शिक्षक अर्थात् गुरु हूं, इस लिए विवाह नहीं करूंगा। इसका विवाह मेरे पुत्र अभिमन्यु से होगा। (७२ वां अध्याय) उसी समय युधिष्ठिर और विराट ने अपने अपने संबंधियों के समीप दूत भेजे। पांडव लोग विराटनगर के समीपवर्ती उपप्लवनगर में रहने लगे। उन्होंने अभिमन्यु के सहित कृष्ण आदि यादवों को द्वारिका से बुलाभेजा। वे लोग विराटनगर में पहुंच गए। काशी के राजा शैर और राजा शैब्य एक एक अक्षौहणी सेना लेकर और द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न एक अक्षौहिणी सेना और द्रौपदी के पांचो पुत्रों को लेकर आए। कृष्णचंद्र के संग १० सहस्र हाथी, १ लाख घोड़ा, १० सहस्र रथ, और एक खर्व पैदल सेना थी। विराटपुत्री उत्तरा से अभिमन्यु का विवाह हुआ।

(५) उद्योगपर्व—(८ वां अध्याय) जब श्रीकृष्णजी द्वारिका को चलेगए, तब राजायुधिष्ठिर ने युद्ध का सामान इकट्ठा करने का कार्य आरंभ किया। राजा विराट और राजा द्रुपद ने युद्ध की सहायता के लिये सब राजाओं को निमंत्रित किया। ऐसा सुन दुर्योधन ने भी माननीय राजाओं को बुलाने का काम आरंभ किया। (६ वां अध्याय) पांडवों की अनुमति से राजा द्रुपद ने अपने वृद्धपुरोहित को संधि के लिये हस्तिनापुर भेजा। अर्जुन कृष्ण को बुलाने के लिये द्वारिका गए। उसी दिन अपनी सेनाओं के सहित दुर्योधन भी द्वारिका में गए थे। वह प्रथम जाकर कृष्ण के सिर की ओर सुंदर आसन पर बैठ गए। पश्चात् अर्जुन जाकर कृष्ण के चरण की ओर हाथ जोड़ कर खड़े हुये। कृष्ण ने निद्रा से जागकर प्रथम अर्जुन को पश्चात् दुर्योधन को देखा और दोनों का उचित सत्कार करके उनसे आने का कारण पूंछा। दुर्योधन ने कहा कि मैं प्रथम आया हूं, आप मेरी सहायता कीजिये। कृष्ण ने कहा कि तुम प्रथम आए हो और मैं ने

प्रथम अर्जुन ही को देखा है, इस लिए मैं दोनों की सहायता करूंगा। एक अर्बुद महायोद्धा ग्वालिये हमारे यहां रहते हैं, जो नारायणी सेना भी कहलाते हैं। मैं एकओर उनको करता हूं और एक ओर आप होता हूं। वेलोग युद्ध करेंगे और मैं युद्ध में शस्त्र भी नहीं ग्रहण करूंगा। दोनों में से जिस-को जिसे लेने की इच्छा हो वह उसे ले, परंतु पहिले मागने का अधिकार अर्जुन का है। अर्जुन ने श्री कृष्ण भगवान को मांगा। दुर्योधन नारायणी सेना को लेकर बलदेवजी के निकट गए। बलदेवजी ने कहा कि दुर्योधन और युधिष्ठिर से तुल्य संबंध है, मैं दोनों में से किसी की सहायता न करूंगा। तब दुर्योधन कृतवर्मा के पास गए। उसने दुर्योधन को एक अक्षौहिणी सेनादी। इन सेनाओं को लेकर राजा दुर्योधन हस्तिनापुर में आए।

(८ वां अध्याय) नकुल का मामा राजा शल्य एक अक्षौहिणी सेना के सहित पांडवों की ओर चले, परंतु दुर्योधन ने मार्गही में प्रसन्न करके उनको अपनी ओर करलिया। शल्य ने पांडवों के निकट जाकर यह बृतांत कह सुनाया। युधिष्ठिर ने राजा शल्य से कहा, कि आप से हम एक वरदान मांगते हैं, कि जिस समय कर्ण और अर्जुन का युद्ध होगा, उस समय आप कर्ण के सारथी बनेंगे, तब आप अर्जुन की रक्षा कीजिएगा और कर्ण के बल को घटाइयेगा, इस से हमारा विजय होगा। शल्य ने युधिष्ठिर को यह वरदान दे दिया। (१८ वां अध्याय) इसके पश्चात् वह हस्तिनापुर चले गए।

(१९ वां अध्याय) यदुवंशियों में श्रेष्ठ सात्यकी १ अक्षौहिणी सेना सहित युधिष्ठिर के पास आए। इसके पश्चात् चेदिदेश के राजा धृष्टकेतु एक अक्षौहिणी सेना सहित और मगध देश के राजा जरासंध के पुत्र जय-त्सेन एक अक्षौहिणी सेना सहित राजा युधिष्ठिर के पास पहुंचे। इस प्रकार से विराट द्रुपद आदि राजाओं की सेना सहित राजा युधिष्ठिर की ७ अक्षौ-हिणी सेना इकट्ठी हो गई। (महाभारत आदिपर्व के दूसरे अध्याय में २१८७० रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़ा और १०९३५० प्यादे को एक अक्षौ-हिणी लिखा है)

राजा दुर्योधन के पास १ अक्षौहिणी सेना लेकर राजा भगदत्त, जिसके साथ चीन और किरातदेश की सेना भी थी, १ अक्षौहिणी सेना लेकर हारदिक्य और कृतवर्मा, जिनके संग भोज, अंधक और कुक्कुर वंशी क्षत्री थे और तीनों क्षत्रियों के साथ १ अक्षौहिणी सेना थी, १ अक्षौहिणी सेना लेकर सिंधु और सौवीर के राजा जयद्रथ आदि और १ अक्षौहिणी सेना लेकर शक और यवनों के सहित कांबोजदेश के राजा सुदक्षिण आए, इसके पश्चात् माहिष्मती के राजा नील राजा दुर्योधन के पास आए, अनंतर अनेक दक्षिणी राजाओं के सहित उज्जैन के राजा विन्द और अनुविन्द, जिनके साथ २ अक्षौहिणी सेना थी और १ अक्षौहिणी सेना सहित कैकयदेश के पांचों राजा हस्तिनापुर में आए। दुर्योधन की सेना ३ अक्षौहिणी थी। इस प्रकार ११ अक्षौहिणी सेना कौरवों की हो गई। दुर्योधन के सेनापतियों ने अपनी अपनी सेनाओं को समस्त पंजाव, कुरुदेश, रोहितकारण्य, मारवाड़, अहिक्षत्र, कालकूट, वारणावत, वाटधान, और यामुन पर्वत पर ठहराया।

(२० वां अध्याय) इधर राजा द्रुपद का पुरोहित हस्तिनापुर में पहुंचा और सब सेनापतियों के बीच में कहने लगा कि धृतराष्ट्र अब पांडवों के भाग को क्यों नहीं देते। आप लोग धर्म के अनुसार पांडवों का राज्य लौटा दीजिए। पुरोहित की बात दुर्योधन और कर्ण को पसंद नहीं हुई। (२१ वां अध्याय) वहुत वार्तालाप होने के पश्चात् राजा धृतराष्ट्र ने ऐसा कह कर ब्राह्मण को विदा किया, कि हम शीघ्रही पांडवों के पास संजय को भेजेंगे।

(२५ वां अध्याय) संजय ने राजा युधिष्ठिर के पास जाकर ऐसा कहा कि राजा धृतराष्ट्र ने कहा है कि राजा द्रुपद और कृष्ण को ऐसा काम करना चाहिए, जिससे कुरुकुल का कल्याण हो। यदि कृष्ण और अर्जुन इस बात को नहीं मानेंगे, तब युद्ध में किसी का भी प्राण नहीं बचेगा। हम शांति चाहते हैं। (२७ वां अध्याय) ऐसा कह संजय बोले कि हे राजा युधिष्ठिर! आप धृतराष्ट्र के पुत्रों का नाश मत कीजिए। कदाचित् कौरव लोग विना युद्ध किए हुए आप को राज्य न दें, तो आप अंधक और वृष्णिदेश में भिक्षा मांगकर रहिए, अथवा दूसरी जीविका का कोई उपाय करलीजिए। युद्ध

में किसी का कल्याण नहीं होता। (२८ वां अध्याय) युधिष्ठिर ने कहा कि हेसंजय! भिक्षावृत्ति ब्रह्मणों की है। सब वर्णों को अच्छी अवस्था में अपना अपना धर्म करनाही उचित है। जो कर्म हमारे पिता पितामह ने किया है, वही कर्म हमको करना चाहिए। मैं संधि तोड़ कर युद्ध की इच्छा नहीं करता। (२९ वां अध्याय) कृष्णचंद्र बोले कि वेद में लिखा है, कि क्षत्री अपने धर्म के अनुसार प्रजापालन करें। राजा युधिष्ठिर अपने धर्म का पालन करते हैं। ऐसा उपाय करना चाहिये, जिसमें राजा युधिष्ठिर का राज्य मिले और युद्ध भी न हो। पांडव संधि करना चाहते हैं और युद्ध करने को भी समर्थ हुए हैं। (३१ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर बोले, हे संजय! तुम राजा धृतराष्ट्र से ऐसा कहना कि तुम हमारा राज्य दे दो अथवा राज्य का एकही भाग दो वा हम लोग पांचो भाइयों को पांचही गांव दे दो (१) अरिस्थल (२) वृकस्थल (३) माकंदी (४) वारणावत और (५) एक गांव अपनी इच्छा के अनुसार।

(३२ वां अध्याय) संजय ने हस्तिनापुर में लौट कर राजा धृतराष्ट्र से कहा कि पांडव लोग आप से संधि चाहते हैं। राजा ने प्रातः काल सभा में आने को संजय सें कहा। (४७ वां अध्याय) प्रातः काल होने पर संजय कौरवों की सभा में गए। (४९ वां अध्याय) भीष्म और द्रोण ने धृतराष्ट्र ने पांडवों के सहित संधि करलेने की बातें कहीं। (५८ वां अध्याय). धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से कहा कि तुम यथोचित पांडवों का आधा भाग दे दो। किसी की इच्छा युद्ध करने की नहीं है। कर्ण, दुःसाशन और शकुनी यही सब मिल के तुमको युद्ध में प्रवृत्त करते हैं। दुर्योधन ने कहा कि भीष्म, द्रोण, कृप आदि किसी संबंधी लोगों के आसरे पर मैं युद्ध करने की इच्छा नहीं करता हूं। मैं केवल कर्णही के साथ युधिष्ठिर को परास्त करूंगा। या तो पांडवों को मार कर मैंही पृथ्वी का राज्य करूंगा; अथवा मुझको मार कर पांडवही संपूर्ण पृथ्वी का राज्य लेंगे। तीक्ष्ण सुई की नोक से जितनी भूमि विद्ध हो सकती है, मैं उतनी भूमि भी पांडवों को नहीं दूंगा। (६२ वां अध्याय) कर्ण ने कहा कि भीष्म, द्रोण तथा और भी

मुख्य मुख्य लोग बैठे रहें, मैं अकेलेही रणस्थल में पांडवों को मार कर सब राज्य ले लूंगा । भीष्म बोले कि हे कर्ण ! काल के वश में होकर तुम्हारी बुद्धि नाश हो गई है । तुम व्यर्थ अपनी बड़ाई क्यों करते हो । कर्ण ने क्रोध कर के कहा कि हे पितामह ! तुम्हारे कठोर वचन सुन कर मैंने अपने संपूर्ण शस्त्रों को त्याग दिया । अब रणभूमि में तुम कभी नहीं मुझको देखोगे । तुम्हारे मरने के पश्चात् सब राजा लोग मेरे प्रभाव और पराक्रम को देखेंगे । ऐसा कह कर्ण सभा से उठ अपने गृह को चले गए ।

(७२ वां अध्याय) इधर राजा युधिष्ठिर नें कृष्णचंद्र से कहा कि मेरी समझ में राजा धृतराष्ट्र पाप और लोभ से युक्त होकर हम लोगों को विना राज्य दियेही शांति स्थापन करने की इच्छा करते हैं । वह पुत्रस्नेह में पड़ कर अपने धर्म की ओर दृष्टि नहीं देते । मेरे मांगे हुए पांच गांव देने में भी दुर्योधन की संमति नहीं होती है । जिस उपाय से युद्ध करना न पड़े, वैसाही यत्न करना चाहिये । कृष्णचंद्र संधि के लिये कौरवों की सभा में जाने को उद्यत हुए ।

(८३ वां अध्याय) कृष्णचंद्र ने सात्यकी के सहित रथारूढ हो हस्तिनापुर की यात्रा की । (८४) उनके साथ १० महारथी १ सहस्र सवार और बहुतसी पैदल सेना चली । (८५) कृष्ण के आगमन सुन धृतराष्ट्र की आज्ञा से दुर्योधन ने अनेक सभा बनवाई और कृष्ण के निवास के लिए वृकस्थल गांव में एक बहुत सुंदर सभा तय्यार करवाई, परंतु कृष्ण उन सभाओं को न देख कर हस्तिनापुर के निकट पहुंचे (८९ वां अध्याय) और मार्ग में भीष्म, द्रोण तथा धृतराष्ट्र के पुत्रों से मिल कर हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र के राजमंदिर में सुशोभित हुए । (९०) इसके पश्चात् उन्होंने अपनी फूफू कुंती के समीप जाकर उसको धीरज दिया (९१) और दुर्योधन का निमंत्रण स्वीकार न करके विदुर के गृह भोजन किया (९४ वां अध्याय) प्रातःकाल होनें पर दुर्योधन और शकुनी विदुर के गृह में जाकर कृष्ण को कौरवों की सभा में ले गए । सबलोग यथायोग्य आसन पर बैठे । (९५ वां अध्याय) कृष्ण ने राजा धृतराष्ट्र से कहा कि हे भारत ! योद्धाओं के विना

प्राण नाश हुए, जिसमें कौरव और पांडवों के बीच संधि स्थापित हो जाय, इसी निमित्त मैं यहां आया हूं। आप अपने पुत्रों को शांत कीजिए और मैं पांडवों को शांत करूंगा। पृथ्वी के संपूर्ण राजा एकही स्थान पर मिल गए हैं, जो संपूर्ण प्रजा का संहार कर सकते हैं, इसमें आप दया कर के संधि कर लीजिए, जिससे संपूर्ण लोकों की रक्षा हो। (१२३ वां अध्याय) इसके उपरांत नारदऋषि ने धृतराष्ट्र और दुर्योधन को समझाया, कि हठ के वश में होना उचित नहीं है। तुम लोग पांडवों से संधि कर लो। (१२४) धृतराष्ट्र बोले कि हे भगवन्! मेरी भी ऐसीही इच्छा है, परंतु मेरी कुछ भी प्रभुता नहीं है। इसके उपरांत उन्होंने कृष्ण से कहा कि दुर्योधन किसी का कहना नहीं मानता है, इसलिये तुमही इसको शासित करो। कृष्ण ने दुर्योधन से कहा कि हे कुरुसत्तम! तुम दुष्ट पुरुषों के संग त्याग कर पांडवों के साथ संधि कर लो। तुम्हारी शांति से संपूर्ण जगत के मंगल की संभावना है। (१२५) इसके पश्चात् भीष्म, द्रोणाचार्य, विदुर और धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को समझाया कि कृष्ण का वचन मान कर तुम पांडवों से संधि कर लो। (१२७) दुर्योधन ने कहा कि हे कृष्ण! मैंने पांडवों के संग कुछ अनुचित अपराध नहीं किया है। कदाचित् दैव संयोग से हम लोग संग्राम में मर जायंगे, तौ भी हम लोगों को स्वर्ग मिलेगा। शरशय्या पर शयन करना क्षत्रियों का परम धर्म है, इसलिये हमलोग शत्रुओं के निकट सिर न नवा कर वीर शय्या पर शयन करेंगे। जब मैं बालक और दूसरे के आधीन था, तब मेरे पिता ने अज्ञान से अथवा भय से ही मेरा राज्य पांडवों को दे दिया था, परंतु अब वह राज्य किसी प्रकार से भी नहीं दिया जा सकता है। अधिक क्या कहूं तीक्ष्ण सूई के नोक से जितनी भूमि विद्ध हो सकती है। मेरे राज्य से उतनी भूमि भी पांडवों को नहीं दी जाय गी। (१३० वां अध्याय) इसके पश्चात् दुर्योधन, कर्ण, शकुनी और दुःशासन ने सभा से निकल कर यह निश्चय किया कि राजा धृतराष्ट्र और भीष्म के संग परामर्श करके कृष्ण हमलोगों को बांधने की इच्छा करते हैं। हमलोग पहिलेही वल पूर्वक कृष्ण को बांध लेंगे, जिससे पांडव लोग उत्साह रहित

हो जायंगे। सात्यकी ने कौरवों के इस विचार को जान लिया। उसने सभा में जाकर कृष्ण, धृतराष्ट्र और विदुर से यह वृतांत कह सुनाया। धृतराष्ट्र की आज्ञापाकर विदुर दुर्योधन को सभा में बुला लाए। धृतराष्ट्र और विदुर ने दुर्योधन को बहुत समझाया। कृष्ण ने उस सभा में अपना विराट रूप दिखलाया। ( १३१ ) इसके उपरांत वह सभा से उठ कर कुंती के मंदिर में चले गए।

( १४० वां अध्याय ) कृष्ण कर्ण को रेथ में बैठाकर नगर से बाहर हुए और एकांत में बोले कि हे कर्ण। स्त्री की कन्या अवस्था में जो कानीन और सहोढ़ दो प्रकार के पुत्र उत्पन्न होते हैं, पंडित लोग कन्या के पाणि ग्रहण करने वाले पुरुषही को उन पुत्रों का पिता कहते हैं। इस लिये कुंती देवी की कन्या अवस्था में तुम्हारा जन्म होने से तुम भी राजा पांडुही के पुत्र हो। तुम चलो युधिष्ठिर से पहलेही तुम राजा बनोगे। ब्राह्मण लोग आजही तुमको राज्य सिंहासन पर बैठावेंगे। युधिष्ठिर तुम्हारे युवराज बनेंगे। ( १४१ वां अध्याय ) कर्ण बोले कि हे कृष्ण! मैं दुर्योधन के आसरे में रहकर १३वर्ष से निष्कंटक राज्य भोग रहा हूं। मेराही आसरा करके राजा दुर्योधन पांडवों के संग युद्ध करने में प्रवृत्त हुए हैं। इसलिये इस समय किसी प्रकार से मुझ को धृतराष्ट्र के पुत्रों के संग मिथ्या आचरण करने का उत्साह नहीं होता है। हे कृष्ण! तुम यह वृत्तांत पांडवों से मत कहो, क्योंकि यदि युधिष्ठिर मुझे कुंती का प्रथमपुत्र जानेंगे, तो वह स्वयं राज्य न लेकर मुझही को समर्पण करेंगे और मैंभी उस राज्य को लेकर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार दुर्योधन को देदूंगा। युधिष्ठिर ने जिस प्रकार से क्षत्रियों की बड़ी सेना इकट्ठी की है, उससे हम लोगों की सहायता लेना कुछ प्रयोजन नहीं है। तीनों लोकों में पवित्र कुरुक्षेत्र में पराक्रमी क्षत्रिय लोग शस्त्र से मरकर जिस प्रकार से स्वर्ग में जायं, तुम उसीका विधान करो। ( १४२ ) कृष्ण बोले कि हे कर्ण! तुम भीष्मादि से जाकर कहो कि यह महीना ( अगहन ) सब प्रकार से उत्तम है, आज से ७ दिन के बाद अमावास्या होगी, उसी दिन युद्ध आरंभ करो। ( १४३ ) कर्ण हस्तिनापुर आए। कृष्ण ने वहां से प्रस्थान किया।

( १४४ वां अध्याय ) कुंती ने विचार किया कि एक मात्र कर्णही लड़ाई का मूल है। जब गंगा के तीर में कर्ण जप कर रहे थे, उसी समय कुंती वहां गई। ( १४५ ) उनको देख कर्ण विस्मित होकर बोले की मैं राधा और अधिरथ का पुत्र कर्ण हूं। मैं तुमको प्रणाम करता हूं। कुंती ने कहा हे कर्ण! तुम कुंती पुत्र हो, राधा पुत्र नहीं हो। भगवान सूर्य ने तुमको मेरे गर्भ से उत्पन्न किया था। भ्राताओं के संग पहचान न रहने के कारण तुम मोह में पड़कर दुर्योधन की सेवा कररहे हो। तुम युधिष्ठिर की राज्यलक्ष्मी धृतराष्ट्र के पुत्रों से छीन कर स्वयं भोग करो। ( १४६ ) कर्ण बोले कि हे माता! तुम्हारे वचन पर मैं श्रद्धा नहीं कर सकता हूं। तुमने जन्मतेही मुझको त्याग कर अधर्म कार्य किया था। उसीसे मेरा यश कीर्ति आदि नष्ट हो गई हैं! तुम्हारे कारण से मेरा कोई भी संस्कार क्षत्रियों के योग्य नहीं होने पाया। धृतराष्ट्र के पुत्रों ने सब प्रकार के भोग और भोजन की वस्तुओं से मेरा सत्कार किया है। मैं इस समय उनको कैसे निष्फल कर सकता हूं। जो लोग मुझे नौका स्वरूप समझकर महा घोर युधरूपी समुद्र से पार होने की इच्छा करते हैं। इस समय मैं कैसे उनको त्याग करूंगा। मैं अवश्य धृतराष्ट्र के पुत्रों के लिये तुम्हारे पुत्रों से युद्ध करूंगा, परंतु तुम्हारा अनुरोध भी निष्फल नहीं होगा। मैं युद्ध में प्रवृत होकर अर्जुन के अतिरिक्त तुम्हारे ४ पुत्रों में से किसी का वध नहीं करूंगा। तुम्हारे ५ पुत्र सर्व्वदा जीवित रहेंगे। अर्जुन की मृत्यु होने से मेरे समेत तुम्हारे ५ पुत्र रहेंगे और मेरे मरने से अर्जुन सहित तुम्हारे वही ५ पुत्र रहेंगे। इसके उपरांत दोनों अपने अपने स्थान को चलेगए।

( १४७ वां अध्याय ) इधर कृष्ण ने विराटनगर में पहुंचकर कौरवों का संपूर्ण वृतांत पांडवों के निकट वर्णन किया। ( १५१ वां अध्याय ) राजा-युधिष्ठिर की आज्ञा और कृष्ण के अनुमोदन से द्रुपद, विराट, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, सात्यकी, चेकितान और भीमसेन लोक में विख्यात ये ७ महारथी सातो अक्षौहिणी सेनाओं के नायक बनाए गए। द्रौपदी विराटनगरको लौट गई। कैकयदेश के पांचो राजा, धृष्टकेतु, काशिराजपुत्र श्रोणिमान, बसुदान,

शिखंडी, धृष्टद्युम्न, कुंतिभोज, अनाधृष्टि, चेदिराज, विराट, सधर्मा, चेकितान, सात्यकी इत्यादि सैनिकगण कुरुक्षेत्र में युद्धार्थ पहुंचगए। राजा युधिष्ठिर ने श्मशान, देवालय, महर्षियों के आश्रम, तीर्थ और मंदिरों को छोड़कर सुंदर उपजाऊ और पवित्र भूमि में अपनी सेना का निवास स्थान ठहराया। कृष्ण ने पवित्र तीर्थ में सुंदर जल से पूर्ण हिरण्वती नदी को देख जल के अर्थ वहां परिघा स्थापित की। पांडवों के मित्र राजागण सेनाओं से युक्त होकर उस स्थान पर गए।

(१५४ वां अध्याय) रात्रि व्यतीत होने पर राजा दुर्योधन ने नियम के अनुसार अपनी ११ अक्षौहिणी सेनाओं का विभाग किया और कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य, शल्य, जयद्रथ, कांबोजराज, सुदक्षिण, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, कर्ण, भूरिश्रवा, शकुनी और वाल्हीक इन ११ वीरों को ११ अक्षौहिणी के पृथक् पृथक् नायक बनाया। (१५५ वां अध्याय) जब दुर्योधन ने भीष्मपितामह से सेनापति बनने को कहा, तब वह बोले कि मेरे पक्ष में जैसे तुमलोग वैसेही पांडव भी हैं, इस लिये मुझे उन लोगों के निमित्त भी कल्याणवाक्य कहना पड़ेगा और तुम्हारे निमित्त युद्ध भी करना होगा। मैं किसी प्रकार से पांडुपुत्रों को नष्ट करने में उत्साहित नहीं होऊंगा, परंतु प्रतिदिन मैं दूसरे दशसहस्र वीर योद्धाओं को मारूंगा। इसके पश्चात् राजा दुर्योधन ने भीष्मपितामह को विधि पूर्वक सर्वप्रधान सेनापति बनाया और महासेना के सहित कुरुक्षेत्र में पहुंच कर समान भूमि में शिविर स्थापित कराया।

(१५६ वां अध्याय) बलदेवजी मुख्य मुख्य यदुवंशियों से रक्षित होकर पांडवों के निकट आए और युधिष्ठिर से बोले कि हे राजन्! काल के वश में होकर पृथ्वी के संपूर्ण क्षत्रिय इस युद्ध में इकट्ठे हुए हैं। मैंने एकांत में कृष्ण से कहा था कि पांडव लोग तथा दुर्योधन दोनों हमलोगों के तुल्य संबंधी हैं। तुम दोनों को एक समान सहायता दो, परंतु कृष्ण अर्जुन के स्नेह से सब प्रकार तुम्हारेही ओर रत हैं। गदायुद्ध में निपुण भीम और दुर्योधन दोनों मेरे शिष्य हैं। मैं कौरवों को अपने सन्मुख नष्ट हुआ

देखकर उपेक्षा नहीं कर सकूंगा। बलदेवजी ने ऐसा कहकर तीर्थयात्रा का प्रस्थान किया।

( १६४ वां अध्याय ) दुर्योधन के पूछने पर भीष्म ने कौरव पक्षीय रथि और महारथियों का नाम वर्णन किया। ( १६७ वां अध्याय ) और यह भी कहा कि हे दुर्योधन! जो तुम्हारा प्यारा मित्र कर्ण है उसको रथी वा अतिरथी कुछभी नहीं कह सकते हैं। यह अनभिज्ञ और दयालु होने के कारण अपने कवच और कुंडल से रहित हो गया है। परशुराम के शाप, ब्राह्मण के वचन और कवच कुंडल आदि साधनों से रहित हो जाने के कारण मेरे मत में यह अर्द्धरथी है। द्रोणाचार्य ने इस वचन का अनुमोदन किया। इसके उपरांत भीष्म और कर्ण का परस्पर वाक्य विवाद हुआ। कर्ण ने कहा कि इस युद्ध में मैं अकेलेही पांडवों के संपूर्ण सेना को मारूंगा, परंतु यश भीष्महीको मिलेगा, क्योंकि यह सेनापति बने हैं इसलिये भीष्म के जीवित रहते हुए मैं युद्ध न करूंगा। इनके मरजाने पर मैं युद्ध में प्रवृत्त होऊंगा। ( १६८ से १७१ वां अध्याय तक ) भीष्म ने पांडव पक्षीय रथी और महारथियों का नाम वर्णन किया और यह वचन कहा कि मैं द्रुपदपुत्र शिखंडी को नहीं मारूंगा। स्त्री अथवा पहिले स्त्री हुए पुरुष को मैं कभी नहीं मार सकता हूं। शिखंडी पहिले स्त्री रूप में था इसलिये उसके संग मैं युद्ध नहीं करूंगा और कुंती के पुत्रों को नहीं मार सकूंगा। ( १९८ अध्याय उद्योग पर्व समाप्त हुआ )।

(६) **भीष्म पर्व**—(पहला अध्याय) उस समय समस्त भूमंडल पुरुष शून्य, अश्वशून्य और गजशून्य सा जान पड़ता था। सब स्थानों में केवल लड़के वृद्ध और स्त्रियां ही रह गई थीं। जंबूद्वीप मंडल के जिन जिन स्थानों तक सूर्य की ज्योति पहुंचती है, उन संपूर्ण स्थानों से सब लोग कुरुक्षेत्र में आकर सैन्यरूप से उपस्थित हुए। सब जाति के संपूर्ण मनुष्यों ने एकत्रित होकर कई एक योजन भूमि में अनेक देश, नदी, पर्वत और नदियों को छा लिया।

कौरव, पांडव और सोम वंशियों ने युद्ध के लिये इस प्रकार की प्रतिज्ञा और नियम किया, कि केवल बराबरी के लोग न्याय पूर्वक परस्पर युद्ध करेंगे; कोई मनुष्य किसी प्रकार छल नहीं करने पावेगा; न्यायानुसार युद्ध करने के पश्चात् निवृत्ति होने पर हम लोगों के दलों में परस्पर प्रीति होगी, जो सैन्य के बीच में निष्क्रांत होंगे, उन पर कोई आघात नहीं कर सकेगा; रथी रथी के साथ गजारोही गजारोही से घुड़सवार घुड़सवार से और पैदल पैदल से युद्ध करेंगे, पृथ्वी पर गिरे हुए वा विह्वल हो गए हुए लोगों पर आघात नहीं किया जायगा; दूसरे के साथ युद्ध करते हुए, शरण आए हुए, युद्ध से पराङ्मुख भए हुए, शस्त्र रहित, अथवा वर्म हीन लोगों पर प्रहार नहीं किया जायगा और सारथी, वाहन, शस्त्रवाहक, भेरीशंखादि-बजानेवाले, लोगों पर आघात नहीं किया जायगा।

(१६ वां अध्याय) सूर्योदय होने के समय कुरु और पांडव दोनों पक्ष की सेना उठ कर तैयार हो गईं। शकुनी, शल्य, जयद्रथ, अवंती के राजा विन्द और अनुविंद, कैकय के राजागण, कांबोज के राजा सुदक्षिण, कलिंग देश के राजा श्रुतायुध, राजा जयत्सेन, कोशल के राजा बृहद्बल, और कृतवर्मा यही दशो वीर दुर्योधन के एक एक अक्षौहिणी सेना के सरदार बनाए गए। इनके अतिरिक्त कौरवों की एक अक्षौहिणी सेना इन दशों अक्षौहिणी के आगे हुई। गेरहों अक्षौहिणी सेनाओं के प्रधान सेना पति भीष्म हुए। वैसेही पांडवों की ओर भी ७ दल सेना प्रधान प्रधान पुरुषों से रक्षित हुई थी। (१७ वां अध्याय) कर्ण अपने अमात्यों तथा बंधुओं को लेकर लड़ाई से निवृत्त हुए थे और संपूर्ण सैनिक युद्ध में प्रवृत्त हुए। (२२ वां अध्याय) कृष्ण की आज्ञा से अर्जुन रथ से पृथ्वी पर उतर कर दुर्गा जी का स्तव करने लगे। तब भगवती अंतरिक्ष में प्रकट होकर बोली कि हे धनंजय! थोड़े ही काल में तुम शत्रुओं को जीत लोगे।

(२४ वां अध्याय) (गीता) भीष्म ने बड़े जोर से शंख बजाया। इसके बाद ही रणस्थल में सब जगह शंख, भेरी, पणव, पटह और गोमुख के शब्द से जब भारी कोलाहल होने लगा, तब श्वेत घोड़ों के रथ पर श्री-

कृष्ण और अर्जुन दिव्य शंख ध्वनि करने लगे। तदनंतर अर्जुन भगवान कृष्ण से बोले कि हे अच्युत! जो लोग लड़ाई करने के लिये उपस्थित हुए हैं, जिस में मैं उनको देख सकूँ, वैसेही ढंग से दोनों पक्षों की सेनाओं के मध्य में आप रथ को ठहराइए। कृष्ण ने दोनों सेनाओं के बीच में रथ को खड़ा किया। अर्जुन ने देखा कि अनेक चाचा, दादा मामा, भाई, पुत्र, भतीजा, पौत्र, श्वसुर, मित्र और सारथीगण वहां दोनों सेनाओं में विद्यमान हैं। वह सब बंधु बांधवों को लड़ाई करने के लिए तैयार देख कर परम कृपा-परायण होकर कहने लगे, कि हे कृष्ण! इन सब स्वजनों को तैयार देखकर मेरा गात्र अवसन्न होता है, हाथ से गांडीव धनुष गिरा जाता है और मन बहुत घबड़ा गया है। मैं नहीं समुझता हूं कि अपने स्वजनों को मार कर मैं किस प्रकार से श्रेय प्राप्त कर सकूँगा। अब मुझे राज्य वा सुख की चाहना नहीं है। जिनके लिये हमलोग राज्य भोग की अभिलाषा करते हैं, वेही लोग धन और प्राण परित्याग करने को तैयार होकर रणभूमि में उपस्थित हुए हैं। दुर्योधन को भाइयों सहित मार डालना हम लोगों को उचित नहीं है। कुलक्षय होने से सनातन कुलधर्म विनाश हो जाता है। अर्जुन ऐसा कह कर शरासन परित्याग करके रथ में चुपचाप बैठ गए। (२९ वां अध्याय) कृष्ण बोले कि हे अर्जुन! इस संकट समय में तुमको क्यों मोह उत्पन्न हुआ। मोह से स्वर्ग नहीं मिलता और कीर्ति का नाश हो जाता है। अर्जुन ने कहा, मैं पूजनीय भीष्म और द्रोण के साथ किस प्रकार लड़ूँगा। गुरुओं को नहीं मारने से भिक्षान्न भोजन करना पड़े सो भी मुझे श्रेय मालुम होता, क्योंकि इन गुरुओं को मारने से इसी लोक में रुधिर लिप्त अर्थ काम उपभोग करना होगा। कुल क्षय करने के दोष की भावना से मेरा चित्त ऐसा घबड़ा गया है, कि मैं नहीं कहसकता हूं, कि धर्म विषय में मुझे क्या करना उचित है। जिस से श्रेय होय, वह आप निश्चय रूप से आदेस कीजिए। कृष्ण भगवान हंस कर कहने लगे कि हे अर्जुन! तुम सब बात तो पंडितों के समान बोलते हो, परंतु उन बंधुओं के लिए शोक करते हो, जिन के लिये शोक करना उचित नहीं है। विचार-वान लोग मरे भाई बंधुओं के लिये शोक नहीं करते। शरीर के अभिमान

करने वाले जीवों की लड़कपन, जवानी और बुढ़ापा अवस्था होती है। जैसे लड़कपन की हानि होकर जवानी, जवानी की हानि होकर बुढ़ापा आदि अवस्था बदलने पर भी उसका सचमुच कोई अवस्था नहीं बदलती। वह ज्यों की त्यों बनी रहती है। वैसेही इस देह के विनाश होने से और लिंग देह अवलंबन करने से केवल देहांतर होता है, किंतु सचमुच कोई अवस्थांतर वा हानि नहीं होती है। इसलिये धीरलोग देह की उत्पत्ति वा बिनास से मुग्ध नहीं होते हैं। यह देह नश्वर है। देहस्थित आत्मा ही सर्वथा एकरूप अविनाशी अपरिच्छिन्न है, इसलिये तुम मोह जनित शोक को छोड़ कर युद्ध करो। आत्मा न किसी को मारता है और न कोई उसको मार सकता है। वह न कभी जन्म लेता, न कभी मरता है और कभी जन्म लेकर जीता भी नहीं रहता है, क्योंकि वह स्वभावतः जन्म रहित है और सदा वर्तमान रहता है। जिस प्रकार से मनुष्य एक पुराने कपड़े को परित्याग करके दूसरे नए कपड़े को पहनता है, वैसेही जीव पुराने शरीर को त्यागकर नए शरीर को प्राप्त करता है। अगर उस आत्मा का देह के जन्म लेने से जन्मा हुआ और देह के नाश होने से मरा हुआ लोग कहते हैं, तौभी तुमको शोक करना उचित नहीं है, क्योंकि जितनी वस्तु जन्म लेती है, वे सब मरही जाती हैं और मरने पर फिर अवश्यही जन्म लेती हैं, तब जो बात रुक नहीं सकती है, उसके लिये तुम शोक क्यों करते हो। क्षत्रियों के लिये युद्ध से बढ़कर और कोई श्रेयकारी कर्म नहीं है। अगर तुम लड़ाई से मुह मोड़ोगे, तो तुमको धर्म और कीर्ति खोकर पाप भोगना पड़ेगा। रणक्षेत्र में मारेजाने पर तुमको स्वर्ग मिलेगा। युद्ध करने में तुमको कुछभी पाप नहीं लगेगा। (२६ वां अध्याय) संपूर्णरूप से अनुष्ठित पराए धर्म से अपना धर्म अंगहीन भी हो तौभी उत्तम है, क्योंकि अपने धर्म में मरण भी श्रेष्ठ है। (२७ वां अध्याय) तुम अज्ञान से उत्पन्न इस संशय को ज्ञानरूपी खड्ग से काटकर कर्म योग के आसरे अहंभाव ममता त्यागकर युद्ध करने के निमित्त खड़े होजाओ, इत्यादि।

(३४ वां अध्याय) अर्जुन बोले; हे भगवन्! तुम ने जो परम गुप्त परमात्मनिष्ठ

आत्मा और अनात्मा का विवेक विषयक ज्ञान कहा, उससे मेरा भ्रम और अज्ञान नष्ट होगया। जैसा तुम अपने को कहते हो, मैं वैसाही तुम्हारे रूप को देखना चाहता हूं। कृष्ण भगवान ने अर्जुन को ज्ञानदृष्टि देकर अनेक मुख और बहुत नेत्रों से युक्त, आश्चर्य से भरा हुआ प्रकाशमान परमऐश्वर्य युक्त अपना विराट रूप दिखलाया। अर्जुन ने जब कृष्ण के शरीर में देवता, पितर, मनुष्य आदि जगत के विविध जीवों को देखा; तब सिर नवाकर उस मूर्ति को प्रणाम किया। पश्चात् वह बोले कि अब तुम इस विराट रूप को समेट कर मुझ को अपना पहला रूप दिखलाओ। कृष्ण जैसे प्रथम थे वैसेही रूप होगए।

(४१ वां अध्याय) कृष्ण भगवान ने कहा कि हे अर्जुन! अपना धर्म अधूरा और अंगहीन हो और दूसरे का धर्म पूरी तरह से अनुष्ठान किया हुआ हो, तो भी अपना धर्म दूसरे के धर्म से उत्तम और कल्याण करने वाला है। अपनी जाति के कर्म को कभी नहीं त्यागना चाहिये, क्योंकि धूएं से ढकी हुई अग्नि की भांति सब कर्मों में कुछ न कुछ दोष है। यदि अहंकार करके मेरी बातों को नहीं मानोगे, तो नष्ट हो जाओगे। जो तुम अहंकार से यह समुझते हो कि मैं नहीं लडूंगा, तो यह परिश्रम तुम्हारा समस्त झूठा है और तुम्हारा यह विचार भी निष्फल होगा; क्योंकि तुम्हारी प्रकृति तुम्हें युद्ध में लगा देगी। उसके वश में होकर तुमको इस युद्धकार्य को अवश्यही करना पड़ेगा। अर्जुन बोले, हे अच्युत! मेरा अज्ञान और मोह छूट गया; तुम्हारे प्रसाद से आत्मज्ञान मुझको मिला है। मैं अधर्म के विषयों में अब संदेह से रहित होकर स्थित हूं और तुम्हारी आज्ञा पालन करने में तत्पर हूं। (यहां तक १८ अध्याय गीता है)।

(४२ वां अध्याय) अर्जुन ने फिर गांडीव धनुष धारण किया। संपूर्ण योद्धा सिंहनाद करने लगे। उस समय राजा युधिष्ठिर ने समुद्र की भांति दोनों ओर की सेनाओं को बार बार आगे बढ़ती हुई देख कर कवच उतार अपने शस्त्रों को फेंक दिया और रथ से उतर दोनों हाथ जोड़ कर भीष्म-पितामह की ओर देखते हुए शत्रु सेना में प्रस्थान किया। अर्जुन भी रथ से उतर भाइयों के सहित उनके अनुगामी हुए। कृष्ण उनके पीछे पीछे

चले। अन्य राजा लोग भी कौतुक देखने के लिये उनके पीछे चलने लगे। भ्राताओं से घिरे हुए राजा युधिष्ठिर शत्रुसेना के बीच भीष्म के निकट जा पहुंचे और उनके दोनों चरण पकड़ कर बोले कि हे पितामह! आप के संग में युद्ध करूंगा, इसके लिये आप मुझे अनुमति और आशीर्वाद दीजिए। भीष्म बोले; हे भारत! यदि तुम हमारे समीप नहीं आते तो मैं तुम्हारे पराजय के निमित्त तुमको अभिशाप देता। मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हुआ। तुम युद्ध में जय प्राप्त करोगे और दूसरी तुम्हारी जो कुछ इच्छा होगी, उसे भी तुम पाओगे। तुम मुझ से क्या वर मांगते हो। युधिष्ठिर बोले कि आप नित्यही हमारे हित के लिये कौरवों की ओर से युद्ध कीजिऐ। भीष्म ने कहा कि हे राजन्! कौरवों के पक्ष में हम इच्छानुसारही युद्ध करेंगे। युद्ध के अतिरिक्त जो कुछ कहने की इच्छा हो वह तुम कहो। युधिष्ठिर बोले कि आप युद्ध में अपराजित हैं। मैं किस प्रकार से आप के निकट युद्ध में विजयी हो सकूंगा। भीष्म ने कहा, हे तात! मुझको युद्ध में जीतने वाला कोई नहीं है। मेरा मृत्युकाल भी अभी नहीं आया है। इससे तुम फिर एक वार मेरे निकट आना। राजा युधिष्ठिर भीष्म की आज्ञा सिर पर चढ़ा कर भाइयों सहित द्रोणाचार्य के समीप पहुंचे और उनको प्रणाम कर के बोले कि हे भगवन्! मैं किस प्रकार से शत्रुओं को जीत सकूंगा? आप मुझे अनुमति दीजिए। द्रोणाचार्य बोले कि हे महाराज! मैं प्रसन्न होकर आप से कहता हूं कि आप युद्ध में विजय पावेंगे। मैं कौरवों की ओर से युद्ध अवश्य करूंगा, परंतु आप के जय के लिये अंतःकरण से प्रार्थना करूंगा। मेरे आशीर्वाद से आप विजयी होंगे। युधिष्ठिर ने कहा; हे द्विजवर! आप युद्ध में अजेय हैं। मैं आप को कैसे जीत सकूंगा। द्रोणाचार्य बोले कि हे राजन्! मैं जब तक रणभूमि में युद्ध करता रहूंगा, तब तक आप का विजय नहीं होगा। इसलिये आप शीघ्रही मुझको मारने का यत्न कीजिएगा। युधिष्ठिर ने कहा कि हे आचार्य! मैं अनंत दुःख के सहित आप से पूछता हूं कि आप अपने मरने का उपाय मुझ से कहिए। द्रोणाचार्य बोले कि हे तात! जब मैं रणभूमि में शस्त्र को परित्याग करके योग में आसक्त और मरने के निमित्त

निष्ठावान् होकर परमेश्वर के ध्यान में तत्पर होऊंगा, उस अवस्था में मेरा वध हो सकेगा। जिसके वचन में श्रद्धा की जाती है, ऐसे मनुष्य के मुख से अत्यंत अप्रिय वचन सुन कर मैं रणभूमि में अस्त्र शस्त्र का परित्याग कर सकता हूं। राजा युधिष्ठिर वहां से कृपाचार्य के पास आए और उनको प्रणाम करके यह वचन बोले कि हे आचार्य! मुझको आप युद्ध की अनुमति दीजिए। कृपाचार्य बोले कि हे राजन्! मैं अर्थ अर्थात् धन से कौरवों के वशीभूत हूं। मैं उनकी ओर से युद्ध करूंगा, किंतु आप का विजय होगा। मैं प्रति दिन खड़ा होकर आप के विजय की प्रार्थना करूंगा। इसके पश्चात् राजा युधिष्ठिर मद्रराज शल्य के निकट गए और उनको प्रणाम कर यह वचन बोले कि हे महाराज! मैं आप के निकट युद्ध करने की अनुमति मांगने आया हूं। शल्य बोले कि मैं प्रसन्न हूं। तुम युद्ध में विजयी होगे। तुम युद्ध के अतिरिक्त मुझ से क्या अभिलाषा करते हो। युधिष्ठिर ने कहा, हे मातुल! आप ने स्वीकार किया था कि रणभूमि में मैं कर्ण के तेज का नाश करूंगा, यही वर मैं आप से मांगता हूं। शल्य बोले, हे युधिष्ठिर! तुम्हारी यह अभिलाषा पूरी होगी। तुम्हारे विजय का उपाय करना मैं ने अंगीकार किया। जब राजा युधिष्ठिर शल्य को प्रणाम कर उस महासेना से बाहर निकले, तब कृष्णजी सेना से अलग कर्ण के समीप गए और कहने लगे कि हे कर्ण! मैंने सुना है कि भीष्म के द्वेष से तुम अभी युद्ध नहीं करोगे, इसलिये जब तक भीष्म नहीं मारे जाते हैं, तब तक तुम हमारे ओर आवो. भीष्म के मरने के पश्चात् तुम फिर दुर्योधन की सहायता करना। कर्ण बोले कि हे केशव! मैं दुर्योधन के अप्रिय कार्य नहीं कर सकूंगा। तुम उनके निमित्त प्राण त्याग करने वाला मुझको जानो। इसके पीछे सब लोग अपने अपने रथ पर फिर चढ़े। उन्होंने पहले के रचे हुए व्यूह को बना कर फिर सज्जित किया।

(४३ वां अध्याय) युद्ध आरंभ हो गया। (४६ वां अध्याय) जब विराट-पुत्र उत्तर के हाथी ने शल्य के रथ के घोड़ों को मार गिराया, तब शल्य ने एक शक्ति चलाई, जिसकी चोट से उत्तर हाथी से पृथ्वी पर गिर कर मर गया। इसके अनंतर भीष्म के बाण पृथ्वी और आकाश में छा गए।

पांडवों की ओर के वीर मरने लगे। भीष्म पांडवी सेना के रथियों के नाम ले ले कर उनका वध करने लगे। पांडवों की संपूर्ण सेना भाग गई। पांडवों ने भीष्म को प्रचंड तेज से प्रकाशित देख कर संध्या के समय रणभूमि से अपनी सेना लौटा ली।

(४७ वां अध्याय) दूसरे दिन राजा युधिष्ठिर के कहने के अनुसार क्रौंचारुणव्यूह बना। अर्जुन सब सेना के अगाड़ो हुए। राजा द्रुपद बड़ी सेना के सहित उस व्यूह के मस्तक हुए। कुंतिभोज और चेदिपति व्यूह के नेत्र स्थान में स्थापित किए गए। दाशेरक वीरों के सहित भाग्, दशार्ण, अनूप और किरातदेशीय राजागण व्यूह की ग्रीवा बने। पटच्चर, हुंड, कौरव और निपाद आदि विदेशीयवीरों के सहित राजा युधिष्ठिर उसकी पीठ हुए। भीम, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पांचो पुत्र, अभिमन्यु और सात्यकी व्यूह के दोनों पंखों के मध्य स्थान में नियत हुए। पिशाच दरद, पौंड, कुंडीवृप, मारुत, धेनुक, तंगन, परतंगन, वाह्लीक, तित्तिर, चोल और पांड्य आदि देशों के वीरों के सहित नकुल और सहदेव व्यूह के पक्ष स्थान में स्थित हुए। व्यूह के पक्ष स्थान में अयुत (१००००), सिर के भाग में नियुत, पीठ स्थान में एक अर्बुद, बीस हजार और गर्दन में एक नियुत सत्तर-हजार रथ रक्खे गए। दोनों पंखों के अंत में हाथियों का दल चलने लगा। कैकयदेशीय वीरों के सहित राजा विराट और तीन अयुत रथों के संग काशिराज तथा शैव्य व्यूह के चरण स्थान की रक्षा करने लगे। (४७ वां अध्याय.) भीष्म आदि कौरवों ने पांडवों के व्यूह के विरुद्ध एक महाव्यूह सज्जित किया। भीष्म सब के आगे चलने लगे। कुंतल, दशार्ण, मागध, विदर्भ, मेकल आदि वीरों के सहित द्रोणाचार्य भीष्म के अनुगामी हुए और गांधार, सिंधु, सौवीर, शिवि और वशादि देशीय वीरगण संपूर्ण सेनाओं के सहित भीष्म के पीछे पीछे चले। शकुनी अपनी सेना के सहित द्रोणाचार्य की रक्षा करने लगे। अश्वातक, विकर्ण, चामल, काशक, दरद, शक, क्षुद्रक और मालव वीरों के सहित और अपने सब भाइयों क साथ राजा दुर्योधन चले। भूरिश्रवा, शल्य, भगदत्त, अवंतिदेशीय विंद और अनुविंद वाम-

पार्श्व की रक्षा करने लगे। सोमदत्ति, सुशर्मा, कांबोजराज सुदक्षिण, शतायु और अच्युतायु दहिने पार्श्व की रक्षा में प्रवृत्त हुए। अश्वत्थामा, कृपाचार्य, केतुमान, कृतवर्मा, वसुदान और विभु वड़ी सेना के सहित सेना के पीठ स्थान पर स्थित हुए। इसके पश्चात् कौरव और पांडवों के पक्षके संपूर्ण योद्धा प्रसन्न होकर युद्ध में प्रवृत्त हुए। (५१ वां अध्याय) विविध लड़ाइयों के उपरांत कौरव पक्षीय कलिंगराज अपनी वड़ी सेना को संग ले भीम से लड़नेलगा। जो वड़ा पराक्रम दिखलाकर अपने पुत्रों के सहित मारा गया। (५२ वां अध्याय) भयंकर संग्राम होने के उपरांत संध्या समय उपस्थित होने पर दोनो ओर की सेना युद्ध से निवृत्त हुई।

(५३ वां अध्याय) तीसरे दिन सवेरा होनेपर भीष्म ने गरुड़व्यूह रचना की, जिसके तुंडस्थल में स्वयं भीष्म हुए। दोनों नेत्रों के स्थान में द्रोणाचार्य और कृतवर्मा नियत हुए। संपूर्ण त्रिगर्त्त, मत्स्य, कैकय और वाटधानदेशीय वीरों के सहित अश्वत्थामा और कृपाचार्य सिर स्थल में स्थित हुए। भूरीश्रवा, शल्य, भगदत्त और जयद्रथ ये लोग मद्रक, सिंधु, सौवीर और पंचनद देशीय वीरों के सहित ग्रीवा के स्थान में स्थापित किए गए। राजा दुर्योधन अनुयायी और भाइयों के सहित पीठ स्थान में स्थित हुए। अवंति देशीय विंद और अनुविन्द और कांबोजराज पुच्छ स्थानमें रक्खे गए। मागध, कलिंग और दासरक वीर व्यूह के दहिने पार्श्व में और कारुष, विकुंज, मुंड और कुंडीवृष देशीय योद्धागण वृहद्दल के सहित वाएं पक्ष के स्थान में स्थित हुए। पांडवों ने अर्द्धचंद्रव्यूह की रचना की, जिसके दहिने नोक पर नाना देशीय राजाओं के सहित भीमसेन विराजमान हुए। पीछे ओर राजा विराट और द्रुपद स्थित हुए। उस के अनंतर राजा नील, नील के के अनंतर चेदि, काशि, करुष और पौरव वीरों के सहित धृष्टकेतु रक्खे गए। धृष्टद्युम्न, शिखंडी पांचाल और प्रभद्रक योद्धागण वड़ी सेना के सहित व्यूह के मध्यस्थल में स्थित हुए। राजा युधिष्ठिर भी हाथियों की सेना के सहित उसही स्थान पर विराजमान हुए। उनके बाद सात्यकी द्रौपदी के पांचो-पुत्र और अभिमन्यु खड़े हुए। उन लोगोंके अनंतर इरावान उसके बाद

घटोत्कच और उसके अनंतर केकयदेशीय योद्धागण सज के खड़े होगए। उनलोगों के अनंतर बाएं टुनगे पर श्रीकृष्ण के सहित अर्जुन स्थित हुए। इस प्रकार से दोनों ओर की सेना व्यूहबद्ध होकर लड़नेलगी (५६ वां अध्याय) रणभूमि में भीष्म ने क्रुद्ध होकर बार बार सैकड़ों तथा सहस्रों बाणों से कृष्ण और अर्जुन को चारो ओर से छिपा दिया। जब वह सिंहनाद के सहित कृष्ण को कंपानेलगे और उनकी बाणवृष्टि से पांडवों की सेना भागने लगी, तब कृष्ण अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को भूलकर घोड़ों की लगाम छोड़ हाथ में चक्र घुमाते हुए रथ से कूदकर भीष्म की ओर दौड़े। उस समय अर्जुन ने रथ से उतरकर उनकी भुजाओं को पकड़ लिया।

भगवान कृष्ण ने रथ पर चढ कर घोड़ों की लगाम ग्रहण की। इसके पश्चात् जब अर्जुन ने कौरवों की सेना को विकल करदिया, तब कौरवीसेना के सब वीर अपने अपने डेरों में चले गए।

( ५७ वां अध्याय ) चौथे दिन सवेरेही महात्मा भीष्म अर्जुन से युद्ध करने के लिये गमन करने लगे। सब वीरों ने हाथी, घोड़े, रथ और पदातियों से युक्त अर्जुन के व्यालव्यूह को दूरही से देखा, जिसके दोनों कर्णस्थल में चार चार सहस्र हाथी थे और उसको अर्जुन रक्षा करते थे। इस के पश्चात् लोम हर्षण युद्ध होने लगा। ( ५९ वां अध्याय ) मगध-देश के राजा ने अपना महा गजराज को अभिमन्यु की ओर चलाया। अभिमन्यु ने एकही बाण से हाथी को मारडाला। जब मगधराज हाथी से रहित होगए, तब अभिमन्यु ने उनका सिर काटडाला। इधर भीमसेन ने कौरवों की गजसेना का विनाश करडाला ( ६१ वां अध्याय ) और संग्राम में धृतराष्ट्र के कई एक पुत्रों का वध किया। संध्या होजाने पर कौरवों की सेना सिथिल होकर युद्ध से निवृत्त होगई। पांडवों ने कौरवों को पराजित करके अपने शिविरों अर्थात् डेरों में प्रवेश किया।

( ६६ वां अध्याय ) पांचवे दिन सूर्योदय होने पर दोनों ओर की सेना रणक्षेत्र में चली। भीष्म मकरव्यूह बनाकर चारो ओर से निज सेना की रक्षा करनें लगे और रथियों से घिरकर सेना के सहित आगे बढे।

दूसरे सब रथी, घुड़सवार, गजपति और पैदल योद्धा उनके अनुगामी हुए। पांडवों ने अपनी सेना का श्येन (बाज पक्षी) व्यूह बनाया। उसके मुख स्थान में भीमसेन, नेत्रस्थान में शिखंडी और धृष्टद्युम्न; सिरस्थल में सात्यकी; ग्रीवास्थान में अर्जुन; बाएं पक्ष पर एक अक्षौहिणी सेना और अपने पुत्रों के सहित राजा द्रुपद और दहिने पक्ष पर एक अक्षौहिणी सेना के साथ केकयराज स्थित हुए। द्रौपदी के पुत्रगण और अभिमन्यु व्यूह के पृष्ठ रक्षक हुए। नकुल और सहदेव के सहित राजा युधिष्ठिर उसके पीछे स्थित हुए।

(७१ वां अध्याय) सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा ने रणक्षेत्र में सात्यकी के १० पुत्रों को अकेलेही मारडाला। संध्या होजाने पर कौरव और पांडवों की दोनों सेना विश्राम करने के लिये अपने अपने डेरों में गईं।

(७२ वां अध्याय) सवेरा होतेही (छठवें दिन) पांडवों की ओर मकरव्यूह बना। उसके मस्तक स्थान पर अर्जुन और राजा द्रुपद; मुख स्थान पर नकुल और सहदेव, ग्रीवा स्थान पर अभिमन्यु, द्रौपदी के पांचो पुत्र, घटोत्कच, सात्यकी और राजा युधिष्ठिर; पीठ स्थान पर बड़ी सेना के सहित विराट और धृष्टद्युम्न; बाएं पक्ष पर केकय देशीय राजागण; दहिने पक्ष पर धृष्टकेतु और चेकितान; दोनों पांवों के स्थान पर बड़ी सेना के सहित कुंतिभोज और शतानीक और उसके पुच्छ स्थान पर सोमवंशीय क्षत्रियों से युक्त होकर शिखंडी और इरावान स्थित हुए। इधर भीष्म की आज्ञा से क्रौंचव्यूह बना। उसके तुंड स्थान पर द्रोणाचार्य; नेत्र स्थान पर अश्वत्थामा और कृपाचार्य; सिर स्थान पर कांबोज देशीय राजा और बाल्हीक के सहित कृतवर्मा; ग्रीवा स्थान पर अनेक राजाओं से युक्त राजा दुर्योधन और शूरसेन; पीठ स्थान पर मद्र, सौवीर और केकय देशीय वीरों के सहित राजा भगदत्त; बाएं पक्ष पर अपनी बड़ी सेना के साथ सुशर्मा, दहिने पक्ष पर तुषार, शक, यवन और चूलिक देशीय योद्धागण और व्यूह के चरण स्थान पर श्रुतायु, शतायु और सोमदत्ति लोग स्थित हुए। इसके उपरांत दिनभर घोर युद्ध होता रहा। (७६ वां अध्याय) भीष्म संध्या

काल में पांडवों की सेना को छितर बितर करके निज शिविर में आए। राजा युधिष्ठिर ने प्रसन्न चित्त अपने डेरे में प्रवेश किया।

( ७८ वां अध्याय ) प्रातःकाल होने पर ( सातवें दिन ) भीष्म ने बड़े बड़े वीर योद्धा, गजपति, घुड़सवार, पदाती और रथियों से चारो ओर से घेर कर अपनी सेना का मंडलव्यूह बनाया। प्रत्येक हाथी के समीप सात सात महारथी, प्रत्येक रथी के निकट सात सात घुड़सवार, प्रति घुड़सवारों के पास ढाल तलवार ग्रहण करने वाले सात सात योद्धा और प्रत्येक योद्धाओं के निकट सात सात धनुषधारी पुरुष स्थित हुए। संपूर्ण महारथियों के सहित भीष्म सेना की रक्षा करने लगे। दस दस सहस्र घोड़सवार, गजपति तथा रथी और चित्रसेन आदिक शूर कवच धारण करके भीष्म की रक्षा करने में प्रवृत्त हुए। राजा युधिष्ठिर ने शत्रुओं के मंडलव्यूह को देख कर वज्रव्यूह की रचना की। रथी घुड़सवार और संपूर्ण योद्धागण यथा रीति स्थानों पर स्थित होकर सिंहनाद करने लगे। युद्ध आरंभ हो गया। ( ७९ वां अध्याय ) द्रोणाचार्य ने विराट-पुत्र शंख को मार कर रणभूमि में गिरा दिया। ( दिन भर भयंकर युद्ध होने के उपरांत ) सूर्यास्त के समय कौरव और पांडवों की सेना युद्ध से निवृत्त होकर अपने अपने वास स्थानों में आई।

( ८४ वां अध्याय ) सबेरे के समय ( आठवां दिन ) दोनों ओर के सब वीर युद्ध के निमित्त शिविरों से बाहर निकले। भीष्म ने बाणरूपी तरंग से युक्त समुद्र के समान निज सेना का महाघोर व्यूह बनाया और सेना के अगाड़ी मालव, दाक्षिणात्य और अवंति देशीय योद्धाओं से युक्त हो कर युद्ध के निमित्त प्रस्थान किया। उसके पश्चात् पुलिंद, पारद, क्षुद्रक और मालव देशीय वीरों के सहित द्रोणाचार्य चले। उनके पीछे मगध, कलिंग और पिशाच वीरों से युक्त होकर भगदत्त ने गमन किया। उनके पीछे मेकल, त्रिपुर, और चिलुक योद्धाओं के सहित कोशलराज बृहद्बल गमन करने लगे। उनके पीछे कांबोज और सहस्रों योद्धाओं से युक्त हो कर प्रस्थल राज त्रिगर्त चले। उनके पीछे अश्वत्थामा, अश्वत्थामा के पीछे

अपने भाइयों के सहित राजा दुर्योधन चले, जिनके पीछे कृपाचार्य ने प्रस्थान किया। इधर राजा युधिष्ठिर की आज्ञा से धृष्टद्युम्न ने महादारुण शृंगाटकव्यूह बनाया। कई एक सहस्र रथी, घुड़सवार और पैदल योद्धाओं के सहित भीमसेन और सात्यकी उसके दोनों शृंग स्थानों पर, कृष्ण के सहित अर्जुन उसके नाभी स्थान पर और राजा युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव, उसके मध्य स्थल पर स्थित हुए। दूसरे प्रवीण योद्धाओं ने व्यूह के यथायोग्य स्थानों पर स्थित होकर उसको पूर्ण किया। उनके पीछे अभिमन्यु, विराट, द्रौपदी के पुत्रगण और घटोत्कच स्थित हुए। दोनों ओर से भयानक युद्ध होने लगा। ( ८५ वां अध्याय ) भीमसेन ने दुर्योधन के कई भाइयों को रण में मार डाला। ( ८६ वां अध्याय ) अर्जुन के पुत्र इरावान युद्ध करने के निमित्त उपस्थित हुए। गरुड़ ने जब नागराज ऐरावत के पुत्र को हर लिया, तब ऐरावत ने अपनी पुत्रवधू को पुत्रहीन देखकर अर्जुन को दे दिया। अर्जुन ने उसको अपनी भार्या बनाई। इसी कारण दूसरे के क्षेत्र में अर्जुन के वीर्य से इरावान का जन्म हुआ था। इरावान ने गांधारराज शकुनी के ५ भाइयों को रणभूमि में मार डाला, परंतु कौरवपक्षीय अलंबुषराक्षस द्वारा अपने मातृवंशीय नागों के सहित मारा गया। भीमसेन ने धृतराष्ट्र के कई पुत्रों को युद्ध में मार डाला। दोनों-ओर के बहुत से प्रधान योद्धा और सैनिक पुरुष मारे गए। महा भयंकर घोर रात्रि होते देख कर कौरव और पांडवों ने अपनी अपनी सेना को युद्ध से निवृत्त किया। सब योद्धा अपने अपने शिविरों अर्थात् डेराओं में जाकर स्थित हुए।

( ९५ वां अध्याय ) भीष्म ने (नवां दिन) यत्न पूर्वक सर्वतोभद्र नामक व्यूह बनाया। कृपाचार्य, कृतवर्मा, शैव्य, शकुनी, सिंधुराज जयद्रथ, और कांबोजराज सुदक्षिण भीष्म और धृतराष्ट्र के पुत्रों के सहित संपूर्ण सेना के आगे व्यूह के मुख पर स्थित हुए। द्रोणाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य और भगदत्त दहिने पक्ष पर, अश्वत्थामा, सोमदत्त और अवंतिराज दोनों भाई बहुत सेना लेकर वाम पक्ष पर, राजा दुर्योधन त्रिगर्तदेशीय योद्धाओं के सहित मध्य-

स्थल पर और अलंबुष और श्रुतायु सब सेना के सहित व्यूह की पीठ पर स्थित हुए। दूसरी ओर राजा युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव संपूर्ण सेना का महा दुर्जय व्यूह बनाकर सब सेना के आगे स्थित हुए। उनके पीछे धृष्टद्युम्न, विराट, सात्यकी; उनके बाद शिखंडी, अर्जुन, घटोत्कच, चेकितान और कुंतिभोज और उनके पीछे अभिमन्यु, द्रुपद और केकय-राज पांचो भाई चले। सब योद्धा एक दूसरे के सन्मुख होकर शस्त्रों का प्रहार करने लगे। (१०३ अध्याय) जब भीष्म के बाणों से कृष्ण और अर्जुन क्षत विक्षत शरीर हो गए और भीष्म पांडवों की सेना के मुख्य मुख्य वीरों का वध करने लगे, तब कृष्ण घोड़ों को त्याग कर रथ से नीचे उतरे और भीष्म के वध करने की इच्छा से कोड़ा लेकर भीष्म की ओर दौड़े। उस समय अर्जुन ने दौड़ कर कृष्ण को पकड़ लिया और उनसे कहा कि आप के युद्ध करने से सब लोग आप को मिथ्यावादी कहेंगे। ऐसा सुन कृष्ण लौट कर फिर रथ पर चढ़े (१०४ अध्याय) संध्या समय हो जाने पर राजा युधिष्ठिर ने भीष्म के बाणों के भय से अपनी सेना को भागते हुए देख कर उनको युद्ध से निवृत्त किया। दोनों पक्ष के लोग अपने अपने डेरों में चले गए। रात्रि में राजा युधिष्ठिर ने कृष्ण से कहा कि भीष्म-पितामह मेरी सेना का विनाश किये देते हैं। वह युद्ध में पराजित नहीं हो सकेंगे। मैं शोक समुद्र में डूब रहा हूं। अब युद्ध करने की मेरी इच्छा नहीं होती है, इसलिये अब मैं वन को जाऊंगा। कृष्ण बोले, हे पांडुनंदन! तुम मुझे युद्ध में नियुक्त करो, मैं अपने शस्त्रों के बल से भीष्म को रथ से पृथ्वी में गिरा दूंगा। युधिष्ठिर ने कहा हे कृष्ण! तुमने कहा था कि मैं युद्ध नहीं करूंगा, अब मैं तुमको मिथ्यावादी नहीं बना सकता। भीष्म ने मुझसे कहा था कि मैं तुमको उत्तम 'मंत्रणा' दूंगा और दुर्योधन के लिये युद्ध करूंगा। चलो हम लोग फिर उनके निकट जाकर उनसे उनके वध का उपाय पूछें। वह अवश्यही उत्तम युक्ति देकर हम लोगों के विजय का उपाय बतावेंगे। जब मैंने अपने पिता के भी पिता का वध करने की इच्छा की, तब हम लोगों को क्षत्रिय जीविका का धिक्कार है। श्रीकृष्ण

बोले कि हे महाराज। तुम्हारे वचन में मेरी भी संमती है। भीष्म नेत्र से देख कर ही शत्रुओं को भस्म कर देते हैं। इसलिये उनके वध का उपाय पूछनें के लिये उनके समीप गमन करो। इसके पश्चात् पांडव और कृष्ण ने शस्त्र और कवचों को उतार कर सब मिल कर के भीष्म के शिविर में जाकर उनको प्रणाम किया। भीष्म ने पूछा कि तुम लोगों के प्रीति के लिये मुझको कौन सा कार्य करना पड़ेगा। यदि वह कार्य कठिन भी होगा, तौ भी मैं उसें पूर्ण करूंगा। युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह! मैं किस प्रकार सें युद्ध में विजय प्राप्त कर सकूंगा। हम लोग युद्ध में किसी प्रकार सें तुम्हारे तेज को नहीं सह सकतें हैं। इसलिये तुम स्वयं ही अपने वध का उपाय वर्णन करो। भीष्म बोले, हे युधिष्ठिर! जब तक मैं जीता हूं, तब तक तुम्हारे विजय की संभावना नहीं है। शस्त्रत्यागी, पृथ्वी पर गिरे हुए, कवचहीन भागते हुए, भयभीत, शरण में आएहुए, स्त्रीजाति, स्त्री नामधारी पुरुष इत्यादि, ऐसेही पुरुष शस्त्र रहित होने पर मेरा वध कर सकतें हैं। मैं किसी के अमांगलिक ध्वजा देखने से उसके संग युद्ध नहीं करूंगा। द्रुपराज का पुत्र शिखंडी जो तुम्हारी सेना में स्थित है, प्रथम कन्या हो कर जन्मा था, पीछे पुरुष हो गया है। अर्जुन कवच धारण कर के शिखंडी को आगे खड़ा कर के अपने वाणों से मेरा वध करें। शिखंडी के रथ की ध्वजा अमांगलिक है। विशेष करके वह कन्या होकर उत्पन्न हुआ था, इस-लिये मैं उसके ऊपर प्रहार नहीं कर सकता हूं। मेरे कथनानुसार करनें ही से तुम्हारा विजय होगा। इसके पश्चात् पांडव लोग भीष्मपितामह को प्रणाम करके उनकी आज्ञा ले अपने अपनें शिविरों में गए।

(१०९ वां अध्याय) पांडवों ने (दसवें दिन) सर्वशत्रुनिर्वहण नामक व्यूह बनाकर शिखंडी को आगे कर के युद्ध यात्रा की। भीमसेन और अर्जुन शिखंडी के चक्ररक्षक हुए। द्रौपदी के पांचो पुत्र और अभिमन्यु उसके पृष्ठ रक्षक नियत हुए। सात्यकी और चेकितान उन सबके रक्षक बनाए गए। पांचाल योद्धाओं से रक्षित होकर धृष्टद्युम्न उन सबके पीछे स्थित हुए। उसके पीछे नकुल और सहदेव के सहित राजा युधि-

ष्ठिर गमन करने लगे। उनके पीछे राजा विराट अपनी सेना सहित चलें। उनके पीछे राजा द्रुपद चलने लगे। केकयराज पांचो भाई और धृष्टकेतु व्यूह की रक्षा करते हुए सबके पीछे चले। इधर कौरवों ने अपनी संपूर्ण सेना के आगे भीष्म को करके पांडवों के सन्मुख गमन किया। धृतराष्ट्र के पुत्रगण भीष्म की रक्षा करने में प्रवृत्त हुए तिसके पीछे द्रोणाचार्य और उनके पीछे अश्वत्थामा चले और उनके पीछे हाथियों की सेना से युक्त होकर राजा भगदत्त ने प्रस्थान किया। कृपाचार्य और कृतवर्मा राजा भगदत्त के अनुगामी हुए। उनके पीछे कांबोजराज सुदक्षिण ने यात्रा की। मगधदेश के राजा जयत्सेन, सुवलपुत्र, वृहद्बल, सुशर्मा आदि दूसरे संपूर्ण राजाओं ने सब सेना की रक्षा करते हुए सबके पीछे गमन किया। उसके पश्चात् भयानक युद्ध आरंभ हो गया। (१०६ वां अध्याय) भीष्म पितामह ने दुर्योधन को धीरज देते हुए यह वचन कहा कि हे राजन्। मैंने तुम्हारे समीप पहिले यह प्रतिज्ञा की थी कि संग्राम में नित्य १० सहस्र योद्धाओं को मार कर तब युद्ध से निवृत्त होऊंगा। उस प्रतिज्ञा को मैंने पूर्ण भी किया है और आजभी संग्राम में मैं बड़ा कर्म करूंगा। आज मैं तुम्हारे सन्मुखही स्वामी के दिए हुए अन्न आदि ऋणों से मुक्त होऊंगा। ऐसा कह भीष्म ने उस दिन दस सहस्र योद्धाओं का वध किया और सवारों के सहित दस सहस्र हाथी दस सहस्र घोड़े और बीस सहस्र पैदल योद्धाओं को मार कर वह रणभूमि में सुशोभित हुए। (११२) इसके उपरांत भीष्म ने समीप में खड़े हुए राजा युधिष्ठिर से कहा कि, हे पुत्र! अब मैं अपने शरीर के रखने की इच्छा नहीं करता हूं। तुम पांचाल योद्धा और 'सृजयों' के सहित अर्जुन को आगे कर के शीघ्रही मेरे वध का यत्न करो। (११६) पांडव लोग शिखंडी को आगे कर के भीष्म को घेर कर चारो ओर से विद्ध करने लगे। अर्जुन शिखंडी को आगे कर भीष्म की ओर दौड़े और उसने अपने बाणों से भीष्म का धनुष काट दिया। अर्जुन से रक्षित शिखंडी ने भीष्म के सारथी को दस बाणों से विद्ध करके एक बाण से उनके रथ की ध्वजा को काट डाला। भीष्म ने अर्जुन के

वाणों से विद्ध होकर फिर उन पर आक्रमण नहीं किया। अर्जुन कुरु-सेना को छितर बितर करने लगे। सौवीर, प्रतीच्य, मालव, अभीषह, शूरसेन, शिवि, वशाति, शाल्व, त्रिगर्त, अम्बष्ठ और केकय देशों के शूर वीर योद्धाओं ने अर्जुन के वाणों से पीड़ित होकर रणभूमि से पलायन किया. अनंतर बहुत से शूर वीर योद्धा चारो ओर से भीष्म के ऊपर वाणों की वृष्टि करने लगे। इसी भांति भीष्म अपराह्न समय में अर्जुन के तीक्ष्ण वाणों से क्षत विक्षत शरीर होकर पूर्व को सिर करके रथ से गिर पड़े। वह वाणों से व्याप्त हो रहे थे इसलिये पृथ्वी पर नहीं गिरे; सूर्य के उत्तरायण आने की प्रतीक्षा करते हुए प्राण धारण करके शर-शय्या पर शयन करने लगे। (११७) द्रोणाचार्य ने भीष्म के गिरने का समाचार सुन कर अपनी सेना को युद्ध से निवृत होने की आज्ञा दे दी। पांडवों ने भी अपने घुड़-सवार दूतों को भेज कर सैनिक को युद्ध से निवृत्त किया। अनंतर सबों ने मिलकर भीष्म के निकट पहुंच तीन वार उनकी प्रदक्षिणा की। संपूर्ण वीरों ने भीष्म की रक्षा का विधान करके अपने अपने शिविरों में प्रवेश किया। (११९) इसके उपरांत कर्ण ने एकांत में भीष्म के निकट जाकर अपना नाम सुनाया। भीष्म ने प्रीति पूर्वक कर्ण को आलिंगन किया और उनसे कहा कि हे पुत्र! तुम्हारे ऊपर मेरा कुछ भी द्वेष नहीं है। मैंने तुम्हारे तेज नाश करने के लिये तुमको कठोर वचन कहा था। तुम विना कारणही पांडवों की निंदा किया करते हो। इससे मैंने कुरु सभा में तुमको रूखा वचन सुनाया था। तुम कृष्ण और अर्जुन के समान वीर हो। पांडव तुम्हारे सहोदर भाई हैं। तुम उनसे मिलो। ऐसा होने से लड़ाई बंद हो जायगी। पृथ्वी के संपूर्ण राजा जीवित बचकर अपने अपने गृहों को जायगे। कर्ण बोले, हे पितामह! मैं दुर्योधन का ऐश्वर्य उपभोग कर रहा हूं। मैं उनके निकट जो कार्य स्वीकार किया है, उसको मिथ्या करने का उत्साह नहीं कर सकता हूं। ऐसा सुन भीष्म ने कर्ण को युद्ध करने की आज्ञा दी। कर्ण ने रोदन करते हुए दुर्योधन के निकट प्रस्थान किया।

(७) द्रोण पर्व—(दूसरा अध्याय) कर्ण बोले, हे दुर्योधन! अब

मुझको भीष्म के समान कुरु सेना की रक्षा करनी होगी। मैंने इसका भार अपने ऊपर लिया। (५ वां अध्याय) कर्ण की अनुमति से दुर्योधन आदि संपूर्ण राजाओं ने द्रोणाचार्य को विधिपूर्वक प्रधान सेनापति बनाया। (६) द्रोणाचार्य ने (युद्ध आरंभ के ११ वें दिन) विधिपूर्वक व्यूह बना कर युद्ध के निमित्त प्रस्थान किया। उनके दहिनी ओर सिंधुराज, कलिंगराज, और धृतराष्ट्रपुत्र विकर्ण चले, जिनके पीछे शकुनी ने घुड़सवारों और गांधार-देशीय वीरों के सहित यात्रा की। कृपाचार्य, कृतवर्मा, चित्रसेन, विविंशती, दुःशासन आदि वीरगण द्रोणाचार्य की बाईं ओर के रक्षक हुए। उनके पीछे यवन और शक लोगों ने कांबोजराज सुदक्षिण को आगे कर के अश्वारूढ़ होकर आगे बढ़े। मद्र, त्रिगर्त्त, अंबष्ठ, प्रतीच्य, उदीच्य, मालव, शिवि शोण, शूरसेन, मलद, सौवीर, कितृव, प्राच्य और दक्षिण के राजा लोग कर्ण के पृष्ठरक्षक होकर चलने लगे। कर्ण संपूर्ण धनुर्द्धारियों के आगे गमन करने लगे। द्रोणाचार्य ने सकटव्यूह रचा। राजा युधिष्ठिर ने क्रौंच-व्यूह बनाया। कृष्ण और अर्जुन रथ पर चढ़ कर व्यूह के संमुख चले। कौरवसेना के आगे कर्ण और पांडवों की सेना के आगे अर्जुन खड़े हुए। कौरव और पांडवों की सेना का लोमहर्षण युद्ध आरंभ हुआ। असंख्य सैनिक मृत्यु को प्राप्त होने लगे। (११ वां अध्याय) दुर्योधन ने द्रोणाचार्य से कहा कि हे आचार्य! आप राजा युधिष्ठिर को जीतेही पकड़ कर मेरे निकट लाइए। मैं फिर द्यूत के खेल में बन गमन की बाजी रख कर उनको पराजित करूंगा। पांडव लोग फिर वन में जायंगे। मैं युधिष्ठिर के बध की इच्छा कभी नहीं करता हूं। द्रोणाचार्य बोले कि यदि अर्जुन युधिष्ठिर की रक्षा नहीं करेंगे, तो मैं शीघ्रही युधिष्ठिर को तुम्हारे बस में कर दूंगा। (१२) इसके पश्चात् संग्रामभूमि में असंख्य वीर मारे गए। (१५) संध्याकाल उपस्थित होने पर द्रोणाचार्य ने अपनी सेना को युद्ध से निवृत्त किया। कृष्ण और अर्जुन ने शत्रुओं को छितर बितर करके अपने शिविरों को प्रस्थान किया।

(१६ वां अध्याय) जब दोनों ओर की सेना अपने अपने डेरों में

उपस्थित हुईं, तब द्रोणाचार्य ने कहा कि हे राजन् दुर्योधन ! अर्जुन के रहने पर देवतालोग भी युधिष्ठिर को नहीं पकड़ सकेंगे। यदि तुम किसी उपाय से युधिष्ठिर के निकट से अर्जुन को हटा सको, तो राजा युधिष्ठिर तुम्हारे वश में हो सकेंगे। द्रोणाचार्य के वचन सुनकर (युद्ध आरंभ के बारहवें दिन) त्रिगर्त्तराज पांचो भाई १०००० रथों के सहित अर्जुन से लड़ने के लिए तैयार हुए और मालव तथा तुंडिक देशीय योद्धागण ३०००० रथों के सहित युद्ध करने को उद्यत हुए। त्रिगर्त देशीय प्रस्थलाधिपति राजा सुशर्मा १०००० रथ, बहुतेरे योद्धा, तथा अपने भ्राताओं के सहित गमन करने लगे। अनंतर मुख्य मुख्य शूर वीरों में से १०००० रथी, संपूर्ण रथ सेना से निकल कर इकठे हुए। सबों ने शपथ की, कि हम लोग अर्जुन को बिना पराजित किए हुए निवृत नहीं होंगे (शपथ करने के कारण वे लोग संशप्तक कहलाए)। इसके पश्चात् वे लोग अर्जुन को आवाहन करके युद्ध में प्रवृत हुए। जब अर्जुन ने संशप्तकवीरों से लड़ने के लिये राजा युधिष्ठिर से आज्ञा मांगी, तब राजा ने कहा कि हे तात ! द्रोणाचार्य ने मुझको पकड़ने की प्रतिज्ञा की है, जिससे उनका मनोरथ सिद्ध न हो सके, तुम उसका विधान करो। अर्जुन बोले, हे राजन् ! आज तुम्हारी रक्षा सत्यजित करेंगे। यदि यह युद्ध में मारे जायं, तो तुम रणभूमि से भाग जाना। इसके अनंतर अर्जुन राजा की आज्ञा लेकर त्रिगर्तराज की ओर दौड़े।

(१७) संशप्तक वीरगण अर्द्धचंद्रव्यूह बनाकर युद्ध में प्रवृत्त हुए। बड़े युद्ध होने के पश्चात् अर्जुन ने त्रिगर्त्तराज पांचो भाइयों को अपने बाणों से विद्ध कर सुधन्वा को मार डाला और जब वह उस सेना का संहार करने लगे, तब संपूर्ण सेना चारो ओर भागने लगी। अनंतर नारायणी और गोपाली सेना से युक्त संशप्तक योद्धा लोग फिर लौट कर रणभूमि में उपस्थित हुए।

(१८) अर्जुन ने त्वष्टाप्रजापति के दिए हुए अस्त्र को शत्रुसेना पर चलाया, जिसके प्रभाव से युद्धभूमि में अर्जुन के सहस्रों स्वरूप पृथक् पृथक् उत्पन्न हुए। संपूर्ण वीर अनेक अर्जुन देख कर अपनी सेना के वीरों को ही अर्जुन जान कर एक दूसरे का वध करने लगे और आपस में एक दूसरे के शस्त्रों से

मरकर पृथ्वी में गिरने लगे। अर्जुन के त्वष्टास्त्र ने सेना के वीरों को यमलोक में पठा दिया। (१९) द्रोणाचार्य ने (दूसरे दिन अर्थात् युद्धारंभ के १२ वें दिन) अपनी सेना का गरुड़व्यूह बनाकर प्रस्थान किया। युधिष्ठिर ने अपनी सेना का मंडलार्द्धव्यूह बनाया। गरुड़व्यूह के मुख के स्थान पर द्रोणाचार्य; मस्तक के स्थान पर अपने भाइयों के सहित राजा दुर्योधन; नेत्र के स्थानों पर कृतवर्मा और कृपाचार्य; ग्रीवास्थान पर हाथी घोड़े और रथों से युक्त होकर भूतशर्मा, क्षेत्रवर्मा, करकाक्ष, कलिंगयोद्धा, सिंहलदेशीय योद्धा, प्राच्य, शूद्र, आभीरक, दाशेरक, शक, यवन, कांबोज, शूरसेन, दरद, मद्र, और केकय देशीय योद्धागण; दहिने पक्ष के स्थान पर अक्षौहिणी सेना सहित भूरिश्रवा, शल्य, सोमदत्त, और वाह्लिक; बाएं पक्ष के स्थान पर अश्वत्थामा को आगे कर के अवंतिराज विंद और अनुविंद और कांबोजराज सुदक्षिण; पीठस्थान पर कलिंग, अंबष्ठ, मागध, पौंड्र, मद्रक, गांधार और प्राच्य पार्वतीय और वशातिदेशीय योद्धागण; पुच्छस्थल पर बंधु, बांधव, पुत्र और नानादेशों के राजाओं के सहित कर्ण व्यूह के वक्षस्थल पर भीमरथ, संपाति, ऋषभ, जय, वृष, क्राथ, निषधराज इत्यादि योद्धागण स्थित हुए। प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्त अपने गजराज पर चढ़ कर व्यूह के मध्य में सुशोभित हुए। इसके पश्चात् संग्राम होने लगा। (२०) जब द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ने के लिये उनकी ओर बढ़ने लगे, तब सत्यजित, द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। अद्भुत युद्ध होने के उपरांत द्रोणाचार्य ने अर्द्धचंद्र बाण से पांचालवीर सत्यजित का सिर काट लिया। तब राजा युधिष्ठिर भयभीत होकर रणभूमि से भाग चले। पांडवों की सेना ने राजा को बचाने के लिये द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। भयानक संग्राम होने लगा। द्रोणाचार्य ने शतानीक का सिर काट डाला। (२१) निम्नलिखित पांडवों की सेना के वीर द्रोण के संमुख उपस्थित हुए; भीम, सात्यकी, युधामन्यु धृष्टद्युम्न, इसका पुत्र क्षत्रधर्मा, शिखंडी का पुत्र क्षत्रदेव, नकुल, उत्तमौजा, युधिष्ठिर, द्रुपद, विराट, शिखंडी, विराट का पुत्र शंख, केकयराज पांचो भाई, शिशुपाल का पुत्र धृष्टकेतु, शिखंडी का पुत्र सहदेव,

काशिराज का पुत्र विभु, भीम का पुत्र सुतसोम, नकुल का पुत्र शतानीक, द्रौपदी का पुत्र श्रुतकर्मा, अभिमन्यु, युयुत्सु, सत्यधृति, वसुदान, कुंतिभोज, जरासंध का पुत्र सहदेव, सुधन्वा, कोशलराज का पुत्र सुक्षत्र, राजा नील, दंडकेतु, पांड्यराज इत्यादि; परंतु द्रोणाचार्य इन संपूर्ण वीरों को अतिक्रमण करके अत्यंतही प्रकाशित हुए। (२५) राजा अंग ने अपने हाथी को भीम की ओर चलाया, जो अपने हाथी के सहित भीमद्वारा मारा गया। राजा भगदत्त गजारूढ़ हो भीम की सेना की ओर दौड़े। भगदत्त के हाथियों से पांडवों की सेना का विनाश होने लगा। वह तितर बितर होकर भागने लगी। (२६) जब अर्जुन हाथियों का चिल्लाहट सुन कर भगदत्त की सेना की ओर चले, तब १४००० संशप्तक योद्धा जिनमें १०००० त्रिगर्त्तदेशीय महारथ और ४००० कृष्ण के अनुयायी महारथी योद्धा थे, उनको युद्ध के निमित्त आवाहन करने लगे। अर्जुन पीछे लौट कर लड़ने लगे। उन्होंने अन्त में संपूर्ण संशप्तक वीरों को परास्त किया। (२७) इसके पश्चात् वह कुरु सेना का विनाश करते हुए भगदत्त के निकट पहुंचे। दोनों परस्पर लड़ने लगे। (२८) राजा भगदत्त ने अर्जुन के ऊपर वैष्णवास्त्र छोड़ा। कृष्ण ने अर्जुन को छिपा कर अस्त्र को अपने वक्षस्थल पर ग्रहण किया और कहा कि हे अर्जुन! यह मेरा अस्त्र नरकासुर से भगदत्त को मिला था। इंद्र और रुद्रादि देवता भी इससे अवध्य नहीं हैं। इस समय पर्वतराज भगदत्त वैष्णवास्त्र से रहित हो गया है। तुम इसको मारो। अर्जुन ने भगदत्त के हाथी को मारने के उपरांत भगदत्त को मार डाला। (२९) पश्चात् उन्होंने इंद्र के प्रियमित्र राजा भगदत्त को मार कर उनकी प्रदक्षिणा की और शकुनी के दो भाई वृषक और अचल को मार डाला। (३१) दिन भर युद्ध होने के उपरांत सूर्य के अस्त होने पर दोनों ओर की सेना अत्यंतही पीड़ित होकर अपने अपने शिविरों में गईं।

(३२ वां अध्याय) द्रोणाचार्य ने (युद्ध आरंभ के दिन से १३ वें दिन) कहा कि हे दुर्योधन! आज मैं एक प्रधान महारथी का वध करूंगा। तुम लोग किसी प्रकार से अर्जुन को अन्यत्र लेजाओ। ऐसा सुन संशप्तक योद्धाओं

ने दक्षिण ओर से युद्ध के लिये अर्जुन को आव्हाइन किया। संशप्तक वीरों के साथ अर्जुन का अपूर्व युद्ध होने लगा। (३३) द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की। उस व्यूह में संपूर्ण राजा वा राजपुत्रगण इकट्ठे हुए। व्यूह के मध्य स्थल में कर्ण, कृपाचार्य, और दुःशासन तथा सेना सहित राजा दुर्योधन स्थित हुए। मुखस्थल में द्रोणाचार्य और जयद्रथ विराजमान हुए। जयद्रथ की दहिनी ओर अश्वत्थामा को आगे करके धृतराष्ट्र के ३० पुत्र और वाईं ओर शकुनी, शल्य और भूरिश्रवा स्थित हुए। (३४) पांडव लोग भीमसेन को आगे कर के कौरव सेना की ओर दौड़े। सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, कुंतिभोज, द्रुपद, अर्जुन का पुत्र छत्रधर्मा, वृहत्छत्र, चेदिराज, धृष्टकेतु, नकुल, सहदेव, घटोत्कच, युधामन्यु, शिखंडी, उत्तमौजा, विराट, द्रौपदी के पांचोपुत्र, शिशुपालपुत्र आदि पराक्रमी राजागण सहस्रों योद्धाओं के सहित द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। राजा युधिष्ठिर ने अभिमन्यु से कहा कि हे तात! अर्जुन, कृष्ण, प्रद्युम्न और तुम यह चार पुरुषों के अतिरिक्त और कोई योद्धा चक्रव्यूह के भेदन करने में समर्थ नहीं है। तुम अस्त्र ग्रहण करके द्रोणाचार्य की सेना का नाश करो, जिसमें अर्जुन लोट कर हम लोगों की निन्दा न करसकें। अभिमन्यु वोले कि मैं द्रोणाचार्य का चक्रव्यूह भेदन करूंगा, परंतु पिता ने केवल उसे भेदन करने ही की युक्ति मुझे सिखाई है, व्यूह से वाहर होने का उपदेश मुझे नहीं दिया है, यदि वहां पर कोई आपद उपस्थित होगी, तो मैं व्यूह के भीतर से निकल नहीं सकूंगा। युधिष्ठिर ने कहा कि तुम व्यूह को तोड़कर हमलोगों के प्रवेश करने का मार्ग वनादो, तुम जिस मार्ग से गमन करोगे, हमलोग भी उस ही मार्ग से चलेंगे। भीमसेन वोले कि मैं धृष्टद्युम्न आदि योद्धाओं के सहित तुम्हारे पीछे पीछे चलूंगा और मुख्य मुख्य योद्धाओं का वध करके संपूर्ण सेना का नाश करदूंगा। (३५) इसके पश्चात् अभिमन्यु के रथ के पाछे पांडवों की सेना चली। अभिमन्यु नें द्रोणाचार्य के सम्मुखही में व्यूह भेदकर के शत्रु सेना में प्रवेश किया। दोनों ओर के योद्धा लोग एक दूसरे के ऊपर शस्त्रों का प्रहार करने लगे। (४०) अभिमन्यु ने कर्ण के कनिष्ठ भ्राताओं को मार

डाला, (४६) कोशलराज वृहद्बल को प्राण रहित करदिया। (४७) मगधराज के पुत्र का वध करके अश्वकेतु को मारा और कौरवी सेना को व्याकुल करदिया। कर्ण ने द्रोणाचार्य के उपदेश से अभिमन्यु का धनुष काटदिया। भोज ने अभिमन्यु के रथ के चारो घोड़ों को और कृपाचार्य ने पृष्ठरक्षक योद्धाओं और सारथी को मारडाला। उसके उपरांत वहां पर स्थित संपूर्ण महारथी योद्धा लोग धनुष रहित उस बालक के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। तब अभिमन्यु तलवार ढाल ग्रहण करके रथ से कूद पड़े और रणभूमि में चारो ओर भ्रमण करने लगे। जब द्रोणाचार्य ने उसकी तलवार काटडाली और कर्ण ने कई एक बाणों से उसकी ढाल काट दी, तब अभिमन्यु चक्र ग्रहण करके द्रोणाचार्य की ओर दौड़े (४८) जब संपूर्ण राजाओं ने उसके चक्र को अपने अस्त्रों से काट दिया, तब उसने गदा से बहुतेरे योद्धाओं को मार गिराया। अनंतर दुःशासन के पुत्र ने अभिमन्यु के सिर में गदा से प्रहार किया, जिसकी चोट से १६ वर्ष की अवस्था के अभिमन्यु मृत्यु को प्राप्त होकर पृथ्वी में गिरगए। तब पांडवों की सेना रणभूमि से भागने लगी। संध्या होजाने पर कौरवों की सेना अपने अपने डेरों में गईं। पांडवों की सेना भी संग्राम से निवृत्त हो अपने शिविरों में चली गईं। (७०) अर्जुन संशप्तक वीरों को मार जययुक्त होकर संध्या के समय अपने शिविर में गए। (७१) राजा युधिष्ठिर ने कहा कि हे अर्जुन! अभिमन्यु ने जिस मार्ग से द्रोणाचार्य के चक्र व्यूह में प्रवेश किया, हम लोगों ने भी उसही मार्ग से व्यूह में प्रवेश करने की इच्छा की, परंतु सिंधुराज जयद्रथ ने किसी प्रकार से हम लोगों को व्यूह के भीतर जाने नहीं दिया। जब अभिमन्यु रथ हीन हो गए, तब दुःशासन के पुत्र ने उनका प्राण हरण किया। ऐसा सुन अर्जुन ने अनेक शपथ करके यह प्रतिज्ञा की कि कल्ह सबेरे से सूर्यास्त पर्यंत, यदि मैं जयद्रथ का वध न करूंगा, तो इसही स्थल पर अग्नि में प्रवेश करके प्राणत्याग कर दूंगा।

(८५ वां अध्याय) रात्रि व्यतीत होने पर (युद्ध आरंभ के १४ वें दिन) प्रातः काल में द्रोणाचार्य ने राजा जयद्रथ से कहा कि तुम भूरिश्रवा, कर्ण,

अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन, और कृपाचार्य, इन ६ महारथियों के सहित १००००० घुड़सवार, ६०००० रथी, १४००० गजारोही और २१००० पैदल योद्धाओं को संग लेकर यहां से ६ कोस के दूर पर जाकर सेना के बीच में निवास करो। राजा जयद्रथ ने ऐसाही किया। द्रोणाचार्य ने अपनी चतुरंगिणी सेनाओं को यथायोग्य स्थानों में स्थित करते हुए अपनी विशाल सेना का चक्र शकटव्यूह बनाया, जिस की लंबाई २४ कोस की हुई। सेना के आधे भाग में चक्रव्यूह बनाया, जिसका विस्तार तथा घेरा १० कोस का हुआ और चक्रव्यूह के बीच में सूचीव्यूह निर्माण किया। द्रोणाचार्य महाव्यूह सज्जित करके संपूर्ण सेना के आगे स्थित हुए। कृतवर्मा पद्मव्यूह अर्थात् चक्रव्यूह के भीतर और सूचीव्यूह के मुखस्थल पर विराजित हुए। उनके पीछे कांबोज और जलसंध खड़े हुए। उनके पश्चात् राजा दुर्योधन स्थित हुए, जिनके बाद १००००० योद्धा खड़े हुए। सूची व्यूह के चारो ओर से घेर कर सेना का बड़ा दल खड़ा हुआ। उसके भीतर राजा जयद्रथ स्थित हुए। द्रोणाचार्य शकटव्यूह के मुखस्थल पर विराजे। कृतवर्मा पीछे खड़े होकर उनकी रक्षा करने लगे। (८६) नकुल के पुत्र शतानीक और पृषत के पुत्र धृष्टद्युम्न ने पांडवों की सेना का व्यूह बनाया। अर्जुन आदिक संपूर्ण पांडव सेनाओं के सहित रणभूमि में उपस्थित हुए। दोनों ओर से भयंकर संग्राम होने लगा। (९७) जब अवंतिराज विंद और अनुविंद ने अर्जुन पर आक्रमण किया, तब बड़ा युद्ध होने के उपरांत अर्जुन ने उनको मार डाला। (१०१) अर्जुन जयद्रथ को देख कर उसके रक्षक दुर्योधन आदि वीरों के साथ लड़ने लगे। (१०३) इधर अपराह्न समय में पांचाल योद्धाओं के संग कौरवों का तुमुल संग्राम हुआ। लोमहर्षण युद्ध होने के उपरांत द्रोणाचार्य ने चार बाणों से युधिष्ठिर के चारो घोड़ों को मार कर एक बाण से उनके धनुष को काट दिया। जब वह विरथ होगए, तब द्रोणाचार्य उनको पकड़ने के लिये दौड़े। उस समय राजा युधिष्ठिर सहदेव के रथ पर चढ़ रणभूमि से भाग गए। (१०६) हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच ने अलंबुष राक्षस को मार डाला। (११६) सात्यकी ने राजपुत्र सुदर्शन का सिर काट डाला। (१२०)

द्रोणाचार्य ने व्यूह के द्वार पर पांचालसेना में प्रवेश करके सैकड़ों सहस्रों योद्धाओं को भगाकर पांचालराज के पुत्र वीरकेतु को मार डाला। (१२३) इसके उपरांत उसने वृहत्क्षेम, चेदिराज, धृष्टकेतु, धृष्टकेतु के पुत्र, जरासंध के पुत्र और धृष्टद्युम्न के पुत्र छत्रवर्मा को प्राण रहित करके गिरा दिया। उस समय ८५ वर्ष के वृद्ध द्रोणाचार्य १६ वर्ष के युवापुरुष की भांति रण-भूमि में भ्रमण करने लगे। (१२५) भीमसेन ने द्रोणाचार्य को पराजित करके व्यूह में प्रवेश किया और धृतराष्ट्र के सुदर्शन आदि कई पुत्रों को मार डाला। (१३७) कर्ण ने भीमसेन को मूर्छित कर देने पर भी उनका वध नहीं किया, क्योंकि उन्होंने कुन्ती को वरदान दिया था, कि मैं अर्जुन के अतिरिक्त तुम्हारे चार पुत्रों में से किसी को नहीं मारूंगा। कर्ण ने भीम के गले में धनुष डालकर, उनसे कहा कि अरे पेटू मूर्ख! तू केवल पेट पालने ही में वीर है। तू कभी रण-भूमि में मेरे समान पुरुषों से युद्ध मत कर। जिस स्थान पर खाने, चाटने और पीने की नाना प्रकार की वस्तु होय, तू उसी स्थान पर रहने के योग्य है। अथवा तू मुनियों के व्रत के अनुसार फल मूल भोजन करने वाला है। कर्ण ने ऐसे कठोर वचन कहकर कृष्ण और अर्जुन के सन्मुख ही भीम को छोड़ दिया। अर्जुन कर्ण के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। भीमसेन सात्यकी की ओर चले गए। (१४०) सात्यकी और भूरिश्रवा परस्पर लड़कर दोनों विरथ होगए। भूरिश्रवा ने सात्यकी को पटक कर एक हाथ से उसके केश पकड़ उसकी छाती में लात मारी। जब वह उसके सिर काटने की इच्छा करने लगे, तब कृष्ण की अनुमति से अर्जुन ने भूरिश्रवा की भुजा काट दी। (१४१) भूरिश्रवा अर्जुन की निन्दा करते हुए सात्यकी को छोड़ कर बैठ गए। उन्होंने बाएं हाथ से सम्पूर्ण अस्त्रों को निकाल कर रख दिया और सूर्य की ओर दृष्टि करके मौनव्रत धारण करके ब्रह्म का ध्यान किया। उस समय संपूर्ण योद्धागण कृष्ण और अर्जुन की निंदा और भूरिश्रवा की प्रशंसा करने लगे। सात्यकी ने किसी का वचन न मानकर योग में आसक्त भूरिश्रवा का सिर काट लिया। (१४४) अर्जुन कौरवों की सेना को व्याकुल कर जयद्रथ की ओर दौड़े। उसने

अश्वत्थामा आदि वीरों को बाणों से विद्ध करके जयद्रथ के सारथी का सिर काट लिया। उस समय श्रीकृष्ण ने सूर्य को अस्ताचल पर गमन करते हुए देख कर उनको छिपाने के लिये अपनी माया से अंधकार उत्पन्न किया। कौरवों ने समझा, कि सूर्य अस्त होगए। अब अर्जुन स्वयं प्राणत्याग करेंगे। संपूर्ण योद्धागण और राजा जयद्रथ अपना अपना सिर ऊंचा करके सूर्य की ओर देखनेलगे। कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि तुम्हारे निकटही में जयद्रथ सूर्य की ओर देख रहा है। तुम उसका सिर काटलो। अर्जुन ने कौरव सेना के योद्धाओं को तितर बितर करके जयद्रथ के रक्षक कर्ण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, वृषसेन, शल्य और सुयोधन को अपने बाणों के जाल से छिपादिया। कृष्ण बोले, हे अर्जुन! देखो सूर्य अस्त हुआ चाहते हैं। तुम इसी समय जयद्रथ का सिर काटकर उसके पिता की गोद में गिरादो। उसके पिता वृद्धक्षत्र ने ऐसा वर प्राप्त किया था; कि जो पुरुष जयद्रथ का सिर पृथ्वी में गिरावेगा, उसका सिर १०० टुकड़े होकर पृथ्वी में गिर पड़ेगा। तब अर्जुन ने बाण छोड़ा। वह दिव्यबाण जयद्रथ के सिर को काटकर "समंतपंचक" के बाहरी भाग में, जहां वृद्धक्षत्र संध्योपासन कर रहे थे, पहुंचा। उसने सिर को उनकी गोद में गिरादिया। ज्योंहीं वह भयभीत हो खड़े होने लगे, त्योंहीं उनकी गोदसे जयद्रथ का सिर पृथ्वी पर गिरगया। उसीसमय वृद्धक्षत्र का सिर भी १०० टुकड़े होकर पृथ्वी में गिरा। इसप्रकार से सिंधुराज जयद्रथ ८ अक्षौहिणी सेना का विनाश कराके अर्जुन के बाण से मारा गया।

(१५२ वां अध्याय) अत्यंत भयंकरी रात्रि का समय उपस्थित हुआ। द्रोणाचार्य ने १००० हाथी, १०००० रथी, ५०००० घोड़सवार और १ अर्बुद पैदल सेना के योद्धाओं को छिन्न भिन्न करके पृथ्वी पर गिरा दिया (१५३) और धृष्टद्युम्न के पुत्रों और केकयदेशीय वीरों को मार कर शिबिराज का सिर काटडाला। भीमसेन ने कलिंगराज के पुत्र को मारकर (१५५) कुरुवंशीय प्रतीपनंदन बाल्हिक को गदा से मारकर पृथ्वी में गिरा दिया और धृतराष्ट्र के १० पुत्र और कर्ण के भाई (अधिरथ के पुत्र)

बृपरथ को मारडाला। राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर अंबष्ठ, मालव, त्रिगर्त, और शिविदेशीय योद्धाओं का वध करने लगे। उन्होंने अभिषाह, शूर-सेन, वाल्हिक और वशातिदेशीय वीरों को खंड खंड करके उनके रुधिर से रणभूमि पूरित करदिया और यौधेय, मालव तथा मद्रदेशीय वीरों को मारडाला। (१६०) कौरव वंशीय वाल्हिक पुत्र सोमदत्त रणभूमि में अपना बृहत् पराक्रम दिखलाकर सात्यकी के हाथ से मारागया। (१५६) अंधकार और धूलि से संपूर्ण रणभूमि और आकाशपूर्ण होगया। उस समय योद्धा लोग एक दूसरे को नहीं देख सकते थे। वेलोग केवल अपने नाम को सुनाते हुए अनुमान से ही घोर युद्ध करनेलगे। उस रात्रि में असंख्य वीर मरने लगे। राजा दुर्योधन और पांडवों के पैदल चलनेवाले वीरों ने जलते हुए लुक्का, दीप, तथा मसाल ग्रहण किए। इसी भांति प्रत्येक हाथियों पर सात सात, रथों पर दस दस और घोड़े पर दो दो दीप जलाए गए। (१६५) कर्ण ने सहदेव को विरथ करके पकड़ लिया और उनको धनुष के अग्रभाग से पीड़ित करके उनसे कहा कि हे माद्रीपुत्र! तुम अर्जुन के निकट अथवा अपने घर को चले जाओ। कर्ण ने कुंती को बरदान दिया था, उसको स्मरण करके सहदेव को छोड़ दिया। मद्रराज शल्य ने विराट को विरथ करके उनके भाई शतानीक को मारडाला। विराट अपने भाई के रथ पर चढ़गए। (१७७) कर्ण ने अपनी शक्ति से (जिसको उन्होंने अभेद्य कवच कुंडल के बदले में इंद्र से पाया था और उसको अर्जुन के वध के लिये कई वर्षों से रक्खा था) घटोत्कच का वध किया (१७८) दोनों ओर के योद्धा-वीरगण जब युद्ध के परिश्रम से थककर अर्द्धरात्रि के समय निद्रावस होगए, तब अर्जुन बोले कि दोनों ओर योद्धालोग थोड़ीदेर के लिये रणभूमि में सो जावें। चंद्रमा के उदयहोने पर फिर युद्ध आरंभ होगा। दोनों सेना युद्ध से निवृत्त होकर सुख पूर्वक सो गईं। चंद्रमा के उदय होने पर संपूर्ण योद्धा जागकर सावधान होगए। जब रात्रि के ३ भाग व्यतीत होकर एकभाग बाकी था, तब दोनों ओर के योद्धागण फिर हर्षित होकर घोर संग्राम करने लगे। उसके पश्चात् भोर हुआ।

( युद्ध आरंभ के दिन से १५ वें दिन ) द्रोणाचार्य ने राजा द्रुपद के ३ पौत्रों को, और द्रुपद तथा राजा विराट को मारडाला। (१८८ वां अध्याय) श्रीकृष्ण ने पांडवों को द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित और भयभीत देखकर अर्जुन आदि पांडवों से कहा, कि यदि द्रोणाचार्य हाथमें धनुषग्रहण करके रणभूमि में स्थित रहें तो इंद्रादि देवता भी उनको नहीं जीत सकेंगे, परंतु अस्त्र रहित होने पर सामान्य पुरुष भी उनको मार सकेगा। अश्वत्थामा की मृत्यु सुनने पर वह युद्ध त्याग देंगे। कोई पुरुष उनके निकट जाकर के अश्वत्थामा का वध उनको सुनावे। उस समय अर्जुन ने किसी प्रकार से कृष्ण का वचन स्वीकार नहीं किया, परंतु दूसरे संपूर्ण योद्धाओं ने और अत्यंत कष्ट से राजा युधिष्ठिर ने भी कृष्ण के वचन को स्वीकार किया। उसी समय भीमसेन ने मालवदेशीय राजा इंद्रवर्मा के अश्वत्थामा नामक हाथी को गदा से मारडाला और द्रोणाचार्य के निकट जाकर "अश्वत्थामा मारेगए" ऐसा वचन कहके वह ऊंचे स्वर से सिंहनाद करने लगा। द्रोणाचार्य यह अप्रिय वचन सुनकर मनही मन शोकित हुए, परंतु अपने पुत्र का पराक्रम विचारकर धैर्य्य रहित नहीं हुए। (१८९) उस समय विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, वशिष्ठ, कश्यप आदि ऋषिगण द्रोणाचार्य को क्षत्रिय पुरुषों के नाश में प्रवृत्त देखकर अग्नि को आगे करके उनके निकट उपस्थित हुए और बोले कि हे द्रोण! तुम वेदवेदांग के जानने वाले हो विशेष करके सत्य धर्म में रत ब्राह्मण हो, यह युद्ध का क्रूरकर्म तुम्हारे करने योग्य नहीं है। मनुष्य-लोक में तुम्हारे निवास करने का समय पूर्ण होगया; इसलिये अब अस्त्र त्याग-करके सत्पथ में स्थित होजाओ। द्रोणाचार्य ने ऋषियों का उपदेश और भीमसेन के पूर्वोक्त वचनों को सुनकर युद्ध से अपना मन हटालिया और युधिष्ठिर को पुकारकर पूछा कि हे युधिष्ठिर! मेरा पुत्र अश्वत्थामा जीवित है, अथवा मारागया। उनको यह निश्चय था, कि युधिष्ठिर कदापि मिथ्या वचन नहीं कहेंगे। उस समय कृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि हे महाराज! यदि द्रोणाचार्य अर्द्ध दिवस और युद्ध करेंगे, तो तुम्हारी संपूर्ण सेना के योद्धाओं का नाश करदेंगे, इस लिये द्रोणाचार्य से अपने परित्राण करने के

लिये तुमको सत्य की अपेक्षा मिथ्या वचन बोलना कल्याणकारी है। प्राण-रक्षा करने के लिये मिथ्यावचन बोलने से पाप नहीं लगता है। उस समय युधिष्ठिर नें मन में हाथी कहकर प्रकट में "अश्वत्थामा मारे गए" ऐसा वचन कहा। प्रथम राजा युधिष्ठिर के रथ के पहिये पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर उठे रहते थे, परंतु इस समय मिथ्या व्यवहार करने के कारण उनके रथ के पहिये भूमि पर चलने लगे। द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर के मुख से पुत्रवध सुनकर जीने की आशा छोड़ दी। (१९०) वह चार दिन और एक रात्रि लगातार अपने बाणों को चलाकर पांचवें दिन के प्रथम प्रहर में पुत्रशोक से दुःखित और व्यग्रताके कारण अपने दिव्य अस्त्रों को भूल गए। उसी समय भीमसेन नें द्रोणाचार्य के रथ को पकड़ कर कहा कि हे ब्राह्मण! तुम जिसका मुख देख कर जीवन धारण करते हो, वही अश्वत्थामा मर कर आज पृथ्वी पर शयन करते हैं। तुम धर्मराज के कहे हुए वचन में जरा भी संदेह मत करो। तब द्रोणाचार्य अश्वत्थामा का नाम लेकर ऊँचे स्वर से रोदन करने लगे और शस्त्र परित्याग कर रथ में बैठ योग युक्त पुरुष की भांति परमेश्वर के ध्यान में रत हुए। धृष्टद्युम्न तलवार ग्रहण करके रथ से कूद कर द्रोणाचार्य की ओर दौड़ा। उस समय संपूर्ण प्राणी 'धिक्कार है धिक्कार है' ऐसा वचन कह कर हाहाकार करने लगे। द्रोणाचार्य परम शांत भाव अवलंबन करके योग-बल से तेजोमय रूप धारण कर ब्रह्मलोक में चले गए। उस समय केवल संजय, अर्जुन, कृपाचार्य, कृष्ण और युधिष्ठिर ने उनका दर्शन किया। दूसरा कोई पुरुष जानने में समर्थ नहीं हुआ। धृष्टद्युम्न ने प्राण रहित शरीर वाद द्रोणाचार्य के केश को ग्रहण कर तलवार से उनका सिर काट डाला। उस समय द्रोणाचार्य की अवस्था ८५ वर्ष की थी। उनके केश पक गए थे। (१९७) द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा शत्रुसेना के योद्धाओं का विनाश करने लगे। जब उनने पांडव और पांचाल सेना को लक्ष्य करके नारायण अस्त्र चलाया, तब उसमें सहस्रों भांति के भयंकर सहस्रों तथा लक्षों बाण प्रकट होने लगे। नारायण अस्त्र के प्रभाव से शत्रु सेना भस्म होने लगी। उस समय कृष्ण भगवान पांडवों की सेना के पुरुषों से बोले, कि तुम लोग

शीघ्रही अस्त्र शस्त्र परित्याग करके युद्ध से निवृत्त हो जाओ। जो लोग अपने वाहनों से उतर कर अस्त्र परित्याग करेंगे; उनको यह अस्त्र वध नहीं करेगा। पांडवों की ओर के संपूर्ण योद्धाओं ने अस्त्र शस्त्र परित्याग किया, परंतु भीम ने इस बात को न मान कर रथारूढ़ होकर अश्वत्थामा की ओर दौड़े। अश्वत्थामा ने नारायण अस्त्र के प्रभाव से बाणों की वर्षा कर उनको छिपा दिया। (१९८) जब कृष्ण और अर्जुन ने भीमसेन को बल पूर्वक अस्त्र शस्त्रों से रहित करके रथ से उतार कर उनको पृथ्वी पर स्थित कर दिया, तब नारायणअस्त्र शांत होगया। फिर युद्ध आरंभ हुआ। अश्वत्थामा ने मालवराज सुदर्शन, वृद्धछत्र और चेदिराज को रणभूमि में मार डाला। (२०१) द्रोणाचार्य ने ५ दिन पर्यन्त महा भयंकर युद्ध किया था।

(८) कर्ण-पर्व—(१० वां अध्याय) जब द्रोणाचार्य की मृत्यु होने पर कौरवों की बड़ी सेना इधर उधर भागने लगी, तब राजा दुर्योधन ने बहुत यत्न से अपनी सेना को स्थिर किया, और बहुत समय तक युद्ध करके संध्या समय अपनी सेना को लौटाया। राजा दुर्योधन ने अश्वत्थामा की अनुमति से कर्ण को प्रधान सेनापति बनाया। संपूर्ण राजाओं ने कर्ण का अभिषेक किया।

(११ वां अध्याय) महा धनुषधारी कर्णने (युद्ध आरम्भ के १६ वें दिन) मकरव्यूह बनाया। व्यूह के मुखस्थान में विकर्ण का पुत्र; नेत्रों के स्थान में शकुनी और उलूक, सिर के स्थान में अश्वत्थामा; गले में धृतराष्ट्र के सब पुत्र; पेट के स्थान में बहुत सेना सहित राजा दुर्योधन; बाएं चरण के स्थान में ग्वालियों के सहित कृतवर्मा; दहिने चरण के स्थान में त्रिगर्त्तदेशीय क्षत्रियगण और दक्षिणी वीरों के साथ कृपाचार्य; बाएं चरण के निकट मद्रदेश की महा सेना के सहित राजा शल्य; दहिने चरण के समीप ३०० हाथी और १००० रथों के सहित सुषेण और व्यूह के बाईं कोख में बड़ी सेना समेत चित्र और चित्रसेन दोनों भाई स्थित हुए। इधर अर्जुन ने अपनी सेना का अर्द्धचन्द्र व्यूह बनाया, जिसके बाईं ओर भीमसेन; दहिनी ओर धृष्टद्युम्न; मध्य में अर्जुन; नकुल और सहदेव और पीछे राजा युधिष्ठिर खड़े हुए।

इसके पश्चात् दोनों ओर के वीर लड़ने लगे। (१३). सात्यकी ने केकय-देश के राजा को मारडाला। (२०) पांड्यदेश के राजा ने कौरवदल के वाल्हिक, पुलिंद, खस, निषाद, अंधक और कुंतलदेश के वीरों को तथा दक्षिणी और भोजदेश के क्षत्रियों को प्राणरहित करके गिरा दिया। अश्वत्थामा पांड्यदेश के राजा मलयध्वज से लड़ने लगे। राजा मलयध्वज बड़ा पराक्रम देखाकर अश्वत्थामा के हाथ से मारे गए। (२२) राजा दुर्योधन की आज्ञा से अंग, वंग, मगध और ताम्रदेश के गजयुद्ध जाननेवालों ने धृष्टद्युम्न को चारो ओर से घेर लिया। मेकल, कोशल, मद्र, दशार्ण, निषध और कलिंगदेश के क्षत्रियों के सहित अनेक वीर धृष्टद्युम्न से युद्ध करने लगे। सात्यकी ने अंगदेश के वीर को मारडाला। नकुल ने अंगदेश के राजा का सिर काट लिया। मेकल, उत्कल, कलिंग, निषध और ताम्रलिप्त-देश के वीरगण नकुल के ऊपर बाण और तोमर बर्षाने लगे। कर्ण आकर नकुल से युद्ध करने लगे। जब नकुल कर्ण के बाणों से पीड़ित होकर भागे; तब कर्ण ने उनको पकड़कर उनके गले में अपना धनुष डाल दिया और ऐसा कहा कि हे नकुल! तुम बलवान कौरवों के साथ कभी युद्ध मत करो, अपने गृहको तथा कृष्ण अर्जुन के समीप चले जाओ। धर्मात्मा कर्ण ने कुंती के वचन स्मरण करके नकुल को जीताही छोड़ दिया। नकुल स्वांस लेते हुए युधिष्ठिर के रथ पर जा चढ़े। मध्यान्ह समय में कर्ण "चाक" के समान सेना में घूमकर वीरों को मारने लगे। (३०) सूर्यास्त होने के समय दोनों ओर के सेनापतिओं ने अपनी अपनी सेनाओं को डेरा में जाने की आज्ञा दी; उस दिन पांडवों ने अपनी जीत समझी।

(३१वां अध्याय) कर्ण दुर्योधन से बोले कि हे राजन्! जैसे अर्जुन का गांडीव धनुष है, वैसेही मेरा भी विजय धनुष है। मैं इस धनुष के कारण अर्जुन से श्रेष्ठ हूं, परंतु अर्जुन का सारथी जैसा कृष्ण है, वैसा हमारा सारथी नहीं है। राजा शल्य कृष्ण के समान घोड़ा हांकना जानते हैं। शल्य हमारे सारथी बनें और गिद्धपंख लगे हुए बाणों से भरे हुए "छकड़े" हमारे संग रहें, तब अवश्य आप का विजय होगा। (३२) राजा दुर्योधन

ने राजा शल्य के निकट जाकर विनय पूर्वक कहा कि हे मद्रराज ! हमारे कल्याण के लिए आप कर्ण के सारथी बनिए। ऐसा वचन सुन शल्य क्रोध से युक्त होकर दुर्योधन को डपट कर बोले, कि हे गांधारीपुत्र ! तुम मुझको नीच राधापुत्र के रथ हांकने को कहते हो, सूतजाति ब्राह्मण और क्षत्रियों के सेवक हैं, उनको उचित है कि हमारी स्तुति करें। इसके उपरांत जब दुर्योधन ने बहुत विनीत भाव से राजा शल्य को समझाया; तब उन्होंने कहा कि अच्छा, हम कर्ण के सारथी बनेंगे, परंतु मैं कर्ण के साथ एक प्रतिज्ञा कर लेता हूं, कि मेरी जो इच्छा होगी वह कर्ण को कहूंगा। वह उसका उत्तर नहीं दे सकेगा। कर्णने शल्य की बात स्वीकार की।

(३७ वां अध्याय) कर्ण (युद्ध आरंभ से १७ वें दिन) अपने रथ में बैठकर क्रोध और अहंकार से युक्त हो अपने सारथी राजा शल्य से अपनी प्रशंसा करनेलगे। शल्य बोले कि रे कर्ण! तू चुपरह, भला कहां पुरुषसिंह अर्जुन और कहां अधम तू। यदि आज नहीं भागेगा, तो यहांही रह जायगा। (३८) कर्ण बोले; आज हमको जो कोई अर्जुन को दिखलावेगा, मैं उसको इच्छानुसार धन दूंगा। इसीप्रकार की अनेक बातें कहकर उसने अपना शंख बजाया। (३९) राजा शल्य बोले हे सूतपुत्र! तुम जन्महीं से कुबेर के समान दानी हो, परंतु अब तुम विना दानही अर्जुन को देखलोगे। तुम्हारा अब काल आगया है; इसी कारण से तुम मूर्ख के समान बातें करते हो। यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो, तो अपने संग अनेक योद्धाओं को लेकर अर्जुन से युद्ध करो। तुम शृगाल के समान हो और अर्जुन सिंह के तुल्य हैं। (४०) ऐसा सुन कर्ण को बड़ा क्रोध हुआ। वह बोले कि हे शल्य! तुम मूर्ख हो, महायुद्धों की विद्या नहीं जानते हो। रे पापबुद्धे क्षत्रियाधम ! आज मैं कृष्ण और अर्जुन को मारकर तुझे भी मारूंगा। तू ऊपर से मित्र और भीतर से हमारा शत्रु है। मद्रदेश के मनुष्य मद्य पीनेवाले, कृतघ्न, विश्वासघाती और दुष्ट होते हैं। मद्रदेशीय मनुष्य गांधारदेशियों के समान अपवित्र रहते हैं। मद्र सिंधु और सुवीरदेश के मनुष्य पापियों में श्रेष्ठ हैं। (४१) हमने प्रथम तुम्हारे कठोर वचन सहने की प्रतिज्ञा की है, इसी से तुम

अब तक जीते हो। (४५) राजा दुर्योधन ने जब दोनों को शांत किया; तब कर्ण ने हंसकर शल्य से कहा; कि रथ हांको। (४६) कौरवों के दहिने व्यूह के पक्ष में कृपाचार्य, मागध और कृतवर्मा खड़े हुए। उसके निकट शकुनी और उलूक घुड़चढ़े बीरों के सहित स्थित होकर सेनाकी रक्षा करने लगे। उनके समीप गांधारदेश की सेना और पिशाचगण खड़े हुए। बांए पक्ष में १४००० संशप्तक बीर और धृतराष्ट्र के अनेक पुत्र स्थित हुए। उसके निकट कांबोज, शक और यवनसेना खड़ी हुई। व्यूह के मुखके स्थान में कर्ण खड़े हुए। सेना के पिछले भाग में अनेक बीरों के सहित दुःसासन स्थित हुए। इनकी रक्षा करने के लिये राजा दुर्योधन खड़े हुए। मद्र और कैकयदेशीय बीर इनकी रक्षा करने लगे। इस भांति बारहस्पति व्यूह तैयार हुआ। दूसरी ओर अर्जुन ने अपनी सेना का व्यूह बनाया, जिसके मुखस्थान में सेनापति धृष्टद्युम्न खड़े हुए। द्रौपदी के पांचो पुत्र उनकी रक्षा करने लगे। दोनों ओर के बीर लड़ने लगे। (४९) कर्णने रणभूमि में राजा युधिष्ठिर को परास्त किया। जब राजा भाग चले, तब कर्ण अपने रथ से उतर कर अपने शरीर को पवित्र करने के लिये राजा का कंधा हाथ से छूने लगे और उनकी ऐसी भी इच्छा हुई; कि राजा को पकड़ लेजाऊं। उस समय शल्य ने पुकार कर कहा, कि यदि तुम राजा को छुओगे तो; वह तुमको भस्म कर देंगे। तब कर्ण बोले; हे कुंतीपुत्र! तुम क्षत्रिय धर्म में स्थित होकर भी प्राणों के भय से युद्ध छोड़ कर भागे। तुम क्षत्रिय धर्म में निपुण नहीं हो। तुम कौरवों से युद्ध करने की इच्छा कभी मत करो। हमलोगों से युद्ध करने में यही दशा होती है। तुम अपने गृह को अथवा कृष्ण अर्जुन के निकट चले जाओ। कर्ण तुमको कदापि नहीं मारेंगे। ऐसा कह उसने युधिष्ठिर को छोड़ दिया। राजा युधिष्ठिर लज्जित होकर चले गए। चेदी और पंचालदेश के क्षत्रिय पांडवोंके सहित भागे, परंतु भीमसेन आदि महारथ कौरवों से युद्ध करने लगे। (५०) कर्ण भीमसेन के बाण से मूर्छा खाकर रथ में गिर पड़े। तब शल्य ने रथ को युद्ध से हटा लिया। (५१) जब भीमसेन ने धृतराष्ट्र के अनेक पुत्रों को मारडाला, तब कर्णने फिर आकर भीमसेन को विरथ कर दिया।

(६४) कृपाचार्य ने सुकेतु का सिर काट लिया। (६३) कर्ण ने राजा युधिष्ठिर और नकुल को विरथ करदिया। तब दोनों भाई व्याकुल होकर सहदेव के रथ पर चढ़ गए। मद्रराज शल्य अपने भांजों को रथहीन और घावों से व्याकुल देख दया से भर कर कर्ण से बोले, कि तुमने कहा था कि आज अर्जुन से लड़ेंगे, तब युधिष्ठिर से क्यों लड़ते हो। कर्ण शल्य के ऐसे अनेक वचन को सुन और भीम के बाणों से राजा दुर्योधन को व्याकुल देख कर नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर को परित्याग कर दुर्योधन की रक्षा के लिए दौड़े। राजा युधिष्ठिर नकुल और सहदेव के सहित लज्जित और घावों से व्याकुल होकर डेरों में चलेगए और वहां पलंग पर लेट रहे। नकुल और सहदेव रथारुढ़ होकर भीम की रक्षा के लिये गए। (६५) अर्जुन युद्ध का भार भीमसेन पर छोड़कर युधिष्ठिर को देखने के लिये डेरे पर आए। युधिष्ठिर ने समझलिया था, कि अर्जुन ने कर्ण को मारडाला। (६८) पीछे जब उन्होंने सुना, कि कर्ण अभी जीवित है, तब कर्ण के बाणों से व्याकुल, वह क्रोध करके बोले, कि हे अर्जुन। जब तुम कर्ण को नहीं मारसके; तब भीम को अकेला छोड़ कर्ण के डर से हमारे पास भाग आए हो। तुमने कुन्ती के गर्भ में वृथाही जन्म लिया। तुम गांडीवधनुष लेकर और कृष्ण को सारथी बनाकर भी कर्ण से डरकर भाग आए। अब तुम यह धनुष कृष्ण को दो और तुम घोड़ों को हांको; अथवा जो तुमसे अधिक शस्त्रविद्या जानता हो, उसी राजा को अपना गांडीवधनुष देदो। (६९) अर्जुन ने ऐसा वचन सुन क्रोधकर युधिष्ठिर के मारने के लिए खड्ग उठाया। तब कृष्ण ने अर्जुन को निवारण किया और ऐसा क्रोध करने का कारण पूछा। अर्जुन कृष्ण से कहा, कि मेरी यह प्रतिज्ञा है, कि जो मुझ से कहेगा कि अपना धनुष दूसरे को देदो मैं उसका सिर काट लूंगा। इसलिये म आज राजा का सिर काटकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करूंगा। (७०) जब कृष्ण ने बहुत समझाया और इतिहास कह सुनाया, तब अर्जुन ने शांत होकर अपना भूल स्वीकार किया। कृष्ण ने अर्जुन का अपराध राजा से क्षमा करवाया। (७१) इसके पश्चात् कृष्ण बोले कि हे अर्जुन! युद्ध होते आज १७ दिन

होगए। अब तुम्हारी सेना बहुत थोड़ी बची है। पहले कौरवों के संग बहुत हाथी, घोड़े और रथ थे; परंतु अब तुमने उनको नष्ट करदिया; अब उधर केवल पांच महारथी शेष रहे हैं; अश्वत्थामा, कृतवर्मा, शल्य, कर्ण और कृपाचार्य। हे अर्जुन! यदि तुम अश्वत्थामा को गुरुपुत्र और कृपाचार्य को गुरु जानकर उनपर कृपा करो तो अपनी माता के संबंध समझकर कृतवर्मा को भी मत मारना। (७४) इसके पश्चात् अर्जुन युद्ध करने के लिये भीम के समीप गए। (७८) उत्तमौजा ने कर्ण के पुत्र सुषेण का सिर काट डाला। (८३) दुःशासन और भीम का लोमहर्षण संग्राम होने लगा। अंत में भीम की गदा की चोट से दुःशासन पृथ्वी में गिर पड़े। भीमसेन ने सभा में द्रौपदी के दुःख देने की बात स्मरण करके दुःशासन का हाथ उखाड़ लिया और फिर अपनी प्रतिज्ञा सत्य करने के लिये उसकी छाती चीर कर उसका गरम रुधिर पी लिया। इसके उपरांत उसने दुःशासन का सिर काट डाला। भीम को रुधिर पीते देखकर सब क्षत्रिय कहने लगे कि भीमसेन राक्षस है। फिर भीम ने दुःशासन के दस भाइयों के सिर काटडाले। (९०) कर्ण और अर्जुन दोनों वीरों ने अपने बाणों से आकाश पूर्ण कर दिया। परस्पर दोनों योद्धा विस्मयदायक संग्राम करने लगे। जब कर्ण की मृत्यु का समय आया; तब पृथ्वी ने "अचानक" कर्ण के रथ का चक्र पकड़ लिया। कर्णने परशुराम से जो बाण सिखा था; उसको उस समय वह भूल गए। शाप के कारण कर्ण का रथ कुंठित हो गया। कर्ण क्रोध में भर कर हाथ पटकने लगे, तथा अर्जुन के बाणों से व्याकुल होकर कांपने लगे; परंतु साहस करके वह लड़ते थे। उसके उपरांत पृथ्वी ने कर्ण के रथ के दूसरे पहिए को भी पकड़ लिया। तब कर्ण रथ से नीचे उतर हाथ से रथ के पहिए को उठाने लगे और अर्जुन से बोले कि जब तक मैं पहिए को न निकाल लूँ, तब तक तुम बाण मत छोड़ो। ऐसी अवस्था में वीर शस्त्र नहीं चलावे हैं। (९१) कृष्ण बोले, हे कर्ण! तुम्हारे समान नीच मनुष्य आपत्तिही में धर्म का स्मरण करते हैं। जिस समय तुम; दुःशासन, दुर्योधन और शकुनी ने एकवस्त्र वाली द्रौपदी को सभा में बुलाया था, तब तुमने धर्म नहीं

समझा। जब रजस्वला द्रौपदी को देखकर तुम हंसे थे, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था। कर्णने लज्जा से नीचे मुख कर लिया। इसके पश्चात् वह धनुष उठाकर घोर युद्ध करने लगे। कर्ण युद्ध करते थे और अवकाश पाकर पृथ्वी से रथ के पहिए को भी उठाने का यत्न करते थे। जब कर्ण रथ का चक्र उठा रहे थे; तब दिन के चौथे पहर में अर्जुन ने अपने वाण से कर्ण का सिर काट लिया। मद्रराज शल्य रथ को लेकर अपने डेरों में चले गए। (९५) सेनापतियों ने अपनी२ बचीहुई सेना लेकर अपने२ डेरों में गए और (९६) पांडवी सेना भी अपने अपने शिविरों में गई।

(९) शल्यपर्व—(६ वां अध्याय) दुर्योधन ने अश्वत्थामा से पूछा कि हे गुरुपुत्र! अब मैं किसको अपना सेनापति बनाऊं। अश्वत्थामा बोले कि हे राजन्! आप राजा शल्य को सेनापति बनाइए। यह बड़े कृतज्ञ हैं, क्योंकि अपने भांजों को छोड़कर हमारी ओर लड़ते हैं। (७) राजा दुर्योधन ने शास्त्रविधि के अनुसार राजा शल्य का अभिषेक किया। (८) शल्य (युद्ध आरंभ के दिन के १८ वें दिन) सर्वतोभद्रव्यूह बनाकर सिंधुदेश के घोड़ों से युक्त रथ पर बैठ युद्ध करने चले। कर्ण के पुत्रगण और मद्रदेश के प्रधान क्षत्रियों के सहित राजा शल्य व्यूह के मुख के स्थान में खड़े होगए। बांई ओर त्रिगर्तदेश के क्षत्रियों के सहित कृतवर्मा; दहिनी ओर शक और यवनवीरों के सहित कृपाचार्य; पीछे की ओर कांबोजदेशीय वीरों के सहित अश्वत्थामा और व्यूह के मध्य में प्रधान कुरुवंशीय क्षत्रियों से रक्षित होकर राजा दुर्योधन स्थित हुए। शकुनी घुड़चढ़ी सेना को लेकर अलगही युद्ध करने चला। पांडवों ने अपना व्यूह बनाकर सेना के ३ भाग किए। पहिले भाग में धृष्टद्युम्न, शिखंडी और सात्यकी; दूसरे भाग में अपने प्रधान वीरों के सहित राजा युधिष्ठिर और तीसरे में अर्जुन आदि दूसरे वीरगण खड़े हुए। उस समय निम्न लिखित सेना बची थी; कौरवों की ओर ११००० रथ, १०७०० हाथी, २००००० घुड़चढ़े और ३००००००० पैदल और पांडवों की ओर ६००० रथ, ६००० हाथी, १०००० घुड़चढ़े और १००००००० पैदल। दोनों सेना लड़ने लगी। (१०) नकुल

ने चित्रसेन आदि कर्ण के पुत्रों को मारडाला। (पांडवों की असंख्य सेना नष्ट करके) (१७) मद्रराज शल्य राजा युधिष्ठिर की शक्ति से मरकर भूमि में गिर पड़े। उसके उपरांत युधिष्ठिर ने शल्य के छोटे भाई को भी मारडाला। (१९) सात्यकी ने म्लेच्छदेश के राजा शाल्व का शिर काट लिया। (२७) अर्जुन ने कृष्णजी से कहा कि अब कौरवों की ओर शकुनी के संग के ५०० घुड़सवार, २०० रथ, १०० हाथी और ३००० पैदल बचे हैं और प्रधानों में अश्वत्थामा, कृपाचार्य, त्रिगर्तदेश के राजा सुशर्मा, उलूक, शकुनी और कृतवर्मा शेष रह गए हैं। इसके उपरांत अर्जुन ने सुशर्मा को और भीमने सुदर्शन आदि वीरों को मार डाला। (२८) कौरवों की थोड़ी सेना देखकर पांडवों की सेना के वीर प्रसन्न होकर शत्रुओं का विनाश करने लगे। सहदेव ने उलूक को मारडाला। शकुनी अपने पुत्र को मरा हुआ देखकर सहदेव से युद्ध करने लगा, जो अंत में सहदेव के बाण से मारा गया। (२९) अर्जुन ने शकुनी के संग के घुड़सवारों को मारकर पृथ्वी में गिरा दिया। दुर्योधन की आज्ञा से कौरवों की बची हुई चतुरंगिणी सेना लड़ने के लिये चली, परंतु उसके संग कोई प्रधान नहीं था, इस कारण से व्यूह नहीं बनसका। पांडवों की सेना के थोड़े वीरों ने निकल कर क्षणभर में इन सबको मारडाला। उस समय पांडवों की सेना में २००० रथ, ७०० हाथी, ५००० घोड़े और १००००० पैदल बचगए थे।

राजा दुर्योधन गदा लेकर पूर्व दिशा की ओर पैदल भागे। कौरवों की सेना में केवल कृतवर्मा, अश्वत्थामा और कृपाचार्य यह ३ सैनिक पुरुष बचे थे। सात्यकी ने संजय को मारने के लिये खड्ग निकाला, परंतु व्यासजी, के कहने से उसको छोड़ दिया। संजय हस्तिनापुर की ओर चले। एककोस आगे आकर उन्होंने देखा कि राजा दुर्योधन घावों से व्याकुल हुए अकेले चलेजाते हैं। दुर्योधन संजय से अनेक बातें करके एक तालाब में घुसगए। और जलको माया से स्तंभित करके उसमें सो गए। संजय ने आगे जाकर बाणों केघाव से व्याकुल कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा को दूर से देखा। वे लोग संजय को देख घोड़ों को तेजी से हांककर उसके निकट पहुंचे

और बोले कि हे संजय! कहो राजा दुर्योधन जीवित हैं, वा नहीं। संजय ने कहा कि राजा इसी तालाब में है। उधर रणभूमि के डेरों से दुर्योधन के मंत्री रानियों को संग लेकर हस्तिनापुर चले। स्त्रियों के रक्षकगण खच्चरों के रथों पर चढ़कर अपनी अपनी रानियों को साथले अपने अपने नगरों को चलेगए। राजा युधिष्ठिर की आज्ञा से युयुत्सु ने कौरववंशीय रानियों को हस्तिनापुर पहुंचा दिया। सूर्य अस्त होते होते वे सब नगर में पहुंचगए। (३०) इधर अश्वत्थामा तालाव के निकट जाकर बोल कि हे राजा दुर्योधन! आप आइए। मैं शपथ खाकर कहता हूं कि सोमवंशियों और पांचालों का विनाश करूंगा। उसी समय भीम के लिये मांस लाने वाला एक व्याध पानी पीने के निमित्त तालाब के समीप आया। उसने छिपकर सब बातें सुनली और भीम के निकट जाकर वहां की सब बातें कह सुनाई। भीम ने राजा दुर्योधन का पता राजा युधिष्ठिर से कहा। पांडवलोग अपनी बची हुई सेना के संग थोड़ेही समय में द्वैपायन नामक तालाब के निकट पहुंचे राजा दुर्योधन सेना को आते हुए देखकर तालाब में घुसगए; कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा वहां से चले गए और बहुत दूर जाकर एक वटवृक्ष की छाया में रथो से घोड़ों को छोड़ाकर सो रहे।

(३२ वां अध्याय) जब राजा युधिष्ठिर ने अनेक कठोर और कर्षयुक्त वचन कहा; तब राजा दुर्योधन बोले कि हे राजन्! तुमलोग वाहन और सहायकों के सहित हो; मैं अकेला वाहन रहित और थका हुआ हूं; मैं किस प्रकार से युद्ध करूंगा। धर्म के अनुसार एक एक के संग युद्ध करने में मुझको कुछ भय नहीं है। युधिष्ठिर ने कहा कि हे महावीर! मैं तुमको एक बरदान देता हूं; हमलोगों में से जिस वीर के संग तुम्हारी इच्छा हो उससे तुम युद्ध करो। दूसरे संपूर्ण लोग युद्ध देखेंगे। हमलोग पांचो भाइयों में से किसी एक को मारने से भी तुमको राज्य मिलेगा। दुर्योधन बोले कि तुमलोगों में से जो गदा युद्ध में प्रवीण हो, वह हमसे पैदल गदा युद्ध करें। (३३) कृष्ण ने कहा, हे राजन्! तुमने यह क्या किया, कि दुर्योधन को ऐसा बरदान दिया। इसने १३ वर्ष पर्यंत लोहे का भीम बना

कर उसको तोड़ने का अभ्यास किया था। तुम पांचो भाइयों में से कोई ऐसा नहीं है, जो धर्म से युद्ध करते हुए दुर्योधन को जीन सके। भीमसेन बोले कि तुम कुछ भय मत करो; हम निःसंदेह दुर्योधन को मारेंगे। ऐसा कह वह गदा लेकर खड़े होगए। (३४) उसीसमय वलरामजी तीर्थभ्रमण करते-हुए वहां आए। वह बोले कि मुझको द्वारिका से चले हुए ४२ दिन हुए। मैं अपने दोनों शिष्यों के गदा युद्ध देखने के अर्थ आया हूं। बलरामजी क्षत्रियों के बीच में बैठकर सुशोभित हुए। दुर्योधन और भीम का गदा-युद्ध होनेलगा। (५७) दुर्योधन ने भीम के शरीर में एक गदा मारी, जिस-की चोट से वह मूर्छित होकर पृथ्वी में गिर पड़े; परंतु भीम एक मुहूर्त में चैतन्य होकर सावधान हो खड़े होगए। (५८) अर्जुन के पूछने पर श्री-कृष्ण ने कहा कि भीम और दुर्योधन इन दोनों की विद्या समान है, परंतु जैसे भीम बल में अधिक हैं; वैसेही दुर्योधन भीम से अधिक चतुर और सावधान हैं। भीम धर्म युद्ध से दुर्योधन को नहीं मार सकेंगे। यदि भीम अन्याय से नहीं युद्ध करेंगे; तो अवश्यही दुर्योधन राजा होजायगा; अर्थात् भीम को मारकर राजा बनेगा। ऐसा सुनकर अर्जुन ने भीम को दिखलाकर अपनी बाईं जांघ में हाथ मारा। उस इसारे को देखकर भीम चैतन्य होगए। ज्योंही दुर्योधन भीम के शरीर में गदा मारने को उछले, त्योंही भीम ने वेग से उनकी जांघमें गदा मारी, जिस से दुर्योधन की दोनों जंघा टूटगई। वह पृथ्वी में गिर पड़े। (६०) जब भीमसेन राजा दुर्योधन के सिर पर अपना पैर रखने लगे, तब बलरामजी क्रुद्ध होकर बोले कि भीम को बार बार धिक्कार है। शास्त्र में निश्चय है; कि नाभी के नीचे शस्त्र न मारे, परंतु इस मूर्ख ने कुछ शास्त्र नहीं पढ़ा, इस कारण से इच्छानुसार काम करलेता है। ऐसा कह वह हल उठाकर भीम को मारने दौड़े। जब कृष्ण बलरामजी को पकड़कर विनय करने लगे, तब वह वहां से द्वारिका चले गए। (६१) राजा दुर्योधन क्रोधित हो उठकर कुहनी टेक करके पृथ्वी में बैठे और कृष्ण से कहने लगे, कि मुझको अधर्म से गदा युद्ध में मरा हुआ देखकर तुमको कुछ भी लज्जा नहीं होती। तुमने प्रति दिन छलकर के हमारे सहस्रों वीरों

को मरवा डाला, शिखंडी को आगे करके पितामह भीष्म को मारा, गुरु द्रोणाचार्य से शस्त्र रखवाकर उनको धृष्टद्युम्न से मरवाडाला; इंद्र ने पांडवों को मारने के लिये जो कर्ण को शक्ति दी थी, तुमने उसको घटोत्कच पर छोड़वा दी और रथ के पहिए उठाते हुए कर्ण को मरवा दिया। तुम्हारेही संमति से सात्यकी ने हाथ कटे हुए भूरिश्रवा को मारा। कृष्ण वोले, अरे पापी! तुम्हारेही पाप से सव मारे गए। तुमने भीमसेन को विष दिया; माता के सहित पांडवों को लाक्षागृह में जलाना चाहा, रजस्वला द्रौपदी को दुःख दिया; शकुनी ने तुम्हारेही कर्तव्य से द्यूत में छल से राजा युधिष्ठिर को जीता, जयद्रथ ने वन में द्रौपदी को दुःखदिया। और अनेक वीरों ने मिलकर वालक अभिमन्यु को मारा। इसी लिये हमने तुमको इस प्रकार से युद्ध में मरवाडाला। दुर्योधन ने कहा, हमने विधि पूर्वक वेद पढ़ा, पृथ्वी का राज्य किया और हम युद्ध में मृत्युप्राप्त करके स्वर्ग में जाकर अपने मित्र और भाइयों से मिलेंगे। हमारे समान महात्मा कौन है। तुमलोग शोक से व्याकुल होकर जगत में रहोगे। तुम्हारा संपूर्ण संकल्प नष्ट हो जावेंगे। ऐसा कहतेही राजा दुर्योधन के ऊपर पुष्पवृष्टि होने लगी। गंधर्व वाजे वजाने लगे। सिद्धगण दुर्योधन को धन्य धन्य कहने लगे। कुरुराज की प्रशंसा सुन कर कृष्ण आदि सव लज्जित होगए। सवलोग भीष्म, द्रोण, कर्ण, और भूरिश्रवा को अधर्म से मारने का वृत्तांत सुनकर शोक से व्याकुल हो, शोचने लगे। तव श्रीकृष्ण ने कहा कि देवताओं ने अनेक दानवों को छल से मारा है। आप लोग शोच मत कीजिए। शत्रुओं को किसी प्रकार मारनाही धर्म है। भीष्म, द्रोण, कर्ण, भूरिश्रवा और दुर्योधन को धर्म युद्ध से कोई नहीं जीत सकता।

(६२ वां अध्याय) अनंतर सव पांडव लोग दुर्योधन के डेरे में पहुंचे। वहां स्त्री; नपुंसक, और वृद्ध मंत्रियों के अतिरिक्त कोई न था। दुर्योधन के मंत्रीगण मैले और गेरुए कपड़े पहने हुए पांडवों के आगे खड़े हुए। पांडवों को दुर्योधन के डेरों में कोश, चांदी, सोना, मणि, मोती, उत्तम उत्तम आभूषण, दुशाले, असंख्य दासी दास-इत्यादि सामग्री मिली। वेलोग

अक्षय धन प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुए। कृष्ण बोले कि संपूर्णसेना आज इसी स्थान में रहें; परंतु पांचों पांडव, सात्यकी और हम मंगल के लिये डेरे से बाहर रहेंगे। इसके उपरांत ये सातो मनुष्य सरस्वती नदी के निकट चले गए। (६३) राजा युधिष्ठिर ने विचारा कि गांधारी घोर तप करती है। वह जब सुनेगी कि हमारे पुत्रों को पांडवों ने छल से मारा है, तब क्रोध करके अपने मनकी अग्नि से हमलोगों को भस्म कर देगी। उन्होंने कृष्ण से कहा, कि तुम हस्तिनापुर में जाकर गांधारी को शांत करो। कृष्ण रथ पर बैठ थोड़ेही समय में हस्तिनापुर पहुंचे और राजा धृतराष्ट्र का हाथ पकड़ कर बहुत समय तक ऊंचे स्वर से रोते रहे। इसके पश्चात् कृष्ण अनेक प्रकार से धृतराष्ट्र और गांधारी को समुझाकर पांडवों के पास लौट आए।

( ६५ वां अध्याय ) अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा राजा दुर्योधन को पृथ्वी में पड़ा हुआ सुनकर तेज घोड़ों के रथों पर बैठकर राजा के निकट आए। अश्वत्थामा ने कहा कि हे राजन्! मैं सत्य की शपथ खाकर आपसे कहताहूं कि यदि आजकी रात्रि में सब पांचालों का नाश न करूं, तो मुझे दान, धर्म आदि उत्तम कर्मों का फल न हो। आप मुझे आज्ञा दीजिए। राजा दुर्योधन की आज्ञा पाकर कृपाचार्य ने एक कलश जल लाकर अश्वत्थामा का अभिषेक किया।

(१०) सौप्तिक-पर्व—( पहिला अध्याय ) अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा तीनों वीर पांडवों के भय से वहा से भागे और सूर्यास्त होने पर एक वनमें जाकर तालाव के निकट वटवृक्ष के नीचे उतरे। कृपाचार्य और कृतवर्मा पृथ्वीमेंसो गए, परंतु अश्वत्थामा को नींद नही आई। उन्होने देखा, कि वटवृक्ष पर सहस्त्रों कौवे सोरहे हैं। उसी समय एक बड़ा उलूक नें आकर सोते हूए सहस्त्रों कौवों को मार डाला। अश्वत्थामा ने विचार किया कि इस पक्षीने हमको अच्छा उपदेश दिया। शत्रुओं को मारने का यही समय है और यही रीति है। मैं ऐसेही पांडवों का नाश करूगां। ऐसा बिचार कर उसने कृतवर्मा और अपने मामा कृपाचार्य को जगाया और अपना मनोरथ उनसे कह सुनाया।

(४) कृपाचार्य बोले, हे वीर! प्रातःकाल होने पर हम और कृतवर्मा तुम्हारे संग चलकर शत्रुओं का नाश करेंगे। (५) सोतेहुए मनुष्य को मारना धर्म नहीं है। अश्वत्थामा ने कहा, हे मामा! पांडवोंही ने पहले इस धर्म रूपी पुलको काटकर सौ टुकड़े कर दिए हैं। उन्होंने शस्त्र रहित मेरे पिताको मारडाला। अर्जुन ने रथ रहित कर्ण को मारा और शिखंडी को आगे कर के शस्त्र रहित भीष्म को मारदिया। सात्यकी ने भूरिश्रवा को व्रतमें बैठेहुए देखकर मारडाला। भीमने गदा युद्ध में अधर्म से राजा दुर्योधन को मारा। अश्वत्थामा जब उठकर रथारूढ़ हो अकेले शत्रुओं की ओर चले, तब कृपाचार्य और कृतवर्मा भी उनके संग चलने लगे, तीनों ने पांडवों की सेना के समीप जाकर देखा कि संपूर्ण वीर सो रहे हैं। (६-७) जब अश्वत्थामा वहांसे थोड़ी दूर आगे बढ़े; तब भगवान् शिवने उन को डेरावाने के लिये भयंकर भूत और बहुतेरे अपने गणोंको देखलाया, परंतु वह न डरे। जब अश्वत्थामा अपने शरीर को आहुति देने की इच्छा से जलती हुई अग्निमें घुस गये, तब साक्षात् शिव उनसे बोले, कि हे प्यारे भक्त! मुझे कृष्णने प्रसन्न किया था, इसी लिये मैं पांचालों की रक्षा कर रहा था, परंतु अब पांचालों का काल आगया। ऐसा कह कर शिव ने अश्वत्थामा के शरीर में प्रवेश किया और उनको एक तेज खड्ग दिया। अश्वत्थामा अत्यंत बलवान हो गये। सब भूत भी उनके संग चले। (८) जब अश्वत्थामा डेरों के भीतर घुसे, तब कृपाचार्य और कृतवर्मा द्वारपर खड़े रहे। अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न के डेरे में जाकर उसको एक लात मारी। जब उसने उठने की इच्छाकी, तब अश्वत्थामा ने बाल पकड़ कर उसको पृथ्वी में गिरा दिया और एक चरण उसके कंठपर और एक चरण छाती पर रखकर उसको पशु के समान मारडाला। अश्वत्थामा के जाने पर जब वहां की स्त्रियां हाहाकार करके रोने लगीं, तब सब क्षत्रिय जागे और युद्ध के लिये व्यूह (किला) बनाने लगे। सब वीर अश्वत्थामा को मारने दौड़े, परंतु उसने रुद्रास्त्र से सबको मारडाला। अश्वत्थामा ने फिर उत्तमौजा के डेरे में जाकर उन्हेंभी धृष्टद्युम्नके समान मारडाला। इसके पश्चात् उन्होंने युधामन्यु को मारकर दूसरे महारथियों के डेरों में जाकर सबको सोतेही मारडाला और किसीको कांपते हुए किसीको उठते हुए मारा। जो क्षत्रिय

डेरों में जागते थे, वह अश्वत्थामा को भूत जान आंख बंद कर लेतेथे। बचे हुए पंचाल वीर और द्रौपदी के पुत्रगण जागे। द्रौपदी के पांचो पुत्रों ने द्वार पर आकर देखा कि कृपाचार्य खड़े हैं। वे उनके ऊपर वाण वर्षाने लगे। इतने में प्रभद्रकवंशीय क्षत्रिय आपहुचें। तब शिखंडी अश्वत्थामा के ऊपर वाणवृष्टि करने लगे। इसके पश्चात् द्रौपदी के पुत्र प्रतिविंध्य, सुतसोम, शतानीक, श्रुतकर्मा और श्रुतकीर्ति एक एक अश्वत्थामा से लड़े और मारे गए। बाद अश्वत्थामा ने शिखंडी को मार डाला। इसके पश्चात् उन्होने विराट के वंशवाले; राजा द्रुपद के पुत्र, पौत्र और मित्रवर्ग जो बचेथे, सबको मारकर गिरा दिया और प्रधान प्रधान क्षत्रियों को खड्ग से काट डाला। राक्षस और भूतों के गर्जन से हाथी और घोड़े इधर उधर दौड़ने लगे। उनके दौड़ने से घोर धूल उड़ी, जिससे महाअंधकार छागया। हाथी हाथीयों के ओर घोड़े घोड़ोंकी ओर दौड़े। कोई किसी को नहीं पहचानता था। परस्पर एक दूसरे को मारते थे। हाथी और घोड़े मनुष्यों को पीस देते थे। वीर अपनेही वीरो को मारते थे। जो लड़नेको उठता था, उसको अश्वत्थामा मार डालते थे। जो क्षत्रिय अपना जीव लेकर भागता था, उसको द्वार पर कृपाचार्य और कृतवर्मा मार डालते थे। कृपाचार्य और कृतवर्मा ने डेरों में तीनो ओर आग लगादी। अश्वत्थामा ने खड्ग लेकर सहस्रों वीरों को मार डाला (९ अध्याय) अश्वत्थामा कृपाचार्य और कृतवर्मा तीनों वीर रथों पर चढ राजा दुर्योधन के निकट आए। उन्होने देखा, कि राजा मरनाही चाहते हैं। कृपाचार्य उनके मुखका रुधिर अपने हाथ से पोछकर रोदन करने लगे। अश्वत्थामा ऊंचे स्वर के रोने लगे। इसके उपरांत उसने कहा कि हे राजन्! जो अभी आप जीवित हों तो सुनिए। अब पांडवों की संपूर्ण सेना में केवल ७ मनुष्य बचे हैं, अर्थात् पांचो पांडव, छठवें कृष्ण और सातवें सात्यकी और आप को ओर हम ३ शेष हैं। मैंने आपका बदला ले लिया। द्रौपदी के पांचो पुत्र और बचे हुए संपूर्ण सैनिक मारे गए। राजा दुर्योधन अश्वत्थामा के प्रियवचन सुन चैतन्य होकर बोले, कि अब मैं अपनेको इंद्र के समान मानता हूं। तुम लोगों का कल्याण हो। ऐसा कह, दुर्योधन शांत होकर स्वर्ग को चले गए। उनका शरीर वहां पड़ा

रहा। अश्वत्थामा आदि तीनों वीर रोते हुए अपने अपने रथों में बैठ नगर की ओर चले। उसी समय सूर्योदय होने लगा।

(१० वां अध्याय) रात्रि व्यतीत होने पर धृष्टद्युम्न के सारथी ने राजा युधिष्ठिर के निकट आकर कहा कि हे राजन्! कृतवर्मा, कृपाचार्य और अश्वत्थामा ने राजा द्रुपद के पुत्रों के सहित आप के पांचों पुत्रों को मारडाला। आप की सेना में केवल एक मैंही बचा हूं। राजा ने द्रौपदी को बुलाने के लिए नकुल को भेजा। (११) नकुल उपप्लव (छावनी) से द्रौपदी को लिवा लाए। द्रौपदी बोली, हे राजन्! यदि अश्वत्थामा को इस पाप का फल नहीं दिया जायगा, तो मैं यहांही मर जाऊंगी। उसके सिर में मणि है। उसको मारकर मणि छीन लीजिए। भीमसेन नें नकुल को सारथी बनाकर अश्वत्थामा के रथ की लीक देखते हुए रथ को चलाया। इसके पश्चात् श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर और अर्जुन तीनों आदमी एकही रथ में बैठ क्षणभर में भीम के रथ के निकट आगए। सबलोग शीघ्र रथ को दौड़ाकर गंगा के किनारे पहुंचे। उन्होंने वहां देखा, कि ऋषियों के सहित महर्षि व्यास स्थित हैं और उनके समीप शरीर में घी लगाए हुए कुश की चटाई ओढ़े हुए शरीर में धूल लपटाए हुए अश्वत्थामा बैठे हैं। भीमसेन उनको देखतेही धनुष पर बाण चढ़ाकर दौड़े। अश्वत्थामा ने मंत्रबल से ब्रह्म सिर अस्त्र का आवाहन किया और पांडवों के नाश के लिये उस अस्त्र को छोड़ा। उस समय ऐसा जानपड़ा, कि आज तीनों लोक भस्म हो जायंगे। (१४) अर्जुन ने ऐसा कहकर कि पहिले हमारे गुरुपुत्र अश्वत्थामा का कल्याण हो, पीछे हमारे भाइयों का और हमारा कल्याण हो और अश्वत्थामा का अस्त्र मेरे अस्त्र से शांत होजाय, द्रोणाचार्य का बताया हुआ दिव्य अस्त्र को छोड़ा। अश्वत्थामा और अर्जुन दोनों के अस्त्र छूटकर जलने लगे। सहस्रों अपशकुन होने लगे। सब जगत भय से व्याकुल होगया। उस समय महर्षि नारद और व्यास जलतेहुए अस्त्रों के बीच में खड़े होगए और दोनों वीरों को शांत करने लगे। (१५) अर्जुन ने अपने अस्त्र को लौटा-लिया। अश्वत्थामा ने ऋषियों को अपने आगे देखकर अस्त्र लौटाने की

इच्छा की, परंतु वह शीघ्र नहीं लौटा सके। व्यास ने कहा, हे अश्वत्थामा! तुम अपने सिरकी मणि पांडवों को देदो। ये लोग तुमको छोड़ देंगे। अश्वत्थामा बोले कि मैं आप के वचन टाल नहीं सकता। यह उत्तम मणि रक्खी है, परंतु अब यह अस्त्र अभिमन्यु की स्त्री के गर्भ में जाकर गिरेगा, क्योंकि मैं इसको छोड़कर लौटा नहीं सकता। व्यास बोले, हे पापरहित! तुम अस्त्र को छोड़कर शांत हो जाओ। अश्वत्थामा ने अस्त्र को उत्तरा के गर्भ में जाने की आज्ञा दी। (१६) इसके पश्चात् वह पांडवों को अपनी मणि देकर मलीन चित्त वन को चले गए। पांडव लोग मणि लेकर अपने डेरे पर गए। राजा युधिष्ठिर ने उस मणि को अपने सिर में बांधा। (१८) श्री कृष्ण ने राजा युधिष्ठिर से कहा कि हे राजन्! शिव के क्रोध से सब का विनाश हुआ है। उन्हीं के प्रभाव से तुम्हारे सब पुत्र और साथियों सहित धृष्टद्युम्न मारेगए। आप इस कर्म को अश्वत्थामा का किया हुआ मत मानो।

(११) स्त्रीपर्व—(पहला अध्याय) संजय ने हस्तिनापुर में जाकर राजा धृतराष्ट्र से कहा कि हे राजन्! १८ अक्षौहिणी सेना मारी गई। अब आप उठकर गुरु; पुत्र; पौत्र, जाति और मित्रों का प्रेतकर्म कीजिए। ऐसा सुन राजा व्याकुल होकर पृथ्वी में गिर गए। (१०) इसके अनंतर राजा धृतराष्ट्र की आज्ञा से गांधारी, कुंती आदि कुरुकुल की स्त्रियां विविध वाहनोंपर चढ़कर रोतीहुईं कुरुक्षेत्र को चलीं। राजाने सहस्रों स्त्रियों को संग लेकर हस्तिनापुर से प्रस्थान किया। (११) राजा को एक कोश जाने पर सूर्यास्त के समय कृपाचार्य अश्वत्थामा और कृतवर्मा मिले। उन्होंने कहा कि हे राजन्! आपकी सब सेना मारी गई। केवल हमहीं तीन वीर बचे हैं। अब हमलोग यहां से भागते हैं। ऐसा कह तीनों राजा की प्रदक्षिण करके गंगाके तटपर चलेगए। वहां से कृपाचार्य हस्तिनापुर को, कृतवर्मा द्वारिका को और अश्वत्थामा व्यासजी के आश्रम में चलेगए (जहां पांडवों ने अश्वत्थामा को जीता)

(१२ वीं अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने अश्वत्थामा को जीतने के पश्चात्, सुना कि राजा धृतराष्ट्र हस्तिनापुर से चले आते हैं। तब सब पांडवों ने

आकर अपना नाम ले ले कर उनको प्रणाम किया। राजा धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को प्रीति रहित अपनी छाती से लगाया, फिर मारने की इच्छा से वह भीम को ढूँढ़ने लगे। कृष्ण भगवान ने भीम को पकड़ उनके आगे से हटा दिया और लोहे की बनी हुई भीम की मूर्ति को धृतराष्ट्र के आगे खड़ा करवा दिया। राजा धृतराष्ट्र ने उस मूर्ति को हाथों से दबा कर पीस डाला। दश हजार हाथियों के तुल्य बलवान धृतराष्ट्र जब भीम की मूर्ति को तोड़ चुके, तब वह रुधिर वमन करके पृथ्वी में गिर पड़े। जब धृतराष्ट्र का क्रोध शांत हुआ तब वह शोक से व्याकुल होकर हा भीम! हा भीम! कहकर रोने लगे। कृष्ण बोले, हे राजन्! आप शोच मत कीजिए, आपने भीम को नहीं मारा। यह लोहे की बनाई हुई भीम की मूर्ति है। (१३) तब राजा धृतराष्ट्र ने बड़े स्नेह से भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव का शरीर स्पर्श किया। (१४) इसके पश्चात् कृष्ण के सहित पांडवगण गांधारी के निकट गए। व्यासमुनि ने गांधारी को बहुत समझाया। (१५) गांधारी ने क्रोध से युक्त होकर पूछा, कि युधिष्ठिर कहां है। युधिष्ठिर कांपते हुए हाथ जोड़कर उनके पास गए। गांधारी ने उनको डरे हुए देखकर कुछ न कहा, केवल श्वास लेने लगी। जब युधिष्ठिर उनके चरणों पर गिरे, तब गांधारी ने अपने कपड़े के भीतर से उनको अपनी अंगुली दिखलाई। उसी समय युधिष्ठिर के नख बिगड़ गए। गांधारी का क्रोध शांत हुआ।

(१६ वां अध्याय) पांडवगण और कृष्ण कुरुकुल की स्त्रियों को संग लेकर युद्ध भूमि में गए। पतिरहित स्त्रियां कुरुक्षेत्र में जाकर मरे हुए अपने पति, पिता, पुत्र और भाइयों को देख व्याकुल होकर रोने लगी। जिसके शब्द से युद्धभूमि पूरित होगई। गांधारी कृष्ण को बुलाकर रोदन और विलाप करती हुई स्त्रियों की दशा उनको देखाने लगी (२५) और (संपूर्ण वीरों की दशा दिखलाकर) धीरज छोड़कर शोकाकुल हो पृथ्वी में गिर पड़ी। फिर सचेत हो कृष्ण से बोली, कि हे कृष्ण! जब कौरव और पांडव लड़कर नष्ट होते थे, तब तुमने उनको निवारण क्यों नहीं किया। तुम समर्थ बलवान् और बहुत सेवकों से युक्त होने पर भी कौरवों का विनाश

देखते रहे । इसलिये उस कर्म का फल भोगोगे। मैंने जो अपने पति की सेवारूपी तप किया हो, तो मेरा वचन सत्य होय। तुम भी अपनी जाति का नाश करोगे। अब से ३६वें वर्ष तुम अपने पुत्र पौत्र, जाति और बांधवों से हीन होकर अनाथ के समान दुष्ट उपाय से वन में मारे जाओगे। जैसे कुरुकुल की स्त्रियां रोती फिरती हैं, ऐसेही तुम्हारी स्त्रियां रोदन करेंगी। कृष्ण-भगवान हंसकर बोले, कि हे गांधारी! तुम जो कहती हो वह पहलेही हमने विचार लिया था। प्रारब्धही से यदुवंशियों के नाश का समय आ गया है। (२६) इसके अनंतर राजा धृतराष्ट्र की आज्ञा से राजा युधिष्ठिर ने दुर्योधन के पुरोहित सुधर्मा, अपने पुरोहित धौम्य तथा संजय, विदुर, युयुत्सु; इन्द्रसेन आदि सारथी और संपूर्ण सेवकों को आज्ञादी, कि तुम लोग इनसब मृतकों के प्रेतकर्म करो। तब सेवकों ने चंदन, अगरु, तगर, आदि काष्ठ और तेल, घी, रेशमी वस्त्र इकट्ठे करके, शास्त्र की विधि के अनुसार सब को क्रम से जलाया। राजा युधिष्ठिर धृतराष्ट्र को आगे करके गंगाकी ओर चले। (२७) संपूर्ण लोग गंगा में जाकर पिता, भ्राता, पुत्र, पौत्र और मित्रों को जल देने लगे। स्त्रियों ने भी अपने अपने पति तथा बांधवों को जल दिया। उस समय कुंती ने अपने पुत्रों से कहा, कि हे पांडवो! कर्ण, जिसको तुमलोग राधा का पुत्र जानते थे, तुम्हारा बड़ा भाई था। वह सूर्य के तेज से कवच और कुंडल धारण किए हुए मेरे गर्भ से उत्पन्न हुआ था, इसलिए तुमलोग उसको भी जलदो। ऐसा सुन पांडवों ने कर्ण के शोक से व्याकुल होकर उनको भी जल दिया।

(१२) शांतिपर्व—(प्रथम अध्याय) राजा धृतराष्ट्र, पांडवगण, विदुर और भरतकुल की स्त्रियों ने दुर्योधन आदि सुहृद् पुरुषों की जलदा-नादि क्रिया विधिपूर्वक किया। इसके उपरांत वे लोग एक महीने तक नगर के बाहर गंगातीर पर वास करते रहे। उसी समय महात्मा नारद, वेदव्यास आदि महर्षिगण राजा युधिष्ठिर के समीप उपस्थित हुए। (२७) राजा युधिष्ठिर बोले, हाय मैंने राज्य के लोभ से संपूर्ण स्वजनों का नाश कर के एक बारगी अपने वंश का विनाश किया है। जिसने गोद में लेकर हम

लोगों को लाड़ प्यार से पालन करके बड़ा किया था मैंने राज्य लोभ से उस भीष्म पितामह का भी वध किया है। मैंने गुरु द्रोणाचार्य के समीप जाकर जो मिथ्या वचन कहा था, कि आप का पुत्र मारा गया, उसके पाप से मेरा शरीर भस्म हुआ जाता है। मैंने अपने ज्येष्ठ भाई कर्ण का वध किया है। मुझसे बढ़कर पापी दूसरा कौन होगा। मैं पृथ्वी के संपूर्ण क्षत्रियों और गुरुजनों को नाश करके अत्यन्त अपराधी हुआ हूं। इसलिये मैं योगाभ्यास करके अपने शरीर को सुखा दूंगा। आज से मैं अनसन व्रत करके अपना प्राण त्याग करूंगा। हे महर्षिगण! आप लोग मुझको ऐसी आज्ञा देकर अपने अभिलषित स्थानों पर गमन कीजिए। राजा का ऐसा वचन सुन व्यासदेव उनको प्रबोध और उपदेश करने लगे। (३७) पश्चात् श्रीकृष्ण, अर्जुन और व्यास आदि ऋषियों के विनीत वचनों से प्रबोधित होकर राजा युधिष्ठिर ने अपना मानसिक संताप परित्याग किया। तब राजा धृतराष्ट्र गांधारी के सहित पालकी में बैठकर युधिष्ठिर के आगे आगे चले। राजा युधिष्ठिर ने चतुरंगिणी सेनाओं से घिर कर अपने भ्राताओं के सहित मंगल लक्षणा से युक्त हस्तिनापुर में प्रवेश किया।

(४० वां अध्याय) श्रीकृष्ण ने शंख ग्रहण करके युधिष्ठिर का अभिषेक किया। उसके पश्चात् कृष्ण की आज्ञा से राजा धृतराष्ट्र और सब प्रजागण जल लेकर के राजा के ऊपर अभिषेचन करने में प्रवृत्त हुई। उसके अनंतर राजा ने वेद पढ़ने वाले ब्राह्मणों को बहुत सी गौ और सुवर्ण मुद्रा प्रदान किया। (४१) राजा युधिष्ठिर ने भीम को युवराज बनाया; (४५) कृपाचार्य को पहिले की भांति अपना गुरु नियत किया; विदुर और युयुत्सु को विशेषरूप से सन्मानित किया और धृतराष्ट्र गांधारी तथा विदुर को राज्यभार सौंप कर सुख पूर्वक वह निवास करने लगे।

(५०वां अध्याय) श्रीकृष्ण, पांडवगण, कृपाचार्य, यादव और कौरवों के सहित हस्तिनापुर से चलकर उस स्थान पर पहुंचे, जहां नदी के किनारे भीष्म शर-शय्या पर शयन कर रहे थे। वे लोग भीष्म को दूरही से देखकर रथ से उतर गए और उनके निकट जाकर चारों ओर बैठ गए। कृष्ण भगवान बोले,

हे पुरुषश्रेष्ठ पितामह ! अर्थ सहित निखिल धर्मशास्त्र और पुराण आदिकों के संपूर्ण तात्पर्य आप के मन में विशेष रूप से विराजमान हैं, विशेष करके संसार में जिन विषयों के अर्थों में संशय है, उसे छेदन करने वाला आपके अतिरिक्त कोई पुरुष नहीं है; इसलिये आप अपने ज्ञान प्रभाव से राजा युधिष्ठिर का शोक दूर कीजिए। (५१) भीष्म ने कृष्ण की स्तुति की। कृष्ण बोले, हे पितामह ! जिस स्थान में गमन करने से जीवों की पुनरावृत्ति नहीं होती, मैं तुमको उसी स्थान में भेजूंगा; परंतु अभी ३० दिवस तुम्हारे जीवन का समय बाकी है। (५२) भीष्म बोले; हे मधुसूदन! मेरा शरीर बाणों की चोट से पीड़ित है और मेरी बुद्धि प्रतिभा रहित हो रही है, मैं धर्म उपदेश किस भांति करूंगा। कृष्ण बोले कि मैं आप को वरदान देता हूं, कि अब से शारीरक पीड़ा तथा दाह मूर्छा आदि किसी प्रकार की पीड़ा और पिपासा आदि क्लेश आप के चित्त को कभी दुःखित नहीं कर सकेंगे। तुम्हारे ज्ञान की प्रतिभा पूरी रीति से प्रकाशित होगी। इसके पश्चात् सूर्य के पश्चिम दिशा में जाने पर पांडवगण अपनी चतुरंगिणी सेनाओं के सहित हस्तिनापुर चले गए। (५४) दूसरे दिन सबेरा होतेही कृष्ण, राजा धृतराष्ट्र और पांडवगण, नारदादि महर्षियों के सहित भीष्म के समीप गए। (५६) राजा युधिष्ठिर ने भीष्म से प्रथम राजधर्म पूछा। भीष्म राजाओं के कर्तव्य कर्म वर्णन करने लगे। (५८) सूर्यास्त के समय सब लोग दृषद्वती नदी में यथा रीति से संध्योपासन करके हस्तिनापुर चले आए। (५९) पांडव और यादवों ने तीसरे दिन प्रातःकाल नित्यकर्मों को समाप्त करके रथारूढ़ होकर कुरुक्षेत्र में भीष्म के निकट पहुंचे। भीष्म राजा युधिष्ठिर के प्रश्नों का उत्तर देने लगे।

(६० वां अध्याय से ३६५ वां अध्याय तक) उन्हों ने राजा के विविध प्रश्नों का समाधान किया।

**(१३) अनुशासन-पर्व**—(१६६ वां अध्याय) जब (भीष्मपितामह ने राजा युधिष्ठिर से संपूर्ण धर्मशास्त्र, दान आदि कर्मों की विधि और विविध इतिहास कह चुके) समस्त राजमंडली मुहूर्त भर चुप रही, तब

बेदव्यास ने भीष्मपितामह से कहा, कि राजा युधिष्ठिर भाइयों और राजाओं के सहित प्रकृति को प्राप्त हुए हैं। अब आप इनको नगर में जाने की अनुमति दीजिए। भीष्म ने राजा से कहा कि अब तुम नगर में जाओ। सूर्य के उत्तरायण होने पर मेरे मरने के समय तुम मेरे समीप आना। राजा युधिष्ठिर धृतराष्ट्र और गांधारी को आगे कर के सब लोगों के सहित हस्तिनापुर आए। (१६७ वां अध्याय) जब सूर्य उत्तरायण में प्रवृत्त हुए, तब राजा युधिष्ठिर, राजा धृतराष्ट्र, गांधारी, कुंती और भाइयों को आगे कर के कृष्ण, बिदुर, युयुत्सु, सात्यकी इत्यादि लोगों के सहित कुरुक्षेत्र में भीष्म पितामह के निकट उपस्थित हुए और बोले कि हे पितामह ! मैं युधिष्ठिर हूं। मैं आप को प्रणाम करता हूं। इस समय जो कुछ कर्तव्य है, वह आप की आज्ञानुसार मैंने संग्रह किया है। भीष्मपितामह आखें उघार कर बोले कि हे युधिष्ठिर ! मुझको तीक्ष्ण बाणों के अग्रभाग पर शयन किए हुए ५८ रात्रि बीत गईं। यह चांद्रमास का शुक्ल पक्ष उपस्थित है। मास के तीन भाग शेष हैं। (महीने का अंतिम दिन आमावास्या है; इसी हिसाब से माघ सुदी ८ के दिन महीने का तीन भाग बाकी रहता है) अब मेरी मृत्यु का समय आ गया है। ऐसा कह भीष्म ने राजा को धर्म उपदेश दिया और कृष्ण की स्तुति की। (१६८) इसके पश्चात् उन्होंने सब अवयवों में प्राणसंयुक्त मन को निरोध करके मस्तक भेद कर स्वर्ग में गमन किया। देवता आकाश से पुष्पवृष्टि कर के दुंदुभी बजाने लगे। पांडवगण, बिदुर और युयुत्सु ने बहुतसा सुगंध युक्त काष्ठ लाकर चिता बनाई। धृतराष्ट्र आदि कौरवों ने अनेक प्रकार की सुगंधित वस्तुओं से भीष्मपितामह को आच्छादित करके चिता में अग्नि लगा कर उसकी प्रदक्षिणा की। कुरुगण भीष्मपितामह का संस्कार कर के गंगा के तट पर गए। उन्होंने विधिपूर्वक भीष्मपितामह का तर्पण किया। उस समय गंगादेवी जल से उठ कर पुत्र शोक से व्याकुल हो विलाप करने लगी। तब कृष्ण भगवान ने बहुत बातें कह कर गंगा को धीरज दिया।

(१४) अश्वमेध-पर्व—(पहिला अध्याय) राजा युधिष्ठिर भीष्म

के तर्पण करने के उपरांत शोकाकुल होकर गंगा तट पर गिर पड़े। राजा धृतराष्ट्र उनको समुझाने लगे। (२) जब युधिष्ठिर मौनभाव में ही स्थिर रहे, तब कृष्ण भगवान ने उनको बहुत समझाया युधिष्ठिर बोले, हे गदाधारी! अब तुम मुझे तपोवन में जाने की आज्ञा दो। मैं संग्राम में कर्ण और पितामह भीष्म को मार कर, इसके अतिरिक्त किसी प्रकार से शोक शांति का उपाय नहीं देखता हूं। जिस कार्य के करने से मैं इस पाप से छूटूं और मेरा चित्त पवित्र हो, तुम उसी का विधान करो। (३) व्यासदेव ने कहा; हे युधिष्ठिर! मनुष्य लोग तपस्या, यज्ञ और दान के बल से पाप कर्म से मुक्त होते हैं, इसलिये दशरथ के पुत्र राम की भांति तुम राजसूय; अश्वमेध, सर्वमेध और नरमेध यज्ञ करो। युधिष्ठिर बोले, अश्वमेध यज्ञ निःसंदेह राजाओं को पवित्र करता है, परंतु मैं महत् स्वजन वध कर के अल्पदान से पवित्र न हूंगा और बहुत दान करने के लिये मेरे पास धन नहीं है; तथा मैं आर्द्रभावयुक्त वर्तमान राजपुत्रों के समीप धन मांगने का उत्साह नहीं कर सकता हूं। मैं स्वयं पृथ्वी का विनाश कर के फिर किस प्रकार से यज्ञ के लिये राजपुत्रों से "कर" लूंगा। इस कारण से इस यज्ञ में पृथ्वी दक्षिणाही प्रथम कल्प है। व्यासदेव बोले, हे पार्थ! मरुत राजा के यज्ञ काल का ब्राह्मणों का उत्कृष्ट धन हिमालय पर्वत में विद्यमान है। तुम उसी धन को मंगा कर यज्ञ करो। (१४) राजा युधिष्ठिर ने आश्वासित होकर मानसिक शोक संताप परित्याग किया। वह हस्तिनापुर में प्रवेश करके भ्राताओं के सहित पृथ्वी शासन करने लगे। (१५) श्रीकृष्ण और अर्जुन ने विविध प्रकार की क्रीड़ा करते हुए कुछ दिनों तक इंद्रप्रस्थ में विहार किया। (५९) कृष्ण हस्तिनापुर से प्रस्थान कर द्वारिकापुरी में आए।

(६० वां अध्याय) कृष्ण भगवान कुरुक्षेत्र के संग्राम का संक्षिप्त वृतांत वसुदेव से कहने लगे, कि कुरुवंशावतंस भीष्म पितामह कौरवों की ११ अक्षौहिणी सेना के अधिपति हुए थे। पांडवों की ओर शिखंडी ७ अक्षौहिणी सेना के सेनापति हुए। अर्जुन उनकी रक्षा करते थे। संग्राम के दसवें दिन शिखंडी ने गांडीवधारी अर्जुन के सहित अनेक बाणों से भीष्म को मारा।

अनंतर द्रोणाचार्य कौरवों के सेनापति हुए। वह बची हुई ९ अक्षौहिणी सेना से युक्त हो युद्ध करने लगे। कृपाचार्य और मुख्य क्षत्रियगण उनकी रक्षा में नियुक्त हुए थे। धृष्टद्युम्न भीम से रक्षित होकर पांडवों के सेनापति हुए। कई दिशाओं से आए हुए राजागण द्रोण और धृष्टद्युम्न के युद्ध में प्रायः सब मृत्यु को प्राप्त हुए। पांचवें दिन द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गए। तब कर्ण दुर्योधन की सेना में बची हुई ५ अक्षौहिणी सेनाओं से युक्त होकर सेनापति बने। पांडवों की ओर अवशिष्ट ३ अक्षौहिणी सेना, अर्जुन से रक्षित होकर युद्ध में स्थित हुईं। दूसरे दिन अर्जुन ने कर्ण को मार डाला। तब कौरवों ने मद्रराज शल्य को ३ अक्षौहिणी सेना का अधिपति बनाया। पांडवों ने युधिष्ठिर को १ अक्षौहिणी सेना का सेनापति किया। राजा युधिष्ठिर ने अर्ध दिन तक संग्राम कर के शल्य को मार डाला। संपूर्ण सेना नष्ट हो जाने पर दुर्योधन ने भाग कर द्वैपायन ह्रद में निवास किया, जिसको भीमसेन ने गदा युद्ध में मारा। अनंतर द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने रात्रि के समय पांडवों की समस्त सेना का विनाश किया। पांडवों की ओर मैं, सात्यकी और ५ पांडव यही सात बचे और कौरवों को ओर अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा यही तीन बचे। इस प्रकार से वह युद्ध १८ दिन में समाप्त हुआ।

(६३ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर रत्न लाने के लिये अपने भाइयों सहित चले। (६४) जिस स्थान में राजा मरुत का उत्तम धन रक्खा था, वह सेना सहित वहां पहुंचे। (६५) राजा ब्राह्मणों की आज्ञानुसार शिव का पूजन कर के धन को खुदवाने लगे और अनेक प्रकार के पात्र और वस्तु अनेक प्रकार के वाहनों पर लदवाकर हस्तिनापुर को चले। इतनेही समय में श्रीकृष्ण बलदेव आदि यादवों सहित हस्तिनापुर आए। उसी समय परीक्षित उत्पन्न हुए, परंतु वे गर्भ में ब्रह्मास्त्र से पीडित होने के कारण मृतक के रूप से भूमि में गिरे। यह वृतांत सुन कृष्ण भगवान ने सात्यकी के सहित अंतःपुर में प्रवेश किया। (६६) कुंती बोली, हे कृष्ण! यह बालक अश्वत्थामा के अस्त्र से मर कर उत्पन्न हुआ है, तुम इसे जीवित करो। (६९)

जब कृष्ण जल स्पर्श कर के ब्रह्मास्त्र प्रति संहार करने लगे, तब वह बालक धीरे धीरे सचेत होकर अंग प्रत्यंग संचालन करने लगा। (७०) और जीवित हो गया। परीक्षित जब एक मास का हुआ, तब पांडव सोम रत्न लेकर हस्तिनापुर आए।

(७२ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने व्यासदेव की आज्ञानुसार यज्ञकार्य प्रारंभ किया। (७३) अश्वमेध के लिये श्यामकर्ण घोड़ा छोड़ा गया। अर्जुन घोड़े के अनुगामी हुए। प्रथम कुरुक्षेत्र के संग्राम में मरे हुए त्रिगर्त्तवासियों के पुत्र और पौत्रगण अर्जुन से युद्ध करनेलगे। वे परास्त होजाने के उपरांत अर्जुन के आधीन हुए। (७५) प्रागज्योतिषपुर में जाने पर भगदत्त का पुत्र वज्रदत्त लड़ने लगा। (७६) अर्जुन ने ४ दिनों तक वज्रदत्त के संग घोर युद्ध किया। जब वह परास्त हुआ, तब अर्जुन ने उससे कहा कि चैत्र की पूर्णिमा में धर्मराज युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ होगा; उस समय तुमको वहां आना होगा। वज्रदत्त ने यह बात स्वीकार करली। (७७) अनंतर जब अर्जुन सिंधुदेश में गए, तब सिंधुराज वंशियों के संग उनका युद्ध हुआ। (७८) अर्जुन सिंधुदेशियों को परास्त करके मणिपुर में आए। (७९) मणिपुर के राजा बभ्रुवाहन अपने पिता अर्जुन का आगमन सुन ब्राह्मण और अर्घ उपहार आगे करके उनके समीप उपस्थित हुए। अर्जुन ने उससे कहा, कि तुम क्षत्रिय धर्म से बाहर हो। मैं तुम्हारे राज्य में आया हूं। तुम क्यों हमारे साथ युद्ध नहीं करते हो। तुझे धिक्कार है। उस समय नाग-पुत्री उलूपी पाताल से आकर बभ्रुवाहन से बोली, कि हे पुत्र! तुम मुझे अपनी माता जानो, तुम अपने पिता से युद्ध करो, तब बभ्रुवाहन ने अश्वविद्या विशारद पुरुषों के सहायता से उस घोड़े को ग्रहण किया। तुमुलसंग्राम होने लगा। भयानक युद्ध होने के पश्चात् अर्जुन बभ्रुवाहन के बाणों से विद्ध होकर पृथ्वी में गिरपड़े। उसके पीछे बभ्रुवाहन भी मृत्युको प्राप्त हुआ। बभ्रुवाहन की माता चित्रांगदा रणभूमि में आकर रोदन करने लगी। (८०) चित्रांगदा ने उलूपी से कहा कि तुमने मेरे पुत्र से मेरे पति का वध करवाया है, परंतु आज यदि तुम मेरे पति को नहीं जिलावोगी, तो मैं मरजाऊंगी। उस समय बभ्रुवाहन

सचेत होकर उलूपी से बोले कि हे नागपुत्री! यदि मेरे पिता नहीं उठेंगे; तो मैं अपना शरीर त्याग दूँगा। तब उलूपी ने ध्यान करके संजीवन मणि को बुलाया। बभ्रुवाहन ने उलूपी के कथनानुसार जब अर्जुन के वक्षस्थल पर उस मणि को रक्खा। तब अर्जुन जीवित होकर जाग उठे। (८१) उलूपी ने कहा कि हे धनंजय! आप जो युद्ध में भीष्म को मारकर पाप ग्रस्त हुए थे, आज पुत्र के हाथ से पीड़ा प्राप्त होने से आप का पाप दूर होगया। शंतनुपुत्र भीष्म के मरने पर वसुगण ने गंगातट पर आकर तुमको शाप दिया था। (८२) अर्जुन वहां से लौटने पर मगधदेश में आए। मगध के राजा सहदेव के पुत्र मेघसंधि अर्जुन से युद्ध करके परास्त हुआ। (८३) अर्जुन दक्षिणदेश में जाकर घोड़े के संग विचरनेलगे। अनंतर वह घोड़ा लौटकर चेदी वालों की शुक्तिनगरी में पहुंचा। वहां अर्जुन शिशुपाल के पुत्र शरभ द्वारा युद्ध में पूजित हुए। फिर घोड़ा काशी, अंग, कोशल, किरात और तंगण देश में गया। अर्जुन ने वहां से दशार्ण देश में गमन किया। वहां वे चित्रांगद को परास्त करके निषादराज के राज्य में गए। निषादराज को जीतकर वे फिर दक्षिण समुद्र की ओर गए। वहां द्राविड़, अंध्र, माहिषक और कालगिरीय लोगों के संग अर्जुन लड़े। उन्हों ने उनको जीतकर सुराष्ट्र की ओर गमन किया। घोड़ा गोकर्ण और प्रभास में जाने के पश्चात् द्वारिका में पहुंचा। उसके उपरांत वह समुद्र के पश्चिम देश में विचारते हुए पंचनद और पंचनद से गांधारदेश में गया। (८४) अर्जुन ने गांधारदेश के शकुनी के पुत्र को परास्त किया। (८५) घोड़ा लौटकर हस्तिनापुर को चला। राजा युधिष्ठिर ने अर्जुन के लौटने की बात सुनकर भीमसेन से कहा, कि यही माघी पूर्णिमा है इसके बाद माघ बीतेगा, इसलिये यज्ञस्थान निरूपण करने के लिये तुम विद्वान ब्राह्मणों को भेजो। भीमसेन ने राजा की आज्ञानुसार कार्य किया और अनेकदेशों से आनेवाले राजाओं तथा ब्राह्मणों के लिये बहुत से गृह बनवाए। फिर उन्होंने राजाओं के पास दूत भेजा। राजालोग बहुत से रत्न, स्त्री, अश्व और अनेक प्रकार के शस्त्र लेकर हस्तिनापुर आए। राजा युधिष्ठिर दंभ त्याग कर स्वयं सबके

डेरों पर गए। (८६) श्रीकृष्ण बलदेव आदि यदुवंशियों के सहित हस्तिनापुर में आए। (८७) उसी दिन अर्जुन दिग्विजय करके हस्तिनापुर में उपस्थित हुए और राजा बभ्रुवाहन अपनी दोनों माताओं के संग कुरुगण के निकट पहुंचे। (८८) राजा युधिष्ठिर यज्ञकाल में बहुत सुवर्णदान करके भाइयों सहित निःपाप होकर आनंदित हुए। (९२) (अश्वमेध पर्व समाप्त हुआ)।

(१५) आश्रमवासिक-पर्व—(१ ला अध्याय) पाडव लोग १५ वर्ष तक धृतराष्ट्र की आज्ञानुसार सब काम करतेरहे। राजा युधिष्ठिर के मत के अनुसार पांडवलोग उनके निकट जाकर उनकी सेवा करते थे और कुंती गुरु की भांति गांधारी का संमान करती थी; परंतु धृतराष्ट्र की दुर्बुद्धि से द्यूत हुआ था, वह भीम के हृदय से दूर नहीं हुआ। भीम के अतिरिक्त सब पांडव विशेष यत्न पूर्वक धृतराष्ट्र की सेवा करते थे। (३) भीमसेन धृतराष्ट्र के किसी कार्य तथा दुर्योधन के बुरे विचार का स्मरण कर के सुहृदों के बीच ताल ठोंकते थे। एक बार भीमसेन धृतराष्ट्र और गांधारी के निकट दुर्योधन, कर्ण और दुःशासन की प्रशंसा सुन कर अत्यंत कोपित हुए और अभिमान पूर्वक कठोर वचन कहने लगे, कि महायोद्धा अंधे राजा धृतराष्ट्र के पुत्रगण मेरी परिघ सदृश भुजाओं से मारे गए। जिन भुजाओं से वे नष्ट हुए, वह परिघ सदृश ये मेरी दोनों भुजा विद्यमान हैं। जिन भुजाओं द्वारा दुर्योधन अपने पुत्र और सुहृदों सहित नष्ट हुआ, मेरी ये दोनों भुजा सुगंध चंदन से चर्चित होकर शोभित होती हैं। धृतराष्ट्र भीम के इसी प्रकार के अनेक वाक्य सुन कर परम दुःख को प्राप्त होते थे। वह १५ वर्ष बीत जाने पर अति दुःखित होकर राजा युधिष्ठिर और सुहृदों से कहने लगे, कि मैंने जो दुर्बुद्धिवस दुर्योधन को कौरवों के राज्य पर अभिषिक्त किया था; श्रीकृष्ण, विदुर, भीष्म, द्रोण, कृप, व्यासदेव, संजय और गांधारी ने उस दुर्मति दुर्योधन को मंत्रियों के सहित वध करने को जो सार्थक वचन कहा था; उसको मैंने पुत्र स्नेह से युक्त होकर नहीं सुना और पांडुपुत्रों को राज्य नहीं दिया; इसी लिये मैं इस समय दुःखित हो रहा हूं। अपरिमित वचन रूपी शल्यों को मैं हृदय में धारण करता हूं। मैं

जो समय के चौथे भाग कभी आठवें भाग में केवल तृष्णा निवारण के योग्य भोजन किया करता हूं, उसको गांधारिही जानती है। मेरे भूखे रहने से युधिष्ठिर अत्यंत दुःखी होंगे; इसी भय से मैं इस प्रकार भोजन कर के जीवन धारण करता हूं। हे युधिष्ठिर! तुम आज्ञा दो कि मैं चीर वल्कल पहिन कर गांधारी सहित वन में जाऊं। मेरी अवस्था का अंत हुआ है। मैं वन में जा कर परम तपस्या करूंगा। राजा युधिष्ठिर बोले कि हे नरनाथ! मैं अत्यंत दुर्बुद्धि, राज्यासक्त और प्रमादी हूं, इसलिये मुझको धिक्कार है; क्योंकि मैं आप को दुःखार्त, उपवास से अत्यंत कृश, जिताहारी और भूतल-शायी नहीं जान सका और आप मेरा विश्वास करके इस प्रकार दुःख भोग करते हैं। हे राजन्! आप के औरस पुत्र युयुत्सु अथवा आप जिस के लिये इच्छा करें; वही इस राज्य पर अभिषिक्त हो। मैं वन में जाऊंगा। यदि आप मुझको परित्याग कर के जायंगे, तो मैं भी आपका अनुगामी हो कर तप से परमात्मा को प्राप्त करूंगा। राजा धृतराष्ट्र बोले, हे युधिष्ठिर! तुम मुझको तप करने के लिये आज्ञा करो। इस विषय में वार वार आलो-चना करते हुए मेरा मन मलीन होता है। मुझे क्लेश देना तुम्हे उचित नहीं है। (४) वेदव्यास बोले, हे युधिष्ठिर! धृतराष्ट्र जो कहते हैं तुम उस विषय मे विचार न करके उस कार्य को पूरा करो। जिस में वृद्ध राजा इस स्थान में न मृत्यु पावें। तुम इनको वन में जाने की आज्ञा कर के मेरा वचन प्रतिपालन करो। वेदव्यास की आज्ञा को राजा युधिष्ठिर ने स्वी-कार किया।

(१९ वां अध्याय) राजा धृतराष्ट्र कार्तिकी पौर्णमासी में वेद पारग ब्राह्मणों द्वारा "उदवसनीय" यज्ञ पूरा कर के वल्कल तथा अजिन धारण कर अग्निहोत्र आगे करके निज गृह से निकले। कुरुकुल की स्त्रियों में रोदन की ध्वनि प्रकट हुई। राजा युधिष्ठिर विलाप करते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े। उसके पश्चात् अर्जुन भीम इत्यादि पांडव और धौम्य प्रभृति विप्रगण रुद्धकंठ से उनका अनुगमन करने लगे। कुंती ने नेत्र बांध कर चलने वाली गांधारी के हाथ अपने कंधे पर रख के प्रस्थान किया। राजा धृतराष्ट्र गांधारी के

कंधे पर हाथ रख के चलने लगे। (१६) संजय और विदुर भी राजा के संग वन में चले। (१८) राजा धृतराष्ट्र ने उस दिन बहुत दूर जाकर भागीरथी के तट पर वास किया और प्रातःकाल होने पर उत्तर ओर प्रस्थान किया। (१९) इसके उपरांत वे लोग कुरुक्षेत्र में पहुंचे। राजा धृतराष्ट्र जटा अजिन तथा वल्कल धारण करके तीव्र तपस्या में नियुक्त हुए। गांधारी और कुंती भी वल्कल तथा अजिन धारण करके तपस्या करने लगी। विदुर भी संजय के सहित वल्कल तथा चीर वसन धारण करके धृतराष्ट्र के निकट घोर तप करने लगे। (२०) नारदमुनि ने कुरुक्षेत्र में जाकर राजा धृतराष्ट्र से कहा कि हे राजर्षि! मैंने इंद्रलोक में इंद्र के मुख से ऐसा सुना है, कि राजा धृतराष्ट्र की परमायु अब ३ वर्ष अवशिष्ट है। उसके अनंतर वह गांधारी के सहित विमान पर चढ़कर कुवेरभवन में जायंगे।

(२२) राजा युधिष्ठिर ने भ्राताओं के सहित कुरुक्षेत्र को गमन किया। (२३) सब लोग विविध वाहनों पर चढ़ कर चले। कृपाचार्य ने सेना नायक होकर सेना सहित आश्रम की ओर प्रस्थान किया। द्रौपदी आदि स्त्रियां पालकी में चढ़ कर चलने लगीं। राजा युधिष्ठिर यमुना नदी पार होकर कुरुक्षेत्र में पहुंचे। (२४) सब लोगों ने धृतराष्ट्र के आश्रम में प्रवेश किया। राजा युधिष्ठिर ने तपस्त्रियों से पूछा, कि हमारे जेष्ठ पिता कुरवंश पति कहाँ हैं। उन्होंने कहा कि हे प्रभु! वह फूल और जल लाने तथा यमुना में स्नान करने के निमित्त इसी मार्ग से गए हैं। पांडवों ने उनके कहे हुए मार्ग से गमन किया। सब लोग धृतराष्ठ को पाकर यथायोग्य मिलने लगे। (२५) राजा धृतराष्ट्र ने पांडवों के सहित निज आश्रम में निवास किया। (२६) राजा युधिष्ठिर ने राजा धृतराष्ट्र से पूछा कि हे राजन्! विदुर कहां है। धृतराष्ट्र ने कहा कि हे पुत्र! विदुर केवल वायु पान कर के अति कृशित हुए हैं। वह किसी किसी समय इस सूने जंगल में ब्राह्मणों के द्वारा लक्षित हुआ करते हैं। जब धृतराष्ट्र ऐसा कह रहे थे, उसी समय जटाधारी अत्यंत दुर्वल दिगंबर वेष दूर से विदुर देख पड़े। राजा युधिष्ठिर घोर अलक्ष वन में प्रविष्ट विदुर के पीछे दौड़े। जब राजा

विदुर के निकट पहुंचे; तब विदुर अनिमिष नेत्र से युधिष्ठिर को देखन लगे और उन्होंने योगबल अवलंबन कर के राजा के शरीर में निज शरीर, प्राण में प्राण और इंद्रियों में निज इंद्रियों को मिला दिया। (२९) पांडवों के एकमास उस तपोवन में रहने के उपरांत वहां व्यास, नारद आदि महर्षि-गण आए। (३६) राजा युधिष्ठिर (कुछ दिनों के उपरांत) बंधुवर्ग और सैनिकों के सहित कुरुक्षेत्र से हस्तिनापुर आए।

(३७ वां अध्याय) हस्तिनापुर जाने के २ वर्ष पीछे महर्षि नारद राजा युधिष्ठिर के निकट उपस्थित हुए। वह राजा से कहने लगे कि हे पांडु नंदन! आप लोगों के हस्तिनापुर आने पर धृतराष्ट्र, गांधारी, कुंती और संजय ने अग्निहोत्र के सहित कुरुक्षेत्र से गंगाद्वार में गमन किया। धृत-राष्ट्र ने मौन हो वायुभक्षी होकर तीव्र तप आरंभ किया। ६ मास में उनकी त्वचा तथा हड्डी मात्र शेष रह गई। उसके अनंतर उन्होंने गंगा के किसी तट में जाकर स्नान किया। महा वायु प्रकट होने से उस वन में दावाग्नि उत्पन्न हुई। राजा धृतराष्ट्र योगयुक्त चित्त से गांधारी और कुंती सहित पूर्वमुख से बैठे और तीनों दावाग्नि में जल गए। संजय दावाग्नि से छूट कर गंगा तट के तपस्वियों से सब वृतांत सुना कर हिमालय पर चले गए। (३९) ऐसा सुन राजा युधिष्ठिर ने कुरुवंशियों सहित गंगा के तट जा कर राजा धृतराष्ट्र, गांधारी और कुंती को जल प्रदान किया।

(१६) **मौषल-पर्व**—(पहिला अध्याय) एक समय सारण आदि यदुवंशियों ने कण्व और नारदमुनि को द्वारिका में आए हुए देखा और सांब को स्त्री की भांति सज्जित कर के ऋषियों से पूछा, कि हे ब्रह्मर्षिगण! यह पुत्राभिलाषिणी भार्या क्या? प्रसव करेगी। ऋषिगण बोले कि यह कृष्ण का पुत्र सांब वृष्णि और अंधकों के विनाश के लिये एक मूषल प्रसव करेगा। दूसरे दिन सवेरे सांब ने मूषल प्रसव किया। राजा उग्रसेन ने मूषल का महीन चूर्ण करवा कर समुद्र में फेंकवा दिया। (२) राम और कृष्ण के अतिरिक्त प्रायः संपूर्ण यदुवंशीलोग कालप्रेरित होकर गुरुजनों का अपमान करने लगे। अनेक अशकुन होने लगे। कृष्ण ने यादवों से

कहा. कि भारत युद्ध के समय जिस प्रकार हुआ था, उसी भांति हम लोगों के विनाश के लिये आज त्रयोदशी मेंही पौर्णमासी का कार्य संपादित होता है। गांधारी ने पुत्रशोक से तप्त होकर आर्तभाव से जो शाप दिया था वही छत्तीसवां वर्ष उपस्थित हुआ है। ऐसा कह कृष्ण भगवान ने सबको तीर्थ यात्रा की आज्ञा दी।

(३) द्वारिका वासियों ने अंतःपुरचारिणी स्त्रियों के सहित तीर्थ यात्रा करने के अभिलाषी हुए। उन्होंने अनेक प्रकार की भक्ष्य, भोज्य और पीने की वस्तु तैयार कर के बहुत सा मद्य और मांस मंगाया। वे लोग सैनिक पुरुषों के सहित हाथी, घोड़े और यानों पर चढ़ चढ़ प्रभास तीर्थ में पहुंच कर सुख भोगने लगे। वहां यादवों के सैकड़ों तूर्यशब्द तथा नृत्य गीतादि युक्त महापान आरंभ हुआ। ब्राह्मणों के निमित्त जो सब अन्न पकाया गया था, उन्होंने मदमत्त होकर वह सब अन्न वानरों को प्रदान किया। राम, कृतवर्मा, सात्यकी, गद, बभ्रु आदि वीरगण कृष्ण के सन्मुखही मद्य पीने लगे। सात्यकी मतवाला होकर कृतवर्मा से बोला, कि कौन पुरुष क्षत्रिय-कुल में जन्म लेकर सोए हुए पुरुषों का वध करता है। तुमने जो कार्य किया है, यदुवंशी लोग उसको कदापि नहीं सहेंगे। प्रद्युम्न ने सात्यकी के वचन की प्रशंसा की। कृतवर्मा बोले कि जब भूरिश्रवा भुजा कट जाने पर योगयुक्त होकर बैठा था, तब तुमनें वीर होकर किस प्रकार उसका वध किया। इतनी बात सुन कृष्ण बहुत क्रुद्ध होकर तिरछे नेत्र से कृतवर्मा को देखने लगे। उस समय सात्यकी ने सत्राजित की "स्यमंतक" मणि संबंधीय सब संवाद कृष्ण को सुनाया। उसको सुन सत्यभामा क्रुद्ध होकर रोती हुई कृष्ण की गोद में गिरी। सात्यकी क्रोधपूर्वक दौड़ा, कृष्ण के सामने ही उसने कृत-वर्मा का सिर काट लिया और उसके बांधवों का वध करते हुए वह चारों ओर घूमने लगा। कृष्ण उसके निवारण करने के लिए आगे बढ़े। इत-नेही समय में भोज और अंधक वंशियों ने एकत्रित होकर सात्यकी को घेर लिया। वे उसको मारने लगे। रुक्मिणी के पुत्र सात्यकी की रक्षा के लिये युद्ध करने लगे। जब सात्यकी और कृष्ण के पुत्र यह दोनों मारे

गए, तब कृष्ण ने क्रोध कर के एक मुट्ठी "एरका" ( पटेर ) ग्रहण किया। वह वज्र सदृश लोहमय मूषल हो गया। कृष्ण ने जिसको सामने पाया उस मूषल सेही सब का नाश कर दिया। उसे देख कर अंधक, भोज, शैनीय और वृष्णि वंशीयगण उसी मूषलभूत एरका लेकर परस्पर में एक दूसरे का नाश करने लगे। उस समय संपूर्ण एरका ब्रह्मशाप के कारण वज्र की भांति सारवान हो गया, तथा समस्त तृण भी मूषल हो गए। मतवाले हो कर पिता पुत्र को और पुत्र पिता को मार कर गिराने लगें। कृष्ण नें सांब, चारुदेष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, गद आदि वीरों को हत वा आहत देखकर बचे हुए वीरों को मारडाला। (४) अनंतर कृष्ण, दारुक और बभ्रु नें वहां से राम के समीप आकर देखा, कि वह निर्जन स्थान में वृक्ष के ऊपर बैठ कर ध्यान कर रहे हैं। माधव ने दारुक से कहा कि तुम कौरवों के समीप जाकर यादवों का मृत्यु संवाद कहो और अर्जुन को शीघ्र इस स्थान में लावो। दारुक रथ पर चढ़ कौरवों के निकट हस्तिनापुर गया। कृष्ण ने बभ्रु से कहा कि तुम शीघ्र द्वारिका में जाकर स्त्रियों की रक्षा करो, जिसमें डाकूलोग धन के लोभ से उनकी हिंसा न कर सकें। उसी समय किसी व्याध के मूषल ने सहसा गिर कर बभ्रु का प्राण हरलिया। तब कृष्ण ने बलराम से कहा, कि जब तक मैं स्त्रियों को स्वजनों की रक्षा में रखकर न लौटूं, तब तक आप इसी स्थान में रहिए। कृष्ण द्वारिका में जाकर बसुदेव से बोले, कि जब तक अर्जुन नहीं आवें; तब तक आप पुर-नारियों की रक्षा कीजिए। इसके उपरांत कृष्ण नें प्रभास में जाकर देखा कि बलराम निर्जन में योगयुक्त हो कर बैठे हैं। उनके मुख से एक श्वेतवर्ण महानाग बाहर होता है। देखते देखते वह सहस्रशीर्ष नाग ने अपना मानुषी तनु परित्याग कर के समुद्र में प्रवेश किया। कृष्ण भगवान दिव्य दृष्टि के सहायता में काल की समस्त गति देख कर निर्जन वन में महा योग अवलंबन कर सो गए। उसी समय जरा नामक व्याध कृष्ण को मृग समझ बाण से विद्ध कर पकड़ने के लिये उनके निकट आया। उसने समीप पहुंचने पर जब योगयुक्त पीतांबरधारी चतुर्भुज पुरुष को देखा, तब संकित

चित्त में कृष्ण के दोनों चरणों को धारण किया। कृष्ण भगवान व्याध को आश्वासित करके निज तेजसे पृथ्वी और आकाश को परिपूरित करते हुए अपने धाम को गए।

( ६ वां अध्याय ) दारुक ने हस्तिनापुर में जाकर द्वारिका वासियों की मृत्यु का संवाद पांडवों से कह सुनाया। पांडवलोग भोज, अधंक और कुक्कुर गणों के सहित वार्ष्णेय लोगों का विनाश सुनकर अत्यंत शोक संतप्त और व्याकुल चित हुए। अर्जुन ने दारुक सहित जाकर देखा की द्वारिका नगरी नाथरहित हुई है। ( ७ ) उन्होंने उस रात्रि में कृष्ण के गृह में निवास किया। दूसरे दिन भोर होतेही वसुदेव योग अवलंबन करके उत्तम गति को प्राप्त हुए। देवकी, भद्रा, मदिरा और रोहिणी अपने पति वसुदेव की चिताग्नि में जल कर पतिलोक में गईं। अर्जुन ने प्रभास में जाकर प्रधानता के अनुसार सब मृतकों का अंत्येष्टि कार्य किया और अनुगत लोगों से बलराम और कृष्ण के शरीर का अनुसंधान करा करके उनको विधि पूर्वक जलाया। वह प्रेत कार्य पूरा करके सातवें दिन उस स्थान से बाहर हुए। वृष्णिवंशियों की स्त्रियां घोड़े, बैल, खच्चर और ऊंटों के रथों में बैठकर अर्जुन के पीछे चलीं। अंधक और वृष्णिवंशीय रथी तथा घुड़सवार आदि सेवकवृंद, बालक और बृद्धों से युक्त स्त्रियों की रक्षा के लिये उनके चारो ओर चले और पदाति तथा गजारोही पुरुष आगे पीछे चलने लगे। कृष्ण की स्त्रियां उनके प्रपौत्र बज्र को आगे करके बाहर हुईं। उनके बाहर होने पर समुद्र ने द्वारिका नगरी को जल में डुबा दिया।

अर्जुन ने बन, पर्वत तथा नदियों के तटपर निवास करते हुए एक दिन पंचनद के समीपवर्ती किसी स्थान में निवास किया। उस स्थान पर बहुत आभीर डाकू निवास करते थे। वेलोग लोभ से अंधे होकर लाठी लेकर वृष्णि वंशियों की स्त्रियों की ओर दौड़े। अर्जुन बहुत कष्ट से अपने गाण्डीव धनुष पर "रोदा" चढ़ा कर अस्त्रों का स्मरण करने लगे, परंतु कोई [illegible] लिया। [illegible] समय उनके मति में न आया। वृष्णिवंशीय रथी तथा गज- [illegible] लिये युद्ध करने लगे [illegible] यों को छीनने में समर्थ नहीं हुए। अर्जुन वृष्णिवं-

शीय सेवकों के सहित बाणों से डाकुओं को मारने लगे, परंतु वे अक्षय बाण क्षीण वीर्य होकर निष्फल होगए। डाकुगण अर्जुन के देखते देखते वृष्णि और अंधकवंशीय स्त्रियों को लेकर चले गए। अर्जुन ने बची हुई यादवों की स्त्रियों को कुरुक्षेत्र में लाकर स्थान स्थान में वास कराया और कृतवर्मा के पुत्र तथा हरने से बची हुई भोजराज के स्त्रियों को मार्तिकावृत नगर में स्थापित करके अवशिष्ट बालक, वृद्ध और स्त्रियों को इन्द्रप्रस्थ में लेगए। इन्होंने सत्यकनंदन युयुधान के पुत्र को वृद्ध और बालकों के सहित सरस्वती के तट पर स्थापित कर के अनिरुद्ध के पुत्र तथा कृष्ण के प्रपौत्र वज्र को इन्द्रप्रस्थ का राज्य प्रदान किया। रुक्मिणी, गंधारी, शैब्या, हैमवती और जाम्बवती देवी ने अग्नि में प्रवेश किया। कृष्ण की सत्यभामा आदि अनेक स्त्रियां तपस्या के लिये वन प्रविष्ट हुईं। अर्जुन ने विभाग क्रम से बहुतेरे द्वारिकावसियों को वज्र के समीप स्थापित किया।

(८ वां अध्याय) इसके पश्चात् धनंजय ने व्यासदेव के आश्रम में जाकर महर्षि से कहा, कि पांच लाख यदुवंशीय वीर परस्पर युद्ध कर के मारे गए हैं। कृष्ण से रहित होकर अब मुझे जीवन धारण करने का उत्साह नहीं होता है। वहां से अर्जुन हस्तिनापुर में आकर वृष्णि तथा अंधक वंशियों के विनष्ट होने का सारा वृतांत राजा युधिष्ठिर से कह सुनाया।

(१७) **महाप्रस्थानिक-पर्व**—(१ ला अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने वैश्यापुत्र युयुत्सु को संपूर्ण राज्य-भार प्रदान किया और परीक्षित को निज राज्य पर अभिषिक्त करके उनको शिष्य रूप से कृपाचार्य के हाथ में सौंप दिया।

राजा युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रौपदी और एक कुत्ते के सहित तपस्वी वेष से नगर से बाहर हुए और पूर्व की ओर चलने लगे। वे लोग अनेक जनपद, सागर तथा नदियों को अतिक्रमण करके जाते जाते उदयाचल के निकट लौहित्य समुद्र के तट पर पहुंचे। वहां से उन्होंने दक्षिण ओर गमन किया। इसके पश्चात् वे लोग लवण-समुद्र के किनारे चलते हुए दक्षिण जाकर, दक्षिण से पश्चिम में जाकर द्वारिका में पहुंचे।

इसी प्रकार से पांडवगण पृथ्वी की प्रदक्षिणा करते हुए पश्चिम से उत्तर को चल कर (२) हिमवान पर्वत को लांघने के उपरांत सुमेरु पर्वत के निकट उपस्थित हुए। जब वे लोग शीघ्रता से सुमेरु पर चढ़ रहे थे, इतनेही समय में द्रौपदी योगभ्रष्ट होकर पृथ्वी में गिर पड़ी। जब भीमसेन ने द्रौपदी के गिरने का कारण पूछा, तब राजा युधिष्ठिर ने कहा कि हम सब लोगों के तुल्य होने पर भी अर्जुन के ऊपर विशेष रीति से इसका पक्षपात था। यह उसी फल को आज भोगती है। युधिष्ठिर आगे चलने लगे। इतनेही समय में सहदेव पृथ्वी में गिरे। तब युधिष्ठिर ने भीम से कहा कि यह किसी पुरुष को अपने समान प्राज्ञ नहीं समुझता था, उस दोष से यह इस जगह गिरा है। जब राजा आगे चलने लगे; तब नकुल शोक से पीड़ित होकर पृथ्वीतल में गिर पड़े। जब भीमसेन ने इसका कारण पूछा, तब राजा बोले कि नकुल सर्वदा अहंकार करते थे; कि तीनों लोक में मेरे समान रूपवान कोई नहीं है। यह इस समय इसी गर्व के कारण गिरा है। द्रौपदी और भाइयों को इस प्रकार गिरते हुए देख कर अर्जुन शोक से संतापित होकर गिर पड़े। भीम ने राजा से पूछा कि किस कर्म विकार से यह पृथ्वी में गिरा है। युधिष्ठिर बोले कि अर्जुन ने कहा था कि मैं एकही दिन में शत्रुओं को जला दूंगा, परंतु उस कार्य को पूरा न किया, इस समय उस मिथ्या प्रतिज्ञा के कारण से वह गिरा है। विशेष करके यह सदा दूसरे धनुर्द्धारियों की "अवज्ञा" करता था। उसके गिरने का दूसरा कारण यह भी है। इतना कह कर जब राजा चलने लगे; तब उसी समय भीमसेन गिर पड़े और गिरते गिरते उसने युधिष्ठिर से पूछा, कि मैं किस निमित्त गिरता हूं। राजा बोले, हे पार्थ! तुम बहुत सा भोजन करते और दूसरे के बल को नहीं देख कर सदा अपने बल की बड़ाई करते थे। इसीलिये पृथ्वी में गिरे हो। इतनी बात कह कर राजा युधिष्ठिर चलने लगे उस समय एक मात्र कुत्ता उनके पीछे चलने लगा। (३) इन्द्रने वहां आकर राजा युधिष्ठिर को रथ में चढ़ने को कहा। युधिष्ठिर बोले, हे सुरेश्वर! मेरे भ्रातागण इस स्थान में गिरे हुए हैं। इनसे रहित होकर मुझको स्वर्ग जाने की इच्छा

नहीं है। इन्द्र बोले की तुह्मारेभाई गण शरीर परित्याग करके द्रौपदो के सहित तुमसे पहलेही सुरलोक में गए हैं। तुम इस शरीर से ही स्वर्ग में जाओगे। राजा बोले, यह कुत्ता मेरा भक्त है। इसको अपने संग स्वर्ग में लेजाऊंगा। इन्द्र बोले, जिनके पास कुत्ता रहता है; उन अपवित्र लोगों को स्वर्ग में स्थान नहीं मिलता। युधिष्ठिर ने कहा कि मैं ऐसे शरणागत भक्त को किसी प्रकार परित्याग नहीं करूंगा। उस समय धर्मरूपी भगवान ने ( जो कुत्ता बने थे ) युधिष्ठिर के वचन से प्रसन्न होकर उनकी प्रशंसा की। राजा युधिष्ठिर, इन्द्र, धर्म आदि देवताओं सहित रथारूढ़ होकर स्वर्ग में जा पहुंचे।

( १८ ) स्वर्गारोहण-पर्व—( १ ला अध्याय ) धर्मराज युधिष्ठिर ने "त्रिविष्टप" में जाकर दुर्योधन को दोप्यमान दिवाकर की भांति आसन पर बैठे हुए देखा। तब वह देवतों से बोले की मैं लोभी दुर्योधन के संग स्वर्ग में वास नहों करूंगा। मेरे भ्रातालोग जिस स्थान में हैं, मैं वहीं जाने को इच्छा करता हूं। कर्ण, धृष्टद्युम्न, सात्यकी, धृष्टद्युम्न के पुत्रगण और जो सब राजा क्षत्रियधर्म के अनुसार शस्त्रों से मरे हैं, वे कहां हैं। ( २ ) देवताओं ने देवदूत से कहा, कि तुम युधिष्ठिर के सुहृदों को दिखाओ।

राजा युधिष्ठिर ने देवदूत के संग जाकर यमयातना से पीड़ित जीवों को देखा। राजा ने उनसे पूछा कि तुम कौन हो, तब वे लोग चारो ओर से कहने लगे; मैं कर्ण, मैं भीम, मैं अर्जुन, मैं नकुल मैं सहदेव, मैं द्रौपदी हूँ हमलोग द्रौपदी के पुत्र; हैं। राजा युधिष्ठिर शोक दुःख से युक्त और चिंता से व्याकुल होकर धर्म और देवताओं की निंदा करने लगे और देवदूत से बोले, कि तुम जिनके दूत हो, उनके समीप जाओ। मैं वहां न जाऊंगा। इसी स्थान में निवास करूंगा। तब देवदूत ने इन्द्र के समीप जाकर राजा युधिष्ठिर का वचन कह सुनाया। ( ३ ) युधिष्ठिर के मुहूर्त भर निवास करने के पीछे सब देवता इन्द्र को आगे कर के राजा युधिष्ठिर के समीप आए। मूर्तिमान धर्म वहां समागत हुए। उस समय

राजा ने देखा, कि नरक का संपूर्ण सामान वहां से अदृश्य हो गया है। इंद्र बोले हे राजन्! तुमने छल पूर्वक द्रोणाचार्य का वध कराया था। इसी लिये मैंने छल क्रम से तुमको नरक दिखाया है। तुमने जिस प्रकार कपट नरक देखा, उसी प्रकार माया के भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, और द्रौपदी झूठे नरक में तुमको देख पड़ी थी। तुम शोक परित्याग कर के अपने भाइयों और स्वपक्ष के राजाओं को स्वर्ग में निज निज स्थान में देखो। मूर्तिमान साक्षात् धर्म ने युधिष्ठिर से कहा कि हे पुत्र! मैंने यह तीसरी बार तुह्मारी परीक्षा की है। मेरी प्रथमपरिक्षा द्वैतवन में ब्राह्मण के "अरणी" के निमित्त और दूसरीपरिक्षा द्रौपदी और सहोदर भाइयों के विनष्ट होते रहने पर हुई थी। मैंने वहां कुत्ते के रूप को धर कर तुह्मारी परीक्षा की थी। यह नरक देखना मेरी तीसरी परीक्षा है। अब आवो; गंगा को देखो। तब राजा युधिष्ठिर ने गंगा में स्नान कर के मानुषी मूर्ति परित्याग की और दिव्यदेहयुक्त तथा संताप रहित होकर वह सुशोभित होने लगे। (४) इसके पश्चात् राजा युधिष्ठिर देवताओं के संग वहां गए, जहां ऋषियों के सहित कुरु पांडव गण निवास करते थे। उन्होंने वहां कृष्ण का दर्शन किया और कर्ण, भीम आदि अपने भाइयों, द्रौपदी और अन्य संपूर्ण मृत संबंधियों को देखा॥

(५) निम्न लिखित लोग नीचे लिखे हुए देवतों में लीन हुए थे। भीष्म आठो वसुओं में; द्रोणाचार्य बृहस्पति में; कृतवर्मा मरुत गण में; प्रद्युम्न सनत्कुमार में; धृतराष्ट्र और गंधारी कुबेरलोक में; पांडु अपनी दोनों स्त्रियों के सहित महेंद्रलोक में, विराट, द्रुपद, धृष्टकेतु, निशठ, अक्रूर, सांब, भूरिश्रवा, कंस, उग्रसेन, वसुदेव, उत्तर आदि विश्वदेवगणों में; अभिमन्यु चंद्रमंडल में; कर्ण सूर्यमंडल में, धृष्टद्युम्न अग्नि में, धृतराष्ट्र के पुत्रगण स्वर्ग में; विदुर और युधिष्ठिर धर्म में; बलराम रसातल में, श्रीकृष्ण नारायण में। कृष्ण की सोलह हजार स्त्रियां काल क्रम से सरस्वती नदी में डूबीं और शरीर छोड़ कर सुरपुर में गईं। वहीं अप्सरा होकर कृष्ण के निकट प्राप्त हुईं। घटोत्कच आदि वीर देवताओं तथा यक्षों में प्राप्त हुए। दुर्योधन

के सहायक राक्षसों ने महेंद्र के भवन और कुवेर और वरुण के स्थान में प्रवेश किया था। (६) स्वर्गारोहण पर्व समाप्त हुआ।

**संक्षिप्त-प्राचीन कथा**—विष्णुपुराण—(५ वां अंश ३५ अध्याय) कुरुवंशी राजा दुर्योधन की कन्या का स्वयंवर हुआ। जाम्बवन्ती का पुत्र सांव जव वल से उस कन्या को ले भागा। तव भीष्म, दुर्योधन, कर्ण आदि ने सांव को जीत कर वांध लिया। यह समाचार पाकर यदुवंशीगण जव युद्ध का प्रवन्ध करने लगे, तव वलरामजी उनको शांत करके सांव को छोड़ाने के लिये अकेले हस्तिनापुर गए। जव वलदेवजी के समुझाने पर कुरुवंशियों ने सांव को नहीं छोड़ा, तव उन्हों ने क्रोध करके अपने हल को हस्तिनापुर की शहरपनाह मे लगाया और उसको गंगा की ओर खींचा। जव वह नगर कड़कड़ा कर नदी की ओर झुका; तव कौरवों ने वलदेवजी के चरण पर गिर कर उनसे क्षमा मांगा। वलदेवजी ने नगर को छोड़ दिया। हस्तिनापुर अव भी गंगा की ओर झुका हुआ वलरामजी का पराक्रम सूचित करता है। यह कथा आदि ब्रह्मपुराण के (९६ अध्याय में भी है)

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध-६८ वां अध्याय) जव स्वयंवर से राजा दुर्योधन की कन्या लक्ष्मणा को सांव ले भागा, तव कौरवों ने उसको जीत कर वांध रक्खा। वलदेवजी ने हस्तिनापुर में आकर कौरवों को समुझाया, जव उन्होने वलदेवजी के वचन का निरादर किया, तव उन्होंने हलके अग्रभाग से हस्तिनापुर को उखाड़ कर गंगा की ओर खेंचा। जव नगर नौका के समान भ्रमण करता हुआ गंगा में गिरने लगा, तव कौरवगण लक्ष्मणा सहित सांव को आगे करके वलरामजी के शरण में आये। अव तक हस्तिनापुर वलरामजी के पराक्रम को जनता हुआ दक्षिण की ओर से गंगाजी में झुका दिखाई देता है।

(९ वां स्कंध २२ वां अध्याय) राजा परीक्षित के पश्चात् इस क्रम से पांडुवंशीय राजा होंगे। (१) जनमेजय, (२) शतानीक, (३) सहस्रानीक, (४) अश्वध्वज, (५) असीमकृष्ण, (६) नेमीचक्र, (७) उप्त, (८) चित्ररथ, (९) कविरथ, (१०) वृष्णिमान, (११) सुषेण, (१२)

सुनीथ, (१३) नृचक्षु, (१४) सुखीनल, (१५) परिप्लव, (१६) सुनय; (१७) मेधावी, (१८) नृपंजय, (१९) ऊर्व, (२०) तिमि, (२१) बृहद्रथ, (२२) सुदास, (२३) शतानीक, (२४) दुर्मन, (२५) वहीनर, (२६) दंडपाणि, (२७) दनेमि और (२८) क्षेमक। नेमीचक्र के राज्य के समय हस्तिनापुर गंगा में डूबजायगा, तब वह राजा कौशांवी नगरी में निवास करेगा। क्षेमक के पश्चात् यह वंश समाप्त होजायगा।

मत्स्यपुराण—(५० वां अध्याय) राजा परीक्षित के पीछे इस क्रम से पांडुवंशी राजा होंगे। (१) जनमेंजय, (२) सतानीक, (३) अधिसोम-कृष्ण, (४) विवक्षु, (५) भूरि, (६) चित्ररथ, (७) सुचिद्रव, (८) बृष्णिमान, (९) सुषेण, (१०) सुनीथ, (११) नृचक्षु, (१२) सुखीवल, (१३) परिप्णव, (१४) सुतपा, (१५) मेधावी, (१६) पुरंजय, (१७) ऊर्व, (१८) तिग्मात्मा, (१९) बृहद्रथ, (२०) वसुदामा, (२१) शातानीक, (२२) दयन, (२३) वहीनर, (२४) दंडपाणि, (२५) निरमित्र और (२६) क्षेमक। जब हस्तिनापुर नगर को गंगा बहा ले जायगी, तब राजा विवक्षु हस्तिनापुर छोड़ कर कौशांवी में बसेगा। राजा क्षेमक के पश्चात् यह बंस नष्ट हो जायगा।

---

# ग्यारहवां अध्याय।

## (पंजाब में) जगाद्री, नाहन, अम्बाला, थानेसर वा कुरुक्षेत्र, कर्नाल, पानीपत और शिमला।

### जगाद्री।

सहारनपुर से १३ मील पश्चिम यमुना नदी पर रेल का पुल है। यमुना पश्चिमोत्तर प्रदेश और पंजाव की सीमा है; इससे पश्चिम पंजाब देश है।

यमुना से ५ मील पश्चिमोत्तर ( सहारनपुर से १८ मील ) जगाद्री का रेलवे स्टेशन है। रेलवे से तीन मील उत्तर पंजाब के अंबाले जिले में तहसीली का सदरस्थान जगाद्री एक कसबा है, जिसके निकट यमुना की पश्चिमी नहर पर रेलवे का पुल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जगाद्री में १३०२१ मनुष्य थे; अर्थात् १६९१० हिन्दू, ३०६७ मुसलमान, १८७ जैन, १६० सिक्ख, ४ कृस्तान और १ पारसी।

जगाद्री में तहसीली और पुलिस स्टेशन है; तांवा और लोहा निकट के पहाड़ियों और कलकत्ते तथा वंबई से आते हैं; इनसे बहुत दस्तकारी होती है। इनके अतिरिक्त यहां सुन्दर लंप और पीतल के वर्तन वनते हैं। सोहागा पहाड़ियों स लाकर वंगाल में भेजा जाता है।

## नाहन।

जगाद्री से पचीस, तीस, मील उत्तर और शिमले से लगभग ४० मील दक्षिणदेशी राज्य सिरमौर की राजधानी नाहन है। जगाद्री से नाहन को सड़क गई है। नाहन वरावर पत्थरिली ऊंचाई पर छोटा कसवा है, जिसमें पत्थर के छोटे छोटे मकान वने हैं। कसवे में राजा का वड़ा मकान है। कसवे के वाहर ७ वा ८ मकान यूरोपियन ढंग के वने हुये हैं। अव राजा ने एक सुंदर उद्यान में एक उत्तम मकान वनवाया है। कई एक सुंदर मकान यूरोपियन अफसर और महेमानों के रहने के लिये वनाए गए हैं। इनके अतिरिक्त नाहन में २ सराय, १ डाक बंगला, १ अस्पताल, १ स्कूल, १ नई छावनी और वड़ा वाजार है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नाहन में ९३७ मकान और ५२५३ मनुष्य थे; अर्थात् ४१४५ हिन्दू, ९८५ मुसलमान, १०२ सिक्ख, ५ जैन और १६ दूसरे।

**सिरमौर-राज्य**—इस राज्य की राजधानी नाहन है, इसलिये बहुधा

लोग इसको नाहन राज्य भी कहते हैं। पंजाब की पहाड़ी रियासतों में यह राज्य प्रथम श्रेणी में है। इस राज्य के पूर्व यमुना और "टोस" नदियां, बाद पश्चिमोत्तर देश के देहरादून जिला; दक्षिण पश्चिम अंबाला जिला और "कलसिया" राज्य के कई भाग; पश्चिमोत्तर पटियाले और "क्योंथल" के राज्य और उत्तर "बलसन" और जब्बल पहाड़ी राज्य हैं। यह राज्य समुद्र के जल से १२००० से १५००० फीट तक ऊपर, उत्तर से दक्षिण को ढालू है, जिसका क्षेत्रफल १०७७ वर्गमील है।

राज्य के पूर्वोत्तर भाग में राजावन है, जिसमें शाल की उत्तम लकड़ी होती है और कभी कभी खंदकों में हाथी फंसाए जाते हैं। कलसी की खान से पहिले तांबा निकाला जाता था, फिर राज्य में एक सीसे की खान खुली है और लोहा का "ओर" बहुत है। कई एक स्थानों में छत्त बनाने के लिये स्लेट निकाला जाता है। सघन वनों में हाथी, बाघ और भालू बहुत हैं। राज्य का प्रधान पैदावार गल्ले और अफियून है। उत्तम भेड़ों के लिये यह राज्य प्रसिद्ध है।

अधिक मकान दो मंजिले तीन मंजिले पत्थर से बने हुए हैं, जो खास करके स्लेट से और कुछ कुछ लकड़ी के तख्ने से छाए गए हैं। बस्तियां साधारण तरह से पहाड़ियों के ढालू सिरों पर बसी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय इस राज्य के २०६९ गावों में २६८७२ मकान और ११२३७१ मनुष्य थे; अर्थात् १०७६३४ हिन्दू, ४२४० मुसलमान, ४६८ सिक्ख, २१ कृस्तान और ८ जैन। मैदान में ब्राह्मण बहुत हैं और पहाड़ियों में नीचे दरजे के राजपूत "कानेट" जाति बहुत बसते हैं; जो स्त्रियों को मोल लेते हैं और विधवा विवाह करते हैं।

राज्य से लगभग २१०००० रुपए मालगुजारी आती है। राजा को खिराज नहीं देना पड़ता है; इनका सैनिक बल ९५ सवार, ३०० पैदल, १० मैदान की तोपें और २० गोलंदाज हैं। सिरमौर के राजाओं को अंगरेजी सरकार की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है।

**इतिहास**—सिरमौर का पहला राजा "सैलाब" में बह गया। सन् १०९५

ई० में जैसल मरे। राजवंश के अगरसेन रावल सिरमौर की खाली गद्दी पर राजा बना, जिसके वंशधर सिरमौर के वर्तमान राजा सर शमशेरप्रकाश बहादुर जी. सी. एस. आई. हैं; जिनका जन्म सन् १८४३ ई० में हुआ था। सन् १८०५ में गोरखों ने इस राज्य को ले लिया था, परंतु सन् १८१५ ई० में अंगरेजों ने गोरखों को निकाल कर सिरमौर का राज्य यहां के राजा को दे दिया।

# अंबाला।

जगाद्री से ३२ मील (सहारनपुर से ५० मील) पश्चिमोत्तर अंबाला छावनी का रेलवे जंक्शन और ३७ मील अंबाले शहर का रेलवे स्टेशन है। अंबाला शहर पंजाब में किस्मत और जिले का सदर स्थान समुद्र के जल से १०४० फीट ऊपर "गागरा" नदी के ३ मील पूर्व (३०. अंश २१ कला २५ विकला उत्तर अक्षांश; ७६ अंश ५२ कला १४ विकला पूर्व देशान्तर) में है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अंबाला शहर और इसकी फौजी छावनी में ७९२९४ मनुष्य थे (४७५११ पुरुष और ३१७८३ स्त्रियां), अर्थात् ४०३३९ हिन्दू, ३०५२३ मुसलमान, ४८९१ क्रस्तान, २४०७ सिक्ख, १११११ जैन, ६ पारसी और १ दूसरा। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ३७ वां और पंजाब में ५ वां शहर है।

अंबाले शहर में देशी दुकानों के अतिरिक्त कई एक यूरोपियन दुकानें, २ गिर्जे, १ बीमारखाना, १ खैराती दवाखाना, १ कोढ़ीखाना और नये और पुराने दो महल्ले हैं। नये महल्ले में चौड़ी सड़कें और अच्छे अच्छे मकान बने हैं। अंबाले में रूई, गल्ला, तेलहन, सोंठ, दरी, कपड़े और लोहे की बड़ी तिजारत होती है।

शहर और छावनी के बीच में सिविल स्टेशन है, जिसमें कचहरी के मकानो के अतिरिक्त खजाना, जेल और स्कूल भी हैं।

शहर से ४ मील दक्षिणपूर्व फौजी छावनी ७२२० एकड़ भूमि पर फैली हुई है, जो सन् १८४३ ई० में नियत हुई थी। इसमें उत्तम सड़कें और

सुंदर बंगले बने हैं; पश्चिम भाग में फौजी लाइन हैं, जिसमें मामूली तरह से आर्टिलरी के ३ बैटरी; १ यूरोपियन रेजीमेंट, १ देशी सवार का रेजीमेंट, १ यूरोपियन पैदल रेजीमेंट और देशी पैदल का रेजीमेंट रहती है।

अंबाला छावनी के रेलवे स्टेशन से दक्षिण कुछ पूर्व २६ मील थानेश्वर और १२३ मील दिल्ली; पूर्वोत्तर ३९ मील शिमला के नीचे कालका; पश्चिमोत्तर ७१ मील लुधियाना और १०६ मील जलंधर और पूर्व दक्षिण ५० मील सहारनपुर है।

**अंबाला जिला**—इस जिले के पूर्वोत्तर हिमालय; उत्तर सतलज नदी; पश्चिम पटियाला का राज्य और लुधियाना जिला और दक्षिण कर्नाल जिला और यमुना नदी है। जिले का क्षेत्रफल २५७० वर्गमील है।

सतलज और यमुना जिले की सीमा पर और अन्य बहुतेरी छोटी नदियां जिले के प्रत्येक भाग में बहती हैं। गागरा अर्थात् दृषद्वतीनदी नाहन-राज्य से निकलकर इस जिले के कोताहा परगने को लांघकर पटियाले के राज्य में जाती है। अंबाले और कालका के बीच में गागरा नदी पर रेलवे का पुल है। वर्षा ऋतु में डाक हाथियों पर जाती है।

सरस्वती गागरा की "सयाक" नदी है, जो एक समय बहुत प्रसिद्ध नदी थी, यह अंबाले जिले की सीमा से बाहर नाहन राज्य के नीची पहाड़ियों में निकलती है और अंबाले जिले के जाधवदरी के मैदान में प्रकट होती है, कई बार बालू में गुप्त होने के उपरांत दक्षिण पश्चिम की ओर बहती है और कर्नाल को लांघने के पश्चात् पटियाले के राज्य में गागरा में मिल जाती है।

पश्चिमी यमुना नहर इस जिले में हाथी कुंड के निकट से निकली है। जिले में कई एक बड़े बन हैं, जिनमें से कालेशर जंगल बहुत प्रसिद्ध है, यह १३९१७ एकड़ में फैला हुआ, बहुमूल्य शालवृक्षों से परिपूर्ण है। बनों में भालू, बाघ, हुंडार आदि बनजंतु बहुत रहते हैं। अंबाले जिले में पवित्र सरस्वती नदी के आस पास और कई एक कसबों में समय समय पर पर्व और मेले हुआ करते हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के जगाद्री में १३०२१, शाहाबाद में ११४७३; सधौरा में १०४४५ और रूपड़,

बुरिया और थानेसर में इनसे कम मनुष्य थे। इस जिले में चमार पुरतहा पुश्त से कुंभार का काम करते हैं; अर्थात् मट्टी के बर्तन बनाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अंबाले जिले में १०३३३६१ मनुष्य थे, इनमें लगभग एक तिहाई मनुष्य मुसलमान हैं। इस जिले में राजपूत, ब्राह्मण, जाट इत्यादि जातियों में भी बहुत मुसलमान हैं। जिनकी फिहरिस्त नीचे दीजाती है। जैसे मुसलमानी नाई, मुसलमानी धोबी इत्यादि होते हैं, वैसही पंजाब में राजपूत इत्यादि बहुत जाति मुसलमान हैं। वे लोग मुसलमानों के राज्य के समय हिंदू से मुसलमान होगए थे। इनकी जाति प्रथमही की रहगई; मजहब मुसलमानी हो गया। इनका विवाह अपनी जात के मुसलमान या दूसरे मुसलमानों से भी होता है। मनुष्य-गणना के समय जहां जाति लिक्खी जाती है, वहां हिंदू, मुसलमान तथा सिक्ख तीनों तरह के राजपूत राजपूतही में लिखे जाते हैं, परंतु जहां मजहब लिखा जाता है, वहां हिंदू राजपूत हिंदू में, मुसलमान राजपूत मुसलमान में और सिक्ख राजपूत सिक्ख में लिखाते हैं, इसी प्रकार जाट आदि दूसरी जात के लोग भी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नीचे लिखी हुई जातियों में इस प्रकार से हिंदू, मुसलमान और सिक्ख लिखे गए थे।

| जाति- | संख्या | हिंदू- | मुसलमान- | सिक्ख |
|---|---|---|---|---|
| जाट | १७१२५७ | १११५४९ | १२४२९ | ४७२७९ |
| चमार | १४०७५१ | १३०३४९ | ४ | १०३९८ |
| राजपूत | ९२०३३ | २२६०८ | ६९२२२ | २०३ |
| ब्राह्मण | ६५०३५ | ६४३९६ | ३१६ | ३२३ |
| साइनी | ६३०५४ | ६१३४६ | ७२० | ९८८ |
| गूजर | ५१०७७ | २५४०८ | २५६१४ | ५५ |
| झिनवार | ४७१०४ | ४४०३० | १९८२ | १०९२ |
| चुहरा | ४१७५५ | ४०८७१ | ३१ | ८५३ |
| बनिया | ४००६९ | ३९०३४ | ० | ८३ |
| अरायन | ३०८८१ | ३३६ | ३०५४५ | ० |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तरखान | २५२६५ | १९०९४ | ४६१० | १५६१ |
| जुलाहा | २४९३१ | ३३०० | २१५२४ | ११७ |
| तेली | १७५७७ | १७७ | १७४०० | ० |
| लोहार | १६५५० | ९०६६ | ७१४३ | ३४१ |
| कुंभार | १५५९८ | १२८०८ | २६२९ | १६१ |
| नाई | १४९३२ | १०६०९ | ३९७१ | ३५२ |
| कंबोह | १२९८८ | १०१०६ | ११६५ | १७१७ |
| खली | ८१५४ | ७६६८ | ५ | ४८१ |
| सोनार | ७३२३ | ६६४८ | ५७३ | १०२ |
| गड़ेरिया | ६६७१ | ६६७१ | ० | ० |

इतिहास—अंबाले जिले और इसके पड़ोस में सरस्वती और गागरा (दृषद्वती) के बीच की भूमि आर्यधर्म का पवित्र स्थान है। सरस्वती में स्नान करने के लिये सब प्रदेशों से धार्मिक लोग आते हैं, इसके किनारों पर अनेक तीर्थ स्थान बने हैं; थानेश्वर और पोहवा इनमें प्रधान स्थान हैं। इसी देश में कौरव और पांडवों का बड़ा युद्ध हुआ था।

चीन का हुएंत्संग ने, जो सन् ६२१ ई० से ६४५ तक भारतवर्ष में रह गया था, एक राजा के आधीन, जिसकी राजधानी जगाद्री के निकट श्रुगना में थी, इस देश को देखा था। अंबाले के चारो ओर का देश गजनी और गोर के खानदानों के हाथ में आया था। सन् ई० के चौदहवीं शताब्दी में अंबा नामक राजपूत ने अंबाले शहर को बसाया। "अकबर" के आधीन अंबाला जिला सरहिन्द सुबाहट का हिस्सा बना। सन् १८०८ ई० तक यह प्रसिद्ध नहीं था। सन् १८०९ में अंगरेजी सरकार ने महाराज रणजीत सिंह से संधि कर के सतलज के इस पार के राजाओं को स्वतंत्र बनाया। सन् १८२३ में अंबाले के राजा गुरुबक्ससिंह की बिधवा दयाकुंअरी के मरने पर अंगरेजी सरकार ने अंबाले को अपने राज्य में मिला लिया। सन् १८४३ में अंबाले में फौजी छावनी बनी। सन् १८४१ में, जब

पंजाब अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया, अंबाला एक जिले का सदर स्थान बना।

# थानेसर ( कुरुक्षेत्र )

अंबाला जंक्शन से २६ मील दक्षिण थानेसर का रेलवे स्टेशन है। थानेसर पंजाब के अंबाले जिले में पवित्रदेश कुरुक्षेत्र के मध्य में रेलवे स्टेशन से १ मील दूर सरस्वती नदी के निकट ( २९ अंश ५८ कला ३० विकला उत्तर-अक्षांश; और ७६ अंश ५२ कला पूर्व देशान्तर में ) एक कसबा है। ईश्वर ( अर्थात् महादेव ) के स्थान अथवा स्थाणुसर से थानेसर नाम की उत्पति है। यह कसबा भारतवर्ष के सबसे अधिक प्राचीन और प्रसिद्ध कसबों में से एक है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय थानेसर में १३०० मकान और ६००५ मनुष्य थे; अर्थात् ४१२९ हिन्दू, १७५८ मुसलमान, १०६ सिक्ख और १२ जैन। थानेसर में बिना गच किए हुए ईंटे के दो मंजिले मकान अधिक है; जिनमें से बहुतेरों की छत मट्टी से पाटा हुई है; कश्मीर, पटियाले, जींद, नाभा, फरीदकोट आदि पंजाब के राजाओं के बड़े बड़े मकान बने हैं; जिनमें समय समय पर सदाव्रत जारी होता है; सड़कें साफ नहीं हैं; निवासी खास करके पंडे हैं, यात्रियों की आवश्यकीय वस्तु मिलती हैं; पंडेलोग अपने गृह में यात्रियों को टिकाते हैं। कसबे के आस पास स्थान स्थान में करील, बबूल, बैर आदि लगे हुए हैं।

कसबे के निकट बहुतेरे सरोवर हैं; जिनमें कुरुक्षेत्र सरोवर, सन्निहित और स्थाणु ये ३ प्रधान हैं। प्रति अमावास्या को स्नान के लिये थानेसर में बहुत यात्री आते हैं। साधारण तरह से वहां वर्ष में तीन चार लाख यात्री पहुंचते हैं, परंतु सूर्यग्रहण के समय आठ दस लाख यात्री भारत वर्ष के प्रति विभागों से यहां आकर स्नान-दान करते हैं। कुरुक्षेत्र में दान करने का माहात्म्य अन्य संपूर्ण तीर्थों से अधिक है।

अंतरगृही की परिक्रमा करने में (कुरुक्षेत्र सरोवर की परिक्रमा छोड़ करके) मुझको ३ घंटे लगे। नीचे लिखे हुए क्रम से देवस्थान मिले। (१) कुरुक्षेत्र सरोवर—यह थानेसर में स्नान का मुख्य स्थान कसबे से $\frac{1}{4}$ मील दक्षिण सरस्वती के जल से भरा हुआ पवित्र सरोवर है, जिसकी लंबाई पूर्व पश्चिम को १२०० गज और चौड़ाई ६५० गज तथा इसका घेरा २ मील से अधिक है। सरोवर के दक्षिण का बड़ा भाग मट्टी से भर गया है, उसपर बबूल, बैर आदि वृक्षों का जंगल लग गया है, जिसमें पक्षी बहुत रहते हैं। सरोवर के उत्तरीय भाग में कमल आदि जल उद्भिज से पूर्ण स्वच्छ जल है और पश्चिम और उत्तर तथा १०० गज पूर्व नीचे से ऊपर तक पक्की सीढ़ियां बनी हैं। सरोवर में उत्तर के किनारे के मध्य से ७५ गज दक्षिण ऊंची भूमि पर सूर्यघाट है। उत्तर-किनारे से सूर्यघाट तक पुल बना है। सूर्यघाट पर स्नान, दान और एक मंदिर में गौरीशंकर का दर्शन होता है। पुल से लगभग ६० गज पश्चिम इसके समानांतर रेखा में दूसरा पुल है; जिससे सरोवर के भीतर के चंद्रकूप के निकट जाना होता है। वहां एक मंदिर के समीप चंद्रकूप नामक पवित्र कुंआ है। यात्रीगण कुरुक्षेत्र सरोवर की परिक्रमा करते हैं। सरोवर से उत्तर श्रवणनाथ संन्यासी का बनवाया हुआ एक सुंदर मंदिर है, जिसके आंगन के बगलों में दो मंजिले मकान बने हैं, जिनमें से पूर्व के गृह में श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर आदि पांचो पांडव और दक्षिण के गृह में शिवलिंग और कई देवमूर्तियां स्थापित हुई हैं। (२) नाभ कमल—एक पक्के सरोवर के किनारे एक मंदिर में भगवान आदि देवता हैं। (३) रुद्रकर-एक पक्के सरोवर के समीप एक मंदिर में शिवलिंग है। (४) स्थाणुतीर्थ-थानेसर कसबे से उत्तर स्थाणुसर नामक एक बड़ा सरोवर है, जिसके चारो ओर पक्की सीढ़ियां बनी हैं; किनारों पर अनेक वृक्ष और कई एक देवमंदिर हैं, पश्चिम किनारे पर स्थानेश्वर शिव का सुंदर मंदिर बना है। (५) ब्रह्मसर-पक्के सरोवर के किनारे पर एक छोटे मंदिर में ब्रह्माजी की स्थापित चतुर्मुख शिवमूर्ति है। (६) देवी कूप—एक बड़े कूप के निकट एक मंदिर में देवीजी की प्रतिमा है। (७)

पंचमानी—एक पक्का सरोवर है। (८) कुबेरभंडार—छोटे सरोवर के किनारे पर कुबेर आदि की मूर्तियां हैं। (९) सरस्वती—एक नाले में थोड़ा जल है। (१०) दुर्गाकुंड—एक छोटा सरोवर है। (११) सन्निहित—यह थानेसर कसबे के पूर्व-दक्षिण पुरइन से भरा हुआ नदी के समान लंबा एक सरोवर है; जिसके पूर्व, उत्तर और पश्चिम पक्के घाट बने हैं, पश्चिम एक जनानी घाट, एक लक्ष्मीनारायण का मंदिर और अनेक दूसरे मंदिर हैं। इस परिक्रमा के मार्ग में फरीदकोट के राजा का एक उत्तम समाधि मंदिर मिलता है।

थानेसर के चारो ओर इस देश में कुरुक्षेत्र के ३६० पवित्र स्थान हैं, वे बड़ा परिक्रमा करने वालों को मिलते हैं।

**थानेसर का इतिहास**—चीन के हुएंत्संग ने सन् ई० के सातवीं शताब्दी में लिखता है कि ११६७ मील घेरे के एक राज्य की राजधानी थानेसर है। सन् १०११ ई० में गजनी के महमूद ने थानेसर को लूटा और मंदिरों का विनास किया। सिक्खों का बल बढ़ने पर यह मोथसिंह के हस्तगत हुआ। वह अपने भतीजे को अपना राज्य छोड़ गया। सन् १८५० में उसवंश के लोप हो जाने पर थानेसर अंगरेजी सरकार के पास आया और कुछ दिनों के लिये जिले का सदर स्थान बना। सिविल स्टेशन के हट जाने के समय से यह कसबा बहुत शीघ्र घट गया है।

**पोहवा**—थानेसर कसबे से १३ मील पश्चिम-दक्षिण कुरुक्षेत्र की सीमा के भीतर (अंबाले जिले में) सरस्वती नदी के निकट 'पोहवा' नामक एक छोटा पुराना कसबा और पवित्र स्थान है; जो पूर्व समय में पृथूदक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध था। महाभारत (वनपर्व) में पुष्करसमिती इसका नाम लिखा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय पोहवा में ४८४ मकान और ३४०८ मनुष्य थे; अर्थात् २९६० हिंदू, ४४२ मुसलमान और ६ सिक्ख।

सरस्वती के बढ़ने पर कसबे के चारो ओर पानी हो जाता है। कसबे के पुराने मंदिरों को मुसलमानों ने तोड़ दिया था। पोहवा में पुराने स्तंभों

की कई एक आश्चर्य निशानियां हैं; पुरुष और स्त्रियों की प्रतिमाओं में छिपा हुआ कारीगरी से युक्त एक पुराना दरवाजा है और उसी ढांचे का उससे बड़ा परंतु सादा एक दूसरे फाटक का निशान है, ये दोनों फाटक कृष्णभगवान के बड़े मंदिर के फाटक थे, भगवान की प्रतिमा दोनों दरवाजों के मध्य में है। पोहवा में अनेक नए मंदिर बनाए गए हैं। 'कैथल' के राजा के महल में यात्री टिकते हैं। सरस्वती में थोड़ा पानी बहता है, परंतु बांध बांध कर के स्नान करने के योग्य पानी रक्खा जाता है।

आश्विन और चैत्र की अमावस्या को पोहवा में मेला होता है। विधवा स्त्रियां मेले में एकत्र होकर अपने अपने पतियों के लिये विलाप करती हैं। थानेसर के बहुतेरे यात्री पोहवा में जाते हैं और सरस्वती में स्नान तर्पण और श्राद्ध करते हैं। अकाल मृत्यु से मरे हुए मनुष्यों के संबंधी लोग पोहवा में जाकर उनके उद्धार के लिये वहां श्राद्ध कर्म करते हैं।

**सरस्वती नदी**—यह अंबाले जिले की सीमा से बाहर नाहन राज्य के नीची पहाड़ियों से निकलती है और अंबाले जिले के जाधवदरी के मैदान में एक पवित्र स्थान में प्रकट होती है। कई एक मील मैदान में बहने के पश्चात् कुछ समय के लिये यह बालू में गुप्त होजाती है; परंतु ३ मील दक्षिण भूमि के भीतर बहने के उपरांत "भावतपुर" के निकट फिर प्रकट होजाती है; 'बलछपुर' के निकट यह फिर भूमि में गुप्त होती है, परंतु फिर प्रकट होकर दक्षिण पश्चिम की ओर बहती है। इस प्रकार से यह नदी थानेसर कसबे और कुरुक्षेत्र के अन्य कई स्थानों को होती हुई कर्नाल जिले को लांघकर पटियाले के राज्य में गागरा (दृषद्वती) नदी में मिल जाती है। पुराने समय में यह नदी राजपुताने के मैदान के पार तक बहती थी; बहावलपुर के मीरगढ़ तक सरस्वती के छोड़े हुए बेड़ का अब तक पता लगता है, परंतु राजपुताने के भटनेर के समीप इसकी धारा गुप्त होजाती है।

**कुरुक्षेत्र**—अंबाले और कर्नाल जिले में तथा थानेसर से ६४ मील दूर-जींद कसबे तक लोगों के कहने के अनुसार कुरुक्षेत्र में ३६० तीर्थ स्थान हैं। यह निश्चय है कि सरस्वती और गागरा (दृषद्वती) के बीच का देश आरंभही

से आर्यधर्म का गृह बना था। कुरुक्षेत्र की राजधानी "श्रुगना" थी, जिस स्थान पर जगाद्री और बुरिया के समीप "शुग" गांव है। चीन के हुएन्त्सांग ने सन् ई० के सातवीं शताब्दी में श्रुगना को एक राज्य की राजधानी लिखा है। कुरुक्षेत्र में थानेसर और पोहवा याला का प्रधान स्थान है, परंतु सरस्वती के आस पास बहुतेरे मीलों तक छोटे छोटे बहुतेरे तीर्थ स्थान हैं।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—मनुस्मृति (दूसरा अध्याय) सरस्वती और दृषद्वती इन दोनों देवनिर्मित नदीयों के अन्तरवर्ती देवनिर्मित देश को ब्रह्मावर्त्त कहते हैं। इस देश में चारो वर्ण और संकर जातियों के बीच जो आचार परंपरा क्रम से चले आते हैं; उसे सदाचार कहते हैं।

व्यास स्मृति—( चौथा अध्याय ) मनुष्य कुरुक्षेत्र तीर्थ को करके सब पापों से विमुक्त होजाता है।

शंख स्मृति—( १४ वां अध्याय ) कुरुक्षेत्र में दान करने वाले मनुष्य को अनंत फल मिलता है।

महाभारत—( आदिपर्व, प्रथम अध्याय ) परशुराम ने क्षत्रीकुल का सत्यानाश कर उनके श्रोणित से समंतपंचक में ५ हूद बनाए और पितृगणों से यह वर मांगा, कि ये हूद भूमंडल में प्रसिद्ध तीर्थ बने। इन हूदों के आस पास का देश पवित्र समंतपंचक नाम से प्रसिद्ध हुआ; उसी देश में कुरु और पांडवों का सग्राम हुआ था।

( ९४ वां अध्याय ) पुरुवंशी राजा भरत के पश्चात् छठवें पीढ़ी में राजा संवरण का पुत्र राजा कुरु हुआ, जिसकी तपस्या करने से कुरु जांगल नामक स्थान, उसके नाम के अनुसार, कुरुक्षेत्र नाम से प्रसिद्ध हुआ।

( वनपर्व ८३ अध्याय ) सरस्वती से दक्षिण और दृषद्वती नदी से उत्तर कुरुक्षेत्र में जो लोग बसते हैं, वे स्वर्गवासी हैं। उसके पुष्करसम्मिती तीर्थ में स्नान करके पितर और देवतों का तर्पण करना चाहिए; वहीं परशुराम ने भारी काम किया था, वहां जाने से पुरुष कृतकृत्य होजाता है और अश्वमेध का फल लाभ करता है। तीर्थसेवी पुरुष रामसर में स्नान करें; तेजस्वी परशुरामने वहीं क्षत्रियों को मार तड़ागों को रुधिर से भरकर अपने पितर और

पूर्व पितरों का तर्पण किया था। पितरों ने परशुराम को यह वरदान दिया, कि तुम्हारे यह तालाव निःसन्देह तीर्थ होजायंगे; जो कोई तुम्हारे इन तीर्थों में स्नान करके अपने पितरों का तर्पण करेगा; उसको पितर लोग प्रसन्न होकर जगत में दुर्लभ कामना देंगे और सनातन स्वर्ग में पहुंचावेंगे।

चन्द्र ग्रहण में कुरुक्षेत्र में स्नान करने से १०० अश्वमेध का फल होता है। पृथ्वी और आकाश के संपूर्ण तीर्थ और नदी, कुंड, तड़ाग, झरने, तलैया और बावड़ी अमावाश्या के दिन प्रतिमास कुरुक्षेत्र में आती हैं; इसी निमित्त कुरुक्षेत्र का दूसरा नाम संनिहित है; उसमें स्नान कर और उसका जल पीकर पुरुष ब्रह्मलोक में जाता है।

आकाश में पुष्कर और पृथ्वी में नैमिषारण्य सर्वोपरि है और कुरुक्षेत्र तीनों लोक में श्रेष्ठ है। कुरुक्षेत्र की धूल जो वायुसे उड़ती है, उससे भी महा पापी पुरुष मोक्ष पासक्ता है। सरस्वती के दक्षिण और दृषद्वती नदी के उत्तर कुरुक्षेत्र में जो पुरुष निवास करते हैं, वे स्वर्गवासी हैं। परशुराम के तड़ाग और "मचक्रुक" तीर्थ के बीच की भूमि का नाम कुरुक्षेत्र है; इसी को समन्तपंचक भी कहते हैं; यह ब्रह्मा की उत्तर वेदी है।

(११७ वां अध्याय) परशुराम ने २१ वार पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित करदिया और समन्तपंचक तीर्थ में जाकर क्षत्रियों के रुधिर से ५ तालावों को भरदिया।

(उद्योग पर्व्व-१५१ अध्याय) युधिष्ठिर ने श्मशान, देवालय, महर्षियों के आश्रम, तीर्थ और मन्दिरों को छोड़कर उपजाऊ और पवित्र भूमि में अपनी सेना का निवास स्थान ठहराया। (१५९ वां अध्याय) पाण्डवों ने हिरण्वती नदी के किनारे शिविर स्थापित किया। (१९७ अध्याय) ५ योजन के परिमाण परिधियुक्त स्थान को प्राप्त कर कौरवों की सेना इकट्ठी हुई; वहां पर सब राजाओं ने उत्साह और वल के अनुसार अनेक शिविर तय्यार कराये। (इसके पश्चात् कुरुक्षेत्र में कौरव और पांडवों का जगत विख्यात भयंकर संग्राम हुआ)।

(शल्यपर्व-३९ अध्याय) जब महाराज कुरु ने कुरुक्षेत्र में यज्ञ किया,

तब उनके ध्यान करने से ऋषभ देश को छोड़ कर 'सुरेणु' नामक सरस्वती कुरुक्षेत्र में पहुंची। 'ओघवती' नामक सरस्वती वशिष्ठ के ध्यान करने से कुरुक्षेत्र में आई थी। जगत में ७ सरस्वती हैं; पुष्कर में सुप्रभा, नैमिषारण्य में कांचनाक्षी, गया में विशाला, अयोध्या में मनोरमा, कुरुक्षेत्र में ओघवती, गंगाद्वार में सुरेणु और हिमालय में विमलोदका।

(५३ अध्याय) महात्मा कुरु ने अनेक वर्ष तक इसमें निवास किया था और इस पृथ्वी को जोता था, इस लिये इसका नाम कुरुक्षेत्र हुआ। जो मनुष्य यहां दान देते हैं, उसका वह दान शीघ्रही सहस्रगुण होजाता है। (५९ अध्याय) कुरुक्षेत्र ब्रह्मा की उत्तर वेदी है।

(शांति पर्व १५२ वां अध्याय) पण्डितलोग कुरुक्षेत्र को पवित्रतीर्थ कहा करते हैं। कुरुक्षेत्र से सरस्वती और सरस्वती से पृथूदक तीर्थ पवित्र है; जिसके स्नान और जलपान करने से मनुष्य अकालमृत्यु से शोकित नहीं होते।

लिंगपुराण—(३६ अध्याय) जिस युद्ध में शिव-भक्त दधीच से राजा क्षुप और विष्णु परास्त हुए; उस स्थान का नाम स्थानेश्वर हुआ; वहां शरीर त्याग करने से शिवलोक मिलता है (यही कथा शिवपुराण, दूसरा खण्ड, ३२ वां अध्याय में भी है)।

वामन पुराण—(२२ अध्याय) राजा सम्वरण के पुत्र कुरु ने द्वैतवन में प्राप्त हो सरस्वती नदी को देखा। पीछे वह ब्रह्मा के उत्तर वेदी को गये, जहां बीस बीस कोस चारो ओर 'स्यमंतपंचक' नामक क्षेत्र है। राजा कुरु ने उस क्षेत्र को उत्तम माना और कीर्ति के लिये सोना का 'हल' बना कर महादेव के वृष और धर्मराज के भैंसे को हल में लगाया। वह प्रति दिन उसी हल से सात कोस चारो तरफ पृथ्वी को चाहने लगे। इसके अनन्तर राजा कुरु ने विष्णु के प्रसन्न होने पर यह वरदान मांगा, कि जहां तक मैंने यह पृथ्वी वाही है, वह धर्मक्षेत्र हो जाय। यज्ञ, दान, उपवास, स्नान, जप, होम, आदि शुभ और अशुभ काम जो इस क्षेत्र में किया जाय, वह अक्षय हो जाय और आप तथा महादेव, सब देवताओं के साथ यहां वास करें।

आदि में यह स्थान ब्रह्माजी की वेदो कहाया पीछे रामहूद के नाम से विख्यात हुआ और कुरु राजा के हल से वाहने पर कुरुक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

( ३३ अध्याय ) सरस्वती और दृषद्वती इन दो नदियों के बीच में जो अन्तर है, वह देवनिर्मित ब्रह्मावर्त देश कहलाता है।

जो मनुष्य सन्निहित तीर्थ में स्नान कर सरस्वती के तट पर स्थित रहता है, वह ब्रह्मज्ञान पाता है। कुरुक्षेत्र में सन्निहित तीर्थ ब्रह्मवेदी है। जो मनुष्य 'नियम' कर सन्निहित का परिक्रमा करता है, उसका विघ्न नाश हो जाता है।

( ३४ अध्याय ) विष्णु ने कुरुक्षेत्र में वाराह तीर्थ विख्यात किया है; वहां स्नान करने से परमपद की प्राप्ति होती है। पुष्कर तीर्थ में परशुरामजी के किए हुए तीर्थ हैं; जिनमें पितरों के पूजन करने से अश्वमेध यज्ञ का फल होता है।

( ३५ अध्याय ) कुरुक्षेत्र में रामहूद है, जहां परशुरामजी ने सब क्षत्रियों को मार कर उनके रुधिरों से ५ हूद पूरित किए हैं; जो संसार में उत्तम तीर्थ कर के विख्यात हैं। जो व्यक्ति उनमें स्नान कर अपने पितरों को तृप्त करेगा, उसको पितर लोग मनोवांछित फल देंगे।

( ४१ अध्याय ) सूर्य्यग्रहण में सन्निहित तीर्थ में श्राद्ध करने से महाफल होता है।

( ४३ अध्याय ) नारायण ने जल के भीतर जगत को जान कर अण्डे का विभाग किया, जिससे पृथ्वी हुई। जिस स्थान में अण्डा स्थित हुआ, वहां ही सन्निहित सरोवर है। आदि के निकले हुये तेज से आदित्य ( सूर्य ) और अण्ड के मध्य में ब्रह्मा उत्पन्न हुए।

( ४४ अध्याय ) ऋषियों के शाप से शिवलिंग के गिरने पर जगत में बड़ा उपद्रव होने लगा। पीछे शिवजी ने ब्रह्मा की स्तुति से प्रसन्न हो कर ऐसा कहा कि जो लिंग गिरा है, वह सन्निहित तीर्थ में प्रतिष्ठित हो जाय। जब गिरा हुआ शिवलिंग किसी से न उठा, तब शिवजी ने

हस्ती-रूप धारण कर दारुक वन से अपने सुण्ड द्वारा उस लिंग को लाकर सर की पश्चिमी पार्श्व में निवेशित किया।

( ४५ अध्याय ) स्थाणु लिंग के दर्शन के महात्म्य से मनुष्यों से स्वर्ग पूर्ण होने लगा। स्थाणु तीर्थ में स्नान, लिंग के दर्शन और वट के स्पर्श करने से मुक्ति और मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं।

चैत्र महीने के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन "रुद्रकर" तीर्थ में स्नान करने से परमपद प्राप्त होता है।

( ४६ अध्याय ) स्थाणुवट के उत्तर की ओर शुक्रतीर्थ, पूर्व की तरफ सोमतीर्थ, दक्षिण की ओर दक्षतीर्थ, पश्चिम की तरफ स्कन्द तीर्थ और इनके मध्य में स्थाणु तीर्थ है। वट के उत्तर महा लिंग और पूर्व विश्वकर्मा का रचा लिंग है। वहां हीं लिंगरूप से सरस्वती स्थित है। वट के पार्श्व में ब्रह्मा का प्रतिष्ठित किया हुआ शिवलिंग है।

( ४९ अध्याय ) ब्रह्मा अपनी कन्या को देख मोहित हुए, उस पाप से ब्रह्मा का सिर कट गया। पीछे ब्रह्मा ने कटे हुए सिर के सहित सन्निहित तीर्थ में जाकर स्थाणु तीर्थ में सरस्वती के उत्तर तीर पर ४ मुख वाले शिव को प्रतिष्ठा कर आराधन किया; तब वह पाप रहित होगए। इस प्रकार से ब्रह्मसर प्रतिष्ठित हुआ।

( ५७ अध्याय ) कुरुक्षेत्र में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र आदि सब देवताओं ने स्वामिकार्तिक का अभिषेक किया और उनको सेनापति बनाया। ( ८९ अध्याय ) राजा बलि ने कुरुक्षेत्र में यज्ञ किया, (९२) वामनजी ने जाकर ३ पग पृथ्वी बलि से मांगी और बलि ने देदी।

मत्स्यपुराण—( १०८ अध्याय ) पृथ्वी पर नैमिषारण्य तीर्थ और आकाश में पुष्कर तीर्थ श्रेष्ठ है, परंतु कुरुक्षेत्र तो तीनों लोक में सर्वोपरि तीर्थ है। ( १९१ अध्याय ) सूर्यग्रहण में महापुण्य वाले कुरुक्षेत्र को सेवते हैं। ( २४३ अध्याय ) कुरुक्षेत्र में वामनजी की मूर्ति है।

स्कन्दपुराण—( सेतुबंध खण्ड-३० अध्याय ) कुरुक्षेत्र में दान देने से ब्रह्महत्या आदि पाप नष्ट होते हैं।

पद्मपुराण—( सृष्टिखण्ड, १८ वां अध्याय ) कार्तिक और वैशाख की पूर्णिमासी; चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण कुरुजांगलदेश में पुण्यकाल कहाते हैं। ( पातालखण्ड-९१ अध्याय ) सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र मोक्षदायक होता है।

गरुड़पुराण—( पूर्वार्द्ध ६६ वां अध्याय ) कुरुक्षेत्र तीर्थ संपूर्ण पापों का नाश करने वाला और भुक्ति मुक्ति देनेवाला है। ( ८१ वां अध्याय ) कुरुक्षेत्र में दान तपस्या आदि कर्म करने से भुक्ति मुक्ति मिलती है।

अग्निपुराण—( १०८ वां अध्याय ) कुरुक्षेत्र में निवास करने से वैकुंठ मिलता है और "कुरुक्षेत्र" ऐसा शब्द सर्वदा उच्चारण करने से स्वर्ग में वास होता है। कुरुक्षेत्र में विष्णु आदि देवता निवास करते हैं। वहां सरस्वती नदी में स्नान करने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। कुरुक्षेत्र का रज भी परमगति को देनेवाला है, तो वहांके देवताओं के दर्शन के फल का क्या वर्णन किया-जाय। ( ११८ वां अध्याय ) कुरुक्षेत्र में विधिपूर्वक श्राद्ध करने से अक्षय फल प्राप्त होता है।

कूर्मपुराण—( उत्तरार्द्ध-३६ वां अध्याय ) ब्राह्मणों करके सेवित कुरुजांगल तीर्थ है, जिसमें विधिपूर्वक दान देने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है।

सौरपुराण—( ६७ वां अध्याय ) कुरुक्षेत्र में महेश्वर नामक शिव हैं; वहां ब्रह्माजी ने तप करके ब्रह्मत्व को पाया और बालखिल्यादि ब्राह्मण परमसिद्धि लाभ की।

श्रीमद्भागवत—(१० वां स्कन्ध ८२ अध्याय) एक समय सूर्यग्रहण आया; सब ओर से मनुष्य दान स्नान करने के लिये कुरुक्षेत्र को जाने लगे, जहां परशुरामजी ने पृथ्वी को २१ बार निः क्षत्रिय करके राजाओं के रुधिर से कुण्ड भरदिये थे और कुरुक्षेत्र में यज्ञ किया था। तीर्थ यात्रा में संपूर्ण भरत-खण्ड की प्रजा आई। उसी प्रकार अक्रूर; वसुदेव, राजा उग्रसेन, आदि द्वारिका वासियों ने कुरुक्षेत्र में आकर परशुरामजी के सरोवर में स्नान करके ब्राह्मणों को बहुत सुवर्ण दान दिया। वहां नन्द आदिक ब्रजगोप और भीष्म; धृतराष्ट्र, पांडव आदि कौरवों से कृष्णचंद्र आदि यदुवंशियों को भेंट हुई। ( ८४ अध्याय ) वसुदेवजी ने कुरुक्षेत्र में विधि पूर्वक यज्ञ किया।

# कर्नाल।

थानेसर से २१ मील (अंबाला जंक्शन से ४७ मील) दक्षिण और दिल्ली से ७६ मील उत्तर कर्नाल का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के दिल्ली विभाग में जिले का सदर स्थान ऊंची भूमि पर यमुना की पश्चिमी नहर के निकट कर्नाल एक पुराना कसबा है। पूर्वकाल में यमुना कर्नाल होकर वहती थी, जो अब ७ मील पूर्व है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कर्नाल में २११६३ मनुष्य थे; अर्थात् १४२८० हिंदू, ७३७७ मुसलमान, १८४ जैन, ६३ कृस्तान और ५९ सिक्ख।

कर्नाल कसबे का शहरपनाह १२ फीट ऊंचा है और इसकी सड़कें तंग और टेढ़ी हैं। कसबे के बाहर टौनहाल, खैराती अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। कसबे के उत्तर छावनी के स्थान पर सिविल स्टेशन फैला है। कसबे में एक सुंदर मसजिद और सन् १८६५ का बना हुआ एक मिशन स्टेशन है। कर्नाल का पुराना किला अब जिलास्कूल के काम में आता है।

कर्नाल में देशी कपड़ा, कंबल और बूट बनते हैं।

**कर्नाल जिला**—यह दिल्ली विभाग के उत्तरी जिला है। इसके उत्तर अंबाला जिला और पटियाले का राज्य; पश्चिम पटियाला और "जींद" के देशीराज्य; दक्षिण दिल्ली और "रुहतक" जिले और पूर्व यमुना नदी, बाद पश्चिमोत्तर देश में सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और मेरठ जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल २३९६ वर्गमील है, इसमें कर्नाल, पानीपत और कैथल ३ तहसीली हैं। जिले के पश्चिमोत्तर की सीमा के निकट गागरा अर्थात् दृषद्वती और सरस्वती नदी और जिले में पश्चिमी यमुना नहर और इसकी कई एक शाखा हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ६७३०२२ मनुष्य थे। जिले के ३ कसबो में ५ हजार से अधिक मनुष्य थे; पानीपत में २७५४७, कर्नाल में २११६३ और कैथल में १५७६८। जिले में जाट सब जातियों से

अधिक हैं। इनके पश्चात् ब्राह्मण, राजपूत और चमार के नम्बर हैं। राजपूतों में खास करके मुसलमान हैं।

इतिहास—ऐसा कहा जाता है कि राजा दुर्योधन के सेनापति कुंती के पुत्र राजा कर्ण ने कर्नाल को बसाया। उन्हीं के नाम से इसका कर्नाल नाम पड़ा ( महाभारत- आदि पर्व के १३७ वा अध्याय में लिखा है कि राजा दुर्योधन ने कर्ण को अंगदेश का राजा बनाया )। कर्नाल जिले के उत्तरीय बड़ा भाग कुरुक्षेत्र में सामिल हैं और दक्षिण में पानीपत उन पांच गांवों में से है; जिनको युधिष्ठिर ने दुर्योधन से मांगा था।

सन् १७३१ ई० में "नादिरशाहइरानी" ने मुगल बादशाह महम्मदशाह को कर्नाल में परास्त किया। २ घंटे की लड़ाई में २०००० हिंदुस्तानी सैनिक मारे गए और इससे भी अधिक कैदी बनाए गए। बहुत बड़ा खजाना और बहुत हाथी नादिरशाह को मिले। इरानी सेना की नुकशानी ५०० से २५०० तक अनेक प्रकार से कही जाती है। दूसरे दिन महम्मद-शाह के परास्त होने पर नादिरशाह दिल्ली को चला और ५८ दिनों तक दिल्ली में लूट करने के उपरांत ३२ करोड़ रुपए का तकसोमी धन लेकर पारस को चलागया।

अठारवीं शताब्दी के मध्य में जींद के राजा ने कर्नाल कसबे पर अधिकार किया। सन् १७९५ ई० में अंगरेजों ने इसको ले लिया, परंतु शीघ्रही 'लड़वा' के सिक्ख राजा ने इसको छीन लीया। सन् १८०५ में यह फिर अंगरेजों के आधीन हुआ। सन् १८४१ तक कर्नाल के किले में अंगरेजी फौजी छावनी थी, पर यहां के पानी पवन अस्वास्थ्य कर रहने के कारण पीछे छावनी उठा दी गई। सन् १८४० ई० में काबुल के अमीर दोस्त महम्मद खां ६ मास तक कर्नाल में कैद रख कर कलकत्ते भेजें गए।

## पानीपत।

कर्नाल से २१ मील ( अंबाला जंक्शन से ६८ मील ) दक्षिण और दिल्ली से ५५ मील उत्तर पानीपत का रेलवे ष्टेशन है। पंजाब के कर्नाल

जिले में तहसीली का सदर स्थान और जिले का प्रधान कसबा पानीपत है, जो सन् १८५४ ई० तक पानीपत जिले का सदर स्थान था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इसमें २७५४७ मनुष्य थे; (१४३१२ पुरुष और १३२३५ स्त्रियां); अर्थात् १८६८० मुसलमान, ८१०६ हिन्दू, ७१७ जैन ३९ सिक्ख और ५ कृस्तान।

कसबे के चारो ओर पुरानी दीवार और १५ फाटक हैं। यहां मामूली सब डिविजन के आफिसों और कचहरियों के अतिरिक्त एक बड़ी सराय, पुलिसष्टेशन और स्कूल है और देशी कपड़ा, कंबल तथा तांबे के बर्तन बनते हैं।

**इतिहास**—महाभारत-उद्योग पर्व के ३१ वां अध्याय में लिखा है कि राजा युधिष्ठिर ने दुर्योधन से कहा था कि आधा राज्य हमको नहीं दोगे तो अरिस्थल, वृकस्थल, माकंदी, बारणावत और पांचवां जो तुह्मारी इच्छा हो; यही पांच गांव हमको दे दो; ऐसा प्रसिद्ध है, कि उन्हीं गावों में से एक पानीपत है।

थानेसर और दिल्ली के बीच की भूमी पुराने समय से भारत वर्ष की लड़ाई का मैदान है। निम्न लिखित ३ लड़ाईयों के लिये पानीपत प्रसिद्ध है, (१) सन् १५२६ के २१ अपरैल को बाबर ने अफगान इब्राहिम लोदी को पानीपत के निकट परास्त किया। मुगलों के कहने के अनुसार १५००० अफगान उस युद्ध में मरे थे। मुगलों ने भागे हुए अफगानों का आगरा तक पीछा किया। इब्राहिम लोदी भी मारागया। लड़ाई के तीसरे दिन बाबर दिल्ली में पहुंचा। (२) दूसरी बड़ी लड़ाई सन् १५५६ ई० में हुई। अकबर ने सुलतान महम्मद साह आदिल के जनरल शेरशाह के भतीजे 'हिमू'को परास्त किया। हिमू के पास पैदल सेना के अतिरिक्त ५००० घोड़सवार और ५०० हाथी थे। लड़ाई के अन्त में वह मरा गया। इसी लड़ाई से अफगानवंश का अन्त होकर तमूरवंश अर्थात् मुगल का राज्य नियत हुआ। (३) तीसरी लड़ाई पानीपत के निकट सन् १७६१ ई० में हुई। तारीख ७ जनवरी को अहमदशाह दुर्रानी ने महाराष्ट्रों की संपूर्ण

सेना को परास्त किया। उस समय हुलकर, सिंधिया, गायकवार और पेशवा संपूर्ण प्रसिद्ध महाराष्ट्र राजा अपनी अपनी सेनाओं के सहित रण-भूमि में वर्तमान थे। लोग कहते हैं कि महाराष्ट्रों की सेना में १५००० पैदल, ५५००० घोड़सवार २०० तोप और २००००० पिंडारी और खीमेंवरदार थे और अफगानों की सेना में ३८००० पैदल, ४२००० घोड़सवार और ३० तोप थीं। जब विश्वासराव पेशवा के बड़े पुत्र मरने योग्य घायल हुए और हुलकर के चले जाने पर गायकवार भी चला गया, तब महाराष्ट्रलोग भागे और हजारहां काट दिए गए। अफगानों ने बहुतेरे पुरुष, स्त्री और लड़कों को पकड़ कर अपना दास बनाया।

## शिमला।

अंबाला जंक्शन से ३१ मील पूर्वोत्तर पहाड़ के पादमूल में समुद्र के जल से २४०० फीट की ऊंचाई पर 'कालका' रेलवे स्टेशन है। कालका से शिमला जाने के लिये पुरानी और नई दो सड़कें हैं। पुरानी सड़क कालका से 'जुटोग' होकर शिमले तक ४१ मील है, उसी सड़क से मुसाफिर लोग 'झंपान' या टट्टू पर चढ़ कर के 'कसौली' जाते हैं, कालका से ९ मील दूर समुद्र के जल से ६३२२ फीट ऊपर पहाड़ी पर कसौली एक फौजी छावनी है। नई सड़क पुरानी सड़क से पूर्व है, इस सड़क से 'तांगा' (एक प्रकार का एक्का) शिमला जाता है, कालका से १५ मील धर्मपुर, २७ मील सोलोन, ४२ मील केरीघाट और ५७ मील शिमला है। सड़क कालका से धर्मपुर तक तंग है, वहां से सोलोन फौजी स्टेशन तक उत्तम है, परंतु अंत में ३ मील खड़ी उतराई है, सोलोन से आगे दूर तक सुगम चढ़ाई है, तांगा तेज जाता है, अंत की १० मील सड़क गहिड़ी घाटी के पूर्व बगल में घुमाव की है और धीरे धीरे केरीघाट के डाक बंगले तक ऊंची होती गई है। तांगा लगभग ७ घंटे में शिमला पहुंच जाता है।

शिमला पंजाब के अंबाले विभाग में जिले का सदर स्थान और भारत-गवर्नमेंट की गर्मी के दिनों की राजधानी (३१ अंश ६ कला उत्तर अक्षांश

और ७७ अंश ११ कला पूर्व देशान्तर में ) एक पहाड़ी कसवा है, जिसकी औसत ऊंचाई समुद्र के जल से ७०८४ फीट है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शिमले और इसकी छावनी में १३८३६ मनुष्य थे; अर्थात् १०१८० पुरुष और ३६५६ स्त्रियां। इनमें ८४८४ हिन्दू, ३४८१ मुसलमान, १५८७ कृस्तान, २४८ सिक्ख, २२ जैन, ३ पारसी और ३ दूसरे थे।

पूर्व से पश्चिम ५ मील लम्बे पहाड़ी सिलसिले के ऊपर नया चंद्रमा की शकल में यूरोपियन कोठियां फैली हैं। नीचे की घाटी में कई एक धारें हैं, जिनमें २ झरने बड़े हैं। सिलसिले के पूर्व भाग को छोटा शिमला कहते हैं और पश्चिम बेलीगंज' है। स्टेशन से अखीर पश्चिम एक ऊंची खड़ी पहाड़ी के सिर पर 'जुटोग' एक छोटा फौजी मकान है, जिससे १$\frac{४}{१}$ मील पूर्व 'प्रस्पेक्ट' पहाड़ी समुद्र के जल से ७१४० फीट ऊंची है। पहाड़ी के १ मील पूर्व वाइसराय की पुरानी कोठी है, जिससे ६५० गज पश्चिम अवजरवटेरी पहाड़ी पर उत्तम गवर्नमेंट 'हाउस' बना है। शिमले में कई स्कूल, लड़कियों का स्कूल, सुन्दर टाउनहाल, ३ अंगरेजी बंक, १ क्लब,' कईएक गिर्जे कई एक अंगरेजी दुकान, जिले की कचहरियां, खजाना, तहसीली, टेलिग्राफ अफीस कई एक अस्पाताल हैं। भारतवर्ष के गवर्नमेंट जाड़े के दिनों के अतिरिक्त लग भग ८ महीने कलकत्ते को छोड़कर शिमले में रहते हैं। शिमले का पानी, पवन अनामय कर है। वहां से चारो ओर उत्तम दृश्य देख पड़ता है।

**शिमला जिला**—शिमले के दिपोटी कमिश्नर के आधीन कई एक देशी राज्यों से घेरे हुए शिमले जिले के कई टुकड़े हैं। सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय शिमले जिले के अंगरेजी राज्यका क्षेत्र फल ८१ वर्ग मील और इसकी मनुष्य-संख्या ४४५११ थी। जिले में कानेट, कोली और चमार दूसरी जातियों से अधिक बसते हैं: इनके बाद ब्राह्मण और राजपूतों की संख्या है। इस जिले में दगसाई, कसोली, सुबाथू, सालोन और कालका बड़ी बस्ती हैं।

शिमले का इतिहास—अंगरेजी सरकार ने सन् १८१५-१६ ई० की गोरखा लड़ाई के समय सिमले को स्वास्थ्यकर स्थान समझ कर नेपाल के महाराज से ले लिया। सन् १८१९ में लेफ्टिनेंट रास ने शिमले में रहने के लिये लकड़ी का एक छोटा मकान बनाया। सन् १८२१ में उसके बाद के लेफ्टिनेंट कैंडी ने सर्वदा के लिये वहां एक कोठी बनाई। सन् १८२६ में शिमला एक मुकाम होगया! सन् १८२१ में लार्ड एम्हरेष्ट ने शिमले में एक गर्मी का मोसिम बिताया, उस समय से वहां बहुत यूरोपियन रहने लगे। सन् १८६४ ई० गवर्नरजनरल सरजान लारेंस के समय से शिमला भारतवर्ष की गर्मी की ऋतुओं की राजधानी हुआ है। ज्योंही गर्मी की ऋतु आरंभ होती है, वाईसराय और सरकारी अफसर कलकत्ते से शिमले में पहुंच जाते हैं।

---

# बारहवां अध्याय।

## (पंजाब में) पटियाला, नाभा, फरीदकोट, सरहिंद, लुधियाना, मलियरकोटला, फिलौर, जलंधर और कपुरथला।

## पटियाला।

अंबाला जंक्शन से ९७ मील पश्चिमोत्तर राजपुर रेलवे का जंक्शन है, जहां से "नर्थवेष्टर्न" रेलवे, की शाखा पश्चिम 'भतिंडा' में जाकर बम्बे बड़ोधा और सेंट्रल इंडियन रेलवे से मिली है; इसी शाख पर राजपुर से १६ मील पटियाला, ३२ मील नाभा, ६८ मील बर्नाला और १०८ मील भतिंडा जंक्शन है।

राजपुर जंक्शन से १६ मील पश्चिम पटियाले का रेलवे स्टेशन है। पटियाला पंजाब में बड़ा देशी राज्य की राजधानी (३० अंश २० कला उत्तर अक्षांश; ७६ अंश २५ कला पूर्व देशांतर में) एक छोटा शहर है।

सन् १८११ की मनुष्यगणना के समय पटियाले में ५५८५६ मनुष्य थे; अर्थात् २७६२९ हिंदू, २२१२१ मुसलमान, ५७५८ सिक्ख, २३४ जैन, ६२ कृस्तान और ५५ पारसी। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ६८ वां और (काश्मीर को छोड़कर) पंजाब के देशी राज्यों में पहिला शहर है।

पटियाले में महाराज का महल और कचहरियां सुंदर बनी हैं; कई एक बाग लगे हैं; प्रधान सड़क पर रात में रोशनी होती है; महाराज की ओर से स्कूल और अस्पताल हैं।

**पटियाला राज्य**—इस राज्य का क्षेत्रफल ५९५१ वर्गमील और इसकी मालगुजारी ४१३३००० रुपया है। पटियाले की आय पंजाब के दूसरे संपूर्ण राजाओं से अधिक है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस राज्य में १५३८८१० मनुष्य और सन् १८८१ में १४६७४३३ मनुष्य थे; अर्थात् ७३४९०२ हिंदू, ४०८१४१ सिक्ख, ३२१३५४ मुसलमान, २९९७ जैन और ३९ कृस्तान।

सन् १८९१ में पटियाले राज्य के नारनवल में २११५१, बूसी में १३८१०, सुनाम में १०८६९, महेंद्रगढ़ में १०८४७ और समाना में १००३५ मनुष्य थे।

राज्य में सीसा, तांबा, स्लेट और मार्बुल की खान है; आम शिक्षा का एक डाइरेक्टर है और साधारण गल्ले पैदा होते हैं। राज्य का सैनिक बल लगभग २७५० सवार, ४१४७ पैदल, ३१ मैदान की और ७८ दूसरी तोपें और २३८ गोलंदाज हैं। अंगरेजी सरकार की ओर से पटियाले के महाराज को १७ तोपों की सलामी मिलती है।

**इतिहास**—पटियाला, जींद और नाभा के राजालोग फुलकियन घराने के सिक्ख जाट कहलाते हैं; क्योंकि ये लोग फूल नामक शरीफ से हैं। फूलने अठारहवीं 'सदी' के मध्य भाग में अपने नाम से एक गांव बसाया;

जो नाभा के राज्य में है। फूल के बड़े पुत्र तिलोक से जींद और नाभा के राजा और दूसरे पुत्र राम से पटियाले के राजा हैं। जाट जातियों में से बहुतेरों के समान सिद्धू जाट भी अपने को राजपूत होने का दावा करते हैं। वे कहते हैं कि जैशल मेर को बसानेवाला जैशल नामक भाटी राजपूत के वंशधर हमलोग हैं; जो सन् ११८० ई० की बगावत में अपने राज्य से खदेरा गया था।

राम के पुत्र सरदार आलासिंह ने सन् १७५२ ई० में पटियाला राजधानी को बसाया और सन् १७६२ में अहमदशाह दुर्रानी से राजा का पद प्राप्त किया। सन् १७६५ में आलासिंह की मृत्यु होने पर अमरसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिनको अहमदशाह दुर्रानी ने सन् १७६७ में राजाई राजगान बहादुर की पदवी दी। सन् १७८१ में अमरसिंह का देहांत होगया। बहुत दिनों तक पटियाले की प्रधानता निर्बल रही। लाहौर के महाराज के बल के सामने इसकी प्रसिद्धता घटगई थी। सन् १८०८ में शतलज के पूर्व के दूसरे राज्यों के सहित पटियाला का राज्य अंगरेजी सरकार की रक्षा में आया। सन् १८१० में दिल्ली के दूसरी अकबर ने पटियाले के राजा को महाराज की पदवी दी। पटियाले के महाराज ने नैपाल की लड़ाई के समय अंगरेजी सरकार की सहायता करके क्योंथल और बागढ़ परगने प्राप्त किए। सन् १८३० में अंगरेजी गवर्नमेंट ने महाराज को बरौली देकर उसके बदले में शिमले का राज्य लेलिया। सन् १८४५ की सिक्ख-लड़ाई के समय महाराज ने अंगरेजों की सहायता की; उस समय अंगरेजी गवर्नमेंट ने इनको नाभा राज्य का कुछ भाग दे दिया। सन् १८५७ के बलवे के समय महाराज नरेंद्रसिंह ने अंगरेजी सरकार की अच्छी सहायता की; जिसके पुरस्कार में उनको नारनवल डिविजन मिला। सन् १८६२ में महाराज नरेंद्रसिंह की मृत्यु होने पर उनके पुत्र महींद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए। सन् १८७६ में इनके देहांत होने पर इनके पुत्र पटियाले के वर्त्तमान नरेश महाराज राजेंद्रसिंह महेंद्र बहादुर जी. सी. एस. आई राज्य सिंहासन पर बैठे, जिनका जन्म सन् १८७२ ई० में हुआ था। पटियाले का राजवंश सिक्ख संप्रदाय का है।

# नाभा।

पटियालेसे १६ मील ( राजपुर जंक्शन से ३२ मील ) पश्चिम पंजाब में एक देशी राज्य की राजधानी नाभा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नाभा में १७१०८ मनुष्य थे; अर्थात् ८३८३ हिंदू, ६२६९ मुसल्मान, २२१८ सिक्ख, २३१ जैन और ७ कृस्तान। नाभा में महाराज का सुंदर महल बना है और वाटिका लगी है।

**नाभा राज्य**—यह राज्य पटियाले के उत्तर ९३६ वर्गमील में फैला है। सन् १८८३ ई० में इस राज्य की अनुमानिक मालगुजारी ६५०००० रुपए थी। सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय राज्य में २८२७६० मनुष्य बसते थे और सन् १८८१ में २६१८२४ मनुष्य थे; अर्थात् १३३९७४ हिंदू, ७७६८२ सिक्ख, ५०१७८ मुसल्मान, ३७२ जैन और १८ कृस्तान,। राज्य का प्रधान पैदावार रुई, तंबाकू और चीनी है। राज के अनुमानिक फौजी १२ मैदान की और १० दूसरी तोपें, ५० गोलंदाज, ५०७ सवार और १२५०. पैदल हैं। नाभा के राजा को अंगरेजी सरकार की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है।

**इतिहास**—फूल नामक सिद्धू जाट के बड़े पुत्र तिलोक से नाभा-राज वंश है। फूल ने 'फूलपुर' नामक गांव बसाया, जो अब तक इस राज्य में है।

जब जान पड़ा कि लाहोर के राजा रणजीतसिंह ने संपूर्ण पंजाब जीत लेने की इच्छा कर ली है, तब नाभा के राजा ने अंगरेजी सहायता चाही। सन् १८०९ ई० में नाभा का राज्य पंजाब के दूसरे राज्यों के सहित अंगरेजी रक्षा में आया। नाभा के राजा 'यशवंतसिंह' सन् १८४० ई० में मर गए; उनके पुत्र राजा देवेंद्रसिंह ने सन् १८४५ की सिक्ख लड़ाई के समय अंगरेजों के विरुद्ध सिक्खों की सहायता की; इस अपराध के लिये उनको राजगद्दी से उतार कर ५०००० रुपए वार्षिक 'पेंशन' मिलने लगा, परंतु

उनके बड़े पुत्र भरपूरसिंह का अख़्तियार रक्खा गया। सन् १८५७ के बलवे के समय भरपूरसिंह ने राजभक्ति देखलाई, इसमे अंगरेजी सरकार ने उनको १००००० रुपए से अधिक मूल्य की भूमि दी। सन् १८६३ में राजा भरपूरसिंह की मृत्यु होने पर उनके भाई भगवानसिंह उत्तराधिकारी हुए। सन् १८७१ में जब राजा भगवानसिंह निःपुत्र मर गए, तब इसी परिवार के वर्तमान नाभा नरेश श्रीहीरासिंह मलवंडर बहादुर, जिनका जन्म लगभग सन् १८४३ ई० में था; राज्याधिकारी हुए। नाभा के राजा सिक्ख संप्रदाय के हैं।

## फरीदकोट।

पटिआले से और लुधियाने कसबे से ६० मील दक्षिण-पश्चिम पंजाब प्रदेश में एक देशी राज्य की राजधानी (३० अंश ४० कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ५९ कला पूर्व देशान्तर में) फरीदकोट है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय फरीदकोट कसबे में ११३२ मकान और ६५९३ मनुष्य थे; अर्थात् ३२४१ मुसलमान, १८६२ हिंदू, १२२६ सिक्ख और २६४ जैन।

**फरीदकोट का राज्य**—यह राज्य पटियाले के राज्य के पश्चिमोत्तर और फिरोजपुर जिले के दक्षिण-पूर्व ६४३ वर्गमील में है; जिसमें ख़ास फरीदपुर और कोटकपुरा दो भाग हैं। राज्य से लगभग ३००००० रुपए मालगुजारी आती है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस राज्य में ११५०४० मनुष्य और सन् १८८१ में ९७०३४ मनुष्य थे; अर्थात् ४०१८७ सिक्ख, २९०३५ मुसलमान, २७४६३ हिन्दू और ३४९ जैन।

फरीदकोट के राजा को अंगरेजी सरकार की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है और सैनिक बल २०० सवार, ६०० पैदल और पुलिस और ३ मैदान की तोपें हैं।

**इतिहास**—फरीदकोट का राजवंश बराड़वंशी जाट है। बादशाह अकबर के राज्य के समय भालन नामक जाट ने इस वंश की प्रतिष्ठा बढ़ाई;

उसके भतीजे ने कोटकपुरा का किला बनाकर स्वाधीन राज्य स्थापन किया। सन् ई० की उनीशवीं शताब्दी के आरंभ में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने इस राज्य को छीन लिया था; परंतु अंगरेजों ने रणजीतसिंह से छीन कर फरीदकोट के राजा को दे दिया। सन् १८४५ के सिक्ख-युद्ध के समय पहाड़सिंह ने अंगरेजों की सहायता की; जिसकी कृतज्ञता में अंगरेजी सरकार ने पहाड़सिंह को राजा की पदवी, छीना हुआ कोटकपुरा का किला और नाभा के राजा से छीन कर आधा राज्य दे दिया। पहाड़सिंह के पुत्र राजा वजीरसिंह के देहांत होने पर उनके पुत्र फरीदकोट के वर्तमान नरेश राजा बिक्रमसिंह बहादुर; जिनका जन्म सन् १८४२ ई० में हुआ था, सन् १८८३ में राज्यसिंहासन पर बैठे।

## सरहिन्द।

राजपुर जंक्शन से १६ मील ( अंबाला जंक्शन से ३३ मील ) पश्चिमोत्तर सरहिंद का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के लुधियाने जिले में सरहिंद एक छोटा कसबा है। गजनी के महमूद के समय मुसलमानों के सरहद का यह शहर था, इसलिये इसका नाम सरहिंद पड़ा। पहले सरहिंद प्रदेश में अंबाला जिला और पटियाला तथा नाभा के देशी राज्य भी शामिल थे। अकबर की राजगद्दी के समय से औरंगजेब के मरने के समय तक लगभग १५० वर्ष पर्यंत यह मुगलों के राज्य में सबसे उन्नति वाले शहरों में से एक था। बहुतेरे मकबरे और अनेक मसजिद अबतक यहां खड़ी हैं और पुराने शहर के चारो ओर कई एक मीलों तक तबाहियों के ईंटों की ढेर देख पड़ते हैं।

वर्तमान बस्ती के उत्तर; सदन कसाई का मकबरा है, जिसके पश्चिम का बगल गिर गया है; मकबरे के मध्य में ४५ फीट ब्यास का गुंबज है। इसके अतिरिक्त यहां मीर, मीरन आदि मुसलमानों के कई एक पुराने मकबरे हैं। बड़ी सरहिंद-नहर, जो सन् १८८२ ई० में खुली थी, यहां से २० मील दूर

रोपड़ के निकट सतलज से निकल कर सरहिंद और पटियाला होकर कर्नाल के निकट यमुना में मिली है।

## लुधियाना।

सरहिंद से ३८ मील (अंबाला जंक्शन से ७१ मील) पश्चिमोत्तर लुधियाना का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के अंबाला विभाग में (३० अंश ५५ कला २५ विकला उत्तर अक्षांश; ७५ अंश ५३ कला ३० विकला पूर्व देशान्तर,) सतलज नदी से ८ मील दक्षिण जिले का सदर स्थान लुधियाना एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय लुधियाने में ४६३३४ मनुष्य थे (२५५०६ पुरुष और २०८२८ स्त्रियां); अर्थात् ३०२५७ मुसलमान, १३८७१ हिंदू, १०६५ सिक्ख, ८१३ जैन और ३२८ कृस्तान। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ८५ वां और पंजाब के अंगरेजी राज्य में ११ वां शहर है।

शहर के पश्चिमोत्तर किला है, जिसमें ५०० आदमी के रहने के योग्य बारक अर्थात् सैनिक-गृह बने हैं। छावनी के पश्चिम गिर्जा और पवलिग बाग हैं; इनके अतिरिक्त लुधियाने में जिले की कचहरियां, जेल, सराय, खैराती अस्पताल और स्कूल हैं। मुसलमानी फकीर सेखअवदुलकादिर जलानी के दरगाह पर वर्ष में एक प्रसिद्ध मेला होता है; जिसमें हिंदू और मुसलमान दोनों बराबर आते हैं।

कश्मीरी और काबुली पठान इस शहर में अधिक रहते हैं. इससे मुसलमानों की संख्या बहुत हो जाती है। पशमीने, ऊन के बने हुए शाल के लिये लुधियाना शहर प्रसिद्ध है। पठानलोग कश्मीरी शाल और पशमीना कपड़ा बनाते हैं। यहां रामपुर के मुलायम ऊन के शाल, कपड़ा, दुपट्टा, पगड़ी, गाढ़ी और अनेक तरह के असबाब की सौदागरी होती है। रेलवे खुलने से लुधियाना गल्ले के बाजार का 'केंद्र' हुआ है।

**लुधियानाजिला**—यह अंबाले विभाग के पश्चिम का जिला

है। इसके पूर्व अंबाला जिला; दक्षिण पटिया, जींद, नाभा और मलर-कोटला राज्य; पश्चिम फिरोजपुर जिला और उत्तर सतलज नदी, बाद जलंधर जिला है। जिले के भीतर देशी राज्यों के कई एक टुकड़े हैं। जिले का क्षेत्रफल १३७५ वर्ग मील है। जिले के भीतर कोई पहाड़ी अथवा नदी नहीं है। सरहिंद-नहर की शाखा जिले में निकाली गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय लुधियाने जिले में ६४८५४७ मनुष्य थे। जिले में हिन्दुओं की संख्या से कुछही कम मुसलमान और हिन्दुओं के लगभग आधा सिक्ख है। जिले की मनुष्य संख्या के $\frac{1}{3}$ जाट हैं; दूसरी जातियों में राजपूत, गूजर और ब्राह्मण अधिक हैं। राजपूत प्रायः सब मुसलमान हैं (अंबाले जिले में देखो)। गूजर में भी बहुतेरे मुसलमान हैं। जिले में लुधियाने को छोड़ कर ३ अन्य कसबे हैं; जगरून (जन संख्या सन् १८९१ में १८११६), रायकोट और मछवाड़ा।

इतिहास—सन् १४४० ई० में लोदी खांदान के युसुफ और निहंग नामक २ शाहजादों ने इस शहर को नियत किया; इससे इसका नाम लुधियाना पड़ा। लोदी खांदान के विनाश होने के पश्चात् यह शहर मुगलों के हस्तगत हुआ। सन् १७६० ई० में रायकोट के राय लोगों ने मुगलों से शहर को छीन लिया। अठारहवीं शताब्दी के अंत में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने उनको निकाल कर जींद के राजा बाघसिंह को शहर दे दिया। सन् १८०९ में यह अंगरेजों के आधीन हुआ। सन् १८३४ से १८५४ ई० तक लुधियाने में अंगरेजी सेना रहती थी।

## मलियरकोटला।

लुधियाने शहर से ३० मील दक्षिण पंजाब में एक देशी राज्य की राजधानी मलियरकोटला है।

सन् १८९१ की मनुष्य-संख्या के समय इसमें २१७५४ मनुष्य थे;

अर्थात् १५५२० मुसलमान, ४१६१ हिंदू, १२२७ जैन, ३७ सिक्ख और ९ कृस्तान।

मलियरकोटला राज्य—इस राज्य का क्षेत्रफल १६४ वर्गमील और इसकी मालगुजारी लगभग २८४००० रुपया है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय राज्य में ७५७५० मनुष्य और सन् १८८१ में ७१०४४ मनुष्य थे; अर्थात् २८९३१ सिक्ख; २४६१६ मुसलमान, १६१७१ हिंदू, १३२३ जैन और ३ कृस्तान। राज्य का सैनिक बल ७६ सवार, २०० पैदल ८ मैदान की तोपें और १६ गोलंदाज हैं। यहां के नवाब को ११ तोपों की सलामी मिलती है।

इतिहास—यहां के नवाब अफगान मुसलमान हैं, जिनके पुरुषे काबुल से आए और सन् ई० की अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में मुगलों के राज्य की घटती के समय धीरे धीरे स्वाधीन बनगए। मलियरकोटला के नवाब जमाल खां ने सन् १७३२ ई० में पटियाले के राजा आलासिंह के विरुद्ध शाही सेना की मदद दी थी और सन् १७७१ में अपने पड़ोसी सिक्खों के विरुद्ध अहमदशाह दुर्रानी के लेफ्टिनेंट की सहायता की। जब जमालखां लड़ाई में मारेगए; तब उनके पुत्रों में विवाद हुआ; अंत में बैरामखां नवाब बने। लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने इस राज्य को लेलिया था; परंतु सन् १८०९ में अंगरेजी सरकार ने महाराज से संधि होजाने पर वहां के नवाब को राजगद्दी पर फिर बैठाया। मलियरकोटला के वर्तमान नवाब महम्मद इब्राहिम अलीखां बहादुर ३५ वर्ष के युवा हैं।

## फिलौर।

लुधियाने से ८ मील ( अंबाला जंकशन से ७९ मील ) पश्चिमोत्तर फिलौर का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के जलंधर जिले में सतलज नदी के किनारे पर रेलवे पुल के निकट तहसीली का सदरस्थान फिलौर एक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय फिलौर में ७११७ मनुष्य थे; अर्थात्

४०३२ मुसल्मान; २७८९ हिंदू, २६० सिक्ख, ७५ कृस्तान और १ जैन।

फिल्लौर में तहसीली कचहरी, पुलिसस्टेशन, मिडिलक्लास स्कूल और जंगली 'डिवीन' का सदर स्थान है। लोग यहां के बाजार से लकड़ी खरीद कर सतलज में बहाकर नीचे के देश में लेजाते हैं। सतलज के किनारे पर सिक्खों के समय का एक दृढ़ किला है।

## जलंधर।

फिल्लौर से २४ मील (अंबाला जंक्शन से १०६ मील) पश्चिमोत्तर जलंधर शहर का रेलवे स्टेशन है। छावनी का स्टेशन ३ मील पहले मिलता है। पंजाबप्रदेश में (३१ अंश १९ कला ३६ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ३६ कला ४८ विकला पूर्व देशांतर में) किस्मत और जिले का सदरस्थान जलंधर एक पुराना शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शहर और छावनी में ६६२०२ मनुष्य थे; अर्थात् ३७४७१ पुरुष और २८७३१ स्त्रियां। इनमें ३८९९४ मुसलमान; २३०१५ हिंदू, २२७४ सिक्ख, १५६९ कृस्तान. ३४७ जैन, और ३ पारसी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ५३ वां और पंजाब में ८वां शहर है।

पुराने शहर की निशानी २ पुराने तालाब हैं। हाल के शहर के कई एक महल्ले अलग अलग खाश दीवारों से घेरे हुए हैं। जलंधर में कचहरियों के अतिरिक्त १ गरीबखाना, जनाना स्कूल, सेखकरीमबख्श की बनवाई हुई एक सुंदर सराय और कई एक स्कूल हैं।

शहर से ४ मील दूर ७ $\frac{1}{4}$ वर्गमील में फौजी छावनी फैली है, जो सन् १८४६ ई० में नियत हुई; इस में साधारण तरहसे यूरोपियन पैदल का एक रेजीमेंट, आर्टिलरी का १ बैटरी और देशी पैदल का १ रेजीमेंट रहती है। छावनी में एक उत्तम पब्लिक बाग है।

जलंधरजिला—यह जलंधर डिविजन के दक्षिण का जिला है। इसके पूर्वोत्तर होशियारपुर जिला, पश्चिमोत्तर कपुरथला का राज्य और

दक्षिण सतलज नदी है। जिलेका क्षेत्रफल १३२२ वर्गमील है; जिसमें जलंधर, नवशहरा, फिलौर और रनकोदर ४ तहसीली हैं। जिले के पूर्व के कोने में राहोन झील ५०० एकड़ में और फिलौर के निकट की झील लगभग २५० एकड़ भूमि पर फैली हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जलंधर जिले में ९०८१९१ मनुष्य थे। जिले में हिंदू और मुसलमान दोनों की संख्या प्रायः बराबर है। हिंदुओं के लगभग चौथाई सिक्ख हैं। जलंधर जिले में जाट संपूर्ण दूसरी जातियों से बहुत अधिक हैं, जिनकी संख्या सन् १८८१ में १६३७५७ थी। इनके कब्जे में जिले की आधी भूमि है। इसके बाद राजपूत की संख्या है; जो सन् १८८१ में ४३७८९ थे; जिनमें ५६०८ के अतिरिक्त सब मुसलमान थे। इनसे कम संख्या ब्राह्मण और खत्रियों की हैं।

इस जिले में जलंधर शहर के अतिरिक्त राहोन (सन् १८९१ में १०६६७ मनुष्य), कर्त्तारपुर (१०४४१ मनुष्य), नकोदर, नूरमहल, फिलौर, बिलगा; जंडियाला, महतपुर और नवशहरा कसबे हैं।

**इतिहास**—ऐसा प्रसिद्ध है कि जलंधर दैत्य ने जलंधर शहर को बसाया, जिसको अंतमें भगवान शिव ने मारडाला था। जलंधर "दोआव" अतिप्राचीन काल में एक चंद्रवंशी राजा के वंशधरों द्वारा शासित होता था; जिनकी संतानलोग अवतक कांगड़ा की पहाड़ियों में छोटे प्रधान हैं; वे लोग कहते हैं कि हमलोग महाभारत के युद्ध में लड़नेवाले राजा सुशर्मा के वंशधर हैं; हमलोगों के पूर्वपुरुषों ने मुलतान से जलंधर दोआव में आकर कटौच राज्य कायम किया था।

(महाभारत—विराटपर्व के ३० वें अध्याय में लिखा है कि दुर्योधन की सेना दो भाग होकर विराटनगर पर चढ़ाई की। प्रथमभाग का सेनापति त्रिगर्त्तदेश का राजा सुशर्मा हुआ, जिसने विराटनगर में जाकर विराट के अहीरों से सब गऊ छीन ली थी। द्रोणपर्व के १६ वें अध्याय में है कि त्रिगर्त्तदेशीय प्रस्थलाधिपति राजा सुशर्मा अपने चारो भाइयों और १० सहस्र रथों के सहित अर्जुन से लड़ने के लिये तय्यार हुआ और शल्य-

पर्व के २७ वें अध्याय में लिखा है कि अर्जुन ने त्रिगर्त्तदेश के राजा सुशर्मा को मारडाला। )

सिकंदर के आक्रमण के पहिले जलंधर शहर कटोच राजपूत के राज्य की राजधानी था। चीन के हुएंत्संग ने सातवीं शताब्दी में लिखा था, कि जलंधर शहर २ मील के घेरे में एक बड़े राज्य की राजधानी है। मुगलों के आधीन जलंधर शहर सतलज और व्यास के बीच के देश की राजधानी बना। सन् १७६६ में यह सिक्खों के हस्तगत हुआ। खुसहालसिंह के पुत्र बुद्धसिंह ने शहर में एक किला बनवाया। सन् १८११ में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने बुद्धसिंह को खदेरकर जलंधर पर अधिकार कर-लिया। सन् १८४९ ई० में अंगरेजी सरकार ने जलंधर में कमिश्नर का सदर स्थान बनाया, जिसके आधीन जलंधर, होसियारपुर और कांगड़ा ये ३ जिले हुए।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—पद्मपुराण (उत्तरखंड, ३ रा अध्याय) एक समय इन्द्र ने कैलास पर जाकर भगवान शंकर को प्रसन्न किया। महादेवजी बोले कि हे देवराज! मैं प्रसन्न हूं, तुम वरदान मांगो। इन्द्र ने अहंकार युक्त कहा, कि हे प्रभो! मैं आप के समान योद्धा से युद्ध करना चाहता हूं। शंकरजी ने 'एवमस्तु' कहा। इन्द्र के चले जाने पर महादेवजी का क्रोध मूर्तिमान होकर खड़ा होगया और बोला कि हे प्रभो! मुझ को आज्ञा दो; मैं कौन काम करूं; तब शिवजी ने कहा, कि स्वर्ग के समुद्र और सागर में प्राप्त होकर इन्द्र को जीतो। ऐसा सुन वह क्रोध अंतरध्यान होगया, जब गंगा सागर का संगम होगया, तब समुद्र ने महा नदी को प्राप्त करके उसमें पुत्र उत्पन्न किया; उस पुत्र के रोदन करने से पृथ्वी कांपउठी, जिससे तीनों लोक में महान शब्द हुआ। ब्रह्माजी तीनों लोकों को भय भीत देख कर समुद्र के पास गए और समुद्र से बोले, की तुम बृथा क्यों गर्जते हो। समुद्रने कहा, कि हे प्रभो! मैं नहीं गर्जता हूं, यह मेरे पुत्र का शब्द है। समुद्र की स्त्री ने पुत्र को लाकर ब्रह्माजी के गोद में बैठा दिया; जब बालक ने ब्रह्माजी का 'कूच' पकड़ लिया और किसी भांती से उनके छुड़ाने पर नहीं

छोड़ा; तब समुद्र ने बालक के हाथ से ब्रह्मा का कूच छोड़ा दिया। ब्रह्मा ने बालक का पराक्रम देखकर प्रसन्न हो, उसको 'जालंधर' अर्थात् कूच का पकड़ ने वाला कहा, इस लिये उसका नाम जालंधर हुआ। ब्रह्मा ने जालंधर को ऐसा वरदान दिया कि यह देवताओं से अजेय होगा और पाताल सहित स्वर्ग को भोगैगा।

(४ वां अध्याय) एक समय जब जालंधर युवा होगया था, दैत्यों के गुरू शुक्रजी ने समुद्र से कहा कि तुह्मारा बालक तिनों लोक का राज्य करेगा; तुमने जंबूद्वीप में योगिनीगणों से सेवित महा पीठ को डुबा दिया है; उसको अब छोड़ कर वहां जालंधर का राज तिलक करदो। समुद्र की आज्ञा से मय दानव ने पुण्यदेश जालंधरपीठ में जालंधर के लिये रत्नमय उत्तम पुर बनाया। समुद्र नें शुक्रजी के सहित उस पुर में जाकर जालंधर का अभिषेक किया। उसी समय पाताल के रहने वाले कालनेमी इत्यादि दैत्यगण जालंधर से आ मिले। जालंधर पिता का दिया हुआ राज्य करने लगा। पूर्व समय की स्वर्ग के रहने वाली स्वर्णा नामक अप्सरा की कन्या परम सुन्दरी 'वृंदा' से जालंधर का विवाह हुआ। जब जालंधर ने शुक्र के मुख से सुना कि देवताओं ने समुद्र मथन करके उनका सब धन निकाल लिया है, तब देवताओं से लड़ ने के लिये उद्यत हुआ।

(५ वां अध्याय) जलंधर अपनी भारी सेना से यमराज, वरुण आदि लोकपालों को जीत कर इन्द्रपुरी में पहुंचा। इन्द्र बृहस्पति के उपदेश से देवताओं के सहित वैकुंठ में विष्णु की शरण में गए। लक्ष्मीजी ने विष्णु भगवान से कहा कि मेरा भाई जलंधर आपके मारने के योग्य नहीं है, आप उसको मत मारिए। विष्णु देवताओं को अभय देकर उनके साथ चले। इन्द्रपुरी में दैत्य और देवताओं का बड़ा भयानक युद्ध होने लगा।

(६ वां अध्याय) विष्णु ने कालनेमी राक्षस को मारडाला। (७) विष्णु और जालंधर का घोर युद्ध होने लगा। भगवान तो लक्ष्मी के प्रेम से जालंधर को नहीं मारा, परंतु उसके बाण से आपही गिर गए; जब जालंधर उनको उठा कर अपने रथ में चढ़ा लिया, तब लक्ष्मीजी रोदन

करती हुई जालंधर से बोली कि हे भाई! तुमने विष्णु को जीत लिया; पर अब अपनी बहन को विधवा मत करो; ऐसा बहन का वचन सुन उसने विष्णु को छोड़ दिया। विष्णु ने जालंधर से कहा कि हम तुह्मारे कर्म से प्रसन्न हुए हैं; तुम वर मांगो। जालंधर ने कहा कि हे भगवन्! आप लक्ष्मी सहित हमारे पिता के गृह में निवास कीजिए। भगवान उसको यह वरदान देकर लक्ष्मी सहित क्षीरसमुद्र में चले गए; तभी से वह अपने श्वशुर समुद्र के मंदिर में हैं; अर्थात् समुद्र में बसते हैं। (८ अध्याय) जालंधर ने स्वर्ग को जीत क्षीर समुद्रसे निकाला हुआ रत्न सब देवताओं से छीन लिया; शुंभ और निशुंभ को युवराज बना कर बहुत वर्ष तक जालंधरपीठ में राज्य किया। उसके राज्य में देवताओं के अतिरिक्त संपूर्ण प्रजा सुखी थी। (९ वां अध्याय) देवतालोग ब्रह्मा को साथ ले कैलास में जाकर महादेवजी के शरणागत हुए। विष्णु भगवान भी वहां पहुंचे। ब्रह्मा, विष्णु, शिव और इन्द्र आदिक सब देवताओं के तेज से जालंधर के मारने के लिये सुदर्शन चक्र बनाया गया।

(१० अध्याय) जालंधर ने नारदजी के मुख से पार्वतीजी की सुंदरता की प्रशंसा सुन कर राहू को भेज कर शिवजी से पार्वती को मांगा (११) जब राहू निराश लौट आया, तब जालंधर दैत्यों की सेना तैयार की। प्रथम उसने समुद्र में विष्णु के समीप जाकर प्रीति पूर्वक उनसे कहा कि आप इस स्थान में सुख से निवास कीजिए। लक्ष्मीजी ने जालंधर को अक्षत दिया; विष्णु ने भी शुभ के लिये पूजन किया। उसके पश्चात् समुद्र और बृंदा ने उससे कहा कि तुम शिव से मत लड़ो, पर उसने उनका बचन स्वीकार नहीं किया; वह भारी सेना लेकर कैलास में पहुंचा। महादेवजी ने सखियों के सहित पार्वती को ऊंचे पर्वत के कंगूरे में बैठा दिया। देवताओं से युक्त शिवगणों से दानवों का युद्ध होने लगा। (१३) जब महादेवजी लड़ने लगे, तब जालंधर शिव का रूप बन कर मानसोत्तर पर्वत की गुहा में पार्वती के निकट गया; उसने पार्वती को गणेश और स्वामिकार्तिक के कटे हुए सिर देख लाए, जिनको देख वह रोदन करने लगी। शिव रूपी जालंधर ने

पार्वती से कहा कि हे प्रिये! तुम अभी मुझ से प्रसंग करो। उस विषाद के समय उसके ऐसे वचन सुन पार्वती को संदेह हुआ।

(१४ वां अध्याय) जब माया के महादेव से पार्वती का मन मोह को प्राप्त हुआ, तब क्षीरसमुद्र में सोते हुए नारायण का हृदय अकस्मात् क्षोभित हो गया। भगवान ने गरुड़ को युद्धस्थल में भेजा। गरुड़ ने माया के शिव को देख कर वहां का सब वृत्तांत भगवान को सुनाया और उनसे कहा कि हे भगवन्! आप के शाले जालंधर की स्त्री वृन्दा परम सुन्दरी है; आप उससे भोग करके महादेवजी का उपकार कीजिए। भगवान ने शेषजी के सहित जटा बल्कल धारण करके माया से पुण्य कारी वन में एक आश्रम रचा और उस वन में मंत्र से वृन्दा को आकर्षण किया। वृन्दा ने रात्रि में विधवा के भय का सूचक भयंकर स्वप्न देखा, तब वह रथ में सवार हो एक सखी सहित वन में जाकर अपने पति का स्मरण करने लगी। वहां एक राक्षस ने रानी वृन्दा के रथ की घोड़ियों को खाकर वृन्दा को पकड़ लिया और उस से कहा कि तुम्हारे स्वामी को महादेवजी ने मारडाला तुम हमको अपना पती बनाओ। रानी ऐसा सुन प्राण रहित सी होगई। (१५) उस समय जटा बल्कल धारण किए हुए नारायण वृन्दा के पास आए; उनके क्रोध दृष्टि से राक्षस वृन्दा को छोड़ कर भस्म होगया। उसके पश्चात् एक बाघ आगया। जिसके भय से वृन्दा तपस्वी रूप भगवान के कंठ में लिपट गई, तब भगवान बोले कि तुम्हारे आलिङ्गन के प्रभाव से तुम्हारे स्वामी का सिर फिर अंगों से युक्त हो जायगा; तुम चितशाला में जाओ। जब वह अपाने पति का सिर लेकर चितशाले में गई, तब भगवान जालंधर का रूप धारण करके वहां गए। वृन्दाने विष्णु को जालन्धर जान कर उसके साथ सह वास किया। कुछ दिन प्रसंग करने के पश्चात् जब एक दिन वृन्दा ने भगवान को पहचान लिया, तब वह बोलें की जालंधर लड़ाई में मारा गया है। अब तुम हमको सेवन करो। उस समय वृन्दा ने भगवान को शाप दिया कि जिस प्रकार तुम ने तपस्वी बन मुझको छला है, उसी प्रकार से कोई माया रूपी तपस्वी तुम्हारी स्त्री को हर ले जायगा। इसके पश्चात् भगवान अंतरधान हो गए; माया सब नष्ट हो

गई। वृन्दा ने घोर तपस्या करके अपने शरीर को सुखाडाला और वह योगाभ्यास से विषयों से मन को खींच कर शरीर छोड़ ब्रह्मलोक में चलीगई। जिस स्थान में वृन्दा ने अपना शरीर छोड़ा, उसी स्थान पर गोवर्द्धन पर्वत के निकट वृन्दावन हुआ।

(१६ वां अध्याय) उधर पार्वती की सखी जया ने उनकी आज्ञानुसार पार्वती का रूप धर कर जालंधर की परिक्षा कर उसको पहचान लिया और पार्वती से कहा कि यह शिव रूप धारी जालंधर है। उस समय पार्वतीजी डर कर कमल में प्रवेश कर गई। दूतों ने जब रण भूमि से आकर जालंधर से कहा कि तुम्हारी रानी को विष्णु ने हरलिया है; (१७) तब वह रणभूमि में आकर लड़ने लगा।

( १८ अध्याय ) बड़ी लड़ाई के पश्चात् शिवजी ने चक्र से जालंधर का सिर काट डाला; जब वह सिर आकाश में भ्रमण करने लगा, तब शिवजी ने उसको दो टुकड़े कर दिया, जो हिमवान पर्वत पर गिरे और पीछे शिव में लीन होगए। इसके उपरांत शिवजी नाचते हुए जालंधर के रुण्ड को चक्र से काटने लगे। जब उसके मेदासे पृथ्वी पूर्ण हो गई, तब शिवजी की आज्ञा से योगिनियों ने क्षण मात्र में मांस समूह को खालिया। शक्तियों से दबाया हुआ जालंधर के क्षीण देह से तेज निकल कर महादेव जी में लीन हो गया। देवता गण प्रसन्न हुए। शिवजी का अभिषेक हुआ।

( इसी पुराण के १६ वां अध्याय से १०४ वें अध्याय तक प्रसंग बस जालंधर की उत्पत्ती ओर वध की कथा फिर लिखी गई है )

## कपुरथला।

जलंधर से ११ मील पश्चिमोत्तर ( सुलतांपुर से १६ मील ) व्यासनदी से ८ मील दूर पंजाब में प्रसिद्ध देशी राज्य की राजधानी कपुरथला है। जलंधर से कपुरथला को पक्की सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कपुरथला राजधानी में १६७४७

मनुष्य थे; अर्थात् १०१६३ मुसलमान, ५२५३ हिंदू, १२८९ सिक्ख, ३४ जैन और ८ कृस्तान।

राजधानी में महाराज का सुंदर महल बना है; उत्तम वाटिका लगी है; राज भवन और महाराज की सरकारी इमारतों में बिजुली की रोशनी होती है।

**कपुरथला राज्य**—राज्य के पश्चिमोत्तर सीमा पर व्यासनदी बहती है। राज्य का क्षेत्रफल ६२० वर्गमील है। सन् १८९१ की मनुष्यगणना के समय इसमें २९९६९० और सन् १८८१ में २५२६१७ मनुष्य थे; अर्थात् १४२९७४ मुसलमान, ८२९०० हिंदू, २६४१३ सिक्ख, २१४ जैन, ३५ कृस्तान और १ बौद्ध। महाराज को पंजाब के राज्य से लगभग १०००००० रुपए मालगुजारी आती है, जिसमें से १३१००० रुपया अंगरेजी सरकार को सैनिक खरच के लिए दियाजाता है। पंजाब के राज्य के अतिरिक्त अवध में ७०० वर्गमील कपुरथला के महाराज की मिलकियतें हैं, जिनमें सन् १८८१ की मनुष्यगणना के समय २४१३०१ मनुष्य बसते थे। उन मिलकीयतों से महाराज को ८००००० रुपए वार्षिक आमदनी है। महाराज का सैनिक बल ४ किले की और १ मैदान की तोपें; १८६ सवार, ९२६ पैदल और ३०३ पुलिस हैं। इनको अंगरेजी सरकार से ११ तोपों की सलामी मिलती है।

राज्य का प्रधान पैदावार ऊख, कपास, 'गेहूं' मकई तंबाकू हैं। राज्य में ४ कसबे हैं। कपुरथला (जन संख्या सन् १८३१ में १६७४७), फुगवारा (जन संख्या सन् १८३१ में १२३३१), फगवारा और सुलतांपुर।

**इतिहास**—कपुरथला का राजवंशकलालजाति और सिक्ख संप्रदाय का है। यहां के महाराज के पुरुषे एक समय सतलज नदी के दोनों ओर के देशों पर (सीस सतलज और ट्रूंस सतलज) और बारी दोआब में भी अधिकार किए हुए थे। बारीदोआब के अहलू गांव में इनके पुरुषे रहते थे, इस लिए राजवंश के लोग अहलुआलिया कहलाते हैं। महाराज के पुरुषे सरदार यशासिंह ने सन् १७८० ई० में बारीदोआब में तलवार से अपना अधिकार करलिया और पीछे सिससतलज के राज्य के कई एक भागों को जीता और सन् १८०८ में शेष भागों को महाराज रणजीतसिंह से पाया। सन्

१८०१ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंट और कपुरथला के सरदार से संधि हुई। सरदार ने अपने सीससतलज राज्यों में अंगरेजी फौज की सहायता करनेका करार किया। सन् १८४५ की पहली सिक्ख-लड़ाई के समय कपुरथला की सेना "अलीवाल" में अंगरेजों से लड़ी, इस कारण अंगरेजी गवर्नमेंट ने सरदार फतहसिंह के पुत्र सरदार निहालसिंह के सतलज के पूर्व ओर का राज्य जब्त कर लिया। सन् १८४१ ई० में अंगरेजी सरकार ने सरदार निहालसिंह को राजा बनाया। सन् १८५२ में निहालसिंह के देहांत होने पर उनके पुत्र महाराज रणधीरसिंह राज्याधिकारी हुए; जिन्होंने अंगरेजों को सन् १८५७ के बलवे के समय जलंधर दोआब में अपनी सेना से बड़ी मदद दी और सन् १८५८ में अवध में सेना लेजाकर अच्छी सहायता की; जिसकी कृतज्ञता में अंगरेजी सरकार ने उनको अवध में बांउड़ी, बिथौली और एकवनाकी मिलिकियतें दी, जिनमें वार्षिक मालगुजारी ८ लाख रुपया आती है। सन् १८७० में महाराज रणधीरसिंह इंगलैंड जाते हुए "अदन" में मरगए; उनके पुत्र खड्गसिंह उत्तराधिकारी हुए। महाराज खड्गसिंह की मृत्यु होने के पश्चात् सन् १८७७ में उनके पुत्र कपुरथला के वर्त्तमान नरेश महाराज जगतजीतसिंह बहादुर, जिनकी अवस्था २१ वर्ष की है, उत्तराधिकारी हुए; जो अंगरेजी, संस्कृत और पारसी अच्छी तरह से पढ़े हुए हैं। राज्य का प्रबंध अच्छा है। राज्य में विद्या की उन्नति होरही है।

---

# तेरहवां अध्याय।

## (पंजाब में) होशियारपुर, ज्वालामुखी, रोवालसर, कांगड़ा, मंडी, डलहौसी, चंबा, पठानकोट, गुरदासपुर और बटाला।

### होशियारपुर।

जलंधर शहर से २५ मील पूर्वोत्तर शिवालिक पहाड़ी के पादमूल से ५ मील दूर एक धारा के चौड़े बेड़ के निकट पंजाब के जलंधर विभाग में

जिले का सदर स्थान होशियारपुर एक कसबा है। जलंधर और होशियारपुर के बीच में उत्तम सड़क बनी है और घोड़े गाडी की डाक चलती है। मार्ग के मध्य में एक पढ़ाव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय होशियारपुर में २१५५२ मनुष्य थे; अर्थात् १०५८२ मुसलमान, ९३१० हिंदू, ४४४ जैन, २७० सिक्ख, ४५ कृस्तान और १ दूसरे।

कसबे से १ मील दूर जिले की कचेहरियां, अस्पताल और सराय है। कसबे में सड़क के निकट मक्खनमल की बनवाई हुई सुंदर धर्मशाला है और गल्लों, चीनी और तंबाकू की सौदागरी तथा देशी कपड़ा, जूता, पीतल और तांबे के बर्तन और लाह की दस्तकारी होती है।

**होशियारपुर जिला**—इसके पूर्वोत्तर कांगड़ा जिला और बिलासपुर का देशी राज्य; पश्चिमोत्तर व्यास नदी, जो गुरदासपुर जिले से इसको अलग करती है; दक्षिण-पश्चिम जलंधर जिला और कपुरथला का राज्य और दक्षिण सतलज नदी है। जिले का क्षेत्रफल २१८० वर्गमील है, इसमें मैदान और पहाड़ियां दोनों हैं और जंगल बहुत है। वनों में बाघ, भेड़िया, हरिन इत्यादि बनजंतु रहते हैं। सोहनधारा के पेड़ में कुछ कुछ सोना मिलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १०११३८४ मनुष्य थे। जिले में आधे से अधिक हिंदू बसते हैं; जाट सब जातियों से अधिक हैं, बाद ब्राह्मण; राजपूत और गूजर की संख्या है। मैदान के राजपूत आम तरह से मुसलमान हैं।

इस जिले में होशियारपुर के अतिरिक्त अमरटांडा (जन संख्या सन् १८९१ में ११६३२) मियानी, हरियाना, दसुआ, आननपुर, गढ़शंकर और ऊना कसबे हैं।

**इतिहास**—कहावत के अनुसार होशियारपुर, ई० सन् के चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में बसा। सिक्खों की बढ़ती के समय एकदा के प्रधान ने इस पर अधिकार किया; जिससे सन् १८०९ में महाराज रणजीतसिंह ने

ले लिया। सन् १८१८ के लगभग सतलज से व्यासा तक का संपूर्ण देश लाहौर के आधीन हुआ और सन् १८४६ में अंगरेजी सरकार के हाथ में आया।

## ज्वालामुखी।

होशियारपुर कसबे से ४१ मील ( जलंधर से ७४ मील ) पूर्वोत्तर एक पहाड़ी के पादमूल पर 'ज्वालामुखी' एक कसबा है, जिसमें ज्वालामुखी देवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है।

होशियारपुर से ८० मील ( जलंधर से १०५ मील ) पूर्वोत्तर कांगड़ा कसबे होकर 'धर्मशाल' छावनी तक सुगम चढ़ाव उतराव का पहाड़ी मार्ग बना है, जिस पर तांगे और इक्के चलते हैं, जगह जगह पड़ाव; धर्मशाले और दुकानें हैं। पड़ाव और धर्मशालों में मोदियों की दुकान रहती है और सर्वत्र मील के पत्थर लगे हैं। इसी मार्ग से ४१ मील जाकर ८ मील दूसरे मार्ग से ज्वालामुखी पहुंचना होता है। मैं होशियारपुर में किराए के इक्के पर सवार हो ज्वालामुखी को चला।

५ मील से आगे पहाड़ियों की चढ़ाई उतराई आरंभ हो जाती है। होशियारपुर से ९ मील पर पड़ाव ( जहां "धर्मशाल" छावनी में जाने आने के समय अंगरेजी सेना टिकती है ), ११$\frac{1}{2}$ मील पर छोटी चट्टी, १६ मील पर पड़ाव और १८ मील पर स्लेट पत्थर के टुकड़ों से छाई हुई एक दो मंजिली धर्मशाला मिलती है। पड़ाव से धर्मशाले तक २ मील समतल भूमि है, आगे फिर चढ़ाव उतराव का मार्ग आरंभ हो जाता है। २२ मील पर एक धर्मशाला और साधु का मठ, २५$\frac{1}{2}$ मील पर पक्की धर्मशाला, २५$\frac{3}{4}$ मील पर पानी का झरना और २८$\frac{1}{2}$ मील पर बड़ा पड़ाव है; जहां वर्षाकाल में कई एक हाकिम रहते हैं।

पड़ाव से १$\frac{1}{2}$ मील दूर होशियारपुर जिले में चिंतापूर्णी नामक एक छोटी बस्ती है; जहां पड़ाव से एक दूसरा मार्ग गया है। बस्ती में पंडा और

मोदियों के मकान और एक गहड़ा सरोवर है, जिसमें १५० सीढ़ियों के नीचे पानी है। सरोवर के ऊपर एक मंदिर के भीतर मार्बुल का छोटा मंदिर है; जिसमें चिंतापूर्णी देवी लिंगरूप मे स्थित हैं। यात्रीगण दूर दूर से जाते हैं और सरोवर में स्नान कर के देवी की पूजा करते हैं।

बड़े पड़ाव से आगे होशियारपुर से २९$\frac{1}{2}$ मील और ३२ मील पर मोदियों की दुकानें, ३८$\frac{1}{2}$ पर चट्टी और ३९ मील पर व्यास नदी मिलती है; जिस पर नाव का पुल है। मैंने पुल के निकट नदी में एक मसक देखी, जिस पर तैरकर लोग पार हो जाते हैं। वहां के लोग किसी बड़े जानवर के साबित चमड़े को सीकर ऐसी मसक बना लेते हैं कि उसके भीतर पानी न घुस सके और उसी के सहारे नदी उतर जाते हैं। नदी के दूसरे पार अर्थात् होशियारपुर से ३९$\frac{1}{2}$ मील पर कांगड़ा जिले में डेहरा बस्ती है; जिसमें तहसीली, पुलिस की चौकी और अनेक मोदियों की दुकान हैं और ४१ मील से आगे धर्मशाला जानेवाली सड़क छूटजाती है; दहिने ज्वालामुखी तक ८ मील का दूसरा मार्ग है; जिसके बीच में एक नदी मिलती है। मैं होशियारपुर से ज्वालामुखी (४९ मील) दो दिन में पहुंचा। मार्ग मे यात्रियों को किसी तरह का भय नहीं है; स्थान स्थान में पहाड़ी जंगलों का उत्तम दृश्य देखने में आता है और समय पर गरना के फूलों की सुगंध फैलजाती है।

पंजाब-कांगड़ा जिले के डेहरा तहसीली में ज्वालामुखी पुराना पहाड़ी कसबा है; जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५४२ मकान और २४२४ मनुष्य थे; अर्थात् २२१७ हिंदू, १९६ मुसलमान और ११ जैन। निवासी देवी के पंडे अधिक हैं।

यहां छोटे बड़े ८ धर्मशाले, पटियाले के महाराज की बनवाई हुई एक सराय; पोष्टआफिस, पुलिस स्टेशन, स्कूल और म्युनीसिपलिटी है और थोड़ी सौदागरी होती है। ज्वालामुखी के पड़ोस में ६ गरम झरने हैं।

कसबे में (ज्वलनीय गैश के जेटों के ऊपर) ज्वाला देवी का गुंबजदार मंदिर खड़ा है। मंदिर की दीवार के नीचे का भाग और इसका फर्श मार्बुल का

है। मंदिर और जगमोहन दोनों के गुंबजों के ऊपर सुनहला मुलम्मादार पत्तर जड़ा हुवा है, जिनको सन् १८१५ ई० में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने जड़वाया। जगमोहन के चारो बगलों पर घंटियों की एक पंक्ति है; एक जगह डोलाने से संपूर्ण घंटी बजती हैं। मंदिर के किवाड़ों पर चांदीका मुलम्मा है।

मंदिर के भीतर देवी का प्रकाश भूमिकी अग्निसे निकलते हुए, छोटे बड़े १० लाफ दिन रात लगातार बलते है; अर्थात् मंदिर की पिछली दीवार में ४ कोने में १; और दहिने की दीवार में १; और मध्य के कुंड की दीवार में ४। इनमें से दहिने की दीवार का लाफ बड़ा दीपशिखा के समान; कोने का लाफ मसाल के तुल्य बड़ा और पिछली दीवार के चारो लाफ इनसे छोटे हैं। छवो लाफ मंदिर की खड़ी दीवार में फर्श से एक दो हाथ ऊपर हैं। कोने के लाफ द्वारा यात्रीलोग देवी को पेड़ा खिलाते हैं और दूध पिलाते हैं; अर्थात् लाफ के स्थान पर दीवार के छिद्र में छोटी 'लोटकी' से दूधडालते हैं और जलती लाफ में पेड़े जलाते हैं। बचे हुए पेड़ों के टुकड़े प्रसाद करके अपने गृह लेजाते हैं। पिछली दीवार के मध्य में जो एक ताक में छोटी लाफ है; उस स्थान में पंडेलोग यात्रियों से देवी की प्रथम पूजा करवाते हैं। मंदिर के मध्य में मार्बुल के ४ पतले खंभाओं के भीतर एक लंबा चौखुंटा गहड़ा कुंड है; जिसमें पैठने के लिये एक ओर कई एक सीढ़ियां बनी हैं। यात्रीलोग कुंड के ऊपर देवी की पूजा करते हैं। कुंड की दीवार में ४ लाफ जलते हैं; जिस दिशाओं में मंदिर की दीवार की लाफ हैं; उसी दिशाओं में कुंड की दीवार में लाफ बलती हैं। कुंड की दीवार के कोने का लाफ मसाल के तुल्य बड़ा है; उसमें यात्रीलोग होम-करते हैं, होम की बिभूति अपने गृह ले जाते हैं। लाफों द्वारा देवी को पेड़ा खिलाते हैं और दूध पिलाते हैं। लाफों के जलने से मंदिरमें रात्रि के समय भी दिनके समान प्रकाश रहता है। नित्य रात्रि में देवी के शयन के लिये मंदिर में पलंग बिछाया जाता है; उसपर तोसक, तकिए और बहुमूल्य वस्त्र आभूषण रक्खे जाते हैं और मंदिर का द्वार बंद करदिया जाता है। भीतर के दशो लाफों के अतिरिक्त मंदिर से बाहर इसकी पीछे की दीवार में कई छोटे टंम

चलते हैं, जो हवे से वुताजाते है, परंतु वे पीछे आप से आप या वारदेने पर जलने लगते हैं। ज्वालादेवी को जीव वलिदान नहीं दियाजाता है।

मंदिर के पीछे छोटे मंदिर में एक कूप है। कूप के भीतर उसके वगल में आमने सामने २ वड़े लाफ वरते हैं; इसके पास दूसरे कूप का जल खौलता रहता है, इसको लोग गोरखनाथ की 'डिभी' कहते हैं। मंदिर के आस पास काली आदि के कई एक देवमंदिर और कई मकान हैं। मंदिर के आगे दहिने ओर मीठा जलका कुंड है; जिसमें नालाद्वारा एक तालाव से पानी आता है। यात्रीलोग कुंड से जल वाहर निकालकर स्नान करते हैं। वस्ती के वहुतेरे लोग कुंड का जल पीने के लिये ले जाते हैं। नित्यही ज्वालामुखी में यात्री आते हैं; परंतु आश्विन के नवरात्र में लगभग ५०००० यात्री आकर ज्वालादेवी का दर्शन करते हैं। चैत्र के नवरात्र में इससे कम लोग आते हैं।

**इतिहास**—एक समय ज्वालामुखी एक वड़ी और धनी कसवा थी; उसकी तवाहियां इसवात की साक्षी देती हैं। ज्वालादेवी के मंदिर के होने से वह कांगड़ा से भी अधिक प्रसिद्ध हुई है। लगभग ७०० वर्ष हुए, कि एक दक्षिणी ब्राह्मण ने उस स्थान पर जाकर पृथ्वी से निकलती हुई सर्वदा जलनेवाली एक ज्वाला देखी; उसने उसस्थानपर देवी का मंदिर वनवाया। वर्तमान मंदिर सैकड़ों वर्ष से वहुत खर्च से संवारा गया है। महाराज रणजीतसिंह ने सन् १८१५ में उसके गुंवजों पर मुलम्मा करवाया।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—शिवपुराण ( दूसराखंड, ३७ वां अध्याय ) जव सती ने कनखल में अपना शरीर जलादिया, तव उससे एक प्रकाशमान ज्योति उठी, जो पश्चिम की ओर एक देश में गिर पड़ी; उसका नाम ज्वाला भवानी हुआ, वह सवको प्रसन्न करनेवाली हैं। उनकी कला प्रत्यक्ष है; उनकी सेवा पूजा करने से सवकुछ मिलता है, उसीको ज्वालामुखी कहते हैं।

देवीभागवत—( ७ वां स्कंध-३८ वां अध्याय ) ज्वालामुखी का स्थान देखने योग्य और सर्वदा व्रत करने योग्य है।

# रोवालसर।

रोवालसर जाने का एक मार्ग होशियारपुर से सीधा और दूसरा ज्वालामुखी होकर के है। होशियारपुर से २० कोस 'ऊना' तहसीली; ३२ कोस 'वड़सर' का थाना ४२ कोस मेड़ा का पड़ाव और ६० कोस रोवालसर है, जो लगभग ८० मील होगा और ज्वालामुखी से रोवालसर लगभग ५५ मील है।

रोवालसर नामक एक वड़ा झील है; जिसमें पौधे लगे हुए कई एक टीले हैं। झील में टीले के नकल का वनाया हुआ एक वेड़ है, जिसपर पौधे लगे हैं और देवमूर्तियां रक्खी हुई हैं। यात्रियों के एकत्र होने पर वहां के पंडे गुप्त भाव से वेड़े को झील के भीतर से किनारे पर खैंच लेते हैं। यात्रीगण टीले को चलता हुआ अर्थात् किनारे आया हुआ देख कर वड़ा आश्चर्य मानते हैं और वेड़े के ऊपर की देवमूर्तियों का पूजन करते हैं। वैसाख की संक्रांति को वहां स्नान दर्शन का मेला होता है।

# कांगड़ा।

ज्वालामुखी से २५ मील पूर्वोत्तर पंजाव के जलंधर विभाग के कांगड़ा जिले में (३२ अंश ५ कला १४ विकला उत्तर अक्षांश; ७६ अंश १७ कला ४६ विकला पूर्व देशान्तर में कांगड़ा म्युनिसपल्टी कसवा है, जिसको पहिले लोग नगरकोट कहते थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कांगड़ा में ९२८ मकान और ५३८७ मनुष्य थे; अर्थात् ४४५४ हिंदू, ८७२ मुसलमान, ९ सिक्ख और ५२ दूसरे।

कसवा एक पहाड़ी के दोनों ढालु पर वसा है; वहां से वाणगंगा देख पड़ती है। दक्षिणी ढालू पर कसवे का पुराना भाग; उत्तरीय ढालू पर भवन की शहर तली और महामाया देवी का प्रसिद्ध मंदिर और खड़े चट्टान के सिर पर किला है; जिसमें गोरखा रेजीमेंट का १ भाग रहता है। कांगड़े में तहसीली, खैराती अस्पताल, स्कूल और सरांय है। यह कसवा सुन्दर

नीला मीनाकारी और गहना बनने के काम के लिये प्रसिद्ध है। कांगड़ा में महामाया देवी का मंदिर अतिप्राचीन और बहुत प्रसिद्ध है; जहां दूर दूर से यात्रीगण विशेष करके नवरातों में देवी के दर्शन के लिये आते हैं।

**धर्मशाला**—कांगड़ा कसबे से ६ मील पूर्वोत्तर धर्मशाले में अंगरेजी फौजी छावनी और कांगड़ा जिले की सदर कचहरियां हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय धर्मशाले में ५३२२ मनुष्य थे। सन् १८६३ ई० के नवंबर में भारतवर्ष के गवर्नर जनरल लार्ड "एल्गिन" धर्मशाले में मर गए, यहां उनकी कबर है। सन् १८५५ ई० में कांगड़ा जिलेकी सदर कचहरियां धर्मशाला में नियत हुईं, तबसे कांगड़ा कसबे की घटती और धर्मशाला की बढ़ती होने लगी।

**कांगड़ा जिला**—इसके पूर्वोत्तर हिमालय का सिलसिला; जो तिब्बत देश से इसको अलग करता है; दक्षिण-पूर्व बसहर और बिलासपुर के पहाड़ी राज्य, दक्षिण-पश्चिम होशियारपुर जिला और पश्चिमोत्तर चक्की नामक छोटी नदी, बाद गुरदासपुर जिले का पहाड़ी भाग और चंबा का राज्य है। कांगड़ा जिले का क्षेत्रफल पंजाब के सब जिलों में दूसरा याने ९०६१ वर्गमील है; जिसमें हमीरपुर, डेहरा, नूरपुर, कांगड़ा और कुलू ५ तहसीली हैं। जिले में मैदान और पहाड़ी देश दोनों हैं। पहाड़ियों के बगलों में और उनके ऊपर जंगल लगे हैं। कई एक जंगलों में अनेक प्रकार के उत्तम जंगली वृक्ष हैं। वनों में चीता, भालू, भेड़ियां बहुत है; बाघ भी कभी कभी देख पड़ते हैं और कई एक प्रकार की वनैली बिलारियां हैं। कांगड़ा जिले में ब्यास, चनाव और रावी नदियां निकलती हैं। ब्यास कुलू के उत्तर रोहतंग पहाड़ियों से निकल कर लग भग ५० मील दक्षिण-पश्चिम बहने के बाद मंडी राज्य में प्रवेश करके उसको लांघती है, पश्चात् खास कांगड़ा के संपूर्ण घाटीयों में बहती हुई पंजाब के मैदान में जाती है। चनाव नाहुल के ढालूओं से बहती हुई मध्य हिमालयन के उत्तर चंबा राज्य में प्रवेश करती है, और रावी नदी बंगहालघाटी में बहती हुई; पश्चिमोत्तर को चंबा राज्य में गई है, इस जिले में लोहा, शीशा और तांबा की खान हैं।

सीली
ो छत

पसिद्ध
कलात
। कुण्ड
ः योग्य
रोगी

ुण्य थे;
ैन सब
के बाद
के एक
न हैं ।
ं प्रत्येक
अपना
जलें हैं।
गरीब
, छोटा
नते हैं;
ंठी गूंथ
लते हैं।
ौर एक
ना बहुत
बिना
ड़ी लोग
रहते हैं;

टाकरी वर्णमाला

व्यास नदी की वालुओं में कुछ सोना मिलता है। कांगड़ा और कुलू तहसीली में स्लेट पत्थर बहुत है, जो अंबाले जलंधर आदि जिलों में मकानों की छत पाटने के लिये भेजा जाता है।

कुलू सबडिविजन में गरम झरनें बहुत हैं, जिनमें से ३ अधिक प्रसिद्ध हैं, (१) व्यास के किनारे पर वशिष्ठ कुण्ड, (२) व्यास के किनारे पर कलांत कुंड और (३) पार्वती घाटी में मणिकर्णिका कुण्ड। मणिकर्णिका कुण्ड के जल में थैलो में चावल कर के रख देने से वह पक कर भोजन के योग्य भात बन जाता है। झरनों के समीप दूर दूर से बहुतेरे यात्री और रोगी मनुष्य जाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ७६३२६० मनुष्य थे; निवासी प्रायः सब हिंदू हैं; मुसलमान, बौद्ध, सिक्ख, कृस्तान, और जैन सब मिल कर ५० हजार से भी कम हैं, ब्राह्मण और राजपूत बहुतहैं; इनके बाद कानेट, चमार और राठी जातियों की संख्या है। कुलू सब डिविजन के एक भाग में और लाहुल के उत्तर भाग में बहुत लोग बौद्ध मत के तिब्बतन हैं। खास कांगड़ा सब डीवीजन में किसानलोग गांव बना कर नहीं बसे हैं प्रत्येक मनुष्य अपने खास खेत पर रहते हैं और चुना हुआ किसी जगह पर अपना अपना झोपड़ा बनाते हैं, मकान आम तरह से कच्चें ईंटे से बने हुए दो मंजिलें हैं। कुलू सब डिवीजन में १०० से अधिक मकान वाले कई एक गांव हैं। गरीब लोगों के मामूली पोशाक कमर तक कुर्ती वा ठेहुने तक चोली, छोटा पायजामा और टोपी है। बहुत लोग कान में सोने का बाला पहनते हैं; धनीलोग बीच में एक एक गुरिया और एक एक सोने वा चांदी की कंठी गूंथ कर गले में लगाते हैं और हाथ में सोने वा चांदी का बाला डालते हैं। हिंदुओं की स्त्रियां घांघड़ी, चोली और लंबा पायजामा पहनती हैं ओर एक दुपट्टा ओढ़ती हैं, जो कभी कभी अपने सिर पर बांध लेती हैं; वे गहना बहुत पहनती हैं। रंगदार गुरिया की कंठी पहन ने की बहुत चाल है। बिना ब्याही हुई और विधवा स्त्रियां नथिया नहीं पहनती हैं। पहाड़ी लोग सच्चे और इमानदार होते हैं; वे लोग अपने देश की पहाड़ियों में रहते हैं;

किसी को मैदान में काम करना स्वीकार नहीं होता। बहुतेरे लोग अपनी स्त्री को दूसरे के हाथ बेंच देते हैं। कांगड़ा सबडिविजन में बहुतेरी जातियों में एक स्त्री के अनेक पति होते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कांगड़ा जिले की ६ बस्तियों में २००० से अधिक मनुष्य थे; अर्थात् ८७४८ नूरपुर में, ५३८७ कांगड़ा में ५३२२ धर्मशाला में, ३४३१ सुजनपुर में, २४२४ ज्वालामुखी में और २१७४ हरिपुर में।

कांगड़ा कसबे से ५ पड़ाव अर्थात् लग भग ५० मील पश्चिमोत्तर पठान कोट में रेलवे स्टेशन है, जिससे ६६ मील दक्षिण पश्चिम अमृतसर शहर है। कांगड़ा से एक पहाड़ी रास्ता शिमला को गया है।

इतिहास—कांगड़ा कसबा पूर्वकाल में कटोच राज्य की राजधानी था। कटोच राजकुमार "स्वारीखी" समय के पहिले से अंगरेजों के आने के समय तक कांगड़ा की घाटी पर हुकूमत करते थे। सन् १००९ ई० में गजनी के महमूद ने हिन्दुओं को पेशावर में परास्त करके नगरकोट (कांगड़ा) का किला ले लिया और वहां के देवी के मंदिर के बहुत सोना चांदी और रत्नों को लूटा; परंतु उससे ३५ वर्ष पीछे पहाड़ी लोगों ने दिल्ली के राजा की सहायता से मुसलमानों से किला छीन लिया। सन् १३६० में फिरोज तोगलक ने कांगड़ा पर चढ़ाई की। राजा उसकी आधीनता स्वीकार कर के अपने राज्य पर कायम रहा; परंतु मुसलमानों ने फिर एक बार मंदिर का धन लूटा। सन् १५५६ में अकबर ने कांगड़ा के किले को ले लिया। मुगल बादशाहों के राज्य के समय कांगड़ा कसबे की जन-संख्या इस समय की आबादी से बहुत अधिक थी। सन् १७७४ में सिक्ख प्रधान जयसिंह ने छल से कांगड़ा के किले को ले लिया, जिसने सन् १७८५ में कांगड़ा के राजपूत राजा संसारचंद को दे दिया। सन् १८०५ के पश्चात् ३ वर्ष तक गोरखों की लूट से मुल्क में अराजकता फैली रही। सन् १८०९ में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने गोरखों को परास्त कर के संसारसिंह को राज्याधिकारी बनाया। सन् १८२४ में संसारचंद की मृत्यु होने पर उसका पुत्र अनरुद्धसिंह उत्तराधिकारी हुआ। ४ वर्ष पीछे जब अनरुद्धसिंह उदास

हो अपना राजसिंहासन छोड़ कर हरिद्वार चला गया, तब रणजीतसिंह ने राज्य पर आक्रमण कर के उसका एक भाग ले लिया। सन् १८४५ की सिक्ख लड़ाई के समय अंगरेजी सरकार ने कांगड़ा को ले लिया, परंतु किले पर उनका अधिकार पीछे हुआ। कांगड़ा जिले की सदर कचहरियां पहले कांगड़ा कसबे में थीं, परंतु सन् १८५५ में वह धर्मशाला में नियत हुईं, तब से कांगड़ा कसबे की जन-संख्या तेजी से घट गई है।

## मंडी।

कांगड़ा कसबे से ३ पड़ाव अर्थात् लगभग ३० मील दक्षिण-पूर्व समुद्र के जल से २५५७ फीट ऊपर व्यास नदी के किनारे पर पंजाब में शिमले के पहाड़ी राज्यों में सब से प्रसिद्ध देशी राज्य की राजधानी मंडी है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मंडी में ५०३० मनुष्य थे, अर्थात् ४८०७ हिंदू, २०२ मुसलमान, १४ सिक्ख और ७ कृस्तान।

मंडी राजधानी के निकट व्यास नदी के दोनों किनारे ऊंचे और पत्थरीले हैं, नदी की धारा तेज है; नदी पर लटकाऊ पुल बना है, जो सन् १८७८ ई० में खुला था। कसबे में स्कूल और पोष्ट आफिस है।

**मंडी का राज्य**—इसके पूर्व कांगड़ा जिले के कुलू विभाग; दक्षिण सकेत; उत्तर और पश्चिम कांगड़ा जिला है। मंडी राज्य का क्षेत्र फल अनुमान से १००० वर्ग मील है, जिसमें बहुत पहाड़ियां हैं। राज्य की खाड़ी उपजाऊ है, जिसमें गल्ले, ऊंख, अफियून और तंबाकू उपजते हैं। निमक की दो खानों से राज्य की चौथाई मालगुजारी आती है। राज्य की संपूर्ण मालगुजारी लग भग ३५०००० रुपया है, जिसमें से १००००० रुपया अंगरेजी गवर्नमेंट को दिया जाता है। निवासी प्रायः सब हिंदू हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय १४७०१७ मनुष्यों में से २३९६ मुसलमान, सिक्ख और कृस्तान शेष सब हिंदू थे, राजा के सैनिक बल २५ सवार और ७०० पैदल हैं और इनको अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है।

इतिहास—मंडी राजवंश चन्द्रवंसी राजपूत है, जो- मंडियाल कहलाते हैं। राजा लोगों की सेन की ओर राज परिवार के दूसरे लोगों को सिंह की पदवी है। लग भग सन् १२०० ई० में सुकेत के प्रधान का छोटा भाई वाहुसेन अपने वड़े भाई से झगड़ा करके कूलू में जाकर मंगलोर में वसा, जहां उसकी संतान ११ पुस्त तक रही। वानू ने सकोर के राणा को मार कर कई एक वर्ष तक सकोर में हुकूमत की। उसके उपरांत वह मंडी कसवे से ४ मील दूर व्यासनदी के तट पर भीन में जाकर रहने लगा। वाहुसेन के ११ वें पुस्त में राजा अजवरसेन हुए, जिन्होंने सन् १५२७ ई० में मंडी कसवे को वसाया. जो मंडी का प्रथम राजा है। सन् १७७९ से १८२६ तक ईश्वरीसेन, की हुकूमत के समय मंडी क्रम से कटोच राजा, गोरखा और रणजीतसिंह के आधीन थी। सन् १८४० तक लाहौर को खिराज दिया जाता था। सन् १८४६ में मंडी अंगरेजों के आधीन हुई। अंगरेजों ने वर्तमान राजा के पिता को राज्यसिंहासन पर वैठाया। मंडी के वर्तमान नरेश राजा विजयसेन वहादुर ४५ वर्ष की अवस्था के चंद्रवंशी राजपूत हैं।

## डलहौसी।

कांगड़ा कसवे से ५ पड़ाव उत्तर कुछ पश्चिम और पठान कोट के रेलवे स्टेशन से ५१ मील पूर्वोत्तर डलहौसी एक फौजी छावनी और पहाड़ी स्वास्थ्य कर स्थान है। पठानकोट से लोग टट्टू वा झंपान पर चढ़ करके चंवा और डलहौसी जाते हैं। रावी नदी के पूर्व समुद्र के जल से ७६८७ फीट ऊपर पहाड़ की तीन चोटीयों के सिर और ऊपरी ढालुओं पर डलहौसी वसी है। कसवे में एक कचहरी, पुलिस-स्टेशन, अस्पताल, गिर्जा और कई एक होटल हैं। कसवे के वहुतेरे मकान दो मंजिले वने हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वालून छावनी के साथ डलहौसी में १६१० मनुष्य थे; अर्थात् १००१ हिंदू, ३९७ मुसलमान, ८ सिक्ख और १९६ दूसरे। गर्मी के दिनों में इसकी जन-संख्या वहुत वढ़जाती है।

सन् १८५२ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंट ने चंवा के राजा से डलहौसी को खरीदा। सन् १८६८ में यहां अंगरेजी सेना रक्खी गई।

## चंबा।

डलहौसी से १ पड़ाव दूर कश्मीर-राज्य के निकट रावी नदी के दहिने पंजाब में एक छोटे देशी राज्य की राजधानी चंबा है; जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५२१८ मनुष्य थे; अर्थात् ४३९० हिंदू, ७३० मुसलमान ४३ सिक्ख और ५५ दूसरे। पठानकोट से टट्टू वा झंपान पर चढ़ करके लोग चंबा जाते हैं।

चंबा-राज्य—यह ऊंची पहाड़ी सिल सिलों से बंद पंजाब के पहाड़ी राज्यों में से एक है। इसके पश्चिमोत्तर और पश्चिम कश्मीर राज्य; दक्षिण और दक्षिण-पूर्व कांगड़ा और गुरदासपुर जिले, पूर्व और पूर्वोत्तर लाहुल और लदाख है। राज्य का अनुमानिक क्षेत्रफल ३१८० वर्ग मील है।

वर्फमय चोटियों के २ सिलसिले इस राज्य होकर गए हैं। राज्य के वन मे बहुत लकड़ी होती है। खानों से लोहे का ओर बहुत निकलते हैं। संपूर्ण राज्य में स्लेट की खान हैं। पहाड़के सिलसिलों में सुस्त और पीले भालू, पहाड़ी चीता, बारहसिंगा. बनैली भेंड़, बनैली बकरी, हरिन, कस्तुरा और तिब्बतन बैल होते हैं। गर्मी के महीनों में लाखों भेड़ और बकरिएं और हजारहां भैंस और गोरू चंबा के पहाड़ोंपर चरते हैं।

राज्य में गेंहू, जौ, जनेरा, और धान होते हैं। अक्खरोट, मधु, ऊन और घी इस राज्य से अन्य स्थानों में भेजेजाते हैं। कपड़ा, तेल, चमड़ा और मसाला यहां से लदाख, आरकंद और तुरकिस्तान में जाते हैं। राज्य की मालगुजारी लगभग २३५००० रुपया है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस राज्य के ३६५ गांवों में ११५७७३ मनुष्य थे; अर्थात् १०८३९७ हिंदू, ६८७९ मुसलमान, ३८५ बौद्ध, ७२ सिक्ख और ४० कृस्तान। ब्राह्मण बहुत हैं; जो खेती और जाड़े के दिनों में चराई का काम करते हैं और राजपूत बहुत कम हैं, जो खेती और कुली, चौकीदार आदि का काम करते हैं।

इतिहास—चंबा का राजवंश क्षत्रिय है। यह पुराना राज्य सन् १८४६ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंट के आधीन हुआ। चंबा का मृत नरेश राजा गोपालसिंह अपने वदचलन से अंगरेजी सरकार को अप्रसन्न करके सन् १८७३ ई० में राज्य से अलग किया गया। चंबा के वर्तमान नरेशराजा शाम्ब-सिंह हैं, जिनका जन्म सन् १८६६ ई० में हुआ। यहां के राजाओं को अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है और इनको फौजी वल १ तोप और १६० सेना और पुलिस हैं।

## पठानकोट।

डलहौसी से ५१ मील पश्चिम-दक्षिण और कांगड़ा से ५ पड़ाव लगभग ५० मील पश्चिमोत्तर और अमृतसर से ६६ मील पूर्वोत्तर पठानकोट का रेलवे स्टेशन है। पंजाव के गुरदासपुर-जिले में पठानकोट उन्नति करता हुआ कसवा है। पठानकोट से डलहौसी और चंवा और कांगड़ा को पहाड़ी रास्ते गए हैं और बहुतेरे लोग टट्टू वा झंपान पर चढ़कर चंवा और डलहौसी जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय पठानकोट में ४३४४ मनुष्य थे; अर्थात् २३१६ मुसलमान, १९९१ हिंदू, ३२ सिक्ख और ५ क्रस्तान।

पठानकोट में ईंटे के मकान हैं; पक्की सड़कें वनी हुई हैं; मामूली सव डिवीजनल कचहरियों के अतिरिक्त स्कूल, अस्पताल, डाकवंगला और सराय हैं और सन् ई० के सोलहवीं शताब्दी का वना हुआ एक छोटा किला है।

## गुरदासपुर।

पठानकोट से २२ मील दक्षिण-पश्चिम गुरदासपुर का रेलवे स्टेशन है। पंजाव के अमृतसर विभाग में जिले का सदर स्थान गुरदासपुर एक छोटा कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गुरदासपुर में ४७०६ मनुष्य थे; अर्थात् २५१८ हिंदू, १९८९ मुसलमान, १६८ सिक्ख, ४ जैन और २७ दूसरे।

गुरदासपुर में कचहरी का मकान, जेलखाना, बंगला, सराय, तहसीली, अस्पताल, स्कूल, और एक छोटा पुराना किला है, जिसमें अब सारस्वत ब्राह्मणों का एक मठ है।

**गुरदासपुर-जिला**—यह अमृतसर विभाग के पूर्वोत्तर का जिला है। इसके उत्तर कश्मीर और चंबा का राज्य; पूर्व कांगड़ा जिला और ब्यासनदी, जो होशियारपुर जिले और कपुरथला-राज्य से इस जिले को अलग करती हैं; दक्षिण-पश्चिम अमृतसर जिला और पश्चिम स्यालकोट जिला है। जिलेका क्षेत्रफल १८२२ वर्गमील है।

यह जिला व्यास और रावी दोनों नदियों के बीच में है और पश्चिमओर रावी नदी के बाद तक फैला है। चक्की नदी की तेज धारा कांगड़ा की पहाड़ियों से गुरदासपुर की पहाड़ियों को अलग करती है। जिले की उत्तरीय सीमा पर थोड़ी दूरतक रावी नदी बहती है। जिले में २ हजार फीट चौड़ी और ९ मील लंबी एक झील है, जिसमें महाराज शेरसिंह का बनवाया हुआ एक महल स्थित है। जिले के वन में बाघ, भेड़िया और हरिन रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ९४६०१२ मनुष्य थे। सन् १८८१ में ८२३६९९ मनुष्य थे; अर्थात् ३११४०० मुसलमान, ३५१३२१ हिंदू, ७२३९५ सिक्ख, ४६३ क्रस्तान और १०८ जैन। इनमें से १२१७६९ जाट, जिनमें ३८ ४७ हिंदू, ४६०७१ सिक्ख और ४५६२१ मुसलमान; ७१५१३ राजपूत, जिनमें ३१७२३ हिंदू, शेष सब मुसलमान; ४७८९१ ब्राह्मण, जिनमें सब हिंदू वा सिक्ख और ४३५७१ गूजर; जो प्रायः सब मुसलमान हैं।

गुरदासपुर जिले में बटाला (जन संख्या २७२२३) प्रधान कसबा और दीनानगर, कलानूर, गुरदासपुर, पठानकोट, डलहौसी इत्यादि छोटे कसबे हैं और डेरानानक और श्री गोबिंदपुर सिक्खों का पवित्र स्थान है।

**इतिहास**—सन् १७१२ ई० में सिक्खों के प्रधान बंदा ने गुरदासपुर के किले को बनवाया, जो अंत में शाही सेना से परास्त होने के उपरांत लोहे

के "पींजरे" में बंद करके दिल्ली में लायागया और बड़ी निर्दयता से मारागया; सिक्ख सब पहाड़ी और वनों में भागगए। अंगरेजी राज्य होनेपर सन् १८४९ ई० के पश्चात् वारीदोआव का ऊपरी भाग एक जिला बनायागया, जिसका सदरस्थान वटाला में हुआ। सन् १८५६ में जिले का सदरस्थान बटाला से गुरदासपुर में आया।

## वटाला।

गुरदासपुर से २० मील (पठान कोट से ४२ मील) दक्षिण-पश्चिम 'वटाला' का रेलवे स्टेशन है। पंजाव के गुरदासपुर जिले में प्रधान कसवा और तहसीली का सदर स्थान वटाला है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वटाला में २७२२३ मनुष्य थे, अर्थात् १७३१६ मुसलमान, ९५५९ हिंदू, ३२७ सिक्ख और २१ कृस्तान। वटाले में ईंटे के मकान बने हैं और २ सुंदर तलाव, शमशेरखां का मकबरा; महाराज रणजीतसिंह के पुत्र शेरसिंह की बनवाई हुई आनार कली नामक सुंदर इमारत, एक देव मंदिर, एक मिशन कालेज, सराय, अस्पताल, स्कूल, पुलिस-स्टेसन और कचहरी के मकान हैं। वटाला गुरदासपुर जिले में सौदागरी का "केंद्र" है; इसमें मोटे पशमीनें बनते हैं और रेशम, रुई, पीतल और चमड़े की सोदागरी होती है। वटाला से २४ मील दक्षिण-पश्चिम अमृत सर है।

**इतिहास**—लगभग सन् १४६५ ई० के वहलोल लोदी के राज्य के समय भट्टी राजपूत राय रामदेव ने वटाला को वसाया। सोलहवीं शताब्दी में वादशाह अकवर ने इसको शमशेरखां को (जागीर) दिया। शमशेरखां ने कसवे की उन्नति की और इसके बाहर एक सुंदर तालाव बनाया, जो अब तक स्थित है।

---

# चौदहवां अध्याय।

## (पंजाब में) अमृतसर और लाहौर।

### अमृतसर।

जलंधर शहर के रेलवे स्टेशन से २३ मील पश्चिमोत्तर व्यास नदी के रेलवे पुल लांघने पर व्यास स्टेशन मिलता है। व्यासनदी हिमालय के दक्षिण कांगड़ा जिले से निकली है और २१० मील बहने के उपरांत हरी के पट्टन के निकट सतलज में मिल गई है। महाभारत वनपर्व के १३० वे अध्याय में लिखा है, कि वशिष्ठ मुनि पुत्र के शोक से व्याकुल हो व्यास नदी पर पृथ्वी में गिर गए फिर प्यासे होकर उठे थे, इसी लिए इस नदी का नाम विपासा है और अनुशासन पर्व के २५ वें अध्याय में है कि विपासा (व्यासा) नदी में स्नान करने से मनुष्य पापों से छूट जाता है।

व्यास-स्टेशन से २६ मील और जलंधर शहर से ४९ मील (अंबाला-छावनी से १५५ मील) पश्चिमोत्तर और बटाला से २४ मील दक्षिण पश्चिम अमृतसर का रेलवे स्टेशन है। अमृतसर से पूर्वोत्तर एक रेलवे शाखा गई है, जिसपर अमृतसर से २४ मील बटाला, ४४ मील गुरदासपुर, ५१ मील दीनानगर और ६६ मील पठानकोट है।

पंजाब के व्यास और रावी नदियों के बीच में (३१ अंश ३७ कला १५ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ५५ कला पूर्व देशांतर में) किस्मत और जिले का सदरस्थान सिक्खों की मजहबी राजधानी अमृतसर एक सुंदर शहर है।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय अमृतसर में १३६७६६ मनुष्य थे; अर्थात् ७८७८६ पुरुष और ५७९८० स्त्रियां। इनमें ६३३६६ मुसलमान, ५६६५२ हिंदू, १५७५१ सिक्ख, ८४८ कृस्तान, १४३ जैन, ५ पारसी और १ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में १९ वां और पंजाब में तीसरा शहर है।

रेलवे स्टेशन से $\frac{1}{2}$ मील दक्षिण अमृतसर शहर है। शहर के मध्यभाग में अमृतसरनामक पवित्र तालाव है, जिसके नाम से शहर का नाम अमृतसर पड़ा है। तालाव के दक्षिण दरवारबाग और अटलटावर; पश्चिमोत्तर शहर के अंत में तेजसिंह का बनवाया हुआ शिव मंदिर और १ मील पूर्वोत्तर डांक बंगले के निकट सेंटपालस चर्च है। शहर से पश्चिम कुछ उत्तर 'गोविंदगढ़' किला है। जिसमें युद्ध का सामान और अंगरेजी पैदल की एक कंपनी रहती है। गुरुद्वारा से लौटनेपर रामवाग के फाटक से बाहर होकर आगे जाने पर कोतवाली मिलती है, जिससे आगे बाईं ओर महम्मदजान की मसजिद और अधिक उत्तर ईदगाह है, जिसके समीप खांमहम्मद की मसजिद है। दहिनें एक उत्तम तालाव और $\frac{1}{4}$ मील दक्षिण ४० एकड़ भूमि पर पवलिक वाग है, जिसके मध्य में एक सायवान बना हुआ है; जिसमें महाराज रण-जीतसिंह अमृतसर में आने पर ठहरते थे। शहर में २ बड़ी सराय, सत्य-नारायण का मंदिर, कैसरवाग में महारानी विक्टोरिया की उजले मार्वुल की प्रतिमा है। शहर के उत्तर सिविल लाइन है, जिसके बाद देशी पैदल की २ कंपनियों की फौजी छावनी है। इनके अतिरिक्त अमृतसर में कई एक छोटे सरोवर, कई मंदिर, कईएक गिर्जे, जेलखाना, अस्पताल, टाउनहाल और स्कूल के मकान हैं। यहां ननकशाहियों के १३ अखाड़े हैं।

अमृतसर उन्नति करती हुई दस्तकारी का प्रधान स्थान है। यहां तिब्बत के प्लेटू पर रहनेवाली बकरियों के मुलायम वाल से कश्मीरी शाल विनेजाते हैं; लगभग ४ हजार कश्मीरीलोग शाल का काम करते हैं; ८०० रुपये तक का शाल तैयार होता है; कई एक यूरोपियनकोठीं शाल खरीदने के लिये हैं। शहर की दूसरी दस्तकारियां सोना के तार के कारचोवी का ऊनी कपड़ा और रेशमी असवाव और हाथीदांत में नकाशी का काम है। अमृतसर में बहुत बड़ा कालीन का कारखाना है; दस्तकारियों के लिये मध्य एशिया के संपूर्ण विभागों से बहुत असबाव लाए जाते हैं। बहुतेरे कश्मीरी, अफगान, नयपाली, बोखारावाले, बलूची, पारसियन, तिब्बतन, आरकंडी इत्यादि
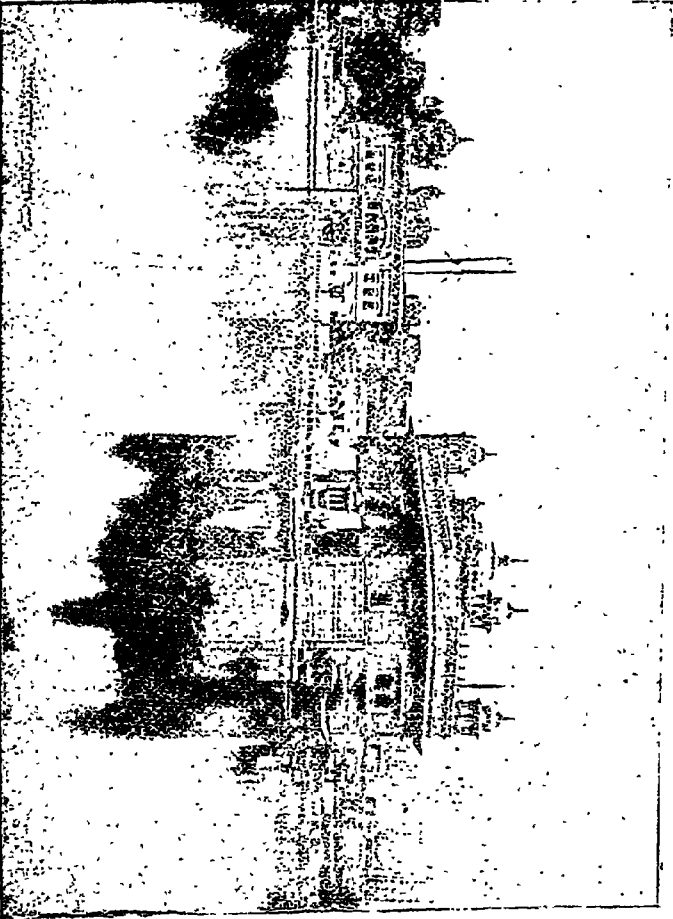
स्वर्णमन्दिर, अमृतसर

सौदागर शहर के आसपास और कारवान सराय में देख पड़ते हैं। गल्ला, चीनी, तेल, निमक, तंबाकू, अंगरेजी असबाब, कश्मीर का शाल, रेशम, शीशा, मट्टी और लोहे का बर्तन, चाय, रंग इत्यादि दूसरे देशों से यहां आते हैं और यहां की बनी हुई वस्तु दूसरे देशों में भेजीजाती हैं।

अमृतसर में कार्तिक की दिवाली के समय विशेष उत्सव होता है। गुरुद्वारा में बड़ी रोशनी, सजावट और यात्रियों की भीड़ होती है। उससमय यहां बहुत भारी मेला लगता है; उसमें सैकड़ों कोस से सौदागर आते हैं। अमृतसर में दूसरा मेला बैशाख में होता है। दोनों मेलों में पचासों हजार मवेसियां और कई एक हजार घोड़े आते हैं और दूर के प्रदेशों से सौदागर आकर घोड़े खरीदते हैं।

**अमृतसरतालाब**—मैं शहर के मध्यभाग में अमृतसर तालाब के निकट किराए के मकान में टिका। दूरहो से अपूर्व तालाब और गुरुद्वारा मंदिर का मनोहर दृश्य दृष्टि गोचर होता है। तालाब ४७५ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है; जिसके चारो ओर सफेद मार्बुल और काला तथा भूरा पत्थर के चौकोनें तख्तों से बना हुआ २४ फीट चौड़ा फर्श है। तालाब के चारो बगलों में नीचे से ऊपरतक सफेद मार्बुल की सीढ़ियां हैं। तालाब के तीन ओर सिक्ख राजाओं और सरदारों के बनवाए हुए बहुतेरे मकान और उत्तर ओर पत्थर के तख्तों से पाटा हुआ बड़ा फर्श है, जिसपर घड़ी का ऊंचा बुर्ज बना है। तालाब में गहरा जल है। कोई आदमी इस पवित्र तालाब के समीप जूता नहीं लेजाता है और इसके जलमें अपवित्र वस्त्र नहीं फींचता है। तालाब के मध्य में गुरुद्वारा वा स्वर्ण मंदिर खड़ा है।

**गुरुद्वारा वा स्वर्णमंदिर**—इस मंदिर के ३ नाम हैं। गुरुद्वारा, स्वर्णमंदिर और दरबारसाहब। अमृतसर तालाब के मध्य में ६५ फीट लंबे और इतनाहीं चौड़े चबूतरे पर स्वर्णमंदिर खड़ा है। तालाब के पश्चिम किनारे से मंदिर तक २०० फीट लंबा पुल है. जिसके पश्चिमी छोर पर एक मेहराबी फाटक है। पुलका फर्श श्वेत और नीले मार्बुल के तख्तों से बना है

और पुल के दोनों किनारों पर चमकीले मार्बुल के स्तंभों पर २० सोनहुले लालटेन हैं।

मंदिर की लंबाई पश्चिम से पूर्व तक ५५ फीट से कम और चौड़ाई लगभग ३५ फीट है, जिसके सिरोभाग पर मध्य में १ वड़ा गुंबज और चारो कोनों पर ४ छोटे गुंबज हैं। मंदिर की दीवार के नीचे का भाग श्वेतमार्बुल से बना है, जिसपर विविध रंग के बहुमूल्य पत्थर जड़कर स्थानस्थान पर चित्र बने हैं और ऊपर के भाग तथा संपूर्ण गुंबजों पर तांबे के पत्तर जड़कर सोना का मुलम्मा किया हुआ है, इसलिए यह मंदिर स्वर्णमंदिर वा सोनहला मंदिर करके प्रसिद्ध है। भारतवर्ष के किसी मंदिर में इस मंदिर के समान सोना नहीं लगा है। मंदिर की दीवार के बगलों पर गुरुमुखी अक्षरों में ग्रंथ के बहुत पद्यों का शिलालेख है। इसके दरवाजों पर सुंदर रीति से चांदी का काम है। मंदिर का दृश्य अत्यंत हृदयग्राही और मनोहर है। इसके भीतर का दृश्य भी बहुत सुंदर है; दीवार उत्तम प्रकार से मुलम्मा किया हुआ है, चित्र से फूल इत्यादि बने हैं; छत में छोटे दर्पणों को बैठाकर कुंदन किया हुआ है, फर्श में शुक्ल और नील मार्बुल के टुकड़े सुंदर रीति से जड़े हुए हैं; पूर्व ओर मंदिर का प्रधान पुजारी ग्रंथ पढ़ता हुआ अथवा चंवर डोलाता हुआ बैठा रहता है; और मध्य में एक चादर पर यात्रीगण रुपये, पैसे, कौड़ी, फूल, मोहनभोग इत्यादि पूजा चढ़ाते हैं। यहां असरफियों से लेकर कौड़ी तक पूजा चढ़ाईजाती है। सिक्खलोग ग्रंथ में ईश्वर को मानते हैं; इस लिये वेलोग प्रतिदिन प्रातः काल, अपने ग्रंथ को बेठन से संवारते हैं; उसको चांदनी के भीतर गद्दी पर रखकर चंवर डोलाते हैं और संध्या समय ग्रंथ को उठाकर निकट के पवित्र मंदिर में लेजाते हैं, जहां रात्रि में सोनहले विस्तर पर उसको आराम कराते हैं।

मंदिर के ऊपर की मंजिल में एक छोटा, परंतु उत्तम प्रकार से संवारा हुआ शीशमहल है, जहां गुरु बैठते थे, वहां मोरपंख की झाड़ू से बहारा जाता है। चांदी के पत्तर जड़े हुए दरवाजे के पास सीढ़ियां खजाने को गई हैं, जिसमें १ बड़ा संदूक है। यहां १ फीट लंबे और ४$\frac{1}{2}$ 'इंच' व्यास के

चांदी के ३१ चोव हैं और ४ इनसे भी वड़े हैं। संदूक में मुनहल डांट लगे हुए मुलम्मेदार ३ सोंटे, १ पंखा, २ चंवर; ५ सेर खालिस सोने की एक चांदनी, जिसमें लाल, पन्ने और हीरे लगे हुए हैं; एक सोने का झव्वू; रंगा हुआ मंदिर का नकशा; मोतियों की झालर लगी हुई हीरों का एक सुंदर मुकुट; जिसको नवनिहालसिंह पहनते थे. ये सब असवाव रक्खे हुए हैं, जो ग्रंथ की यात्रा के समय उसके साथ जाते हैं।

मंदिर के चारो ओर के फर्श पर श्वेत और नील मार्वुल के टुकड़े अच्छी रीति से वैठाए गए हैं और जगह जगह मार्वुल के गुंवज दार छोटे स्तंभ हैं। मंदिर में और इसके निकट नानकशाही लोग दिन रात भजन और ध्यान करते हैं और सर्वदा यात्रियों की भीड़ रहती है। मंदिर में नानकशाही पुजारी और पंडे वहुत रहते हैं। मंदिर के आस पास जूता पहन कर कोई नहीं जाने पाता है। मुसलमान और यूरोपियन लोग भी विना जूता पहने हुए मंदिर में जाते हैं; परंतु पश्चिम के द्वार से नहीं; उत्तर के द्वार से।

अमृतसर तालाव के पश्चिम किनारे पर पुल के पास पांचवां गुरु अर्जुन के समय का वना हुआ एक सिक्ख मंदिर है, जिसके गुंवज पर सोनहरा मुलम्मा है। सीढ़ियों से मंदिर में जाना होता है, जिसमें सुनहरे सिंहासन पर वस्त्र से छिपाए हुए कई एक असवाव, ४ फीट लंवी गुरुगोविंद की एक तलवार और एक गुरु का एक सोटा रक्खा हुआ है।

तालाव के पूर्व मंगलसिंह के कुल के वनवाए हुए २ वड़े वुर्ज हैं, जो रामगढ़िया मीनार कहे जाते हैं, इनमें से उत्तर वाले मीनार पर आदमी चढ़ते हैं।

**अटलमीनार**—अमृतसर-तलाव के घेरे से दक्षिण ३० एकड़ भूमि पर दरवार वाग है, जिसमें कवलसर नामक एक सरोवर और कई छोटे सायवान हैं। वाग के दक्षिण किनारे के निकट १३१ फीट ऊंचा सुंदर 'अटलमीनार' है, जिसको लोग वावाअटल भी कहते हैं। इसका निचला कमरा सुंदर प्रकार से रंगा हुआ है, जिसके भीतर का व्यास ३० फीट है।

इसके भीतर की सीढ़ियां ऊपर ७ गेलरी को गई हैं। आठवें गेलरी में लकड़ी की सीढ़ियां बनी हैं। यह मीनार सिक्खों के छठवें गुरु हरगोविंद के छोटे पुत्र अटलराय के समाधि मंदिर के स्थान पर बना है।

सिक्खों के दस गुरु—सिक्ख शब्द शिष्य का अपभ्रंश है। सिक्खमत को नियत करने वाले गुरु नानक हैं, जो लाहौर प्रांत के 'तलवंडी' ग्राम में संवत् १५२६ (सन् १४६९ ई० )के कार्तिक सुदी १५ की रात्रि में कल्याणराय खत्री के गृह तृप्ता के गर्भ से जन्मे। इनके पुत्र श्रीचंद्र और लक्ष्मीचंद्र हुए। गुरु नानक का उपदेश प्रायः कबीरसाहबजी के उपदेश के समान था। संवत् १५९५ ( सन् १५३८ ई० ) के आश्विन बदी ८ को गुरु नानक का देहांत हुआ। उनके पुत्रों में से एकने दूसरा गुरु होने की इच्छा की, परंतु गुरु नानक की आज्ञानुसार उनके चेला लहना गुरु अंगद के नामसे दूसरा गुरु बने। वह ब्यास नदी के निकट खादुरगांव में रहते थे, जिन्होंने सिक्खों की पवित्र पुस्तकों को लिखा। सन् १५५२ ई० में जब खादुरगांव में गुरु अंगद का देहांत होगया, तब अमरदास तीसरे गुरु हुए। वह खादुरगांव के पड़ोस के गोविंदवास गांव में बसते थे। सन् १५७४ ई० में अमरदास ( खत्री ) की मृत्यु होने पर उनके दामाद रामदास चौथा गुरु बने, जिन्होंने अकबर की दी हुई भूमि पर अमृतसर शहर की नेव दी और अमृतसर तालाब खोदवाया, तथा तालाब के छोटे टापू पर एक सिक्ख मंदिर बनाने का काम आरंभ किया। सन् १५८१ ई० में रामदास परमधाम को गए। इसके पश्चात् रामदास के पुत्र अर्जुनमल पांचवां गुरु हुए; जिन्होंने सिक्खों के आदि ग्रंथ को बनाया और तालाब के बीच के मंदिर का काम पूरा किया; इनके समय इस शहर की बढ़ती हुई। अर्जुनमल सन् १६०६ ई० में जहांगीर के कैदखाने में मरगए। उनके मरने के पश्चात् उनके पहले पुत्र हरगोविंद सिक्खों के छठवां गुरु हुए; जिन्होंने अपने पिता की दुर्गति देखकर सिक्खों में मुसलमान द्वेष भड़काया। वह दो तलवार बांधते थे। एक अपने पिता के हत्यारे को मारने के लिये और दूसरा मुसलमानों के राज्य का विनाश करने के निमित्त। गुरु हरगोविंद के

५ पुत्र थे; १ गुरुदत्त, २ सूरत, ३ तेगबहादुर, ४ हरराय और ५ वां अटलराय। सन् १६४४ ई० में गुरु हरगोविंद की मृत्यु हुई; उनके चौथे पुत्र हरराय सातवां गुरु की गद्दी पर बैठे; जिनका देहांत सन् १६६१ ई० में हुआ। इसके उपरांत हरराय के पुत्र हरकृष्ण आंठवां गुरु हुए। सन् १६६४ में उनकी मृत्यु होने पर हरगोविंद के तीसरे पुत्र तेगबहादुर नवां गुरु की गद्दी पर बैठे, जिनको सन् १६७५ ई० में औरंगजेब ने मारडाला। गुरु तेगबहादुर के पश्चात् उनके पुत्र गोविंदसिंह सिक्खों के दसवां गुरु हुए. जिनका जन्म सन् १६६६ ई० में बिहार प्रदेश के पटने शहर के हरमंदिर में हुआ था।

गुरुगोविंदसिंह सिक्ख शासन को फिर शकल पर लाए। उन्होंने स्वाधीन राज्य नियत करने को चाहा; अपने मत वालों को सिंह की पदवी दी और टोपी न पहनने की, भोजन के समय मुरेठा न उतारने की और बाल न मुड़वाने की आज्ञा दी। गुरुगोविंदसिंह ने एक दूसरा ग्रंथ बनाया, जो दशवां गुरु का ग्रंथ कहलाता है। उन्होंने आज्ञा दी कि हमारे पश्चात् अब दूसरा कोई गुरु न होगा; सबलोग अब से ग्रंथ साहब को गुरु समझेंगे; जो किसी को कुछ पूछना होगा; वे वहीं देखलेंवेगे। सिक्खलोग बहुतेरे विषयों में हिंदू के धर्म कर्म को पुष्ट करते हैं। पहला गुरु ने जाति भेद उठा दिया और मूर्ति पूजा का निषेध किया; परंतु गुरुगोविंदसिंह लोगों के उदाहरण; अपने कर के दिखाया। बहुतेरे सिक्ख जाति भेद मानते हैं; जनेऊ पहनते हैं; हिंदू का पर्व श्राद्ध और देवमंदिरों में देवताओं की पूजा करते हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हिन्दुस्तान में १९०७८३३ सिक्ख थे। हिन्दुस्तान के जितने लोग अंगरेजों से लड़े थे, उनमें से सिक्ख लोग सबसे अधिक लड़ने वाले थे। गुरुगोविंदसिंह के जीवन का बड़ा भाग युद्ध में बीता। उन्होंने सन् १७०८ ई० में हैदराबाद के राज्य के 'नन्देड़' में मुसलमानों से लड़कर संग्राम में अपने प्राण का विसर्जन किया। वहां गुरुगोविंद की संगति बनी है।

**तरनतारन**—अमृतसर शहर से १२ मील दक्षिण व्यास और सत-

लज नदियों के संगम से उत्तर अमृतसर जिले में एक तहसीली का सदर मुकाम और सिक्खों का पवित्र स्थान तरनतारन है। अमृतसर शहर से तरनतारन को पक्की सड़क गई है, जिस पर घोड़े गाड़ी की डाक चलती है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय तरनतारन कसबे में ३२१० मनुष्य थे; अर्थात् १०७७ सिक्ख, १०४४ हिन्दू और १०८९ मुसलमान। कसबे में कचहरी का मकान, पुलिस स्टेशन, सराय, स्कूल और अस्पताल और कसबे से बाहर कोढ़ीखाना है।

सिक्खों के पांचवेंगुरु अर्जुनमल ने तरनतारन कसबे को नियत किया और उसमें एक सुंदर तालाब और तालाब के पूर्व बगल में एक सिक्ख मंदिर बनवाया। महाराज रणजीतसिंह ने उस मंदिर के ऊपर तांबे के पत्तर पर सोने का मुलम्मा करवा दिया और उसको सुंदर तरह से संवारा। मंदिर के नीचे का भाग उत्तम रीति से रंगा हुआ है; बाहर की दीवार पर देवताओं के चित्र बने हैं; चारो ओर दालान हैं। मंदिर के भीतर दक्षिण बगल में रेशमी वस्त्र में बांधा हुआ ग्रंथसाहब है, जिसको समय समय पर पुजारी पंखा डोलाता है। तालाब के उत्तर कोने के निकट नवनिहालसिंह का बनवाया हुआ एक ऊंचा बुर्ज है। बारीदोआब नहर की सोब्रांवन-शाखा इस कसबे से थोड़ी दूर पर बहती है, जिससे नाला द्वारा इस तालाब में पानी जाता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि जो कोढ़ी इस तालाब में तैर कर पार हो जाता है, उसका कुष्ट रोग नहीं रहता है, इसी लिये इस तालाब और इस कसबे का नाम तरनतारन है। अमृतसर से यह पुराना स्थान है। बैशाख की अमावास्या को यहां बड़ा मेला होता है, जो दो सप्ताह तक रहता है।

**रामतीर्थ**—अमृतसर से ८ मील पश्चिम खासा के रेलवे स्टेशन के निकट रामतीर्थ है, जहां कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी को एक मेला होता है। यात्री-गण एक पवित्र कुंड में स्नान करते हैं।

**अमृतसर-जिला**—इसके पश्चिमोत्तर रावी नदी, जो स्यालकोट जिले से इसको अलग करती है; पूर्वोत्तर गुरदासपुर जिला; पूर्व-दक्षिण व्यास

नदी; जो कपुरथला के राज्य से इसको जुदा करती है और दक्षिण-पश्चिम लाहौर जिला है। जिले का क्षेत्रफल १५७४ वर्गमील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अमृतसर जिले में ९९२१०१ मनुष्य और सन् १८८१ में ८९३२६६ मनुष्य थे; अर्थात् ४१३२०७ मुसलमान, २६२५३१ हिन्दू, २१६३३७ सिक्ख, ८६९ कृस्तान, ३१२ जैन और १० दूसरे। इस जिले की बहुत जातियों में हिंदू, सिक्ख और मुसलमान तीनों हैं, जो सन् १८८१ की नीचे की फिहरिस्त से जान पड़ेंगे।

| जाति | मनुष्य-संख्या | हिन्दू | सिक्ख | मुसलमान |
|---|---|---|---|---|
| जाट | २०५४३४ | १६८४३ | १५११०७ | ३७४८४ |
| चुहरा | ०१७०११ | १०२२४५ | २३५१ | २४१५ |
| झिनवार | ४५३६० | १६२३६ | ५५५४ | २३५७० |
| तरखाना | ३४९८४ | ४१०१ | २१०९५ | ९७८८ |
| ब्राह्मण | ३८७५३ | ३४१२० | ६३३ | ,, |
| खत्री | ३१४११ | २९०३६ | २३७५ | ,, |
| कुंभार | २११७५ | ६१५६ | २४२९ | २०५९० |
| राजपूत | २७६६५ | १८१८ | ४५० | २५३९७ |
| अरोरा | २०६१३ | १४७७१ | ५८४२ | ,, |
| लोहार | १८७७८ | १०३९ | ४७६९ | १२९७० |
| नाई | १४६९४ | ४८४३ | ३४४७ | ६४०४ |
| कंबोह | १३६५४ | २८४४ | ६८१४ | ३११६ |
| छिंबा | १३३७९ | ३२७३ | ३९५६ | ६१५० |
| मिरासी | ११०५६ | ९० | ,, | १०१५६ |
| सोनार | ८६०५ | ५०८५ | २८६० | ६६० |

अमृतसर जिले में अमृतसर शहर के अतिरिक्त ७ छोटे कसबे हैं। जंडियाला, मजीठा, मैरावल, रामदास, तरनतारन, साढ़ालीकलां और वुलंदा; इनमें से पहले के ५ में म्यूनिसिपलिटी हैं और रामदासनामक कसबे में एक सुंदर सिक्ख मंदिर बना हुआ है।

इतिहास—सिक्खों के चौथे गुरु रामदास ने सन् १५७४ ई० में बादशाह अकबर की दी हुई भूमिपर अमृतसर शहर की 'नेव' दी और अमृतसर नामक तालाब बनवाया; जिसके नाम से उस शहर का नाम अमृतसर पड़ा। उन्होंने तालाब के मध्य में एक सिक्ख मंदिर अर्थात् गुरुद्वारा बनाने का काम आरंभ किया, जिसको पांचवां गुरु अर्जुन मल ने पूरा किया। सन् १७६१ में अहमदशाह दुर्रानी ने सिक्खों को परास्त करके शहर और मंदिर का विध्वंश किया; उसके चले जाने के पश्चात् कई एक सिक्ख प्रधानों में अमृतसर बांटा गया; परंतु यह धीरे धीरे भंगीमिस्ल के कब्जे में आया। सन् १८०२ ई० में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने उससे शहर को छीन कर अपने राज्य में मिला लिया और उस स्थान पर बहुतसा रुपया खर्च किया; तथा सोने के मुलम्मे किए हुए तांबे की चादरों को मंदिर पर जड़वाया; तबसे वह मंदिर सोनहुला मंदिर कर के प्रसिद्ध हुआ। सिक्खों ने जहांगीर के मकबरे और दूसरे मुसलमानों की कबरों से बहुतेरे कीमती असबाब लाकर मंदिर और तालाब में लगा दिए। महाराज रणजीतसिंह ने सन् १८०९ ई० में 'गोविंदगढ़' किला बनवाया। और अमृतसर शहर को दृढ़ दीवार से घेरवाया, जिसका बड़ा हिस्सा अंगरेजों ने अपनी अमलदारी होने पर तोड़वा दिया था; उसका कुछ भाग अबतक है। शहर में १२ फाटक थे, जिनमें से शहर के उत्तर रामबाग के निकट अब एक फाटक है।

सन् १८४९ ई० में पंजाब के दूसरे देशों के साथ यह जिला अंगरेजों के हाथ में आया। शहर का पुराना भाग सन् १७६२ से पीछे का और बड़ा भाग हाल की बनावट का है।

## लाहौर।

अमृतसर से ३२ मील पश्चिम लाहौर का रेलवे स्टेशन है। पंजाब में किस्मत और जिले का सदर स्थान तथा पंजाब की राजधानी (३१ अंश ३४ कला ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ कला २१ विकला पूर्व देशांतर में) रावी नदी के १ मील बाएं; अर्थात् दक्षिण लाहौर एक प्रख्यात शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के सहित लाहौर में १७६८५४ मनुष्य थे; अर्थात् १०४७१० पुरुष और ७२१४४ स्त्रियां। इनमें १०२५८० मुसल्मान, ६२०७७ हिंदू, ७३०६ सिक्ख, ४६१७ कृस्तान, ३३१ जैन, १३२ पारसी, १४ यहूदी और १ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में १२ वां और पंजाब में दूसरा शहर है।

नया लाहौर का क्षेत्रफल ६४० एकड़ है। लाहौर के चारोओर १५ फीट ऊंची ईंटे की दीवार और १३ फाटक हैं। उत्तर के अतिरिक्त शहर के तीन ओर खाईं थी; जो अब भर गई है। शहरपनाह के बाहर चारो ओर पक्की सड़क है।

मैं रेलवे स्टेशन के निकट मेलाराम खत्री की धर्मशाला में जा टिका। वहां पक्के तालाव के चारो ओर धर्मशाले के मकान बने हैं; तालाव के दक्षिण जनानाघाट और धर्मशाले से उत्तर सुंदर बाग है। रेलवे स्टेशन से १ मील पश्चिम शहर तक 'ट्रामवे' गई है। लाहौर में जलकल सर्वत्र लगी है; जो सन् १८८१ ई० में खुली, प्रधान सड़कों पर रात्रि में रोशनी होती है, कई एक धर्मशाले और देवमंदिर बने हैं और अनारकली चौक प्रधान बाजार है। चैत्र में शालामार का प्रसिद्ध मेला होता है।

लाहौर में चीफकोर्ट दोमंजिली इमारत पत्थर से बनी हुई है, जिससे आगे जाने पर चिड़ियाखाना; अर्थात् पशुशाला मिलता है, इसमें थोड़े पक्षी और बाघ इत्यादि वनजंतु पाले गए हैं। गवर्नमेंटहौस के दक्षिण और सिविल स्टेशन के अखीर दक्षिण एक बड़ा जेल है; जिसमें २२७६ कैदी रह सकते हैं। जेलखाने में गलीचे, कंबल इत्यादि बहुत सामान तैयार होते हैं; जिनको लंदन और अमेरिका के सौदागर बहुत खरीद करके ले जाते हैं। शहर से १ मील उत्तर पंजाब के प्रसिद्ध पांच नदियों में से रावी नदी बहती है; जो एक समय शहर के पासही थी। यह नदी हिमालय के दक्षिण कांगड़ा जिले से निकल कर ४५० मील बहने के उपरांत मुल्तान से प्रायः ४० मील ऊपर चनाव में मिली है। लाहौर में रावी पर नाव का पुल बना है, जिससे होकर शाहदारा जाना होता है। शहर से २ मील दूर सीढ़ियों से

घिरा हुआ एक बड़ा तालाब है, जिसके मध्य में तीन मंजिली बारहदरी बनी हुई है और उत्तर-दर्वाजे के समीप एक बुर्ज है।

दूसरे बड़े शहरों के समान लाहौर में बड़ी सौदागरी नहीं होती है। यहां रेशम और सोना तथा चांदी के लैस बनते हैं और यहां से दूसरी जगहों में भेजे जाते हैं। लाहौर में बंगालबंक, आगराबंक, शिमलाबंक इत्यादि की शाखा है और अनेक यूरोपियन सौदागर तथा तिजारती लोग रहते हैं।

लाहौर के रेलवे-स्टेशन से गाड़ी वा एक्के पर सवार होकर इस क्रम से लाहौर के प्रसिद्ध इमारत आदि वस्तुओं को देखना चाहिए। चौमुहानी सड़क से पूर्व जाने पर दहिने लारेंस-बाग, बाएं पंजाब क्लब, दहिने लारेंस-हाल, बाए गवर्नमेंटहौस; अर्थात् चीफ कमिश्नर की कोठी और चिफ्स-कालिज और ३ मील आगे मियामीर की छावनी मिलती है और चौमुहानी सड़क से पश्चिम जाने पर कई एक अच्छी दुकानें, बाएं होटल और लार्ड लारेंस की प्रतिमा; दहिने कथेड्रल, बांए चीफ-कोर्ट और कई एक बंक; दहिने पोष्टआफिस और टेलीग्राफआफिस; थोड़े घूमने पर बाएं पुराना और नया अजायब खाना और बाद अनारकली बाग का दरवाजा; उत्तर घूमने पर दहिने गवर्नमेंट कालिज और छोटी कचहरियां; बाएं डिपोटी कमिश्नर की कचहरी और गवर्नमेंट-स्कूल; उससे आगे पूर्व अनारकली बाजार के निकट 'मेओ'-अस्पताल, जिसमें ११० रोगी रह सकते हैं और कुछ पूर्व बाएं कबरगाह मिलता है; कबरगाह से आगे सड़क दो तरफ गई है, बाएं वाली नाव के पुल पर होकर शाहदारा को और दहिने वाली किले की ओर।

**लारेंसबाग**—यह बाग ११२ एकड़ में फैला हुआ है; इसमें भांति भांति के वृक्ष और विविध प्रकार के झार बूटे लगाए गए हैं। बाग के उत्तर बगल में सर जे० लारेंस के स्मरणार्थ सन् १८६२ ई० का बना हुआ लारेंसहाल है, जिसके निकट मंटगोमरी के स्मरणार्थ सन् १८६६ ई० का बना हुआ मंटगोमरीहाल देखने में आता है। लारेंसबाग से उत्तर और गवर्नमेंट-हौस के समीप तैरने के लिये एक उत्तम हम्मांम बना है।

**शालामार-बाग**—यह लाहौर के टकशाल फाटक से ६ मील पूर्व है; जो बादशाह शाहजहां के हुक्म से सन् १६३७ ई० में बनाया गया और रणजीतसिंह ने इसकी मरम्मत करवाई। यह बाग एक दीवार से घिरा हुआ प्रायः ८० एकड़ में है। इसके ३ भाग हैं। फाटक द्वारा एक भाग से दूसरे भाग में जाना होता है। बाग के दक्षिण बगल पर सड़क के निकट बाग का सदर फाटक है।

शालामार का पहला भाग प्रायः ३०० गज लंबा और इतनाही चौड़ा आम का बाग है; इसके मध्यभाग में पूर्वसे पश्चिम और उत्तरसे दक्षिण एक दूसरे को काटते हुए पतले हौज बने हुए हैं; जिनके मध्य में ४ वा ५ गज के अंतर पर बिगड़े हुए लग भग १०० फव्वारे और दोनों बगलों पर पक्की सड़कें हैं। बाग के चारो बगलों पर दीवार के भीतर और बाग में जगह जगह सड़कें बनी हुई हैं और बाग के चारो बगलों में दिवार के समीप एक एक बंगले हैं। उत्तर वाले बंगले में मार्बुल का काम है।

इससे उत्तर शालामार बाग का दूसरा भाग है; इसमें प्रायः ६० गज लंबा और इतनाही चौड़ा एक पक्का सरोवर है; जिसके मध्य में पूर्वसे पश्चिम तक पत्थर की सड़क और भीतर कई एक पंक्तियों में २०० से अधिक मार्बुल के फव्वारे हैं। सरोवर के पूर्व और पश्चिम आम का बाग और उत्तर तथा दक्षिण फूल लगे हैं। चारो ओर दीवारों के निकट एक एक छोटे बंगले और दक्षिण ओर मार्बुल की बड़ी चौकी है।

बाग का तीसरा भाग सबसे उत्तर है; जिसमें आम के वृक्ष लगे हैं और स्थान स्थान में पक्की सड़क बनी हैं।

**मीयांमीर की छावनी**—लाहौर के सिविल स्टेसन से ५ मील दक्षिण-पूर्व मियांमीर की फौजी छावनी है; जिसमें १ अंगरेजी रेजीमेंट, २ बैटरी, २ देशी रेजीमेंट और १ रिसाला है। सन् १८८१ में मियांमीर में १८४०१ मनुष्य थे।

मियांमीर एक फकीर था, जिसके नाम से इस स्थान का यह नाम पड़ा है। छावनी में जानें वाली सड़क के दहिने $\frac{3}{4}$ मील पश्चिमोत्तर २०० फीट लंबे

और इतनेही चौड़े चौक के मध्य में मार्बुल के चबूतरे पर मियांमीर का स्थान है, जिसके दरवाजे का शिलालेख सन् १६३५ ई० के मुताबिक होता है। घेरे के बाएं बगल में एक मसजिद है। महाराज रणजीतसिंह ने हजूरी बाग की बारहदरी में लगाने के लिये यहां से उखाड़ कर बहुतेरे मार्बुल लेगए थे।

अजायब खाना—अनारकली-बाग के निकट दो मंजिला पुराना अजायब खाना है, जिसमें पुराने समय के रिमेंस, कारीगरी, दस्तकारी, खानिक वस्तु और जानवर इत्यादि दर्शनीय वस्तुओं के नमूने रक्खे हुए हैं। पुराने रिमेंसो में बौद्ध संगत राशियां, अनेक भांति के सिक्के और पीतल की २ पुरानी तोपें हैं, जिनको गुरुगोविंदसिंह के समय की लोग कहते हैं। यह तोपें होसियारपुर जिले के आनंदपुर के टीले में गाड़ी हुई मिली थीं। हिंदुस्तानी कारीगरों की बनाई हुई पंजाब के राजाओं और सरदारों की बहुतसी तस्वीर दीवार में लटकाई हुई हैं। इनके अतिरिक्त विविध भांति के पंजाबी जेवर, बाजा, बर्तन, गिलास इत्यादि; भावलपुर के प्याले और गहने. दिल्ली के धातु के काम और छोटी छोटी मोतियां लगे हुए एक खंजर हैं। दस्तकारियों में देवमूर्तियां, पंजाब के चमड़े के बर्तन. भावलपुर और मुलतान के रेशमी दस्तकारी का उत्तम नमूना और कपड़े पर मुलायम रेशम के कराचोबी का काम; जिसमें जगह जगह शीशे लगे हैं; इत्यादि वस्तु हैं। खानिक वस्तुओं में कोहनूर हीरे का नकल. पंजाब की नदी में पाया हुआ सोना, चट्टानी नामक के दो तरह के नमूने हैं। इनके अतिरिक्त अजायब खाने में भांति भांति के मरे हुए चिड़िए और कीड़े इत्यादि अनेक पदार्थ हैं।

दरवाजे के आगे ऊंचे चबूतरे पर एक पुरानी तोप है; जिसको अहमदशाह दुर्रानी के वजीर शाहवलीखां ने बनवाया। अहमदशाह के हिंदुस्तान छोड़ने पर यह भांगीमिस्ल के हाथ में आई। पीछे यह महाराज रणजीतसिंह के हस्तगत हुई। सन् १८६० ई० में यह तोप लाहौर के दिल्ली फाटक से यहां लाई गई। इसके ऊपर का पारसियन लेख सन् १७६२ ई० के मुताबिक है।

पुराने अजायबखाने के निकट नया अजायबखाना बन कर तैयार हुआ है, जिसके समीप सन् १८९० ई० का बना हुआ टाउनहाल है।

**अनारकली का मकबरा**—सिविल स्टेशन के निकट अठपहला और गुंबजदार मकबरा है, जो बहुत वर्षों तक सिविल स्टेशन के चर्च के काम में लाया जाता था। नकली कबर-इमारत के मध्य से हटा कर के बगल के कमरे में करदी गई है। उजले मार्बुल की कबर पर सुन्दर लेख है, जिनमें का हिजरी सन् १५९९ और १६१५ ई० के मुताबिक होता है। पहला सन् (१५११) अनारकली के मरने का और दूसरा सन् मकबरा तैयार होने का होगा।

**इतिहास**-अकबर की एक प्रिय स्त्री अनारकली कही जाती थी, जिसका नाम नादिरा बेगम और शरीफूनिसा भी था। लोग कहते हैं कि अनारकली पर सलीम आशिक था। अकबर ने सलीम को जनाने में प्रवेश करने के समय अनारकली को मुसकुराते हुए देखा, इस लिये अनारकली को जीते हुए गड़वा दिया। अकबर के मरने पर जब सलीम जहांगीर के नाम से बादशाह हुआ, तब उसने अनारकली के मकबरे को बनवाया।

**सोनहली मसजिद**—इसके तीनों गुंबजों पर सोना का मुलम्मा है; इस लिये इसको लोग सोनहली मसजिद कहते हैं। सन् १७५३ ई० में एक मुसलमान ने इसको बनवाया। मसजिद के पीछे के आंगन में एक बड़ा कूप है, जिसमें पानी तक सिढ़ियां बनी हैं। लोग कहते हैं कि इस कूप को गुरु अर्जुन ने बनवाया था।

**किला**—शहर के पूर्वोत्तर के कोने के निकट शहरपनाह के भीतर किला है। किले के पश्चिम के रोशनाई फाटक से किले में प्रवेश करने पर थोड़ी दूर आगे जहांगीर की बनवाई हुई मोतीमसजिद मिलती है, जिसके ३ गुंबज उजले मार्बुल के हैं। बाहर के आंगन में मेहराबी दरवाजे के ऊपर सन् १५९८ ई० का पारसियन लेख है। महाराज रणजीतसिंह इसमें अपना खजाना रखते थे। अंगरेजी सरकार भी इसमें अपना खजाना रखती है। जगह जगह संत्री रहते हैं।

पूर्व बढ़ने पर दलीपसिंह की माता की आज्ञा से बना हुआ एक छोटा सिक्ख मंदिर देख पड़ता है।

मोतीमसजिद के समीप शाहजहां का बनवाया हुआ शीशमहल है, जिसकी कोठरियों की दीवारों और छतों में शीशे का उत्तम काम है। ख्वाबगाह के बाएं शाहजहां का बनवाया हुआ नवलखामहल है। लोग कहते हैं कि इसके बनाने में ९ लाख रुपये खर्च पड़े थे। महल के प्रधान भाग को समनबुर्ज कहते हैं, जिसमें उजले मार्बुल से बना हुआ मंडपाकार एक सुंदर गृह है, जिसमें विविध रंग के बहुमूल्य पत्थरों की पच्चीकारी करके फूल लता बनाई हुई हैं।

पूर्व ओर ३२ खंभो पर बना हुआ उजले मार्बुल का दीवानखास है, उत्तर की टट्टी में एक छोटी खिड़की है; जिसके निकट बादशाह बैठकर प्रजाओं की अरजी सुनते थे। अब यह चर्च के काम में आता है। इससे पूर्व अकबरी महल नामक सुंदर सायबान है।

बाहर की दीवार और महल के उत्तर की दीवार के बीच में दीवानखास से नीचे ६७ सीढ़ियां गई हैं; जिससे लगभग ६० फीट दक्षिण बादशाह जहांगीर का बनवाया हुआ ख्वाबगाह है, जिसके खंभों की उत्तम नकाशी है। अकबरी महल की प्रतिमाओं के तुल्य इसमें हाथी और चिड़िये बनाए गए हैं।

किले के मध्य भाग में लाल पत्थर से बना हुआ दीवानआम है, जो बारक के काम में आता है। इसके मध्य में १२ खंभे लगे हैं और बीच में बादशाह का तख्तगाह है। १२ सीढ़ियों से चढ़कर दीवानआम में जाना होता है; जिसके पीछे कई एक कमरे हैं; इसके उत्तर जहां अब कई एक वृक्ष है, इस काम के लिये एक कबर थी कि उसको देखकर बादशाह को स्मरण होता रहे कि एक समय मैं भी कबर में जाऊंगा।

पूर्व अस्पताल है, जिसको महाराज रणजीतसिंह की पुत्रवधू चंद्रकुंअरी ने अपने रहने के लिये बनवाया था। पीछे शेरसिंह की आज्ञा से इसमें वह कैद थी और उन्हीं के हुक्म से पीछे मारदी गई। दीवानआम के पूर्व इसमें लगा हुआ शेरसिंह का दो मंजिला मकान है, जो पहले ४ मंजिल का था।

**महाराज रणजीतसिंह की छतरी**—(अर्थात् समाधि मंदिर)—यह किले के पश्चिम के रोशनाई फाटक के आगे है। इसका अगवास किले के फाटक की ओर है। छतरी और किले के मध्य में सिक्खों के आदि ग्रंथकर्ता तथा पांचवां गुरु अर्जुन की सादी छतरी है।

महाराज का गुंबजदार समाधि मंदिर मार्बुल से बना है, जिसकी छत गोलाकार है। इसके भीतर मध्य में चमकीले मार्बुल की बारहदरी है, जिसमें मार्बुल के अठपहले ३२ खंभे लगे हैं। इसके सोनहले छत में उत्तम रीति से शीशे जड़े हुए हैं। बारहदरी के बाहर चारो ओर मकान की छत में शीशे के टुकड़े; अर्थात् दर्पण जड़ कर चांदी और सोने का कुंदन हुआ है। बारहदरी का फर्श मार्बुल के टुकड़ों से बना है; जिसके बीच में मार्बुल का ऊंचा चबूतरा है; जिसपर मार्बुल में काट करके १ बड़ा और उसके चारो ओर ११ छोटे कमल के फूल बनाए गए हैं। मध्य के फूल के नीचे महाराज रणजीतसिंह के मृतशरीर की भस्म रक्खी गई थी और दूसरे ११ कमल उनकी ४ स्त्रियों और ७ सहेलिनियों के स्मरणार्थ बने हैं; जो महाराज के साथ सन् १८३९ ई० में सती हो गई थीं। बाहर के मकान में मार्बुल की कई देवमूर्तियां हैं। सिक्ख पुजारी प्रतिदिन महाराज की समाधि के समीप सिक्खों का आदि ग्रंथ पढ़ता है और ग्रंथ को चंवर डोलाता है।

**जामामसजिद**—महाराज रणजीतसिंह की छतरी के पश्चिम औरंगजेब की बनाई हुई एक बड़ी जामामसजिद है। मसजिद सुर्ख पत्थर की और इसके ३ सादे गुंबज उजले मार्बुल के हैं। मसजिद ब मरम्मत है। इसके चारो बुर्ज-ऊपर के मंजिल के गिर जाने से बदशकल होगए हैं; दक्षिण-पश्चिम वाला बुर्ज ऊपर चढ़ने के लिए खुला रहता है। दरवाजे के ऊपर का शिलालेख सन् १६७४ ई० के मुताबिक होता है। सीढ़ियों से मसजिद के फाटक में जाना होता है। ऊपर एक कमरे में अली और उसके पुत्र हसन और हुसेन की पगड़ियां; एक टोपी, जिसपर अरबी लिखा है; अली की स्त्री फातिमा के एबादत का कालीन; महम्मद का स्लीपर; पत्थर पर उखड़ा

हुआ चरण चिन्ह, पोशाक; एबादत का कालीन, एक सब्ज पगड़ी और सुर्ख रंग की दाढ़ी का १ वाल रक्षित है।

औरंगजेब ने अपने वड़े भाई दारा को मार कर उसके धन से इस मसजिद को वनवाया; इसलिए मुसलमानलोग एबादत के लिये इसको पसंद नहीं करते हैं। महाराज रणजीतसिंह ने इसको मेगजीन वनाया था। अंगरेजी सरकार ने सन् १८५६ ई० में मुसलमानों को यह मसजिद देदी।

मसजिद के वाहर के आंगन को हजूरीवाग कहते हैं; जिसके मध्य में रणजीतसिंह की वनवाई हुई एक सुन्दर वारहदरी है, जिसको उन्होंने शाहदारा वाले जहांगीर के मकवरे से श्वेत मार्वुल लाकर वनवाया।

**जहांगीर का मकवरा**—किले से १$\frac{1}{2}$ मील उत्तर और शाहदारा के रेलवे स्टेशन से १$\frac{1}{4}$ मील दूर शाहदारा में दिल्ली के वादशाह जहांगीर का वड़ा मकवरा है। मकवरे और शहर के वीच में रावी नदी पर नावों का पुल वना है। यद्यपि सिक्खलोग इससे असवाव उजाड़ लेगए थे, तथापि यह मकवरा लाहौर के भूषित करने वाली प्रधान वस्तुओं में से एक है। सन् १६२७ ई० में जहांगीर मरा और यहां दफन किया गया। ५० फीट ऊंची मेहरावी से मकवरे के आंगन में जाना होता है; जो एक वाग है। वाग सींचने के लिये रहंट वना है।

मकवरा २०० फीट से कुछ कम लंवा और इतनाही चौड़ा है। इसके ऊपर समतल एकही छत है; जिसपर काले और सुर्ख मार्वुल के तख्ते जड़े हुए हैं; जो अव वहुत उदास पड़ गए हैं। पहिले मकवरे के ऊपर मार्वुल का गुंवज था; जिसको औरंगजेव ने हटा दिया और चारो किनारों पर मार्वुल का घेरा था; जिसको रणजीतसिंह ने उजाड़ लिया। मकवरे के प्रत्येक कोने के समीप भूमि से ९५ फीट ऊंचा एक चौमंजिला वुर्ज है। वाहर की सिढ़ियों से मकवरे की छत पर जाना होता है।

मकवरे के मध्य में अठपहला कमरा और उसके चारो ओर खाली मकान है। कमरे के चारों वगलों में नफीस जालीदार टट्टियां वनी हैं;

जिसमें उसमें पूरा प्रकाश रहता है। कमरे के मध्य में उजले मार्बुल से बनी हुई जहांगीर की कबर है; जिस पर अनेक रंग के बहुमूल्य पत्थरों की पची-कारी करके लता फूल बनाए गए हैं। कबर के पूर्व और पश्चिम 'खोदा' के ९९ नाम उत्तम प्रकार से नकाशी किए गए हैं और दक्षिण बगल में बादशाह जहांगीर का नाम है।

जहांगीर की स्त्री नूरजहां और नूरजहां के भाई आसफखां के मकबरे खराब हो गए हैं, क्योंकि सिक्खलोग उनमें से मार्बुल और उनके मीनारों में से पत्थर निकाल लेगए थे।

**लाहौर जिला**—यह लाहौर विभाग का मध्य जिला है। इसके पश्चिमोत्तर गुजरानवाला जिला; पूर्वोत्तर अमृतसर जिला; दक्षिण-पूर्व सतलज नदी; जो फिरोजपुर जिले से इसको अलग करती है और दक्षिण-पश्चिम मांटगोमरी जिला है। जिले का क्षेत्रफल ३६४८ वर्ग मील है। लाहौर जिले में ४ तहसीली हैं। जिले की संपूर्ण लंबाई में रावी नदी बहती है। जिले में डेगनदी और बारीदोआब नहर भी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय लाहौर जिले में १०७४७६७ मनुष्य और सन् १८८१ में ९२४१०६ थे; अर्थात् ५११९४७७ मुसलमान, ११३३११ हिंदू, १२२६११ सिक्ख, ४६४४ क्रस्तान, १७० जैन, १२ पारसी और ११ दूसरे। जिले में जाट बहुत हैं, जो सन् १८८१ में १५७६७० थे। इनमें से ८४१७४ हिंदू और सिक्ख, शेष सब मुसलमान थे। इनके बाद ११०२५ चुहरा, १४१६४ अराइन, ५४१७७ राजपूत थे, जिनमें से अधिक वा कम सब जातियों में मुसलमान हैं। सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय लाहौर जिले के लाहौर में १७६८५४, कसूर में २०२९० और चुनियन में १०३३१ मनुष्य थे।

**इतिहास**—ऐसी कहावत है कि अयोध्या के महाराज रामचंद्र के पुत्र लवने लाहौर को और कुश ने कसूर को (जो लाहौर जिले में है) नियत किया। लव के लोहर नाम का अपभ्रंश लाहौर नाम है। सिकंदर के समय के इतिहास में लाहौर का बयान नहीं है, इससे जान पड़ता है कि लाहौर उस

समय प्रसिद्ध नहीं था। सातवीं शताब्दी में चीन का रहने वाला यात्री हुएं-त्संग ने लिखा था कि लाहौर हिंदुओं का बड़ा शहर है; इससे ज्ञात होता है कि सन् ई० की पहली और सातवों शताब्दी के बीच में लाहौर प्रसिद्ध हुआ था।

सन् ९७७ ई० में लाहौर के राजा जयपाल ने अफगानिस्तान में गजनी के राज्य पर आक्रमण किया; वह अपनी सेना पहाड़ के दर्रोंतक ले गया। गजनी-खांदान के शाहजादा सुबुक्तगीं ने बड़ी लड़ाई के पश्चात् तुफान का मोका पाकर हिंदुओं के लौटने का मार्ग बंद कर दिया; परंतु जब राजा ने ५० हाथी उसको दिये और १० लाख 'दिरहम' अर्थात् २ लाख पचास हजार रुपया देने का करार किया; तब उसने राजा की फौज को हिन्दुस्तान में लौटने दिया। अंत में दिरहम न मिलने पर सुबुक्तगीं ने हिन्दुस्तान में आकर जयपाल को परास्त किया और पेशावर के किले में १० हजार सवार और १ अफसर तैनात किया। सन् ९९७ ई० में सुबुक्तगीं के मरने पर उसका पुत्र महमूद गजनी के तख्त पर बैठा; उसने ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में राजा जयपाल को परास्त किया। उस समय हिन्दुओं का यह दस्तूर था कि जो राजा दो बार लड़ाई में हारै, उसको लोग राजगद्दी के योग्य नहीं समझते थे; इसलिये जयपाल ने अपने पुत्र अनंगपाल को राज्य देकर बादशाही ठाठ से चिता पर जल गया। पीछे लाहौर मुसलमानों के आधीन उनकी हिन्दुस्तान की राजधानी हुआ। सन् ११९३ ई० में महम्मदगोरी ने लाहौर को छोड़ कर दिल्ली में अपनी राजधानी बनाई।

मुगल बादशाहों के राज्य के समय लाहौर शहर की उन्नति हुई। अकबर ने लाहौर के किले को बढ़ाया और सुधारा तथा शहर को दीवार से घेरा; जिसका हिस्सा अब तक महाराज रणजीतसिंह का बनवाया हुआ नया शहर-पनाह में वर्तमान है। अकबर के राज्य के समय यह शहर क्षेत्रफल और आबादी में तेजी से बढ़ गया। जहांगीर लाहौर में बहुधा रहता था; जिसका मकबरा शाहदारा में स्थित है। शाहजहां ने (किले में) अपने बाप की इमारत के बगल में एक छोटा महल बनवाया। औरंगजेब के राज्य के समय

लाहौर की घटती आरंभ हुई। सन् १७४८ में अहमदशाह दुर्रानी ने लाहौर शहर को ले लिया; तबसे लगातार आक्रमण और लूटपाट होने लगा; लेकिन महाराज रणजीतसिंह के राज्य होने पर फिर लाहौर की उन्नति हुई।

'गुजरांवाला' (शहर) के रहने वाले महाराज रणजीतसिंह ने सन् १७९९ ई० में अफगानिस्तान के शाहजमां से लाहौर पाया, उन्होंने अपने पराक्रम और बुद्धिबल से सतलज नदी के उत्तर का संपूर्ण मुल्क काश्मीर, पेशावर, और मुलतान तक अपने आधीन करके एक बड़ा राज्य नियत किया। लाहौर राजधानी हुआ; इनके राज्य के समय लाहौर फिर पूर्ववत् रवनकदार हुआ। महाराज ने लाहौर को अच्छी तरह से सुधारा। महाराज रणजीतसिंह ७१ वर्ष की अवस्था में सन् १८३९ ई० की तारीख २० जून को मरगए; उनकी ४ स्त्रियां अच्छे अच्छे वस्त्र भूषणों से सज्जित हो ७ लौंडियों के सहित महाराज के चिता पर जल कर सती हो गईं।

महाराज के देहांत होने पर उनके बड़े पुत्र खड्गसिंह लाहौर के राजा हुए, पर थोड़े ही दिन के पश्चात् पुराने मंत्री ध्यानसिंह के अनुमति से खड्गसिंह का पुत्र नवनिहालसिंह अपने बाप को नजरबंद करके आप राज्य का काम करने लगा। सन् १८४० के नवंबर में महाराज खड्गसिंह की मृत्यु हुई। नवनिहालसिंह की अवस्था १८ वर्ष की थी; वह महाराज की प्रेतक्रिया कर हाथी पर सवार हो, एक फाटक होकर जाता था; फाटक की इमारत गिर गई; जिससे नवनिहालसिंह मरगया; इसके पश्चात् नवनिहालसिंह की माता चंदकुंअरी राज्य करने लगी। सन् १८४२ ई० में महाराज रणजीतसिंह की महतावकुंअरी के पालकपुत्र शेरसिंह ने ध्यानसिंह की अनुमति से जो लाहौर दरबार के आधीन जंबू का राजा था; लाहौर पर आक्रमण किया। शेरसिंह राजा और ध्यानसिंह मंत्री हुआ। चंदकुंअरी के खर्च के लिये ९ लाख रुपये की जागीर मिली; अंतमें शेरसिंह की आज्ञा से चंदकुंअरी मारीगई। अजितसिंह जो चंदकुंअरी का सहायक था। सन् १८४३ में ध्यानसिंह के सलाह से दगा करके पेस्तौल से महाराज शेरसिंह को मारडाला और शेरसिंह के शिशुपुत्र प्रतापसिंह और मंत्री ध्यानसिंह को भी मारकर महाराज रणजीतसिंह

के छोटे पुत्र दलीपसिंह को राज्य सिंहासन पर बैठाया; जिसका जन्म सन् १८३८ ई० के ४ सितंबर को था। अजितसिंह महाराज दलीपसिंह का मंत्री बना। ध्यानसिंह का पुत्र हिरासिंह सरदारलोग और सेनाओं को अपनी ओर करके उसी दिन किले के द्वार पर पहुंचा। रातभर लड़ाई होती रही, सवेरे अजितसिंह और उनके साथी लहनासिंह मारेगए। अजितसिंह का सिर काटकर ध्यानसिंह की स्त्री के चरणों पर रक्खा गया। वह प्रसन्न होकर १३ स्त्रियों के सहित ध्यानसिंह की देह के साथ चिता पर जलगई।

दलीपसिंह राजा और हीरासिंह मंत्री हुए। दलीपसिंह की माता महारानी चंदाकुंअरी राजकार्य्य करने लगी। कुछ दिनों के पश्चात् सरदारलोग हीरासिंह से चिढ़गए; हीरासिंह अपने सलाहकार पंडित जल्ला के साथ भागे; परंतु रास्ते में दोनों मारेगए; इसके पश्चात् दलीपसिंह का मामा अयोग्य पुरुष जवाहिरसिंह मंत्री बना। इसी अरसे में कुंअर पिशौरासिंह; जो महाराज रणजीतसिंह के लड़कों में से था, बिगड़कर अटक के किले को जा दबाया। जवाहिरसिंह की आज्ञा से वहां वह मारागया। खालसासेना ने इसकाम से अप्रसन्न होकर सन् १८४५ के २१ सितंबर को जवाहिरसिंह को मारडाला; इसके बाद कोई मंत्री नहीं हुआ। खालसा सेना स्वतंत्र बनकर मनमाना काम करनेलगी।

सन् १८४५ ई० के दिसंबर में सिक्ख सेना, जिसमें ६० हजार आदमी और १५० तोपें थीं, सतलज नदी को लांघकर अंगरेजी राज्य पर आक्रमण किया। २ महीने के अर्से में मुदकी, फिरोजपुर, अलीवाल और सुब्रांव ४ भारी लड़ाइयां हुईं। प्रत्येक युद्ध में बहुत अंगरेजी सेना मारीगई, परंतु अंत की लड़ाई में सिक्ख परास्त होकर भागगए। लाहौरदरबार ने अंगरेजी सरकार की तावेदारी कबूल की। सन् १८०९ ई० की संधि तोड़दी गई। नया संधि के अनुसार दलीपसिंह लाहोर का राजा बनाया गया। सतलज और व्यास दोनों नदियों के बीच की भूमि अंगरेजी राज्य में मिला ली गई। लड़ाई के खर्च में ५० लाख रुपये और १ किरोड़ रुपए के बदले में काश्मीर प्रदेश ले लिया गया। पीछे सरकार ने ७५ लाख रुपये लेकर काश्मीर प्रदेश

को महाराज के खिताब के साथ गुलाबसिंह को देदिया। सिक्खों की सेना की संख्या नियत की गई। लाहौर दरबार में एक रेजोडेंट नियत हुआ और पंजाब में ८ वर्ष के लिये एक अंगरेजी लश्कर तैनात हुआ।

सन् १८४८ ई० में लाहौर दरबार के आधीन मुलतान के दीवान मूलराज ने २ अंगरेजी अफसरों को मारडाला। अंगरेजी सरकार ने मूलराज को शिकस्त देने के लिये लाहौर दरबार से सिक्खसेना भेजी, परंतु सिक्खसेना का सेनापति और खालसा की फौज अंगरेजों से नाराज थीं। शेरसिंह बिगड़ा। लड़ाई की आग संपूर्ण पंजाब में भड़क उठी। सिक्खों का लश्कर फिर जमा हुआ। सिक्खों ने अंगरेजों के साथ बड़ी बहादुरी से लड़ाई की। चिलियानवाला की लड़ाई में अंगरेजों के २४०० सिपाही और अफसर मारे गए और सन् १८४९ की १३ जनवरी को उनके ४ तोपें और ३ पल्टनों के निशान जाते रहे, परंतु अंतमें गुजरात शहर के निकट की लड़ाई में बहादुर सिक्ख परास्त होगए। तारीख २९ मार्च को इश्तिहार दियागया कि आजसे पंजाब का मुल्क अंगरेजी राज्य में मिलगया। महाराज दलीपसिंह के लिये ५ लाख ८० हजार रुपया वार्षिक पेंशन नियत हुई।

अंगरेजोंने दलीपसिंह से सुप्रसिद्ध कोहनूर हीरा भी ले लिया, जिस को सन् १६३९ ई० में पारस के नादिरशाह ने दिल्ली के बादशाह महम्मदशाह से छीन लिया। नादिरशाह के मरने पर वह हीरा अफगानिस्तान के अहमदशाह दुर्रानी के हाथ में आया। पीछे वह शाहशुजा को मिला। शाहशुजा राज्य से च्युत होकर काबुल से भागकर सन् १८१३ ई० में महाराज रणजीतसिंह के शरण में आया। रणजीतसिंह ने शाह शुजा से हीरे को छीन लिया था। अब यह हीरा इंगलेंडेश्वरी महारानी विक्टोरिया के मुकुट में लगा है। हीरा लंडन में फिर से काटकर दुरुस्त किया गया। काटने में ८० हजार रुपए खर्च पड़े थे। हीरे का वजन १८६ करांत से १०२ करांत होगया। विलायती जौहरी अब हीरे का दाम ३ किरोड़ आंकते हैं। कुछ लोगों का एसा मत है कि यह हीरा पूर्व समय में कुंतीपुत्र राजा कर्ण के पास था।

महाराज दलीपसिंह अपनी माता चंदाकुंअरी के साथ इगलेंड गया और

नारफाक देश में रहनेलगा। सन् १८६१ में चंदां कुंअरी का देहांत होने पर दलीपसिंह उसकी क्रिया करने के लिये हिंदुस्तान में आया था। पीछे वह विलायत में जाकर क्रस्तान होगया, उसने एक मेम से अपना व्याह किया, जिससे ३ पुत्र हुए; जिनमें अब २ जीवित हैं। दलीपसिंह अंगरेजो सरकार से नाराजहोकर 'रूस' गया था। उसी समय विलायत में उसकी स्त्री मरगई; तब उसने रूस से लौटने पर पेरिसमें अपना दूसरा व्याह किया। अब वह उसी जगह रहता है।

सन् १७५७ की जुलाई में २६ वां देशी पैदल रेजीमेंट मियांमीर की छावनी में बागी हुई और अपने अफसरों में से कई एक को मारने के पश्चात् भागगई, परंतु उनको अंगरेजों ने रावी के किनारे पर पाकर मारडाला।

**पंजाबदेश**—पंजाब के पूर्व यमुना नदी, जो पश्चिमोत्तर देश से इसको अलग करती है और चीन का राज्य; उत्तर कश्मीर और स्वात और बोनर के देशी राज्य; पश्चिम अफगानिस्तान और खिलात और दक्षिण सिंध और राजपूताना देश है। पंजाब के मध्य में इसकी राजधानी लाहौर शहर है, परंतु आबादी और मसहूरी में दिल्ली प्रधान है। पंजाब के अंगरेजी राज्य का क्षेत्रफल ११०६६७ वर्गमील और देशी राज्यों का क्षेफल ३८२११ वर्गमील तथा दोनों का क्षेत्रफल १४८९६६ वर्गमील है। पंजाब में लगभग ३४००० वर्गमील भूमि जोतने लायक नहीं है। उसमें पहाड़ और जंगल है।

इस प्रदेश का पंजाब नाम इस कारण से पड़ा कि इसमें सतलज, व्यास, रावी, चनाव और झेलम; ये ५ नदियां बहती हैं। पंजाब ३ भागों में विभक्त है,-१ सिंधसागर दोआब, २ देराजात और ३ रा सीससतलज जिले। इनमें १० भाग और ३२ जिले इस भांति हैं;—(१) दिल्ली विभाग में दिल्ली, गुरगांवा और कर्नाल जिले; (२) हिसार विभाग में हिसार, सिरसा और रुहतक, (३) अंबाला विभाग में अंबाला, लुधियाना और शिमला, (४) जलंधर विभाग में जलंधर, होशियारपुर और कांगड़ा; (५) अमृतसर विभाग में अमृतसर, गुरदासपुर और स्यालकोट; (६) लाहौर विभाग में लाहौर, फिरोजपुर और गुजरांवाला; (७) रावलपिंडी में रावलपिंडी, गुजरात, शाहपुर और झेलम जिले; (८)

मुलतान विभाग में मुलतान, झंग. मांटगोमरी और मुजफ्फरगढ़ जिले; (९) देराजात विभाग में देरागाजीखां, देराइस्माइलखां और बन्नू जिले और पेशावर विभाग में पेशावर, कोहाट और हजारा जिले। पंजाब में बारीदोआब नहर, पश्चिमी यमुनानहर और सरहिंद और स्वात नदी की नहर हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पंजाब के अंगरेजी राज्य में २०८६६८४७ मनुष्य थे; अर्थात् ११२५५९८६ पुरुष और ९६१०८६१ स्त्रियां। इनमें से ११६३४११२ मुसलमान, ७७४३४७७ हिन्दू, १३८९१३४ सिक्ख, ५३५८७ कृस्तान, ३३४७७ जैन, ५७६८ बौद्ध, ३५७ पारसी, २७ यहूदी और २८ दूसरे थे। इनमें सैकड़े पीछे पंजाबी भाषा वाले ६३$\frac{१}{४}$ मनुष्य, हिन्दी वाले १७$\frac{१}{२}$, जतकी भाषा के मनुष्य ८$\frac{१}{२}$, पस्तोभाषा वाले ५; पश्चिमी पहाड़ी ३$\frac{१}{२}$, बागड़ी १$\frac{१}{२}$ और अन्य भाषा वाले $\frac{३}{४}$ मनुष्य थे।

पंजाब के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की जन-संख्या के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

| नम्बर | शहर वा कसबा | जिला | जन-संख्या |
|---|---|---|---|
| १ | दिल्ली | दिल्ली | १९२५७९ |
| २ | लाहौर | लाहौर | १७६८५४ |
| ३ | अमृतसर | अमृतसर | १३६८६६ |
| ४ | पेशावर | पेशावर | ८४१९१ |
| ५ | अंबाला | अंबाला | ७९२९४ |
| ६ | मुलतान | मुलतान | ७४६६२ |
| ७ | रावलपिंडी | पिंडी | ७३७३५ |
| ८ | जलंधर | जलंधर | ६६२०२ |
| ९ | स्यालकोट | स्यालकोट | ५५०८७ |
| १० | फिरोजपुर | फिरोजपुर | ५०४३७ |
| ११ | लुधियाना | लुधियाना | ४६३३४ |

| नम्बर | शहर या कसबा | जिला | जन-संख्या |
|---|---|---|---|
| १२ | भिवानी | हिसार | ३५४८७ |
| १३ | रिवाड़ी | गुड़गांवा | २७१३४ |
| १४ | डेरागाजीखां | डेरागाजीखां | २७८८६ |
| १५ | पानीपत | कर्नाल | २७९४७ |
| १६ | वटाला | गुरदासपुर | २७२२३ |
| १७ | कोहाट | कोहाट | २७०८३ |
| १८ | डेराइस्माइलखां | डेराइस्माइलखां | २६८८४ |
| १९ | गुजरांवाला | गुजरांवाला | २६७८९ |
| २० | झंगमगियाना | झंग | २३२१० |
| २१ | कर्नाल | कर्नाल | २११६३ |
| २२ | होशियारपुर | होशियारपुर | २१९५२ |
| २३ | कसूर | लाहौर | २०२१० |
| २४ | जगरून | लुधियाना | १८११६ |
| २५ | गुजरात | गुजरात | १८०५० |
| २६ | भीरा | शाहपुर | १७४३८ |
| २७ | हिसार | हिसार | १६८५४ |
| २८ | रोहतक | रोहतक | १६७०२ |
| २९ | सिरसा | हिसार | १६४१५ |
| ३० | वजीराबाद | गुजरांवाला | १५७८६ |
| ३१ | कैथल | कर्नाल | १५७६८ |
| ३२ | हांसी | हिसार | १५१९० |
| ३३ | पिंडदादनखां | झेलम | १५०५५ |
| ३४ | शिमला | शिमला | १३८३६ |
| ३५ | चिनयट | झंग | १३०२१ |
| ३६ | झेलम | झेलम | १२८७८ |
| ३७ | सुनपत | दिल्ली | १२६११ |

| नम्बर | शहर या कसबा | जिला | जन-संख्या |
|---|---|---|---|
| ३८ | झंग | पेशावर | १२३२७ |
| ३९ | झंझर | रोहतक | ११८८१ |
| ४० | अमरकटांडा | होशियारपुर | ११६३२ |
| ४१ | शाहाबाद | अम्बाला | ११४७३ |
| ४२ | पलवल | गुड़गांवा | ११२२७ |
| ४३ | जलालपुर | गुजरात | ११०६५ |
| ४४ | राहोन | जलंधर | १०६६७ |
| ४५ | चरसदा | पेशावर | १०६१९ |
| ४६ | सधवरा | अम्बाला | १०४४५ |
| ४७ | कर्तारपुर | जलंधर | १०४४१ |
| ४८ | चुनियन | लाहौर | १०३३९ |
| ४९ | ऐबटाबाद | हजारा | १०१६३ |

पंजाब में छोटे बड़े ३६ देशी राज्य हैं, जिनमें से पटियाला, बहावलपुर, नाभा और जींद; ये ४ पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन; चंबा, अमृतसर के कमीश्नर के आधीन; मलियरकोटला और कलसिया तथा शिमला के २२ देशीराज्य अंबाले के कमीश्नर के आधीन, कपुरथला, मंडी और सुकेत जलंधर के कमीश्नर के आधीन; फरीदकोट लाहौर के कमीश्नर के आधीन; पटउड़ी दिल्ली के कमीश्नर के आधीन; और लोहारू और दुजाना हिसार के कमीश्नर के आधीन है। इन राज्यों का क्षेत्रफल ३८२९९ वर्गमील है। पहिले काश्मीर राज्य भी पंजाब में था, परंतु सन् १८७७ ई० में वह सीधा हिंदुस्तान के गवर्मेंट के आधीन करदिया गया।

पंजाब के देशी राजाओं और प्रधानों में बहावलपुर, मलियरकोटला, पतौदी लोहारू और दुजाना के नरेश मुसलमान; पटियाला, जींद, नाभा, कपुरथला, फरीदकोट, और कलसिया के राजा सिक्ख, शेष सब हिंदू हैं। सिक्ख राजाओं में कपुरथला के राजा कलाल, शेष सब जाट हैं, बाकिए हिंदू नरेश, जिनके राज्य हिमालय पहाड़ के नीचले सिलसिले में हैं, खास करके राजपूत हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पंजाब के देशी राज्यों में ४२६३२८० मनुष्य थे; अर्थात् २३२४०११ पुरुष और १९३९२६९ स्त्रियां। इन-में से २४३४२२३ हिंदू, १२८१४५१ मुसलमान; ४८०५४७ सिक्ख, ६२०६ जैन, ४६८ बौद्ध, २२२ क्रस्तान, ५५ पारसी, ६ यहूदी और २ दूसरे थे। इनमें सैकड़े पीछे पंजाबी भाषा वाले ६० १/२, पश्चिमी पहाड़ी १८ १/४, हिंदी भाषा वाले ११ १/४, जाल्की ३ १/४, मारवाड़ी ५ १/२ और अन्य भाषा वाले १ १/४ मनुष्य थे।

पंजाब के देशीराज्यों का [illegible]।

| नंबर | देशीराज्य | क्षेत्रफल वर्गमील | कसबे और गाओं की संख्या | मकानों की संख्या | मनुष्य संख्या सन् १८८१ ई० | मालगुजारी रुपया सन् १८८३-८४ ई० |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मैदान में | | | | | |
| १ | पटियाला | ५८८७ | २६०१ | २८२०६३ | १४६७४३३ | ४६८१५६० |
| २ | बहावलपुर | १५००० | १२२ | ८८६५० | ५७३४३४ | १६००००० |
| ३ | कपुरथला | ६२० | ६१७ | ३७६३३ | २५२६१७ | १०००००० |
| ४ | नाभा | ९२८ | ४८५ | ४२०११ | २६१८२४ | ६५०००० |
| ५ | जींद | १२२३ | ४२३ | ४२०७८ | २४३८६२ | ६००००० |
| ६ | फरीदकोट | ६१२ | १६८ | १००३१ | ९७०३४ | ३००००० |
| ७ | मलियरकोटला | १६४ | ११५ | १२१६४ | ७१०५१ | २८४००० |
| ८ | कलसिया | १७८ | १७१ | १३११ | ६७७०८ | १७२०६० |
| ९ | पतउडी | ४८ | ४० | २५३७ | १७८४७ | ८०७६० |
| १० | दजाना | ११४ | २८ | २१८१ | २३४१६ | ७७१७० |
| ११ | लोहारू | २८५ | ५४ | १६१७ | १३७५४ | ६१००० |
| | जोड़ | २५०६८ | ५६३२ | ५३१८८४ | ३०१६०४० | १५२२५५० |
| | पहाड़ी राज्य | | | | | |
| १ | मंडी | १००० | ४५५१ | २४३३१ | १४७०१७ | ३६०००० |
| २ | चंबा | ३१८० | ३५६ | २०१६३ | ११५७७३ | २३५००० |
| ३ | नाहन | १०७७ | २०६१ | २१५६२ | ११२३७१ | २१०००० |
| ४ | बिलासपुर | ४४८ | १०७३ | १६२५ | ८६५४६ | १००००० |
| ५ | सुकेत | ४७४ | २२० | ८६५८ | ५२४८४ | १००००० |
| ६ | नालागढ़ | २५२ | ३३१ | १०२४६ | ५३३७३ | १०००० |
| ७ | क्योंथल | ११६ | ८३८ | ६३१८ | ३११५४ | ६०००० |
| ८ | बाघल | १२४ | ३४६ | १४४६ | २०६३३ | ६०००० |
| ९ | बसहर | ३३२० | ८३६ | ८५३३ | ६४३४५ | ५०००० |
| १० | जबल | २८८ | ४७२ | ३०५१ | १११६६ | ३०००० |

| नंबर | देशीराज्य | क्षेत्रफल वर्गमील | कसबे और गाँवों की संख्या | मकानों की संख्या | मनुष्य संख्या सन् १८८१ ई० | मालगुजारी रुपया सन् १८८३-८४ ई० |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | भाजी | १६ | ३२७ | ५८२ | १२१०६ | २३००० |
| १२ | कुमारसेन | १० | २५४ | १४४५ | ३५१५ | १०००० |
| १३ | मैलग | ४८ | २२२ | ६२६ | ११६३ | १०००० |
| १४ | बाघट | ३६ | १७८ | १३५४ | ८३३३ | ८००० |
| १५ | धामी | २६ | २१४ | ६८८ | ३३२२ | ८००० |
| १६ | बलसन | ५१ | १५२ | १२६३ | ५१२० | ७००० |
| १७ | तरोच | ६७ | ४४ | ५३८ | ३२१६ | ६००० |
| १८ | कुथार | ७ | १५० | ८६३ | ३६४८ | ५००० |
| १९ | कुंथियार | ८ | ६६ | ४४० | ११२३ | ४००० |
| २० | सांगरी | १६ | १०५ | ४३५ | २५१३ | १००० |
| २१ | बीजा | ४ | ३३ | २६३ | ११५८ | १००० |
| २२ | मांगल | १२ | ३३ | २०१ | १०६० | ७०० |
| २३ | दरकोटी | ५ | ८ | १२ | ५१० | ६०० |
| २४ | रवाई | ३ | १८ | १३३ | ७५२ | ० |
| २५ | ढाढी | २ | १० | ४४ | १७० | ० |
| जोड़ | ... ... | १०७४३ | १२११४ | १२३५०८ | ७६५६२३ | १३७३३०० |
| दोनों का जोड़ | ... ... | ३५८२७ | १८५४६ | ६५५३१२ | २८६१६८३ | १०१०७८५० |

पंजाब के देशी राज्यों के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

| नंबर | शहर वा कसबा | राज्य | मनुष्य-संख्या |
|---|---|---|---|
| १ | पटियाला | पटियाला | ५५८५६ |
| २ | मलियरकोटला | मलियरकोटला | २१७५४ |
| ३ | नारनवल | पटियाला | २११५१ |
| ४ | बहावलपुर | बहावलपुर | १८७७६ |
| ५ | नाभा | नाभा | १७१०८ |
| ६ | कपुरथला | कपुरथला | १६७४७ |
| ७ | झूसी | पटियाला | १३८१० |
| ८ | पगवाड़ा | कपुरथला | १२३३१ |
| ९ | सुनाम | पटियाला | १०८६९ |

| नम्बर | शहर वा कसबा | राज्य | मनुष्य संख्या |
|---|---|---|---|
| १० | महेंद्रगढ़ | पटियाला | १०८४७ |
| ११ | समाना | पटियाला | १००३५ |

पंजाब में देहात वा कसबों के बहुतेरे मकान मट्टी से पाट दिए जाते हैं. शहर और कसबों के बहुतेरे लोग अपने अपने मकानों की छतहीं पर मलत्याग करते हैं। स्थान स्थान में बाग अथवा खेत पटाने के लिये कूएं में रहट लगे हैं, जिससे थोड़े समय में बहुत भूमि पटाई जाती है। चर्खी का रहट बनाकर उसमें सैकड़ों मटुकियों का एक हार कूए के ऊपर से पानी तक लगाकर बैलों द्वारा रहट को घुमाते हैं, तब जैसे जैसे क्रम से एक एक मटुकी का पानी ऊपर आकर गिरता है, वैसेही नीचे एक एक मटुकी में पानी भरा करता है। पंजाबी पुरुष भारतवर्ष के सब प्रदेशों के मनुष्यों से अधिक लड़ाके हैं। वेलोग धोती वा पायजामा; कुर्ता वा कुर्त्ते के ऊपर अचकन पहनते हैं और सिर पर बड़े बड़े मुरेठा बांधते हैं। सिक्खलोग तो बाल कभी नहीं कटवाते। दूसरे हिंदू लोगों में भी दाढ़ी मुच्छ रखने की बड़ी चाल है। हिंदूलोग अपने एक अथवा दोनों कानों में सोने की छोटी वा बड़ी बाली पहनते हैं। कान में भूषण पहनने की रिवाज प्रचीन समय से है; क्योंकि बाल्मीकि रामायण, बालकांड, ६ वें सर्ग में लिखा है कि अयोध्या में ऐसा कोई नहीं था, जो कानों में कुंडल न पहिने हो। स्त्रियों में पायजामा पहनने की बड़ी चाल है, वे कुर्ता पहनकर सिर से एक साधारण चद्दर ओढ़ती हैं; मोतियों के गुच्छे लगे हुए सोने की बहुत बालियां कानों में पहनती हैं; परदे में नहीं रहती और घोड़े तथा खच्चर पर सवारी करती हैं। इस समय पंजाब की लगभग २०००० लड़कियां स्कूलों में पढ़ती हैं। पंजाबी हिंदू स्पर्शदोष बहुत कम मानते हैं; वे अंग में वस्त्र पहने हुए सिर पर साफा बांधे हुए भोजन करते हैं। भरभूजा के घर एकही तंदूर अर्थात् बड़ातावा में सब जाति के लोग एकही साथ अपनी अपनी रोटी पकाते हैं। पंजाबी ब्राह्मण विशेष करके ब्राह्मणी वैश्य के घर की बनी हुई रसोई भोजन करती हैं, परंतु यह रिवाज अब घटता जाता है। बहुतेरे सिक्ख जाति भेद मानते हैं। हिंदू के देवतों को पूजते हैं। तीर्थों

# पंजाबी अर्थात् गुरुमुखी वर्णमाला

| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ਅ | ਆ | ਇ | ਈ | ਉ | ਊ | ਰਿ | ਏ | ਐ | ਓ | ਔ | ਅਂ | ਅਃ |

| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ | ट | ठ | ड | ढ | ण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ਕ | ਖ | ਗ | ਘ | ਙ | ਚ | ਛ | ਜ | ਝ | ਞ | ਟ | ਠ | ਡ | ਢ | ਣ |

| त | थ | द | ध | न | प | फ | ब | भ | म | य | र | ल | व | श | स | ह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ਤ | ਥ | ਦ | ਧ | ਨ | ਪ | ਫ | ਬ | ਭ | ਮ | ਯ | ਰ | ਲ | ਵ | ਸ | ਸ | ਹ |

| का | कि | की | कु | कू | के | कै | को | कौ | कं | कः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ਕਾ | ਕਿ | ਕੀ | ਕੁ | ਕੂ | ਕੇ | ਕੈ | ਕੋ | ਕੌ | ਕਂ | ਕਃ |

३१०
नम्बर
१०
११
पंजाः
और क्र
करते हैं;
जिससे थ
उसमें मैत्र
द्वारा रह
आकर गि
पुरुप भार
वा पायज
कं
६ वें सग
न पहिले
सिर से
वहुत वा
खच्चर प
स्कूलों में
पहने हु
एकही
अपनी
की वनी
वहुतेरे सि

में जाते हैं; परंतु कुछलोग जाति भेद नहीं मानते। किसी जाति को सिक्ख बनाकर उससे संबंध कर लेते हैं।

पंजाब में रेलवे स्टेशनों पर और दूसरे इश्तिहारों में अंगरेजी अक्षर के साथ गुरुमुखी अक्षर का लेख रहता है। सिक्खों को धर्म पुस्तक भी गुरुमुखी में लिखी हुई हैं, इसके अतिरिक्त पंजाब में महाजनी अक्षर भी लिखे जाते हैं। पंजाब के पहाड़ी विभागों में टाकरी अक्षर प्रचलित हैं। सन् १८३१ की मनुष्य-गणना के समय पंजाब की जातियों में से नीचे लिखी हुई जाति के लोग इस भांति पढ़े हुए थे।

| जाति | प्रति १००० में | |
|---|---|---|
| | पुरुष | स्त्री |
| भावरा | ४५३ | ७ |
| कायस्थ | ४६४ | ६८ |
| बनिया | ४२९ | ३ |
| सूद | ४१६ | ८ |
| खत्री | ३९४ | ७ |
| अरोरा | ३८१ | ६ |
| ब्राह्मण | १९१ | २ |
| कलाल | १६४ | ५ |
| सैयद | ११० | ६ |

रेलवे—लाहौर में रेलवे का कारखाना १२६ एकड़ भूमि में फैला हुआ है, जिसमें २०० से अधिक आदमी काम करते हैं। यहां से 'नर्थवेस्टर्न-रेलवे' की लाइन ३ ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील $2\frac{1}{2}$ पाई लगता है।

(१) लाहौर से पश्चिमोत्तर-

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५ शाहदरा।
४२ गुजरांवाला।
६२ वजीराबाद जंक्शन।
७० गुजरात।
७५ लालामूसा जंक्शन।
१०३ झेलम।
१७८ रावलपिंडी।
१८७ गुलरा जंक्शन।
२०८ हसन अबदाल।
२३७ अटक-पुल।
२५६ नवशहरा।
२८० पेशावर शहर।
२८३ पेशावर छावनी।

वजीराबाद जंक्शन से २६ मील पूर्व स्यालकोट और स्यालकोट से पूर्वोत्तर २२ मील सतावरी छावनी और २५ जंबू के पास तावी है।

लालामूसा जंक्शन से पश्चिम कुछ दक्षिण २८ मील चिलियानवाला और ५२ मील मलकवाला जंक्शन; मलकवाला से १२ मील पश्चिमोत्तर पिंडदादनखां और पिंडदादनखां से ३ मील उत्तर खिवरा है।

गुलरा जंक्शन से ७० मील पश्चिम खुसालगढ़ है।

(२) लाहौर से पश्चिम-दक्षिण की ओर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

२५ रायवंद जंक्शन।
१०३ मांटगोमरी।
२०७ मुलतानशहर।
२२० शेरशाह जंक्शन।
२७२ बहावलपुर।
२७९ समस्ता।
३५५ खानपुर।
४१७ रेती।
४८७ रोहरी।
४९० सक्कर।
५०५ रूक जंक्शन।
५५८ राधन।
७१७ कोटरीबंदर।
७३१ हैदराबाद।
८१७ करांची छावनी।
८१९ करांची शहर।

रायवंद जंक्शन से दक्षिण-पूर्व १८ मील कसूर और ३५ मील 'बंबे बड़ोदा और सेंट्रल इंडियन रेलवे'

का जंक्शन फीरोजपुर है, जिससे दक्षिण-पूर्व २८ मील कोटकपुरा जंक्शन, ५४ मील भतींडा जंक्शन और २४१ मील रिवाड़ी जंक्शन है, जिससे ५२ मील पूर्वोत्तर दिल्ली है।

शेरशाह जंक्शन से पश्चिम १० मील मुजफ्फरगढ़ और २६ मील महमूदकोट; महमूदकोट से ११ मील पश्चिम डेरागाजीखां और ७२ मील उत्तर विहाल; विहाल से उत्तर कुछ पूर्व १५ मील भकर, २६ मील दरियाखां जंक्शन और ७८ मील कुंडिया जंक्शन है।

रूक जंक्शन से पश्चिम की ओर ११ मील शिकारपुर, ३७ मील जकोबाबाद, १३३ मील सीबी जंक्शन और २८० मील किलाअबदाल है।

(३) लाहौर से दक्षिण-पूर्व—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन

३२ अमृतसर जंक्शन।

५८ व्यास।

७२ कर्तारपुर।

८१ जलंधर शहर।

८४ जलंधर छावनी।

१०८ फिलौर।

११६ लुधियाना।

१५४ सरहिंद।

१७० राजपुर जंक्शन।

१८२ अंबाला शहर।

१८७ अंबाला जंक्शन।

२१९ जगाद्री।

२३७ सहारनपुर जंक्शन।

अमृतसर जंक्शन से पूर्वोत्तर ४४ मील गुरदासपुर और ६६ मील पठानकोट है।

राजपुर जंक्शन से पश्चिम-दक्षिण १६ मील पटियाला, ३२ मील नाभा, ६८ मील वर्नाला और १०८ मील भतींडा जंक्शन है।

अंबाला जंक्शन से दक्षिण कुछ पूर्व दिल्ली अंबाला कालका रेलवे पर २६ मील थानेसर, ४७ मील कर्नाल, ६८ मील पानीपत और १२३ मील दिल्ली और ३९ मील पूर्वोत्तर कालका स्टेशन है।

# पंदरहवां अध्याय।

## (पंजाब में) गुजरांवाला, वजीराबाद, स्यालकोट; (काश्मीर में) जंबू; (पंजाब में) गुजरात, झेलम बौद्धस्तूप, रावलपिंडी; (काश्मीर में) श्रीनगर।

## गुजरांवाला।

लाहौर से ४२ मील उत्तर कुछ पश्चिम 'गुजरांवाला' का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के लाहौर विभाग में जिले का सदर स्थान गुजरांवाला एक कसबा है, जिसमें पंजाबकेशरी महाराज रणजीतसिंह का जन्म हुआ था। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उस कसबे में २६७८५ मनुष्य थे; अर्थात् १४४८९ पुरुष और १२२९६ स्त्रियां। इनमें १४०४९ मुसलमान, ९९०९ हिंदू, २०२० सिक्ख, ५२२ जैन २८४ कृस्तान और १ दूसरा था।

गुजरावाला में महाराज रणजीतसिंह के बाप दादा रहते थे। रेलवे स्टेशन से $1\frac{1}{4}$ मील दूर ८ पहल की ८१ फीट ऊंची महाराज रणजीतसिंह के पिता महासिंह की छत्तरी, अर्थात् समाधि-मंदिर है, जिसके सिरोभाग पर सोने का मुलम्मा किया हुआ है। उससे १०० गज़ पूर्व महासिंह का बैठकखाना एक सुंदर इमारत है। बाजार के समीप एक मकान है, जहां रणजीतसिंह का जन्म हुआ था। कसबे में रणजीतसिंह के जनरल हरीसिंह की बारहदरी स्थित है, जिसके निकट की भूमि और बाग ४० एकड़ में फैला है। बारहदरी से थोड़ी दूर हरीसिंह की छतरी है। देशी कसबे से १ मील दक्षिण-पूर्व बड़ी सड़क और रेलवे के बाद दीवानी और फौजदारी कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल और गिर्जा है। प्रधान सड़क के बंगलों में सुंदर मकान बने हुए हैं।

इस कसबे में देशी पैदावार की सौदागरी होती है और बर्तन, भूषन, शाल, रेशम और रुई की दस्तकारी होती है।

**गुजरांवाला जिला**—यह लाहौर विभागके पश्चिमोत्तर का जिला है। इसके पश्चिमोत्तर चनाव नदी, वाद गुजरात और शाहपुर जिला; दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम झांग, मांटगोमरी और लाहौर जिला और पूर्व स्यालकोट जिला है। जिले का क्षेत्रफल २५८७ वर्गमील है।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय इस जिलें मे ६८१५३६ और सन् १८८१ में ६१६८१२ मनुष्य थे; अर्थात् ४५२६४० मुसलमान, १२७३२२ हिंदू, ३६१५९. सिक्ख, ५७७ जैन और ११४ क्रस्तान। इनमें से १७३१७१ जाट, जिनमें १३३७२७ मुसलमान थे; ३६४८४ राजपूत; जो प्रायः सव मुसलमान थे; ३००७९ अरोरा; २१३०१ खत्री; १८०८० ब्राह्मण, जिनमें से २५ मुसलमान थे;। इस जिले में गुजरांवाला ( जन-संख्या सन् १८९१ में २६७८५), वज़ीरावाद ( जन-संख्या १८९१ में १५७८६ ) वड़ाक़सवा और रामनगर, अमीनावाद, सहद्रा, अकलगढ़, पिंडीभटियान, किलादीदारसिंह और हाफिजावाद छोटे क़सवे हैं।

**इतिहास**—जव महाराज रणजीतसिंह के दादा चतरसिंह ने गुजरांवाला गांव पर अधिकार किया, तव वह एक अप्रसिद्ध गांव था, पीछे वह उनके पुत्र महासिंह और पोते रणजीतसिंह का सदर मुक़ाम हुआ; छोटे सिक्ख प्रधान वजीरावाद, सेखपुरा और दूसरे क़सवों में वसे। उससमय जिले के पश्चिमी भाग में भाटी राजपूत और चट्टा स्वाधीन थे। अंत में महाराजरणजीतसिंह ने संपूर्ण जिले में अपना अधिकार करलिया। सन् १८४१ में गुजरांवाला अंगरेजी अधिकार में आया और सन् १८५२ में जिले का सदर स्थान वना।

## वजीरावाद।

गुजरांवाला से २० मील ( लाहौर से ६२ मील ) उत्तर कुछ पश्चिम वजीरावाद रेलवे का जंक्शन है। पंजाव के गुजरांवाला जिले में तहसीली का सदर स्थान चनाव नदी से लगभग १ मील दूर वजीरावाद कसवा है, जिसके उत्तर 'फलकू' नाला वहता है।

सन १८९१ की जन-संख्या के समय वजीराबाद में १५७८६ मनुष्य थे; अर्थात् ११०२८ मुसलमान, ४०८८ हिंदू, ६२१ सिक्ख और ४१ कृस्तान।

वजीराबाद में चौड़ी सड़क के किनारों पर सुंदर बाजार है; ईंटों के मकान बने हैं और तहसीली कचहरी, सराय, अस्पताल तथा स्कूल हैं। कसबे के पास पंजाब के प्रसिद्ध बागों में से एक दीवान ठाकुरदास चोपरा का बाग है। वजीराबाद के निकट चनाब नदी पर हिन्दुस्तान के उत्तम पुलों में से एक 'अलेकजेंड्रा' पुल है; जिसको सन् १८७६ ई० में प्रिंस आफ वेल्स ने खोला। वहां चनाब की धारा बड़ी तेज है। वजीराबाद की शहरतली धर्मकुल में एक प्रसिद्ध मजहबी मेला होता है, जिसमें बड़ी सौदागरी होती है। वजीराबाद से पूर्वोत्तर एक रेल्वे लाइन स्यालकोट और जंबू को गई है।

इतिहास—लोग कहते हैं कि शाहजहां के राज्य के समय वजीरखां ने वजीराबाद को बसाया। सन् १८४९ ई० में अंगरेजी अधिकार होने पर वजीराबाद एक जिला बना; जिसके भीतर गुजरांवाला और स्यालकोट, लाहौर और गुरुदासपुर जिलों के हिस्से थे। सन् १८५२ में गुजरांवाला जिला नियत होने पर वजीराबाद तहसीली का सदर बना। रेल्वे खुलने के पीछे से यह तिजारत में प्रसिद्ध हुआ है।

## स्यालकोट।

वजीराबाद जंक्शन से २६ मील पूर्व स्यालकोट का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के अमृतसर विभाग में जिले का सदर स्थान एक धारा के उत्तर किनारे पर स्यालकोट एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय स्यालकोट कसबे और छावनी में ५५०८७ मनुष्य थे; अर्थात् ३१४५६ पुरुष और २३६३१ स्त्रियां। इनमें ३३३२० मुसलमान, १७३७८ हिंदू, २२८३ कृस्तान, १७३७ सिक्ख, ३३०५ जैन और ४ पारसी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह पंजाब के अंगरेजी राज्य में ९ वां और भारतवर्ष में ७० वा शहर है।

शहर साफ और खूबसूरत है; इसकी प्रधान सड़क चौड़ी है, जिसके बगलों में नाले बने हैं। प्रधान बाजार कनकमंडी में गल्ले की खरीद बिक्री होती हैं। बड़े बाजार में कपड़ा, भूषण और मेवे इत्यादि वस्तुओं की दुकान हैं। राजा तेजसिंह के बनवाए हुए मंदिर का बड़ा मीनार शहर के प्रति विभाग से देख पड़ा है। बाबा नानक के स्थान पर प्रति वर्ष एक प्रसिद्ध मेला होता है, जिसमें जिले के प्रत्येक भाग से बहुत सिक्ख आते हैं। 'दरबार बा बलीसाहब' नामक एक ढका हुआ कूप है, जिसको बाबानानकने एक अपने क्षत्रिय चेला द्वारा बनवाया था। 'इमामअलीउलहक' का दरगाह पुराने बनावट का है। शहर के मध्य में एक पुराने किले की निशानी खड़ी है, जिसको लोग शालवान का किला कहते हैं; उसी तरह के टीले शहर के बाहर हैं। सन् १७५७ के बलवे के समय कईएक अंगरेजों ने किले में पन्नाह लिया था, अब किला तोड़ दिया गया है, उसमें कई एक मकान हैं। इनके अलावे स्यालकोट में तहसीली, टाउनहाल, अस्पताल, १ गरीबखाना; जहां 'खाना' बनाकर के नित्य बांटाजाता है, अनेक स्कूल, जिनमें लड़कियों के ४ हैं और २ सराय हैं। शहर से उत्तर रेलवे स्टेशन है।

शहर से लगभग $\frac{1}{2}$ मील पूर्वोत्तर जिले की सदर कचहरियां, जेलखाना और पुलिस-लाइन और १ मील उत्तर ५ मील लंबी और ३ मील चौड़ी फौजी छावनी है; जिसमें ३ गिर्जा और २७ एकड़ भूमि पर पबलिक बाग है।

स्यालकोट में सौदागरी तेजी से बढ़ रही है, उसमें कई एक धनी कोठीवाल और तिजारती लोग रहते हैं। शहरतली के ३ गांवों में बहुत दिनों से कागज बनाए जाते हैं।

**स्यालकोट जिला**—यह अमृतसर विभाग के पश्चिमोत्तर का जिला है, इसके पश्चिमोत्तर चनाव नदी बाद गुजरात जिला; पूर्वोत्तर काश्मीर राज्य का जंबू प्रदेश; पूर्व गुरदासपुर जिला; दक्षिण-पूर्व रावी नदी, बाद अमृतसर और गुरदासपुर जिला; और पश्चिम गुजरांवाला और लाहौर जिला है। जिले का क्षेत्र फल १९५८ वर्ग मील है। उस जिले में स्थान स्थान पर बहुतेरी झील हैं, जिनमें से सतरा ४५० एकड़ क्षेत्र फल में और

मंज ६८७ एकड़ क्षेत्र फल में फैली है। उस जिले में कसरूर और दसकाह छोटे कसबे हैं। स्यालकोट जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०८०३२८ और सन् १८८१ में १०१२१४८ मनुष्य थे; अर्थात् ६६९७१२ मुसलमान, २९९३११ हिंदू, ४०१९५ सिक्ख, १५३५ क्रस्तान, १३८८ जैन और ७ पारसी। जिले की मनुष्य-संख्या के लगभग चौथाई भाग जाट हैं; बाद चुहरा, अराइन, राजपूत, तरखान, ब्राह्मण, झिनवार, कुंभार, भेग, खत्री इत्यादि हैं, जिनमें से ब्राह्मण और खत्री के अतिरिक्त सब जातियों में मुसलमान हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा पाण्डु के पुत्र नकुल और सहदेव के मामा, राजा शल्य ने स्यालकोट को बसाया; जिसकी राजधानी झंग जिले में गुजरांवाला जिले की सीमा के निकट साकला थी। ( झंग जिले के इतिहास में देखो )

सन् ६५ या ७० ई० में राजा विक्रमादित्य के पुत्र शालवान ने स्यालकोट को सुधारा, जिसका नाम रसालू भी है। रसालू की राजधानी स्यालकोट था, उसकी सैकड़ों कहानियां पंजाब के हर विभागों के लोग कहते हैं। राजा हुदी ने रसालू को परास्त किया। रसालू के मरने पर राजा हुदी स्यालकोट का राजा हुआ; उसके पश्चात् स्यालकोट का राज्य ३०० वर्ष तक लूट पाट और अकाल से उजाड़सा रहा। सन् ई० की सातवीं सदी में जंबू के राजपूतों ने स्यालकोट के देश पर अधिकार किया। मुगलों के राज्य के समय वह देश लाहौर के सूबे का एक भाग और स्यालकोट एक सरकार का सदर स्थान बना। कई एक मालिकों के पश्चात् सन् १८१० ई० में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने संपूर्ण स्यालकोट जिले को ले लिया। सन् १८४१ में उस पर अंगरेजों का अधिकार हुआ।

सन् १८५७ के बलवे के समय स्यालकोट छावनी की देशी फौज बागी हुई थी। बलवाइयों ने यूरोपियन अफसरों को मारडाला, दफतर बरबाद किया, खजाना लूट लिया और कैदियों को छोड़ दिया। थोड़े दिनों तक वे संपूर्ण जिले के मालिक रहे, परंतु शीघ्रही अंगरेजों ने उनको भगा कर जिले पर फिर अधिकार कर लिया।

# जंबू।

स्यालकोट से २५ मील पूर्वोत्तर (वजीरावाद जंक्शन से ५१ मील) जंबू के पास तावी का रेलवे स्टेशन है। जंबू काश्मीर राज्य में राज्य के दक्षिण-पश्चिम की सीमा के पास चनाव नदी की सहायक तावी नदी के किनारों पर (३२ अंश, ४३ कला, ५२ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ५४ कला, १४ विकला पूर्व देशांतर में) काश्मीर के महाराज की राजधानी एक सुन्दर कसवा है। कसवा और राजमहल नदी के दहिने किनारे पर और किला बांए अर्थात् पूर्व किनारे पर नदी के धारा से १५० फीट ऊपर है।

सन् १८११ की जन-संख्या के समय जंबू राजधानी में ३४५४२ मनुष्य थे; अर्थात् २२५४५ पुरुष और ११९१७ स्त्रियां। इनमें २२३५५ हिंदू, ११६०१ मुसलमान, ५१३ जैन, ५१ सिक्ख और १४ कृस्तान थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह काश्मीर राज्य में दूसरा कसवा है।

पूर्व और शहर की दीवार के निकट जंबू का पुराना महल है, जिसमें एक चौक होकर प्रवेश करना होता है। इसके दहिने वगल पर मेहमानों के रहने का एक कमरा है। भोजन के कमरे के बरंदा का मुख तावी नदी की ओर है। कसवे के पश्चिमोत्तर के मंदिर पर सोने के मुलम्मा किए हुए तांबे के पत्तर जड़े हुए हैं, जिससे कुछ पूर्व नया राजमहल है; जो प्रिंस आफ वेल्स के देखने के लिये वना। इसके समीपही पूर्व परेड की भूमी हैं; जिसके दक्षिण-पूर्व कालिज और अस्पताल है। गुमत फाटक से थोड़ी दूर पर प्रधान मंदिर और फाटक से २ मील दूर महाराज की उत्तम वाटिका है। नीचा ऊंचा मार्ग से जंगल होकर वाटिका में जाना होता है।

जंबू के आस पास प्रथम के स्वाधीन राजपूतों की गद्दियों की वड़ी तवाहियां हैं, जिनका राज्य एक समय स्यालकोट आदि जिले में फैला हुआ था, जिसको सिक्खों ने जीत लिया।

जंबू से श्रीनगर और काश्मीर-घाटी के लिये सौदागरी मार्ग है, जिससे बहुत आमद रफत होता है। जंबू से उत्तर और काश्मीर राज्य का प्रधान शहर-श्रीनगर है।

**इतिहास**—सन् १५८६ ई० में अकबर ने जंबू को जीता, तब वह मुगल-राज्य का एक भाग बना। सन् १७५२ में अफगान के अहमदशाह दुर्रानी ने इसको ले लिया। सन् १८११ में महाराज रणजीतसिंह ने इसको अफगानों से जीत लिया। सन् १८४६ में अंगरेजी सरकार ने जंबू के साथ काश्मीर प्रदेश को सिक्खों से छीन कर ७५ लाख रुपए पर महाराज गुलाबसिंह के हाथ बेंच दिया। (काश्मीर का बृतांत श्रीनगर के इतिहास में देखो)

## गुजरात।

वजीराबाद जंक्शन से ८ मील (लाहौर से ७० मील) पश्चिमोत्तर 'गुजरात' का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के रावल पिंडी बिभाग में जिले का सदर स्थान, चनाब नदी के दहिने, अर्थात् ५ मील उत्तर गुजरात एक कसबा है। वजीराबाद और गुजरात के बीच में चनाब नदी पर रेलवे-पुल है। यह नदी हिमालय के दक्षणीय भाग से निकल कर ७६५ मील बहने के पश्चात् मीठन कोट के नीचे सिंध नदी में मिलगई है।

सन् १८११ की जन-संख्या के समय गुजरात कसबे में १८०५० मनुष्य थे, अर्थात् १२८२४ मुसलमान, ४७०३ हिंदू, ४५२ सिक्ख, और ७१ कृस्तान।

रेलवे-स्टेशन से १ मील पूर्वोत्तर गुजरात कसबा है; जिसमें ३ प्रधान सड़के, शाही हम्माम, शाही कूप, जिसमें पानीतक सीढ़ियां बनी हुई हैं। पीर साहदौला का दरगाह, ६१ मसजिद, ५२ हिन्दूमंदिर, ११ सिक्खों की धर्मशाले; जिला स्कूल और मिसन स्कूल हैं। देशी बस्ती से उत्तर दीवानी, फौजदारी इत्यादि कचहरियों के मकान, जेलखाना, अस्पताल, और बंगला है। अकबर के किले के भीतर तहसीली और मुनसफी कचहरियां हैं।

गुजरात से भीमर और पीरपंजल होकर काश्मीर की राजधानी श्रीनगर जाने का एक मार्ग है। पैदल या टट्टू पर लोग जाते हैं। गुजरात कसबे से २८ मील भीम्बर, ४३ मील सैदाबाद, ५६ मील नवशेरा, ७० मील चंगा-सराय, ८४ मील रजवरी, १८ मील थानामंडी, १०८ मील बरंगल, ११४ मील पोसियाना १२३ मील अलीमाबाद सराय, १४२ मील सपियन, और १६० मील श्रीनगर है। सर्वत्र डाक बंगले बने हैं।

गुजरात में कई एक बड़े तिजारती और कोठीवाल रहते हैं। कपड़े और शाल इत्यादि पशमीने के काम बनते हैं। गुजरात के पीतल के बर्तन प्रसिद्ध हैं।

**गुजरातजिला**—यह रावलपिंडी विभाग का पूर्वी जिला है; इसके पूर्वोत्तर काश्मीर राज्य; पश्चिमोत्तर झेलम नदी; पश्चिम शाहपुर जिला और दक्षिण-पूर्व तावी और चनाब नदी, बाद स्यालकोट और गुजरांवाला जिला है। जिले का क्षेत्रफल १३७३ वर्ग मील है; इस जिले का सबसे ऊंचा पहाड़ चारो ओर के देश से ६०० फीट और समुद्र के जल से लगभग १४०० फीट ऊंचा है। जिले का लगभग पांचवां भाग खेती का मैदान; शेष संपूर्ण जिला छोटे वृक्षों के जंगलों से भरा हुआ चराहगाह है। जिले की खानों से सोरा, चूना का पत्थर और कंकड़ निकाले जाते हैं।

गुजरात जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ७६०४०५ और सन् १८८१ में ६८९११५ मनुष्य थे; अर्थात् ६०७५२९ मुसलमान, ७२४५० हिंदू, ८८८९ सिक्ख और २५५ क्रस्तान। जिले में जाट और गूजर बहुत हैं। अरोरा, खत्री और ब्राह्मण सब हिंदू वा सिक्ख हैं। लेकिन जाट, गूजर, राजपूत और तरखान में थोड़े हिंदू बहुत मुसलमान हैं। इस जिले में गुजरात (जन-संख्या सन् १८९१ में १८०५०) जलालपुर (जन-संख्या ११०६५) बड़ा कसबा और कंजाह और दींगा छोटे कसबे हैं।

**इतिहास**—अकबर के राज्य के समय सोलहवीं सदी में पुराने क़सबे के स्थान पर गुजरात का बर्तमान कसबा नियत हुआ। अकबर का बनवाया हुआ किला क़सबे में हीन दशा में बर्तमान है। गुजरात कसबा

गूजरों द्वारा रक्षित था; इस लिये उसका नाम गुजरात पड़ा। अकबर के राज्य के समय उसका नाम गुजरातअकबराबाद था। शाहजहां के राज्य के समय गुजरात में पीर शाहदौला फकीर रहता था, जिसने कसबे को बहुत इमारतों से संवारा। मुगल-राज्य की घटती के समय सन् १७४१ के लगभग रावलपिंडी के गक्कर प्रधान मुबारकखां ने गुजरात को लेलिया। सन् १७६५ में सरदार गूजरसिंह भांजी ने उसको गक्करों से छीन लिया। सन् १७८८ में गूजरसिंह के मरने पर उनका पुत्र साहबसिंह उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७१८ में साहबसिंह महाराज रणजीतसिंह के आधीन होगया। सन् १८४६ में गुजरात अंगरेजी निगरानी में आया। सन् १८४१ की तारीख २२ फरवरी को अंगरेजों की दूसरी लड़ाई में गुजरात के पास सिक्ख लोग परास्त हुए।

## झेलम।

गुजरात से ३२ मील (लाहौर से १०३ मील) पश्चिमोत्तर झेलम का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के रावलपिंडी विभाग में झेलम नदी के उत्तर अर्थात् दहिने किनारे पर जिले का सदर स्थान झेलम एक कसबा है।

सन् १८११ की जन-संख्या के समय झेलम कसबा और छावनी में १२८७८ मनुष्य थे; अर्थात् ७३७३ मुसलमान, ४२५० हिन्दू, १०६४ सिक्ख, १५३ कृस्तान, २८ जैन ९ पारसी और १ यहूदी।

देशी कसबों में कोई प्रसिद्ध मकान नहीं है; खास करके मट्टी के मकान बने हुए हैं; २ प्रधान सड़कें हैं और नाव बहुत बनाई जाती हैं। कसबे से १ मील पूर्वोत्तर जिले की कचहरियों के मामूली मकान, जेलखाना, अस्पताल, सराय और गिरजा है। झेलम में एक सुंदर पबलिक बाग है। कसबे से करीब १ मील दक्षिण पश्चिम फौजी छावनी है। कसबे के निकट झेलम नदी पर रेलवे पुल है। यह नदी हिमालय के दक्षिण से निकल कर लगभग २१० मील बहने के उपरांत झांग से २० मील नीचे चनाब नदी में मिल गई है। झेलम से पंच और ऊरी होकर पहाड़ी मार्ग श्रीनगर को गया है।

लोग पैदल वा टट्टू पर जाते हैं। झेलम से १३ मील सिकारपुर, २६ मील तंगरोट, ३६ चौमुक, ४६ मील राजदानी, ५८ मील नेकी, ६६ मील बेराली, ७४ मील कोटली, ८१ मील सयरा, १०५ मील पंच, ११५ मील कहूट, १३० मील हैदराबाद, १४० मील ऊरी, १६५ मील बारामूला और ११७ श्रीनगर है। सर्वत्र डाक बंगले बने हैं।

**रोतस का किला**—झेलम कसबे से ११ मील पश्चिमोत्तर झेलम जिले में रोतस का प्रसिद्ध किला है, जिसको सोलहवीं सदी में शेरसाह ने बनवाया था। काहन नदी तक ८ मील गाड़ी की सड़क, उससे आगे नदी के तीर तीर २ मील बैलगाड़ी की सड़क और विरान पहाड़ियों के नीचे २०० फीट ऊंचा टट्टू का मार्ग है। किला एक पहाड़ी पर खड़ा है। उसकी दीवार ३० फीट से ४० फीट तक ऊंची, तीन मील लंबी, २६० एकड़ भूमि को घेरती है। नदी के बाएं फाटक का रास्ता है। पहाड़ी के पूर्वोत्तर खवासखां फाटक है। दक्षिण-पश्चिम सुहालो फाटक के निकट एक डाकबंगला है। किले में मानसिंह का महल हीनदशा में स्थित है। पश्चिमोत्तर कोने के पास एक ऊंची बारहदरी औ दक्षिण-पूर्व कोने के निकट उससे छोटी बारहदरी है।

**झेलम जिला**—इस के उत्तर रावलपिंडी जिला; पूर्व झेलम नदी; दक्षिण झेलम नदी और शाहपुर जिला तथा पश्चिम बन्नू और शाहपुर जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल ३११० वर्ग-मील है।

इस जिले में खूबसूरत मार्बुल; मकान बनाने योग्य पत्थर; कई एक प्रकार की लाल मट्टी और गेरू, जो रंगने के काम में आती हैं; कोयला, गंधक, मट्टी का तेल, तांबा, सीसा, लोहा इत्यादि खानिक पदार्थ होते हैं। इस जिले में निमकदार पहाड़ियां बहुत हैं। खेवरा, मकराच, कट्टा, जटाना इत्यादि स्थानों में बहुत निमक निकाला जाता है। जिले के कटासराज में मेला होता है।

झेलम जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ६०३८१० और सन् १८८१ में ५८१३७३ मनुष्य थे; अर्थात् ५१६७४५ मुसलमान, ६०३४३ हिंदू, ११११८८ सिक्ख, ४१६ क्रस्तान, ५८ जैन, १६ पारसी और १ दूसरा। हिं-

दुओं में खत्री, अरोरा और ब्राह्मण अधिक हैं। जिले में अफगान, जाट और राजपूत बहुत हैं। पर इनमें हिंदू वा सिक्ख बहुत कम हैं। इस जिले में पिंडदादनखां ( जन-संख्या सन् १८११ में १५०५५ ) झेलम (जन-संख्या सन् १८११ में १२८७८ ) लावा, वलागंग और चकवाला कसबे हैं।

इतिहास—झेलम का पुराना कसबा वर्तमान कसबे के सामनें झेलम नदी के उस पार अर्थात् बाएं किनारे पर था। दिल्ली के राज्य की घटती के समय सन् १७६५ ई० में गूजरसिंह ने गक्कर प्रधान को परास्त करके इस जिले पर अधिकार किया और जंगली पहाड़ी लोगों को अपने वस में लाया। सन् १८१० में उसका पुत्र महाराज रणजीतसिंह के आधीन हो गया। सन् १८४१ में झेलम अङ्गरेजी अधिकार में आया। पहले झेलम कसबा बहुत अप्रसिद्ध था, परंतु अंगरेजी अधिकार में आने पर उसकी उन्नति हुई है।

## बौद्धस्तूप।

झेलम से ५४ मील पश्चिमोत्तर लवनी का रेलवे स्टेशन है, जिस से २ मील दूर मानिकयाला के पत्थर का स्तूप स्थित है। स्तूप का गुंबज, जिसका व्यास १२७ फीट और घेरा ५०० फीट है, अर्द्धगोलाकार है; उस पर चढ़ने के लिये १६ फीट चौड़ी चारो ओर ४ सीढ़ियां हैं। यह स्तूप सन् १८३०; १८३४ और १८६४ ई० में अच्छी तरह से तलोसा गया; उसमें सन् ई० के आरंभ के और यशोवर्मा के, जिसने सन् ७२० ई० के पीछे राज्य किया था, सिक्के मिले और उसी समयों के चांदी के बहुतेरे अरबियन सिक्के भी मिले थे।

वंचुरा के स्तूप से २ मील उत्तर एक बहुत पुराना स्तूप है, जिसमें कनिष्क के समय के, जो सन् ४० ई० में भारतवर्ष के पश्चिमोत्तर में राज्य करता था, सिक्के मिले थे।

## रावलपिंडी।

लवनी के स्टेशन से २१ मील ( लाहोर से १७८ मील ) पश्चिमोत्तर राव-

लपिन्डी का रेलवे स्टेशन है। पंजाब में किस्मत और जिले का सदर स्थान और फौजी छावनी की जगह (३३ अंश, ३७ कला उत्तर अक्षांश, ७३ अंश ६ कला पूर्व देशांतर में) रावलपिंडी एक छोटा शहर है। लेह नदी के उत्तर किनारे पर शहर और उससे दक्षिण फौजी छावनी है।

सन् १८११ की जन-संख्या के समय शहर और छावनी में ७३७९५ मनुष्य थे; अर्थात् ५१०४३ पुरुष और २२७५२ स्त्रियां। इनमें ३२७८७ मुसलमान, २१२६४ हिन्दू, ६०७२ कृस्तान, ४७६७ सिक्ख, ८४८ जैन, ५१ पारसी, २ यहूदी और ४ दूसरे थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारत-वर्ष में ४४ वां और पंजाब में ७ वां शहर है।

देशी-शहर में तहसीली, पुलिस स्टेशनशहर, का अस्पताल; बड़ी सराय; गिर्जा और मिसन स्कूल है। जेलखाने के समीप ४०० एकड़ भूमि पर एक सुंदर पवलिक बाग और एक फैला हुआ पार्क है। सुबह और शाम को बहुत लोग पार्क में टहलने के लिये जाते हैं। इसमें घने वृक्ष और छोटी झाड़ियां लगी हुई हैं और गाड़ी जाने के योग्य सड़कें बनी हैं। प्रधान बाजार के दरवाजे के पास एक सुंदर मेहराब बना है। बाजार में बहुतेरी अच्छी दुकाने हैं। सरदार सुजनसिंह का बनवाया हुआ एक सुंदर बाजार है, जिसके बनवाने में २ लाख रुपये खर्च पड़े थे। इनके अलावे रावलपिंडी में कई एक स्कूल, १ कोढ़ी खाना और पांच पहला १ किला है, जिसके प्रति कोनों पर एक पाया बना हुआ है। किले में अनेक शस्त्रागार बने हुए हैं।

सिविल लाइनों में कमीश्नर और डिपटी कमिश्नर की कचहरियां, छावनी के मजिस्ट्रेट की कचहरी इत्यादि इमारते हैं।

लेह नदी के दक्षिण ३ मील लंबी और २ मील चौड़ी भूमि पर फौजी छावनी फैली है। सन् १८८१ की मनुष्य-संख्या के समय छावनी में २६११० मनुष्य थे। यह पंजाब की फौजों के प्रधान सेनापति का मुख्य स्टेशन और भारत वर्ष के सबसे बड़ी फौजी छावनियों में से एक है। छावनी में कई एक यूरोपिन दूकाने हैं और साधारण तरह से यूरोपियन

सवारों का १ रेजीमेंट, पैदल के २ रेजीमेंट, देशी सवारों का एक रेजीमेंट और पैदल के २ रेजीमेंट और आरटिलरी के २ बैटरी रहती हैं।

गेहूं इत्यादि गल्ले रावलपिंडी से पंजाब के दूसरे भागों में भेजे जाते हैं। यहां बड़े बड़े तिजारती और कोठी वाले हैं। और सूसी नामक रंगदार कपड़ा, दूसरा कपड़ा, कंबल, नस, कंघी साबुन और कूपा तैयार होते हैं। शहर में गक्कर, कश्मीरी, अएवान, भट्टी, ब्राह्मण और खत्री अधिक हैं। ब्राह्मण और खत्री सौदागरी करते हैं।

**रावलपिन्डी जिला**—यह जिला रावलपिंडी विभाग के चारो जिलों में सबसे उत्तर है, इसके उत्तर हजारा जिला; पूर्व झेलम नदी; दक्षिण झेलम जिला और पश्चिम सिंध नदी है, जिसके बाद पेशावर और कोहाट जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल ४८६१ वर्ग मील है, जिसमें ७ तहसीली है। पिंडी गेब, अटक, फतहजंग, गूजरखां, रावलपिंडी, कहटा और मरी। रावलपिंडी शहर से ३ मील पूर्व सोहन नदी पर पुल है। इस जिले में जंगल बहुत है, जिसमें गोन, मोम और मधु बहुत होते हैं। काबागढ़ की पहाड़ी में मार्बुल होता है। रावलपिंडी शहर से पूर्वोत्तर जोहरा गांव में गंधक की खान है; उसी और रावलपिंडी से १३ मील दूर और दूसरे स्थान में भी कुएं से मट्टी का तैल निकलता है। सिंध और उसकी सहायक नदियों की बालू धोने से उसमें सोना मिलता है।

इस जिले में सन् १८११ की जन-संख्या के समय ८८६१६४ और सन् १८८१ में ८२०५१२ मनुष्य थे; अर्थात् ७११५४६ मुसलमान, ८६१६२ हिंदू, १७७८० सिक्ख, ३८२२ कृस्तान, १०३३ जैन और १६१ पारसी। हिंदुओं में ४११३५ खत्री और १२१८१ अरोरा थे। इस जिले में राजपूत लगभग १९०००० और जाट ५०००० हैं, परंतु प्रायः सब मुसलमान हैं। जिले में केवल रावलपिंडी एक शहर और पिंडी गेब, हजारा, फतहजंग, अटक, मरवाद, मरी और केंपबेलपुर छोटे कसबे हैं और हसन अबदाल एक प्रसिद्ध जगह है।

इस जिले में पक्की सड़क रावलपिंडी से ३१ मील मरी तक; मरी से २० मील कोहाला तक और रावलपिंडी से ६६ मील कोहाट तक है।

इतिहास--रावलपिंडो का वर्तमान शहर हाल का है। पुराने शहर के स्थान पर छावनी बनी है। चौदहवीं सदी के मुगलों के आक्रमण से शहर बरबाद होगया था। गक्कर प्रधान झंडाखां ने शहर को सुधारा और उसका नाम रावलपिंडी रक्खा। सन् १७६५ ई० में सरदार मल्लिक-सिंह सिक्ख ने रावलपिंडी पर अधिकार किया। ओन्नीसवीं सताब्दी के आरंभ में काबुल के शाहशुजा और उसके भाई शाहजमा ने कुछ समय तक रावलपिंडी में पनाह लिया था। सन् १८४९ में अंगरेजी अधिकार होने पर रावलपिंडी में अंगरेजी फौजी छावनी बनी और थोड़ही दिनों के पीछे यह कमिश्नरी का सदर स्थान बना। रेलवे होने के बाद शहर की तिजारत और आबादी तेजी से बढ़ गई हैं।

## श्रीनगर।

काश्मीर की राजधानी श्रीनगर जाने के ५ घाटी में ५ पहाड़ी रास्ते हैं, जिनसे अधिक आवागमन होता है,—(१) जंबू से, (२) गुजरात कसबे से भींबर और पीरपंजर होकर १६० मील, (३) झेलम कसबे से पंच होकर १९७ मील, (४) रावलपिंडी से मरी होकर ११२ मील और (५) हसन-अबदाल से अबटाबाद होकर २०३ मील श्रीनगर का मार्ग है।

इनमें से रावलपिंडी से गाड़ी का मार्ग सब रास्ताओं से उत्तम है। रावलपिंडी से बरमूला तक १६० मील पूर्व तांगा (एक प्रकार का टमटम) जाता है। वहां से टट्टू अथवा झेलम में नाव पर सवार होकर ३२ मील श्रीनगर लोग जाते हैं। रावलपिंडी के रेलवे स्टेशन से बरमूला तक डाक के घोड़ों के बदलने के लिये १३ चौकी बनी है। तांगा के डाक के एक आदमी का भाड़ा ३८, रुपया लगता है। डाक रात में नहीं चलती है। ३ दिन में आदमी श्रीनगर पहुंच जाता है। एक चौकी का भाड़ा चढ़ने के लिये टट्टू का २, असबाब लादने के लिये टट्टू का ।।।, एक्के का एक आदमी का ।।।, और कुली का ।, लगता है।

रावलपिंडी से ३७ मील मरी, ६१ मील कोहाला, ७८ मील दुलई, ८७ मील डोमल, १०० मील गढ़ी, १३५ मील ऊरी, १६० मील वरमूला और ११२ मील श्रीनगर है। सब स्थानों में डाकबंगले बने हैं।

मरी रावलपिंडी से उत्तर स्वास्थ्यकर स्थान है। गर्मी की ऋतुओं में रावलपिंडी के हाकिम और दूसरे अंगरेज लोग वहां रहते हैं। रावलपिंडी से वहां तक चढ़ाव का मार्ग है (मरी से पूर्व श्रीनगर है) सन् १८५३ ई० में मरी में सेनाओं के लिये बारक बनाए गए। सन् १८८० की मनुष्य-गणना के समय मरी में केवल २४८१ मनुष्य थे; परंतु गर्मी के दिनों में उसकी मनुष्य-संख्या बढ़ कर के लगभग ८००० हो जाती है।

कोहाला, डाकगाड़ी के मार्ग से मरी से २१ मील, परंतु बैलगाड़ी के रास्ते से केवल १८ मील है। मरी से कोहाला तक उतराई का मार्ग है। कोहाला से वरमूला तक झेलम नदी के बाएं चढ़ाव का मार्ग है। वरमूला से श्रीनगर तक गाड़ी की सड़क नहीं है। वहां से टट्टू वा नाव द्वारा श्रीनगर जाना होता है।

काश्मीर के पश्चिमी विभाग में (हैपीघाटी में) समुद्र के जल से ५२५० फीट ऊपर (३४ अंश ५ कला ३१ विकला उत्तरअक्षांश और ७४ अंश, ५१ कला पूर्व देशांतर में) झेलमनदी के दोनों किनारों पर २ मील की लंबाई में काश्मीर राज्य की राजधानी श्रीनगर बसा है। झेलमनदी की औसत चौड़ाई १० गज और गर्मी की ऋतुओं की औसत गहराई लगभग ६ गज है। नदी पर ७ पुल और इसमें पत्थर के कई एक सुंदर घाट बने हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-संख्या के समय श्रीनगर में ११८९६० मनुष्य थे; अर्थात् ६२७२० पुरुष और ५६२४० स्त्रियां। इनमें १२५७५ मुसलमान, २६०६१ हिंदू, १८१ सिक्ख, १११ कृस्तान, और ८ पारसी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में २२ वां और काश्मीर प्रदेश में पहला शहर है।

शहर में कई पानी के नाले हैं, खास कर के लकड़ी के मकान बने हैं, जिनमें से अनेक मकान तीन मंजिले और चौमंजिले हैं, बहुतेरों मकानों की ऊपर की छत ढालुए और बहुतेरों की मट्टी की हैं, इनके अलावें अस्पताल,

स्कूल, टकशालघर, अनेक देवमंदिर, मसजिद और कबरगाह हैं। शेरगढ़ी के भीतर दृढ़दीवार से घेरा हुआ शहर का किला और एक सुंदर शाही महल है; जिसमें गर्मी के दिनों में काश्मीर देश के महाराज जंबू से आकर रहते हैं।

सड़क साधारण तरह से तंग हैं; जिनमें से कई एक बड़े और नादुरुस्त पत्थरों से पाटे हुए हैं; शहर के बाजारों में से हालका बना हुआ महाराजगंज बाजार में शहर की बनी हुई संपूर्ण वस्तु मिलती है; इसके किनारों पर कई एक बड़े मकान हैं; जिनमें खास करके शाल के बड़े सौदागर और कोठीवाल रहते हैं। शहर की मसजिदों में जामामसजिद प्रधान और वहां की सब मसजिदों से बड़ी है; इसके आंगन के चारो बगलों में मेहराबदार ओसारे लगे हैं; जिनमें देवदारु लकड़ी के खंभे लगे हुए हैं। नदी की भाठा की ओर शेख बाग, शाह हमीदन मसजिद और राममुन्सी बाग देखने योग्य है।

शहर के पूर्वोत्तर बगल पर ५ मील लंबी और २ १/२ मील चौड़ी; जिसकी औसत गहराई १० फीट है एक झील है; जिसमें खरबूजा, ककड़ी और सिंहारा की फसिल होती है।

शहर के निकट इससे ९८७ फीट ऊंची तख्ती सुलेमान नामक पहाड़ी है; जिसपर चढ़ने से शहर और उसके पड़ोस का सुन्दर दृश्य देखने में आता है। पहाड़ी के सिर पर एक बहुत पुराना पत्थर का मंदिर है; जिसको हिंदूलोग शंकराचार्य का कहते हैं; परन्तु वास्तव में यह सन् ई० से २२० वर्ष पहले के बना हुआ अशोक के पुत्र जलोक का बनवाया हुआ बौद्ध मंदिर था, जो अब मसजिद बना है।

शहर की उत्तरी सींमा पर २५० फीट ऊंची हरि पर्वत नामक पहाड़ी है; जिसको घेरती हुई ३ मील लंबी और २८ फीट ऊंची दीवार है; जिसके प्रधान दर्वाजे खाटी फाटक के ऊपर पारसी लेख है। पहाड़ी के सिर पर किला खड़ा है। बादशाह अकबर ने सन् १५९० ई० में दीवार और किले को बनवाया था।

श्रीनगर शाल और रेशम की दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध है और इसमें

सोना, चांदी, तांबा, चमड़ा और बेस कीमती पत्थर का उत्तम काम बनता है।

श्रीनगर से पूर्व लदाख की. राजधानी लेह १९ पड़ाव और उत्तर ओर गिलगिट २२ पड़ाव हैं।

**अमरनाथ**—श्रीनर से ३० (काले) कोस पूर्वोत्तर अमरनाथ शिव का गुहा मन्दिर है। गुहा में ऊपर से नीचे को लिंगाकार (स्तंभ के समान) जल की धारा सर्वदा गिरती है; जिसको शिव लिंग कहते हैं। वहां सलोने के पर्व के समय यात्रियों का वड़ा मेला होता है और रक्षा वन्धन के दिन-यात्रीगण दर्शन करते हैं।

**सूर्य का मंदिर**—कश्मीर घाटी के पूर्वी छोर के पास है। नाव पर सवार होकर 'कनवल' जाना चाहिये, जहांसे १ मील इसलामास्थान वाद एक कसवा है; जो वहुतेरे चश्मे और धाराओं के लिये प्रसिद्ध है। वरमूला से इसलामावाद के पड़ोस तक करीव ६० मील झेलम में नाव चलती है; इसलामावाद से ४$\frac{1}{2}$ मील पूर्वोत्तर, घाटी के ऊपर एक ऊंचे पुट्टू पर मार्तंड अर्थात् सूर्य का प्रसिद्ध पुराना स्थान है।

मंदिर वनने का ठीक समय मालुम नहीं है। कोई सन् ३७०, कोई ५८० और कोई ७५० ई० कहता है। मंदिर वेमरम्मत है और भूकम्प से इसकी बहुत नुकसानी हुई है। आंगन में ६० फीट लंबा और ३८ फीट चौड़ा एक छोटा मंदिर है (इस स्थान का नाम महाभारत में लिखा है)।

**काश्मीर-राज्य**—यह हिंदुस्तान के पश्चिमोत्तर में काराकुर्रम पहाड़ और हिमालय से घेरा हुआ, भारतगवर्नमेंट के आधीन एक प्रख्यात देशी राज्य है; इसके उत्तर काश्मीर राज्य के आधीन कई एक छोटे पहाड़ी प्रधान और काराकुर्रम पर्वत; पूर्व तिब्बत देश; दक्षिण और पश्चिम पंजाब के जिले हैं। राज्य का क्षेत्रफल ८०९०० वर्गमील है; जिससे लगभग ८० लाख रुपए मालगुजारी आती है। यह राज्य खास काश्मीर, श्रीनगर, जंबू, लदाख गिलगिट इत्यादि विभागों में बिभक्त हैं; इनमें से कश्मीर और जंबू अधिक प्रसिद्ध हैं।

काश्मीर के पहाड़, वन, नदी और झीलों की विचित्र नुमाइश हैं; इससे बढ़कर नुमाइश दूसरे देशों में देखने में नहीं आती है; इसलिये काश्मीर देश इस पृथ्वी का स्वर्ग कहा जाता है। पृथ्वी के ऊंचे पर्वतों में से चंद का-श्मीर में हैं; जिनकी चोटी ८ महीनों तक वर्फ की ढेर से छिपी रहती हैं। उत्तर के पहाड़ों के समान दक्षिण के पहाड़ ऊंचे नहीं हैं। उत्तरीय सीमा की औसत ऊंचाई समुद्र के जल से २०००० फीट से २५००० फीट तक है। का-राकुर्रम के सिलसिले की एक चोटी समुद्र के जल से २८२५० फीट ऊंची है। राज्य के पश्चिमोत्तर की सीमा पर बियाफो के वर्फ का मैदान २५ मील लंबा है। नीची घाटियों का आव हवा गर्मी के आरंभ में स्वास्थ्यकर और खुसनुमा और पूरे गर्मी के मध्य में सुखद रहता है। जाड़े में वर्फ बहुत गिरती है। काश्मीर की घाटी ठंढे आव हवा और खूबसूरती के लिये प्रसिद्ध है; इस में ३ चौथाई धान और एक चौथाई गेहू, जव, मंटर इत्यादि जिनिस उत्पन्न होती हैं। वर्फ गल कर जो पानी आता है, उसीके सिंचाव से धान होता है। वनों में बेशकीमती लकड़ी होती हैं। काश्मीर देश में बादाम, अंगूर, पिस्ता, सेव, नासपाती, गिलास, आलचा, शाहदाना, शफ्तालू, शहतूत, अखरोट इत्यादि बहुत अच्छे और कई प्रकार के होते हैं।

काश्मीर राज्य के बुनिहाल घाटी में एक बाग के अठपहले पवित्र तालाब से, जिसमें मछलियां बहुत हैं; झेलम नदी निकली है। काश्मीर की बहुत छोटी नदियां झेलम में मिली हैं। झेलम नदी पर देवदारु की लकड़ी से बने हुए आश्चर्य बनावट के १३ पुल हैं; इसके अलावे काश्मीर राज्य में होकर सिंध और चनाव नदी भी गई है और राज्य में बहुतेरी नहर और बड़ी बड़ी झील हैं। श्रीनगर से पश्चिमोत्तर काश्मीर के सब झीलों से बड़ी ऊलर झील है। जल के मार्ग से १० घंटे में श्रीनगर से वहां आदमी पहुंचता है। दलदल को छोड़ कर झील का घेरा लगभग ३० मील इसकी औसत गहराई १२ फीट और सबसे अधिक गहराई लगभग १६ फीट है। झील में मिल कर के झेलम नदी बहती है।

काश्मीर देश में लोहा बहुत होता है। जंबू की पहाड़ियों में सुरमा मिलता

है। काश्मीर की घाटी के बहुतेरे हिस्सों में गंधक के झरने (गरम झरने) हैं। इस राज्य के संपूर्ण विभागों में अनेक रंग के भालू और वर्च वृक्ष के जंगलों में कस्तूरी वाले हरिन; काश्मीर घाटी के चारो ओर चीता; पनसाल-रेंज में बारासिंगा या बड़ा हरिन और काश्मीर के पहाड़ों पर भेड़िया बहुत हैं।

शाल के लिये काश्मीर प्रसिद्ध है। सब जगहों में ऊनी कपड़े बीने जाते हैं; इस देश में रेशम, कागज़, सोना, और चांदी का काम बनता है। लदाख में बकरी के ऊन का बड़ा व्योपार होता है। पामपुर केसर होने के लिये प्रसिद्ध है। काश्मीर की घाटी में भूकंप बहुधा हुआ करता है। सन् १८८५ ई० के भूकंप से दूर तक बहुत मकान गिर गए और हजारों मनुष्य मर गए।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय काश्मीर के राज्य में २५४३९५२ मनुष्य थे; अर्थात् १३५३२२१ पुरुष और ११९०७२३ स्त्रियां। इनमें १७९३७१० मुसलमान, ६९१८०० हिंदू, २९६०८ बौद्ध, १६६१५ के मजहब नहीं लिखे गए, ११९१२ सिक्ख, ५१३ जैन, २१८ कृस्तान और १ पारसी थे।

इज़तदार हिंदू जातियो में कारकून जाति के लोग बहुत हैं; जो तिजारत खेती और लिखने का काम करते हैं। काश्मीर के निवासी लंबे, मजबूत, परिश्रमी और बनावट में बहुत अच्छे होते हैं। धनी और गरीब सबलोग चाह पीते हैं। काश्मीर राज्य में भिन्न भिन्न १३ भाषा हैं। काश्मीरी भाषा, जो खास काश्मीर में बोली जाती है; संस्कृत से अधिक संबंध रखती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय काश्मीर राज्य के श्रीनगर विभाग के श्रीनगर में ११८९६०, जंबू विभाग के जंबू में ३४५४२, पूंच में ७४८१, मीरपुर में ७२५३ और बटाला में ५२०६ और काश्मीर विभाग के अनंतनाग में १०२२७, सोपर में ८४१० और बरमूला में ५६५६ मनुष्य थे।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—महाभारत (सभा पर्व, २७ वां अध्याय) अर्जुन ने काश्मीर देश के क्षत्रिय वीरों को परास्त किया।

(वनपर्व ८२ वां अध्याय) काश्मीर देश में तक्षक नाग का वन सब पापों का नाश करनेवाला है; वहां वितस्ता (झेलम) नदी में स्नान करने से वाजपेय

जा-
विद्य
नेका
करने
वित्र
संपूर्ण

श्री-
मीर,
। कर्म

भागा
नियों

श्मीर
ई० )
आदि
उसमें
; इसी
पोवल
। नदी
न हो।
। करके
किरणों
ड़े वड़
केसर,
आदि

यज्ञ का फल मिलता है और मुक्ति मिलती है; वहांसे वड़वा तीर्थ में जा-कर सायंकाल में विधि पूर्वक स्नान करना चाहिए; वहां सूर्य को नैवेद्य चढ़ाने से लाख गोदान, सहस्र राजसूय यज्ञ और सहस्र अश्वमेध यज्ञ करनेका फल मिलता है; वहांसे रुद्र तीर्थ में जाना चाहिए; जहां महादेव की पूजा करने से अश्वमेध यज्ञ करने का फल मिलता है। (१३० वां अध्याय) परम पवित्र काश्मीर देश में महर्षिगण निवास करते हैं; उसी स्थान में उत्तर के संपूर्ण ऋषिगण, राजा ययाति, काश्यप और अग्नि का संवाद हुआ था।

(द्रोणपर्व १० वां अध्याय) राजा धृतराष्ट्र ने संजय से कहा कि श्रीकृष्ण ने युद्ध में अंग, बंग, कलिंग, मागध, काशी, अयोध्या, उज्जैन, काश्मीर, चोल इत्यादि के वीर राजाओं को परास्त किया था; उनके समान कठिन कर्म दूसरे से नहीं होसकेगा।

(अनुशासनपर्व २९ वां अध्याय) एक सप्ताह निराहार रहकर चंद्रभागा (चनाव) और वितस्ता (झेलम) नदियों में स्नान करने से मनुष्य मुनियों के तुल्य पवित्र होजाता है।

**इतिहास**—काश्मीर के अमात्यचंपक के पुत्र कल्हन कवी ने काश्मीर के राजा जयसिंह के राज्य के समय शक संवत् १०७० (सन् ११४८ ई०) में श्लोकबद्ध राजतरंगिणी बनाई और पांडवों के समय के काश्मीर के आदि गोनर्द से लेकर अपने समय के राजा तक का शृंखलाबद्ध वृत्तान्त उसमें लिखा; जिसका बहुत संक्षिप्त वृतांत नीचे है। प्रथम तरंग में लिखा है कि इसी वैवस्वत मनु के प्रारंभ में कश्यपमुनि ने एक दैत्य को निकालकर अपने तपोबल से काश्मीर मंडल का निर्माण किया; जिसमें वितस्ता अर्थात् झेलम नदी बहती है। काश्मीर मंडल में ऐसा कोई स्थान नहीं है; जहां कोई तीर्थ न हो। सूर्यदेव काश्मीर मंडल को अपने पिता (कश्यप) का रचा हुआ जान करके उसको संताप रहित रखने के लिए यहां गर्मी के दिनों में भी तेज किरणों को नहीं धारण करते। काश्मीर मंडल में रहनेवाले सर्व साधारण बड़े बड़े विद्यालयों में शास्त्राभ्यास करते हैं और स्वर्गवासियों को भी दुर्लभ केसर, अंगूर आदि वस्तुओं को भोगते हैं। कलियुग के ६५३ वर्ष बीतने पर आदि

गोनर्द काश्मीर का राजा हुआ; जिस समय पांडव और कौरव थे (पुराणों में कलि के आरंभ में या द्वापर के अंत में कौरव पांडव लिखे हुए हैं) काश्मीर के राजा जयसिंह के राज्य-समय में शक संवत् १०७० है। जब मगधदेश के राजा जरासंध ने मथुरापुरी पर आक्रमण किया; तब उसका मित्र काश्मीर का आदि गोनर्द भी अपनी सेना लेकर उसके साथ गया था; जो बलदेवजी के शस्त्र से मरगया। उसके पश्चात् उसका पुत्र दामोदर काश्मीर की राजगद्दी पर बैठा। कुछ दिनों के उपरांत जब उसने सुना कि सिंधु के समीप गांधार देश के राजा की कन्या के स्वयंवर में यादव भी आए हैं; तब पिता के वैर साधने के लिये बड़ी सेना लेकर चढ़ाई करदी; वहां संग्राम होने लगा; अंत में श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से दामोदर को मारडाला; इसके पश्चात् कृष्ण भगवान ने दामोदर की सगर्भा रानी को ब्राह्मणों द्वारा राज्याभिषेक करवाया और अपने दीवान मंत्रियों से ऐसा कहा कि काश्मीर भूमि पार्वती का स्वरूप है और इसका राजा साक्षात् सदा शिव का अंश होता है। समय आने पर रानी का पुत्र जन्मा; जिसका नाम भी गोनर्द रक्खा गया; मंत्रीवर्ग बालगोनर्द को गद्दी पर बैठा कर प्रजा का न्याय करते थे। राजा नीरे बालक था; इसलिये महाभारत के युद्ध में कौरव तथा पांडवों में से किसी ने अपनी सहायता के लिये उसको नहीं बुलाया था; उसके बहुत काल पीछे (कलियुग के १७३४ वर्ष बीतने पर, आदिगोनर्द के पश्चात् के ४७ वां राजा) राजा अशोक काश्मीर मंडल का शासक हुआ; जिसने जैनमत ग्रहण करके वितस्ता नदी के तटस्थ संपूर्ण मैदान को स्तूप मंडलों से पूर्ण कर दिया। प्रथम धर्मरण्य विहार से होकर वितस्ता नदी बहती थी; उसके वेग से बहुतेरे चैत्यस्तूप बह गए थे; इसी लिये राजा अशोक ने फिर १६ लाख लक्ष्मी से श्रीनगर नामक नगर बसाया और श्रीविजयेश के जीर्ण मंदिर का प्राकार फिर से सुंदर पत्थरों से बनवाया (जिस मौर्य्यवंशी अशोक का धर्माज्ञा स्तंभ और चट्टानों पर खुदा हुआ मिलता है; वह अशोक यह नहीं है; यह राजा शचीनर का भतीजा है।)

कल्हन कवी ने ११४८ में राजतरंगिणी का पहला खंड बनाया; उसके

बाद सन् १४१२ में जोनराज ने कल्हन से लेकर के अपने समय तक के राजा-ओं का वर्णन किया। फिर सन् १४७७ में उनके शिष्य श्रीवरराज ने तीसरा खंड बनाया और अकबर के राज्य के समय मान्यभट ने इतिहास का चतुर्थ खंड लिखा। इस प्रकार से श्लोकबद्ध काश्मीर का इतिहास राज-तरंगिणी चार खंडों में विद्यमान है। राजागोनर्द से लेकर राजा सिंहदेव तक लगभग १५० हिंदू राजाओं ने लगभग ३७०० वर्ष तक काश्मीर का राज्य किया था; उसके उपरांत मुसलमानों ने ५०० वर्ष से कुछ अधिक इसका शा-सन किया था।

बहुतों का मत है कि काश्मीर शब्द कश्यपमेरु का अपभ्रंश है। काश्मीर का इतिहास बहुत बड़ा है। पहले काश्मीर के निवासी सूर्य के उपासक थे; पीछे वह बौद्धों का प्रधान स्थान हुआ; वहांसे बौद्धमत सब दिशाओं में फैला। ग्यारहवीं सदी के आरंभ में गजनी के महमूद ने काश्मीर पर आ-क्रमण किया था। चौदहवीं सदी में समसुद्दीन के राज्य के समय काश्मीर में मुसलमानी मत फैला। चाक खांदान वालों ने लगभग २०० वर्ष राज्य किया। सन् १५८६ ई॰ में अकबर ने काश्मीर को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। सन् १७५२ में अफगानिस्तान के अहमदशाह दुर्रानी ने काश्मीर को मुगलों से छीन लिया। सन् १८१९ ई॰ लाहौर के महाराज रणजीतसिंह के जनरल मिसरचंद ने अफगानिस्तान के गवर्नर जबरखां को परास्त कर के काश्मीर को सिक्खराज्य में मिला लिया। सन् १८४६ ई॰ की तारीख १६ मार्च को अंगरेजी सरकार ने काश्मीर को महाराज रणजी-तसिंह के वंशधरों से छीन कर महाराज गुलाबसिंह को दे दिया और उनसे ७५ लाख रुपया लिया। गुलाबसिंह ने काम पड़ने पर अंगरेजी गवर्नमेंट की सहायता करने का करार किया। गुलाबसिंह पहले महाराज रणजीतसिंह के आधीन घुड़सवार का काम किया था; परंतु पीछे उन्होंने जंबू का अधिकार पाया और लाहौर दरबार के आधीन रह कर लदाख और बलतिस्तान तक अपना अधिकार फैलाया था।

सन् १८५७ के बलवे के समय महाराज ने अंगरेजों की सहायता के लिये

अपनी सेना भेजी थी। सन् १८५७ के अगस्त में महाराज गुलाबसिंह मर गए; तब उनके बड़े पुत्र महाराज रणवीरसिंह उत्तराधिकारी हुए; जिनका जन्म सन् १८३२ ई० के लगभग था। सन् १८६१ में उनको जी. सी. एस. आई का पद मिला था। सन् १८८५ ई० के १२ सितंबर को महाराज रणवीरसिंह का देहांत हो गया; तब उनके बड़े पुत्र महाराज प्रतापसिंह राजा बने; जिनकी अवस्था ४० वर्ष की है। सन् १८८९ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने महाराज प्रतापसिंह से काश्मीर राज्य की स्वतंत्रता छीन ली। अब कौंसल द्वारा, जिसके सभापति महाराज हैं; राज्यशासन होता है। काश्मीर के राजाओं को २१ तोपों की सलामी मिलती है।

काश्मीर के वर्तमान महाराज कछवाहे क्षत्रिय हैं। पूर्व समय में जयपुर प्रांत से सूर्यदेव नामक एक राजकुमार ने जंबू में आकर राज्य कायम किया; उनके वंश में क्रम से भुजदेव, अवतारदेव, यशदेव, कृपालुदेव, चक्रदेव, विजयदेव, नृसिंहदेव अर्जुनदेव, जयदेव, मालदेव, हमीरदेव, अजेव्यदेव, वीरदेव, घोगड़देव, कर्पूरदेव, सुमहलदेव और संग्रामदेव हुए। बादशाह आलमगीर ने संग्रामदेव के पराक्रम से प्रसन्न होकर उनको महाराज का पद दिया; परंतु वह दक्षिण के संग्राम में मारे गए। संग्रामदेव के पुत्र हरिदेव, हरिदेव के गजसिंह, गजसिंह के ध्रुवदेव और ध्रुवदेव के रणजीतदेव और सूरतसिंह दो पुत्र थे।

रणजीतदेव के पुत्र ब्रजराजदेव, ब्रजराजदेव के संपूर्णदेव हुए। संपूर्णदेव के संतति न होने के कारण रणजीतदेव के पुत्र दलेलसिंह के पुत्र जैतसिंह राजा हुए। लाहौर के महाराज रणजीतसिंह के राज्य के समय जैतसिंह को पिंशिन मिली। जंबू का राज्य लाहौर राज्य में मिल गया। जैतसिंह के पुत्र रघुवीरदेव के पुत्र पौत्र अब अंबाले में रहते हैं और अंगरेजी सरकार से पिंशिन पाते हैं।

ध्रुवदेव के दूसरे पुत्र सूरतसिंह के जोरावलसिंह और मियां मोटासिंह दो पुत्र थे। मियांमोटासिंह के पुत्र विभूतिसिंह और विभूतिसिंह के पुत्र ब्रजदेवसिंह हुए और जोरावलसिंह के पुत्र किशोरसिंह; किशोरसिंह के पुत्र गु-

लावसिंह, सुचतसिंह और ध्यानसिंह थे; इनमें से सुचेतसिंह का वंश नहीं चला; ध्यानसिंह के हीरासिंह, जवाहिरसिंह और मोतीसिंह ३ पुत्र हुए; जिनमें मोतीसिंह की संतान है। महाराज गुलावसिंह के उद्धवसिंह, रणधीरसिंह और रणवीरसिंह ३ पुत्र थे; जिनमें से उद्धवसिंह नौनिहालसिंह के साथ और रणधीरसिंह राजा हीरासिंह के साथ मर गए; इसलिये महाराज रणवीरसिंह जंबू और काश्मीर के राजा हुए; रणवीरसिंह के पुत्र महाराज प्रतापसिंह, मियां रामसिंह और मियां अमरसिंह हैं; जिनमें महाराज प्रतापसिंह को राज्य मिला है।

---

# सोलहवां अध्याय।

## (पंजाव में) हसनअवदाल, ऐवटावाद, अटक, नौशहरा, पेशावर और कोहाट।

## हसनअवदाल।

रावलपिंडी से पश्चिमोत्तर ९ मील गुलरा जंक्शन और ३० मील हसन अवदाल का रेलवे स्टेशन है। गुलरा जंक्शन से एक लाइन ७० मील पश्चिम सिंध नदी के किनारे खुसियालगढ़ को गई है; जहांसे लगभग ४० मील पश्चिम कोहाट है। हसनअवदाल पंजाव के रावलपिंडी जिले के अटक तहसील में एक प्रसिद्ध गांव है, जहां पुराने शहर की तवाहियां देखने में आती हैं। गांव के निकट एक खड़ी पहाड़ी की चोटी पर पंजासाहव फकीर का दरगाह स्थित है। गांव से लगभग १ मील पूर्व पहाड़ी के पादमूल के पास मछलियों से भरा हुआ एक पवित्र सरोवर है; जिसके किनारों पर उजड़े पुजड़े अनेक मंदिर देख पड़ते हैं और पश्चिम बगल में एक चट्टान से अनेक झरने निकले हैं।

हसनअवदाल से पूर्व ऐवटावाद होकर एक पहाड़ी मार्ग श्रीनगर को गया है। ऐवटावाद तक तांगा का रास्ता है। हसन अवदाल से १२ मील हेदर, २० मील हरिपुर, ४२ मील ऐवटावाद, ५८ मील मनसहरा, ७६ मील गढ़ीहवीवुला, ९८ मील डोमेल, १११ मील गढ़ी, १४६ मील ऊरी, १७१ वरमूला और २०३ मील श्रीनगर है। सब स्थानों पर डाक वंगले वने हैं।

## ऐवटावाद।

हसनअवदाल से ४२ मील पूर्वोत्तर समुद्र के जल से ४१२० फीट ऊपर श्रीनगर के मार्ग में पेशावर विभाग के हजारा जिले का सदर स्थान ऐवटावाद एक कसवा है; जिसमें सन् १८९१ की जन-संख्या के समय १०१६३ मनुष्य थे। हजारा के डिपटीकमिश्नर मैजोर जेम्सऐवट के नामसे, जो सन् १८४७ से १८५३ तक डिपटीकमिश्नर थे, इसका नाम ऐवटावाद पड़ा। ऐवटावाद में हजारा जिले की सदर कचहरियां, छावनी, वाजार, अस्पताल और वंगला है; वहां वर्ष के प्रायः प्रति महिनों में वर्षा होती है। कभी कभी दिसंवर से मार्च तक वर्फ गिरती है। ऐवटावाद से ६३ मील रावलपिन्डी और ४० मील मरी है।

**हजारा जिला**—यह पेशावर विभाग के पूर्वोत्तर का जिला है; इसके उत्तर काल पहाड़, स्वाधीन स्वात देश, कोहिस्तान और चिलास; पूर्व काश्मीर राज्य; दक्षिण रावलपिन्डी जिला और पश्चिम सिन्ध नदी है। जिले का क्षेत्रफल ३०२१ वर्ग मील है, इसका सदर स्थान ऐवटावाद में है। यह जिला पहाड़ी देश है, इसमें केवल २५० वर्ग मील से ३०० वर्ग मील तक समतल भूमि है। जिले के पूर्वी सीमा पर २० मील झेलम नदी वहती है। जिले में अनेक भांति के स्वभाविक खुशनुमा दृश्य हैं। जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ५१६०८८ और सन् १८८१ में ४०७०७५ मनुष्य थे; अर्थात् ३८५७२९ मुसलमान, ११८४५ हिन्दू, १३८१ सिक्ख और ९० कृस्तान, मुसलमानों में गूजर तंवोली और ढोर अधिक हैं। हिन्दुओं में

खत्री बहुत हैं। जिले में हरिपुर, ऐबटाबाद, बाफा और नौशहर म्यूनीसि-पल कसबे हैं।

हजारा जिले का सदर स्थान पहिले हरिपुर था, जिसको सिक्ख सरदार हरीसिंह ने बसाया था। सन् १८५४ ई० से ऐबटा सदर स्थान हुआ। इस जिले में मुगल, दुर्रानी, सिक्ख और अंगरेजों ने क्रम से राज्य किया।

# अटक।

हसनअबदाल से २१ मील और रावलपिन्डी से ५९ मील (लाहौर से २१७ मील) पश्चिमोत्तर अटक का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन के समीप सिंध नदी पर रेलवे पुल बना है, जो सन् १८८३ ई० में खुला था। स्टेशन से १$\frac{1}{2}$ मील पूर्वोत्तर रावलपिन्डी जिले में तहसीली का सदर स्थान अटक एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की जन-संख्या के समय ४२१० मनुष्य थे; अर्थात् २११२ मुसलमान, १२८३ हिन्दू, २ सिक्ख और १३ अन्य। अटक में दो सराय, बंगलो, गिर्जा, तहसीलीमकान, सराय और स्कूल है। अटक के निकट सिन्ध नदी में पानी की गहराई जाड़े के दिनों में ४० फीट और बाढ़ होने पर ७५ फीट रहती है। कसबा पहिले किले में था, लेकिन पीछे बाहर बसाया गया।

रेलवे पुल से लगभग १$\frac{1}{2}$ मील उत्तर काबुलनदी पश्चिम से आकर सिंध नदी में मिली है। सिंधनदी से पूर्व सिंध और काबुल नदी के संगम के सामने ८०० फीट ऊंचे चट्टान पर अटक का प्रसिद्ध किला है; जिसमें यूरोपियन सेना आरटिलरी का एक बैटरी रहती है। किले से उत्तर ओर बर्फ से छिपी हुई हिन्दू कुशपर्वत की चोटियां देख पड़ती हैं।

इतिहास—सिकंदर और उसके बाद के पश्चिमोत्तर से हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने वाले सबलोग अटक होकर आए थे। बादशाह अकबर ने सन् १५८३ ई० में अटक का किला बनवाया। महाराज रणजीतसिंह ने सन् १८१३ ई० में किले को लेलिया। अंगरेजी गवर्नमेंट ने सन् १८४९ में सिक्खों से किला छीन लिया।

## नौशहरा।

अटक से ११ मील (लाहौर से ६५६ मील) पश्चिमोत्तर नौशहरा का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के पेसावर जिले में तहसीली का सदर स्थान नौशहरा एक कसवा है। रेलवे स्टेशन के निकट कावुल नदी के दहिने नौशहरा की फौजी छावनी और सव डिवीजन की कचहरियां हैं। छावनी में अंगरेजी और देशी फौज रहती है और वाजार, चर्च तथा सराय है।

छावनी से करीव २ मील दूर कावुल नदी के ऊपर वाएं किनारे पर नौशहरा का देशी कसवा है। सदर सड़क से लगभग २ मील दूर सिक्खों का वनवाया हुआ एक उजड़ा पुजड़ा किला है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नौशहरा के देशी कसवे में ८०९० और छावनी में ४८७३ संपूर्ण १२९६३ मनुष्य थे; अर्थात् १०३२ मुसलमान, २८२० हिंदू, १३ सिक्ख और १०१८ अन्य।

## पेशावर।

नौशहरा से २४ मील (लाहौर से २८० मील) पश्चिमोत्तर पेशावर शहर का रेलवे स्टेशन और उससे ३ मील और आगे पेशावर की छावनी का रेलवे स्टेशन है। हिंदुस्तान के पश्चिमोत्तर की सीमा के पास (३४ अंश १ कला ४५ बिकला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश ३६ कला ४० विकला पूर्व देशांतर में) पंजाव में किस्मत और जिले का सदरस्थान वारा नदी के वाएं किनारे के समीप मैदान में पेशावर एक प्रसिद्ध शहर है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय पेशावर शहर और फौजी छावनी में ८४१९१ मनुष्य थे; अर्थात् ५१२६४ पुरुष और ३२९२७ स्त्रियां। इन में ६०२६३ मुसलमान, १५५०१ हिन्दू, ४७५५ सिक्ख, ३६२९ कृस्तान, ३३ पारसी और ४ यहूदी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ३३ वां और पंजाव में ४ था शहर है।

पेशावर शहर मट्टी की दीवार से घेरा हुआ है, जो सिक्खों के राज्य के

समय बना था, उसमें १६ फाटक हैं, जो नित्य रात में तोप की आवाज होने पर बंद किए जाते हैं। शहर के मकान खास करके छोटे ईंटों से अथवा मट्टी से बने हैं।

काबुल फाटक से शहर में प्रवेश करने पर ५० फीट चौड़ी नई प्रधान सड़क मिलती है, जिसके दोनों बगलों पर दुकानों की पंक्तियां हैं। पक्का नाला, जिससे सड़कें सींची जाती हैं; शहर के बीच होकर गया है। बारानदी से पेशावर में नलद्वारा उत्तम जल आता है। शहर में कईएक खूबसूरत मसजिद और पंचतीर्थी नामक एक सुंदर सरोवर है, जिसके किनारों पर कई एक मंदिर बने हुए हैं।

शहर की दीवार के बाहर पश्चिमोत्तर बगल के एक टीले पर बालाहिसार नामक किला खड़ा है, जिसकी ईंटे की दीवार सरजमीन से ९२ फीट ऊंची है। शहर में सब डिविजनल आफिसें और कचहरियां; गिर्जा, स्कूल, अस्पताल और पुलिस स्टेशन के आगे घड़ी का बुर्ज है। शहर के चारो ओर बहुतेरे कबरगाह देख पड़ते हैं। शहर और छावनी के बीच में बाजार है। पेशावर के निकट बहुत बौद्ध रिमेंश हैं।

शहर से ३ मील दूर चांदमारी की छावनी के निकट गोरखनाथ का तालाब है; जहां चैत्र बदी १४ और मेष की संक्रांति को मेला होता है और प्रति रविवार को बहुत लोग जाकर तालाब में स्नान करते हैं। दूसरे स्थान पर एक मील के घेरे में गोरखनाथ की गद्दी है, जिसमें अब तहसीली कचहरी होती है, बाग लगा है और स्कूल बना है।

शहर से २ मील पश्चिम बड़ी छावनी है, इसमें कमिश्नर और डिपोटी कमिश्नर की कचहरियां और जिले के सदर आफिसें, दो मंजिले बारक, अर्थात् सैनिकगृह; सेंटजन का चर्च और पबलिक बाग हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी में २०६९० मनुष्य थे; अर्थात् १७२३३ पुरुष और ३४५७ स्त्रियां। सन् १८८५ ई० में छावनी में शाही आर्टिलरी का १ बैटरी, यूरोपियन पैदल का १ रेजीमेंट, बंगाल सवार का १ रेजीमेंट और देशी पैदल के ३ रेजीमेंट थे। नौशहरा, जमरूद और चेरात की छावनियां पेशावर के आधीन हैं।

पेशावर सौदागरी का प्रसिद्ध बाजार है। मध्य एशिया, अफगानिस्तान और आस पास के स्वाधीन राज्यों के साथ इसमें सौदागरी होती है। पेशावर में कोहाट से गेहू और निमक, स्वाट से चावल और घी, युसफजाई से तेल के बीज और पंजाब और पश्चिमोत्तर देश से चीनी और तेल आते हैं और ये सब बोखारा, काबुल तथा बजावर में भेजे जाते हैं। बोखारा से सोना का सिक्का, चांदी और सोना, सोना चांदी का तार और लैस और चमड़े और काबुल से घोड़े, खच्चर, मेवा, भेंड़ी के चमड़े कराचोबी किया हुआ ऊनी कोट इत्यादि वस्तु पेशावर में आती हैं। पेशावर में अंगरेजी असबाब और हिंदुस्तानी चाय काबुल भेजा जाता है। पेशावर का बाजार देखने लायक है, यहां की वस्तुओं में से अनेक वस्तु भारतवर्ष के दूसरे भागों में नहीं देखने में आती हैं; यहां अफगानिस्तान, आस पास के जिलों और मध्य एशिया के डीलडौल वाले बहुत लोग खूबसूरत पोशाक पहने हुए देख पड़ते हैं।

यहां के पुरुष बड़े घेरे का अथवा साधारण पायजामा और कुर्ता पहनते हैं और सिर पर मुरेठा बांधते हैं। स्त्रियां बड़े घेरे का पायजामा और कुर्ता पहनती है, छोटी चादर वा ओढ़नी ओढ़ती है, दोनों कानों के समीप एक एक चोटी गुंथ कर लटकाती हैं और नाक में सोने की छुछी और कानों में मोती लगे हुए बहुतेरे बड़े बड़े वाले पहनती हैं यहां के पायजामा में २० फीट तक घेरे के होते हैं।

पेशावर शहर से १९० मील अफगानिस्तान की राजधानी काबुल, १३$\frac{१}{२}$ मील पश्चिमोत्तर स्वात और काबुल नदी का संगम, १०$\frac{१}{२}$ मील पश्चिम खैबर पास के दरवाजे के निकट जमरूद का किला और १६ मील खैबर पास है। घाटी से १०० फीट ऊपर ३ दीवारों से घेरा हुआ जमरूद का किला है, जिसको महाराज रणजीतसिंह के जनरल हरीसिंह ने मरम्मत किया था। सन् १८३७ ई० में हरीसिंह काबुल के दोस्तमहम्मद की फौज से लड़ कर मारा गया, तब किला अफगानों के हस्त गत हुआ।

पेशावर से अलीमसजिद तक गाड़ी का उससे आगे घोड़े का मार्ग है। अलीमसजिद और लंडीकोतल के किले समुद्र के जल से १७०० फीट की ऊंचाई पर हैं। जमरुद से घाटी देख पड़ती है। ६०० फीट से १००० फीट तक ऊंची खड़ी पहाड़ियों के बीच में तंग और घुमाव खैबर घाटी है, जिसके उत्तर दरवाजे में सन् १८४१ ई० में अंगरेजी फौज के लगभग १२ हजार मनुष्य, सबके सब मारे गए थे। मंगल या शुक्र के दिन कारवानों के फायदे के लिये घाटी खुलती है। बोझा लादे हुए ऊंट, खच्चर और बैल झुंड के झुंड जाते आते हैं।

**पेशावर जिला**—इसके उत्तर सफेदकोह से हिन्दूकुश को जाने वाले पहाड़ियों के सिलसिले; पश्चिम और दक्षिण इन्ही पहाड़ों का सिलसिला; दक्षिण-पूर्व सिंध नदी और पूर्वोत्तर बोनर और स्वात पहाड़िया हैं। यह जिला प्रायः स्वाधीन पहाड़ी पठानों से घिरा हुआ है। जिले का क्षेत्रफल २५०४ वर्ग मील है। जिले में ६ तहसीली हैं; तीन स्वात और काबुल नदी के पश्चिम और तीन पूर्व। काबुल नदी इस जिले में बहती हुई अटक के निकट सिंध में मिल गई है। सिंध, काबुल और स्वात, ये तीनों नदियां सब ऋतुओं में घाटियों में नाव चलने के लायक रहती हैं, परंतु पहाड़ियों के भीतर कई एक जगहों के अतिरिक्त, जहां घाट हैं इनकी धारा इतनी तेज है कि इनमें नाव नहीं चल सकती। जिले में कोई झील नहीं है, जंगल बहुत है। अटक से ऊपर सिंध और काबुल नदी में सोना मिलता है। लग भग ३०० मल्लाह चैत्र, वैशाख, आश्विन और अगहन में बालू धोकर सोना निकाल ने का काम करते हैं। चारो ओर की पहाड़ियों में लोहा का ओर निकालता है। लुंदखार में पत्थर प्राठ होता है। खटक पहाड़ियों पर बहुत सूअर और थोड़ी जंगली भेड़ रहती हैं। पहाड़ियों पर जंगली बकरियां होती हैं; जिनकी संख्या प्रति वर्ष घटती जाती है।

पेशावर जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ७०३१७२ और सन् १८८१ में ५९२६७४ मनुष्य थे; अर्थात् ५४६११७ मुसलमान, ३१३२१ हिन्दू, ४०८८ कृस्तान, ३१०३ सिक्ख; ३१ पारसी, ३ जैन और ३ दूसरे। मुस-

लमानों में २७६७५६ पठान, १३०८२ काश्मीरी, ९५७६ सेख, ४५३८ मुगल, ४५१५ सैयद और (जो हिंदू से मुसलमान होगए थे) १७४४५ अएवान, २१२४० वागवान, जिनसे कम संख्या के गूजर, तरखान, कुंभार, राजपूत, सोनार, लोहार, तेली इत्यादि और हिन्दू जातियों में अब तक अपने पूर्व पुरषों के मत पर हैं, १३३३३ अरोरा, ९५७८ खत्री और ३७४५ ब्राह्मण थे; ये तीनों जाति के लोग पेशावर या दूसरे शहरों में तिजारत और व्योहार करते हैं।

जिले में ५ कसबे हैं;—पेशावर (जनसंख्या सन् १८९१ में ८४१९१), मांग्र (जनसंख्या १२३२७), चरसद (जनसंख्या १०६१९), नौशहरा और टांजी।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि अतिप्राचीन काल में एक चंद्रवंशी राजा के आधीन गांधारदेश में पेशावर की घाटी थी, जिसकी राजधानी पेशावर शहर से २५ मील दूर स्वात नदी के बांए किनारे पर हस्त नगर के आस पास पिकलस (या पुस्कलावती) करके प्रसिद्ध थो; वहां अब तक पुराने मकानों को वड़ो तवाहियां देख पड़ती हैं। सन् ई० की पांचवीं सदी में चीन के फाहियान और सातवीं सदी में हुएंत्संग ने लिखा था; कि पुस्कलावती में बहुत प्रसिद्ध बौद्धस्तूप है; उस समय गांधार की राजधानी पेशार था। महाभारत—(आदि पर्व ११० वां अध्याय) भीष्म ने सुना कि गांधारराज राजा सुवल की पुत्री गांधारी ने १०० पुत्र पाने का वर लाभ किया है, तब कन्या के लिये गांधार राज के पास दूत भेजा। गांधार का राजकुमार शकुनी अपनी बहन को ले कर हस्तिनापुर आया। गांधारी से धृतराष्ट्र का व्याह हुआ। (शल्य पर्व २८वां अध्याय) सहदेव ने (कुरु-क्षेत्र के संग्राम में) शकुनी के पुत्र उलूक को और उसके पीछे शकुनी को मार-डाला और शकुनी के संग के घुड़ स्वारों को मार कर पृथ्वी में गिरा दिया।

दसवीं सदी के अन्तमें गजनी के सुबुक्तगीं ने लाहौर के राजा जयपाल को परास्त करने के उपरांत पेशावर पर अधिकार कर के १० हजार सवार रक्खा था। सुबुक्तगीं के मरने पर उसके बेटा महमूद नें पेशावर

की घाटी में अनेक बड़ी लड़ाइयां लड़ी थीं। ग्यारहवीं सदी में जब गजनी का राज्य लाहौर तक पहुंचा, तब पेशावर मध्य रास्ते का प्रसिद्ध टिकान हुआ। सन् १२०६ में शहाबुद्दीन के मरने के पीछे पेशावर की घाटी खैबर की पहाड़ियों के पठानों के आधीन हुई। पंद्रहवीं सदी के अंत में बहुतेरे अफगान जिले में आ बसे और कुछ दिनों के पीछे उन्होंने हमले करके पठानों को पड़ोस के हजारा जिले में खदेर दिया; वे स्थान स्थान में बसगए। सोलहवीं सदी में अकबर के राज्य के समय पेशावर घाटी मुगलों के आधीन हुई। सन् १७३८ में पेशावर जिला नादिरशाह दुर्रानी के हस्त गत हुआ। सन् १८१८ में सिक्खों ने पेशावर की घाटी में जाकर पहाड़ियों के कदम तक संपूर्ण देश में लूट पाट की। सन् १८२३ में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने काबुल के आजिमखां की सेना को पूरे तौर से परास्त करके जिले पर अधिकार किया; पीछे एक दूसरी लड़ाई होनें पर सिक्खों का अधिकार देश पर मजबूत होगया। सन् १८४८ में पेशावर जिला अंगरेजों के आधीन हुआ; उसके थोड़ही दिन पीछे अंगरेजी छावनी पेशावर में बनी।

सन् १८५७ के बलवे के समय मई महिने में पेशावर के देशी रेजीमेंट के हथियार छीन लिए गए; परंतु नवशहरा और होतीमरदान के ५२ वां देशी पैदल बागी होगए, अंगरेजी सेना आनें पर वे भागे, उनमें से १२० मारे गए, १५० कैदी हुए और शेष पहाड़ियों में भागे, जिनमें से बहुतेरे मारे गए और शेष कैदी हुए।

## कोहाट।

पेशावर से फोर्टमेकसन और कोहाटघाटी होकर ३७½ मील दक्षिण कुछ पश्चिम समुद्र के जल से १७६७ फीट ऊपर अफरीदी पहाड़ियों के दक्षिणी नेव से २ मील दूर टोई नदी के उत्तर पेशावर विभाग में जिले का सदर स्थान कोहाट एक कसबा है। पेशावर से पैदल या टट्टू पर कोहाट लोग

जाते हैं। वाला और जवाकी पास होकर पेशावर से कोहाट ६६ मील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोहाट कसवे और छावनी में २७००३ मनुष्य थे; अर्थात् २००४२ पुरुष और ६९६१ स्त्रियां। इनमें १७५२९ मुसलमान, ५१४१ हिंदू, ४१३१ सिक्ख, ११२ कृस्तान और २ दूसरे थे।

वर्तमान कसवा पुरानी जगह से कुछ दूर नीची ऊंची भूमि पर वना हुआ है. इसके चारो ओर १२ फीट ऊंची दीवार है। कसवे में एक चौड़ी सड़क और शेष सब घुमाव की गलियां हैं; इसमें जेलखाना और एक गवर्नमेंट स्कूल है और थोड़ी सौदागरी होती है।

देशी कसवे के पूर्व और पूर्वोत्तर ऊंची भूमि पर सिविल स्टेशन और फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४६८१ मनुष्य थे। छावनी और कसवे के उत्तर अंगरेजी सरकार का बनवाया हुआ किला है।

कोहाट कसवे से दक्षिण-पश्चिम ८४ मील वन्नू कसवा और पूर्व लगभग ४० मील सिंध नदी के किनारे पर रेलवे का स्टेशन खुसियालगढ़ और ११० मील गुलरा जंक्शन है।

**कोहाटजिला**—यह पेशावर विभाग के दक्षिण-पश्चिम का जिला है। इसके उत्तर पेशावर जिला और अफरीदी पहाड़ियां; पश्चिमोत्तर अरकजाई देश; दक्षिण वन्नू जिला; पूर्व सिंध नदी और पश्चिम जायमुक्त पहाड़ियां, कुर्रम नदी और वजीरी पहाड़ियां हैं। जिले का क्षेत्रफल २८३८ वर्गमील है। इस जिले में खास कर के पहाड़ी देश है।

जिले में सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय २०२१४६ और सन् १८८१ में १८१५४० मनुष्य थे; अर्थात् १६१२११ मुसलमान, १८२८ हिंदू, २२४० सिक्ख, २१२ कृस्तान और ४१ जैन। मुसलमानों में पठान अधिक हैं; हिंदुओं में अरोरा वहुत हैं; इनके वाद खत्री, ब्राह्मण और कुछ कुछ राजपूत, जाट और अहीर हैं। कोहाट जिले में कोहाट कसवे के अतिरिक्त ५ हजार से अधिक आवादी का कोई कसवा नहीं है।

इतिहास—ओनइसवीं सदी के आरंभ में कोहाट और हंगूसमदखां बर्कजाई के आधीन हुआ, जिसका मुखिया दोस्तमहम्मद ने अफगानिस्तान का तख्त छीन लिया। लगभग सन् १८२८ ई० में पेशावर के सरदारों ने, जिनका मुखिया सरदार सुल्तानमहम्मद था, समदखां के लड़के को खदेर दिया। सन् १८३४ में जब महाराज रणजीतसिंह ने पेशावर पर अधिकार किया, तब सुल्तानमहम्मदखां काबुल चला गया, परंतु दूसरे वर्ष में महाराज ने महम्मदखां को पेशावर में एक ऊंचे पद पर नियुक्त किया और कोहाट और हंगू देदिया। सिक्खों की दूसरी लड़ाई के पीछे पंजाब के अन्य जिलों के साथ कोहाट जिला अंगरेजी गवर्नमेंट के आधीन हुआ।

---

# सत्रहवां अध्याय।

## (पंजाब) लालामूसा जंक्शन, पिंडदादनखां, कटासराज, शाहपुर, झंग और मगियाना, बन्नू, डेराइस्माइलखां, डेरागाजीखां और मुजफ्फरगढ़।

## लालामूसा जंक्शन।

लाहौर से ७५ मील पश्चिमोत्तर (गुजरात कसबे से ५ मील) लालामूसा रेलवे का जंक्शन है, जहां से रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) लालामूसा से पश्चिम।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

५२ मलिकवाला जंक्शन।

६४ पिंडदादनखां।

९७ शाहपुर।

१११ खुसाब।

१६४ कुंडियान जंक्शन. जिससे १ मील उत्तर मियांवाली है।

मलिकवाला जंक्शन से १५ मील उत्तर खेवरा और १८ मील दक्षिण-पश्चिम भीरा है।

कुंडियान जंक्शन से
दक्षिण कुछ पश्चिम
मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
५२ दरियाखां जंक्शन।
६३ भक्कर,
७८ बिहाल जंक्शन।
१७ लिया।
१४१ सनावन।
१५० महमूदकोट जंक्शन।

महमूदकोट जंक्शन से ११ मील पश्चिम-दक्षिण डेरा गाजीखां और पूर्व १६ मील मोजफ्फरगढ़ और २६ मील शेरशाह जंक्शन है।

(२) लालामूसाजंक्शन से पश्चिमोत्तर
मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
२८ झेलम।
१०३ रावलपिंडी।
११२ गुलरा जंक्शन।
१३३ हसनअबदाल।
१६२ अटक पुल।
१८१ नौशहरा।
२०५ पेशावर शहर।
२०८ पेशावर छावनी।

(३) लालामूसा जंक्शन से दक्षिण-पूर्व
मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
५ गुजरात।
१३ वजीराबाद जंक्शन।
३३ गुजरांवाला।
७० शाहदरा।
७५ लाहौर जंक्शन।

वजीराबाद से पूर्व की ओर २६ मील स्यालकोट, ४८ मील सतावरी छावनी और ५१ मील जंबू के पास तावी है।

# पिंडदादनखां।

लालामूसा जंक्शन से पश्चिम ५२ मील मलिकवालाजंक्शन और ६४ मील पिंडदादनखां का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के झेलम जिले में तहसीली का सदर स्थान झेलम नदी के उत्तर किनारे से एक मील दूर जिले में सबसे बड़ा कसबा पिंडदादनखां है, जिसको सन् १६२३ ई० में दादनखां ने बसाया; जिनके वंशधर अबतक कसबे में हैं।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय पिंडदादनखां में १५०५५ मनुष्य थे;

अर्थात् १४६६९ मुसलमान, ५२८८ हिंदू, २८८ सिक्ख और १४ कृस्तान।

पिंडदादनखां में सब डिवीजन की कचहरियां, मिशनहौस और अस्पताल हैं। कराचोबी की हुई लुंगियां सुंदर बनती हैं। निमक, कपड़ा, रेशम, पीतल और तांबे का बर्तन, गल्ला, घी और तेल यहांसे अन्य स्थानों में जाते हैं और अंगरेजी चीज, जस्ता, कच्चा रेशम, ऊनी चीजें, मेवा इत्यादि वस्तु दूसरे स्थानों से आती हैं।

खेवरा—मलिकवाला जंकशन से १५ मील उत्तर और पिन्डदादनखां से (रेलवे द्वारा) २७ मील पूर्वोत्तर खेवरा का रेलवे स्टेशन है। पिन्डदादनखां की तहसीली में खेवरा बस्ती के निकट सेंधा निमक की प्रसिद्ध खान है, जहां पहाड़ियों से प्रति वर्ष लग भग २० लाख मन निमक काटा जाता है, जिसमें अंगरेजी सरकार को लग भग ५० लाख रुपए की बचत होती है। निमक ढोने के लिये खेवरा में रेलवे गई है और खेवरा की खानों से झेलम नदी तक धूएं की ट्राम गाड़ी चलती हैं। खेवरा से नरसिंह फव्वारा तीर्थ को लोग जाते हैं।

## कटासराज।

खेवरा से ५ कोस और पिन्डदादनखां से १६ मील कटासराज रेंज के उत्तर बगल पर झेलम जिले के पिन्डदादनखां की तहसीली में कटासराज एक तीर्थ है; जिसको अमरकुंड भी कहते हैं। सवारी के लिये खेवरा में एके और खच्चर मिलते हैं। पंजाब में कुरुक्षेत्र और ज्वालामुखी के बाद इसमें सब स्थानों से अधिक यात्री आते हैं। कटासकुंड बहुत बड़ा मुरब्बा शकल का सरोवर है; इसका भाग कुछ स्वभाविक और कुछ बनाया हुआ जानपड़ता है, इसके किनारों के ऊपर पुराना दिवार है, परंतु दर्रारों से और टूटे हुए बांधों से अब पानी निकल जाता है। सरोवर के निकट कई एक देव मंदिर बने हुए हैं। पड़ोस की एक छोटी पहाड़ी पर एक किले की निशानी है, जिसके नीचे एक घेरे में सातघरा नाम से प्रसिद्ध ७ मंदिर हीन दशा में वर्तमान हैं, जिनके आस पास दो चार दूसरे मंदिर भी उसी दसा में हैं।

लोग कहते हैं कि पांडवलोग अपने १२ वर्ष के वनवास के समय, जब कुछ दिनों तक कटास में रहे थे, तबके उन्हीके ये सातो मंदिर है, जिनको जंबू के गुलाबसिंह नें सुधरवाया था; परंतु अंगरेजों के मत से ये मंदिर सन् ई० के आठवीं वा नवीं शताब्दी के बने हुए हैं। कटासकुन्ड के चारो ओर ब्राह्मण (पन्डे) और साधुओं की छोटी छोटी बस्तियां हैं। वैशाख मास में कटासराज का मेला होता है, जिसमें ३० हजार से अधिक मनुष्य इकट्ठे होते हैं। यात्री-गण पवित्र कटासराज सरोवर में स्नान करते हैं, यहां के लोग कटास तालाब को पुष्कर तालाब का भाई कहते हैं।

## शाहपुर।

पिन्डदादनखां से ३३ मील (लालामूसा जंक्शन से १७ मील) पश्चिम शाहपुर का रेलवे स्टेशन है। झेलम नदी के बांए किनारे से २ मील दूर पंजाब के रावलपिंडी विभाग में जिले का सदर स्थान शाहपुर एक छोटा कसबा है। लाहौर से शाहपुर हो कर डेराइस्माइलखां को एक सड़क गई है।

सन् १८८१ की जन-संख्या के समय शाहपुर कसबे और सिविल स्टेशन में ७७५२ मनुष्य थे; अर्थात् ५२५३ मुसलमान, २४०८ हिन्दू, ७४ सिक्ख और १७ दूसरे।

शाहसाम्स के नाम से कसबे का नाम शाहपुर पड़ा था, जिसका मकबरा कसबे के पूर्व है; जिसके पास वर्ष में एक मेला होता है, जिसमें लगभग २० हजार आदमी आते हैं। कसबे से ३ मील पूर्व सिविल कचहरियां हैं, जहां सरांय, बंगला और टौनहाल देखने मे आते हैं। कसबे होकर नहर गई है। शाहपुर में ३ पबलिक बाग और २ स्कूल हैं। सिविल स्टेशन के निकट वर्ष में एक बार मवेसी और घोड़ों का एक मेला होता है।

**शाहपुर जिला**—यह रावलपिंडी विभाग के दक्षिण भाग में झेलम नदी के दोनों ओर स्थित है। इसके उत्तर झेलम जिला; पूर्व गुजरात और गुजरांवाला ज़िले; दक्षिण झांग जिला और पश्चिम डेराइस्माइलखां और बन्नू

जिले हैं। जिले में भेरा, शाहपुर और खुशाब ३ तहसीली हैं; इसके केवल छठवें भाग में खेती होती है; बाकिए पहाड़, जंगल और गैर आबादी देश हैं। पहाड़ियों से निमक निकल जाता है और कुछ कुछ लोहा की ओर, सोरा और सीसा मिलते हैं।

जिले में सन् १८९१ की जन-संख्या के समय ४९३५८८ और सन् १८८१ में ४२१५०८ मनुष्य थे; अर्थात् ३७७७४२ मुसलमान, ५१०२६ हिन्दू, ४७०२ सिक्ख, २३ क्रस्तान और १ जैन। मुसलमानों में राजपूत, अवान, जाट इत्यादि भी हैं। हिन्दू और सिक्खों में अरोरा, खत्री और ब्राह्मण बहुत हैं। जिले में भीरा बड़ा कसबा (जन-संख्या सन् १८९१ में १७४२८ और खुसाब, साहवाल, मियांनी और शाहपुर छोटे कसबे हैं।

भीरा—मलिकवाल जंक्शन से १८ मील दक्षिण-पश्चिम भीरा तक रेलवे शाखा गई है। झेलम नदी के बाएं किनारे पर शाहपुर जिले में तहसीली का सदर स्थान और प्रधान कसबा भीरा है, जो सन् १५४० ई० में एक मुसलमानी फकीर की कबर और एक सुंदर मसजिद की चारो ओर बस गया। अब मसजिद की मरम्मत हुई है। अंगरेजी अधिकार होने के पश्चात् कसबे की अधिक तरक्की हुई है। भीरा में तहसीली कचहरी, स्कूल, अस्पताल और टाऊनहाल हैं। साबुन, पंखा, लोहा और पीतल की चीजें, तलवार, छूरी के बेंट और कपड़े वहां तैय्यार होते हैं। पुराना कसबा झेलम के बाएं किनारे पर पूर्व समय में प्रसिद्ध था, जिसको पहाड़ियों ने बरबाद कर दिया था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भीरा में १७४२८ मनुष्य थे; अर्थात् ११०३९ मुसलमान, ६११३ हिंदू, २६१ सिक्ख और १९ क्रस्तान।

इतिहास—सन् १७६३ ई० में महाराज रणजीतसिंह के दादा चतुरसिंह ने अहमदशाह के विरुद्ध सेलहरंज में लूटपाट किया। भांजी प्रधानों ने पहाड़ियां और चनाव के बीच के देश को आपस में बांटा। सन् १७८३ में रणजीतसिंह का पिता महासिंह मियानी का मालिक बना। सन् १८०३ में रणजीतसिंह ने भीरा को मियानी में जोड़ा और सन् १८१० में शाहीवाल,

खुसाब और शाहपुर को भी जीत कर अपने अधिकार में कर लिया। सन् १८४९ की सिक्ख लड़ाई के पश्चात् शाहपुर जिला अंगरेजी अधिकार में हुआ।

## झंग और मगियाना।

शाहपुर से ७५ मील से अधिक दक्षिण (३१ अंश १६ कला १६ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश २१ कला ४५ विकला पूर्व देशांतर में) चनाव नदी से लगभग ३ मील पूर्व पंजाव के मुलतान विभाग में जिले का सदर स्थान झंग एक कसवा है, जिससे २ मील दक्षिण मंगियाना, जिसमें जिले का सिविल स्टेशन है, स्थित है। दोनों मिलकर एक म्यूनिसिपलिटी वनी है। चनाव और झेलम नदी का संगम झंग से १० मील और मगियाना से १३ मील पश्चिम-दक्षिण है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय झंग और मगियाना में २३२१० मनुष्य थे; अर्थात् ११३५५ हिंदू, ११३३४ मुसलमान, ५७३ सिक्ख, और २८ कुस्तान और सन् १८८१ में २१६२१ मनुष्य थे; अर्थात् ९०५५ झंग में और १२५७४ मगियाना में।

जब जिले की सिविल कचहरियों का काम झंग से मगियाना में चला गया, तबसे तिजारत और मसहूरी में मगियाना बढ़ गया। झंग कसवे की प्रधान सड़क पूर्व से पश्चिम को निकली है, जिसके किनारों पर एकही नकशे की पक्की दुकानें बनी हुई हैं। कसबे के निकट एक सुंदर सरोवर, स्कूल का मकान, अस्पताल और पुलिस स्टेशन हैं। कसवे के एक वगल में पहाड़ी और दूसरे वगल में कई एक सुंदर कुंज और बाग देख पड़ते हैं।

मगियाना में कंधार के साथ वड़ी सौदागरी होती है और साबुन, चमड़े का जीन और तेल घी के कूपे, पीतल के ताला इत्यादि सुंदर बनते हैं। इसमें कचहरी की कोठियां, छोटा गिर्जा, जेलखाना, अस्पताल, एक सराय और एक छोटा जादोघर है।

**झांग जिला**—यह मुलतान विभाग का उत्तरीय जिला है, इसके उत्तर शाहपुर और गुजरांवाला जिले; पश्चिम डेराइस्माइलखां जिला और

दक्षिण-पूर्व मांटगोमरी, मुलतान और मुजफ्फरगढ़ जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल ५७०२ वर्ग मील है; इसके दक्षिण सीमापर चंदमील रावी नदी बहती है। जिले में जंगल और पहाड़ियां बहुत हैं। जंगलों में जंगली बिल्ली, गदहे और भेड़िया मिलते हैं।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ४३६४३० और सन् १८८१ में ३९५२९६ मनुष्य थे; अर्थात् ३२६९१० मुसलमान, ६४८९२ हिन्दू; ३४७७ सिक्ख, ११ कृस्तान, ४ जैन और २ पारसी। राजपूत, जाट, अरोरा इत्यादि जातियों में भी मुसलमान बहुत हैं। सन् १८९१ की जन-संख्या के समय इस जिले के झंग और मगियाना में २३२९० और चिनियट कसबे में १३०२१ मनुष्य थे।

इतिहास—झंग जिले में गुजरांवाला जिले की सीमा के समीप छोटी पहाड़ी पर महाभारतप्रसिद्ध राजा पांडु के शाले मद्रराज राजा शल्य की राजधानी 'साकला' की तवाहियां हैं; जिसके दो बगलों में बड़ा दलदल है; जो पहले एक गहरी झील था। साकला को सिकंदर के इतिहास को, लिखने वालों ने सांगला और बौद्धों ने सागल लिखा है। सिकंदर ने आक्रमण करके सांगला को ले लिया; उस समय सांगला शहर के चारोओर ईंट की दीवार और दो ओर झीलें थी। चीन के हुएत्संग ने सन् ६३० ई० में सागल अर्थात् साकला को देखा था; उस समय उसका शहर पनाह उजड़ा पुजड़ा था और पुराने शहर के मध्य में छोटा कसबा बसा था; जिसके चारो ओर पुराने शहर की निशानियां थी; तब तक वहां १०० बौद्ध साधुओं के मठ और २ बौद्ध स्तूप थे। राजा शल्य का बसाया हुआ पंजाब में स्यालकोट कसवा है।

महाभारत—(आदिपर्व, ११३ वां अध्याय) भीष्म चतुरंगिणी सेना सहित हस्तिनापुर से मद्र देश में मद्रेश्वर के नगर में गए; मद्रराज राजा शल्य ने उनसे अपरिमित धन लेकर उनको अपनी कन्या माद्री को देदिया। भीष्म ने उस कन्या को हस्तिनापुर में लाकर उससे राजा पांडु का ब्याह कर दिया। (१२४ वां अध्याय) माद्री के गर्भ से नकुल और सहदेव का जन्म

हुआ। (उद्योगपर्व, ८ वां अध्याय) नकुल के मामा राजा शल्य एक अक्षौहिणी सेना सहित पांडवों की ओर लड़ने के लिये हस्तिनापुर चले; परंतु राजा दुर्योधन ने मार्गहो में सेवा से प्रसन्न करके उनको अपनी ओर कर लिया।

(शल्यपर्व ६ वां अध्याय) अश्वत्थामा ने दुर्योधन से कहा कि हे राजन्! अब आप राजा शल्य को सेनापति बनाइए, यह बड़े कृतज्ञ हैं; क्योंकि अपने भांजों को छोड़ कर हमारी ओर लड़ते हैं; (७ वां अध्याय) तब दुर्योधन ने राजा शल्य को सेनापति बनाया (८ वां अध्याय) राजा शल्य (युद्ध आरंभ के १८ वें दिन) सर्वतोभद्र व्यूह बना कर संग्राम में गए। कौरव और पांडवों की सेना लड़ने लगी; (१७ वां अध्याय) अंत में (पांडवों की असंख्य सेना को मार कर) मद्रराज शल्य राजा युधिष्ठिर की शक्ति से मर कर भूमि पर गिर पड़े; उसके उपरांत राजा युधिष्ठिर ने शल्य के छोटे भाई को भी मार डाला।

पहिले झंग जिला सियालों के, जो मुसलमानी राजपूत हैं, आधीन था। सन् १४६२ ई० में मालखां नामक सियाल प्रधान ने झंग के पुराने कसबे को बसाया; जो वर्तमान कसबे के दक्षिण-पश्चिम बहुत काल तक मुसलमान राज्य की राजधानी था; पीछे वह कसबा नदी की बाढ़ से वह गया। झंग के वर्तमान कसबे को औरंगजेब के राज्य के समय झंग के वर्तमान नाथसाहब के पुरुषे लालनाथ ने बसाया। लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने अहमदखां को निकाल कर झंग के देश और किले को ले लिया। सन् १८४७ के पीछे यह जिला अंगरेजी अधिकार में आया।

## बन्नू।

शाहपुर से ६७ मील पश्चिम कुंडिया जंक्शन और कुंडिया से ९ मील उत्तर बन्नू जिले में मियांवाली का रेलवे स्टेशन है; जिससे लगभग ७० मील पश्चिमोत्तर, कोहाट कसबे से ८४ मील दक्षिण-पश्चिम और डेराइस्माइलखां से ८९ मील उत्तर कुछ पश्चिम भारतवर्ष के पश्चिमोत्तर की सीमा के निकट

कुर्रम नदी के १ मील दक्षिण पंजाब के डेराजात विभाग में जिले का सदर स्थान बन्नू कसबा है। खुसालगढ़ का रेलवे स्टेशन बन्नू कसबे से १२४ मील पूर्वोत्तर है।

सन् १८८१ की जन-संख्या के समय बन्नू कसबे ( जिसको दलीपनगर भी कहते हैं ) और इसकी फौजी छावनी में ८९६० मनुष्य थे; अर्थात् ४२८४ हिंदू, ४११० मुसलमान, ५०३ सिक्ख और ६३ दूसरे।

कसबे के चारो ओर मट्टी की दीवार बनी हुई है। कसबे में सुंदर बाजार, एक चौड़ी सड़क, तहसीली का मकान और पुलिस स्टेशन है। किले के पश्चिम सिविल कचहरियां, जेलखाना, सराय, अस्पताल और एक छोटा गिर्जा है। किले के आसपास फौजी छावनी बनी है। कसबे में बन्नू घाटी की देशी पैदावार की बड़ी सौदागरी होती है और साप्ताहिक बड़ा बाजार लगता है, जिसमें औसत लगभग २००० मनुष्य आते हैं।

**बन्नू जिला**—यह डेराजात विभाग में पश्चिमोत्तर का जिला है; इसके उत्तर कोहाट जिले में पटक पहाड़ियां; पूर्व रावलपिंडी, झेलम और शाहपुर जिले; पश्चिम और पश्चिमोत्तर पहाड़ियां, जिन पर स्वाधीन वजीरी रहते हैं और दक्षिण डेराइस्माइलखां जिला है। बन्नू जिले का क्षेत्रफल ३८६८ वर्गमील है। सिंध नदी जिले के मध्य होकर उत्तर से दक्षिण बहती है। जिले में थोड़ा सोरा और मट्टी का तेल होता है। सिंध नदी की बालू में से कुछ सोना निकाला जाता है। जंगल में बाघ, भालू, भेड़िया, बनबिलार, बनकुत्ता इत्यादि जंतु होते हैं और पहाड़ियों से निमक निकाला जाता है; इस जिले में १० छोटे फौजी स्टेशन हैं।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ३७१८९१ और सन् १८८१ में ३३२५७७ मनुष्य थे; अर्थात् ३०१००२ मुसलमान, ३०६९३ हिंदू, ७१० सिक्ख, ८२ क्रस्तान और ९० जैन। मुसलमानों में अफगान, जाट और राजपूत बहुत हैं। हिंदू और सिक्खों में तीन चौथाई अरोरा जाति के लोग और शेष एक चौथाई में ब्राह्मण, खत्री, जाट, राजपूत इत्यादि हैं। बन्नू जिले में दलीपनगर, इसाखेल, कालाबाग और लाकी कसबे हैं।

इतिहास—सन् १८३८ ई० में सिक्खों ने बन्नू घाटी को ले लिया। सिक्खप्रधान महाराज रणजीतसिंह ने बन्नू जिले के एक भाग पहिलही से रावलपिंडी के गक्करों से छीन लिया था। सन् १८४८ में रणजीतसिंह के पुत्र महाराज दलीपसिंह के नाम से बन्नू में दलीपगढ़ नामक किला और दलीपनगर बाजार बना। धीरे धीरे बाजार के चारो ओर कसबा बस गया। सन् १८४९ में यह जिला अंगरेजी अधिकार में आया।

## डेराइस्माइलखां।

कुंडियां जंक्शन से ५२ मील दक्षिण-पश्चिम दरियाखां रेलवे का जंक्शन है; जिससे पश्चिम एक छोटी लाइन सिंध नदी के बाएं किनारे पर गई है।

नदी के दहिने किनारे से ४ १/२ मील पश्चिम ( ३१ अंश ५० कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश ५१ कला पूर्व देशांतर में ) पंजाब में डेराजात विभाग और जिले का सदर स्थान डेराइस्माइलखां एक कसबा है; जिससे सड़क द्वारा १२० मील पूर्व-दक्षिण मुलतान शहर और लगभग २०० मील पूर्व लाहौर शहर है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय डेराइस्माइलखां के कसबे और इसकी फौजी छावनी में २६८८४ मनुष्य थे; अर्थात् १६३१४ पुरुष और १०५७१ स्त्रियां। इनमें १५१९५ मुसलमान, १०४८३ हिंदू, १०९३ सिक्ख, ११२ कृस्तान और १ पारसी थे।

पुराना कसबा जो वर्तमान कसबे से ४ मील पूर्व सिंध के किनारे पर था, सन् १८२३ ई० की बाढ़ से बह गया। वर्तमान मकान हाल के बने हुए हैं, कसबा मट्टी की दीवार से घेरा हुआ मैदान में खड़ा है, जिसमें ९ फाटक बने हैं। २ प्रधान बाजार हैं, जिनमें चौड़ी सड़क बनी है; हिंदू और मुसलमानों का महल्ला अलग अलग स्थित है। मुसलमानों में ४ नवाब हैं। भारी वर्षा होने पर हफ्तों तक मार्ग बंद रहते हैं, क्योंकि पानी का बहाव नहीं है। कसबे के दक्षिण कमीश्नर और डिपोटी कमीश्नर के आफिस, कचहरी के मकान, जेलखाना और अस्पताल है। कसबे में दूसरे दर्जे की सौदागरी

होती हैं। कसबे के पूर्व-दक्षिण ४ वर्गमील से अधिक क्षेत्रफल में फौजी छावनी फैली हुई है; जिसमें १ गिर्जा और १ तैरने का हम्माम बना है।

**जिला**—यह डेराजात विभाग के मध्य का जिला है; इसके उत्तर बन्नू जिला; दक्षिण डेरागाजीखां और मुजफ्फरगढ़ जिला और पश्चिम सुलेमान पर्वत है; जो अफगानिस्तान से इस जिले को अलग करता है। जिले का क्षेत्रफल ९२९६ वर्गमील और इसकी औसत लंबाई लगभग ११० वर्गमील और औसत चौड़ाई लगभग ८० वर्गमील है। जिले के मध्य होकर सिंध नदी बहती है। जिले में सज्जी बहुत तय्यार होती हैं और पहाड़ियों से मकान बनाने के लिये पत्थर निकाले जाते हैं।

जिले में सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय ४८६१८६ और सन् १८८१ में ४४१६४१ मनुष्य थे; अर्थात् ३८५२४४ मुसलमान, ५४४४६ हिंदू, १६११ सिक्ख, २५३ कृस्तान, १३ पारसी और २ जैन। हिंदुओं में अरोरा जाति के लोग बहुत हैं; इसजिले में डेराइस्माइलखां के अतिरिक्त कोई बड़ा कसबा नहीं है। कुचाली, लेह भक्कर, करोर, पहाड़पुर और टंक छोटे कसबे हैं।

**इतिहास**—सन् ई० की पंद्रहवीं सदी में मलिकशराब के आधीन बलूची लोग, इस जिले में आए। मलिकशराब के २ पुत्र थे; इस्माइलखां और फतहखां। पंद्रहवीं सदो के अंत में दोनों ने अपने अपने नाम से कसबे क़ायम किए, जो उनके नाम से वर्तमान हैं। सन् १८४८ में अंगरेजी अधिकार होने पर इस्माइलखां एक जिले का सदर स्थान हुआ। सन् १८६१ में इसमें से बन्नू जिला अलग हो गया और लेह जिले के दक्षिण का आधा भाग डेराइस्माइलखां में मिला दिया गया।

## डेरागाजीखां।

दरियाखां जंक्शन से ९८ मील (कुंडियां जंक्शन से १५० मील) दक्षिण, कुछ पश्चिम और सेरशाह जंक्शन से २६ मील पश्चिम महमूदकोट

रेलवे का जंक्शन है; जिससे ११ मील पश्चिम सिंध नदी के बांए किनारे पर गाजी घाट का रेलवे स्टेशन है। सिंधनदी के दहिने किनारे से २ मील पश्चिम पंजाब के डेराजात विभाग में जिले का सदर स्थान 'डेरागाजीखां' एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय कसबे और फौजी छावनी में २७८८६ मनुष्य थे; अर्थात् १६५१८ पुरुष और ११३६८ स्त्रियां। इनमें १५९६९ मुसलमान; ११९२४ हिंदू, ६८६ सिक्ख और १०७ क्रस्तान थे।

कसबे के पूर्व सीमा के निकट एक नहर और कसबे के समीप एक बांध है; जो बाढ़ से शहर को बचाने के लिये सन् १८५८ ई० में बाधा गया था। गाजी के बाग के स्थान पर कचहरी के मकान और एक पुराने किले की जगह पर तहसीली और पुलिस आफिस हैं; इनके अलावे डेरागाजीखां में टाउनहाल, स्कूल का मकान, अस्पताल, सुंदर बाजार, ४ हिंदूमंदिर, २ दरगाह और बहुतेरी बड़ी मसजिद हैं; जिनमें से गाजीखां, अबदुलजबार और चूटाखां की मसजिदें प्रधान हैं। गर्मी के दिनों में नहर के किनारे पर सप्ताहिक मेला होता है। कसबे से १ मील पश्चिम सिविल स्टेशन और फौजी छावनी हैं।

**डेरागाजीखां जिला**—यह डेराजात विभाग के दक्षिण का जिला है; इसके उत्तर डेराइस्माइलखां जिला; पश्चिम सुलेमान पहाड़ियां; दक्षिण सिंध प्रदेश में अपरसिंध फ्रंटियर जिला और पूर्व सिंध नदी है। जिले की लंबाई लगभग ११८ मील और औसत चौड़ाई २५ मील और इसका क्षेत्रफल ४५१७ वर्ग मील है। पश्चिम की पहाड़ियों से इस जिले में कई एक छोटी नदियां बहती हैं; परंतु तुरतही प्यासी हुई भूमी में सूखजाती हैं; अथवा खेतिहर लोग खेत पटाने के लिए बांध से रोक देते हैं। केवल काहा और संगार नदियां सर्बदा बहती हैं; जब गर्मी के दिनों में संपूर्ण छोटी नदियां सूख जाती हैं; तब जिले के पश्चिमी आधा भाग, जो पचाड़ कहलाता है, विरान होजाता है; इस के बलूची निवासी अपने झुंडों के सहित सरहद के पार पहाड़ियों में या सरहद के भीतर सिंध नदी के किनारों पर चले जाते हैं। पानी केवल २५०—३०० फीट गहरे कूएं मे मिल सकता है। फौजी

पड़ाव के लिए एक कूपखना गया है, जो ३८८ फीट गहरा है; जिले में दक्षिणी सीमा के निकट खान से फिटकिरी निकाली जाती है और निमक तथा सोरा बनते हैं। पहाड़ियों में मुलतानी मट्टी होती है; जिससे कपड़ा साफ किया जाता है। जंगलों में बाघ, हरिन, सूअर और वनगदहा होते हैं।

जिले में सन् १८९१ की जन-संख्या के समय ४११२९१ और सन् १८८१ में ३६३३४६ मनुष्य थे; अर्थात् ३१५२४० मुसलमान, ४६६१७ हिंदू, १३२६ सिक्ख, ८२ कृस्तान और १ दूसरे। मुसलमानों में लगभग आधा भाग जाट और आधे में बलूची, सैयद इत्यादि हैं। इस जिले में ५ म्यूनिसिपलटी कसबे हैं, जिनमें डेरागाजीखां बड़ा और नवसहरा के साथ दाजल, जामपुर, राजनपुर और मिठनकोट छोटे कसबे हैं।

**इतिहास**—हाजीखां बलूची के पुत्र गाजीखां मकरानी ने जो सन् १४७५ ई० में स्वाधीन बनगया था, डेरागाजीखां नामक कसबा बसाया; जो सन् १४९४ ई० में मरगया। सन् १८४९ की सिक्ख लड़ाई के पीछे अंगरेजों ने पंजाब के दूसरे जिलों के साथ सिक्खों से इसको लेलिया।

## मुजफ्फरगढ़।

महमूदकोट जंक्शन से १६ मील पूर्व कुछ दक्षिण और शेरशाह जंक्शन से १० मील पश्चिम मुजफ्फरगढ़ का रेलवे स्टेशन है। चनाब नदी के ६ मील दहिने अर्थात् पश्चिम पंजाब के मुलतान विभाग में जिले का सदर स्थान मुजफ्फरगढ़ एक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मुजफ्फरगढ़ में ७०२ मकान और २७२० मनुष्य थे; अर्थात् १५१२ हिंदू, १०६४ मुसलमान, ३६ सिक्ख, ७ जैन और २१ दूसरे।

मुजफ्फरगढ़ में नवाब मुजफ्फरखां का बनवाया हुआ किला १६० फीट व्यास का गोलाकार शकल में है, जिसकी ईंटे की दीवार जिसमें १६ पाए बने हैं, ३० फीट ऊंची है। दिवार के बाहर ६ फीट चौड़ा मट्टी का बांध बना

हुआ है। किले के बगलों में अनेक बस्तियां हैं। लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने सन् १८१८ ई० में इस किले को उड़ाकर नाकाम कर दिया।

कसबे से एक मील उत्तर जिले की सदर कचहरियां, सराय, गिर्जा, अस्पताल और बंगला है।

**मुजफ्फरगढ़ जिला**—यह मुलतान विभाग के पश्चिम का जिला है; इसके उत्तर डेराइस्माइलखां जिला और झांग जिला; पूर्व और दक्षिण-पूर्व चनाव नदी जो मुलतान जिले और बहावलपुर राज्य से इसको अलग करती है और पश्चिम सिंध नदी, जो डेरागाजीखां जिले से इसको जुदा करती है। जिले का क्षेत्रफल ३१३९ वर्ग मील है; इसके पश्चिमी सीमा पर ११० मील सिंध नदी और पूर्वी सीमा पर १०९ मील चनाव नदी बहती है। झेलम और रावी जिले में पहुंचने से पहलेही चनाव में मिल गई है और सतलज नदी, जिसमें व्यास नदी पहलेही मिली है। मुफ्फरगढ़ जिले से नीचे अर्थात् दक्षिण उच्छ के निकट चनाव में आमिली है, चनाव नदी दक्षिण-पश्चिम मिठनकोट के निकट जाकर सिंध नदी में गिरती है। सतलज के संगम से सिंध नदी के संगम तक चनाव नदी पंचनद करके विख्यात है।

महाभारत (वनपर्व ८२ वां अध्याय)—पंचनद तीर्थ में जाने से ५ यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है।

मौषल पर्व (७ वां अध्याय) अर्जुन ने (यदुवंशियों का नाश होने पर) द्वारिका वासियों के लिये हुए प्रभास से चल कर वन, पर्वत तथा नदियों के तट पर निवास करते हुए पंचनद के समीपवर्ती किसी स्थान में निवास किया; जहांसे आभीरों ने अर्जुन को परास्त करके वृष्णि और अंधकवंशीय स्त्रियों को छीन लिया।

चनाव नदी के मिल जाने पर थोड़ी दूरतक सिंध नदी सप्तनद कहलाती है; क्योंकि उसमें काबुल नदी पहलही मिली है और पंजाब को पांचो नदियां इकट्ठी होकर पंचनद के नाम से यहां इस में मिलगई हैं; इस प्रकार सात नदियों की धारा एकत्र होजाती है। जिले में नहर बहुत हैं और जंगली मुहकमें के आधीन लगभग ५७००० एकड़ क्षेत्रफल में जंगल है। जिले के दक्षिणी भाग में सिंध नदी के किनारों पर बाघ बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की जन-संख्या के समय मुजफ्फरगढ़ जिले में ३३८६०५ मनुष्य थे; अर्थात् २१२४७६ मुसलमान, ४३२१७ हिंदू, २७८८ सिक्ख, ३३ कृस्तान और ११ जैन। मुसलमानों में १०९३५२ जाट, ५८३५६ बालुची, १३६२५ जुलाहा और शेषमें इनसे कम संख्या के चुहारा, मोची, तरखान, राजपूत, कुंभार इत्यादि और हिन्दू तथा सिक्खों में अरोरा बहुत और लवाना, ओड, ब्राह्मण, खत्री इत्यादि थोड़े थोड़े थे। इस जिले में ९ छोटे म्यूनिसपल कसबे हैं; मुजफ्फरनगर, खांगढ़, खैरपुर, अलीपुर, शहरसुलतां, सीतापुर, जटोई, कोटआडू और दारादीनपन्नाह।

इतिहास—लगभग सन् १७१५ ई० में मुलतान के अफगान गवर्नर मुजफ्फरखां ने यहां अपने रहने की जगह बनाई, उसके नाम से कसबे का नाम मुजफ्फरगढ़ पड़ा। जब बहावलपुर के नवाब महाराज रणजीतसिंह को नियमित खिराज नहीं देसका; तब सन् १८३० में महाराज ने यह देश उससे लेलिया; सतलज नदी दोनों राज्यों की सीमा बनी। सन् १८४१ में अंगरेजी सरकार ने इसको सिक्खों से छीन लिया। मुजफ्फगढ़ कसबे से ११ मील दक्षिण खांगढ़ जिला का सदरस्थान बना; परंतु जब जिले की सिविल कचहरियां मुजफ्फरगढ़ में बनी; तब सन् १८६१ ई० में जिले का नाम खांगढ़ से मुजफ्फरगढ़ पड़ा।

---

# अठारहवां अध्याय।

## ( पंजाब में ) शेरशाह जंक्शन और बहावलपुर। (सिंध में) रोड़ी, सक्कर, खैरपुर, शिकारपुर, जेकबाबाद, लरखना, सेहवन, लकी, कोटरी, हैदराबाद, अमरकोट, ठट्ठा, करांची और हिंगुलाज।

# शेरशाहजंक्शन।

मुजफ्फरगढ़ से १० मील और महमूदकोट जंक्शन से २६ मील पूर्व शेरशाह जंक्शन है। मार्ग में चनाव नदी पर रेलवे पुल मिलता है; शेरशाह जंक्शन से 'नर्थवेस्टर्न रेलवे' तीन ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रतिमील २$\frac{1}{2}$ पाई लगता है।

(१) शेरशाह जंक्शन से दक्षिण-पश्चिम की ओर

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन

५२ बहावलपुर।
५९ समस्ता।
८१ अहमदपुर।
१३५ खांपुर।
१८७ रेनी।
२६७ रोड़ी।
२७० सक्कर।
२८५ रूक जंक्शन।
३०७ लरखना।
३३८ रायन।
४०१ सेहवन।
४०९ लकी।
४३७ कोटरी बंदर।
५११ हैदराबाद।
५४६ जंगशाही।
५८७ करांची छावनी।
५९१ करांची शहर।

रूकजंक्शन से उत्तर कुछ पश्चिम।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

२१ शिकारपुर।
३७ जेकबाबाद।
९३ सीबी जंक्शन।
१२१ केटा।
२४२ बोस्ता जंक्शन।
२८० किला अबदुल्लाह
३१० चमन।

(२) शेरशाह जंक्शन से पूर्वोत्तर।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

१२ मुलतान छावनी।
१३ मुलतान शहर।
११७ मांटगोमरी।
१९६ रायवंड जंक्शन।
२२० लाहौर।

रायवंड जंक्शन से दक्षिण-पूर्व १८ मील कसूर, ३५ मील फीरोज-

पुर, ५५ फरीदकोट, ३३६ मील सिरसा, १८७ मील हिसार, २०२ मील हांसी और २७६ मील खारी जंक्शन है।

(३) शेरशाह जंक्शन से पश्चिमोत्तर मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

२६ महमूदकोट जंक्शन, डेरा-गाजीखां के लिये।

११३ भक्कर।

१२४ दरियाखां जंक्शन; डेरा-इस्माइलखां के लिये।

१७६ कुंडियान जंक्शन।

कुंडियान जंक्शन से उत्तर १ मील मियांवाली और पूर्व ६७ मील शाहपुर, १०० मील पिंड-दादनखां और १६४ मील लालामूसा जंक्शन है।

## बहावलपुर।

शेरशाह जंक्शन से ५२ मील और मुलतान शहर से ६५ मील दक्षिण (लाहौर से २७२ मील दक्षिण-पश्चिम) बहावलपुर का रेलवे स्टेशन है। पंजाब में सतलज नदी के २ मील बांए अर्थात् दक्षिण (२१ अंश २४ कला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश ४७ कला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से ३७५ फीट ऊपर देशीराज्य की राजधानी बहावलपुर है, जिससे ५ मील दूर सतलजनदी पर ४२२४ फीट लंबा और पानी से २८ फीट ऊंचा १६ खाना का एंप्रेसब्रिज नामक लोहा का रेलवे पुल है; जो सन् १८७८ में खुला था।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय बहावलपुर में १८७१६ मनुष्य थे; अर्थात् ११११०९ मुसलमान, ७४५० हिन्दू, १४७ सिक्ख और १० कृस्तान।

बहावलपुर कसबा ४ मील लंबी मट्टी की दीवार से घेरा हुआ है; कसबे के पूर्व नवाब का विशाल महल बनाहुआ है, जिसके प्रत्येक कोने पर एक बुर्ज बना है। महल के मध्य का बड़ा कमरा ६० फीट लंबा और ५६ फीट ऊंचा है, जिसकी देवढ़ी १२० फीट ऊंची बनी है। आगे फब्बारा लगा है, कसबे से

पूर्व जेलखाना है, बहावलपुर में रेशमी कपड़े अच्छे बुने जाते हैं और बच्चे देने के लिये उत्तम घोड़ियां पाली जाती हैं।

**बहावलपुर का राज्य**—यह राज्य पंजाब गवर्नमेंट के आधीन पंजाब और राजपूताने के बीच में सिंध और सतलज के दक्षिण-पूर्व है। इसके पूर्वोत्तर पंजाब में सिरसा जिला, पूर्व-दक्षिण राजपूताने के बीकानेर और जैसलमेर के राज्य, दक्षिण पश्चिम सिन्ध और पश्चिमोत्तर सिंध और सतलज नदी है। राज्य का क्षेत्रफल पंजाब के संपूर्ण देशी राज्यों के क्षेत्रफल के लगभग आधा अर्थात् १७२८५ वर्ग मील है; जिसमें से दो तिहाई भूमि ऊसर देश है; ८ मील से १४ मील तक चौड़ी नदी बरार भूमि नदी के साथ दूर तक लंबी है, जिस पर खेती होती है। राज्य के मध्य में लगभग २० मील चौड़ी एक ऊंची भूमि का कमर बंद है और पूर्व में बालूदार बिरान आरंभ होकर राजपूताने में जाकर फैला है। सन् १८८१—१८८२ ई० में बहावलपुर राज्य की मालगुजारी १६ लाख रुपया अनुमान किया गया था। खेती की भूमि का अधिक भाग नहर से पटाया जाता है। सतलज के १५ मील दूर उसके समानांतर में ११३ मील लंबी, जिसकी २ बड़ी शाखा हैं, एक नहर खोदी गई है। नहर और दूसरे कामों से राज्य की मालगुजारी दूनी होगई है। जिले के जंगलों में जलावन की लकड़ी बहुत और कीमती लकड़ी कमहै। राज्य में रुई, रेशम के असबाब और नील बहुत तय्यार होते हैं। राज्य के दक्षिण भाग में सिंधी और उत्तर में पंजाबी भाषा है और दोनों मिली हुई साधारण भाषा मुलतानी कहलाती है।

राज्य में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ६४८९०० और सन् १८८१ में ५७३४१४ मनुष्य थे; अर्थात् ४८०२७४ मुसलमान, ९१२७२ हिंदू, १६७८ सिक्ख, २५४ जैन, १३ क्रस्तान और ३ पारसी। इस राज्य में बहावलपुर के अतिरिक्त अहमदपुर, खांपुर, उच्छ, गढ़ी मुखियारखां, खैरपुर और दूसरा अहमदपुर छोटे कसबे हैं; इनमें से उच्छ बहुत पुराना है।

**इतिहास**—बहावलखां के नवाब के पुरुषे सिंध प्रदेश से आए और काबुल से शाहशुजा के निकाले जाने पर स्वतंत्र बन गए। महाराज रणजीत-

सिंह के राज्य की बढ़ती के समय नवाब वहावलखां ने अपनी रक्षा के लिये एक सेना के वास्ते अंगरेजी गवर्नमेंट के पास कई एक दरखास्त दिए, परंतु कोई स्वीकार नहीं हुआ। सन् १८३३ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंट के साथ वहावलपुर की पहली संधि हुई, जिससे उसकी स्वाधीनता रह गई और दूसरी संधि सन् १८३८ में हुई, जो अवतक वर्तमान है। नवाब वहावलखां ने काबुल की लड़ाई में और सन् १८४७—१८४८ में मुलतान की चढ़ाई में अंगरेजी सरकार की सहायता की, जिन कामों की कृतज्ञता में सरकार ने उसको २ जिले देदिये और जिंदगी तक १ लाख रुपया वार्षिक पिंशिन देने की आज्ञा दी। वहावलखां की मृत्यु होने पर उसकी आज्ञानुसार उसका तीसरा पुत्र उत्तराधिकारी हुआ था; परंतु वहावलखां के बड़े पुत्र ने उसको गद्दी से उतार कर आप नवाब बने। सन् १८६६ ई० में वह अचानक मर गए; तब उनके ४ वर्ष का बच्चा पुत्र वहावलपुर का वर्तमान नवाब सर सादिक़ महम्मदखां वहादुर जी. सी. एस. आई तख्त पर बैठे, जिनको सन् १८७९ में राज कार्य का पूरा अधिकार मिलगया। वहावलपुर के नवाब को अंगरेजी गवर्नमेंट से १७ तोपों की सलामी मिलती है; इनको खिराज नहीं देना पड़ता। फौजी ताकत १२ तोप. ११ गोलंदाज, ३०० सवार और २४९३ पैदल और पुलिस हैं। पंजाब में पटियाले के राजा को छोड़ कर वहावलपुर के नवाब संपूर्ण देशी राजाओं से बड़े हैं।

# रोड़ी।

वहावलपुर से २१५ मील (शेरशाह जंक्शन से २६७ मील) दक्षिण-पश्चिम रोड़ी का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के सिंध प्रदेश के शिकारपुर जिले में सिंध नदी के बाएं अर्थात् पूर्व रोड़ी एक कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय रोड़ी में १०२२४ मनुष्य थे; अर्थात् ४८८२ मुसलमान, ३०९७ हिंदू, २१७५ पहाड़ी और जंगली जातियां, ६९ कृस्तान और १ पारसी।

रोड़ी कसवा दूर से सुंदर देख पड़ता है, इसमें चौमहले पंचमहले वहुतेरे मकान वने हुए हैं। वहुतेरे स्थानों में तंग गलियां हैं। मुख्तियारकार की कचहरी, म्यूनिसपल कमीश्नरों का आफिस, अस्पताल और स्कूल यहां के प्रधान मकान हैं। रोड़ी में मुसलमानों की वहुतेरी मसजिद और दरगाह है, जिनमें अकवर के सेनापति फतहखां की सन् १५७२ ई० की वनवाई हुई जामामसजिद, जो लाल ईंटों से वनी हुई ३ गुंवजवाली है; मीर मूसनशाह की सन् १५९३ की वनवाई हुई ईदगाह मसजिद और २५ फीट लम्वी और इतनीही चौड़ी वारमुवारक नामक इमारत, जिसको लगभग सन् १५४५ ई० में मीरमहम्मद ने वनवाया था, हैं। वारमुवारक में एक सोने के डिव्वे में महम्मदसाहव का एक वाल रक्खा हुआ है।

रोड़ी के सामने सिंध नदी के टापू में, जो ख्वाजाखिज़ का टापू कहलाता है; सन् १५२ ई० का वना हुआ एक मुसलमान फकीर का दरगाह है; जिसको हिंदू और मुसलमान दोनों मानते हैं। खिज़-टापू से थोड़ा दक्षिण इससे वड़ा भक्कर टापू है।

रोड़ी में गल्ले, तेल, घी, निमक, चूना और मेवे की सौदागरी होती है और तसर के रेशम, सोना और चांदी के गहने वनते हैं। एक वड़ी सड़क मुलतान से रोड़ी हो कर हैदरावाद गई है।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि सन् १२९७ ई० में सैयद रुकनुद्दीनशाह ने रोड़ी को वसाया। सन् १८४२ ई० में अंगरेजी सरकार ने इसको ले लिया।

## सक्कर।

रोड़ी के रेलवे स्टेशन से ३ मील पश्चिमोत्तर सिंध नदी के दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर सक्कर का रेलवे स्टेशन है। रोड़ी और सक्कर के वीच में लगभग ८०० गज लंवा, ३०० गज चौड़ा और लगभग २५ फीट ऊंचा भक्कर नामक एक टापू है, जिसमें एक किला खड़ा है; जिसका एक फाटक पूर्व

रोड़ी की ओर और दूसरा पश्चिम सक्कर की ओर है। रोड़ी से भक्कर टापू तक सिंध नदी पर लैंसडाउन पुल बना है। पुल की सड़क टापू को लांघ दूसरे पुल होकर सक्कर को गई है, जिस पर मध्य में रेलवे लाइन और दोनों ओर ४$\frac{१}{२}$ फीट चौड़े रास्ते हैं, जिन पर घोड़े और आदमी चलते हैं।

सिंध प्रदेश में शिकारपुर जिले और सक्कर सब डिवीजन का सदर स्थान सक्कर एक कसबा है, जिससे सड़क से २४ मील और रेलवे से रुक होकर २८ मील पश्चिमोत्तर शिकारपुर है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय सक्कर में २९३०२ मनुष्य थे; अर्थात् १८३१५ पुरुष और १०९८७ स्त्रियां। इनमें १६४१० हिंदू, ११८६६ मुसलमान, ४२३ कृस्तान, १४८ एनिमिष्टिक, ५४ पारसी, १४ यहूदी और ३८७ दूसरे थे।

सक्कर में २ पुराने मकबरे हैं। पहला लगभग १६०७ ई० का बना हुआ महम्मदमासूम का और दूसरा सन् १७५८ का बना हुआ शेखखैरुद्दीन का। इनके अलावे यहां मामूली पबलिक आफिसें, मातहत जेल, अस्पताल, बंगला और धर्मशाला हैं। सक्कर में बड़ी सौदागरी होती है; यहां से रेशम, देशी कपड़ा, रूई, ऊन, अफीम, सोरा, चीनी, रंग, पीतल का बर्तन, धातु, सराब और देशी पैदावार की चीजें दूसरे कसबों में जाती हैं। नये सक्कर से १ मील दूर पुराने सक्कर के स्थान पर बहुतेरे मकबरे और मसजिदें हीन दशा में खड़ी हैं।

**इतिहास**—सन् १८०१ और १८२४ ई० के बीच में खैरपुर के अमीरों को सक्कर मिला। सन् १८३९ में, जब भक्कर का किला अंगरेजों को मिला, तब फौजों के रहने से नया सक्कर बस गया। सन् १८४२ में करांची, ठट्टा और रोड़ी के साथ पुराना सक्कर अंगरेजी सरकार के अधिकार में आ गया। सन् १८४५ में यहां से सरकारी फौज उठा ली गई।

## खैरपुर।

रोड़ी कसबे से १७ मील दक्षिण-पश्चिम सिंध नदी से १५ मील पूर्व

सिंध प्रदेश में देशी राज्य की राजधानी खैरपुर एक छोटा कसवा है; जिसमें सन् १८७५ में ७२७५ मनुष्य थे। प्रधान निवासी हिंदू और मुसलमान हैं, जिनमें मुसलमानों की संख्या हिंदुओं से अधिक है।

कसवे में कई एक अच्छे मकानों के अतिरिक्त सब मट्टी की झोपड़ियां हैं। बाजार के बीच में राजमहल और कसवे के बाहर मुसलमानी फकीरों के २ मकबरे स्थित हैं। खैरपुर से गल्ला, नील और तेल के बीज दूसरे कसवों में जाते हैं। रेशम, रूई, ऊन और धातु इत्यादि चीजें दूसरी जगहों से खैरपुर में आती हैं। सोने चांदी के भूषण, तलवार इत्यादि यहां बनते हैं। खैरपुर में गर्मी अधिक पड़ती है और इसके आस पास दलदल भूमि है; इसलिये यह अस्वास्थ्य कर जगह हुआ है।

**खैरपुर राज्य**—यह अपरसिंध में देशी राज्य है, इसके उत्तर शिकारपुर जिला, पूर्व जैशलमेर का राज्य, दक्षिण हैदराबाद जिला और पश्चिम सिंध नदी है। राज्य का क्षेत्रफल ६१०९ वर्गमील है। इसकी सबसे अधिक लंबाई पूर्वसे पश्चिम तक ११० मील और सबसे अधिक चौड़ाई ७० मील है। राज्य से ७ लाख रुपए से कुछ अधिक मालगुजारी आती है।

सिंध नदी के आस पास के खेत के मैदान को छोड़ कर के अन्यत्र की भूमि नहर, नाला तथा नदी से पटाई जाती है, राज्य के संपूर्ण क्षेत्रफल के $\frac{3}{4}$ भाग में पहाड़ियों की पंक्तियां हैं, जिन पर खेती नहीं होती। देश साधारण प्रकार से अत्यंत सूखा ऊसर और उजाड़ है। जंगलों में बाघ, भेड़िया, सूअर इत्यादि मिलते हैं। घरऊ पशुओं में ऊंट और खच्चर भी बहुत होते हैं। ४ मास आवहवा बहुत सुन्दर रहती है, परंतु शेष ८ महिनों में बड़ी गर्मी पड़ती है। वर्षा काल में वर्षा कम होती है। राज्य की प्रधान फसिल नील और कपास है। यहां की साधारण भाषा सिंधी पारसी और बलुची है। खैरपुर के प्रधान को पैदावार का तीसरा भाग प्रजा से मिलता है।

सन् १८८१ की जन-संख्या के समय खैरपुर राज्य के ६१०९ वर्ग मील में १२९१५३ (प्रति वर्ग मील में २१) मनुष्य थे; अर्थात् १०२४२६ मुसलमान

और २६७२७ हिंदू। हिंदुओं में २५४१५ लोहाना, २१३ ब्राह्मण और केवल ७ राजपूत थे।

इतिहास—खैरपुर के प्रधान, जो तालपुर कहलाते हैं, वलुची मुसलमान हैं। सन् १७८३ में सिंध के कल्होरा प्रधान की दशा हीन होने के समय मीरफतहअलीखां तालपुर, सिंध का मालिक बन गया; पीछे उसके भतीजे मीरशहराव ने, जिसके पुत्र मीररुस्तम और अलीमुराद थे; खैरपुर को कायम किया और राज्य को बढ़ाया। सन् १७८७ के पहले खैरपुर की जगह पर वोयरा नामक गांव था।

अंगरेजों की काबुल पर चढ़ाई के समय खैरपुर के सिवाय सिंध के कोई सरदार ने उनकी सहायता न की। अंगरेजी सरकार ने मियानी की लड़ाई के पीछे सिंध देश में केवल एक खैरपुर-राज्य को जैसे के तैसे रहने दिया। खैरपुर के वर्तमान प्रधान मीरसर अलीमुरादखां जी. सी. आई., जिनका जन्म सन् १८१५ ई० में हुआ था, हैं; जिनको अंगरेजी गवर्नमेंट से १५ तोपों की सलामी मिलती है। यह मीर शहरावखां तालपुर के छोटे पुत्र हैं।

# शिकारपुर।

रूक जंक्शन से ११ मील उत्तर (हैदराबाद से २३७ मील उत्तर कुछ पूर्व) शिकारपुर का रेलवे स्टेशन है। वंबई हाते के सिंध प्रदेश में (२७ अंश, ५७ कला, १४ विकला उत्तर अक्षांश और ६८ अंश, ४० कला, २६ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का प्रधान कसवा शिकारपुर है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय शिकारपुर कसवे में ४२००४ मनुष्य थे; अर्थात् २११५४ पुरुष और २०८५० स्त्रियां। इनमें २५८४६ हिन्दू, १६११३ मुसलमान, २३ क्रस्तान, १३ यहूदी. ६ एनिमिष्टिक और ३ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ९६ वां, वंबई हाते में १० वां और सिंध प्रदेश में तीसरा शहर है।

शिकारपुर बड़ा तिजराती क़सबा है; यहां से तिजराती सड़क जैकबाबाद, वलुचीस्तान, कंधार, वोलनघाटी इत्यादि जगहों को गई है; कसवा नीची

जमीन पर बसा है। सिंध नहर की एक शाखा कसवे के दक्षिण और दूसरी कसवे के उत्तर है। आस पास की भूमि उपजाऊ है; जिसमें गल्ले और फलों की बड़ी फसिल होती हैं। फलों में आम, निंबू, खजूर और तूंत बहुत उत्तम होते हैं, यहां गर्मी की ऋतुओं में बड़ी गर्मी पड़ती है; इस लिये संपूर्ण बाजार छाया हुआ है। पुराना बाजार, जो सिंध प्रदेश के सब बाजारों से उत्तम है, बढ़ाया गया है। कसवे के पूर्व २ बड़े तालाब और कसवे में एक हाईस्कूल है। जेलखाने में पोस्तीन, कुर्सियां, सतरंजी, खीमे, जूते इत्यादि असवाव बनाए जाते हैं।

**शिकारपुर जिला**—इसके उत्तर बलुचीस्तान देश अपर सिंध फ्रंटियर जिला और सिंध नदी; पूर्व बहावलपुर और जैशलमेर के राज्य; दक्षिण खैरपुर राज्य और करांची जिला और पश्चिम खिरथर पहाड़ियां हैं। जिले का क्षेत्रफल १०००१ वर्ग मील है; जिसमें रोड़ी, सक्कर, लरकना और मेहरा ४ सब डिवीजन हैं। जिले में नीची पहाड़ियां और लगभग २०० वर्गमील में जंगल है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय शिकारपुर जिले में ८५२१८६ मनुष्य थे; अर्थात् ६८४२७५ मुसलमान, १३३४१ हिंदू, ६८६५५ सिक्ख, ५८१२ आदि निवासी, ७३६ कृस्तान, ६४ पारसी, १ यहूदी, ८ ब्राह्मो और ६ बौद्ध। हिंदुओं में ७७४११ लोहानो, ३३३६ ब्राह्मण, २७१ राजपूत थे। शिकारपुर जिले में शिकारपुर (जन-संख्या सन् १८११ में ४२००४) सकर (२१३०२); लरकना (१२०१९) रोड़ी, कंबर और गढ़ीअसीन कसबे हैं।

**इतिहास**—सन् १८२४ ई० में शिकारपुर सिंध के अमीरों के आधीन हुआ और सन् १८४३ में अंगरेजी अधिकार में आया। शिकारपुर, जेकबाबाद और बलोचीस्तान देश के सिवी इत्यादि में भारतवर्ष के सब जगहों से अधिक गरमी पड़ती है। शिकारपुर के निकट सालाना औसत वर्षा लगभग ५ इंच होती है।

## जेकबाबाद।

सिकारपुर से २६ मील और रुक जंक्शन से ३७ मील उत्तर सिंध पेसिन

और क्वेटा रेलवे पर जेकबाबाद का रेलवे स्टेशन है। सिंध प्रदेश के अपर सिंध फ्रंटियर जिले का सदर स्थान जेकबाबाद एक छोटा कसबा है।

सन् १८११ की जन-संख्या के समय जेकबाबाद में १२३१६ मनुष्य थे; अर्थात् ६७८६ मुसलमान, ५२३१ हिन्दू, १२६ कृस्तान, ५१ एनिमिष्टिक, ७ पारसी, ४ यहूदी और १८३ अन्य।

जेकबाबाद में जिले की कचहरियां, जेलखाना, बड़ा अस्पताल, जनरल जेकब की कबर और कई एक स्कूल हैं और सैनिक घोड़सवार और पैदल के लिये फौजी लाइन दो मील फैली है। जेकबाबाद से २४ मील की उत्तम सड़क शिकारपुर को गई है। गर्मी की ऋतुओं में यहां गर्मी बहुत पड़ती है; इस लिये सड़कों पर दूब जमाई जाती है।

**अपरसिंध फ्रंटियर जिला**—यह सिंध प्रदेश का उत्तरी जिला है; इसके उत्तर और पश्चिम पंजाब के डेराजात विभाग के जिले और खिलातकेखां का राज्य; दक्षिण शिकारपुर जिला और पूर्व सिन्ध नदी है। जिले का क्षेत्रफल २१३३ वर्ग मील है; जिसकी सबसे अधिक लंबाई पूर्वसे पश्चिम को ११४ मील और अधिक से अधिक चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को २० मील है। जिले का सदर स्थान जेकबाबाद है। भूमि पटाने के लिये सिंध नदी से अनेक नहर निकाली गई हैं। जिले के जंगलों में सूअर बहुत हैं; बाघ और भेड़िए कभी कभी देख पड़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १२४१८१ मनुष्य थे; अर्थात् १०९१८३ मुसलमान, १८१४ हिंदू, ३६६४ सिक्ख, ११११८ आदि निवासी, २३० कृस्तान, १ पारसी और ३ यहूदी। हिंदुओं में ६६५५ लोहाना, १३८ ब्राह्मण, ४३ राजपूत थे। जिले में जेकबाबाद के अतिरिक्त कोई दूसरा कसबा नहीं है।

**इतिहास**—प्रसिद्ध सरहदीअफसर और सिंध के घोड़सवारों का कमांडर जनरल जेकब ने खांगढ़ गांव के स्थान पर अपने नाम से जेकबाबाद बसाया और यहां रेजीडेंसी बनाया; जिसमें अब लाइब्रेरी और दूकान हैं। सन् १८५८ ई० में जनरल जेकब इसी जगह मरा; जिसकी कबर यहां स्थित है।

केटा—जेकबाबाद से ९६ मील (रूक जंक्शन से १३३ मील) उत्तर बलुचीस्तान के अंगरेजी राज्य में सीबी जंक्शन है। रेलवे जेकबाबाद से बलुचोस्तान के देशी राज्य लांघ कर, अंगरेजी राज्य की सीमा के निकट, नारी नदी की घाटी में, बोलन पास के दरवाजे के निकट, सीबी को गई है; जिसको सन् १८३९—१८४२ ई० में अंगरेजों ने शाहशुजा के नाम से दखल किया और सन् १८८१ में एक संधि के अनुसार ले लिया। सीबी जंक्शन से ८८ मील पश्चिमोत्तर लूप लाइन पर बलुचीस्तान के अंगरेजी राज्य का प्रधान कसबा और कंपू का सदर मुकाम केटा है; जिसमें सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय १६१६७ मनुष्य थे। केटा से १०३ मील दक्षिण खिलात है।

# लरखना।

रूक जंक्शन से २२ मील पश्चिम (शेरशाह जंक्शन से ३०७ मील) कराची की लाइन पर लरखना का रेलवे स्टेशन है। सिंध प्रदेश के शिकारपुर जिले में गार नहर के दक्षिण किनारे पर सब डिवीजन का प्रधान कसबा लरखना है।

सन् १८११ की जन-संख्या के समय लरखना में १२०१९ मनुष्य थे; अर्थात् ६४२१ हिंदू, ५५८० मुसलमान, १ कृस्तान, ८ पारसी और १ एनिमिष्टिक।

लरखना में सब डिवीजन की कचहरियां, अस्पताल, बंगलें, शाहबहरा का मकबरा और ३ बाजार हैं; यहां का किला जेलखाने और अस्पताल के काम में आता है। लरखना सिंध के गल्ले के प्रसिद्ध बाजारों में से एक है; यहां कपड़ा, धातु और बनाया हुआ चमड़ा का ब्योपार बहुत होता है।

# सेहवन।

लरखना से १४ मील (रूक जंक्शन से ११६ मील) दक्षिण कुछ पश्चिम सेहवन का रेलवे स्टेशन है। सिंध नदी से ३ मील दूर सिंध प्रदेश के कराची

जिले का सब डिवीजन सेहवन एक छोटा कसबा है; जिसमें सन् १८८१ को जन-संख्या के समय ४५२४ मनुष्य थे। कसबे के हिंदू सौदागरी करते हैं और मुसलमान मछली मारते हैं।

सेहवन में दो मकबरे, अस्पताल, धर्मशाला और दिपोटी कलक्टर का बंगला है। लगभग ६० फीट ऊंचे टीले पर टूटी हुई दीवार से घेरा हुआ १५०० फीट लंबा और ८०० फीट चौड़ा बड़े सिकंदर का बनवाया हुआ पुराना किला हीन दशा में स्थित है; जिसमें अब डाक बंगला बना है। लालशाहबाज का मकबरा, जो सन् १३५६ ई० में बना था; यहां बहुत प्रसिद्ध है। यात्रियों की पूजा से बहुतेरे फकीरों का गुजारा होता है। दूसरा बड़ा मकबरा, जो सन् १६३१ ई० में तैयार हुआ था, मिर्जाजानी फकीर का है; जिसके फाटक और कठघरे पर मीर-करमअलीखां नामक मुसलमान ने चांदी जड़वा दी है।

## लकी।

सेहवन से ८ मील (शेरशाह जंक्शन से ४०९ मील) दक्षिण-पूर्व लकी का रेलवे स्टेशन है। करांची जिले के सेहवन सब डिवीजन में सिंध नदी के पश्चिम किनारे के निकट लकी एक बस्ती है; जिसमें धर्मशाला, पोष्टआफिस और पुलिस-स्टेशन बने हुए हैं। लकी के निकट पहाड़ियों से कई एक गरम झरने से पानी गिरता है; जो धारातीर्थ कर के प्रसिद्ध है। पहाड़ियों में सीसा, सुर्मा और तांबा मिलता है।

## कोटरी।

लकी से ८८ मील दक्षिण कुछ पूर्व और हैदराबाद से १४ मील पश्चिम कोटरी का रेलवे स्टेशन है। सिंध प्रदेश के करांची जिले में सिंध नदी के दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर कोटरी तालुक का सदर स्थान कोटरी एक छोटा कसबा है, जहां रेलवे के दो स्टेशन बने हुए हैं; एक कसबे के पास और दूसरा बंदरगाह के निकट।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय खांपुर और मियानीमुलतानी के साथ कोटरी में ८३२२ मनुष्य थे; अर्थात् ५८१३ मुसलमान, २१६० हिंदू; ४०७ कृस्तान, १७ पारसी और ५२५ दूसरे।

कोटरी में मामूली सरकारी इमारत हैं। देशी बस्ती से उत्तर और पश्चिम सिविल स्टेशन और यूरोपियन महल्ला है; नदी के किनारे पर स्टीमर और नावों की भीड़ रहती है।

## हैदराबाद।

सिंध नदी के दहिने किनारे पर कोटरी का रेलवे स्टेशन और उसके सामने पूर्व अर्थात् बाएं किनारे पर जींदू बंदर है। दोनों के बीच सिंध नदी में आगबोट चलता है। जीदूबंदर से ३$\frac{१}{२}$ मील पूर्व हैदराबाद तक सायदार पक्की सड़क बनी हुई है। सिंध प्रदेश में सिंध नदी से ३$\frac{१}{२}$ मील पूर्व गंजो-रेंज के उत्तरीय पहाड़ियों पर (२५ अंश, २३ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ६८ अंश, २४ कला ५१ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान हैदराबाद एक छोटा शहर है; जो बादशाही समय में सिंध प्रदेश का सदर स्थान था।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय हैदराबाद शहर और इसकी छावनी में ५८०४८ मनुष्य थे; अर्थात् ३०६३२ पुरुष और २७४१६ स्त्रियां; इनमें ३३२३० हिंदू, २३६८४ मुसलमान, ७३४ कृस्तान, ३२७ एनिमिष्टिक, ३८ पारसी, ३१ यहूदी और ४ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत-वर्ष में ६३ वां, बंबई हाते में ६ वां और सिंध प्रदेश में दूसरा शहर है।

हैदराबाद के प्रधान इमारतों में जेलखाना, जिसमें ६०० कैदी रहते हैं, एंजिनियरी मकान, कचहरियों के मकान, अस्पताल, पागलखाना, बंगला और कई एक स्कूल हैं। शहर के पश्चिमोत्तर छावनी में बारक अर्थात् सैनिक गृह, अस्पताल, बाजार इत्यादि हैं। जींदू बंदर रोड से थोड़ी दूर पर सन् १८६० ई० का बना हुआ एक गिर्जा है; जिसके बनाने में ४५०००

रुपया खर्च पड़ा था; इसमें ६०० आदमी बैठ सकते हैं। पहाड़ी के उत्तरीय भाग पर तालपुर मीरों के और नए हैदराबाद को बसाने वाले गुलामशाह कल्होरा के पुराने मकबरे हैं; जिनमें गुलामशाह का मकबरा दूसरों से अच्छा है। पानी सिंध नदी से नलों द्वारा शहर में आता है।

हैदराबाद का किला ३६ एकड़ भूमि पर नादुरुस्त शकल का है, इसकी दीवार १५ फीट से ३० फीट तक ऊंची है; जिसके भीतरी की ओर मट्टी दी गई है और कोनों के समीप पुश्ते बने हुए हैं। किले और शहर के मध्य में खाई है, जिस पर एक पुल बना है, किले के भीतर की बस्ती अब नहीं है; इसमें मीर नासिरखां का एक महल अब तक स्थित है; जिसमें हैदराबाद में आने पर सिंध के कमीश्नर और दूसरे बड़े अफसर लोग रहते हैं। क़िले के फाटक के ऊपर एक कमरा है; जिससे प्रधान बाजार देख पड़ता है। शहर से ६ मील पश्चिमोत्तर मियानी एक छोटा कसबा है।

कराचोबी के काम के लिये हैदराबाद प्रसिद्ध है; यहां रेशम, चांदीसोने का काम, मट्टी के बर्तन सुंदर बनते हैं और तलवार और बंदूक भी तय्यार होते हैं। जेलखाने में कालीन और कई एक प्रकार के कपड़े बनाए जाते हैं।

हैदराबाद की आबहवा बहुत गर्म और अस्वास्थ्यकर है, परंतु गर्मी की ऋतुओं में रात में नदी से ठंढी हवा आती है; यहां सालाना औसत वर्षा ६ इंच होती है।

**हैदराबाद जिला**—जिले का क्षेत्रफल १०३० वर्गमील है और इसकी लंबाई २१६ मील और चौड़ाई लगभग ४८ मील है। इसके उत्तर खैरपुर का राज्य; पूर्व 'थर और परकर' जिला; दक्षिण कोरी नदी इत्यादि और पश्चिम सिंध नदी और करांची जिला है। सिंध नदी के आस पास की भूमि में जंगल लगा है और खेती होती है। जिले का बड़ा हिस्सा मैदान है; इस में कई एक नहर बनी हुई हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ११०५ बस्तियों में ७५४६२४ मनुष्य थे; अर्थात् ५१४४८५ मुसलमान, ८११९४ हिंदू, ४२१४० सिक्ख, २७४६१ आदिनिवासी, ४२८ क्रूस्तान, १४४ जैन, ३१ यहूदी और २१ पारसी।

हिन्दुओं में ७२७१७ लोहाना, २७३१ ब्राह्मण, ५७१ राजपूत थे। जिले में हैदरावाद बड़ा और मतारी ( जन-संख्या सन् १८८१ में ५५४ ) छोटा कसवा है और छोटे बड़े ३३ मेले होते हैं; जो ३ दिन से १५ दिनों तक रहते हैं ।

**इतिहास**—हैदरावाद के वर्तमान किले की जगह पर नेरनकोट कसवा था; जिसको सन् ई० की ८ वीं शताब्दी में महम्मदकासिमसकीफी ने जीता। सन् १७६८ ई० में गुलामशाह कल्होरा ने हैदरावाद के वर्तमान नए शहर को वसा कर अपनी राजधानी वनाई। सन् १८४३ में अंगरेजों ने मियानी की लड़ाई में सिंध के अमीरों को परास्त कर के हैदरावाद और सिंध के दूसरे जिलों को अपने अधिकार में कर लिया; तब तक हैदरावाद सिंध देश की राजधानी था; वाद करांची राजधानी हुई।

## अमरकोट ।

हैदरावाद से लगभग १० मील पूर्व अमरकोट तक तार की सड़क है। सिंध प्रदेश में 'थर और परखर' जिले में प्रधान कसवा और जिले का सदर स्थान अमरकोट एक छोटा कसवा है; जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २८२८ मनुष्य थे।

कसवे के समीप एक नहर है। अमरकोट का किला लगभग ५०० फीट लंवा और इतनाही चौड़ा है; जिसके भीतर अव सरकारी इमारतें स्थित हैं। कसवे में पुलिस स्टेशन और कई एक धनी सौदागरों के मकान हैं।

**इतिहास**—ऐसा प्रसिद्ध है कि सुम्रा जाति के प्रधान अमर ने अमरकोट को वसाया। सन् १५४२ के अक्तूवर में, जव वावर अफगानिस्तान को भागा जाता था; तव अमरकोट के किलें में उसके पुत्र सुविख्यात अकवर का जन्म हुआ था। सन् १८१३ ई० में सिंध के मीरों ने अमरकोट को जोधपुर के राजा से छीन लिया था; जिनसे सन् १८४३ में अंगरेजी सरकार ने ले लिया।

**थर और परखर जिला**—जिले का क्षेत्रफल १२७२९ वर्गमील है; इसके उत्तर खैरपुर का राज्य; पूर्व जैशलमेर, मलानी, जोधपुर और पालन-

पुर के राज्य; दक्षिण कच्छकारन और पश्चिम हैदराबाद जिला है। जिले का सदर स्थान अमरकोट है। जिला दो भागों में विभक्त है; इनमें अनेक बालूदार पहाड़ियां हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में २०३३४४ मनुष्य थे; अर्थात् १०९१९४ मुसलमान, ४८४४० आदि निवासी, ४३७५५ हिंदू, १०२८ जैन, ८०८ सिक्ख, १४ क्रस्तान और ५ यहूदी। हिंदुओं में ११११४ लोहाना, ९२९० राजपूत, ३२६५ ब्राह्मण थे।

## ठट्टा।

कोटरी से ४९ मील दक्षिण-पश्चिम जंगशाही रेलवे का स्टेशन है, जिससे १३ मील दक्षिण-पूर्व सिंध नदी के दहिने किनारे से ७ मील पश्चिम करांची जिले में एक तालुक का प्रधान कसबा ठट्टा है; जिसको नगर ठट्टा भी कहते हैं। ठट्टा से पश्चिम करांची तक ५० मील की अच्छी सड़क गई है।

सन् १८८१ की जन-संख्या के समय ठट्टा में ८८३० मनुष्य थे; अर्थात् ४४७५ मुसलमान, ४०८१ हिंदू, ७ क्रस्तान और २६७ दूसरे।

मकली पहाड़ी के पादमूल के समीप ठट्टा कसबा है; जिसमें अस्पताल, पोष्ट आफिस और एक मातहती जेलखाना बना हुआ है; कसबे के निकट पहाड़ी पर दीवानी और फौजदारी कचहरियों के मकान और दिपोटी कलक्टर का बंगला स्थित है।

ठट्टा पूर्व समय में एक बड़ा शहर था, अब भी इसमें कपड़े और रेशम का बड़ा काम होता है; यहां की जामा मसजिद और किला हीन दशा में स्थित है। मसजिद ३१५ फीट लंबी, १९० फीट चौड़ी और १०० गुंबज वाली है। बड़े मेहराब और दो पत्थरों पर बड़े अक्षरों का सुंदर शिला लेख हैं। मसजिद के काम को सन् १६४४ ई० में शाहजहां ने आरंभ किया और औरंगज़ेब ने पूरा किया था। लोग कहते हैं कि इसके बनाने में ९ लाख रुपया खर्च पड़ा था; यह बहुत दिनों से खराब होरही है। किले का काम औरंग-

जेब के राज्य के समय सन् १६११ ई० में आरंभ हुआ था, परंतु पूरा नहीं हुआ; अब वह उजड़ रहा है।

## करांची।

जंगशाही से ५१ मील पश्चिम (कोटरी से १०० मील, शेरशाह जंक्शन से ५१७ मील और लाहोर से ८१७ मील पश्चिम दक्षिण) भारतवर्ष के पश्चिमी सीमा पर करांची-छावनी का रेलवे स्टेशन और उसके २ मील और आगे शहर का स्टेशन है। बंबई हाते के सिंध प्रदेश में (२४ अंश, ५१ कला १ विकला उत्तर अक्षांश और ६७ अंश ४ कला १५ विकला पूर्व देशांतर में) बलोचीस्तान की पहाड़ियों के दक्षिणी नेंव के निकट सिंध नदी से लगभग १० मील दूर कमिश्नरी तथा जिले का सदर स्थान करांची एक शहर है। करांची भारतवर्ष में समुद्र का प्रसिद्ध बंदरगाह है; जहांसे ६२८३ मील दूर इंगलेंड का लंदन शहर है। बंदरगाह में विलायत के जहाज और आग बोटों का बहुत आमदरफ्त रहता है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय करांची शहर और फौजी छावनी में १०५१११ मनुष्य थे; अर्थात् ६२४५६ पुरुष और ४२७४२ स्त्रियां। इनमें ५२९५७ मुसलमान, ४४५०३ हिंदू, ५९८६ कृस्तान, १३७५ पारसी, १२८ यहूदी, ११ जैन, ३२ एनिमिष्टिक और १११ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में २७ वां, बंबई हाते में ५ वां और सिंध प्रदेश में पहला शहर है।

छावनी के रेलवे स्टेशन से उत्तर छावनी के बारक एक मील में फैले हुए हैं, जिनमें १५०० यूरोपियन सेना रहसकती हैं। लाइनों के पश्चिम आर. सी. चर्च और आम अस्पताल और लाइन के आगे रेलवे स्टेशन से $\frac{1}{4}$ मील दूर एक अंगरेजी कोठी में अंगरेजी नाचगृह, सभागृह और करांची की आमलाइब्रेरी है। कोठी के आगे प्रति शनिवार को संध्या के ६ बजे से ८ बजे तक अंगरेजी बाजा बजता है। छावनी को पूर्व सिविल लाइन स्थित हैं।

सिंध के कमिश्नर की कोठी के पीछे १५० फीट ऊंचा एक गिर्जा है; जिसके पश्चिम तोपखाना और अनेक बारक बने हुए हैं।

करांची में टेलीग्राफ आफिस के समीप कारीगरी का कालिज है, जहां वाटिका, अजायबघर, विक्टोरिया बाजार और घड़ी का बुर्ज देखने में आता है। बाजार के निकट एक अस्पताल और बाजार से १ मील पश्चिम ४० एकड़ क्षेत्रफल में गवर्नमेंट बाग स्थित है; जिसमें अंगरेजी बाजा बजता है और देखने योग्य उत्तम चिड़ियाखाना अर्थात् जंतुशाला बनी हुई है। बाग से दक्षिण ल्यारी नदी के किनारे किनारे एक सड़क मिशन चर्च और स्कूल को गई है। यहां से देशी शहर आरंभ होता है। मिशन चर्च के बाद दहिने सिविल अस्पताल, गवर्नमेंट-हाईस्कूल, देशी लाइब्रेरी और जजों की कचहरी और दक्षिण जेलखाना है।

एक सड़क गवर्नमेंट हौस से यूरोपियन महल्ला, जनरल पोष्ट आफिस और म्यूनिसिपल आफिस होकर समुद्र तक गई है; जिसके बांए करांची शहर का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से थोड़ी दूर पर जुडिशियल कमिश्नर, जिला जज और शहर के मजिस्ट्रेट के आफिस और बोल्टन बाजार, कष्टमहौस, यूरोपियन सौदागरों के आफिस तथा आगबोट एजेन्सी हैं।

छावनी से ४ मील कियामारी बंदरगाह है, जहां छावनी और देशी शहर से रेलवे, ट्रामवे, टेलीग्राफ और सड़क गई है। कियामारी के पास अति उत्तम बन्दरगाह आरंभ होता है; जिसमें सबसे बड़े आगबोट आसकते हैं; वहां बहुत जहाज और आगबोट रहते हैं और धनी बस्ती का महल्ला है; जिसमें एक बड़ी सराय और एक नया मंदिर बना हुआ है। बंदरगाह की रक्षा के लिये २ किले बने हैं; जिनमें से बन्दरगाह के निकट का किला सबसे बड़ा है। बन्दरगाह के लाइटहौस की रोशनी १५० फीट की ऊंचाई पर होती है, जो स्वच्छ स्वर्ग रहने पर १७ मील दूर से देख पड़ती है।

करांची में रूई, सूत, कपड़ा, कच्चा ऊन, ऊनी कपड़ा, कोयला, शराब, धातु, दियासलाई, चीनी, मसाला, तंबाकू, रंग, फल, कागज, शीशे की चीजें, गल्ला, चमड़ा, दवा, सैनिक सामान, हथियार, इत्यादि वस्तु दूर दूर के देशों

से आकर, दूसरी जगहों में भेजे जाते हैं। करांची शहर के १६ मील पूर्वोत्तर से नल द्वारा शहर में पानी आता है। सन् १८८२ ई० में जल कल खुली थी। करांची में केवल औसत ७ इंच सालाना वर्षा होती है।

**करांची जिला**—इसके उत्तर शिकारपुर जिला; पूर्व सिंध नदी और हैदराबाद जिला; दक्षिण समुद्र और कोरी नदी और पश्चिम समुद्र और बिलोचीस्तान के खिलातकेखां का राज्य है। जिले का क्षेत्रफल १४११५ वर्गमील और इसकी सबसे अधिक लंबाई उत्तर से दक्षिण को लगभग २०० मील और सबसे अधिक चौड़ाई ११० मील है।

जिले में अनेक शाखों से सिंध नदी बहती है, जिसके वर्तमान समय का प्रधान मुहाना हजाम्रो शाखा है। सिंध नदी कैलास पर्वत के उत्तर ओर से निकल कर तिब्बत, पंजाब और सिंध प्रदेश में बहती हुई लगभग १८०० मील बहने के उपरांत करांची के आस पास अरब के समुद्र में कई धारों से गिरती है। पश्चिम की ओर से अटक नदी और पूर्व ओर से पंजाब की पांचो नदियां आपस में एक दूसरी से मिलती हुई पंचनद के नाम से सिंध में आ मिली हैं। करांची शहर से लगभग ७ मील उत्तर खजूर वृक्ष के कुंज में कई एक झरनों का गर्म पानी गिरता है, जिसको देखने के लिये बहुत लोग जाते हैं। जिले के वनों में तेंदुआ, भेड़िया, भालू, जंगली भेड़, इत्यादि वन जंतु होते हैं।

जिले में सन् १८८१ की जन-संख्या के समय ४७८६८८ मनुष्य थे; अर्थात् ३९००६७ मुसलमान, ६८१७५ हिंदू, १०८१९ सिक्ख, ४६७४ कृस्तान, ३०५० आदि निवासी, १६१ पारसी, १०६ यहूदी, १६ ब्राह्म, १ जैन और ३ बौद्ध। हिंदुओं में ४३८६९ लोहाना, ३८८३ ब्राह्मण, ३५९ राजपूत थे। इस जिले में करांची बड़ा कसबा और कोटरी, ठट्टा, मेहवन इत्यादि छोटे कसबे हैं।

**इतिहास**—सन् १७२५ ई० से पहले करांची शहर की जगह पर कोई कसबा वा बस्ती नहीं थी, परंतु समुद्र और नदी के संगम के निकट हाब नदी के दूसरे बगल पर खड़क नामक तिजारती कसबा था। पीछे

वर्तमान करांची के सिर के समीप कलाची नामक बंदरगाह कायम हुआ, जिसका अपभ्रंश करांची है। सन् १८३८ ई० में करांची कसवे और इसकी शहरतलियों में तालपुर नरेशों के आधीन १४००० मनुष्य वसते थे। सन् १७२९ से सन् १८४२ ई० तक करांची केवल एक किले की तवर पर थी। सन् १८४२ में अंगरेजों ने जब तालपुर नरेशों से करांची को ले लिया, तबसे इसकी उन्नति बड़ी तेजी से होने लगी। सन् १८६१ ई० में हैदराबाद जिले का एक भाग करांची जिले में मिलाया गया।

सिंधदेश—यह देश बंबई के गवर्नर के आधीन बंबई हाते के उत्तर है; इसके उत्तर बलुचीस्तान और पंजाब, पूर्व राजपूताने में जैशलमेर और जोधपुर के राज्य, दक्षिण कच्छकारन और अरब का समुद्र और पश्चिम खिलातके खां का राज्य है।

सिंध देश में करांची, हैदराबाद, थर और परखर, शिकारपुर और अपरसिंध फ्रंटियर ५ जिले और खैरपुर एक देशी राज्य हैं, जिनमें अंगरेजी राज्य का क्षेत्रफल ४७७८१ वर्गमील और खैरपुर के देशी राज्य का ६१०१ वर्गमील है। देश का वर्तमान सदर स्थान करांची है; परंतु पुरानी राजधानी हैदराबाद है। सिंध नदी देश होकर बहती हुई करांची जिले में अरब के समुद्र में गिरती है। एक पहाड़, जो कई एक जगह समुद्र के जल से ७००० फीट से अधिक ऊंचा है, सिंध देश को बलुचीस्तान से जुदा करता है। करांची जिले के पश्चिमी भाग में कोहीस्तान का जंगली और चट्टानी देश है। शिकारपुर और लरखना के पड़ोस में देश बहुत उपजाऊ है, जहां एक लंबा पतला टापू उत्तर से दक्षिण को १०० मील फैलता है, जिसके एक बगल में सिंध नदी और दूसरे बगल में पश्चिमी नारा है। पूर्वी सीमा के समीप बहुत बालूदार पहाड़ियां हैं। सिंध के बहुतेरे भागों में बड़े बड़े देशों में सिंचाई के अभाव से खेती नहीं होती। सेहवन सब डिवीजन में मंचा झील है, जो बाढ़ के समय में २० मील लंबी हो जाती है और १८० वर्गमील भूमि को छिपाती है। खैरपुर राज्य के जंगलों के सहित सिंधप्रदेश में केवल ६२९ वर्गमील जंगल है। पश्चिमी पहाड़ियों में गुरखर (जंगली

गदहा ), वनैले सूअर, अनेक प्रकार के हरिन इत्यादि वनजंतु रहते हैं। सिंध के घोड़े यद्यपि छोटे होते हैं, परंतु वे तेज, दृढ़ और बड़े परिश्रमी हैं। अंगरेजी सरकार और ऊपरी सिंध के बलूची लोग बच्चों के लिये घोड़ियां पालते हैं।

सिंध प्रदेश के अंगरेजी राज्य में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय २८७१७७४ मनुष्य थे, अर्थात् १५६८५९० पुरुष और १३०३१८४ स्त्रियां। इनमें २२१५१४७ मुसलमान, ५६७५३९ हिंदू, ७७१३५ जंगली जाति इत्यादि, ७७६४ क्रस्तान, १५३४ पारसी, ९२३ जैन, ७२० सिक्ख, २१० यहूदी और २ बौद्ध थे, जिनमें से २१६३१ पुरुष और २४८९ स्त्रियां पढ़ती हुई और १०२१७० पुरुष और ४३६२ स्त्रियां पहले की पढ़ी हुई थीं। खैरपुर के राज्य में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय १२११५३ मनुष्य थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिंध प्रदेश के ६ कसबों में १०००० से अधिक मनुष्य थे,—करांची जिले के करांची में १०५१९९, हैदराबाद जिले के हैदराबाद में ५८०४८, शिकारपुर जिले के शिकारपुर में ४२००४ और सक्कर में २९३०२, अपरसिंध फ्रंटियर जिले के जेकबाबाद में १२३९६ और शिकारपुर जिले के लरखना में १२०११। इस प्रदेश में उस समय सैकड़े पीछे सिंधी भाषा वाले ८३, बलोच $6\frac{1}{4}$, मारवाड़ी भाषा वाले $4\frac{3}{4}$ और अन्य भाषा वाले ६ मनुष्य थे।

**सिंध की संक्षिप्त प्राचीन कथा**—महाभारत-(वनपर्व ८२ वां अध्याय) सिंध और समुद्र के संगम में जाकर समुद्र में स्नान और पितर देवता तथा ऋषियों का तर्पण करना चाहिये, वहां स्नान करने से वरुण लोक और वहां के शंकुकर्णेश्वर महादेव की पूजा करने से १० अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

(उद्योगपर्व ११ वां अध्याय) सिंधु और सौवीर के राजा जयद्रथ (कुरुक्षेत्र की लड़ाई के समय) एक अक्षौहिणी सेना लेकर राजा दुर्योधन की ओर आए (द्रोणपर्व ११४ वां अध्याय) अर्जुन ने रणभूमि में जयद्रथ को मार डाला।

(अनुशासन पर्व २५ वां अध्याय) महानद सिंधु में स्नान करने से स्वर्ग प्राप्त होता है।

सिंध का इतिहास—सिंधु नदी के नाम से इस देश का सिंधु वा सिंध नाम पड़ा है। सन् १५१२ ई० में बादशाह अकबर ने सिंध प्रदेश को अपने राज्य में मिला लिया। सन् १७३९ में पारस का नादिरशाह आया; जिसने सिंध नदी के पश्चिम का संपूर्ण देश पारस के राज्य में मिला लिया। नादिरशाह के मरने पर सन् १७४८ से कंधार के अहमदशाह दुर्रानी सिंध से कर लेने लगा, उसने नूरमहम्मदखां को वहांका हाकिम बनाया, परंतु सन् १७५७ में प्रजाओं ने उसको तख्त से उतार कर उसके भाई गुलामशाह को बैठाया। गुलामशाह ने सन् १७६८ में नीरनकोट कसबे के स्थान पर हैदराबाद बसाकर उसको अपनी राजधानी बनाया। सन् १७८३ में तालपुर खांदान के नियत करने वाला मीर फतहअलीखां ने कंधार के शाह जवान से सिंध का अधिकार पाया। सन् १८३६ में तालपुर खांदान की हुकूमत का अंत हुआ। सन् १८४३ में सिंध के संपूर्ण जिले अंगरेजों के अधिकार में हो गए।

## हिंगुलाज।

बलुचीस्तान के दक्षिण करांची से पारस की खाढ़ी तक जाते हुए मेकरान तट में हिंगुलाज है। यात्रीगण करांची शहर से ७ मुकाम में चंद्रकूप और १३ मुकाम में हिंगुलाज पहुंचते हैं। भोजन का सामान करांची से ऊंट पर ले जाना होता है। हिंगुलाज की गुहे में देवी का स्थान है, जहां दिन में भी दीप जलाया जाता है और एक वा दो पुजारी रहते हैं।

हिंगुलाज से ७ कोस और आगे अलीलकुंड नामक एक स्वभाविक कुआं है, जिसमें तैरनेवाला मनुष्य कूद कर फिर बाहर निकलता है। हिंगुलाज और अलीलकुंड के बीच में रामझरोखा नामक पत्थर का एक बैठक है। यात्री गण अलीलकुंड से हिंगुलाज हो कर फिर लौटते हैं।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—देवीभागवत-( ७ वां स्कंध, ३८ वां अध्याय ) हिंगुलाज में महास्थान है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—( कृष्णजन्मखंड ७६ वां अध्याय ) आश्विनशुक्ल ८ को हिंगुलाज तीर्थ में श्रीदुर्गाजी के दर्शन करने से फिर जन्म नहीं होता है, अर्थात् मोक्ष हो जाता है।

---

# उन्नीसवां अध्याय।

## ( पंजाब में ) मुलतान, मांटगोमरी, रायवंदजंक्शन, कसूर, फीरोजपुर, सिरसा, हिसार, हांसी, रुहतक, जींद, भिवानी, रेवारी और गुरगांवा।

## मुलतान।

शेरशाह जंक्शन से १३ मील पूर्वोत्तर बहावलपुर से ६५ मील उत्तर और लाहौर शहर से २०७ मील पश्चिम-दक्षिण मुलतान शहर का रेलवे स्टेशन है। छावनी का स्टेशन उससे १ मील पहले मिलता है। पंजाब में चनाब नदी के बाएं उसके ४ मील पूर्व आस पास के देश से ५० फीट ऊंचे टीले पर पंजाब में किस्मत और जिले का सदर स्थान मुलतान एक शहर है। यह ( ३० अंश १२ कला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश ३० कला ४५ बिकला पूर्व देशांतर में ) स्थित है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय मुलतान शहर और इसकी छावनी में ७४५६२ मनुष्य थे; अर्थात् ४१९५३ पुरुष और ३२६०९ स्त्रियां। इनमें ३९७६५ मुसलमान, ३२१३० हिंदू, १६७२ कृस्तान, १६१ सिक्ख, २४ जैन, ९ पारसी और १ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतबर्ष में ४२ वां और पंजाब में ६ वां शहर है।

शहर के ३ बगलों में १० फीट से २० फीट तक ऊंची दीवार है और दक्षिण बगल खुला हुआ है। शहर में एक चौड़ा बाजार बसा है। चौक हुसेनफाटक से वलीमहम्मद फाटक तक चौथाई मील लंबा है, जिसमे ३ चौड़ी सड़कें शहर के कई एक फाटकों तक गई हैं। अन्य सड़कें तंग हैं। शहर में आर्य-समाज की एक शाखा है, जिसमें १०० से अधिक मेंबर वर्तमान हैं।

शहर के पूर्व मुलतान के हिंदू गवर्नरों के बाग का मकान है, जिसमें अब तहसीली कचहरी होती है; इसके उत्तर मुलतान के दीवान सोनमल की छतरी (अर्थात् समाधि मंदिर) और यूरोपियन कबरगाह हैं। शहर के पश्चिम उत्तम सरकारी बाग लगा हुआ है और फौजी छावनी फैली हुई है।

सिविल स्टेशन खास कर के शहरके उत्तर और पश्चिम है; जिसमें कचहरियां, कमीश्नर के आफिस, जेलखाना, गिर्जा, अस्पताल, बंगला और म्युनिसपल हाल इत्यादि इमारत हैं।

किले की किलाबंदी सन् १८५४ ई० में तोड़ दी गई, तिस पर भी किला मजबूत है; अब उसमें एक यूरोपियन सेना रहती है। पश्चिम के फाटक से किले में प्रवेश करने पर बाएं ओर बहावलहक के पोते रुकनुद्दीन का मकबरा देख पड़ता है; जिसके ऊपर गुंबज है और भीतर सीसम की लकड़ी के सह-तीर लगे हैं। मकबरे की ऊंचाई १०० फीट से अधिक नहीं है; परंतु ऊंची भूमि पर खड़े रहने के कारण चारो ओर दूरसे देख पड़ता है। सन् १३४०-१३५० ई० में बादशाह तुगलक ने अपने लिये इस मकबरे को बनवाया था; परंतु उसके पुत्र महम्मदतुगलक ने रुकनुद्दीन को दे दिया, इसके अलावे किले में २ अंगरेजी अफसरों की यादगार में जो सन् १८४८ की बगावत में मारे गए थे; ७० फीट ऊंचा एक लाट अर्थात् बुर्ज है। किले के पश्चिमी फाटक के निकट सूर्य का पुराना बड़ा मंदिर था, जिसको औरंगजेब ने तोड़वा कर के उसके स्थान पर जामामसजिद बनवाई; जिसको सिक्खों ने अपना मेगजीन बनाया था। किले के प्रह्लादपुरी में, जिसका भाग सन् १८४८—१८४९ ई० के मुलतान के आक्रमण के समय बारूद से उड़ा दिया गया; नृसिंहजी के पुराने मंदिर की निशानियां हैं।

किले से १$\frac{१}{४}$ मील पूर्व शाहजहां के समय का बना हुआ एक फकीर का ६२ फीट ऊंचा गुम्बजदार मकबरा है; जिसमे लगे हुए चारोओर सात सात मेहराबियों के बरामदे बने हुए हैं।

मुलतान के एक बड़े मंदिर में हिरण्यकशिपु के उदर विदारते हुए नृसिंहजी स्थित हैं। यहां नृसिंहचौदस अर्थात् वैशाख सुदी १४ को दर्शन का मेला होता है। शहर से ४ मील दूर सूर्यकुंड है, जहां भादों सुदी ६ और माघ सुदी ७ को स्नान का मेला लगता है; इनके अलावे मुलतान में कार्तिक सुदी ८ को गोचारण का सुंदर मेला होता है।

मुलतान में उत्तम दरजे की सौदागरी होती है और पंजाब के संपूर्ण शहरों के बड़े कोठीवालों की कोठियां नियत हैं। यहां अनेक प्रकार की पैदावार, दस्तकारी की चीज और देश के खर्च की वस्तु दूसरे देशों से आती हैं और चीनी, नील और रूई यहां से दूसरे देशों में भेजी जाती हैं। रूई, गेहूं, ऊन, नील और तेल के बीज चारो तरफ के देश से मुलतान में जमा कर के दक्षिण भेजे जाते हैं, जहांसे ब्योपारीलोग मेवा, कच्चा रेशम, मसाला इत्यादि चीज लाकरके पूर्व भेजते हैं। मुलतान में रेशमी और सूत के कपड़े, कालीन और देशी जूते बहुत बनते हैं और यहां के मट्टी के बर्तन प्रसिद्ध हैं।

मुलतान में बड़ी गरमी पड़ती है और सालाना औसत वर्षा ७ इंच से कुछ अधिक होती है।

मुलतान जिला—जिले का क्षेत्रफल ५८८० वर्गमील है। इसके उत्तर झंग जिला, पूर्व मांटगोमरी जिला, दक्षिण सतलज नदी, बाद बहावलपुर राज्य और पश्चिम चनावनदी बाद मुजफ्फरगढ़ जिला है। जिले के दक्षिण-पश्चिम सीमा के निकट सतलज और चनाव नदी का संगम है। जिले के उत्तरीय कोने को काटती हुई रावी नदी बहती है। तीनों नदियों के आस पास की भूमि जो ३ मील से २० मील तक चौड़ी है, जोती जाती है; परंतु भीतर की भूमि पंजाब की ऊंची भूमि के समान बिरान हैं। बहुतेरी नहर चारो ओर के देश में सतलज से पानी पहुंचाती हैं। जंगली जानवरों में भेड़िया बहुत हैं।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ६३०८९० और सन् १८८१ में ५५१९६४ मनुष्य थे; अर्थात् ४३५१०१ मुसलमान, ११२००१ हिंदू, २०८५ सिक्ख, १८६१ कृस्तान, ६३ पारसी, ४७ जैन और ६ दूसरे। इनमें १०२१५२ जाट और ६९६२७ राजपूत, जो प्रायः सब मुसलमान हैं; ७६८४२ अरोरा, ९७१८ खत्री और ४१८३ ब्राह्मण, जो प्रायः सब हिंदू हैं, थे। इनके अतिरिक्त चुहरा, अराइन, कुंभार, तरखान इत्यादि जातियों में हिंदू और मुसलमान दोनों हैं।

मुलतान जिले में मुलतान के अतिरिक्त कोई बड़ा कसबा नहीं है। शुजाबाद, कहरोर, जलालपुर, तलंबा और दूंबापुर छोटे म्युनिस्पल कसबे हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि पूर्व काल में मुलतान शहर को महर्षि कश्यप ने बसाया था और कश्यपपुर करके वह प्रसिद्ध था। उसके पश्चात् कश्यप के पुत्र हिरण्यकशिपु और पौत्र प्रह्लाद की वह राजधानी हुआ। संवत् १८७४ (सन् १८१७ ई०) का बना हुआ 'तुलसी शब्दार्थ प्रकाश' नामक पद्य का भाषा ग्रंथ है; जिसके द्वितीय भेद में लिखा है कि नृसिंह भगवान का अवतार मुलतान में हुआ था।

यूनान का सिकंदर सन् ई० से ३२७ वर्ष पहले हिंदुस्तान में आया और अटक शहर के पास सिंध नदी को लांघ कर झेलम की ओर बढ़ा; उसने झेलम के किनारे पर राजा पोरस को परास्त करने के पश्चात् राजा माली की राजधानी मुलतान पर आक्रमण किया। मालों की कौम से सिकंदर की बड़ी लड़ाई हुई, जब शहर के लेने के समय सिकंदर घायल हो गया; तब उसके सैनिकों ने क्रोध में आकर शहर के संपूर्ण निवासियों को तलवार से काट डाला; उसके पश्चात् मुलतान का देश क्रम से मगध के गुप्तवंशी और ग्रीसवालों के आधीन हुआ था। सन् ६४१ ई० में चीन के हुएंत्संग ने मुलतान शहर को देखा और सूर्य की सुवर्ण की एक प्रतिमा पाई; पीछे महम्मद कासिम ने शहर मुलतान को जीता था। सन् १००५ में महमूद गजनवी ने मुलतान को लेलिया; पीछे वह मुगल राज्य का एक हिस्सा बना। सन् १७३८—१७३९ में महम्मदशाह ने एक अफगान को मुलतान का

नवाव वनाया। सन् १७७९ में अफगान मुजफ्फरखां मुल्तान का गवर्नर वना। सन् १८१८ में लाहौर के महाराज रणजीतसिंह की सेनाओं ने मुजफ्फरखां और उसके ८ पुत्रों को मार कर मुलतान को ले लिया।

सन् १८२१ में सिक्खों ने सोनमल को दूसरे जिलों के साथ मुलतान जिले का गवर्नर वनाया। महाराज रणजीतसिंह की मृत्यु होने पर काश्मीर के गवर्नर से दीवान सोनमल की लड़ाइ हुई। सन् १८४४ की तारीख ११ सितंबर को सोनमल मारा गया; तव उसका पुत्र मूलराज गवर्नर वना। सन् १८४९ ई० की २ जनवरी को अंगरेजी सरकार ने सिक्खों से मुलतान लेलिया। मूलराज वगावत के अपराध से कालापानी भेजा गया; जो रास्ते में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**--मत्स्यपुराण--( १६० वां अध्याय ) सतयुग में हिरण्यकशिपु दैत्य महा वलवान हुआ; जव उसके घोर तप करने पर ब्रह्माजी प्रकट हुए; तव उसने ऐसा वरदान मांगा कि मुझको देवता, असुर, गंधर्व, यक्ष, उरग, राक्षस, मनुष्य और पिशाच कोइ नहीं मार सके; ऋषियों के शाप भी मुझको न लगे; शस्त्र अस्त्र से मैं नहीं मरूं और दिन रात में भी मेरी मृत्यु न होवे। ऐसे वर प्राप्त कर उसने देवताओं को जीत कर तीनों लोक को अपने वस में कर लिया और जगत् तथा मुनियों को दुख देने लगा; तव देवगण और महर्षिगण मिल कर विष्णु भगवान के शरण में गए। भगवान ने हिरण्यकशिपु के वध की प्रतिज्ञा करके ओंकार को अपना सहायक वनाया और आधे मनुष्य और आधे सिंह का रूप धारण करके हिरण्यकशिपु की सभा में प्रवेश किया।

( १६१ वां अध्याय ) संपूर्ण दानव नृसिंहजी का विचित्र रूप देख कर विस्मय को प्राप्त हुए। प्रह्लाद ने अपने पिता हिरण्यकशिपु से कहा कि महाराज! हमने नृसिंह का शरीर न कभी देखा न सुना; मुझको यह रूप दैत्यों के नाश करने वाला देख पड़ता है; इसके शरीर में संपूर्ण ब्रह्मांड स्थित है। हिरण्यकशिपु ने दानवों से कहा कि इस अपूर्व सिंह को पकड़ो; परंतु पकड़े जाने में संदेह हो तो मारडालो, जब दानव नृसिंहजी को त्रास देने लगे; तव

उन्होंने उस सभा को तोड़ फोड़ कर नष्ट कर दिया, इसके पश्चात् हिरण्यकशिपु ने नृसिंहजी पर अनेक शस्त्र छोड़े। (१६२ वां अध्याय) दानवगण भी उन पर प्रहार करने लगे; अंतमें जब हिरण्यकशिपु गदा और त्रिशूल लेकर नृसिंहजी के संमुख दौड़ा, तब नृसिंहजी ओंकार की सहायता से अपने नखों से उसके शरीर को फाड़ कर उसको मारडाला। (श्री मद्भागवत के सप्तम स्कंध के ८ वें अध्याय से १० वें अध्याय तक नृसिंहजी और प्रह्लाद की कथा विस्तार से है)।

# मांटगोमरी।

मुलतान से १०४ मील (शेरशाह जंक्शन से ११७ मील) पूर्व कुछ उत्तर और लाहौर से १०१ मील दक्षिण-पश्चिम मांटगोमरी का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के मुलतान विभाग में जिले का सदर स्थान मांटगोमरी एक बहुत छोटा कसबा है, जो पहले गोगेरा करके प्रसिद्ध था; लेकिन सन् १८६५ में पंजाब के उस समय के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर आर मांटगोमरी के नाम के अनुसार उसका यह नाम पड़ा।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मांटगोमरी में ३१७८ मनुष्य थे; अर्थात् ११४३ मुसलमान, १३६ हिंदू, २६५ सिक्ख और ३४ दूसरे।

मांटगोमरी में सरकारी कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल, सराय, गिर्जा और पुलिस स्टेशन मैदान में बने हैं। कसबे से बाहर पड़ाव की जगह है।

**मांटगोमरी जिला**—जिले का क्षेत्रफल ५५७४ वर्गमील है। इसके पूर्वोत्तर लाहौर जिला, दक्षिण-पूर्व सतलज नदी, जो बहावलपुर राज्य से इसको अलग करती है; दक्षिण-पश्चिम मुलतान जिला और पश्चिमोत्तर झंग जिला है। जिले में सतलज और रावी नदी बहती है। जंगलों में भेड़िया और बनैले बिलार बहुत हैं।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ४१८६६५ और सन् १८८१ में ४२६५२९ मनुष्य थे; अर्थात् ३३०४१६ मुसलमान, ८३१७४ हिन्दू,

११३६४ सिक्ख, १३ कृस्तान, २ पारसी और १ जैन। मुसलमानों में ५५४७६ राजपूत, ४१३८१ जाट और हिन्दू तथा सिक्खों में ५११५६ अरोरा, ४४९१ खत्री, ३११६ ब्राह्मण, २४२५ राजपूत और जाट थे।

जिले में कमालिया सबसे बड़ा कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ७५१४ मनुष्य थे और मांटगोमरी कसबे से ३० मील दक्षिण गारा नदी के निकट पाकपट्टन एक पुराना कसबा है, जिसमें ५५१३ मनुष्य थे, वहां चिस्ती खांदान के फरीद उद्दीन का मकबरा है; जहां मुहर्रम के समय बहुत मुसलमान यात्री जाते हैं।

इतिहास—सन् १८४१ ई० में अंगरेजी सरकार ने इस जिले को सिक्खों से लेलिया। पहले जिले का सदर स्थान मांटगोमरी से १६ मील उत्तर गोगेरा में था; परंतु रेलवे खुलने पर सन् १८६४ में रेलवे के निकट सिविल स्टेशन के लिये शाहीवाल गांव चुना गया; जो दूसरे साल में उस समय के पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर आर मांटगोमरी के नाम से उसका नाम मांटगोमरी हो गया।

## रायवंद जंक्शन।

रायवंद जंक्शन से रेलवे लाइन ३ ओर गई हैं।

(१) रायवंद से दक्षिण-पूर्व फीरोजपुर तक 'नर्थवेष्टर्न रेलवे' उससे आगे 'बंबे बरोधा और सेंट्रल इंडियन रेलवे' की रिवाड़ी फीरोजपुर शाखा है; जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन—

१८ कसूर।

३५ फिरोजपुर।

५५ फरीदकोट।

६३ कोटकपुरा जंक्शन।

८० भतिंडा जंक्शन।

१३६ सिरसा।

१८७ हिसार।

२०२ हांसी।

२२४ भिवानी।

२४१ चर्खी दादरी।

२७६ रेवारी जंक्शन।

क्रोटकपुरा जंक्शन से पश्चिम ५० मील फजिलका; भतिंडा जंक्शन से पूर्व ४० मील वर्नाला, १६ मील नाभा, ९२ मील पटियाला और १०८ मील राजपुर जंक्शन; और रेवारी जंक्शन से पूर्वोत्तर ५२ मील दिल्ली और दक्षिण ४६ मील अलवर और ८३ मील वादीकुईं जंक्शन है।

(२) रायवंद से पूर्वोत्तर 'नर्थवेष्टर्न रेलवे' है, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २$\frac{१}{२}$ पाई लगता है।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन--
२४ लाहौर।

(३) रायवंद से दक्षिण-पश्चिम 'नर्थ वेष्टर्न रेलवे'।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
७९ मांटगोमरी।
१८३ मुलतान शहर।
१८४ मुलतान छावनी।
१९६ शेरशाह जंक्शन।
२४८ बहावलपुर।
२९५ समस्ता।
२७७ अहमदपुर।
३३१ खांपुर।
३९३ रेती।
४६३ रोड़ी।
४६६ सक्कर।
४८१ रूक जंक्शन।
५०३ लरखना।
५३४ राधन।
५१७ सेहवन।
६०५ लक्की।
६१३ कोटरी।
७०७ हैदराबाद।
७४२ जंगशाही।
७९३ करांची छावनी।
७९५ करांची शहर।

शेरशाह जंक्शन से पश्चिमोत्तर २६ मील महमूदकोट जंक्शन, १२४ मील दरियाखां जंक्शन, और १७६ मील कुंडियान जंक्शन और रूक जंक्शन से उत्तर कुछ पश्चिम ११ मील शिकारपुर, ३७ मील जैकबाबाद और २२१ मील केटा है।

## कसूर ।

रायवन्द जंक्शन से १८ मील दक्षिण-पूर्व ( लाहौर से ४२ मील ) कसूर का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के लाहौर जिले में व्यास के पुराने भागर के बाएं एक तहसीली का सदर स्थान कसूर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कसूर में २०२१० मनुष्य थे; अर्थात् १५४०६ मुसलमान, ४४१३ हिंदू, ३८२ सिक्ख और ८९ जैन। १२ गांव मिल कर कसूर की म्यूनिसिपलटी बनी है; जिनमें से ४ गांव मिल करके प्रधान कसबा हुआ है। शेष ८ गांव आस पास में बसे हैं।

कसूर में तहसीली, असिस्टन्ट कमिश्नर की कचहरी, स्कूल, अस्पताल, डाक बंगला इत्यादि सरकारी मकान हैं। देशी पैदावार की सौदागरी होती है और घोड़े की साज बनने के लिये कसूर प्रसिद्ध है।

**इतिहास**—ऐसी कहावत है कि श्रीरामचंद्र के पुत्र लवने लाहौर को और कुश ने कसूर को बसाया। मुसलमानों के आक्रमण से प्रथम एक हिन्दू राजा कसूर के स्थान पर राज्य करता था। बाबर या अकबर के राज्य के समय पठानों ने कसूर में प्रवेश किया। सन् १८१७ मे महाराज रणजीतसिंह ने पठानों को निकाल कर कसूर को लाहौर जिले में मिला लिया; जिसको अंगरेजी गवर्नमेंट ने रणजीतसिंह के वंसधरो से लेलिया।

## फीरोजपुर ।

कसूर से १७ मील ( रायवन्द जंक्शन से ३५ मील ) दक्षिण-पूर्व फीरोजपुर का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के लाहौर विभाग में सतलज नदी के ३ मील बांए अर्थात् दक्षिण जिले का सदर स्थान फीरोजपुर एक कसबा है। सतलज नदी पर रेलवे पुल बना हुआ है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय फिरोजपुर कसबे और इसकी छावनी में ५०४३७ मनुष्य थे; अर्थात् ३०६२२ पुरुष और १९८१५ स्त्रियां। इनमें २३०४७ हिन्दू, २२०१८ मुसलमान, ३३८७ सिक्ख, १५६१ क्रुस्तान,

४०७ जैन, १५ पारसी और २ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत वर्ष में ७६ वां और पंजाब के अंगरेजी राज्य में १० वां शहर है।

कसबे की प्रधान सड़कें चौड़ी और पक्की हैं। सर्कुलर रोड के निकट फीरोजपुर के धनियों के अनेक बाग लगे हुए हैं। सरकारी मकानों में जिले की कचहरियां, पुलिस स्टेशन, जेलखाना, टाउनहाल, अस्पताल, स्कूल, मेमोरियल चर्च इत्यादि हैं। किला, जिसमें पंजाब का प्रधान तोपखाना है। सन् १८५८ ई० में सुधारा गया और सन् १८८७ में अच्छी तरह से मजबूत किया गया। कसबे में गल्ले आदि खेती की पैदावार की तिजारत होती है।

कसबे से २ मील दक्षिण फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ में १८७०० मनुष्य थे; इसमें अंगरेजी पैदल की एक रेजीमेंट, देशी पैदल की एक रेजीमेंट और आरटिलरी की २ बैटरी रहती हैं।

**फीरोजपुर जिला**—जिले का क्षेत्रफल २७५२ वर्गमील है; उसके पूर्वोत्तर सतलज नदी, जो जलंधर जिले से उसको अलग करती है; पश्चिमोत्तर सतलज नदी, जो लाहौर जिले से उसको जुदा करती है; पूर्व और दक्षिण-पूर्व लुधियाना जिला और फरीदकोट, पटियाला और नाभा के राज्य; और दक्षिण-पश्चिम सिरसा जिला है।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ८८६२४१ और सन् १८८१ में ६५०५११ मनुष्य थे; अर्थात् ३१०५५२ मुसलमान, १६८८१६ सिक्ख, १६८६४५ हिंदू, १६८६ कृस्तान, ८११ जैन और ९ पारसी। हिंदू और सिक्खों में १६११४१ जाट, १३३०६ अरोरा, १२०७६ ब्राह्मण, ११२३५ बनिया, ९१७४ खत्री थे। मुसलमानों में ३५१४३ राजपूत, २६६२९ जाट, ११३७५ गूजरभी थे; इस जिले में फीरोजपुर कसबे के अलावे धर्मकोट, मुक्तसर, जीरा और मकबू छोटे म्युनिसपल कसबे हैं।

**इतिहास**—कहावत के अनुसार दिल्ली के बादशाह फीरोजशाह के समय, जिसका राज्य सन् १३५१ से १३८७ ई० तक था, फीरोजपुर बसा। सन् १८३५ ई० में फीरोजपुर एक उजाड़ गांव था। सन् १८४१ में उसमें लगभग ५००० निवासी थे। जिले पर अंगरेजी अधिकार होने के समय

फीरोजपुर घटती पर था; परंतु उसके पश्चात् उसकी बढ़ती तेजी से होने लगी।

सन् १८४५ ई० के १६ दिसंबर को सिक्खों ने सतलज पार होकर जिले पर हमला किया था, जो अंत में परास्त हुए। फीरोजपुर जिले के फीरोजपुर, मुदकी और सुब्रांव में अंगरेजों और सिक्खों में भारी लड़ाई हुई थी। सन् १८५७ के बलवे के समय फीरोजपुर में सिपाहियों की २ रेजीमेंट थी; जिनमें से एक ने बागी होकर छावनी को लूटा और बरबाद किया।

## सिरसा।

फीरोजपुर से १०१ मील (रायवंद जंक्शन से १३६ मील) दक्षिण-पूर्व सिरसा का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के हिसार विभाग में जिले का सदर स्थान सिरसा एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय सिरसा में १६४१५ मनुष्य थे; अर्थात् ११२२८ हिंदू, ४६६७ मुसलमान, ३०६ जैन, १५१ कृस्तान, ५७ सिक्ख और ६ पारसी।

सिरसा का नया कसबा, जो सन् १८३७ ई० में बसा; ८ फीट ऊंची दीवार के भीतर चौकोना है; जिसमें एक दूसरे को काटती हुई चौड़ी सड़कें निकली हैं। कोई सड़क तंग वा टेढ़ी नहीं है। सिरसा में जिले की कचहरियों के मकान, पुलिस स्टेशन, गिर्जा, तहसीली, जेलखाना, सराय, बंगला, खैराती अस्पताल और स्कूल बने हुए हैं; हर किस्म के गल्ले पंजाब के अनेक शहरों से ला कर दूसरे देशों में भेजे जाते हैं और मोटे कपड़े और मट्टी के बर्तन तैयार होते हैं। आश्विन मास में वहां मवेसी का मेला होता है, जिसमें लगभग १५०००० मवेसी इकट्ठी होती हैं।

नए सिविल स्टेशन के दक्षिण-पश्चिम के कोने के समीप सिरसा के पुराने कसबे की निशानियां हैं, जिससे असबाब उजाड़ कर नए कसबे के मकानों में लगाए गए हैं।

**सिरसा जिला**—जिले का क्षेत्रफल ३००४ वर्गमील है। इसके पूर्वोत्तर फीरोजपुर जिला और पटियाले का राज्य, पश्चिम सतलज नदी, दक्षिण-पश्चिम

बहावलपुर और बीकानेर के राज्य और पूर्व हिसार जिला है। जिले में सतलज और गागरा नदियों के किनारों के देश में सुंदर फसिल होती है और उत्तम चराहगाह हैं।

गागरा, जो महाभारत और पुराणों में दृषद्वती के नाम से प्रसिद्ध है; हिमालय पर्वत से निकलती है। सरस्वती नदी पटियाले के राज्य में आनेपर गागरा में मिल गई है। गागरा रोरी के दक्षिण सिरसा जिले में प्रवेश करती है; सिरसा कसबे के ४ मील दक्षिण हो कर जाती है और अपने निकास से लगभग २९० मील बहने के उपरांत बीकानेर के विरान में अदृश्य हो गई है।

जिले में सन् १८८१ की जन-संख्या के समय २५३२७५ मनुष्य थे; अर्थात् १३०५८२ हिंदू, १३२८१ मुसलमान, २८३०३ सिक्ख, १०८४ जैन और १७ कृस्तान। जाट और राजपूत में हिंदू, मुसलमान और सिक्ख तीनों मजहब के लोग हैं; परंतु बनिया, ब्राह्मण और अरोरा में कोई मुसलमान नहीं है। सिरसा जिला में सिरसा कसबे के अलावे फजिलका, रनिया, एलेनाबाद और रोरी छोटे म्यूनिसपल कसबे हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि सन् ईस्वी की छठवीं शताब्दी में राजा सिरस ने सिरसा को बसाया और वहां किला बनवाया। वर्तमान सिविल स्टेशन के आसपास पुराने कसबे के अनेक उजड़े हुए टीले देखने में आते हैं। सन् १७२६ के अकाल से सिरसा कसबा उजड़ गयाथा। सन् १८०३ से १८१८ ई० तक यह जिले अंगरेजी गवर्नमेंट के आधीन भट्टी लोगों के अधिकार में था। सन् १८२० में यह हिसार जिले का एक भाग बना। सन् १८३७ में जब इस जिले में अंगरेजी गवर्नमेंट का पूरा अधिकार हो गया, तब गागरा की घाटी सहित देश को एक जिला बना कर पश्चिमोत्तर देश के आधीन कर दिया गयाथा, परंतु सन् १८५८ में पंजाब के आधीन बनाया गया।

## हिसार।

सिरसा से ५१ मील (रायवंद जंक्शन से १८७ मील) दक्षिण-पूर्व हिसार का रेलवे स्टेशन है। पंजाब में फीरोजशाह की बनवाई हुई पश्चिमोयमुना-नहर

के निकट (दिल्ली से १०२ मील दूर क़िस्मत और जिले का सदर स्थान हिसार एक कसवा है।

सन् १८११ की जन-संख्या के समय हिसार में १६८५४ मनुष्य थे; अर्थात् १००३२ हिंदू, ६३२८ मुसलमान, ३११ जैन, ६० कृस्तान, ३३ सिक्ख और १० पारसी।

हिसार की प्रधान सड़कें चौड़ी हैं। कसवे के दक्षिण नहर के उसपार सिविल स्टेशन और कसवे के समीप एक यूरोपियन सुपरिटेंडेंट के आधीन चराई के लिये २३२८७ एकड़ की मिलकियत है; जिसमें गवर्नमेंट की बच्चेदेने वाली वहुत मवेसियां रक्खी जाती हैं।

हिसार में प्रतिवर्ष चैत्र में मवेसियों का मेला और भादोंवदी ९ को गूंगा-नवमी का मेला होता है। लोग कहते हैं कि दिल्ली के पृथ्वीराज के मित्र गूंगा नामक चौहान राजपूत था; जो गर्रा नदी के किनारे पर मुसलमानों के संग्राम में अपने ४५ पुत्र और ६० भतीजों के सहित मारा गया था। गूंगा नवमी के दिन स्त्रीगण हिसार में गूंगा की मृत्यु के स्थान को पूआ आदि सामग्री से पूजती हैं।

**हिसार जिला**—जिले का क्षेत्रफल ३५४० वर्गमील है। इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर पटियालाराज्य और सिरसा जिले का छोटा भाग, पूर्व और दक्षिण जींदराज्य और रुहतक जिला और पश्चिम वीकाराज्य के चराहगाह की भूमि है।

यह जिला बीकानेर के वड़ा विरान के पूर्वी सीमा पर है; इसमें प्रायः बालूदार मैदान देख पड़ते हैं, जिनमें किसी किसी स्थान में झाड़ी के जंगल और दक्षिण ओर ऊंची नीची वालूदार पहाड़ियां हैं। गागरा नदी दो शाखा होकर पूर्वोत्तर से जिले में प्रवेश करके जिले के पश्चिमोत्तर सिरसा जिले में जाती है, फीरोजशाह तुगलक की नहर हिसार जिले के लगभग ५० गांवों को पटाती हुई पूर्व से पश्चिम जाती है।

जिले में सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय ७७६०६६ और सन् १८८१ में ५०४१८३ मनुष्य थे; अर्थात् ३८४३६६ हिन्दू, ११३५१७ मुसलमान, ३१४३ सिक्ख, ३१०२ जैन और ५५ कृस्तान। जिले में बनिया, धानुक,

माली, अहीर इत्यादि जाति सबके सब हिन्दू हैं; पर जाट, राजपूत, ब्राह्मण, गूजर, चुहरा, तरखान, कुंभार इत्यादि जातियों में बहुतेरे हिन्दू और बहुतेरे मुसलमान हैं। सन् १८११ में इस जिले के भिवानी कसबे में ३५४८७, हिसार में १६८५४, हांसी में १५११० मनुष्य थे। हिसार कमिश्नरी और जिले का सदर स्थान है; पर भिवानी इस जिले में सबसे बड़ा और प्रधान तिजारती कसबा है।

इतिहास—सन् १३५४ ई० में फीरोजशाह तुगलक ने हिसार को बसाया और इसमें पानी पहुंचाने के लिये नहर बनवाया; उसके रहने का यह प्रियस्थान था। सन् १८१० में यह जिले अंगरेजी गवर्नमेंट के आधीन हुआ। सन् १८५७ के बलवे के समय हांसी के समान हिसार में भी देशी फौज बागी हुई थी; परंतु दिल्ली ले लेने से पहलेही पटियाले और बीकानेर की सहायता से अंगरेजी सरकार ने उसको परास्त किया। बलवे के पीछे हिसार जिला पश्चिमोत्तर देश से पंजाब में कर दिया गया।

## हांसी।

हिसार से १५ मील (रायचन्द जंक्शन से २०२ मील) दक्षिण-पूर्व हांसी का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमी यमुना-नहर के समीप हिसार जिले में तहसीली का सदर स्थान हांसी एक कसबा है।

सन् १८११ की जन-संख्या के समय हांसी में १५११० मनुष्य थे; अर्थात् ७८४८ हिंदू, ६६०० मुसलमान, ६५१ जैन, ८७ सिक्ख और ४ कृस्तान।

हांसी के चारो ओर ईंटे की ऊंची दीवार बनी हुई है। नहर के किनारों पर सुंदर वृक्ष लगे हैं; एक उजड़ा हुआ बड़ा किला कसबे से देख पड़ता है। कसबे की सड़कें चौड़ी हैं; इसमें तहसीली, पुलिस स्टेशन, सराय और स्कूल बने हुए हैं।

हांसी से २३ मील दक्षिण-पश्चिम टोसन के समीप एक तालाब के निकट चट्टान में काटे हुए कई एक पुराने लेख हैं; वहां वर्ष में एक बार मेला होता है, जिसमें दूर दूर से बहुत यात्री आते हैं।

**इतिहास**—ऐसी कहावत है कि दिल्ली के तोमर राजपूत राजा अनंगपाल ने हांसी को बसाया था। यह बहुत दिनों तक हरियाना प्रदेश की राजधानी थी; जो सन् १७८३ ई० के अकाल में उजाड़ होकर बहुतेरे वर्षों तक उजड़ी हुई पड़ी रही; परंतु सन् १७९५ में जार्जथामस ने हरियाने के बड़े भाग पर अधिकार करके हांसी में अपना सदर स्थान बनाया; तबसे कसबे की फिर उन्नति होने लगी। सन् १८०२ में अंगरेजी अधिकार होने पर यहां फौजी छावनी बनी। सन् १८५७ के बलवे के समय हांसी की फौज बागी हो गई; बलवाइयों ने यूरोपियनों को मार डाला और देश को लूटा। बलवे शांत होने पर हांसी की छावनी छोड़ दी गई।

## रुहतक।

हांसी से लगभग ५० मील दक्षिण-पूर्व, भिवानी से ३९ मील पूर्वोत्तर और दिल्ली से ४२ मील पश्चिमोत्तर दिल्ली से हिसार जाने वाली सड़क पर पश्चिमी यमुना-नहर के निटक पंजाब के हिसार विभाग में जिले का सदर-स्थान रुहतक एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन संख्या के समय रुहतक कसबे में १६७०२ मनुष्य थे; अर्थात् ८०२१ हिंदू, ७९७७ मुसलमान, ५६७ जैन, ९८ सिक्ख और ३१ क्रस्तान।

रुहतक में जिले की कचहरियों के मकान, तहसीली, पुलिस स्टेशन, गिर्जा, डाकबंगला, स्कूल, अस्पताल और वाटिका हैं; गल्ले की तिजारत होती है; सुंदर पगड़ियां बनती हैं और कार्तिक में घोड़ों की नुमाइश होती है।

**रुहतक जिला**—जिले का क्षेत्रफल १८११ वर्गमील है; इसके उत्तर जींद का राज्य और कर्नाल जिला, पूर्व दिल्ली और कर्नाल जिला, दक्षिण गुरगांव जिला और दो छोटे देशी राज्य और पश्चिम हिसार जिला और जींद का राज्य है।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ५८८०४२ और सन् १८८१ में ५५३६०१ मनुष्य थे; अर्थात् ४६८१०५ हिंदू, ७९५१० मुसलमान,

५००० जैन, १५१ सिक्ख और ३५ कृस्तान इत्यादि। हिंदुओं में १८०७७८ जाट, ५८२११ ब्राह्मण, ७३५४ राजपूत और मुसलमानों में २२६२० राजपूत; १११८ जाट थे। रुहतक जिले में रुहतक (जन-संख्या सन् १८११ में १६७०२) झंझर (जन-संख्या सन् १८११ में ११८८१), वुटाना, गोरना, कलांवर, महीम, वीरी, बहादुरगढ़, बरोदा, मंडलाना, कन्हौर और भिंडो कसबे हैं।

झंझर कसबा रुहतक से २१ मील दक्षिण और दिल्ली से ३५ मील पश्चिम है, जिसमें सन् १८११ में ११८८१ मनुष्य थ; अर्थात् ६८६२ हिंदू, ४१५४ मुसलमान, ६२ जैन और ३ सिक्ख। झंझर में तहसीली कचहरी, पुलिसस्टेशन, और डाकबंगला है और मट्टी के वर्तन बहुत सुंदर बनते हैं। कसबे के चारो ओर उजड़े पुजड़े ताला़व और मक़बरे देख पड़ते हैं।

**इतिहास**—रुहतक बहुत पुराना कसबा है; नये कसबे से उत्तर पुराने कसबे की जगह है। ११ वीं सदी के प्रारंभ में रुहतक के उत्तरीय परगने जींद और कैथल के सिक्ख प्रधानों के अधिकार में थे। दक्षिणीय भाग झंझर के नवाव को, पश्चिम के भाग उसके भाई दादरी और बहादुरगढ़ के नवाव को और मध्यभाग दुजाना के नवाव को मिला। सन् १८२० में जिला क्रम क्रम अंगरेजी अधिकार में आ गया; तब हिसार और सिरसा रुहतक से अलग कर दिए गए। सन् १८२४ में पानीपत जिला भी अलग हो गया और रुहतक कसबा जिले का सदर स्थान बना। सन् १८३२ में यह जिला पश्चिमोत्तर देश में शामिल किया गया। सन् १८५७ के बलवे के समय मुसलमानों ने झंझर, बहादुरगढ़ के नवाव और सिरसा तथा हिसार के भट्टी प्रधानों के आधीन होकर रुहतक के सिविल स्टेशन को लूटा और दफ्तरों को बरबाद किया। कुछ दिनों के पीछे पंजाब से एक फौज ने आकर बागियों को जिले से खदेर दिया। अंगरेजी सरकार ने बागियों की मिलकियतें छीन कर उनमें से एक भाग कुछ दिन के लिये झंझर का नया जिला बनाया और दूसरा भाग बलवे की सहायता के बदले में जींद, पटियाला और नाभा के राजाओं को दे दिया। रुहतक जिला पश्चिमोत्तर देश से निकाल कर पंजाब के आधीन कर दिया गया।

# जींद।

रुहतक क़सबे से लगभग ३० मील उत्तर पंजाब में एकदेशी राज्य की राजधानी जींद है, जहां अभी रेलवे नहीं गई है; पर बनने का सामान हो रहा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जींद क़सबे में १६११ मकान और ७१३४ मनुष्य थे; अर्थात् ४०१२ हिंदू; २८२३ मुसलमान, १५५ जैन, ६५ सिक्ख और १ दूसरा।

जींद राजधानी में सुंदर राजमहल और राजा की कचहरियां बनी हैं। सुंदर वाटिका लगी है और छोटा बाजार है।

जींद क़सबे से ६४ मील पूर्वोत्तर कुरुक्षेत्रका प्रधान शहर थानेसर है। जींद तक कुरुक्षेत्र की सीमा कही जाती है।

**जींद का राज्य**—राज्य का क्षेत्रफल १२६८ वर्गमील है; राज्य अलग अलग ४ खंडों में बंटा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जींद राज्य में ८ छोटे क़सबे, ४१५ गांव, ५१३५४ मकान और २४९८६२ मनुष्य थे; अर्थात् २१०६२७ हिंदू, ३४२४७ मुसलमान, ४३३५ सिक्ख, ६४९ जैन, ३ कृस्तान और १ दूसरा। (सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय राज्य में २८४३०० मनुष्य थे), जींद के राजा की आमदनी ६ लाख रुपए से अधिक और इनका सैनिक बल १२ तोप, २३४ गोलंदाज, ३९२ सवार और १६०० पैदल हैं।

**इतिहास**—जींद का राजवंश सिक्ख संप्रदाय का सिद्धू जाट है। पटियाला, जींद और नाभा ये तीनों राजा फुलकियन वंश कहलाते हैं; क्योंकि फूल नामक एक जाट सरदार से हैं। जींद और नाभा के राजा फूल के बड़े पुत्र तिलोक से और पटियाले का राजा छोटे पुत्र राम से हैं। फूल ने सत्रहवीं शदी के मध्यभाग में अपने नाम से एक गांव, जो नाभाके राज्य में है, बसाया था।

सन् १७६३ ई० में जींद का राज्य नियत हुआ। सन् १७६८ में दिल्ली के बादशाह ने जींद के प्रधान को राजा की पदवी दी। जींद के राजालोग सर्वदा

अंगरेजी सरकार के पक्षपाती बने रहे। जींद के राजा बाघसिंह दिल्ली के बादशाह और सिंधियां के अधीन राजा थे। अंगरेजी अफसर लार्डलेक ने बाघसिंह के प्रबंध से प्रसन्न होकर उनके अधिकार को दृढ़ किया। सन् १८५७ के बलवे के समय जींद के राजा स्वरूपसिंह ने दिल्ली से बागियों को निकालने के लिये सब राजाओं से पहले प्रस्थान किया; उसकी कृतज्ञता में अंगरेजी सरकार ने राजा का राज्य बढ़ाया। जींद के राजा रघुवीरसिंह जी, सी. एस. आई. के पश्चात् वर्तमान नरेश राजा रणवीरसिंह बहादुर, जिनकी अवस्था ७ वर्ष की है, उत्तराधिकारी हुए। जींद के राजाओं को अंगरेजी सरकार से ११ तोपों की सलामी मिलती है।

## भिवानी।

हांसी के रेलवे स्टेशन से २२ मील दक्षिण-पूर्व भिवानी का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के हिसार जिले में सबसे बड़ा तिजारती कसबा और तहसीलीका सदर स्थान भिवानी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भिवानी में ३५४८७ मनुष्य थे; अर्थात् १८०२०२ पुरुष और १७२८५ स्त्रियां। इनमें ३१०२४ हिंदू, ४२१३ मुसलमान, २०७ जैन, २८ सिक्ख और १४ कृस्तान थे।

भिवानी कसबा बिना जोता हुआ मैदान में स्थित है। कसबे में बड़ी सड़कें बनी हुई हैं और तहसिली, पुलिस-स्टेशन, अस्पताल और स्कूल बने हैं। यह जिले में सौदागरी का केंद्र है। इसमें चीनी, मसाले, धातु और निमक की सौदागरी बढ़ती पर है।

भिवानी पहले एक छोटा गांव था, जो सन् १८१७ ई० में बाजार के लिये चुना गया; उसके पश्चात् यह प्रसिद्ध हुई और बीकानेर, जैशलमेर और जयपुर के साथ सौदागरी होने लगी।

## रेवारी।

भिवानी से ५२ मील (रायबंद जंकशन से २१६ मील) दक्षिण-पूर्व और

दिल्ली से ५२ मील दक्षिण-पश्चिम रेवारी का रेलवे जंक्शन है। जहां रेवारी फीरोजपुर रेलवे और राजपूताना रेलवे मिली हैं। पंजाब के गुरगांवा जिले में तहसीली का सदर स्थान रेवारी एक तिजारती कसवा है। रेलवे स्टेशन के निकट एक सुंदर तालाव बनाहुआ है; जिसके निकट कई एक सुंदर मकवरे देख पड़ते हैं। सन् १८९१ की जन-संख्या के समय रेवारी में २७९६४ मनुष्य थे; अर्थात् १४४३२ पुरुष और १३५०२ स्त्रियां। इनमें १६३१४ हिंदू, १०६६० मुसलमान, ८०५ जैन, ६२ कृस्तान, १२ सिक्ख और १ पारसी थे। गुरगांव जिले में रेवारी प्रधान कसवा है।

कसवे में सन् १८६४ ई० में पूर्वसे पश्चिम तक दुकानों के सहित एक अच्छी सड़क वनाई गई। उत्तर से दक्षिण तक कई एक अच्छी सड़क वनी हुई है, जिनके छोरों पर सुन्दर फाटक वने हैं। प्रधान सड़कों के किनारों पर पत्थर और ईंटोंके मकान और दुकान वनी हुई हैं, जिनमें से अनेक उत्तम हैं। गलियों के प्रायः सव मकान मट्टी के हैं। प्रधान सड़कों पर रात्रि में रोशनी होती है। कसवे के चारो ओर एक गोलाकार पक्की सड़क वनी हुई है, जिसके किनारो पर वृक्ष लगे हैं। दक्षिण-पश्चिम राव तेजसिंह का बनाया हुआ एक सुन्दर तालाव है, जिसके चारो ओर पत्थर की सीढ़ियां, पुरुष और स्त्रियों के स्नान के लिये अलग अलग घाट और अनेक मंदिर वने हुए हैं। तालाव के निकट साधारण लोगों के लिये एक वड़ा वाग लगा है; इनके अलावे रेवारी में सरकारी कचहरी और आफिसें, पुलिस स्टेशन, सरकारी वड़ा स्कूल, अस्पताल, सराय और एक उत्तम टौनहाल है।

रेवारी के पीतल और कांसे के वर्तन प्रसिद्ध हैं। रेलवे का जंक्शन होने से यह प्रसिद्ध तिजारती स्थान हुआ है। यहां चीनी, गेहूँ, जव, चना की वड़ी तिजारत होती है। लोहा और निमक का वड़ा व्यापार होता है और कई एक कोठीवाल और वड़े वड़े तिजराती महाजन रहते हैं। रेवारी जंक्शन से ९ मील दक्षिण-पश्चिम वावल का रेलवे स्टेशन है, जिससे १० कोश दूर प्रति वर्ष चैत्र सुदी ११ को भैरवजी का मेला होता है और ३ दिन तक रहता है, वहां दर्शन के लिये बहुत लोग जाते हैं, उस देश के मलाह

आगे एक क्वांरी कन्या भैरव को अर्पण करते हैं, उस कन्या का विवाह नहीं होता. उनको विश्वास है कि भैरव को अर्पी हुई कन्या के प्रभाव से नाव नहीं डूबेगी।

इतिहास—रिवाड़ी पुराना कसबा है, जिसको लगभग १००० ई० में राजा रेवा ने बसाया और अपनी पुत्री रेवाड़ी के नाम से इसका नाम रक्खा। कसबे की दीवार के पूर्व पुराने कसबे की तबाहियां देखने में आती हैं। रेवाड़ी के राजा ने मुगलों के आधीन कसबे के निकट गोकुलगढ़ नामक किला बनवाया था, जो अब उजड़ रहा है। मुगलराज्य की घटती के समय रेवाड़ी प्रथम महाराष्ट्रों के, पीछे भरतपुर के राजा के हाथ में आई। सन् १८०५ में यह परगना अङ्गरेजी अधिकार में आया और कुछ दिनों के लिये रेवाड़ी कसबा जिले का सदर स्थान हुआ। सन् १८०५ में रेवाड़ी मिलकियत भरतपुर के राजा से लेकर तेजसिंह को दी गई। सन् १८५७ के बलवे में तेजसिंह का पोता राव तुलाराम स्वाधीन बन कर बागी हुआ; उस अपराध से उसकी मिलकियत जप्त कर ली गई।

## गुरगांवा।

रेवाड़ी से ३२ मील पूर्वोत्तर और दिल्ली से २० मील दक्षिण-पश्चिम गुरगांवा का रेलवे स्टेशन है। पंजाब के दिल्ली विभाग में जिले का सदर स्थान गुरगावां एक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गुरगावां में ३१९० मनुष्य थे; अर्थात् २३८२ हिंदू, १४४९ मुसलमान १०० जैन, ३४ सिक्ख और २५ दूसरे।

प्रधान बाजार में सड़क के किनारों पर ईंटे की दुकानें बनी हुई हैं। सरकारी इमारतों में जिले की कचहरी के मकान, तहसीली, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, बंगला, सराय और सुँदर वाटिका हैं। चैत्र महीने में देवी की पूजा के लिये गुरगावां में बहुत यात्री आते हैं।

**गुरगावां जिला**—जिले का क्षेत्रफल १९३८ वर्ग मील है; इसके उत्तर रुहतक और दिल्ली जिला; पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण अलवर के राज्य का भाग, जयपुर, नाभा और दुजाना के राज्य; दक्षिण भरतपुर का राज्य और पश्चिमोत्तर देश में मथुरा जिला; पूर्व यमुना नदी और पूर्वोत्तर दिल्ली जिला है। जिले का सदर स्थान गुरगांवा कसबे में है; परंतु आबादी और तिजारत के विषय में रेवारी प्रधान है। पहाड़ियों के दक्षिणी भाग में लोहे का ओर (जिससे लोहा बनता है) बहुत होते हैं। जिले में जंगल नहीं है।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ६६८६९७ और सन् १८८१ में ६४१८४८ मनुष्य थे; अर्थात् ४३१२६४ हिंदू, १९८६१० मुसलमान, ३७७७ जैन, १२७ सिक्ख और ७० कृस्तान। हिंदू और जैनों में जाट, अहीर, ब्राह्मण और बनियां बहुत हैं; इनके पश्चात् राजपूत और गूजर का नम्बर है। गुरगांवा जिले में रेवारी (जन-संख्या सन् १८११ में २७९३४), पलवाला (जन-संख्या सन् १८११ में ११२२७), फर्रुक्ख नगर, सोहना, फीरोज पुर, झिरका, होडल, नूह और गुरगांवा कसबे हैं।

**इतिहास**—सन् १८०३ ई० में गुरगांवा अंगरेजी अधिकार में आया। जिले के भाग क्रम क्रम से अंगरेजी अधिकार में आये; सबसे पीछे सन् १८५८ में फर्रुखनगर और झंझट के नवाबों की मिलकियत जप्त कर ली गई। पहले जिले का सदर स्थान भरवास में था। सन् १८२१ में गुरगांवा में हुआ; गुरगावां जिला सन् १८३२ में पश्चिमोत्तर देश में मिलाया गया था; परंतु सन् १८५८ में पंजाब में कर दिया गया।

---

# बीसवां अध्याय।

## दिल्ली।

## दिल्ली।

गुरगांवा से २० मील ( रेवारी जंक्शन से ५२ मील ) पूर्वोत्तर दिल्ली का रेलवे स्टेशन है, जिससे टुंडला होकर १४३ मील दक्षिण आगरा शहर; गाजियाबाद और सहारनपुर हो कर ३४१ मील और रेवारी और फीरोजपुर होकर ३५२ मील उत्तर कुछ पश्चिम लाहौर शहर; कानपुर होकर ३१० मील पूर्व दक्षिण इलाहाबाद; रेवारो जंक्शन और अहमदाबाद हो कर ८८८ मील दक्षिण कुछ पश्चिम बंबई शहर और कानपुर और पटना हो कर ९५४ मील पूर्व दक्षिण कलकत्ता है। दिल्ली का समय मद्रास और रेलवे के समय से १३ मिन्ट और कलकत्ते के समय से ४६ मिन्ट कम और बंबई के समय से १७ मिन्ट अधिक है।

पंजाब में यमुना नदी के पश्चिम अर्थात् दहिने किनारे पर ( २८ अंश ३८ कला ५८ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश १६ कला ३० विकला पूर्व देशांतर में )

किस्मत और जिले का सदर स्थान पंजाब में सबसे बड़ा शहर दिल्ली है, जिसको शाहजहानाबाद भी कहते हैं। क्योंकि वर्तमान शहर को बादशाह शाहजहां ने सन् १६४० ई० में बना कर इसका नाम शाहजहांनाबाद रक्खा।

सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय दिल्ली शहर और छावनी में १९२५७९ मनुष्य थे; अर्थात् १०५६७७ पुरुष और ८६९०२ स्त्रियां। इनमें १०८०५८ हिंदू, ७१२३८ मुसलमान, ३२५६ जैन, १७०० क्रुस्तान, २८९ सिक्ख, ३१ पारसी, ६ यहूदी और १ दूसरा था। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ७ वां और पंजाब में पहला शहर है।

नई दिल्ली के ३ बगलों में शाहजहां की बनवाई हुई ६३३३ गज अर्थात् ३½ मील से अधिक लंबी, ४ गज चौड़ी और ९ गज ऊंची दृढ़ दीवार बनी हुई है, जो अब स्थान स्थान में उजड़ रही है, दीवार के बाहर खाई है; शहर के पूर्व बगल में यमुना की ओर नीचे से भूमि के सतह तक पक्की दीवार बनी हुई है। पहले शहर पन्नाह में १३ फाटक और १६ खिड़कियां थी, जिनमें से अब १० फाटक हैं। इनमें से उत्तर के काश्मीर दरवाजा और मोरी दरवाजा पश्चिम के काबुल दरवाजा और लाहौर दरवाजा; दक्षिण-पश्चिम फरोसखाना दरवाजा और अजमेर दरवाजा और दक्षिण के रूम दरवाजा, जिसको तुरुकमाल दरवाजा भी कहते हैं; और दिल्ली दरवाजा प्रधान हैं। इनके अलावे पूर्व यमुना की ओर राजघाट दरवाजा और पूर्वोत्तर कलकत्ता दरवाजा है। दिल्ली की प्रधान सड़क चांदनी चौक है, जो किले के पश्चिम के लाहौर फाटक से शहर के पश्चिम के लाहौर फाटक तक पूर्वसे सीधी पश्चिम चली गई है, सड़क के दोनों किनारों पर वृक्ष लगे हैं और बीच में सड़क के नीचे पानी की नहर बहती है। सड़क पूर्व ओर ¾ मील लंबी और ७४ फीट चौड़ी है। चांदनी चौक की सड़क पर दिल्ली के सबसे उत्तम दुकानें देखनें में आती हैं, जिनमें देशी दस्तकारी की प्रधान वस्तुएं, जवाहिरात, कराचोबी के काम के असबाब इत्यादि चीजें रहती हैं।

दिल्ली में १० अत्युत्तम प्रधान सड़के हैं, जिनके किनारों पर रात में रोशनी होती है। दूसरी तंग और टेढ़ी अनेक सड़के बनी हुई हैं। दिल्ली के देशी शहर के मकान ईंटे के सुंदर बने हुये हैं। यहां के बाजारों में चांदनी चौक, दरीबा, लालकुआं, जवहरी बाजार और चावड़ी प्रसिद्ध हैं।

दिल्ली में पानी की नल सर्वत्र लगी है और यमुना की नहर शहर की सड़कों में बहती है। इस नहर को चौदहवीं सदी में फिरोजशाह तुगलकदिल्ली से लग भग ३० कोस दूर हरियाने के सफीदो परगने तक लाया था और पीछे सत्रहवीं सदी में शाहजहां सफीदो से दिल्ली में लाया, परन्तु पीछे यह सूख गई थी; सरकार ने इसको फिर सुधार कर पूर्ववत् कर दिया है।

रेलवे स्टेशन से थोड़ी दूर पर एक सराय और एक नई धर्मशाला और

दरीवा बाजार में समरू की बेगम की कोठी के सामने दिल्ली पुस्तकालय है, जिसमें सर्व साधारण लोग अपने अपने मत की पुस्तकें और अखबार पढ़ सकते हैं। लखनऊ वाले के बाग के निकट कल द्वारा अन्न भूना जाता है। इसके आसपास सूत कातने, कपड़ा बुनने और आटा पीसने के लिये कई एक कल कारखाने बने हैं। शहर के दक्षिण-पश्चिम के भाग में धनी दुकाने और देशी लोगों की बस्ती है। किले के दक्षिण दरियागंज में फौजी छावनी फैली है।

दिल्ली की सरकारी इमारतों में कमिस्नर की कचहरी, जिले की कचहरियां के आफिस, तहसीली, पुलिश स्टेशन, जिला जेल, पागलखाना, असपताल, दवाखाना है। चंदे और म्यूनिसपलिटी के खर्च से एक गरीबखाना नियत हुआ है। दिल्ली में चार गिर्जे हैं। काश्मीर दरवाजे के पास छोटी कचहरी, सेंटजर्ज का चर्च, गवर्नमेंट कालिज और लाइब्रेरी और काश्मीर दरवाजे से पश्चिमोत्तर सिविल स्टेशन और फौजी बारक है। जामामसजिद से उत्तर सुंदर सिविल अस्पताल बना है।

शहर से पूर्व यमुना नदी पर १२ दरवाजे का २६४० फीट लंबा रेलवे पुल है, जिसके पाए पानी की सतह से ३३ फीट नीचे तक हैं, पुल पर नीचे बैल गाड़ी और ऊपर रेलगाड़ी चलती है। यह पुल सन् १८६७ ई० की पहली जनवरी को खुला। इसके बनने में १६६०३५५ रुपए खर्च हुए।

यमुना के पश्चिम किनारे पर रेलवे पुल के निकट सोलहवीं शदी में सलीमसाह का बनवाया हुआ सलीमगढ़ का उजड़ा किला है।

दिल्ली में बड़ी सौदागरी होती है, नील, रुई, रेशम, अन्न अनेक प्रकार के तेल के बीज, घी, धातु, निमक, चमड़े, अंगरेजी चीजें इत्यादि वस्तु दूसरी जगहों से दिल्ली में आती हैं और पूर्वोक्त वस्तुए तथा तंबाकू, चिनी, तेल, जवाहरात और सोना या चांदी के लैस के बने हुये सरंजाम दिल्ली से अन्य शहरों में भेजे जाते हैं। काबुल, जींद, अलवर, बीकानेर जयपुर, और पंजाब के सम्पूर्ण शहरों के महाजनों की कोठियां और दुकानें दिल्ली में विद्यमान हैं।

वर्तमान दिल्ली शाहजहांनाबाद से दक्षिण राय पिथौरा के किले और तुगलकाबाद तक लग भग १ मील को लंबाई में ४५ वर्गमील के क्षेत्र फल में पुराने शहर, किले और इमारतों की तवाहियां फैली हुई हैं, इनमें ७ शहरों की निशानियां, जिनको समय समय पर दिल्ली के ७ बादशाहों ने बनवाया था, देखने में आती हैं।

**कम्पनी बाग**—शहर के मध्य में चांदनी चौक सड़क के पासहो-उत्तर और रेलवे के दक्षिण कंपनीबाग; जिसको रानीबाग और विक्टोरिया-बाग कहते हैं, फैला हुआ है, बाग में विविध प्रकार के वृक्ष और पौधे तथा फूलों के वेल लगाये गए हैं। बाग के किनारे पर सड़क के निकट पत्थर का एक बड़ा हाथी खड़ा है; हाथी के नीचे खोद कर लिखा हुआ है कि बादशाह शाहजहां ने इस हाथी को सन् १६४५ ई० में ग्वालियर से लाकर अपने नए महल के दक्षिण फाटक के बाहर रक्खा।

बाग के दक्षिणीय भाग में चांदनी चौक सड़क के समीप एक बड़ी इमारत मे अजायब खाना; दरबार हाल, लाइब्रेरी और पढ़ने का कमरा हैं। अजायब खाना. छोटा है. इसमें थोड़ी थोड़ी मामूली वस्तुओं के अलावे मरे हुए ३ आश्चर्य जानवर देखने में आये थे.—(१) बकरी के एक बच्चे का सिर, ८ पैर और २ पूछ, (२) भैंस के एक बच्चे के एकही धड़ के ऊपर २ गले और २ शिर और (३) एक भैंस के बच्चे के एकही गले के ऊपर २ सिर।

बाग के दक्षिण चांदनी चौक सड़क पर १२८ फीट ऊंचा सुर्ख पत्थर का बना हुआ घड़ी का बुर्ज, चारो ओर से घड़ी का समय देख पड़ता है और घंटे का शब्द दूर तक जाता है। बाग के निकट घंटेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है।

**फतहपुरी मसजिद**—चांदनी चौक के पश्चिम ओर के पास फतहपुरी मसजिद है। बादशाह शाहजहां की स्त्री फतहपुरी बेगम ने सन् १६५० ई० में सुर्ख पत्थर से इसको बनवाया, इसके २ बुर्ज १०५ फीट उंचे हैं।

**जामा मसजिद**—चांदनी चौक से थोड़े दक्षिण किले के दक्षिण दीवार से पश्चिम ऊंचिभूमि पर दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मसजिद है, इस

जामामसजिद, दिल्ली

कई एक वर्षों से मसजिद देखने वाले हिंदुओं को मुसलमान कमेटी के कर्मचारी से पास, जो सहज में मिल जाता है; लेना पड़ता है। मैं भी पास लेकर मसजिद देखने गया था।

**जैनमंदिर**—जामा मसजिद के पश्चिमोत्तर अनार की गली में हरसुखराय कागजी का बनवाया हुआ जैनमंदिर है। मंदिर के आगे मार्बुल के छोटे आंगन के बगलों में सुंदर ओसारे बने हैं। खास मंदिर के ऊपर गुंबज और भीतर की छत और दीवारों पर सुनहला मुलम्मा है। मंदिर में मार्बुल के छोटे खंभों की २ पंक्तियां और इसके मध्य में एक चबूतरे पर हाथीदांत की बनी हुई चांदनी के नीचे एक छोटो जैनमूर्ति बैठी है।

**काला मसजिद**—जामा मसजिद से १ मील से अधिक दक्षिण शहर के दक्षिण के तुर्कमान दरवाजे के समीप फीरोजशाह तुगलक के समय (सन् १३८६ ई०) की बनी हुई काला मसजिद है, काले रंग से रंगे जाने के कारण इसका नाम काला मसजिद पड़ता है। मसजिद ६६ फीट ऊंची दो मंजिली है, इसके नीचे वाली मंजिल २८ फीट ऊंची है।

**किला**—किले देखने के लिये दरियागंज में ब्रिगेडियर साहब से पास लेना होता है; पास सहज में मिल जाता है। शहर के पूर्व यमुना के दहिने किनारे पर उत्तर से दक्षिण तक ३२०० फीट लंबा और पूर्व से पश्चिम तक १६०० फीट चौड़ा दिल्ली का प्रसिद्ध किला, जो मुगल बादशाहों का शाही महल था, स्थित है। किले के तीन ओर गोलाकार पायों के साथ सुर्ख पत्थर की कंगूरेदार ऊंची दीवार खड़ी है और पूर्व ओर यमुना की छोड़ी हुई धारा के पास नीचे से पृथ्वी के सतह तक दृढ़ दीवार बनी है। चांदनी चौक की सड़क शहर से पूर्व किले के लाहौर फाटक तक गई है। किले के पश्चिम की दीवार में लाहौर फाटक, जो किले का प्रधान दरवाजा है और दक्षिण की दीवार में दिल्ली फाटक है। दोनों फाटकों की बनावट और अगवास प्रायः एकही तरह की है। लाहौर फाटक के भीतर उससे सीधा पूर्व ३७५ फीट लंबी मेहराबदार दो मंजिली इमारत है, इसके भीतर दोनों बगलों में दूकानें बनी हुई हैं।

शाहजहां ने किले और इसके भीतर की इमारतों को सन् १६३८ से लगभग १६४८ ई० तक बनवाया था। उसके समय से महम्मद बहादुरशाह के समय सन् १८५७ तक यह किला शाही महल था। किले के भीतर बादशाह के महल का बड़ा विस्तार था। उसमें बाग की ३ और दूसरी १३ कचहरियां थीं, अब महल विभाग में केवल नौबत खाना, दीवानआम, दीवानखास, मोती मसजिद और दो चार छोटी इमारतें खड़ी हैं। सन् १८५७ के बलवे के पश्चात् किले के महल का बड़ा भाग अंगरेजी बारकों के लिये क्रम क्रम से तोड दिया गया, अब उस जगह बारक अर्थात् सैनिकगृह और मेगजीन अर्थात् शस्त्रागार की पंक्तियां देखने में आती हैं।

दीवानआम—दुकानों की इमारत से पूर्व नक्कारखाना और नक्कारखाने से पूर्व १८० फीट लंबा और १५० फीट चौड़ा सुर्ख पत्थर से बना हुआ दीवानआम है। यह तीन ओर से खुला हुआ ४६ खंभों पर बना है। पूर्व ओर दीवार के निकट मध्य में भूमि से १० फीट ऊंचा पत्थर का तख्त है, जिसके ४ खंभे और चांदनी चमकीले मार्बुल से बनी हुई है। तख्त की चांदनी, दीवार और खंभों में विविध रंग के बहुमूल्य पत्थर की बारीक पच्चीकारी से फूल, फल, चिड़िए और छोटे छोटे जानवर बनाए गए हैं। तख्त के पीछे एक दरवाजा है, जिससे बादशाह पीछेवाले खानगी कमरों में प्रवेश करता था। इस समय सायबान के पीछे कमरों में दफ्तर का काम होता है। कमरों में जाने के लिये पीछे से दरवाजा है।

दीवानखास—यह दीवानआम से पूर्वोत्तर किले के पूर्व किनारे पर लगभग १५० फीट लंबा और १०० फीट चौड़ा उजले चमकीले मार्बुल का अत्युत्तम सायबान है; इसको छत के चारो कोनों पर मार्बुल का एक एक छोटा गुंबज बना है। सायबान के ३ बगलों में खंभे लगे हैं और पूर्व यमुना की ओर मार्बुल की जालीदार सुन्दर टट्टियां बनी हैं। सायबान में २८ खंभे चौखूटे, जिनका प्रत्येक बगल ३$\frac{1}{4}$ फीट चौड़ा है और ४ चोड़, जिनकी चौड़ाई ३३ फीट और मोटाई २ फीट से कुछ कम है, लगे हैं। खंभों के निचले भागमें प्रत्येक रंग के बहु मूल्य पत्थरों की पच्चीकारी करके फूल और लतियां बनाई

हुई है और ऊपरी भाग में तथा सायवान के नीचें की छत में सोने के तबक से फूल, लता और क्यारियां बनी हैं। दीवानखास की नफीस पच्चीकारी और उत्तम कारीगरी देखकर यूरोपियन लोग विस्मित हो जाते हैं। लोग कहते हैं कि इसकी छत में चांदी जड़ीथी. जिसको सन् १७६० ई० में महारट्टों ने उजाड़ लिया। सायवान का फर्श मार्बुल का है; पूर्व ओर दीवार के समीप मार्बुल की बड़ी चौकी रक्खी हुई है; इसीपर बादशाह; शाहजहां का ताउस-तख्त अर्थात् मयूरासन रहता था, जिसको सन् १७३१ ई० में पारस के नादिर शाह लेगए। वह अवतक पारसकी राजधानी तेहरान के शाहीमहल में रक्खा ह। शाहजहां के समय तख्त के पीछे दो नकली मयूर, जिनके पंखों के रंग नीलमणि, लाल, पन्ना, मोती और दूसरे मूल्यवान पत्थर जड़कर बने थे, पांख फैलाये हुए खड़े थे। दोनों मोरों के मध्य में मामूली कदका एक नकली सूगा, जो एकही पन्ना काटकर बना था, खड़ाथा। ६ फीट लंबा और ४ फीट चौड़ा जिसमें ६ पाव लगेथे, सोने का तख्त था। तख्त पर लाल, हीरा और मूजरद बहुत जड़े हुए थे और ऊसके ऊपर १२ चोवों पर सोने की चांदनी थी। चांदनी और चोवों पर मूल्यवान पत्थर जड़े हुए थे। चांदनी के कीनारों पर मोतियों की झालरें लगी हुई थीं। तख्त के दोनों ओर मखमल पर उत्तम कराचोवी के काम किए हुए दो छत्ता खड़े किए हुए थे; जिनमें मोतियों की झालरें लगी थी। छाताओं के डाट सोने के, जिनपर हीरे जड़े थे; ८ फीट ऊंचे थे। टवरनियर जौहरीने ताउसतख्त का दाम साढ़े छह किरोड़ तजवीज किया था। सायवान की छत के चारो ओर प्रसिद्ध लेख है, जिसका अर्थ यह है कि यदि पृथ्वी पर स्वर्ग है, तो यही है, इसका भावार्थ यह है कि इस समय पृथ्वीपर इसके समान सुन्दर महल दूसरा नहीं है।

समन वुर्ज—दीवानखास से ५० फीट दक्षिण यमुना के किनारे पर एक मुरब्बा इमारत है; इसकी दीवार में बाहर सुर्ख पत्थर के टुकड़े और भीतर मार्बुल का काम है। भीतर दीवार मे सोनहले काम और अनेक रंग के मूल्यवान पत्थर की पच्चीकारी से वेल बूटे बने हैं और नफीस काम की अनेक मार्बुल की जालीदार टट्टियां लगी है। समन वुर्ज से दक्षिण और दीवान आमसे पूर्व

यमुनाके निकट रंगमहल में स्त्रियों की कोठरियां, जो सोनहुले तबक से भूषित की हुई हैं, मार्बुल की बनी हैं। पहिले रंगमहल के चारो ओर बाग और फव्वारे थे, अब सब सामान उठा दिया गया है और मकान तोड़ दिए गए हैं। बचे हुए मकानों में अंगरेजी सिपाही रहते हैं।

स्नानघर—दीवानखास से उत्तर १३५ फीट लंबा और ६० फीट चौड़ा स्नान घर है; इसमें ३ कमरे बने हुए हैं; तीनों के ऊपर मार्बुल के तीन गुंबज और भीतर सफेद मार्बुल का फर्श, एक एक हौज और जगह जगह अनेक रंग के पत्थरों की पच्चीकारी के काम हैं। एक कमरे की दीवार में मार्बुल का एक छोटा हौज़ बना हुआ है।

मोती मसजिद—स्नानघर के पश्चिम लगभग ७५ फीट लंबी और इतनीही चौड़ी मोतीमसजिद है; इसके भीतर मार्बुल और बाहर की ओर सुर्ख पत्थर लगे हैं; खास मसजिद के ऊपर मार्बुल के ३ गुंबज और आगे छोटा आंगन है। औरंगज़ेब ने सन् १६३५ ई० में इसको बनवाया।

स्नानघर से उत्तर ओर यमुना के समीप मार्बुल के १६ खंभोंपर चारो ओर से खुला हुआ एक सुन्दर बंगला है और पश्चिम ओर सुर्ख पत्थर के बने हुए कई एक सायबान हैं।

**सोनहुली मसजिद**—किले से दक्षिण रोशनदौला की एक छोटी मसजिद है; इसके ३ गुंबजों पर सोना का मुलम्मा किया हुआ है, इसलिये इसको सुनहुली मसजिद भी कहते हैं। बादशाह महम्मद शाह के राज्य के समय सन् १७२१ ई० में रोशनदौला ने इसको बनावाया।

**अशोकस्तंभ**—शहर के पश्चिमवाले काबुल दरवाजे से लगभग १ मील उत्तर कुछ पश्चिम हिंदूराव के मकान से, जो अब फौजी अस्पताल बना है; २०० गज दक्षिण अशोक स्तंभ है। स्तंभ के नीचे के भाग के लेख से जान पड़ता है कि सन् ईस्वी के पहले तीसरी शदी में बौद्ध राजा अशोक ने मेरठ के पास इसको खड़ा किया। बादशाह फीरोजशाह ने सन् १३५६ ई० में इसको लाकर कुश्कशिकार महल में खड़ा करवाया। सन् १७१३-१७१९ ई० में बारू-

द के मेगजीन उड़ने से स्तंभ ५ टुकड़ा हो गया। सन् १८६७ में अंगरेजी सरकार ने स्तंभ को इस स्थान में खड़ा किया।

फतहगढ़—अशोक स्तंभ से लगभग ¼ मील दक्षिण मैरोजी के पास सन् १८५७ ई० के बलवे के विजय की यादगार के लिये अंगरेज महाराज का बनवाया हुआ आठपहला ऊंचा बुर्ज है। जो अफसर बलवे के समय यहां मारे गए और यहा लड़े; उनके नाम के यादगार के लिये यह बुर्ज बना है, इसके सिर पर चढ़ने से चारो ओर का सुन्दर दृश्य देखने में आता है।

इसके निकट के मैदान में महारानी इंग्लैंडेश्वरी विक्टोरिया को सन् १८७७ ई० की पहली जनवरी को भारत वर्ष के एम्प्रेस का खताब मिला। उसदिन हिन्दुस्तान के गवर्नरजनरल लार्ड लिटन और संपूर्ण हिंदुस्तान के महाराजे, रईस और अंगरेज अफसर इकट्ठे हुए और लगभग ५०००० अंगरेजी और हिंदुस्तानी फौज एकत्र हुई थी।

फीरोजाबाद का किला और अशोकस्तंभ—शहर के दिल्ली फाटक से ¼ मील दक्षिण जेलखाना है, जिसमें कागज, चटाई, गलीचा आदि असबाब बनाए जाते हैं। जेलखाने से लगभग २५० गज पूर्व फीरोजाबाद का किला उजाड़ पड़ा है, जिसको सन् १३५४ ई० में दिल्ली के बादशाह फीरोजशाह तुगलक ने बनवाया था। किले में यमुना से ½ मील पश्चिम फीरोजशाह के उजड़े हुए महल की इमारत की छत पर पत्थर का एक बहुत पुराना अशोक स्तंभ खड़ा है। सन् १३५६ ई० में दिल्ली के बादशाह फीरोजशाह तुगलक ने इसको शिवालिक पहाड़ी के पादमूल के निकट टोफर से, यहां यमुना मैदान में प्रवेश करती है, मंगवा कर अपने मकान के सिरपर खड़ा करवाया था। तबसे यह फीरोजशाह के स्तंभ करके प्रसिद्ध है। स्तंभ की लंबाई गचके भीतर ४ फीट और ऊपर ३८½ फीट और गचके पास इसकी जड़ का घेरा १०¼ फीट है। स्तंभ पर १० फीट के ऊपर खोदा हुआ कई एक नागरी लेख है, जिनमें से एक में संवत् १५८१ (सन् १५२४ ई०) लिखा है, जो दिल्ली में ले आने के

पीछे लिखा गया। नागरी लेख के ऊपर सन् ईस्वी के लगभग ३०० वर्ष पहले का पाली अक्षर का लेख विद्यमान है। लेख में राजा अशोक की धर्माज्ञा लिखी हुई है कि हिंसा मतकरो। स्तंभ के एक दूसरे लेख में अजमेर के चौहान राजा विसलदेव के, जिसका प्रताप हिमालय से विंध्यतक फैलाथा; विजय का वृत्तांत देख पड़ता है। यह लेख दो भाग में है। एक छोटा लेख राजा अशोक की धर्माज्ञा के ऊपर और दूसरा बड़ा लेख उसके नीचे; दोनों में संवत् १२२० (सन् ११६३ ई०) लिखा है। एक छोटे लेख में संवत् १३६९ (सन् १३१२ ई० ) और संवत् १४१६ (सन् १३५९ ई०) है।

इंद्रपाथ—इंद्रप्रस्थ का अपभ्रंश इंद्रपाथ है। इसको पुराना किला भी कहते हैं। शहर के दिल्ली फाटक से २ मील दक्षिण राजा युधिष्ठिर के पुराने शहर इंद्रप्रस्थ के स्थान पर पुराना किला है। सोलहवीं शदीं में बादशाह हुमायूं ने इसकिले की मरम्मत करवा करके इसका नाम दीनपनाह रक्खा था। इसकिले की दीवार बहुतेरे स्थानों में टुकड़े टुकड़े हो गई हैं। संपूर्ण फाटक बंद हैं, केवल दक्षिण-पश्चिम एक फाटक खुला रहता है।

किलाकोना मसजिद—शेरशाह ने सन् ९४८ हिजरी (सन् १५४१ ई०) में इसको बनवाया। मसजिद सुर्ख पत्थर की, जिसमें मार्बुल और स्लेट जड़े हुए हैं, बनी है। इसका अगवास १५० फीट लंबा है। मसजिद में कुरान का बहुत शिला लेख विद्यमान हैं। मसजिद के दक्षिण सुर्ख पत्थर की बनी हुई ७० फीट ऊंची शेरशाह मंडल नामक अठपहली इमारत है। सन् ९६३ हिजरी (सन् १५५५ ई०) में हुमायूं ने इसको अपनी लाईब्रेरी बनाया। वह उसी रात को सीढ़ी से गिर गया और चंद रोज बाद उसकी चोट से मरगया।

निजामुद्दीन अउलिया का मकबरा—यह इंद्रपाथ से लगभग १ मील दक्षिण एक घेरे में स्थित है। इसके चारो ओर अनेक कबरें और पाक इमारतें हैं। बाहर के मेहराबदार फाटक से ३० गज भीतर सफेद मार्बुल की बनी हुई चौसठ खंभा नामक इमारत है, जिसके पश्चिम एक घेरे १८ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा मार्बुल से बना हुआ निजामुद्दीन चिस्ती

का मकबरा खड़ा है। इसका बरंदा ८ फीट चौड़ा है। मकबरे को मीरमीरन के पुत्र ने बनवाया। इसकी शिला लेख में सन् १०६३ हिजरी (सन् १६५२ ई०) लिखी हुई है।

घेरे के भीतर अमीर खुसरू कवी का चौखूटा मकबरा है। यह कवियों में इतना प्रसिद्ध हुआ कि पारस का कवी सादी इसको देखने के निमित्त हिंदुस्तान में आया। खुसरू का दादा, जो तुरुकी था, हिंदुस्तान में आया और दिल्ली में मरा। सन् १३१५ में खुसरू कवि दिल्ली में दफन किया गया। खुसरू के मकबरे के उत्तर और दरवाजे के दहिने दूसरे अकबर के पुत्र मिर्जा जहांगीर की और दरवाजे के बाएं महम्मदशाह की; जो सन् १७२० से १७४८ तक दिल्ली का बादशाह था और उसके दक्षिण शाहजहां की पुत्री जहानआरा की कबर है। जहानआरा की कबर के बाएं शाह आलम के पुत्र अलीगौहर मिर्जा की और दहिने दूसरे अकबर की लड़की जमीलुन्नीसा की कबर है।

**हुमायूं का मकबरा**—शहर से लगभग ३ मील और इंद्रपाथ से १ मील दक्षिण और निजामुद्दीन के मकबरे से पश्चिम ११ एकड़ के बड़े बाग़ में, जिसके चारो ओर दीवार है। दिल्ली के बादशाह हुमायूं का मकबरा खड़ा है। प्रथम सुर्ख पत्थर का ऊंचा फाटक मिलता है, उसके भीतर दूसरा दर्वाजा है, जिसकी बगल पर लिखा है कि बादशाह हुमायू कि विधवा, नवाब हमीदाबानू बेगम ने, जिसका दूसरा नाम हाजी बेगम है अपने पति की मृत्यु के पश्चात् इस मकबरे को बनवाया। सन् १५५५ ई० में हुमायूं मरा। मकबरा १५ लाख रुपए के खर्च से १६ वर्ष में तैयार हुआ। हमीदाबानू बेगम और शाही खांदान के दूसरे लोग भी यहां दफन किए गए हैं। घेरे के मध्य में, जिसमें ४ फाटक लगे हुए हैं, लगभग २० फीट ऊंचा २०० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा चबूतरा है। चबूतरे के बगलों में मेहराबियां बनी हैं और उसके ऊपर चढ़ने के लिये ४ बड़ी सीढ़िया है। चबूतरे के मध्य में सुर्ख पत्थर का, जिसमें जगह जगह मार्बुल लगा है, अठपहला मकबरा खड़ा है, जिसके ऊपर मध्य में मार्बुल का बड़ा गुंबज है। मकबरे के प्रत्येक कोनों पर छोटा गुंबजवाला एक
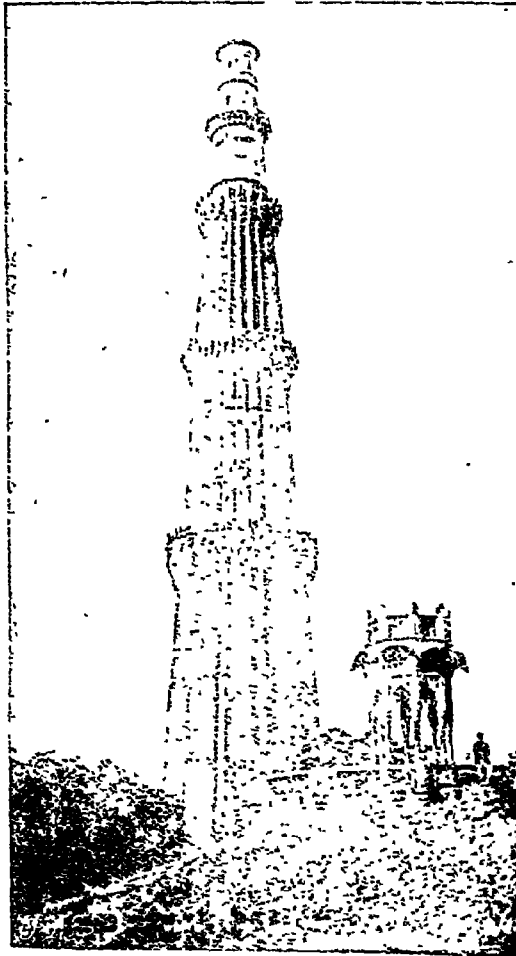
कुतबमिनार, दिल्ली

कमरा और प्रत्येक दिशाओं के मध्य में ४० फीट ऊंचा मेहरावदार एक पेशगाह है। बगल के दरवाजे से एक कमरे में जाना होता है। उसमें सफेद मार्बुल की ३ कबर हैं;—दूसरे आलमगीर, फर्रुखसियर और जहांदारशाह की। मध्य के गुंबज के नीचे उजले मार्बुल की बिना लेख की सादी हुमायूं की नकली कबर है। मकबरे के बागमें पानी का हौज और कई एक इमारतें हैं।

हुमायूं के मकबरे से लगभग १ मील पश्चिम एक कबरगाह में अनेक मकबरे और छोटी मसजिदें है। सबसे अधिक प्रसिद्ध मुसलमानी फकीर निजामुद्दीन का दरगाह है। दरगाह के निकट हाल के सन् १८५७ के पहले के शाही घराने के लोग गाड़े गए हैं।

**अबजरवेटरी**—शहर के अजमेर फाटक से २ मील दक्षिण प्रधान सड़क के २५० गज बाएं, अबजर वेटरी अर्थात् ग्रहादि दर्शन स्थान है, जिस में ज्योतिष विद्यावालों के उपयोगी यंत्र रक्खे हुए हैं। दिल्ली के बादशाहमहम्मद-शाह के राज्य के समय आंबेर के राजा सवाई जयसिंह ने, जिन्होंने सन् १७२८ में जयपुर बसाया, सन् ११३७ हिजरी (सन् १७२४ ई०) में इसको बनवाया।

**सफदरजंग का मकबरा**—अबजर वेटरी से ३ मील दक्षिण सड़क के दहिने दिल्ली के बादशाह अहमदशाह के वजीर सफदर जंग का मकबरा है। सफदरजंग सन् १७५३ ई० में मरगया, उसके पश्चात् उसके पुत्र लखनऊ के प्रसिद्ध नवाब शुजाउद्दौला ने ३ लाख रुपए के खर्च से इस मकबरे को बनवाया; एक घेरे के भीतर ९० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा सुर्ख पत्थर और गच के काम से बना हुआ तीन मंजिला मकबरा खड़ा है; मध्य के कमरे में सफदरजंग और उसकी बीबी खुजिस्ता बानू बेगम की कबर हैं। दरवाजे के बाएं एक सराय और दहिने ३ गुंबज की एक मसजिद है।

**कुतबमीनार**—दिल्ली के अजमेर फाटक से लग भग १० मील और सफदरजंग के मकबरे से ५ मील दक्षिण कुछ पश्चिम कुतबइसलाम मसजिद के आंगन के दक्षिण पूर्व के कोनेमें कुतबमीनार खड़ा है; जिसको कुतब की लाट भी कहते हैं। भारतवर्ष में इतनी ऊंची कोई इमारत नहीं है। मीनार की नेंव किसने दी,

अब तक ठीक नहीं जाना गया। बहुतेरों को विश्वास है, कि दिल्ली के राजा पृथ्वीराज ने इसको बनवाया था; किंतु शिला लेखसे जान पड़ता है कि दिल्ली के मुसलमान बादशाह कुतबुद्दीन ऐबक ने सन् १२०६ ई० में इसके बनाने का काम आरंभ किया। फीरोजशाह तुगलक ने सन् १३६८ ई० में मीनार को अच्छी तरह से फिर बनवाया। सन् १८०३ ई० में पहली अगस्त को भूकंप से इसका सिरो भाग गिर गया था, जो सन् १८२९ में फिर बनाया गया। यह मीनार पहले २५० फीट ऊंचा था, किंतु अब २३८ फीट है। यह गावदुम शकल का पंच मंजिला मीनार है। पहला मंजिल ९७ फीट, दूसरा १५० फीट, तीसरा १९० फीट, चौथा २१४ फीट और पांचवां २४० फीट भूमितल से ऊंचा है। नीचे के तीन मंजिल सुर्ख पत्थर के और ऊपर के २ उजले मार्बुल की हैं। मीनार की नेव का व्यास ४७ फीट और सिर का केवल ९ फीट है। ऊपर चढ़ने के लिये इसके भीतर ३७६ चक्करदार सीढ़ियां बनी हैं। मीनार के बगलों में कुरान की आयतें और कई बादशाहों की प्रशंसा पच्चीकारी के काम से अरबी अक्षरों में लिखी हुई है। मीनार के चारो ओर प्रत्येक विभाग में तबाहियों की ढेर हैं, जिनमें से सबसे अधिक अधिक हृदयग्राही अलाउद्दीन का मीनार, जो पूरा नहीं हुआ है, खड़ा है।

**कुतब इसलाम मसजिद**—इस मसजिद के घेर के भीतर कुतब मीनार खड़ा है। मसजिद के दरवाजे की मेहराबी में लंबा शिलालेख है; जिस से जान पड़ता है कि सहाबुद्दीन के कर्मचारी कुतबुद्दीन ऐबक ने, जिसने सन् १२०६ से १२१० तक राज्य किया था, सन् ५८७ हिजरी ( सन् ११९३ ई० ) में इस मसजिद का काम आरंभ किया। यह हीन दशा में रहने पर भी देखने लायक है। ऐसाप्रसिद्ध है कि जिस चबूतरे पर राय पिथोरा अर्थात् पृथ्वीराज का बड़ा देव मंदिर था, उसी पर यह मसजिद है। बादशाह अल्तमश ने, जिसका राज्य सन् १२११ से १२३६ ई० तक था, मसजिद को बड़े आंगन से घेरा, उसीके दक्षिण-पूर्व के कोने में कुतब मीनार खड़ा है। उसके पश्चात् बादशाह अलाउद्दीन ने सन् १३०० ई० में उसके पूर्व एक दूसरा आंगन जोड़ा, जिसके दक्षिण के बड़े दरवाजे का नाम अलाई दरवाजा है।

घेरे के बाहरी का द्वार दक्षिण ओर और खास मसजिद का मेहराबदार प्रधान दरवाजा, जो ३१ फीट चौड़ा और ५३ फीट ऊंचा है, घेरे के भीतर पूर्व ओर है। खास मसजिद की लंबाई पूर्वसे पश्चिम तक २२५ फीट और चौड़ाई १५० फीट और इसके आंगन की लंबाई १४२ फीट और चौड़ाई १०८ फीट है। आंगन के पश्चिम बगल में मसजिद और ३ ओर मेहराबदार ओसारे तथा तीन दरवाजे बने हैं, घेरे के भीतर लगभग १००० स्तंभ लगे हैं।

लोहे का स्तंभ—कुतब इसलाम मसजिद के आंगन में प्रसिद्ध लोहे का निसन स्तंभ, जिसको सन् इस्वी की तीसरी या चौथी सदी में राजा धव ने स्थापित किया था, स्थित है; यह २८ फीट पृथ्वी में गड़ा हुआ और २२ फीट भूमि के ऊपर खड़ा है। इसका व्यास १६ इंच है। स्तंभ के पश्चिम बगल पर ६ सतर में खोद कर के लिखा हुआ संस्कृत लेख है। लेख में राजा धव का प्रताप वर्णन है। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा धव ने सिंध पर लोगों को परास्त करके बहुत दिनों तक अकेले राज्य किया था। स्तंभ पर एक दूसरा लेख है, जिसमें संमत् ११०९ (सन् १०५२ ई०) के साथ दूसरे अनंगपाल का और आठवीं शदी के पहला अनंगपाल का नाम लिखा है, इससे बहुतेरों का विश्वास है कि आठवीं शदी में पहला अनंगपाल ने इसको खड़ा किया था।

अल्तमश का मकबरा—कुतब इसलाम् मसजिद के बड़े घेरे के पश्चिमोत्तर के कोने के बाहर सुर्ख पत्थर का बना हुआ अल्तमश का मकबरा है। इसका प्रधान दरवाजा पूर्व है। भीतर कुरान की इबारतें लिखी हुई हैं। मकबरा बहुत पुराना होने के कारण जर्जर होगया है। दिल्ली का बादशाह अल्तमश सन् १२३६ में मरा और इस स्थान में दफन किया गया।

अलाई मीनार—कुतब मीनार से ४३५ फीट ( मसजिद के घेरे से लगभग १०० फीट ) उत्तर $4\frac{1}{4}$ फीट ऊंचे चबूतरे पर ८३ फीट ऊंचा गोलाकार मीनार खड़ा है। इसका घेरा २५९ फीट है। भीतर प्रवेश

करने के लिये ८ फीट के ऊपर रास्ता है। पूर्व ओर बाहर का दरवाजा और उत्तर एक खिड़की है। यह मीनार तैयार होने पर ५०० फीट ऊंचा होता, किंतु काम आरंभ होने के ४ वर्ष के पश्चात् सन् १३१५ ई० में अल्लाउद्दीन के मरने पर इसका काम बन्द होगया।

लालकोट किला—कुतब इसलाम मसजिद के घेरे के पासही पूर्व मटिया पत्थर से बना हुआ लालकोट किला उजाड़ पड़ा है; किले के बाहर २½ मील घेरे में मट्टी की दीवार है। दिल्ली के बादशाह दूसरा अनंगपाल ने सन् १०५२ ई० में पुरानी दिल्ली को यमुना के किनारे से हटा कर इसस्थान पर बसाया और सन् १०६० में यहां लालकोट किला बनवाया। तीसरे अनगपाल के उत्तराधिकारी महाराज पृथ्वीराज ने सन् ११८० ई० में लालकोट के चारो ओर एक दूसरी दीवार बनवा कर जो ५ मील लंबी होगी, किले का नाम राय पिथोरा रक्खा। पहले इस किले में ९ फाटक थे, किंतु अब केवल ४ देख पड़ते हैं; किले का बड़ा भाग नष्टभ्रष्ट हो गया है। इस स्थान को पुरानी दिल्ली कहते हैं।

इससे दक्षिण-पश्चिम महरवली गांव के निकट कुतबुद्दीन की दरगाह है। यहां झील का बांध बांध करके उसमे अनेक झरने, नहर और फव्वारे निकाले गए हैं। जहां बरसात में सैर का मेला होता है।

योगमाया का मंदिर—कुतबुद्दीन की दरगाह से ¾ मील दूर और दिल्ली के अजमेर दरवाजे से ८ कोस दक्षिण-पश्चिम योगमाया का शिखर दार मंदिर स्थित है। सन् १८२७ ई० में पुराने स्थान पर देवी का वर्तमान मंदिर बना था। प्रत्येक सप्ताह में यहां देवी के दर्शन का मेला होता है। मंदिर के एक तरफ बादशाह अल्तमश का उजड़ा हुआ महल और दूसरी ओर बादशाह के बाग का फाटक है।

तुगलकाबाद का किला—कुतब मीनार से ४ मील पूर्व कुछ दक्षिण प्रधान सड़क के बांए, जो कुतब मीनार से गई है, तुगलकाबाद का किला है दिल्ली के बादशाह गयासुद्दीन तुगलक ने सन् १३२१ ई० से १३२३

तक इसको बनवाया था, यह १५ फीट से ३० फीट तक ऊंचे चट्टान पर ४ मील के घेरे में बना हुआ है। किले की दीवार पत्थर के बड़े बड़े ढोकों से बनी है, इसके ३ ओर खाई और पश्चिम ओर गहरी भूमि, जिसमें वर्षा काल में पानी रहता है, देखने में आती है। किले के दक्षिण-पश्चिम के कोने के भीतर इसके क्षेत्रफल के छठवें भाग में गढ़ की तबाहियां फैली हुई हैं, यहां सैनिक लोगों के रहने के लिये गुंबज दार कोठरीयों की पंक्तियां देखने में आती हैं। किले की दिवारों में १३ और गढ़ में ३ फाटक बने हुए हैं। किले में ७ तालाब और कई एक बड़ी इमारतों की तबाहियां हैं।

**गयासुद्दीन का मकबरा**--तुगलकाबाद के किले के दक्षिण एक झील के बीच में गयासुद्दीन तुगलक का सुन्दर मकबरा स्थित है। किले और मकबरे के बीच में २७ मेहराबियों का ६०० फीट लंबा पुल बना हुआ है। मकबरे के बाहर सुर्ख पत्थर में सफेद मार्बुल लगे हैं और ऊपर मार्बुल का गुंबज है; तीन ओर ऊंचे दरवाजे बने हैं। मकबरे के भीतर गयासुद्दीन तुगलक, गयासुद्दीन की स्त्री और उसके पुत्र जूनाखां को, जो पीछे महम्मदशाह के नाम से बादशाह हुआ, कबरें हैं।

एक दूसरा पुल आदिलाबाद को गया है; आदिलाबाद में गयासुद्दीन के पुत्र जूनाखां का ( सन् १३२५ ई० ) बनवाया हुआ किला है। जूनाखां ने सन १३२५ से १३५१ ई० तक महम्मदशाह तुगलक के नाम से दिल्ली का बादशाह था।

कुतब मीनार से तुगलकाबाद जाकर वहां से मथुरा वाली सड़क द्वारा, जो तुगलकाबाद से उत्तर कुछ पश्चिम गई है, दिल्ली लौट जाना चाहिए।

**रेलवे**--दिल्ली से रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) दिल्ली से पूर्व-दक्षिण 'इष्ट इण्डियन रेलवे', जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २½ पाई है।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन।
१३ गाजियाबाद जंक्शन।
३४ सिकंदराबाद।
४३ बुलंदशहर रोड।
५२ खुर्जा।
७९ अलीगढ़ जंक्शन।
९७ हाथरस जंक्शन।

१२७ तुंडला जंक्शन।
१३७ फिरोजाबाद।
१५० शिकोहाबाद।
१७४ यशवंत नगर।
१८४ इटावा।
२१९ फफुंडा।
२७१ कानपुर जंक्शन।
३१८ फतहपुर।
३९० इलाहाबाद।
३९४ नैनी जंक्शन।
४४१ विंध्याचल।
४४६ मिर्जापुर।
४६५ चुनार।
४८५ मुगलसराय जंक्शन।
५२१ दिलदारनगर जंक्शन।
५४३ बक्सर।
५७३ बिहिया।
५८६ आरा।
५९४ कोयल वर।
६११ दानापुर।
६१७ बांकीपुर जंक्शन।

गाजियाबाद जंक्शन से उत्तर 'नर्थ वेष्टर्न रेलवे' पर २८ मील मेरठ शहर, ६३ मील मुजफ्फर नगर, और ९९ मील सहारनपुर जंक्शन।

अलीगढ़ जंक्शन से पूर्वोत्तर 'अवध रुहेलखंड रेलवे' पर १८ मील अतरौली रोड़, ३० मील राजघाट और ६१ मील चंदौसी जंक्शन।

हाथरस जंक्शन से 'बम्बे बड़ोदा और सेंट्रल इंडियन रेलवे' पर पश्चिम कुछ दक्षिण २९ मील मथुरा छावनी का स्टेशन और पूर्व-दक्षिण ३४ मील कासगंज, ४३ मील सोरों, १०१ मील फर्रुखाबाद, १३८ मील कन्नौज, १७६ मील मंधना और १८८ मील कानपुर जंक्शन।

तुंडला जंक्शन से पश्चिम १६ मील आगरा किला, ३३ मील अछनेरा जंक्शन (जिससे २३ मील उत्तर मथुरा है,) ५० मील भरतपुर और १११ मील बादीकुंई जंक्शन।

कानपुर जंकशन से आगे का विशेष वृत्तांत आगे कानपुर में देखो।

(२) दिल्ली से उत्तर कुछ पश्चिम 'दिल्ली अंबाला कालका रेलवे' है जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील दिल्ली से अंबाला तक २½ पाई और अंबाले से कालका तक ५ पाई लगता है।

मील—प्रसिद्ध-स्टेशन।

२७ सुनपत।

५५ पानीपत।

७६ कर्नाल।

९७ थानेसर।

१२३ अंबाला जंक्शन।

१६२ कालका (शिमला के लिये)।

अंबाला छावनी से पूर्व-दक्षिण ५० मील 'अवध रुहेल खंड रेलवे' का जंक्शन सहारनपुर, ७१ मील रुड़की, ८३ मील लक्सर जंक्शन, जिससे १६ मील हरिद्वार है और १०८ मील नजीबाबाद है।

अंबाला जंक्शन से पश्चिमोत्तर 'नर्थ वेस्टर्न रेलवे' पर १७ मील राजपुर जंक्शन, ७१ मील लुधियाना, १०६ मील जलंधर, १५५ मील अमृतसर जंक्शन और १८७ मील लाहौर जंक्शन है।

(३) दिल्ली से दक्षिण-पश्चिम 'बंबे बड़ोदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे' जिसको तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

मील प्रसिद्ध-स्टेशन।

२० गुरगांवा।

३३ फर्रुखनगर।

५२ रेवारी जंक्शन।

१८ अलवर।

१३५ बादीकुंई जंक्शन।

रेवारी जंक्शन से पश्चिमोत्तर ३५ मील चर्खी दादरी, ५१ मील भिवानी, ७४ मील हांसी, ८१, मील हिसार, १४० मील सिरसा, १८७ मील भतींडा जंक्शन, १२३ मील कोटकपुरा जंक्शन २२१ मील फरीदकोट, २४१ मील फिरोजपुर और २७६ मील रायवंद जंक्शन है, जिससे २४ मील उत्तर लाहौर है।

बादीकुंई जंक्शन से पूर्व ६१ मील भरतपुर, ७८ मील अछनेरा जंक्शन, जिससे २३ मील उत्तर मथुरा है और ९५ मील आगरा किला का स्टेशन और बादीकुंई से पश्चिम ५६ मील जयपुर, ९१ मील फलेरा जंक्शन, १७ मील निराना, १२२ मील किसुनगढ़ और ४० मील अजमेर जंक्शन है।

**दिल्ली जिला**—यह दिल्ली विभाग के मध्य का जिला है। जिसका क्षेत्रफल १२७७ वर्गमील है। इसके उत्तर करनाल जिला, पश्चिम रुहतक जिला, दक्षिण गुरगांवां जिला और पूर्व यमुना नदी, जो पश्चिमोत्तर देश के मेरठ और बुलंद शहर जिलों से इसको अलग करती है, है। दिल्ली में पहुंचने से पहलेही यमुना का पानी दोपुरानी नहरों में जाता है; इस कारणसे यमुना की चौड़ाई बहुत कम हो गई है। वर्षाकाल के अतिरिक्त सब ऋतुओं में यमुना थाह रहती है; अर्थात् विना नाव के आदमी पार हो जाता है।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य संख्या के समय ६३८७१२ और सन् १८८१ में ६४३५१५ मनुष्य थे; अर्थात् ४८२३३२ हिंदू, १४९८३० मुसलमान, ७३३६ जैन, २०१७ क्रुस्तान, ९७० सिक्ख, २७ पारसी और ३ दूसरे। इनमें से जाट में १०३३८४ हिंदू, २३१८ मुसलमान और ७६५ सिक्ख; राजपूतमें २३२८२ हिंदू, १०५११ मुसलमान और ११ सिक्ख; ब्राह्मण में ५१६४० हिंदू और २३३३ मुशलमान; बनिया संपूर्ण हिंदू और गुजर, चुहरा, नाई, लोहार, सुनार धोवी, प्रायः सब मुसलमान थे। सन् १८११ की मनुष्य-गणना के समय दिल्ली जिले के दिल्ली में ११२५७१ सुनपत में १२६११, और फरीदावाद तथा बलभगड़ में दस हजार से कम मनुष्य थे।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—महाभारत—(आदिपर्व २०८ वां अध्याय) जब युधिष्ठिर आदि पांडवगण द्रौपदी को लेकर द्रुपदपुरी से हस्तिनापुर आए; तब उनके चचा राजा धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा कि तुम राज्य का आधा भाग लेकर अपने भाइयों सहित खांडवप्रस्थ में जा बसो; जिससे तुमलोग से हमारा फिर विगाड़ न होय। युधिष्ठिर आदि पांडवों ने हस्तिनापुर के राज्य का आधा भाग पाकर खांडवप्रस्थ के पुण्यस्थान में शांतिकार्य करवा कर एक नगर बसाया, जो भांति भांति के सुन्दर भवनों की पंक्तियों से दीप्यमान हो कर इंद्रपुरी के समान शोभायमान होने के कारण इंद्रप्रस्थ नाम से विख्यात हुआ। (२२२ वां अध्याय) श्रीकृष्ण और अर्जुन इंद्रप्रस्थ में यमुना नदी के तट पर आखेट का आनन्द लेने लगे, (सभापर्व) महाराज युधिष्ठिर ने चारो दिशाओं के राजाओं को जीत कर इंद्रप्रस्थ में राजसूय यज्ञ किया।

(शांतिपर्व ४० वां अध्याय) उसके पश्चात् (कुरुक्षेत्र के संग्राम में राजा धृतराष्ट्र के दुर्योधन आदि पुत्रों के विनाश होनेपर) राजा युधिष्ठिर कौरवों की राजधानी हस्तिनापुर में राजसिंहासन पर बैठे और राज्य शासन करनेलगे।

(मौसलपर्व पहला अध्याय) राजा युधिष्ठिर के हस्तिनापुर में राजतिलक होने के छत्तीसवें वर्ष प्रभास क्षेत्र में यदुवंशियों का नाश होगया। (७ वां अध्याय) तब अर्जुन बचे हुए बालक, वृद्ध और स्त्रियों को द्वारिका और प्रभास से ले आए, उन्होंने उनमें से बहुतेरों को कुरुक्षेत्र में, बहुतेरों को मार्तिकावत नगर में और बहुतेरों को सरस्वती के तट पर बसा करके अनिरुद्ध के पुत्र तथा कृष्ण के प्रपौत्र वज्र को इंद्रप्रस्थ का राज्य प्रदान किया और विभाग रूप से बहुतेरे द्वारिका वासियों को वज्र के समीप इंद्रप्रस्थ में स्थापित कर दिया। (आदि ब्रह्मपुराण के ११ वें अध्याय में, देवी भागवत के दूसरे स्कन्ध के ८ वें अध्याय में और श्रीमद्भागवत के ११ वें स्कंध के ३१ वें अध्याय में भी लिखा है कि अर्जुन ने वज्र को इंद्रप्रस्थ का राज्य दिया)।

(महाप्रस्थानिक पर्व पहला अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र के पुत्र (वैश्या स्त्री से उत्पन्न) युयुत्सु को राज्य भार देकर के अर्जुन के पौत्र परीक्षित को हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर बैठाया और भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और द्रौपदी के सहित महाप्रस्थान के लिये प्रस्थान किया। (महाभारत का संक्षिप्त वृत्तांत भारत-भ्रमण के दूसरे अध्याय में देखो)।

मत्स्यपुराण—(५० वां अध्याय) राजा परीक्षित के पश्चात् इसक्रम से पांडुवंशी राजा होंगे (१) जनमेजय, (२) शतानीक, (३) अधिसोम कृष्ण, (४) निचक्षु, (५) भूरी, (६) चित्ररथ, (७) शुचिद्रथ, (८) वृष्णिमान, (९) सुषेण, (१०) सुनीथ, (११) नृचक्षु, (१२) सुखीवल, (१३) पारिप्लव, (१४) सुनय, (१५) मेधावी, (१६) पुरंजय, (१७) ऊर्व, (१८) तिग्मात्मा, (१९) बृहद्रथ, (२०) वसुदामा, (२१) शतानीक, (२२) उदयन, (२३) अहीनर, (२४) दंडपाणि (२५) निरमित्र और (२६) क्षेमक। राजा क्षेमक के पश्चात् यह वंश नष्ट हो जायगा।

श्रीमद्भागवत (९ वां स्कंध २२ वां अध्याय)—राजा परीक्षित के पश्चात् इस प्रकार पांडुवंशीय राजा होंगे;—(१) जनमेजय, (२) शतानीक, (३) सह-

स्तानीक, (४) अश्वध्वज, (५) असीमकृष्ण, (६) नेमीचक्र, (७) उम्र, (८) चित्ररथ, (९) कविरथ, (१०) वृष्णिमान, (११) सुषेण, (१२) सुनीथ, (१३) नृचक्ष, (१४) सुखीनल, (१५) परिप्लव, (१६) सुनय, (१७) मेधावी, (१८) नृपंजय, (१९) उर्व, (२०) तिमि, (२१) वृहद्रथ, (२२) सुदास, (२३) शातानीक (२४) दुर्मन, (२५) वहीनर, (२६) दंडपाणि, (२७) दुर्नेमि और (२८) क्षेमक। छठवां राजा नेमीचक्र के राज्य के समय जब हस्तिनापुर गंगा में डूब जायगा, तब वह राजा कौशांबी नगरी में निवास करेगा। राजा क्षेमक के पश्चात् यह वंश समाप्त हो जायगा।

इतिहास—वर्तमान दिल्ली के आसपास दूरतक बहुतेरी राजधानी हो चुकी हैं। वर्तमान शहर के चारो ओर खास करके दक्षिण से रायपिथौरा और तुगलकाबाद के छोड़ दिए हुए किलों तक १० मील के अंतर में बरबादियां फैली हुई हैं। ४५ वर्गमील के क्षेत्रफल में पुराने शहरों तथा राजा और बादशाहों की इमारत आदि वस्तुओं के चिन्ह फैले हुए देख पड़ते हैं। वर्तमान दिल्ली से २ मील दक्षिण पांडवों का बसाया हुआ इंद्रप्रस्थ के स्थान पर इंद्रपाथ का पुराना किला जर्जर हो रहा है।

पांडु वंशी राजाओं के पश्चात् तक्षक वंशी १४ राजाओं ने इंद्रप्रस्थ में ५०० वर्ष राज्य किया;- (१) विसर्व, (२) सुषेण, (३) शौर्य्य, (४) अहंशाल, (५) वर्जित, (६) दुर्वीर, (७) सदापाल, (८) सूरसेन,(९) सिंहराज, (१०) अमर्वाद, (११) अमरपाल, (१२) सर्वाह, (१३) पदराट और (१४ वां) मदपाल। राजा मदपाल अपने मंत्री के हाथ से मारागया, उसके पीछे गौतम वंशीय १५ राजाओं ने इंद्रप्रस्थ का शासन किया; – (१)महाराजि,(२)श्रीसेन,(३)महीपाल, (४) महाबली, (५) श्रुतवर्ती, (६) नेत्रसेन, (७) सुमुख,(८) जितपाल (९)कलंक, (१०) कुलमान, (११) श्रीमर्दन,(१२)जयवंग,(१३)हरगुज,(१४)हर्षसेन और(१५)अस्तिन। गौतमवंश के अंतिम राजा अस्तिन अपने मंत्री को राज्यकार्य सौंप कर आप विरक्त होगया, उसके पश्चात् इंद्रप्रस्थ में मौर्यवंशी ९राजा हुए;--(१)दुधसेन, (२)सिद्धराज, (३)महागंग, (४) नंद, (५) जीवन,(६)उदय, (७)जिहवल,(८)आनंद और(९)राजपाल। राजपाल ने, जिसका दूसरा नाम

दिल्लू था। सन् ईस्वी से लगभग ५० वर्ष पहले इंद्रप्रस्थ के पड़ोस में कई मील दूर एक नगर बसा कर अपने नाम के अनुसार उसका नाम दिल्ली रक्खा; तभी से दिल्ली नाम प्रसिद्ध हुआ। राजा राजपाल ने कमाऊं के राजा सुखवंत के राज्य पर, जिसका नाम शकादित्य भी था, आक्रमण किया; राजपाल युद्ध में मारा गया। सुखवंत इंद्रप्रस्थ का राजा हुआ। उसके पश्चात् उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने सुखवंत को मारकर उसका राज्य लेलिया। विक्रमादित्य के समय से भारतवर्ष की राजधानी उज्जैन हो गयी और दिल्ली की अवनति होने लगी। कुतब मीनार के निकट सन् ई० के तीसरी या चौथी शदी का लोहा का स्तंभ है, जिसपर उस समय के प्रतापी राजा धाव का यश खोद कर लिखा हुआ है।

सन् ७३६ ई० (संवत् ७९२) में तोमर वंशी राजा अनंगपाल ने, जिसका दूसरा नाम बलत्तानदेव था, दिल्ली को, जो बहुत काल से उजाड़ हो गई थी, फिर से बसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। तोमर वंश के १४ वां राजा कुमारपाल और १६ वां राजा दूसरा अनंगपाल हुआ। कन्नोज के राठौर राजपूतों के प्रताप से दूसरे अनंगपाल से पहिले दिल्ली की दशा हीन हो गई थी; किन्तु उसके राज्य के समय से दिल्ली की उन्नति होने लगी। उसने शहर को सुधारा और चारो ओर किलाबंदी की, जिसकी निशानियां कुतबमीनार के चारो ओर अबतक देखने में आती हैं। कुतबमीनार के निकट राजा धाव के स्तंभ के दूसरे लेख से जान पड़ता है कि संवत् ११०९ (सन् १०५२ ई०) में (दूसरे) अनंगपाल ने दिल्ली को बसाया।

सन् ई० की बारहवीं शदी में दिल्ली के तोमर वंशी १९ वां राजा तीसरा अनंगपाल हुआ। अजमेर के चौहान राजा सोमेश्वर ने, जिसको विशलदेव भी कहते हैं; अनंगपाल को परास्त करके अपने आधीन का राजा बना लिया। विशलदेव के बनाए हुए हरकेलि नामक नाटक का कुछ हिस्सा शिले के तख्तों पर खोदा हुआ अजमेर के ढाई दिन के झोंपडे में अबतक रक्षित है। लेख वर्तमान नागरी से मिलता है। उसमें विक्रमी संवद् १२१० (सन् ११५३ ई०) लिखा हुआ है। राजा अनंगपाल का कोई पुत्र नहीं था; केवल

२ पुत्री थीं। जिनमें से एक कन्नोज के राठौर राजा से और दूसरी अजमेर के राजा सोमेश्वर से व्याही गई। अनंगपाल की बड़ी पुत्री से कन्नोज के राजा जयचंद का और छोटी से सन् ११५९ ई० में अजमेर के पृथ्वीराज का जन्म हुआ।

पृथ्वीराज सन् ११८५ ई० में अपने नाना अनंगपाल के पास चला गया और उनकी मृत्यु होने पर ११६२ में उनका उत्तराधिकारी बना। इस भांति पृथ्वीराज अजमेर और दिल्ली का राजा हुआ। पृथ्वीराज ने रायपिथोरा नामक किला और एक बाहरी की दीवार, जो अनंगपाल के किला बंदियों के चारो ओर दौड़ती है, बनवा कर दिल्ली को अधिक मजबूत किया। सन् ११८५ ई० में कन्नोज के राजा जयचंद ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान और अपनी कन्या का स्वयंवर आरंभ किया; उसने पृथ्वीराज को छोड़ करके दूसरे राजाओं को निमंत्रित किया और पृथ्वीराज की स्वर्णमूर्ति बनवा करके उसको द्वारपाल के स्थान दरवाजे पर खड़ा कर दिया। राजकुमारी ने स्वयंवर में स्वर्ण मूर्ति के गले में जयमाल को डाल दिया। उसी समय पृथ्वीराज ने सभा में अकस्मात् आकर राजकुमारी को घोड़े पर बैठा अपनी राजधानी को चल दिया; इससे राजा जयचंद का बड़ा अपमान हुआ।

सन् ११९१ ई० में अफगानिस्तान के गोर शहर के रहनेवाले शहाबुद्दीन ने, जो महम्मद गोरी कर के प्रसिद्ध है, भारतवर्ष पर आक्रमण किया। पृथ्वीराज ने उसको थानेसर में परास्त करके ४० मील तक उसकी सेना का पीछा किया था, परंतु सन् ११९३ में शहाबुद्दीन ने भारी सेना लेकर फिर आक्रमण किया। लोग कहते हैं कि कन्नोज के राजा जयचंद उसको चढ़ा लाया। शहाबुद्दीन और पृथ्वीराज से दृषद्वती अर्थात् गागरा नदी के किनारे बड़ा संग्राम हुआ, उस समय हिंदुस्तान के राजाओं में परस्पर एकता नहीं थी, इस लिये वे लोग एकत्र होकर लड़ नहीं सके; अंत में पृथ्वीराज परास्त हो कर मारागया। दिल्ली मुसलमानों के अधीन हुई। पृथ्वीराज के साथही हिंदुओं की स्वाधीनता चली गई। भारतवर्ष मुसलमानों के हस्तगत हुआ। शहाबुद्दीन ने एक वर्ष के भीतर ही जयचंद को संग्राम में मार कर कन्नोज का

राज्य भी ले लिया; उसने हिंदुस्तान में रह कर कभी राज्य नहीं किया। वह कभी हिंदुस्तान में कभी अपने देश में लड़ता था।

गुलाम खांदान के १० बादशाह,—(१)कुतबुद्दीन—यह शहाबुद्दीन गोरी का सूबेदार था, जो उसके मरने पर सन् १२०६ में स्वतंत्र दिल्ली का बादशाह बन गया; इसीने दिल्ली के निकट कुतबइसलाम मसजिद बनवाई और शिला लेख से जान पड़ता है कि इसीनें कुतबमीनार का काम आरंभ किया था। (२)आरामशाह—कुतबुद्दीन के मरने पर उसका पुत्र आरामशाह सन् १२१० में बादशाह हुआ। (३)अल्तमस—कुतबुद्दीन का दामाद अल्तमश सन् १२११ में आरामशाह को तख्त से उतार कर दिल्ली का बादशाह बन गया। यह गुलाम खांदान के बादशाहों में सबसे अधिक प्रतापी हुआ और इसने सबसे अधिक राज्य किया। (४)रुकनुद्दीन फीरोजशाह—अल्तमश की मृत्यु होने पर उसका पुत्र रुकनुद्दीन फीरोजशाह सन् १२३६ में तख्त पर बैठा। (५)रजिया बेगम - रुकनुद्दीन फीरोजशाह के केवल ७ महीने राज्य करने के पश्चात् सन् १२३६ में सरदारों ने उसको तख्त से उतार कर अल्तमश की पुत्री रजिया बेगम को बैठाया। यह बड़ी होशियारी से राज्य करती थी, परंतु लगभग ४ वर्ष राज्य करने के पश्चात् एक हबसी गुलाम से प्रेम होने के कारण सरदारों ने उसको मारडाला। (६) बहरामशाह—रजियाबेगम के मारे जाने पर अल्तमश का पुत्र बहरामशाह सन् १२४० में बादशाह हुआ। (७) मसाउदशाह—यह रुकनुद्दीन फीरोजशाह का बेटा और बहरामशाह का भतीजा था; राज्य के सरदारों ने सन् १२४२ में बहरामशाह को कैद करके मसाउदशाह को तख्त पर बैठाया। (८) नासिरुद्दीन महमूद—सन् १२४६ में लोगों ने मसाउदशाह को मार कर उसके चचा नासिरुद्दीन महमूद को तख्त पर बैठाया। बहरामशाह से ले करके नासिरुद्दीन तक ३ बादशाह राजपूत और मुगलों के आक्रमण से निर्बल रहे। (९) गयासुद्दीन बलबन-नासिरुद्दीन महमूद के पश्चात् सन् १२६६ में उसका बहनोई गयासुद्दीन बलबन बादशाह बना। इसने मेवात के १ लाख राजपूतों के सिर काट डाले और दुश्मनों को दबा दिया। (१०) कैकूबाद—गयासुद्दीन के मरने पर सन्

१२८७ में उसका पोता ( कुगाखां का पुत्र ) कैकूबाद तख्त पर बैठा, जिसको सन् १२९० में दुश्मनों ने जहर देकर मारडाला।

खिलजी खांदान के ४ बादशाह;—(१)जलालुद्दीन फीरोजशाह—गुलाम खांदान के अंत होने पर सन् १२९० ई० में जलालुद्दीन दिल्ली के तख्त पर बैठा; इसका स्वभाव सीधा था। (२) अलाउद्दीन—सन् १२९६ में जलालुद्दीन का भतीजा दुष्ट अलाउद्दीन अपने चचा को दगा से मार कर बादशाह बन गया। इसने गुजरात देश और देवगढ़ को लूटा; बड़ी सख्ती से अपना राज्य बढ़ाया, दिल्ली में कुतबमीनार के निकट आलाईमीनार का काम आरंभ किया, जो पूरा नहीं हो सका और सहस्र स्तंभों का महल बनवाया, जिसकी निशानियां शाहपुर के उजड़े हुए किले में अब तक देख पड़ती हैं। (३) मुबारकशाह—सन् १३१६ में अलाउद्दीन के मरने पर उसका पुत्र मुबारकशाह बादशाह बना। (४) खुसरोखां—यह नीच जाति के हिंदू से मुसलमान होगया था, जो सन् १३२१ में अपने मालिक मुबारकशाह को मार कर तख्त पर बैठा।

तुगलग खांदान के ११ बादशाह;—( १ ) गयासुद्दीन तुगलक—खिलजी खांदान के अंत होने पर सन् १३२१ में गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली का बादशाह हुआ, जिसने तुगलकाबाद का किला बनवाया; वह अन्त में मकान के नीचे दब कर मर गया। (२) महम्मद आदिल तुगलक—गयासुद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र महम्मद आदिल तुगलक सन् १३२५ में गद्दी पर बैठा। इसने आदिलाबाद बसा कर उसमें एक किला बनवाया और दिल्ली के निवासियों को दक्षिण के दौलताबाद में बसाने का और रुपए के दाम में तांबे का सिक्का चलाने का बड़ा उद्योग किया था, परंतु अंतमें उसका मनोरथ सफल नहीं हुआ। (३) फीरोजशाह तुगलक—महम्मद आदिल के मरने पर सन् १३५१ में उसका पुत्र फीरोजशाह बादशाह हुआ। इसने फीरोजाबाद शहर बसाया और अनेक परमार्थिक काम किए, जिनमें प्रधान यमुना नहर है, जिसको उसने यमुना से फीरोजाबाद में लाया। (४) गयासुद्दीन तुगलक (दूसरा)—फीरोजशाह की मृत्यु के उपरांत उसका पुत्र गयासुद्दीन तुगलक

सन् १३८८ में तख्त पर बैठा। यह ५ महीने राज्य करने के पश्चात् मारा गया। (५) अबूबकरशाह—गयासुद्दीन के पीछे उसका भतीजा अबूबकरशाह सन् १३८९ में बादशाह बना; जो कैदखाने में मरा। (६) नासिरुद्दीन महम्मद—सन् १३९० में गयासुद्दीन का दूसरा भतीजा नासिरुद्दीन तख्त पर बैठा। (७) हुमायूसिकंदर—सन् १३९३ में नासिरुद्दीन का पुत्र हुमायूसिकन्दर बादशाह बना, जिसने केवल ४५ दिन राज्य किया था। (८) महमूदशाह—सन् १३९३ में हुमायूसिकंदर का बेटा महमूदशाह को गद्दी मिली। (९) नसरतशाह—सन् १३९५ में बरामद खां का पुत्र नशरतशाह दिल्ली का बादशाह हुआ। सन् १३९८ में तैमूर तातारी ने, जिसको तिमिरलंग भी कहते हैं; बड़ी सेना लेकर दिल्ली पर आक्रमण किया और बादशाह को परास्त करके ५ दिनों तक दिल्ली में आम कतल करवाया। लाशों के ढेरे से सड़के बन्द होगई, उसकी फौज दास बनाने के लिये बहुतेरो स्त्रियों और पुरुषे को लेगई, दो महीने तक दिल्ली में बादशाहत नहीं थी। (१०) महमूदशाह दूसरी बार—सन् १४०० में हुमायू सिकन्दर का बेटा महमूदशाह फिर तख्त पर बैठा। (११) दौलतखां—महमूदशाह के मरने पर उसका पुत्र दौलतखां सन् १४१३ में बादशाह हुआ।

सैयद खांदान के ४ बादशाह,—(१) खिज्रशाह—तुगलक खांदान के पीछे सैयद मलिक सुभान का पुत्र खिज्रखां सन् १४१४ में दिल्ली का बादशाह हुआ, जो दिल्ली में मरगया। (२) मुबारकशाह ( दूसरा )—खिज्रशाह के मरने पर उसका पुत्र मुबारकशाह सन् १४२१ में तख्त पर बैठा। (३) महम्मदशाह—मुबारकशाह के मारे जाने पर उसका भतीजा महम्मदशाह सन् १४३४ में तख्त पर बैठा, जो मरने पर दिल्ली में दफन किया गया। (४) आलमशाह—महम्मदशाह के मरने पर उसका पुत्र आलमशाह सन् १४४५ में उत्तराधिकारी हुआ। सैयदों के राज्य के समय दिल्ली निर्बल रही। आलमशाह के राज्य के समय दिल्ली का राज्य नाम मात्र रहगया था। आलमशाह बहलोल लोदी को अपना राज्य देकर कमाऊं चला गया और वहांही मरा।

लोदी खांदान के ३ बादशाह;—इस खांदान के बादशाह अफगान थे।

(१) वहलोल लोदी—सन् १४५१ में कलांवहादुर का पुत्र वहलोल लोदी दिल्ली का वादशाह वना। इसने दिल्ली राज्य को बहुत बढ़ाया। मरने पर दिल्ली में दफन किया गया। (२) सिकन्दर लोदी—वहलोल लोदी के मरने पर सन् १४८९ में उसका पुत्र सिकन्दर लोदी तख्त पर बैठा, जो मरने पर दिल्ली में दफन किया गया। (३) इब्राहिम लोदी—सिकंदर लोदी की मृत्यु के पीछे उसका पुत्र इब्राहिम लोदी सन् १५१७ में वादशाह हुआ। यह आगरे में रहता था; लोदी खांदान के वादशाह निर्बल थे। सन् १५२६ में मुगल खांदान के वावर ने इब्राहिम लोदी को पानीपत की लड़ाई में परास्त करके मारडाला। वह वहांही गाड़ा गया।

मुगल खांदान के १६ वादशाह;—(१) वावर—यह तैमूर तातारी के छठवीं पुश्त में उमरसेखमिर्जा का पुत्र था, जो सन् १५२६ ई० में इब्राहिमलोदी को, जो आगरे में रहता था, पानीपत की लड़ाई में परास्त करके दिल्ली का वादशाह वनगया और आगरे में, जहां खास कर के रहता था, सन् १५३० में ४८ वर्ष की उमर में मरगया।

(२) हुमायूं—वावर के मरने पर उसका पुत्र हुमायूं दिल्ली का वादशाह हुआ। इसने सन् १५३३ में इंद्रप्रस्थ के पुराने किले को सुधार कर उसका नाम दीनपन्नाह रक्खा था, परंतु पीछे वह नाम प्रसिद्ध नहीं हुआ।

बंगाले का हाकिम शेरशाह, जो अफगान जाति का था; सन् १५४० में हुमायूं को खदेर कर दिल्ली का वादशाह वनगया। उसने पुराने किले को अपने नए शहर का किला वना कर उसका नाम शेरगढ़ रक्खा, परतु साधारण तरह से वह पुराना किला कहलाता रहा। सन् १५४१ में उसने किलाकोह नामक मसजिद और आठपहलवाली एक ऊंची इमारत, जो अवतक शेरमंडल कर के प्रसिद्ध है; वनवाई थी। शेरशाह सन् १५४५ ई० में कालिंजर के किले पर आक्रमण करने पर ७२ वर्ष की अवस्था में मारागया; जिसका मकवरा सह-सराम में स्थित है; तव उसका पुत्र इसलामशाह, जिसको सलमशाह भी कहते है, वादशाह हुआ। उसने सन् १५४६ में सलीमगढ़ का किला वनवाया। इसलामशाह सन् १५५३ में मरगया और सहसराम में दफन किया गया।

उसके पीछे उसका पुत्र फीरोजशाह उत्तराधिकारी हुआ, परंतु कई महीनों के बाद उसके मामा ने उसको मारडाला। उसके पश्चात् निजामखां का पुत्र महम्मद आदिलशाह दिल्ली के तख्त पर बैठा। उसके पश्चात् शेरशाह का एक चचेरा भाई सुलतान इब्राहिम सन् १५५४ में और दूसरा चचेरा भाई सिकंदरशाह सन् १५५५ में दिल्ली के बादशाह हुए।

हुमायूं सन् १५५५ में हिंद को लौट आया; उसने भारी लड़ाई में अफ़गानों को परास्त कर के दिल्ली को फिर ले लिया। वह आगरे में तख्त पर बैठा और ६ महीने राज्य करने के पश्चात् सन् १५५६ की जनवरी में ४८ वर्ष की उमर में सीढ़ी से गिर कर दिल्ली में मरगया। उसका सुन्दर मकबरा दिल्ली में बना हुआ है।

(३) अकबर—हुमायूं जब हिन्दुस्तान से फारस को भागा जाता था, तब सिंध प्रदेश के अमरकोट के छोटे किलेमें (सन् १५४२ ई० में) उसके पुत्र अकबर का जन्म हुआ। सन् १५५६ में हुमायू के मरने पर अकबर दिल्ली का बादशाह बना। हुमायूं एक छोटा राज्य,जो आगरे और दिल्ली के आस पास के जिलों से आगे नहीं था, छोड़ गया था, परंतु अकबर ने हिंदुस्तान में मुगलों का बड़ा राज्य नियत कर दिया। उसने सन् १५६० ई० में बहराम खां सेनापति से राज्य का प्रबंध अपने हाथ में लिया। सन् १५६१ से १५६८ तक राजपूत रियासतों को अपने राज्य के आधीन करने में लगा रहा। सन् १५७२-१५७३ में गुजरात को फिर अपने राज्य में मिला लिया। सन् १५७६ में बंगाले को दूसरी बार जीत कर मुगल राज्य में शामिल कर लिया। सन् १५८६ में काश्मीर को अपने राज्य में मिलाया और उसके अंत की बंगावत को सन् १५९२ में दबाया। सन् १५९२ में सिंध को जीता। सन् १५९४ में कंधार को अपने आधीन बनाया। मुगलों का राज्य विंध्याचल पहाड़ के उत्तर के संपूर्ण हिंदुस्तान में काबुल और कंधार तक दृढ़ हो गया। सन् १५९९ में अकबर खुद अहमदनगर की रियासत पर आक्रमण करके शहर को ले लिया, परंतु वह वहां मुगलों का राज्य कायम न कर सका। सन् १६०० में खां देश दिल्ली के राज्य में मिल गया। अकबर उत्तरी हिंदुस्तान की ओर

लौटा और सन् १६०५ में ६३ वर्ष का हो कर आगरे में मरगया। इसका बड़ा मक़बरा आगरेकी शहरतली सिकंदरा में स्थित है।

अकबर के राज्य के समय प्रजा सुखी थी; इसके समान न्यायवान और बहुविज्ञ पुरुष भारतवर्ष के मुशलमान बादशाहों में दूसरा नहीं हुआ। जिस समय सन् १५५६ ई० में यह गद्दी परबैठा, उस समय भारतवर्ष बहुत से छोटे छोटे राज्यो में बंटा था और बहुत से फसाद के तत्त्व मवजूद थे, परंतु इसने किसी क़दर बल से और किसी क़दर मेल जोल से हिंदू मुसलमान दोनों को अपने अधीन करलिया, उसने जयपुर के राजा मानसिंह और दूसरे राजपूत राजाओं को बड़े बड़े पद पर नियुक्त किया और हिंदू राजा तोड़रमल को अपना मंत्री और माल के मुहकमे का अफसर बनाया। राजा तोड़रमलने पहले पहले एराजी का प्रबंध किया और राज्य का नाप करवाया था। अकबर के ४१५ मनसबदारो में से ५१ हिंदू थे। यह राज्यकाज में अपनी सब प्रजाओं को एक दृष्टि से देखता था। इसने हिंदुओं के बहुतेरे संस्कृत ग्रंथ का फारसी में अनुवाद करवाया था।

इसने दिल्ली को छोड़ कर आगरे को राजधानी बनाया और सन् १५६६ में आगरे का क़िला और सन् १५७५ में इलाहाबाद का क़िला बनाया।

(४) जहांगीर—अकबर की मृत्यु के पश्चात् सन् १६०५ मे उसका पुत्र सलीम जहांगीर के नाम से गद्दी पर बैठा। इसके राज्य के समय मुगल राज्य की कुछ बढ़ती नहीं हुई, इसने अपने राज्य के २२ वर्ष का समय अपने पुत्रों के बगावतों को दबाने, अपनी स्त्री के अख्तियारात बढ़ाने और ऐश करने में बिताया, अंत में जहांगीर का पुत्र शाहजहां बागी हो कर दक्षिण चला गया और वहां मलिक अंबर से मिल कर मुगलो की सेना के बिरुद्ध हुआ। सन् १६२६ में जहांगीर की बीबी नूरजहां का सिपहसालार महावतखां लाचार हो कर अपने को बचाने के लिये जहांगीर को कैद करलिया। नूरजहां भी ६ महिनों तक कैदरही। सन् १८२७ में, जब की शाहजहां और बड़ा सरदार महावतखां उससे बागी हो रहे थे, ५७ वर्ष की उमर में जहांगीर मरगया और लाहौर के समीप शाहदरे में दफन किया गया।

(५) शाहजहां—शाहजहां अपने बाप के मरने का समाचार सुनतेही दक्षिण से आया और सन् १८२८ की जनवरी में आगरे में राजगद्दी पर बैठा। इसके पश्चात् इसने नूरजहां को पिंशिन मुकर्रर करके राज्य के कामों से अलग कर दिया और अपने भाई शहरयार को और अकबर के खांदान के संपूर्ण मरदों को, जिनसे झगड़े का भय था, मरवा डाला। इसने दक्षिण में राज्य बढ़ाया और उत्तरी भारत के आगरे में ताज महल और मोती मसजिद; दिल्ली में जामा मसजिद; सुर्ख पत्थर का किला और किले के भीतर दीवानआम, दीवानखास इत्यादि इमारत और दिल्ली का शहरपनाह इत्यादि बेजोड़ इमारतें बनवाई, जो उसकी उत्तम य्यादगार हैं। शाहजहां के राज्य के समय कंधार का सूबा सर्वदा के लिये मुगलों के राज्य से निकल गया। जिस प्रकार जहांगीर अपने बाप अकबर का दुश्मन हो गया था और शाहजहां ने जहांगीर से बगावत की, उसी प्रकार शाहजहां को भी अपनी संतान की शाजिश और सरकशी से दुःख पहुंचा। सन् १६५७ में जब बूढ़ा बादशाह शाहजहां बीमार पड़ा, तब औरंगजेब इत्यादि उसके पुत्रों में तख्त के लिये झगड़ा हुआ। अंत में औरंगजेब जीत गया और सन् १६५८ में शाहजहां को कैदकर के तख्त पर बैठा। शाहजहां ७ वर्ष आगरे के किले में कैद रह कर सन् १६६६ में ७४ वर्ष की उमर में मरगया और ताजमहल में अपनी स्त्री मम ताजमहल को कबर के समीप दफन किया गया।

(६) औरंगजेब—यह सन् १६५८ में अपने बाप शाहजहां को कैद करके आलमगीर की पदवी से बादशाह हुआ। इसने सन् १६५९ में अपने बड़े भाई दारा को, जोआलो मिजाज का था, परास्त करके मरवाडाला और सन् १६६० में एक वर्ष की लड़ाई झगड़े के बाद अपने दूसरे भाई शुंजा को, जो एक ऐयाश पुरुष था, हिंदुस्तान के बाहर निकाल दिया। वह अराकान के हबसियों द्वारा बड़ी बेरहमी से मारा गया। उसके पीछे उसने अपने भाई मुराद को, जो सबसे छोटा था, कैदखाने में कतल करवा डाला।

इसके राज्य के समय मुगलों के राज्य की बढ़ती सबसे अधिक हुई। सन् १६५८ से १६८३ तक औरंगजेब के सिपहसालार दक्षिण में लड़ते रहे।

इसी अर्से में महाराष्ट्रों की नई हुकूमत दक्षिण में जाहिर हुई। सन् १६८३ तक बीजापुर और गोलकुंडा के राज्य जीते नहीं गए। सन् १६८०-१६८१ में औरंगजेब का पुत्र शाहजहां अकबर अपने बाप से बागी हो कर महाराष्ट्रों में जा मिला, जिससे उनका रोबदाब अधिक बढ़ गया॥ तब सन् १६८३ में औरंगज़ेब बड़ी फौज ले कर आपही दक्षिण में पहुंचा। बहुत दिनों की लड़ाई के पश्चात् सन् १६८८ में गोलकुंडा और बीजापुर दोनों राज्य जीते गए। दक्षिण के ५ मुसलमानी राज्यों में से बीदर, अहमदनगर और एलिचपुर के राज्य औरंगजेब के गद्दी पर बैठने से पहलेही मुगलों के आधीन हो चुके थे।

औरंगजेब के मजहबी हठ के कारण उत्तर भारत की संपूर्ण प्रजा और देशी राजालोग इसके शत्रु हो गए। इसने सन् १६७७ ई० में जिजिया नामक 'कर' जारी किया, अर्थात् जो मुसलमान नहीं हैं, उन सबसे एक नियत 'कर' लेने लगा और हिंदुओं को अपनी नौकरी से छोड़ा दिया। राजपूत राजालोग उसके शत्रु हो गए और बहुत दिनों तक उससे लड़ते रहे। इससे कभी कभी वह राजपुताने को बरबाद और वीरान करदेता था। सन् १६८० ई० में औरंगजेब का बागीबेटा अकबर मुगलों के लश्कर का हिस्सा, जो उसके अख्तियार में था, अपने साथ लेकर राजपूतों से जामिला और जजेब जयपुर, जोधपुर और मारवाड़ के राजपूतों की रियासतों में इस सिरे से उससिरे तक लूटपाट और कतल करता था और राजपूत लोग इसके बदले में मालवे के मुसलमानी सूबों को लूटते थे। मसजिदों को गिरा देते थे, मुल्लाओं को बेइज्जत करते थे और कोरान को जलाते थे। सन् १६८१ में औरंगजेब ने इसलिये जैसे बना, वैसे राजपूतों से सुलह करली कि दक्षिण की लड़ाइ में जाने का सावकास मिले। सन् १६८३ में वह फौज के साथ दक्षिण गया और २४ वर्ष तक वहां लड़तारहा। सन् १७०६ में औरंगजेब के बड़े लश्कर में ऐसी बद इंतजामी फैली कि उसको लाचार हो कर महाराष्ट्रों से सुलह करने की जरूरत पड़ी, परंतु महाराष्ट्रों की शेखी के कारण सुलह नहीं हो सका। तब उसने अहमदनगर में पनाह ली। दूसरे साल सन् १७०७ की फरवरी में

८६ वर्ष की उमर में वहाही वह मर गया और औरंगाबाद में गाड़ा गया।

(७) आजमशाह—औरंगजेब के मरने पर उसका पुत्र आजमशाह सन् १७०७ में गद्दीपर बैठा, परंतु उसी साल आजम और मुअजिम औरंगजेब के दोनों पुत्र धौलपुर के निकट लड़े। आजम परास्त हो कर मारा गया।

(८) बहादुरशाह—औरंगजेब का दूसरा पुत्र मुअजिम अपने भाई आजम को रणभूमि में मार कर सन् १७०७ में बहादुरशाह के नाम से गद्दीपर बैठा, जो शाह आलम भी कहलाता था। यह ६९ वर्ष की अवस्था में मरगया।

(९) जहांदारशाह—बहादुरशाह की मृत्यु होने पर उसका पुत्र जहांदारशाह सन् १७१३ में दिल्ली का बादशाह हुआ। उसी साल उसके भतीजे फर्रुखसियर ने बगावत की, ५२ वर्ष की अवस्था में जहांदारशाह मारा गया।

(१०) फर्रुखसियर—यह बहादुरशाह के बेटे अजिमुलशाह का पुत्र था; सन् १७१३ में अपने चचा जहांदारशाह को मार कर तख्त पर बैठ गया। औरंगजेब के मरतेही सिक्ख, राजपूत और महाराष्ट्रों ने दिल्ली के राज्य को चारो ओर से दबाना आरंभ किया था। उसके पीछे के बादशाह, जिनको, फौज के सरदार और राज्य के बड़े कर्मचारियोंने गद्दीपर बैठाया था, परतंत्र थे। सन् १७१६ में संपूर्ण राजपूताना पूरे तौर से स्वतंत्र बनगया। सन् १७१९ में मुगल राज्य के प्रधान कर्मचारी दो सैयदों ने फर्रुखसियर को, जो ३४ वर्ष का जुवा था, मारडाला।

(११) महम्मदशाह—फर्रुखसियर के मारे जाने पर १ वर्ष में ४ बादशाह हो चुके थे। उसके बाद सन् १७२० में जहांदारशाह का पुत्र महम्मदशाह को राज गद्दी मिली। उस समय से मुगल राज्य की घटती औरभी अधिक होने लगी। महाराष्ट्रों ने दक्षिणी भारत में जोर डाल कर चौथ तहसील किया, मालवा पर अपना अधिकार कर लिया और विंध्याचल पार हो कर उत्तरीय भारत पर छापा मारा। दक्षिण के हाकिम निजामुलमुल्क ने दक्षिणी भारत का बड़ा भाग दिल्ली-राज्य से ले लिया। अवध का हाकिम स्वतंत्र बनगया। सन् १७३८ में अफगानिस्तान का काबुल दिल्ली के राज्य से अलग हो गया। सन् १७३९ में पारस के नादिरशाह ने कर्नाल के समीप महम्मद

शाह को परास्त किया और ११ मार्च को दिल्ली में आम कतल का हुक्म दिया। सूर्योदय से दोपहर तक संपूर्ण शहर में कतल जारी रहा। नादिरशाह ने ५८ दिनों तक दिल्ली को लूटा। उसके पश्चात् ३२ करोड़ की लूट की। संपति ले कर, प्रसिद्ध कोहनूर हीरा और तावस तख्त भी थे, वह अपने देश को लौट गया। सन् १७४७ में अहमदशाह दुर्रानी ने हिंद पर आक्रमण किया। महम्मदशाह ४६ वर्ष की अवस्था में मर गया।

(१२) अहमदशाह—महम्मदशाह के मरने पर सन् १७४८ में उसका पुत्र अहमदशाह दिल्ली का बादशाह हुआ। इसके राज्य के समय सन् १७५१ में महाराष्ट्रों ने सूबे उड़ीसा और बंगाल देश को ले लिया। सन् १७५१-५२ में पारस के अहमदशाह ने अपने दूसरे आक्रमण में पंजाब को मुगलों से छीन लिया। सन् १७५४ में अहमदशाह गद्दी से उतार दिया गया।

(१३) आलमगीर—अहमदशाह के तख्त से उतार दिए जाने पर मंगरुद्दीन जहांदारशाह का पुत्र दूसरा आलमगीर सन् १७५४ में दिल्ली के तख्त पर बैठा। इसके राज्य के समय सन् १७५६ में अहमदशाह के तीसरे आक्रमण से दिल्ली गारत होगई। सन्१७५९ में अहमदशाह का चौथा आक्रमण हुआ। आलमगीर को उसके वजीर गयमुद्दीन ने मारडाला। महाराष्ट्रों का उत्तरी भारत पर विजय और दिल्ली पर अधिकार हुआ।

(१४) शाह आलम (दूसरा)—आलमगीर के मारे जाने पर सन् १७५९ में उसका पुत्र जलालुद्दीन शाह आलम के नाम से केवल नाम के लिये दिल्ली का बादशाह हुआ, जो सन् १७७१ ई० तक इलाहाबाद में अंगरेजों के पेंशिन खानेवाला बना रहा। सन् १७७१ में महाराष्ट्रों ने शाह आलम के बाप दादाओं के राज्य का थोड़ा भाग उसको लौटा दिया, परंतु बागियों ने बादशाह को आंख फोड़ कर उसको कैदकर लिया। महाराष्ट्रों ने उसको कैद से छुड़ाया। सन् १७८९ में महादाजी सिंधिया ने दिल्ली को अपने अधिकार में कर लिया। अंगरेज महाराज ने महाराष्ट्रों को परास्त करने के पश्चात् सन् १८०३ के सितंबर में दिल्ली और शाह आलम को सिंधिया से ले लिया। सन् १८०४ के अकतूबर में यशवंतराव हुलकर ने दिल्ली पर घेरा डाला था,

परंतु अंगरेजी गवर्नमेंट ने उसको बचाया। उस समय से दिल्ली अंगरेजों के आधीन हुई, किन्तु मुगल बादशाह नाम के लिये सन् १८५७ तक बादशाह बने रहे। शाह आलम ७८ वर्ष की अवस्था में मर गया।

(१५) अकबर (दूसरा)—शाह आलम के मरने पर उसका पुत्र अकबर सन् १८०६ में अंगरेज महाराज के आधीन दिल्ली की गद्दी पर बैठा। अकबर ७७ वर्ष की उमर में मर गया।

(१६) महम्मद बहादुरशाह—अकबर की मृत्यु होने पर उसका बेटा महम्मद बहादुरशाह सन् १८३७ में अंगरेजों के आधीन दिल्ली के तख्तपर बैठा, जो अंगरेजीगवर्नमेंट से ८० हजार रुपया मासिक पेंशन पाता था।

सन् १८५७ की मई में मेरठ की फौज बागी हो कर दिल्ली में पहुंची, उनके आने पर दिल्लो को हिंदुस्तानो सेना उनमें मिलगई। उन्होने गिर्जाओं का विनाश किया, प्रायः संपूर्ण कृस्तानों को मार डाला और दिल्ली के महम्मदबहादुर शाह को अपना सरदार बनाया। अंगरेजों से इतनेही बन पड़ी कि उन्होनें मेगजीन उड़ा दिया। बगावत पश्चिमोत्तर देश और अवध में बंगाले के जिलो तक फैल गई। दिल्ली एक प्रसिद्ध राजधानी थी, इसलिये चारो ओर से बागी वहां पहुचने लगे। अंगरेजी सरकारनें तारीख आंठवीं जून को दिल्ली,का घेरा आरंभ किया। अगस्त महीनें में जनरल निकलसन पंजाब से मदद लेकर आया। तारीख १४ सितंबर को अंगरेजी सेना ने शहर पर आक्रमण किया। ६ दिनों तक शहर की गलियों में सख्त लड़ाई होती रही। अंगरेजी सेना किसी समय ८ हजार से अधिक न थी और शहर पन्नाह के भीतर १४४ बड़ी तोपों के साथ ३० हजार से अधिक हथियार बन्दबागी थे, परंतु बागी परास्त होगए और दिल्ली पर फिर अंगरेजों का अधिकार होगया। बे कायदे रिसाले के अफसर मेजर हाडसन ने बूढ़े बादशाह महम्मद बहादुरशाह और उसके २ लड़कों को हुमायूं के मकबरे में जहां वे छिपे थे, जाकर पकड़ लिया। हाडसन ने दोनों शाहजादों को अपने हाथ की गोलीओं से मार दिया। बादशाह कैद करके रंगून भेजा गया और सन् १८६२ में ८७ वर्ष की अवस्था में वहांही मरगया। यद्यपि

१८ महीनों तक बराबर जगह जगह लड़ाई होती रही, परंतु दिल्ली को जीति और लखनऊ के घेरे हुए लोगों के छुटकारा होने पर बगावत निर्बल होगई। क्रम क्रमसे संपूर्ण शहर जीते गए। सन् १८५९ की जनवरी तक संपूर्ण बागी सरकारी राज्य से बाहर भगा दिए गए।

बलवे से पहले दिल्ली जिला पश्चिमोत्तर देश के आधीन था, परंतु पीछे सन् १८५८ में पंजाब गवर्नमेंट के आधीन कर दिया गया।

सन् १८७७ की पहली जनवरी को भारतेश्वरी महारानी कीन विक्टोरिया को एम्प्रेस, अर्थात् राजराजेश्वरी पद प्राप्त करने का महान् दरबार बड़े धूम धाम से दिल्ली में हुआ।

---

# इक्कीसवां अध्याय।

## ( पश्चिमोत्तर देश में ) सिकंदराबाद, बुलंदशहर, खुर्जा, अलीगढ़, हाथरस, कासगंज, सोरों, बदाऊं, एटा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद, कन्नौज और बिठूर।

## सिकंदराबाद।

दिल्ली से पूर्व-दक्षिण १३ मील गाजियाबाद जंक्शन और ३४ मील सिकन्दराबाद का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से ४ मील उत्तर पश्चिमोत्तर देश के बुलंदशहर जिले में तहसीली का सदर स्थान सिकन्दराबाद एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिकन्दराबाद में १५२३१ मनुष्य थे; अर्थात् ९०५४ हिन्दू, ५८७६ मुसलमान, २९१ जैन, ८ कृस्तान और २ सिक्ख।

सिकन्दराबाद में तहसीली, कचहरी, पुलिस स्टेशन, खैराती अस्पताल, कई एक देवमंदिर, अनेक छोटी मसजिद और एक बड़ा जिमींदार का माकान है। पगड़ी, दुपट्टा और देशी पोशाक बनाई जाती है। चीन और गल्ले की सौदागरी होती है।

इतिहास—दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी ने सन् १४९८ ई० में सिकन्दराबाद को बसाया। अकबर के राज्य के समय यह एक महाल का सदर स्थान था; अवध के सूबेदार सयादतखां ने सन् १७३६ ई० में यहां महाराष्ट्रों को परास्त किया था। सन् १८५७ के बलवे के समय गूजर, राजपूत और मुसलमानों ने सिकन्दराबाद पर आक्रमण करके इसको लूटा; किंतु २७ सितंबर को सरकारी सेना ने आकर बागियों को खदेर दिया।

## बुलंदशहर।

सिकन्दराबाद से ९ मील (दिल्ली से ४३ मील) पूर्व-दक्षिण बुलंदशहर रोड का रेलवे स्टेशन है, जिसको चोला का स्टेशन भी कहते हैं। स्टेशन से लगभग १० मील पूर्व पश्चिमोत्तर देश के मेरठ विभाग में काली नदी के पश्चिम बगल में जिले का सदर स्थान बुलंदशहर एक कसबा है, जिसको बारन भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बुलंदशहर में १६९३१ मनुष्य थे; अर्थात् ८७२६ हिंदू, ८०६८ मुसलमान, ८२ क्रस्तान, ४६ जैन और ९ सिक्ख।

कसबा दो भाग में बटा है; पुराना कसबा ऊंची भूमि पर और नया कसबा पश्चिम ओर नीची भूमि पर है। बुलंदशहर में सरकारी कचहरियों के विविध मकान, अस्पताल, जेलखाना इत्यादि और पहाड़ी के सिर पर तहसीली कचहरी है। सन् १८८० में चंदे के १६ हजार रुपये के खर्च से काली नदी के तीर एक उत्तम स्नानघाट बनाया गया। १ लाख रुपये के खर्च से एक बाजार बना है, जिसके निचले मंजिल की दुकानों की दोहरी पंक्तियां नदी की बाढ़ के समय बांध का काम देती हैं। २२ हजार रुपये के खर्च से टाउनहाल बना है; यह कसबा बहुत शीघ्रता से उन्नति की है। सन् १८७८ में यह मट्टी की दीवारों का एक गांव था, किंतु अब ईंटों और पत्थरों का बना हुआ कसबा होगया है; यहां अकबर के एक अफसर बहलोल खां की पुरानी कबर और एक बहुत सादी जामा मसजिद है और ऊनी कपड़े अच्छे बनते हैं।

**बुलंदशहर जिला**—जिले का क्षेत्रफल १९४१ वर्गमील है। इसके उत्तर मेरठ जिला, पश्चिम यमुना नदी, दक्षिण अलीगढ़ जिला और पूर्व गंगा है। गंगा की नहर जिले की संपूर्ण लंबाई में उत्तर से दक्षिण गई है; इसकी ३ बड़ी शाखा हैं। जिले में पूर्वोत्तर की सीमा पर ४५ मील गंगा और दक्षिण-पश्चिम की सीमा के साथ ५०मील यमुना बहती है। काली नाम-क एकछोटी नदो उत्तर मेरठ जिले से इस जिले में प्रवेश करके जिले को दो भागों में बिभक्त करती हुई अलीगढ़ जिले में गई है।

इस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ९५०३७६ मनुष्य थे; अर्थात् ५०१८१९ पुरुष और ४४८५५७ स्त्रियां और सन् १८८१ में ९२४८२२ थे; अर्थात् ७४८२५६ हिंदू, १७५४५८ मुसलमान, ९६७ जैन, ११५ क्रुस्तान, २४ सिक्ख और २ पारसी। जाति की संख्या में १५१५४१ चमार, ९३२६५ ब्राह्मण, ७७३२ राजपूत, ५३३८० जाट, ५०७१० गूजर, ५०१५० लोधी थे। राजपूत और गूजरों में मुसलमान भी बहुत हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बुलंदशहर जिले के कसबे खुर्जा में २६३४९, बुलंदशहर में १६९३१, सिकंदराबाद में १५२३१, शिकारपुर में ११५९६ और जहांगिराबाद, अनूपशहर, दीवाई, सेयाना, जेवरा, में इनसे कम मनुष्य थे। पहले इस जिले के बहुतेरे लोग अपनी बच्चे लड़कियों को मार देते थे; अङ्गरेज महाराज ने जोरडाल कर इस रिवाज को बंद कर दिया।

**शिकारपुर**—बुलंदशहर कसबे से १३ मील दक्षिण-पूर्व इस जिले का शिकारपुर उन्नति करता हुआ कसबा है, जिसको लग भग १५०० ई० मे शिकंदर लोदी ने वसाया। शिकारपुर में अनेक अच्छे मकान, मंदिर. मसजिद, एक पुरानी सराय और कसबे से लगभग ५०० गज उत्तर एक पुराना किला है।

**अनूपशहर**—शिकारपुर से लगभग १० मील दक्षिण काली नदी के पश्चिम बगल में बुलंदशहर जिले में तहसीली का सदर स्थान अनूपशहर कसबा है, जिसको सत्रहवीं शदी में जहांगीर के राज्य के समय अनूपराय ने वसाया था। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस कसबे में ८२३४

मनुष्य थे। यहां तहसीली कचहरी, अस्पताल, एक सराय, मसजिद और कई एक छोटे मंदिर हैं। कपड़ा, कंबल, जूता, बैलगाड़ी और साबुन तैयार होते हैं। कसबे की आबादी घटरही है।

**इतिहास**—ऐसी कहावत है कि बुलंदशहर का जिला हस्तिनापुर के पांडवों के राज्य का एक भाग था; जब हस्तिनापुर को गंगा बहा ले गई; तब अहर नामक पुराने गांव का रहने वाला एक राज्य कर्मचारी इस देश का शासन करता था। बुलंदशहर, जिसको बारन भी कहते हैं बहुत पुराना कसबा है। अब तक बड़े सिकंदर के सिक्के कसबे में और इसके चारो ओर मिलते हैं। लेखों से यह निश्चय होता है कि सन् ईस्वी के तीसरी शदी में गुप्त-वंश के राजा इस जिले पर हुकूमत करते थे। सन् १००८ ई० में गजनी के महमूद ने बारन पर चढ़ाई की; उस समय बारन का हरदत्त नामक डोर राजा भय खाकर मुसलमान होगया। सन् ११९३ में कुतबुद्दीन ने बारन के राजा चन्द्रसेन को परास्त करके कसबे को ले लिया। चौदहीं शदी में बहुतेरे राजपूत यहां के मेओ जातियों को खदेर कर बस गए। अठारहवीं शदी में महाराष्ट्रों ने कोइल में रहकर बारन पर हुकूमत की थी। अंगरेजी गवर्नमेंट ने सन् १८०३ में जब कोइल को ले लिया, तब बुलंदशहर और चारो ओर की जगह नया जिला बना। सन् १८२३ में अलीगढ़ के उत्तरीय परगने और मेरठ के दक्षिणी परगने मिल कर बुलंदशहर जिला बना। सन् १८५७ के बलवे के समय २१ वीं मई को नवीं देशीपैदल की सेना बागी हुई। अंगरेजी अफसर मेरठ भाग गए। बागी गूजरों ने बुलंदशहर कसबे को लूटा। मालागढ़ का वलीदादखां बागियों का सरदार बना। जुलाई के आरंभ से सितंबर के अन्त तक बुलंदशहर वलीदादखां के अधिकार में था। पश्चात् जब गाजियाबाद से अंगरेजी फौज आई; तब वलीदादखां एक बड़ी लड़ाई करने के बाद गंगा पार भाग गया। चौथी अक्तूबर को जिले पर अंगरेजी अधिकार फिर होगया।

## खुर्जा।

बुलंदशहर रोड के स्टेशन से ९ मील (दिल्ली से ५२ मील) पूर्व-दक्षिण

खुर्जा का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देश के बुलंदशहर जिले में रेलवे स्टेशन से ३½ मील उत्तर तहसीली का सदर स्थान और जिले में सबसे बड़ा कसबा खुर्जा है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय खुर्जा में २६३४९ मनुष्य थे; अर्थात् १३५९४ पुरुष और १२७५५ स्त्रियां। इन में १४७८२ हिंदू, ११३२९ मुसलमान, २३० जैन और ८ कृस्तान थे।

खुर्जा इस जिले में प्रसिद्ध सौदागरी का स्थान है। कसबे के प्रधान निवासी चूरूवाल बनिया, जिनमें बहुतेरे धनी कोठीवाल हैं और पठान हैं। कसबे में एक सुंदर नया जैन मंदिर और १२ हजार रुपए के खर्च से बना हुआ २०० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा एक तालाब, जिसमे गंगा की नहर से पानी आता है, देखने में आते हैं। हाल में १ लाख रुपए के खर्च से एक बाजार बनवाया गया है। इनके अलावे खुर्जा में तहसीली, पुलिस स्टेशन, स्कूल, अस्पताल और टाउनहाल है। खुर्जा में अंगरेजी चीज, धातु, देशी कपड़ा, और पीतल के बर्तन दूसरे स्थानों से आते हैं और नील, चीनी, गल्ले, घी इत्यादि की यहां सौदागरी होती है।

## अलीगढ़।

खुर्जा से २७ मील (दिल्ली से ७९ मील) पूर्व-दक्षिण अलीगढ़ का रेलवे जंक्शन है। पश्चिमोत्तर देश के मेरठ विभाग में (२७ अन्श ५५ कला ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अन्श ६ कला ८५ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान अलीगढ़ एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय कोइल कसबे के साथ अलीगढ़ में ६१४८५ मनुष्य थे; अर्थात् ३२८४३ पुरुष और २८६४२ स्त्रियां। इन में ३७८५५ हिंदू, २२६०९ मुसलमान, ६९२ जैन, २६३ कृस्तान, ५४ सिक्ख, १२ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारत वर्ष में ५९ वां और पश्चिमोत्तर देश में १३ वां शहर है।

अलीगढ़ को शहर तली कोइल में डोर राजपूतों के पुराने गढ़ के ऊंचे टीले पर सन् १७२८ की बनी हुई साबितखां की मसजिद है। मसजिद के सिर पर ५ गुंबज और ४ मीनार बने हुए हैं। इसके दक्षिण-पूर्व मोती मसजिद खड़ी है। शहर में लगभग १०० इमाम बाड़े, ईदगाह के निकट जीसूखां का सुंदर मकबरा, साबितखां की मसजिद से १/४ मील पश्चिम कबरों का बड़ा झुंड, इष्टइंडियन रेलवे के उत्तर बगल पर सिविल कचहरियां; किले से १ १/२ मील दक्षिण जेलखाना और शहर में एक उत्तम सरोवर के किनारों पर कई एक छोटे मंदिर हैं। इनके अलावे अलीगढ़ में गिर्जा और कई एक अस्पताल हैं। इस शहर में गल्ले, सोरा, सतरंजी, कपड़ा, दाल, घी और रुई की बड़ी तिजारत होती है।

**कालिज**—रेलवे स्टेशन से लगभग १ मील दूर बड़े दरजे के मुसलमानों के पढ़ने के लिये मुसलमानों का प्रसिद्ध कालिज बना है; यह अलीगढ़ के प्रसिद्ध सर सैयद अहमदखां के० सी० एस० आई के उद्योग से नियत हुआ और सन् १८७५ ई० में खुला। कालिज की इमारत 'केंब्रिज' कालिज के ढाचे की बनी हैं। इसके चारो ओर १०० एकड़ भूमि है। इसमें कालिज और स्कूल दोनों हैं। एक प्रिन्सिपल और बहुतेरे प्रोफेसर तथा माष्टरों के आधीन कालिज डिपार्टमेंट मे लगभग २०० और स्कूल डिपार्टमेंट में प्रायः ३५० भारतवर्ष के संपूर्ण विभागों के लड़के पढ़ते हैं। इसमें अंगरेजी, संस्कृत, अरबी, पारसी, इत्यादि की शिक्षा दी जाती है और खेल का अभ्यास भी कराया जाता है। अङ्गरेजी गवर्नमेंट से इस कालिज का कोई संबंध नहीं है। इसके प्रबन्ध के लिये मुसलमान 'मेंबरों' का एक दल है। गवर्नमेंट के कालिजों की चाल के विरुद्ध इसमें मुसलमानी मजहब की शीक्षा भी दी जाती है।

**किला**—शहर से २ मील उत्तर अलीगढ़ का पुराना किला है, जिसको रामगढ़ का किला भी कहते हैं। यह किला सन् १५२४ में बना और अठारहवीं शदी में फ्रेंच इंजिनियरों द्वारा फिर से सुधारा गया। किले

के भीतर की भूमि २० एकड़ है, जिसके चारो ओर १८ फीट गहरी और ८० फीट से १०० तक चौड़ी खाई बनी हुई है। किले के उत्तर बगल में प्रधान दरवाजा खड़ा है। किले के एक लेख से जान पड़ता है कि इब्राहिम लोदी के राज्य के समय सन् १५२४ ई० में यह किला बना था; इसके बारक गिरा दिए गए हैं, अब इसमें फौज नहीं रहती है।

**मेला**—माघी पूर्णिमा के लगभग अलीगढ़ में एक मेला होता है। मेले के समय बांस का एक छोटा नगर बनाया जाता है; उसके चारो ओर सैकड़ो खीमे खड़े होते हैं। दुकानदार लोग हिंदुस्तानी कारीगरी के बर्तन इत्यादि सुंदर सामान बेंचने तथा दिखलाने के लिये ले आते हैं; उस समय घोड़ों का मेला, खेती का सामान और पैदावार की नुमाइश, घोड़दौड़, कसरत और दूसरे अनेक तमाशे, जिसमें अंगरेज और देशी लोग सामिल रहते हैं, होते हैं।

**अलीगढ़ जिला**—इस जिले का क्षेत्रफल १९५५ वर्गमील है। यह मेरठ विभाग के दक्षिण का जिला है। इसके उत्तर बुलंदशहर जिला, पूर्व एटा जिला, दक्षिण मथुरा जिला और पश्चिम यमुना नदी और मथुरा जिला है। गंगा की नहर जिले में हो कर उत्तर से दक्षिण को बहती है, अंगरेजी अधिकार से पहले इसजिले में बड़ा बन था, जो अब तेजीसे घट रहा है। जिले में आम इत्यादि फलों के वृक्ष कम हैं। वृक्षों की बढ़ती होने के लिये गवर्नमेंट ने बागों की मालगुजारी घटादी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अलीगढ़ जिले में १०४२००६ मनुष्य थे; अर्थात् ५५७३३२ पुरुष और ४८४६७४ स्त्रियां और सन् १८८१ में १०२११८७ मनुष्य थे; अर्थात् ९०११४४ हिंदू, ११७३३९ मुसलमान, २३७७ जैन, २८९ क्रस्तान, २८ सिक्ख और १० पारसी। जातियों के खाने में १७२४५१ चमार, १३६६६४ ब्राह्मण, ८३६०५ जाट, ७५८४१ राजपूत, ५०८१७ बनिया, ३७३३१ लोधी, ३११०६ गड़ेरिया, २९५२१ कोली थे। सन् १८९१ में इस जिलेके कसबे अलीगढ़ में ६१४८५; हाथरस में ३९१८१;

अतरवली में १५४०८ और सिकंदराराऊ में १३०२४ मनुष्य थे; इनके अलावे इस जिले में जलाली, टपाल और हरदोआगंज छोटे कसवे हैं।

इतिहास—कोइल बहुत पुराना कसबा है, एक क़िस्से से जान पड़ता है कि एक चंद्रवंशी राजपूत ने कोइल को बसाया। पहले यह जिला डोर राजपूतों के अधिकार में था। कोइल में अबतक डोर राजपूतों की गढ़ी की निशानी, जिसपर साबितखां की मसजिद बनी है, विद्यमान है। सन् ११९४ ई० में कुतबुद्दीन ने दिल्ली से चलकर कोइल के हिंदू राजा को परास्त करके कसबे को लूटा। सन् १२५२ में कोइल के गवर्नर गयासुद्दीन बलबन ने एक बड़ा मीनार बनवाया था, जो सन् १८६२ में गिरगया। पंद्रहवीं शदी में दिल्ली और जौनपुर की सेना कोइल में लड़ी थी। बाबर ने एक मुशलमान को कोइल का गवर्नर बनाया था। मुगल बादशाहों के राज्य के समय कोइल में बहुतेरी मसजिदें और मक़बरे बने थे, जो अबतक विद्यमान हैं। औरंगजेब के मरने पर जिला महाराष्ट्रों का शिकार हुआ। उसके पश्चात् सन् १७५७ ई० के लगभग जाटों के प्रधान सूर्यमल ने कोइल पर अधिकार किया। सन् १७५९ में अहमदशाह अफगान ने कोइल से जाटों को निकाला। सन् १७७६ में नाजफखां ने रामगढ़ के पुराने किले की मरम्मत करवाई और कसबे का नाम अलीगढ़ रक्खा। सन् १७८५ के लगभग सिंधिया ने अलीगढ़ को लेलिया और इसमें नक़द तथा जवाहिरात लगभग १ क्रिरोड़ रुपए का पाया। सन् १८०३ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने अलीगढ़ के जिले पर अपना अधिकार कर लिया। जब सन् १८५७ में मेरठ के बलवे की खबर अलीगढ़ में पहुंची; तब तारीख १२ वीं मई को पल्टन के ३०० सिपाही हिफाजत के लिये तैनात किए गए, किन्तु वे तारीख १९ को बागी हो गए; उन्होंने पड़ोस के गावों के मेवाटी लोग और अन्य बागियों में मिलकर शहर को लूटा। पीछे अंगरेजी फौज आकर जिले से बागियों को निकाल दिया।

अलीगढ़ जंक्शन से ३० मील पूर्वोत्तर 'अवध रुहेलखंड रेलवे' की शाखा पर गंगा के दहिने किनारे राजघाट का रेलवे स्टेशन है; यहां गंगा पर रेलवे का पुल बना है और प्रतिवर्ष कार्तिकी पूर्णिमा को गंगास्नान का मेला होता है।

# हाथरस।

अलीगढ़ से १८ मील दक्षिण ( दिल्ली से ९७ मील पूर्व-दक्षिण) हाथरस में रेलवे का जंक्शन है। जंक्शन के स्टेशनसे२ मील दूर शहर का स्टेशन बना है। जंक्शन के निकट राजा की धर्मशाला है। हाथरस से सड़क द्वारा २१ मील उत्तर अलीगढ़ और २९ मील दक्षिण आगरा है। पश्चिमोत्तर देश के अलीगढ़ जिले में तहसीली का सदर स्थान हाथरस एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय हाथरस में ३९१८१ मनुष्य थे; अर्थात् २१०६६ पुरुष और १८११५ स्त्रियां। इनमें ३३७०९ हिंदू, ५०३२ मुसलमान, ४२४ जैन, १३ कृस्तान, २ पारसी और एक सिक्ख थे।

हाथरस तिजराती कसबा है, इसमें पत्थर और ईंटो के बहुतेरे मकान बने हैं। कसबे के चारो ओर चौड़ी पक्की सड़क और इसके मध्य में १ सड़क पूर्वसे पश्चिम को और २ सड़कें उसको काटती हुई उत्तर--दक्षिण को गई है; इस भांति कसबे के ६ महल्ले बनते हैं। एक नए तलाव के किनारे पर म्यु-निसपल आफिस और स्कूल का मकान बना है। कसबे में एक खैराती अ-स्पताल और पोष्टआफिस है। लकड़ी और पत्थर की नकाशी के काम के लिये हाथरस प्रसिद्ध है; यहां से चीनी, गल्ले, घी और तेल के बीज दूसरे कसबों में भेजे जाते हैं। लोहा, धात के बर्तन, कपड़ा, मसाला इत्यादि चीजें दूसरे स्थानों से यहां आती हैं।

हाथरस रेलवे लाईन ४ ओर गई है;—पूर्व थोड़ा दक्षिण कासगंज, फर्रु-खाबाद, कन्नौज कानपुर; पूर्व-दक्षिण टुंडला, इटावा, कानपुर; पश्चिम कुछ दक्षिण मथुरा; और पश्चिमोत्तर अलीगढ़, गाजियाबाद और दिल्ली।

**इतिहास**—अठारहवीं शदी के अंत में हाथरस ठाकुर दयाराम जाट के अधिकार में था, उसका उजड़ा हुआ किला कसबे के पूर्व अब तक खड़ा है। सन् १८१७ में अङ्गरेजों ने हाथरस के किले को दयाराम से छीन लिया। अंगरेजी अधिकार होने के पीछे हाथरस की तिजारत बड़ी तेजी से बढ़ गई। तुलसीसाहब संत भी यहीं पर रहते थे, जिनके घटरामायण इत्यादिक ग्रन्थ बनाये हुये हैं।

# कासगंज।

हाथरस जंक्शन से ३४ मील पूर्व कासगंज का रेलवे जंक्शन है। पश्चिमोत्तर देश के एटा जिले में काली नदी से १/४ मील पश्चिमोत्तर एटा जिले में प्रधान तिजारती स्थान कासगंज है। काली नदी पर, जिसको कालिंदी भी कहते हैं, रेलवे का पुल बना है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय कासगंज में १६०५० मनुष्य थे; अर्थात् १०९२२ हिंदू, ४९४६ मुसलमान, ८४ जैन, ६५ कृस्तान, ३२ सिक्ख और १ पारसी।

प्रधान सड़क कसबे होकर उत्तर से दक्षिण और दूसरी सड़क इसको काटती हुई पूर्वस पश्चिम गई है। सडकों पर सुन्दर दुकानें बनी हैं। कसबे में ईंटे के बहुत मकान हैं। प्रधान बाजार हाल में बना है। मुसलमानी महल्ले में बहुतेरे मीनारों और अजीब छत के साथ एक सुंदर मसजिद है; इनके अलावे कासगंज में मुनसफी कचहरी, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, तहसीली और स्कूल हैं और चीनी, घी, तेल के बीज और देशी पैदावार की तिजारत, जो बढ़ती पर है, होती है।

इतिहास—अवध के वजीर के आधीन बहादुरखां ने अठारहवीं शदी में कासगंज को बसाया; पीछे उसके उत्तराधिकारी ने कर्नल जेम्स गार्डन के हाथ इसको वेचदिया, उसके पश्चात् यह उसके एजेंट मृतराजा दिलसुखराय के हस्तगत हुआ।

# सोरों।

कासगंज से ९ मील पूर्वोत्तर सोरों तक रेलवे की शाखा गई है। एटा जिले में गंगा से ५ मील दहिने सोरों एक तीर्थ है। सन् १८९१ की जन-संख्या के समय सोरों कसबे में ११२६५ मनुष्य थे; अर्थात् ९६१६ हिंदू, १६१२ मुसलमान, और ३७ कृस्तान। गंगाकी छोड़ी हुई धारा के किनारे पर, जो

वर्षाकाल में गंगा से मिलती है, दूरतक बहुतेरे पक्के घाट बने हैं। घाटों के समीप अनेक देवमंदिर स्थित हैं, इनमें वाराह जी का मंदिर प्रधान है। शिखरदार मंदिर में शुक्ल वर्ण वाराह जी को चतुर्भुज प्रतिमा का दर्शन होता है; इनके मुखपर पृथ्वी को आकार और वाम भाग में लक्ष्मी जी स्थित हैं। दूसरे स्थानों के एक मंदिर में गंगा जी, भगीरथ और शिवकी प्रतिमाएं, एक मंदिर में द्वारिकाधीश और एक मंदिर में राम और जानकी हैं। सोरों तीर्थ की परिक्रमा ३ कोस की है; यहां के बाजार में सब आवश्यकीय वस्तुएं मिलती हैं। पंडे विशेष कर के सनाढ्य ब्राह्मण हैं। प्रतिवर्ष अगहन सुदी एकादशी को यहां स्नान दर्शन का मेला होता है।

सोरों को वाराह तीर्थ भी कहते हैं। भारतभ्रमण के तीसरे खंड में तिरहुत के उत्तर के वाराह क्षेत्र का वृतांत लिखा गया है।

## बदाऊं।

सोरों के रेलवे स्टेशन से लगभग २५ मील पूर्वोत्तर स्रोत नदी के बाएं किनारे एक मील दूर पश्चिमोत्तर देश के रुहेलखंड में जिलेका सदरस्थान बदाऊं कसबा है। वहां अभी रेल नहीं गई है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय बदाऊं में ३५३७२ मनुष्य थे; अर्थात् १७१८७ पुरुष और १८१८५ स्त्रियां। इनमें २०७७० मुसलमान, १४४६२ हिंदू, १३९ कृस्तान और १ सिक्ख थे।

बदाऊं में एक पुराना और दूसरा नया कसबा है। पुराना कसबा ऊंची भूमि पर स्थित है; इसमें एक उजड़ा पुजड़ा पुराना किला और पत्थर की एक खुब सूरत मसजिद, जो पूर्व समय में हिंदुओं के मंदिर थी, देखने में आती है। बदाऊं में मामूली जिले की कचहरियों के अलावे जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, म्युनिसपल मकान और एक गिर्जा है। कसबे की सड़कें पक्की बनी हुई हैं।

**बदाऊं जिला**—बदाऊं जिले का क्षेत्रफल २००१ वर्गमील है। यह रुहेलखंड विभाग के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इसके पूर्वोत्तर बरैली जिला और रामपुर का राज्य, पश्चिमोत्तर मुरादाबाद जिला, दक्षिण-पश्चिम गंगा

नदी और पूर्व शाहजहांपुर जिला है। स्वात नदी इस जिले को दो भागों में विभक्त करती है। जिले में जंगल और विना जोती हुई भूमि वहुत है और गंगा, रामगंगा और स्वात नदी बहती है; इनके अतिरिक्त कई छोटी नदियां हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बदाऊं जिले में ९२४३२१ मनुष्य थे, अर्थात् ४९७५८१ पुरुष और ४२६७४० स्त्रियां और सन् १८८१ में ९०६४५१ मनुष्य थे; अर्थात् ७६७२५५ हिंदू, १३८६८७ मुसलमान, १६० जैन, ४० सिक्ख और ३०९ कृस्तान तथा दूसरे। जातियों के खाने में १३३०८५ अहर, १२२०८५ चमार, १०७२३० काछी, ६३५६२ राजपूत, ६०८६३ ब्राह्मण, ३७१४६ कहार, ३२४८० बनिया। इसजिले में नीचे लिखे हुए कसबे हैं,—बदाऊं (जन-संख्या सन् १८९१ में ३५३७२), सहसवान (जन-संख्या सन् १८९१ में १५६०१), उझनी, बिलासी, इसलामनगर, आलापुर, ककराला और बिसवली। बिसवली में एक सुंदर मसजिद और दूसरी कई एक पठानों की इमारतें हैं।

इतिहास—अहर राजा बुद्ध ने सन् ९०५ ई० के लगभग बदाऊं कसबे को बसाया; उसीके नाम से बदाऊं नाम की सृष्टि है; इस जिले के संपूर्ण जंगली देशों में अवतक अहर जाति के लोग वहुत बसते हैं। सन् १०२८ में गजनी के महमूद के कर्मचारी सैयद सालार मसाउदगाजी ने राजा बुद्ध की संतानों को देश से बेदखल करके कुछदिनों तक बदाऊं में रहा, परंतु पीछे हिंदुओं के झगड़े से विवस हो कर उसको यह देश छोड़ देनापड़ा। सन् ११९६ में कुतबुद्दीन ऐवक ने राजा को मार कर बदाऊं कसबे को लूटा और किले को ले लिया; इसके उपरांत कई बादशाहों के आधीन होने के पीछे सन् १५५६ मे यह देश अकबर के अधिकार में आया। पठान और मुगल बादशाहों के राज्य के समय यह कसबा एक सूबेका सदर स्थान था। सन् १५७१ में आग लगने से प्राय संपूर्ण कसबा बरबाद हो गया। शाहजहां के राज्य के समय सूबे का सदर स्थान बरैली बनी। सन् १७१२ के पीछे फर्रुखाबाद नवाब ने बदाऊं को लेलिया, परंतु ३० वर्ष के पीछे हाफिजरहमत रोहिला ने उसके पुत्र से इसको छीन लिया; उसके बाद यह सन् १७७४ में अवध के

नवाब के और सन् १८०१ में अंगरेजों के आधीन हुआ। लगभग सन् १८३८ में बदाऊं कसबा जिले का सदर स्थान बना। सन् १८५७ की मई के अंत में खजाने के रक्षक सिपाही बागी हो गए; बागियों ने खजाना लूट लिया, सिविल स्टेशन को जलाया और कैदियों को छोड़ दिया। जिले में बगावत फैली। जिले के मुखिया लोग परस्पर लड़ने लगे। सन् १८५८ की ता० १७ अपरैल को अंगरेजी सेना ने ककराला के निकट बागियों को परास्त किया। तारीख १२ वीं मई को बदाऊं पर फिर अंगरेजी अधिकार हो गया।

# एटा।

कासगंज के रेलवे स्टेशन से १९ मील दक्षिण काली नदी के ९ मील पश्चिम आगरा विभाग में जिले का सदर स्थान एटा एक कसबा है।

सन् १८८१ की जन-संख्या के समय एटा कसबे में ८०५४ मनुष्य थे; अर्थात् ५२११ हिंदू, २३११ मुसलमान, ४९२ जैन, ३१ कृस्तान और ९ दूसरे।

एटा का प्रधान बाजार एटा के कलक्टर मिष्टर एफ० ओ० मैनी के नाम से मैनीगंज कहा जाता है। पश्चिम ओर एटा के नए कसबे में दलसुखराय का एक सुन्दर शिखरदार मंदिर, और एक स्कूल है। इनके अतिरिक्त एटा में एक सुन्दर सरोवर, जिसमें पक्की सीढ़ियां बनी हैं; तहसिली कचहरी, म्युनिस्पल हाल, अस्पताल और जिले की कचहरियां हैं। कसबे के उत्तर पांचसौ वर्ष का बना हुआ संग्रामसिंह नामक चौहान ठाकुर का मट्टी का किला स्थित है; यहां सप्ताह में सोम्वार और बृहस्पति वार को बाजार लगता है और किरमिजी, नील के बीज और चिनी को खास तिजारत होती है।

**एटा जिला**—जिले का क्षेत्रफल १७३८ वर्गमील है; इसके उत्तर गंगा नदी, बाद बदाऊं जिला, पश्चिम अलीगढ़ जिला और आगरा जिला, दक्षिण मैनपुरी जिला और पूर्व फर्रुखाबाद जिला हैं। जिले का सदर स्थान एटा कसबे में है, किन्तु आबादी और तिजारत में कासगंज प्रधान है; इस जिले में वृक्ष बहुत कम हैं। जिले के क्षेत्रफल के $\frac{१}{३}$ भाग बिना जोता हुआ पड़ा है।

एटा जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ७०१९३३ मनुष्य बसते थे; अर्थात् ३८२९२४ पुरुष और ३१९००९ स्त्रियां और सन् १८८१ में ७५६५२३ मनुष्य थे; अर्थात् ६७४८६३ हिंदू, ७६७७४ मुसलमान, ५१५२ जैन, ११७ कृस्तान, १६ सिक्ख और १ यहूदी। जातियों के खाने में ८७८१९ अहीर, ७२५४९ लोधी, ७२२५८ काछी, ६७३७१ राजपूत, ६२०६५ ब्राह्मण, ५७१२० चमार, २८६६० गड़ेरिया, २७६३२ बनिया थे। इस जिले में ये कसबे हैं;—कासगंज ( जन-संख्या सन् १८९१ में १६०५० ), जलेशर ( जन-संख्या १८९१ में १३४२० ), सोरों ( जन-संख्या १८९१ में ११२६५ ), मरहरा, एटा, अलीगंज और आवा।

इतिहास—सन् ई० के पांचवीं और सातवीं शदी में चीन के बौद्ध यात्रियों ने इस जिले में बहुत मंदिर और मठ देखे थे। छठवीं शदी से दसवीं शदी तक एटा अहीर और भरों के अधिकार में था। पीछे राजपूतों ने इस पर अधिकार किया। सन् १०१७ से एटा मुसलमानों के आधीन हुआ। सोलहवीं शदी में यह अकबर के और अठारहवीं में अवध के वजीर के हस्तगत हुआ। सन् १८०१—१८०२ में अंगरेजों ने इस पर अधिकार कर लिया। सन् १८५६ में एटा कसबा जिले का सदर स्थान बना। सन् १८५७ के बलवे के समय एटा के हाकिम भाग गए। संग्रामसिंह के वंशधर एटा का राजा डामरसिंह जिले के दक्षिण भाग में स्वाधीन हुकूमत करनेवाला बना और दूसरे कई आदमी भी जगह जगह अपना अधिकार नियत किया। जुलाई के अंत में फर्रुखाबाद के नवाब ने साधारण प्रकार से कई महीनों के लिये देश को अपने अधिकार में किया। पीछे सरकारी सेना आनेपर बागी लोग चलेगए। एटा और अलीगढ़ के लिये एक खास कमीश्नर नियत किया गया, किंतु सरकारी सेना कम रहने के कारण बागियों ने कासगंज को नहीं छोड़ा; उसके पीछे ता० १५ वीं दिसंबर को सरकारी सेना ने गंगीरी में बागियों को परास्त कर के कासगंज पर अधिकार कर लिया।

## मैनपुरी।

एटा कसबे से लगभग १० मील दक्षिण-पूर्व पश्चिमोत्तर देश के आगरा

विभाग में जिले का सदर स्थान मैनपुरी एक कसबा है। यहां अभी रेल नहीं गई है। 'इष्टइंडियन रेलवे' के शिकोहाबाद स्टेशन से पक्की सड़क द्वारा ३४ मील पूर्व मैनपुरी कसबा है। सड़क पर डाकगाड़ी चलती है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय मैनपुरी में १८५५१ मनुष्य थे; अर्थात् १३९१० हिंदू, ४००० मुसलमान, ४९२ जैन, ७८ सिक्ख और ७१ कृस्तान।

शिकोहाबादवाली सड़क के दोनों बगलों में प्रधान बाजार की दुकानें बनी हुई हैं। दरवाजे के पास तहसीली कचहरी और पुलिस स्टेशन; सड़क से थोड़ी दूर अस्पताल; रायकसगंज में एक बड़ी सराय और गल्ले का बाजार है, कसबा दो भाग में बंटा है। खास मैनपुरी में ईंटे के बहुत मकान हैं। लेनगंज में बहुतेरी दुकान, एक बाजार, एक तालाब और स्कूल बने हुए हैं। सिविल स्टेशन एक नदी के दूसरे पार बना है। नदी पर एक सुन्दर पुल बना हुआ है, इनके अलावे मैनपुरी में अफीम का गोदाम, जेलखाना, एक मिशन, एक गिर्जा, दो स्कूल और २ सरकारी बाग हैं। कसबे में नील के बीज, लोहे और देशी पैदावार की बड़ी सैदागरी होती है और लकड़ी के अच्छे काम बनते हैं।

**मैनपुरी जिला**—जिले का क्षेत्रफल १६९७ वर्गमील है। इसके उत्तर एटा जिला, पूर्व फर्रुखाबाद जिला, दक्षिण इटावां जिला और यमुना नदी और पश्चिम आगरा जिला और मथुरा जिला है। जिले में काली नदी और इसना नदी बहती है और गंगा नहर की कई एक शाखा खेतों को पटाती हैं।

जिले में सन् १८९१ की जन-संख्या के समय ७६००६९ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५७६६ पुरुष और ३४४३०३ स्त्रियां और सन् १८८१ में ८०१२१६ थे; अर्थात् ७४९१३९ हिंदू, ४५०६८ मुसलमान, ६८६७ जैन, १४० कृस्तान और २ सिक्ख। जातियों के खाने में १२६५६३ अहीर, १०६७७० चमार, ७४६४३ काछी, ६४८०३ ब्राह्मण, ६३१४१ राजपूत, ५६५०१ लोधी, २९७८७ गड़ेरिया थे। इस जिले में मैनपुरी साधारण कसबा (जन-संख्या सन् १८९१ में १८५५१) और शिकोहाबाद, कढला, भोगांव और कुरवली छोटे कसबे हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि हस्तिनापुर के पांडवों के समय मैनपुरी कसबा विद्यमान था। मैनदेव के नाम से, जिसकी प्रतिमा शहरतली वस्ती में देखी जाती है, इसका नाम मैनपुरी पड़ा था। बौद्ध रिमेंस टीलों में मिलते हैं। सन् १३६३ में चौहान राजपूतों ने असवली से मैनपुरी में आकर एक किला बनाया, जिसके चारो ओर एक नगर बस गया। सन् १५२६ में बाबर ने मैनपुरी और इटावे को अपने अधिकार में किया, उसके पश्चात् शेरशाह के पुत्र कुतबखां ने मैनपुरी पर अधिकार कर के इसमें बहुत उत्तम इमारतें बनवाईं, जिनकी निशानियां अबतक विद्यमान हैं। अकबर ने कन्नोज और आगरे के सरकारों में इसको मिला लिया। अठारहवीं शताब्दी में मैनपुरी महाराष्ट्रों के हस्तगत हुई। सन् १८०१ में मैनपुरी पर अंगरेजी अधिकार हुआ। सन् १८०३ में राजा यशवंतसिंह ने मैनपुरी के बड़ा भाग मुखमगंज को बसाया। सन् १८५७ की मई में मैनपुरी की नवी देशी पैदल बागी हो गई। ता० २९ वी को झांसी के बागी भी पहुंचे, तब हाकिम लोग भाग कर आगरे में चले गए। दूसरे दिन जब झांसी की फौजने कसबेपर हमला किया, तब कसबे के निवासियों ने उनको मार भगाया। मैनपुरी के राजा ने जिलेपर अपना अधिकार जमाया और बगावत शांत होनेपर अंगरेजों को सौंप दिया।

## फर्रुखाबाद।

कासगंज से ६७ मील (हाथरस जंक्शन से १०१ मील) पूर्व-दक्षिण और कानपुर जंक्शन से ८७ मील पश्चिमोत्तर फर्रुखाबाद का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देश के आगरा विभाग में गंगा के दहिने किनारे से लगभग २ मील दूर फर्रुखाबाद एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय फर्रुखाबाद में, जो फतहगढ़ के साथ एक म्युनिसपलटी बनता है, ७८०३२ मनुष्य थे; अर्थात् ४११४० पुरुष और ३६८९२ स्त्रियां। इनमें ५६०४१ हिंदू, २०८६९ मुसलमान, ५३५ क्रस्तान, ३३१ जैन, २३२ बौद्ध, १६ सिक्ख और ८ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ४० वां और पश्चिमोत्तर प्रदेश में ९ वां शहर है।

फर्रुखावाद में अनेक सड़कों के किनारों पर वृक्षलगे हैं, एक जिला स्कूल, एक अस्पताल और एक मट्टीका किला, जिसमें फर्रुखावाद के नवाब रहते थे; देखने में आए। शहर सुन्दर है, इसमें पीतल के वर्तन अच्छे बनते हैं।

फतहगढ़—फर्रुखावाद के रेलवे स्टेशन से ४ मील पूर्व-दक्षिण फतहगढ़ का रेलवे स्टेशन है। फतहगढ़, जो फर्रुखावाद शहर के साथ एक म्युनिसिपलिटी बना है, फर्रुखावाद जिले का सदर स्थान एक कसबा है। सन् १८८१ की जन-संख्या के समय फर्रुखावाद में ६२४३७ और फतहगढ़ में १२४३५ मनुष्य थे और सन् १८९१ में दोनों की मनुष्य-संख्या ७८०३२ थी। सन् १८५७ के बलवे के समय बागियों ने फतहगढ़ में २०० युरोपियनों को मारडाला। यहां की छावनी में मामूली तरह से युरोपियन सेना की ३ कंपनी और देशी पैदल की २कंपनी रहती हैं और यहां मामूली जिले की कचहरियां, सेंट्रल जेलखाना, जिला जेल, गवर्नमेंट-स्कूल, पुलिस स्टेशन, मिशन हाइ स्कूल, मिशन चर्च और २ सराय हैं।

फर्रुखावाद जिला—जिले का क्षेत्रफल १७१९ बर्गमील है। इसके उत्तर बदाऊं और शाहजहांपुर जिले, पूर्व अवध का हरदोई जिला, दक्षिण कानपुर और इटावां जिले और पश्चिम मैनपुरी और एटा जिले हैं। जिलेका सदर स्थान फतहगढ़ है, किन्तु फर्रुखावाद सबसे अधिक आबादी का हिस्सा है।

इस जिले में सन् १८९१ की जन-संख्या के समय ८५८३७६ मनुष्य थे, अर्थात् ४६३३७४ पुरुष और ३९५००२ स्त्रियां और सन् १८८१ में ९०७६०८ थे; अर्थात् ८०४६२४ हिंदू, १०१२८४ मुसलमान, ८२६ कृस्तान, ८१४ जैन और ६० सिक्ख। जातियों के खाने में ९५९४९ चमार, ९३९८३ कुर्मी, ८७०८० अहीर, ७४५५२ काछी, ६३३९६ ब्राह्मण, ६२९९१ राजपूत, (जिनमें से १२१२ मुसलमान थे), ३२०२७ लोधो, ३११७३ कहांर थे। जिले में ये कसबे हैं,—फर्रुखावाद (जन-संख्या ७८०३२), कन्नौज (जन-संख्या १७६४६); क़ायमगंज, शमशाबाद, छपरामऊ, और तिरुआ शमशाबाद शमसुद्दीन अल्तमश का बसाया हुआ है।

इतिहास—नवाब महम्मद खां ने सन् १७१४ ई० में फर्रुखाबाद को बसाया और उस समय के दिल्ली के बादशाह फर्रुखसियर के नाम से शहर का नाम फर्रुखाबाद रक्खा। सन् १८०१ में यह जिला अंगरेजी अधिकार में आया। सन् १८५७ के बलवे के समय जून के अन्त में बागियों ने फर्रुखाबाद के नवाब को तख्त पर बैठाया। नवाब जिले पर हुकूमत करने लगा। तारीख २३ अक्तूबर को अंगरेजों ने कन्नौज में नवाब को परास्त किया। सन् १८५८ की मई में बुंदेलखंड के ३००० बागियों ने जिले में आकर कायमगंज पर आक्रमण किया, किन्तु अंगरेजी सेना ने शीघ्रही उनको भगा दिया, उसके पश्चात् जिले में कुछ बलवा नहीं हुआ।

# कन्नौज।

फर्रुखाबाद से ३७ मील (हाथरस जंक्शन से १३८ मील) पूर्व-दक्षिण और कानपुर से ५० मील पश्चिमोत्तर कन्नौज का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देश के फर्रुखाबाद जिले में काली नदी के बांये किनारे पर गंगा और काली नदी के संगम से ५ मील ऊपर कन्नौज एक पुराना कसबा है, जो प्राचीन काल में बड़ा शहर था। गंगा एक समय कन्नौज के नीचे बहती थी, किन्तु इस समय लगभग ४ मील पूर्वोत्तर है।

सन् १८९१ की जन संख्या के समय कन्नौज में १७६४८ मनुष्य थे; अर्थात् १०४०७ हिंदू, ६८८७ मुसलमान, और ३५४ जैन।

नया कसबा ढालू भूमि और अनेक टीलों पर बसा है तंग गलियों में ईंट के मकान बने हुये हैं। पुराने शहर के उजड़े पुजड़े स्थानों में बहुतेरे नए मकान बने हैं। बड़ा बाजार में अधिक व्यापार होता है और तुराबली बाजार में गल्ले की तिजारत होती है। सप्ताह में ४ दिन बाजार लगता है। इस कसबे में अनेक प्रकार के कपड़े, गुलाब का अतर, कागज, लाह और तेल अच्छे बनते हैं। कसबे के पश्चिमोत्तर लगभग १६५० ई० की बनी हुई बालापीर और

उसके लड़के सेख महदी के पुराने मकवरे खड़े हैं। आस पास के मैदानो में ब-हुतेरी कवरें देखने में आतो हैं।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—महाभारत—( अनुशासन पर्व ४ था अ-ध्याय ) ऋचीक मुनि ने राजा गाधि से कन्या के लिये प्रार्थना की; राजा ने कहा कि हे मुनीश्वर! तुम मुझको एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़े दो, तो मैं तुमको अपनी कन्या दूँगा, तब मुनि ने वरुण देव से कहा कि हे देव सत्तम। तुम मुझको एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़े दो। वरुण ने कहा कि वहुत अच्छा, तुम जिस स्थान पर चाहोगे, उसही स्थान में घोड़े प्रकट हो जाएंगे, उसके पश्चात् ऋचीक मुनि के ध्यान करतेही एक सहस्र शुक्ल वर्ण के श्याम कर्ण घोड़े गंगा जल से प्रकट हो गए। कान्यकुब्ज अर्थात् कन्नौज देश के समीप, जिस स्थान में घोड़े प्रकट हुए थे; उसको अश्वतीर्थ कहते हैं। राजा गाधिने मुनि से घोड़ों को ले कर उनको सत्यवती नामक अपनी कन्या प्रदान कर दी।

**इतिहास**—पूर्व काल में कन्नौज वड़ा हिंदू राज्य की राजधानी था और गुप्तवंशी राजाओं ने सन् ई० के आरंभ से ३१९ वर्ष पहले से २७९ वर्ष पीछे तक ऊपरी भारत के एक वड़े भाग पर अपना राज्य फैलाया था। कन्नौज शहर इतिहासिक समय के पहले से है। सन् १०१८ ई० में गजनी के महमूद ने इसको जीत लिया। वारहवीं शदी में प्रसिद्ध राठौर राजा जयचंद कन्नौज का सम्राट था, जिसने सन् ११८९ ई० में राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया था। ( दिल्ली के इतिहास में देखो ) जयचंद के राज्य के समय कन्नौज की वड़ी उन्नति थी। शहाबुद्दीन गोरी ने दिल्ली जीतने के पश्चात् सन् ११९४ में जय-चंद को लड़ाई में मार कर कन्नौज को ले लिया। सन् १५४० में शेरशाह ने कन्नौज के निकट हुमायूँ को परास्त किया। हुमायूं कुछ दिनों के लिये हिं-दुस्तान से भाग गया

कन्नौज के पुराने शहर को तवाहियां ५ गावों तक और एक अर्धवृत्ता-कार भूमि पर, जिसका व्यास ४ मील है, फैली हुई हैं। उनमें की प्रधान इ-मारतों की अव केवल ईंटों की नेव देखने में आती हैं। मकानों के ईंटे उजाड़ कर नए मकानों में लगायी जाती हैं। पुराने शहर की निशानियां दिन

पर दिन घटतो जाती है। पुराने चिन्हों में राजा अजयपाल का स्थान सब से अधिक दिल चस्प है। जामा मसजिद भी बहुत पुरानी है। पंचगौड़ ब्राह्मणों में से एक, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जिसका अपभ्रंश कन्नौजिया है, कहलाते हैं और अहीर, कहार, गोंड़, दुसाध इत्यादि कई एक जातियों में भी कन्नौजिया जाति होती है।

खेरेश्वर महादेव—कन्नौज से २८ मील पूर्व-दक्षिण और मंधना के स्टेशन से १० मील पश्चिमोत्तर बरराजपुर का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से लगभग २ मील दूर एक सुंदर पुराने मंदिर में खेरेश्वर, महादेव हैं। जिनको घेरेश्वर भी कोई कोई कहते हैं, वहां से ५०० कदम दक्षिण-पश्चिम अश्वस्थामा का स्थान है। वहां पर नाना प्रकार की पुरानी मूर्त्तियां कई सौ खंग स्फुट ढेरी से रक्खी हैं और एक चतुर्वक्त्र श्वेत शिवलिंग भी स्थापित है कुछ २ प्राचीन जंगल का चिन्ह भी देखने में आता है खेरेश्वर को लोग कहते चले आये हैं कि यह शिवलिंग अश्वस्थामाहीं का स्थापित है यह सब वृत्तान्त गोपीचन्द नाटक के छठे अंक में लिखा है एक घेरे में खेरेश्वर का विशाल शिखरदार मंदिर और मंदिर के आगे जगमोहन बना हुआ है। खास हाते के भीतर ३ बारहदरी और पूर्व तरफ बाहर १ बड़ी बारहदरी बनी है उत्तर तरफ खेरकुंड नामक १ कच्चा सरोवर कमलों से सुशोभित है। पूर्व तरफ फाटक के बाहर कई एक इमारतें हीन दशा में वर्तमान हैं। फाल्गुन की शिवरात्रि को यहां मेला होता है और सावन के प्रत्येक सोमवार को बहुत लोग दर्शन को जाते हैं। मंदिर के चारो ओर १४ मील के घेरे में गढ़े हुए बहुतेरे पुराने कंकर के पत्थर निकलते हैं किन्तु लोग डर कर के उन ईंटों पत्थरों को अपने काम में नहीं लगाते हैं।

## बिठूर।

कन्नौज से ३८ मील (हाथरस से १७६ मील) पूर्व-दक्षिण और कानपुर जंक्शन से १२ मील पश्चिमोत्तर मंधना का रेलवे स्टेशन है। मंधना से पूर्वोत्तर ५ मील की रेलवे शाखा बिठूर को गई है। पश्चिमोत्तर देश के कानपुर ज़िले

में रेलवे स्टेशन से एक मील दूर गंगा के दाहिने किनारे पर विठूर एक छोटा कसवा और तीर्थ स्थान है, जिसको ब्रह्मावर्त भी कहते हैं।

सन् १८८१ की जन-संख्या के समय विठूर में ६६८५ मनुष्य थे; अर्थात् ५९७० हिंदू और ७१५ मुसलमान।

रेलवे स्टेशन से चलने पर पहले गंगा के निकटही नया विठूर तब पुराना विठूर मिलता है। पुराने विठुर में ब्रह्माघाट, जिसको अवध के नवाब गाजिउद्दीन हैदर के मन्त्री राजा टिकैत राय ने पत्थर से बंधवा दिया था, प्रधान है। इसके अतिरिक्त अहिल्याबाई और बाजीराव पेशवा के बनवाये हुए, यहां कई एक घाट हैं। घाटों के ऊपर अनेक देवमंदिर बने हुए हैं; इनमें बाल्मीकेश्वर शिव का मंदिर प्रधान है। काशी के सुप्रसिद्ध स्वामी विशुद्धानंद जी ने मंदिर का घेरा बनवा कर इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया है और यहां एक शिखर, जिस पर सैकड़ों दीप जलाए जाते हैं, बाजीराव पेशवा का बनवाया है, उसकी भी मरम्मत करवा दिया है। इस मंदिर के अतिरिक्त गंगा के निकट ब्रह्मेश्वर, कपिलेश्वर, भूतेश्वर, धोरेश्वर, ईत्यादि देवताओं के मंदिर अलग अलग बने हुये हैं। गंगा के खास घाट की सीढ़ियों पर लगभग १ फूट ऊंची लोहे की कील खड़ी है। इसको पंडा लोग ब्रह्मा की खूँटी कहते हैं और इस पर पूजा चढ़वाते हैं। घाट के ऊपर दक्षिणी ब्राह्मणों की बस्ती है। कसबे में पंडे ब्राह्मण बहुत बसते हैं और सदावर्त लगा हुआ है। गंगा की नहर की एक शाखा विठूर तक बनी है।

विठूर में प्रतिवर्ष कार्तिकी पूर्णिमा को गंगा स्नान का बड़ा मेला १५ रोज होता है। बहुतेरे यात्री विशेष करके दक्षिणी लोग विठूर में आते हैं। मेले में दूर २ से हर एक माल विकने आते हैं। स्मृतियों में सरस्वती और दृषद्वती नदियों के मध्य के देश को, जो अंबाले जिले में है, ब्रह्मावर्त देश लिखा है, किंतु ब्रह्मावर्त तीर्थ करके विठूरही प्रसिद्ध है। सम्वत् १८७४ का बना हुआ 'तुलसी शब्दार्थ प्रकाश' नामक पद्य में भाषा ग्रंथ है; इसके द्वितीय भेद में लिखा है कि राजा मनु और ध्रुव जी का जन्म विठूर में हुआ था।

ब्रह्मावर्त घाट से करीब २ मील दक्षिण वाहिष्मती पुरी है, जिसमें मनु की उत्पत्ति और किला था। जिसको लोग परहट भी कहते हैं और ब्रह्मावर्त घाट से १/१ मील उत्तर ध्रुव किला नामक ध्रुव का स्थान एक टीला है।

**वाल्मीकि मुनि का स्थान**—बिठूर से ६ मील पश्चिम गंगाजी से १।। मील दक्षिण वैलारूद्रपुर एक वस्ती है, जिसको पूर्व काल में द्वैलव कहते थे। द्वैलव का अपभ्रन्श वैलव और वैलव से वैला हो गया है। लोग कहते हैं कि वैलारूद्रपुर महर्षिवाल्मीकि की जन्म भूमि है, यहां एक पुराना कूप है; ऐसा प्रसिद्ध है कि वाल्मीकि जब वधिक का काम करते थे, तब इसी कूप में छिप कर रहते थे, यहां पत्थर के २ टुकड़े और नीम के कई एक वृक्ष हैं इससे थोड़ी दूर पर १ छोटा शिव मंदिर और १ पक्का कूप और कूप से कुछ दूर नीम के वृक्षों के नीचे अहरानी देवी की मूर्ति है और वहां से २ मील दक्षिण तमसा नदी है, जिसको लोन नदी भी कहते हैं,

लोग कहते हैं कि जब लक्ष्मण गंगा के तीर सीता को छोड़ कर अयोध्या चले गए, तब महर्षि वाल्मीकि के शिष्यों ने वैलारुद्रपुर से १।। मील दूर बर्तमान परूआ गांव के निकट गंगा के तीर में सीता को देखा और यह समाचार मुनि से जा सुनाया। मुनि ने परूआ के निकट जा कर जब सीता को नहीं पाया, तब उनको खोजते हुए वह गंगा के तीर तीर पश्चिम को चले, उन्होंने वहां से १ मील दूर, जहां, खोजकीपुर, गांव है, गंगा के किनारे सीता को पाया; इसी लिये उस गांव का नाम खोजकी पुर पड़ा है। उस स्थान पर गंगा का करारा ऊंचा था, इस लिये मुनि ने गर्भवती जानकी को वहां ऊपर नहीं चढ़ाया, किन्तु उससे एक मील आगे, तरीगांव, के समीप वह उनको ऊपर चढ़ा कर वैलारुद्रपुर के अपने आश्रम में लायें, जब जानकी के जमल पुत्र जन्मे; तभी महर्षि वाल्मीकिने इस गांव को उत्पलवन का जंगल जान कर मंत्र से कील दिया था, इस कारण से अब तक संपूर्ण निवासी निर्भय रह कर अपने मकानों में किवाड़ नहीं लगाते हैं। किवाड़ लगाने वाला सुखी नही रहता, चोर गांव में चोरी भी नहीं कर सकता है। यहांही महर्षि वाल्मीकिजी ने आदिकाव्य वाल्मीकि

रामायण को बनाया था। इस से अब तक उस स्थान पर दर्शन यात्रा करने अच्छे २ लोग जाते हैं।

**इतिहास**—सन् १८१८ ई० में जब अंगरेजी सरकार ने पूने के बाजीराव पेशवा के राज्य छीन कर उनको ८ लाख रुपए की वार्षिक पेंशन नियत की, तब वह बिठूर में आकर रहने लगे। बिठूर में पेशवा का जूनावाड़ा नामक महल बना हुआ था। सन् १८५३ में उनका यहांहीं देहांत हुआ। पेशवा के दत्तक पुत्र नाना धुंधूपन्त ने, जो नाना साहब नाम से प्रसिद्ध हुए, सन् १८५७ के बलवे के समय कानपुर में बहुतेरे अंगरेजों को दगा से मार डाला और पीछे कुछ मुकाबला करने के पश्चात् वह भाग गये, तब अंगरेजी सरकार ने बिठूर के नाना साहब के महल को अच्छी तरह से विनाश कर दिया। बिठूर की कचहरी उठ जाने के कारण यहां की जन-संख्या बहुत घट गई है।

**संक्षिप्त प्राचीन कथा**—महाभारत—(वनपर्व ८३ वां अध्याय) ब्रह्मावर्त तीर्थ में स्नान करने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। (८४ वां अध्याय) ब्रह्मावर्त में जाने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है और चंद्रलोक में निवास होता है।

वामनपुराण—(३५ वां अध्याय) ब्रह्मावर्त में जाकर स्नान करने से मनुष्य को ब्रह्मलोक प्राप्त होता है।

मत्स्यपुराण—( १८९ वां अध्याय ) ब्रह्मावर्त तीर्थ में ब्रह्माजी प्रतिदिन निवास करते हैं। जो पुरुष वहां स्नान करता है; उसको ब्रह्मलोक मिलता है।

श्रीमद्भागवत—( तीसरा स्कंध, २१ वां अध्याय ) भगवान् विष्णु ने कर्दम मुनि से कहा कि ब्रह्मा का पुत्र राजा मनु ब्रह्मावर्त में बसता है और सात द्वीप नव खंड का पालन पोषण करता है; वह परसों दिन यहां आकर तुमको अपनी पुत्री दे जायगा। नियत दिन पर राजा मनु ने बिंदु सरोवर के निकट जाकर कर्दम मुनि को अपनी पुत्री देदी। जब स्वायंभुव मनु अपने देश ब्रह्मावर्त में लौट आए; तब प्रजागण उनको आदर पूर्वक बार्हिष्मती पुरी में ले गए। वहांहीं यज्ञरूप बाराहजी के अंगझाड़ने से उनके रोम गिरेथे,

जिनसे हरे रंग के कुश और काश हो गए। राजा मनु बार्हिष्मतीपुरी में निवास करने लगे (चौथा स्कंध, १९ वां अध्याय) राजा पृथु ने मनु के क्षेत्र ब्रह्मावर्त में, जहां प्राची सरस्वती (पूर्ववाहिनी गंगा) है, १०० अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया (२१ वां अध्याय) गंगा और यमुना के मध्य के क्षेत्र में राजा पृथु निवास करता था (५ वां स्कन्ध, ५ वां अध्याय) ऋषभदेवजी सन्यास धारण करने के लिये ब्रह्मावर्त से चले।

वाल्मीकि रामायण—(उत्तर कांड, ५२ वां सर्ग) एक समय रामचन्द्रजी ने सीता से कहा कि हे देवो तुममें गर्भवती का चिन्ह देख पड़ता है; तुम क्या चाहती हो। सीता ने कहा कि हे राघव! तपोवन देखने और गंगा तट निवासी ऋषियों के दर्शन करने की मेरी इच्छा होती है। रामचन्द्र जी ने कहा कि हे वैदेही! मैं तपोवन में अवश्य तुझे भेजूँगा।

(५३ वां सर्ग) इसके पश्चात् रामचन्द्र ने अपनी सभा में भद्र नामक दूत से पूछा कि आज कल पुरवासी लोग भाइयों सहित मेरे और सीता के विषय में क्या कहते हैं; तुम निःशंक होकर कहो। भद्र बोला कि हे प्रभो सर्वत्र यही बात फैल रही है कि राघव रावण को मार कर सीता को फिर अपने गृह लाए यह बात अच्छी नहीं है; जिस सीता को रावण उठा ले गया और वह राक्षसों के घर में इतने दिन रही; उसको लाना उचित नहीं है। ऐसा सुन श्रीरामचंद्र सभा में अपने तीनों भाइयों को बुला कर कहने लगे कि देखो अग्नि, वायु, चन्द्र, और सूर्य ने शाक्षी दी कि जानकी निर्दोष है और मेरा अन्तरात्मा भी यही कहता है कि सीता शुद्ध है; किन्तु पुरजन और देश वासियों का अपवाद मेरे हृदय को क्षोभ दे रहा है, इस लिये हे लक्ष्मण! तुम कल प्रातःकाल सीता को रथ पर चढ़ा कर गंगा उस पार, जहां महर्षि वाल्मीकि का आश्रम है और तमसा नदी बहती है, निर्जन देश में छोड़ आवो। सीता ने मुझ से कहा भी है कि मैं गंगा तीर के आश्रमों को देखना चाहती हूँ।

(५६ वां सर्ग) लक्ष्मण ने प्रातःकाल होने पर सीता से कहा कि हे वैदेही! तुम ने गंगा तट के ऋषियों के आश्रम में जाने के लिये

महाराज से कहा था; इस लिये मैं तुमको वहां ले चलता हूं; ऐसा वचन सुन सीता अति हर्षित हो अपने साथ में नाना प्रकार के सुंदर वस्त्र और धन ले कर रथ में बैठी। सुमंत्र ने रथ चलाया। वे लोग पहली रात गोमती के किनारे के आश्रम में निवास कर के दूसरे दिन मध्यान्ह समय में भागीरथी के तीर पहुंचे। (५७ वां सर्ग) लक्ष्मण सुमंत्र को रथ के सहित इसी पार छोड़ कर सीता सहित नौका द्वारा गंगा पार हुए और अत्यन्त दीन हो नीचे मुख कर के बोले कि हे वैदेही? महाराज ने पुरवासियों के अपवाद के डर से तुम को त्याग दिया। यहां गंगा तीर पर ब्रह्मर्षियों का तपोवन है और यहां वाल्मीकि मुनि, जो मेरे पिता के मित्र हैं, रहते हैं, तुम इन्ही के चरण की छाया में रह कर निवास करो; इसके पश्चात लक्ष्मण सीता को छोड़ कर गंगा पार हो सुमंत्र के सहित अयोध्या को चले गये। (५९ वां सर्ग) इधर मुनियों के बालकों नें जाकर वाल्मीकि मुनि से कहा कि किसी महात्मा की पत्नी गंगा तीर पर रो रही है। मुनि नें शिष्यों के सहित वहां पहुँच कर जानकी से कहा कि हे भद्रे! जगत में जो कुछ है, वह सब मैं जानता हूँ। तुम रामचंद्र की प्यारी पटरानी, राजा जनक की पुत्री और पाप से रहित हो; अब तुम्हारा भार हमारे ऊपर हुआ, ऐसा कह महर्षि ने सीता को अपने आश्रम में ला कर उनको मुनियों की पत्नियोंको सौप दिया। (६२ वां सर्ग) उधर लक्ष्मण रात में केशिनी नगरी में टिक कर दूसरे दिन मध्यान्ह समय में अयोध्या पहुंच गये। (७९ वां सर्ग) कुछ दिनों के पश्चात् जिस रात में शत्रुघ्न ने मधुवन जाते हुये वाल्मीकि मुनि की पर्णशाले में निवास किया था, उसी रात में सीता के २ पुत्र उत्पन्न हुए। मुनिने कुशमुष्टि अर्थात् कुश के अग्र भाग और लव अर्थात् कुश के अधो भाग से दोनों बालकों की रक्षा, वृद्ध मुनि पत्नियों से करवाई; इस लिये यथा क्रम कुश और लव दोनों के नाम हुए। यह समाचार पाकर शत्रुघ्न सीता की पर्णशाले में जाकर बोले कि हे मातः; यह बड़े ही आनन्द की बात हुई। प्रातःकाल होने पर शत्रुघ्न ने मथुरा का मार्ग लिया (यह जानकी के परित्याग की कथा पद्मपुराण में पाताल खंड के ५५

वें अध्याय से ५९ वें अध्याय तक है; किंतु उसमें लिखा है कि केवल एक धोबी ने सीता की निंदा की थी, जिसको दूत के मुख से सुन कर श्रीरामचन्द्र ने सीता का परित्याग किया। गर्भ धारण करने के ५ महीने के पश्चात् जानकी को वनवास हुआ था।

(१०५ वां सर्ग) कुछ काल के उपरांत रामचंद्र ने अश्वमेध यज्ञ के लिये घोड़ा छोड़ा। नैमिपारण्य में बड़ी धूम धाम से यज्ञ प्रारंभ हुआ। (१०६ वां सर्ग) महर्षि वाल्मीकि कुश, लव और अपने शिष्यों के सहित यज्ञशाले में आए (१०७) ऋषि की आज्ञा से कुश और लव महर्षि वाल्मीकि का बनाया हुआ रामायण गान करने लगे। गान की प्रशंसा सुन कर श्रीरामचन्द्र दोनों बालकों को बुला कर रामायण के गान सुनने मे प्रवृत्त हुए। (१०८) संगीत सुनते सुनते उन्होंने जाना कि ये दोनों सीताही के पुत्र हैं; तब दूतों को आज्ञा दी कि तुम वाल्मीकि मुनि से कहो कि यदि सीता शुद्ध चरित्रा है; तो कल प्रातःकाल शभा में अपनी शुद्धि के लिये शपथ करें। (१०९) रामचन्द्र के संवाद सुन कर वाल्मीकि मुनि सीता के सहित सभा मे आकर रघुनंदन से बोले कि सीता अपनी शुद्धता का परिचय देनी चाहती है और ये दोनों बालक सीताही के हैं; उस समय सीता सभा मंडली के बीच में काषाय वस्त्र पहनी हुई बोली कि यदि मैं राघव के अतिरिक्त अन्य पुरुष को मन से भी न चिंतन करती होऊं, तो पृथ्वी देवी अपने भीतर पैठने के लिये मुझको विवर देवें; इतने समय में पृथ्वी फट गई; उसमें से एक अद्भुत सिंहासन प्रगट हुआ। उस पर मूर्त्तिमती पृथ्वीदेवी बैठी थी; उन्होंने सीता को सिंहासन पर बैठा लिया। सिंहासन रसातल में चला गया।

(यह कथा अध्यात्म रामायण में भी उत्तर कांड के चौथे अध्याय से सातवें अध्याय तक है)

पद्मपुराण—(पातालखंड, ११ वां अध्याय) श्रीरामचंद्रजी ने अश्वमेध यज्ञ का विधान किया। पृथ्वी विजय के अर्थ से घोड़ा छोड़ा गया। घोड़े की रक्षा के लिये चतुरंगिणी सेनाओं से युक्त हो शत्रुघ्न चले; उनके साथ भरत के पुत्र पुष्कल, वानर श्रेष्ठ हनूमान, ऋक्षपति जाम्बवान और सुग्रीव, अङ्गद,

नील, नल, दधिमुख आदि वानरों ने प्रस्थान किया। (५३ वां अध्याय) रामचंद्र का घोड़ा शत्रुघ्न के साथ नाना देशों में भ्रमण करता हुआ गंगा तीर वाल्मीकि मुनि के आश्रम में पहुँचा। (५४ वां अध्याय) रामचन्द्र के पुत्र लव ने उस घोड़े को पकड़ लिया। (६० वा अध्याय) शत्रुघ्न की सेना लव से युद्ध करने लगी; (६२ वां अध्याय) जब लव ने हनूमान को मूर्छित कर दिया; तब शत्रुघ्न ने जाना कि यह जानकी का पुत्र है; इसके पश्चात् जब लव के वाणों से शत्रुघ्न भी मूर्छित हो गए; तब सुरथ आदि राजा गण लव से लड़ने लगे; इसके उपरांत शत्रुघ्न सचेत हो कर फिर लव के साथ युद्ध कार्य म प्रवृत्त हुए। (६३ वां अध्याय) शत्रुघ्न के अस्त्रों से लव मूर्छित हो गए यह समाचार सुन कर जानकी जी विलाप करने लगी; उसी समय सीता जी के बड़े पुत्र कुश, महा काल जी की पूजा कर के उज्जैन से आगए और जानकी के मुख से लव की मूर्छित होने की खबर सुन कर रणभूमि में जा पहुंचे। लव की मूर्छा छूट गई। (६४ वां अध्याय) कुश और लव दोनों भाई शत्रुघ्न आदिक सब सैनिकों को मूर्छित कर के सुग्रीव और हनूमान की पूछ पकड़ घसीटते हुए उनो को अपने आश्रम में ले गए। जानकीजी ने पहचान कर दोनों वानर और घोड़ा छुड़वा दिया और श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान कर के अपनी पतिव्रता धर्म के प्रभाव से शत्रुघ्न के सहित सब सेनाओं को जिला दिया (६५ वां अध्याय) शत्रुघ्न जी ने अश्व और अपनी सेना सहित अयोध्या में आ कर श्रीरामचन्द्र जी से सब वृत्तान्त कह सुनाया। (६६ वां अध्याय) रामचन्द्रजी ने यज्ञ में आए हुए वाल्मीकि मुनि से कुश और लव का वृत्तांत पूछा। मुनि ने सब यथार्थ हाल कह सुनाया; तब रामचन्द्र की आज्ञा से लक्ष्मणजी वाल्मीकि मुनि के आश्रम मे जा कर कुश और लव दोनों राजकुमारों को और (६७) फिर दूसरी वार जाकर श्रीजानकी महारानी को रथ पर बैठा कर अयोध्या में ले आए। सीता जी रामचन्द्र जी के साथ यज्ञशाला में बैठी और यज्ञ समाप्त हुआ। (६८ वां अध्याय) श्रीरामचन्द्र ने सीता के सहित ३ अश्वमेध यज्ञ किए।

जैमिनीपुराण—( २९ वें अध्याय से ३६ वें अध्याय तक ) श्रीरामचन्द्र

ने अश्वमेध यज्ञ आरंभ किया। यज्ञ के घोड़े के साथ चतुरंगिणी सेना ले कर शत्रुघ्न चले; वे अनेक राजाओं को जीतते हुए जब वाल्मीकि मुनि के आश्रम में पहुंचे; तब सीता के पुत्र लव ने घोड़े को पकड़ लिया; जिस समय लव को शत्रुघ्न ने मूर्छित कर दिया उसी समय लव के भ्राता कुश वन से आगये। कुश ने शत्रुघ्न को मार कर रथ में गिरा दिया। मरने से बचे हुए वीर गण अयोध्या चले गये; तब रामचन्द्र ने सेना सहित लक्ष्मण को पठाया; जब लक्ष्मण भी लव कुश द्वारा परास्त हुए; तब रामचन्द्र ने अयोध्या से भरत को भेजा, जब भरत भी संग्राम में लड़ कर मूर्छित हो गए; तब स्वयं श्रीरामचन्द्र सुग्रीव और विभीषण सहित ससैन्य वाल्मीकि के आश्रम में जा पहुंचे। वहां संग्राम होने के उपरांत कुश ने संपूर्ण वानर और सेनाओं के सहित रामचन्द्र को मूर्छित कर दिया और रामचन्द्र के कुंडल आदि भूषण, लक्ष्मण का मुकुट और जाम्बवान तथा हनूमान को पकड़ कर सीता के पास ले गये, किंतु पीछे सीता की आज्ञा से लव जाम्बवान और हनूमान को रणभूमि में छोड़ आये, उसी समय वाल्मीकि जी वहां आगये, जब कुश ने मुनि से सम्पूर्ण वृत्तांत कह सुनाया; तब मुनि ने अमृतमय जल छिड़क कर सब को जिला दिया। रामचन्द्रजी अपनी सेना सहित अयोध्या में लौट आये; पश्चात् महर्षि वाल्मीकि कुश और लव के सहित सीता को ले कर अयोध्या में आए; उन्होंने रामचन्द्र से कहा कि हे राजन्! सीता निष्पाप है और ये दोनो तुम्हारेही पुत्र हैं; तब रामचन्द्र ने सीता और कुश तथा लव को ग्रहण किया।

---

# बाईसवां अध्याय।

## (पश्चिमोत्तर में) कानपुर, इटावा और फतहपुर।

## कानपुर।

मंधना जंक्शन से १२ मील और हाथरस जंक्शन से १८८ मील पूर्व

दक्षिण और इलाहाबाद से ११९ मील पश्चिमोत्तर कानपुर का रेलवे जंक्शन है। पश्चिमोत्तर प्रदेश के इलाहाबाद विभाग में गंगा के दाहिने किनारे पर (२६ अन्श २८ कला १५ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश २३ कला ४५ विकला पूर्व देशान्तर में) जिले का सदर स्थान कानपुर उन्नति करता हुआ शहर है। इसका शुद्ध नाम श्रीकृष्ण के नाम से कान्हपुर है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय फौजी छावनी के सहित कानपुर में १८८७१२ मनुष्य थे; अर्थात् १०६७१३ पुरुष और ८१९९९ स्त्रियां। इनमें १४१०३१ हिंदू, ४४१९९ मुसलमान, २९९४ कृस्तान, ४१० जैन, ४४ सिक्ख, ३१ पारसी, और ३ यहूदी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ९ वां और पश्चिमोत्तर देश में दूसरा शहर है।

देशी शहर, फौजी छावनी और सिविल स्टेशन के सहित शहर का क्षेत्रफल ६०१५ एकड़ है। मैं रेलवे स्टेशन से १ मील दूर शहर की ओर रामनाथ और बैजनाथ की नई धर्मशाले में जा टिका। कानपुरका सिविल स्टेशन और फौजी छावनी गंगा के दाहिने बगल में और देशी शहर गंगा से दक्षिण-पश्चिम की ओर फैला हुआ है। देशी लोगों का शहर उत्तम रीति से नहीं बसा है, इस की गलियां और रास्ते तंग हैं।

इसमें कोठीवाल, सौदागर और वकीलों के कई एक उत्तम मकान बने हुए हैं और कई एक देवमंदिर अच्छे; जैसे गुरुप्रसाद का कैलास, प्रयागनारायण का वैकुण्ठ और कई जैन मंदिर देखने में आते हैं। शहर से बाहर रेलवे स्टेशन की ओर गल्ले का बाजार बहुत भारी कलक्टरगंज है। कानपुर के घाटों में पत्थर से बांधा हुआ गंगा का सिरसैहा घाट प्रधान है और सिद्धेश्वर महादेव का मंदिर यहां विख्यात है।

मैमोरियल गार्डन से पश्चिम सिविल स्टेशन, बंगालबंक, चर्च, थियटर और दूसरी युरोपियन इमारतें बनी हुई हैं। नए कानपुर से २ मील पश्चिमोत्तर गंगा के दाहिने किनारे पर पुराना कानपुर है। दोनों के बीच में बाग और खेतों का मैदान देखने में आता है। कानपुर की फौजी छावनी में साधारण

तरह से १ युरोपियन और १ देशी पैदल की रेजीमेंट, १ देशी सवार की रेजीमेंट और १ शाही आरटिलरी की बैटरी रहती है । बड़ी सड़क कलकत्ते से कानपुर और फौजी लाइन हो कर दिल्ली को गई है । गंगा की नहर हरिद्वार से ६३५ मील आकर कानपुर से फिर गंगा में मिलगई है।

चमड़े के असवाब और नए कल कारखाने के लिये कानपुर प्रसिद्ध है और अब बढ़कर औवल दरजे का तिजारती शहर हुआ है; इसकी उन्नति साल बसाल हो रही है। बग्गी और घोड़े का साज, बूट इत्यादि सामान बहुत तैयार होता है। बहुतेरे मिलों में कपड़े, ऊनी वस्त्र, दरी इत्यादि वस्तु तैयार होती हैं। आटा पीसने के लिये भी कई एक मिल अर्थात् कल के कारखाने बने हैं। चीनी की बड़ी तिजारत होती है, खीमें बहुत तैयार हो कर बिकते हैं। चमड़े के असबाब, कपड़े इत्यादि सूत की चीजें और आसपास के जिलों के पैदावार ईकट्ठे करके कानपुर से दूसरे शहरों में भेजे जाते हैं। यहां की तिजारत दिन पर दिन बढ़ रही है।

गंगा के किनारे पर मेमोरियलगार्डन अर्थात् यादगार-बाग ३० एकड़ से अधिक क्षेत्रफल में फैला है। बाग के उत्तरीय भाग मे कूप के ऊपर, जिसमें सन् १८५७ के बलवे के समय लगभग २०० मरे और अधमरे यूरोपियन डाल दिए गए थे। सुंदर अठपहली दीवार बनी हुई है। घेरे के भीतर, जिसमें लोहे के फाटक लगे हैं, कुएं के ठीक ऊपर एक स्वर्गदूत की प्रतिमा बनाई गई है। कूप के चारो ओर की दीवार पर बड़ा लेख है। इसका सारांश यह है कि बिठूरनगर के नाना धुंधूपंत ने सन् १८५७ ई० की तारीख १५ वीं जुलाई को बहुत क्रिश्चियनों को, जिनमें खास कर के स्त्री और लड़के थे, इस कूप के पास निष्ठुर भाव से मरवा डाला और जीते लोगों को भी मुर्दों के सहित इस कूप में गिरवा दिया; उन्ही क्रिश्चियनों की यादगार यह बना है। साधारण लोगों को, जो कोट पतलून नही पहने रहता, इस स्थान को देखने के लिये जज साहब से पास लेना पड़ता है। बाग में खुसी मनाने या गीत गाने का हुक्म नहीं है । बलवे के पश्चात् शहर के लोगों से जुर्माना लेकर उस रुपए से यह बाग और यादगार बनाई गई। अंगरेजी सरकार बाग के मामूली

खर्च के निमित्त वार्षिक ५ हजार रुपए देती है। गंगा की नहर से बाग पटाई जाती है। कूपके दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम २ कबरगाह हैं; उनमें उन लोगों की यादगार हैं जो बलवे के समय कानपुर में मरे, या मारे गए थे।

मेमोरियल चर्च सन १८७५ ई० में लगभग २ लाख रुपए के खर्च से बना। सन् १८५७ में कानपुर में मरे हुए युरोपियन लोगों के यादगार के लिये इस में लेखों के सिलसिले हैं। चर्च से दक्षिण बांध की जगह है, जिसके भीतर अंगरेजो सेना नाना धुंधूपंत की फौज से २१ दिनो तक घेरी हुई थी। चर्च से $\frac{3}{4}$ मील उत्तर कुछ पूर्व वह घाट है, जहां यूरोपियन लोग मारे गए। गंगा के तीर ६ पहला एक पुराना शिवमंदिर उजड़ रहा है; उससे १ मील दूर उजान की ओर अवध रुहेल खंड रेलवे का पुल है।

रेलवे स्टेशन से लगभग १४ मील दूर कानपुर जिले में परगने का सदर स्थान जाजमऊ एक बड़ी बस्ती है। लोग कहते हैं कि चंद्रवंशी राजा नहुष के पुत्र राजा ययाति के नाम से इसका नाम जाजमऊ हुआ है ययाति के गढ़ के स्थान पर २ टीले उजड़ाहुवा मट्टीका किलाभी हैं।

**कानपुर जिला**—यह इलाहाबाद विभाग के पश्चिम का जिला है। जिले का क्षेत्रफल २३७० वर्गमील है; इसके पूर्वोत्तर गंगा नदी, पूर्व फतहपुर जिला दक्षिण-पश्चिम यमुना नदी और पश्चिम फर्रुखाबाद और इटावा जिले हैं। जिले में कई छोटी नदीयां और गंगा की नहर को अनेक शाखाएं बहती हैं।

कानपुर जिले में सन् १८९१ की जन-संख्या के समय १२०७६४६ मनुष्य थे; अर्थात् ६४६७०७ पुरुष और ५६०९३९ स्त्रियां और सन् १८८१ में ११८१३९६ थे; अर्थात् १०८४९६४ हिंदू, ९३०७३ मुसलमान, ३२०० कृस्तान, ११४ जैन, २३ यहूदी, १६ पारसी और ६ सिक्ख। जातियों के खाने में १८१२३४ ब्राह्मण, १२९७१३ चमार, ११७०९० अहीर, ९१७२२ राजपूत, ५५४३७ कुर्मी, ४८४७२ काछी, ३८४८९ बनिया थे। सन् १८९१ की जन-संख्या के समय इस जिले के कानपुर में १८८७१२, और सन् १८८१ में बिठूर में ६६८५ बिल्होर में ५५८९ और अकबरपुर में ५१३१ मनुष्य थे। इस जिले में बिल्होर स्टेशन से ५ मील दक्षिण-पश्चिम कनौज के प्रांत मँकनपुर में मदार

बाबा के दरगाह का वसंतपंचमी से एक मेला (जो दश पन्द्रह दिन तक रहता है) आरंभ होता है। बिल्हौर से पक्की सड़क कानपुर तक बराबर गई है मेले में बेसकीमती घोड़े, बैल, सांड़िये, भैंस और मवेसियों की खरीद बिक्री होतीहै। लोग कहते हैं कि ऋष्यशृङ्ग के पिता विभाण्डक ने इसस्थान को, जिसमे मेरे पुत्र का ब्रह्मचर्य नष्ट नहो, मन्त्र से कील दिया था कि जो स्त्री यहां आवेगी वह भस्म हो जायगी, (जहां से दशरथ की भेजी हुई अप्सरा ऋष्यशृङ्ग को मोह कर नौकों से अयोध्या में हर लै गई थीं पश्चात् दशरथ की कन्या शान्ता नामक के साथ विवाह हुआ था) यह वही स्थान है इसमे अब तक भी दरगाह मे स्त्रीयां कोई भी नही जाती हैं।

इतिहास—अंगरेजी अधिकार होने पर कानपुर जिला नियत हुआ। मुसलमानो के राज्य के समय इसके बहुतेरे परगने इलाहाबाद और आगरे के इलाके में थे। इसके पहले का इतिहास पासके जिलों के साथ है। मुगलों के राज्य की घटती के समय सन् १७३६ ई० में महाराष्ट्रों ने कानपुर के निकट वर्ती देश को लूटा। सन् १७४७ में अवध के नवाब सफदरजंग ने उसको महाराष्ट्रों से लेलिया।

अंगरेजी सरकार ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला को सन् १७६४ में बक्सर के निकट और सन् १७६५ ई० में कोरा के समीप परास्त किया। उस समय तक कानपुर का वर्तमान शहर नहीं बसा था। नवाब ने परास्त होने पर संधि किया; उसके अनुसार अंगरेजी सरकार को नवाब के राज्य में कानपुर और फतहगढ़ में अपनी फौज रखने का अधिकार हुआ। अंगरेजी फौज का एक भाग प्रथम बिलग्राम में रक्खा गया किन्तु सन् १७७८ में फौजी छावनी वहां से हटा कर कानपुर में स्थित की गई। फौज रहने के कारण शीघ्रही उसके निकट कानपुर शहर बस गया। बहुतेरी सुन्दर इमारतें बन गईं। सन् १८०१ ई० के संधि के अनुसार कानपुर के निकटवर्ती देश अंगरेजी अधिकार में आया। शीघ्रही कानपुर जिले का सदर स्थान बना। पीछे उस जिले के कई एक परगने इटावा और फर्रुखाबाद जिले में कर दिये गये।

सन् १८५७ के बलवे के समय बगावत का सुबहा होने पर रसत जमा

करने के लिये मैदान में ४ फीट ऊंचा मट्टी का बांध बनाया गया, उसके भीतर २ बारक थे। ता० ४ जून की रात में दूसरी पलटन के घोड़सवार तेजी के साथ नबावगंज में खजाने के पास पहुंचे। पहली पलटन के पैदल सिपाही उनसे जा मिले; उन्होंने खजाना लूट लिया, जेलखाने से कैदियों को छोड़ दिया, आफिस और दफ्तरों को जला डाला और गोले बारूत इत्यादि सामान ले कर दिल्ली का प्रस्थान किया। ५३ वां और ५६ वां पलटन भी उनमें शामिल हो गई। केवल ८० हिंदुस्तानी सैनिक अपनी जिंदगी तक कृतज्ञ बने रहे॥ पूने के बाजीराव पेशवा के गोद लिया हुआ पुत्र नाना धुंधूपंत, जो नाना साहब करके प्रसिद्ध है, कानपुर के समीप विठूर नगर में रहता था। अंगरेजी सरकारने पेशवा की मृत्यु होने पर उसकी बड़ी पेंशन धुंधूपंत को देना स्वीकार नहीं की थी। नाना धुंधूपन्त दिल्ली को जाते हुए बागी सिपाहियों को फेर लाया। बागियों ने युरोपियनों पर आक्रमण किया। बांध के भीतर लगभग १००० मनुष्य थे। ३२ वें पलटन का कफ्तान मूर युरोपियन सेना का अफसर बनाया गया, बागीगण बार बार आक्रमण करते थे। अंगरेजों की ओर के जितने आदमी मरते थे, वे रात्रि के समय घेरे के बाहर एक कूप में डाल दिए जाते थे। इस भांति ३ सप्ताह में २५० आदमी से अधिक मारे गए। बहुतेरे हिंदुस्तानी नोकर भाग गए। तारीख २५ वीं जून को एक स्त्री एक कागज लेकर अंगरेजों के पास आई; उसमें लिखा था कि अंगरेज लोग अपनी किलाबंदी की जगह खजाने और तोपों के सहित दे देवें और प्रत्येक आदमी ६० फाएर का सामान और अपने हथियारों के साथ इलाहाबाद चले जावें। नानसाहब उनको हिफाजत के साथ गंगातीर पहुंचावेगा और इलाहाबाद जाने के लिये नाव देगा। युरोपियन लोग, जो मरने से बचे थे, उनकी बात स्वीकार करके तारीख २७ जून को सबेरे सती चौरा घाट पर पहुंच कर नावों पर चढ़े। नाव खेवे जाने से पहलेही उनपर चारो ओर से गोली गिरने लगीं। नावों के छपरों में आग लगीं। बीमार और घायल जल गए, जब सिपाहियों ने पानी में कूद कर बचे हुए लोगों को मार डाला; तब नाना साहब ने हुक्म दिया कि

स्त्रियों को मत मारो। घायल और आधी डूबी हुई लगभग १२५ स्त्रियां कानपुर में लाई गईं। युरोपियनों की केवल २ नाव आगे बढ़ी; उसमें से १ चारो ओर की गोलियों से डूब गई और दूसरी आगे चली; उसपर दोनों किनारों से गोलियां गिरती थीं। दूसरे दिन सुबह में ११ आदमी दो अफसरों के सहित नाव से कूदे; इनमें ४ जो तैरने में होशियार थे, अवध के किनारे पहुंचे और कानपुर के किस्से कहने के लिये बंच गए। नाव भाटी की ओर बह चली और पीछे पकड़ी गई ८० आदमी नानासाहब के पास लाए गए। नानासाहब ने पुरुषों को मरवा डाला और लड़कों तथा स्त्रियों को कैदियों में शामिल होने के लिये सवादा कोठी में भेज दिया; उसके पश्चात् कैदी लोग बीबीगढ़ के एक मकान में रक्खे गए; वहां ७ वीं और १४ वीं जुलाई के बीच में २८ मरगए। अंगरेजी सेनापति जनरल हैवलाक १००० गोरे, १३० सिक्ख, १८ वलंटियर और ६ तोपों के सहित ता० १२ जुलाई को फतहपुर से ४ मील दूर बेलिंडा के पास पहुंचे, वहां नानासाहब की सेना लड़ कर परास्त हुई। अंगरेजों ने फतहपुर को लूटा। तारीख १५ वीं जुलाई को हैवलाक ने बागियों को फिर परास्त करके खदेर दिया। नानासाहब ने जब सुना कि हैवलाक की सेना आरही है; तब बीबीगढ़ के कैदी युरोपियन स्त्रियों और लड़कों को मारदेने का हुक्मदिया। लंबी छूरियों और तलवारों से वे सब मार दिए गए। सुबह में मुर्दे और अधमरे हुए लगभग २०० मनुष्य पास के कूए में डाल दिए गए; उसी कूप पर अब सुन्दर यादगार बना है। हैवलाक ने तारीख १६ जुलाई को नानासाहब की सेना को परास्त करके कानपूर को ले लिया और १९ वीं को बिठूर के नानासाहब के महलका विनाश कर दिया। नानासाहब भाग गए।

कानपुर में ४ महीने पश्चात् फिर एक बार खूनी लड़ाई हुई। तांतियां-टोपो ने ग्वलियर के २५ हजार बागियों के साथ तारीख २६ वीं नवंबर को कानपुर पर आक्रमण किया। अंगरेजी सेना सख्त लड़ाई के पश्चात् परास्त हो कर भाग गई। बागियों ने शहर पर अपना अधिकार करके उसमें आग लगा दी और सरकारी सामान सब लूट लिया। तारीख ६ वीं दिसंबर को

अंगरेजी फौज ने बागियों को परास्त करके उनका हथियार और सामान छीन लिया। सन् १८५८ की मई में संपूर्ण जिला पूरे तौर से अंगरेजी अधिकार में फिर हो गया। अंगरेजी गवर्नमेंट ने नानासाहब को पकड़नेवाले को ५०००० रुपए इनाम देने का इस्तिहार जारी किया। पीछे समय समय पर कई आदमी नानासाहब होने के संदेह में पकड़े गए; किंतु असली नानासाहब कोई नहीं ठहरा।

रेलवे—कानपुर, रेलवे का बड़ा 'केंद्र' है, यहां से रेलवे लाइन ५ ओर गई है।

(१) कानपुर से पूर्व ओर 'इष्टइंडियन रेलवे' जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति-मील $2\frac{1}{2}$ पाई है।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

४७ फतहपुर।

११९ इलाहाबाद।

१२३ नयनी जंक्शन।

१७० विंध्याचल।

१७५ मिर्जापुर।

१९४ चुनार।

२१४ मुगलसराय जंक्शन।

२५० दिलदारनगर जंक्शन।

२७२ बक्सर।

२९२ रघुनाथपुर।

३०२ बिहिया।

३१५ आरा।

३२४ कोयलवर।

३४० दानापुर।

३४६ बांकीपुर जंक्शन।

नयनी जंक्शन से दक्षिण-पश्चिम ५८ मील मानिकपुर जंक्शन, १६७ मील कटनी जंक्शन, २२४ मील जबलपुर, ३७७ इटारसी जंक्शन, ४८७ खंडवा जंक्शन, ५६४ मील भुसावल जंक्शन, ८०७ मील कल्यान जंक्शन और ८४० मील बंबई का विक्टोरिया स्टेशन है।

मुगलसराय जंक्शन से उत्तर थोड़ा पश्चिम अवधरुहेलखंड रेलवे पर ७ मील बनारस, ४६ मील जौनपुर १२६ मील अयोध्या, १३० मील फैजाबाद १९२ मील बाराबंकी जंक्शन और २०९ मील लखनऊ जंक्शन है।

दिलदारनगर जंक्शन से १२ मील उत्तर गाजीपुर।

बांकीपुर जंक्शन से ६ मील

पश्चिमोत्तर दीघाघाट और ५७ मील दक्षिण गया और पूर्व ओर ६ मील पटना सहर ५६मील मोकामा जंक्शन और ७६मील लक्षीसराय जंक्शन है।

(२) कानपुर से पश्चिम थोड़ा उत्तर 'इष्ट इंडियन रेल्वे'।

मील प्रसिद्ध-स्टेशन।

५२ फफूंड।

८७ इटावा।

९७ यशवंतनगर।

१२१ शिकोहाबाद।

१३४ फीरोजाबाद।

१४४ तुंडला जंक्शन।

१७४ हातरस जंक्शन।

१९२ अलीगढ़ जंक्शन।

११९ खुर्जा।

२२८ बुलंदशहर रोड।

२३७ सिकंदराबाद।

२५८ गाजियाबाद जंक्शन।

२७१ दिल्ली जंक्शन।

तुंडला जंक्शनसे पश्चिम १६ मील आगरा किला, ३३ मील अछनेरा जंक्शन, ५० मील, भरतपुर, और १११ मील बादी-कुई जंक्शन है।

हातरस जंक्शन से पश्चिम कुछ दक्षिण २९ मील मथुरा छावनी और पूर्व-दक्षिण ३४ मील कासगंज, ४३ मील सोरों १०१ मील फर्रुखाबाद, १३८ मील कन्नौज, १७६ मील मंधना और १८८ मील कानपुर जंक्शन है।

अलीगढ़ जंक्शन से पूर्वोत्तर १८ मील अतरौली रोड, ३० राजघाट और ६१ मील चंदौसी जंक्शन है।

गाजियाबाद जंक्शनसे उत्तर २८ मील मेरठ शहर, ६३ मील मुजफ्फरनगर और ९९ मील सहारनपुर जंक्शन है।

(३) कानपुर से पश्चिमोत्तर 'बंबे बरोदा और सेंट्राल इंडियन रेल्वे', जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन।

१२ मंधना जंक्शन।

३४ बिल्हौर।

५० कन्नौज।

८३ फतहगढ़।

८७ फर्रुखाबाद।

१५४ कासगंज जंक्शन, जिससे लाइन पश्चिम गई है।

१८८ हातरस जंक्शन, मंथना जंक्शन से ५ मील पूर्वोत्तर विठूर, कास-गंज जंक्शन से ९ मील पूर्वोत्तर सोरों।

(४) कानपुर से दक्षिण-पश्चिम 'इंडियन मिडलैंड रेलवे' जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रतिमी $2\frac{1}{2}$ पाई लगता है।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन।
४५ कालपी।
६६ उराई।
१३७ झांसी जंक्शन।
१९३ ललितपुर।
२३२ वीना जंक्शन।
२८५ भिलसा।
२९० सांची।
३१८ भोपाल जंक्शन।
३६४ हुशंगाबाद।
३७५ इटारसी जंक्शन।

झांसी जंक्शन से उत्तर थोड़ा पश्चिम १५ मील दतिया, ६० मील ग्वालियर, १०१ मील धौलपुर १३५ आगरा छावनी और १३७ मील आगरा किला और झांसीसे पूर्व कुछ दक्षिण ७ मील उरछा, ३३ मील रानी पुर रोड, ४० मील मऊ रानी पुर, ८६ मील महोवा, ११९ मील बांदा, १६२ मील करवी और १८१ मील मानिकपुर जंक्शन है।

वीना जंक्शन से ४६ मील पूर्व सागर है।

भोपाल जंक्शन से पश्चिम २४ मील सिहोर छावनी, ११४ मील उज्जैन और १२८ मील फतेहाबाद जंक्शन है।

(५) कानपुर से पूर्वोत्तर 'अवध रुहेलखंड रेलवे' जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रतिमील $2\frac{1}{2}$ पाई है।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन
१ अवधरुहेलखंड रेलवे का स्टेशन।
१२ उन्नाव।
४६ लखनऊ जंक्शन।

लखनऊ जंक्शन से पश्चिमोत्तर ३१ मील संडीला, ६४ मील हरदोई, १०२ मील शाहजहांपुर १३४ मील फरीदपुर, और १४६ मील बरैली जंक्शन; लखनऊ से दक्षिण-पूर्व ४९ मील रायबरैली; लखनऊ से दक्षिण पूर्व १७ मील बारावंकी जंक्शन, ७९ मील फैजाबाद, ८३ मील अयोध्या, १६३ मील जौनपुर, २०२ मील बनारस राजघाट और २०९ मील मुगलसराय जंक्शन; और लखनऊ से उत्तर कुछ पश्चिम रुहेलखंड कमाऊ रेलवे पर ५५ मील सीतापुर, १६३ मील पीलीभीत १८७ मील भोजपुरा जंक्शन, जिससे १२ मील बरैली जंक्शन और दूसरी ओर ५४मील काठगोदाम है, हैं।

# इटावा।

कानपुर रेलवे जंक्शन से ८७ मील पश्चिम थोड़ा उत्तर इटावा का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देश के आगरा विभाग में यमुना नदी के वाएं अर्थात् उत्तर (२६ अंश ४५ कला ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३ कला १८ विकला पूर्वदेशांतर में) जिले का सदर स्थान इटावा एक कसवा है।

सन् १७९१ की जन-संख्या के समय इटावे में ३८६९३ मनुष्य थे, अर्थात् २०३३७ पुरुष और १७४५६ स्त्रियां। इनमें २६०११ हिंदू, ११७८८ मुसलमान, ५६३ जैन, ११३ कृस्तान, १७ सिक्ख और २ पारसी थे।

इटावे के पुराने और नए दो कसवे हैं। अव दोनों कसवों के वीच के नालाओं पर पुल वनाए गए हैं। और दोनों के वीचमें पक्की सड़कें वनी है। नए कसवे के प्रधान वाजार की सड़कों के वगलों में सुन्दर मकान और दुकानें वनी हुई हैं। कसवे से कई सड़क निकल कर ग्वालियर, फर्रुखावाद, आगरा और मैनपुरी गई हैं। कसवे मे वीचमें ह्यूमगंज, जो मृत कलक्टर ह्यूम के नाम से कहाजाता है, एक सुन्दर महल्ला है। इसमें गल्ले और रुई का वाजार, तहसीली कचहरी, मजिस्ट्रेट की कचहरी, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, ह्यूम का हाईस्कूल, और एक सराय है।

कसवे के लगभग $\frac{1}{2}$-मील उत्तर सिविल स्टेशन; सिविल स्टेशन के पासही पूर्व रेलवे की इमारतें; उसके वाद जेलखाना; जेलखाने से लगभग $\frac{1}{2}$-मील पश्चिम कलेक्टर और मजीस्ट्रेट के आफिसें और उनके वाद पश्चिमोत्तर गिर्जा पवलिग वाग, और पोस्ट आफिस हैं।

कसवे के पश्चिम एक कुंज में नृसिंहजी का प्रसिद्ध मंदिर है। इसको लगभग १८०० ई० मे गोपालदास नामक ब्राह्मण ने वनवाया था। कसवे और यमुना के वीच में महादेव का मंदिर है यमुना के किनारे अनेक घाट और स्थान वने हुए हैं। एक सड़क यमुना की ओर गई है, उस के दहिने वगल में ऊंची भूमि पर जुमा मसजिद खड़ी है पूर्वकाल में मुसलमानों ने इसको वौद्धमंदिर से मसजिद वनाली इनके अलावे में जैनों का एक नया मंदिर है।

मसजिद से १ मील दूर ऊंची भूमि पर लगभग सन् ११२० ई० का वना

हुआ एक उजड़ा हुआ किला है, जिसको अवध के नवाब शुजाउद्दौल्ला ने तोड़वा दिया था। इसकी दक्षिण की दीवार अभीतक खड़ी है, जिसका एक पाया ३३ फीट और दूसरा २३ फीट ऊंचा है। किले मे १२० फीट गहरा एक कूप है। किले के नीचे यमुना के किनारे सुन्दर घाट बना हुआ है।

इटावे में गल्ला, घी, नील, तेल के बीज और रुई की तिजारत होती है। खास करके कूर्मी सौदागर हैं और कार्तिक में घोड़े और मवेसियों का एक मेला होता है।

ईटावा जिला—जिलेका क्षेत्रफल १६६३ वर्गमील है। इसके उत्तर मैनपुरी और फर्रुखाबाद जिले; पश्चिम यमुना नदी, आगरा जिला और ग्वालियर का राज्य; दक्षिण यमुना नदी और पूर्व कानपुर जिला है यमुना नदी जिले के भीतर और सीमा पर ११५ मील और चंबल नदी यमुना के प्रायः समानान्तर रेखा में बहती है; इनके अतिरिक्त इस जिले में अनेक छोटी नदीयां हैं।

जिले में सन् १८९१ की जन-संख्या के समय ७३३८१३ मनुष्य थे। अर्थात् ३९९७८० पुरुष और ३३४०३३ स्त्रियां और सन् १८८१ में ७२२३७१ थे। अर्थात् ६७९२४७ हिंदू, ४१४३७ मुसलमान, १२२६ जैन, १५८ कृस्तान २ सिक्ख और १ पारसी। जातियों के खाने में १०६७४९ चमार, ८६८७२ ब्राह्मण, ३५६९५ अहीर, ५५७९२ राजपूत, ५२६०७ काछी, ३८०६० लोधी, ३१०७६ बनिया थे। जिले के कसबों में से इटावे में ३४७२१, फफूँद में ७७९६ और औरइया में ७२९९ मनुष्य थे। फफूँद पुराना कसबा है; इसमें पुराना मकबरा और मसजिद देखने में आती है; इस जिले में कंद्र कोट नामक पुराने स्थान में भूमि के नीचे एक भूवेधरा है कि यह भूमि के नीचे कन्नौज तक चला गया है।

इतिहास—इटावा ईंट के नाम से प्रसिद्ध है। जिले में कई एक टीलों के देखने से इतिहासिक समय के किलों के स्थान ज्ञात होते हैं। एगारहवीं सदी के आरंभ मे गजनी के महमूद ने और बारहवीं सदी के अंत में महम्मदगोरी ने इटावे कसबे को लूटा। सन् १५२८ ई० में दिल्ली के बादशाह बाबर ने इसको आपने राज्य में मिला लिया। उसके पश्चात् अकबर ने इसको आगरे के सूबे के आधीन किया। चौदहवीं सदी के अंत में दिल्ली के पृथ्वीराज के वंश के चौहान राजपूत संग्रामसिंह ने इटावे को बचाया। चौहानों ने यहां एक

किला बनवाया। सत्रहवीं सदी में इटावा प्रसिद्ध तिजारती कसबा हुआ, मुग़लराज्य की घटती के समय इटावा महाराष्ट्रों के आधीन हुआ, उसके पश्चात् यह अवध के वजीर के अधिकार में आया। सन् १८०१ ई० में अंगरेजों ने इसको ले लिया। सन् १८५६ में इटावा कसबा जिले का सदर स्थान बना। सन् १८५७-५८ ई० के बलवे के समय कसबे को बहुत कष्ट उठाना पड़ा था, किन्तु कसबे के निवासी और जिले के जिमींदार आपनी कृतज्ञता से मुखनहीं मोड़े। इटावे में पहले फौजी छावनी थी; पर सन् १८६१ में फौज उठा ली गई और पुरानी छावनी की इमारतें लुप्त हो गईं।

## फतहपुर।

कानपुर से ४७ मील पूर्व और इलाहाबाद से ७२ मील पश्चिम कुछ उत्तर फतहपुर का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर प्रदेश के इलाहाबाद विभाग में जिलेका सदर स्थान फतहपुर एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय फतहपुर में २०१७९ मनुष्य थे; अर्थात् १०९९५ हिंदू, ९१७० मुसलमान, १३ कृस्तान और १ जैन।

प्रधान सड़क पर अवध के नवाब के प्रधान कर्मचारी नवाब बाकरअलीखां का मकबरा है। इसके अतिरिक्त फतहपुर में सुन्दर जामा मसजिद और कोरा के हाकिम अब्दुल हसन की मसजिद सिविल कचहरियां, जिला जेल, खैराती अस्पताल और स्कूल हैं। गल्ले, साबुन और चमड़े की तिजरात होती है। यहां कोड़े बहुत सुन्दर बनते हैं।

फतहपुर जिला—जिलेका क्षेत्रफल १६३९ वर्गमील है; इसके उत्तर गंगा जो इसको अवध के राय बरैली जिले से अलग करती है; पश्चिम कानपुर जिला, दक्षिण यमुना, जो इसको हमीरपुर और बांदा जिलों से जुदा करती है और पूर्व इलाहाबाद जिला है। यह जिला गंगा और यमुना के बीच के दो आब का एक भाग है। जिले में खेती की भूमि और बाग बहुत हैं।

जिले में सन् १८९१ की जन संख्या के समय ६९७३६३ मनुष्य थे। अर्थात् ३५८८६७ पुरुष और ३३८४९६ स्त्रियां और सन् १८८१ में ६८३७४५ थे अर्थात् ६०९३८० हिंदू, ७४२१८ मुसलमान, ८८ कृस्तान, ५८ जैन और १ सिक्ख। जातियों के खाने में ७०४२७ ब्राह्मण, ५९३९१ अहीर, ४६६०९

लोधी, ४४७१६ राजपूत, ३९८०६ कूर्मी, २९४५१ पासी, २८२२९ काछी २१२८६ बनिया थे। जिले से कसबे फतहपुर में २१३२८, बिंदुकी में ६६९८ और जहांनावाद में ६२४४ मनुष्य थे।

इतिहास— सन् ११९४ ई० महम्मदगोरी ने इस जिले को लूटा था, तब यह दिल्ली राज्य का एक भाग हुआ। सन् १५२९ ई० के लगभग बाबर ने जिले को जीता। दिल्ली के राज्य की घटती के समय फतहपुर अवध के गवर्नर के आधीन था। सन् १७३६ में महाराष्ट्रों ने इसको लूटा। सन् १७५० तक यह जिला उनके आधीन रहा; उसी साल फतहपुर के पठानों ने महाराष्ट्रों से इसको ले लिया। उसके ३ वर्ष के पश्चात् अवध के वजीर सफदरजंग ने इसको फिर जीता। सन् १७६५ में अंगरेजों ने अवध के वजीर को राजा बनाया; उस समय के संधि द्वारा शाह आलम को फतहपुर दिया गया; किंतु जब सन् १७७४ में शाह आलम महाराष्ट्रों के अधीन हो गया। तब अंगरेजों ने उसके राज्य को ५० लाख रुपए में अवध के नवाब के हाथ बेंचदिया। सन् १८०१ के बंदोबस्त के अनुसार नवाब ने इलाहाबाद और कोड़े को अंगरेजों को देदिया। फतहपुर पहले इलाहाबाद और कानपुर जिलों में बंटा था, परंतु सन् १८१४ में गंगा के निकट बिठूर जिला का सदर स्थान बना उसके ११ वर्ष पीछे फतहपुर जिलेका सदर हुआ।

सन् १८५७ की छठवीं जून को कानपुर के बलवे का समाचार फतहपुर पहुचा ८ वीं को खजाना के रक्षक बागी हुए। ९ वीं को बागियों ने मिल कर मकानों को जलाया और युरोपियन लोगों के असबाबों को लूटलिया। सिविलियन लोग बांदा को भाग गए। जज साहब मारे गए ता० १२ जुलाई को अंगरेजी फौजों ने आकर फतहपुर पर अधिकार कर लिया।

मैं फतहपुर से चलकर इलाहाबाद और मुगल सराय हो कर बिहिया के स्टेशन पर पहुंचा और वहां रेल गाड़ी से उतर स्टेशन से १२ मील उत्तर अपने गृह चरजपुरा चला आया। मेरी दूसरी यात्रा समाप्त हुई।

**साधुचरण प्रसाद।**

**भारत-भ्रमण, दूसरा खंड, समाप्त।**

# विशेषद्रष्टव्य ।

विदित हो कि पश्चिमोत्तर प्रदेश-वलिया जिले के अन्तर्गत चरजपुरा निवासी वाबू साधुचरणप्रसाद ने संपूर्ण भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न प्रांतों में ९ यात्रा करके भारतवर्ष के प्रायः संपूर्ण तीर्थस्थान, शहर, और अन्य प्रसिद्ध स्थानों को देख कर और वहुतेरी अंगरेजी, उर्दू और हिन्दी की किताबों से आवश्यकीय बातों और ऐतिहासिक वृत्तान्तों तथा २० स्मृतियां, १८ पुराण, महाभारत, वाल्मीकिरामायण इत्यादि धर्म पुस्तकों से प्राचीन कथाओं का संग्रह कर ५ खण्डों में भारत-भ्रमण नामक पुस्तक बनाई है। इसमे भारतवर्ष के भूतकालिक और वर्तमान काल के वृत्तान्त भली भांति से ज्ञात होंगे। इसमें स्थान स्थान पर नक्शे और तस्वीरें भी दी गई हैं।

पुस्तक मिलने का ठिकाना—

गणेशदास एण्ड कम्पनी वुकसेलर
चांदनी चौक के उत्तर नई सड़क
वनारस सिटी।

---

दूसरा पता—यज्ञेश्वर प्रेस, मिश्रपोखरा, वनारस सिटी।

---

भारत-भ्रमण का पहला खण्ड छप गया है उसका भी
मूल्य केवल १॥) मात्र है।

---

ग्राहकों को कुछ आवश्यकता होवे तो वावू तपसीनारायण
( गांव चरजपुरा, डाकखाना वैरिया, जिला वलिया )
से पत्र व्यवहार करे।